[illegible] द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन [illegible] दूरभाष [illegible]

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य,

वर्ष १०, अङ्क ५ ७ जनवरी १९८३ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में १० पौंड एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु विचारार्थ १६ जनवरी को रोहतक में बैठक

अकालियों की धमकियां बन्द न हुई तो हरयाणा में आन्दोलन होगा

—प्रो० शेरसिंह

आपको ज्ञात ही है कि राष्ट्र विरोधी अकालियों ने अपनी अनुचित मांगें मनवाने के लिए भूतपूर्व सिक्ख सैनिक, पुलिस कर्मचारियों को जत्थे बन्दी करके भारत सरकार पर दबाव डालना आरम्भ कर दिया है। पंजाब सरकार तथा पंजाब के राजनीतिक नेता भी अकालियों के साथ समझौता करवाने का प्रयत्न कर रहे हैं। यदि दबाव में आकर भारत सरकार ने उनके साथ समझौता किया तो उसका विपरीत प्रभाव हरयाणा की जनता पर पड़ेगा। अलगाववादी राष्ट्र घातक अकालियों की धमकियों के कारण अब समय आ गया है कि हम हरयाणावासी एकजुट होकर हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए प्रभावशाली पग उठावें और अकाली दल की मांगों से हरयाणा पर पड़ने वाले प्रभाव को दृष्टि में रखते हुए अगली कार्यवाही का सामूहिक रूप में निर्णय करें।

अतः आप से मेरा सानुरोध निवेदन है कि अपना मूल्यवान समय निकालकर १६ जनवरी १९८३ रविवार को १ बजे दुर्गा भवन भिवानी स्टैण्ड रोहतक में अपने सहयोगियों सहित अवश्य पधारें। इस बैठक का निर्णय १२-१२-८२ की बैठक में सर्वसम्मति में किया गया था। इस अवसर पर आर्यसमाज, सनातन धर्म, निरंकारी, जैनी, राष्ट्रवादी सिख भाइयों के अतिरिक्त हरयाणा के सभी राजनीतिक दलों के नेताओं को आमन्त्रित किया गया है ताकि अकालियों की चुनौती का मुकाबला करने के लिए सभी के सहयोग से पूरी शक्ति के साथ संघर्ष आरम्भ किया जावे। आपसे यह भी प्रार्थना है कि अपने साथ सत्याग्रह में सम्मिलित होने वाले स्वयंसेवकों के नाम भी लाने का कष्ट करें।

आशा है आप पूर्व की भान्ति हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए तन, मन, धन से उदारता पूर्वक सहयोग देकर अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। आपके सहयोग के इच्छुक

म० भरतसिंह वानप्रस्थ
संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी
दयानन्द मठ रोहतक

परमानन्द तुली
प्रधान दुर्गा भवन रोहतक

ये लत छोड़ दो

पीते हो अपना मगर हसते हैं लोग
लगा रहे हो मरने का रोग
घर बर्बाद होगा गहने बर्तन बिक जायेंगे
बच्चे तुम्हारे देखना भीख मांगकर खायेंगे
तुम इस जहर को पीना छोड़ दो
अभी मेरे सामने यह प्याला तोड़ दो
तौबा करलो फिर न पियेंगे
हम भी अब मौज से जियेंगे।

—बद्रीप्रसाद वर्मा

चण्डीगढ, २७ दिसम्बर—हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आज यहां कहा कि अगर अकाली दल ने अपनी मांगों की स्वीकृति के लिए धमकियाँ देने की नीति को न त्यागा तो उनके राज्य के लोग भी जवाबी आन्दोलन शुरु करेंगे। उन्होंने कहा कि अकाली दल को कुछ मांगों का हरयाणा पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ेगा।

पत्रकारों से बातचीत करते हुए प्रो० शेरसिंह ने कहा कि रक्षा वाहिनी की बैठक आगामी १६ जनवरी को दुर्गा भवन रोहतक में बुलाई गई है, जिसमें अकाली दल की मांगों से राज्य पर पड़ने वाले प्रभाव के दृष्टिगत अगली कार्रवाई का निर्णय किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि वाहिनी की सभी जिला इकाइयों को राज्य के हितों को सुरक्षार्थ चलाए जाने वाले सत्याग्रह के लिए १५ जनवरी तक स्वयंसेवकों के नाम भेजने के लिए कहा गया है।

गत २३ दिसम्बर को अकाली दल द्वारा अमृतसर में भूतपूर्व सैनिकों की बैठक बुलाए जाने की निन्दा करते हुए प्रो० शेरसिंह ने कहा कि यह उनकी पृथकतावादी मांग को स्पष्ट करता है और उन्हें साम्प्रदायिक रंग देने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि हरयाणा के लोग अकाली दल की उन मांगों का विरोध करना जारी रखेंगे, जिससे उनके हितों पर प्रभाव पडता है। वाहिनी आन्दोलन चलाने के लिए समर्थन करने वाले सभी राजनीतिक दलों की सूची बनाएगी।

हमारे विशेष प्रतिनिधि के अनुसार हरयाणा रक्षा वाहिनी ने राज्य भर में अपने यूनिटों को हरयाणा के हितों की रक्षा करने के लिए संघर्ष हेतु १५ जनवरी तक अपने स्वयं सेवकों को भर्ती करने का आदेश दे दिया है।

वाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने कहा कि अकालियों के पास अपनी मांगों के समर्थन में कोई दलील नहीं है। इसलिए वे बातचीत का रास्ता छोड़कर धमकियों पर उतर आए हैं। उन्होंने कहा कि हरयाणा के लोग अब अकालियों को इस चाल को सफल नहीं होने देंगे। अगर आवश्यकता हुई और अगर सरकार ने जल विवाद तथा क्षत्रीय मांगों पर कोई नरमी दिखाई तो राज्य के लोग उसका डटकर मुकाबला करेंगे।

अकाली दल के प्रधान सन्त लौंगोवाल द्वारा सिख भूतपूर्व सैनिकों की बुलाई गई कान्फ्रेंस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए प्रोफेसर शेरसिंह ने कहा यह एक गलत परम्परा शुरु की गई है।

(वीर प्रताप २८-१२-८२)

अस्पृश्यता: भारत के पतन का कारण

प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद

यह बात अब करीब-करीब निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुकी है कि भारत प्राचीनतम सभ्य देशों में है। संसार की किसी भी सभ्यता का प्राचीनतम लिखित प्रमाण यदि कहीं उपलब्ध है तो वह भारत में ही है। वेद संसार का प्राचीनतम साहित्य है। प्राचीनतम होते हुए भी विचार की उच्चता और प्रौढता तथा दृष्टि की विशालता की दृष्टि से वेद आज भी बेजोड़ है। इससे ऐसा अनुमान लगाना अनुचित नहीं होगा कि वैदिक ऋषियों द्वारा वेदों की रचना के काफी पहले से भारतीय सभ्यता प्रौढता प्राप्त कर चुकी थी। स्वयं वेदों में ही ऐसे साक्ष्य हैं जिनसे ऐसा प्रतीत होता है कि अनवरत प्रयत्न और संघर्ष के बाद ही वैदिक संस्कृति ने अपना वह रूप विकसित किया है।

हमारी सांस्कृतिक प्राणवत्ता

तब से आज तक किसी न किसी रूप में वैदिक संस्कृति की वह धारा अनवरत रूप से प्रवाहित होती चली आ रही है। परन्तु यह निःसंकोच रूप से कहा जा सकता है कि वैदिक संस्कृति के इस सुदीर्घ प्रवाह-काल में उतार चढाव के भी अनेक अवसर आए। परन्तु इन उतार चढावों के बावजूद वैदिक संस्कृति ने अपनी प्राणवत्ता और तेजस्विता नहीं खोई। इकसवीं शताब्दी पूर्वकाल में भारतमें जितने विदेशी आक्रमण हुए, सबका न केवल इसने दृढता के साथ मुकाबला किया बल्कि यूनानी, शक, सीथियन हूण आदि अनेक विदेशी आक्रमणकारी जातियों को अपनी प्राणवत्ता के कारण आत्मसात भी कर लिया लेकिन ऐसा लगता है कि छठी सातवीं शताब्दी तक आते आते भारतीय संस्कृति की जठराग्नि मन्द पड़ गई और उसकी प्राणवत्ता भी अत्यन्त क्षीण हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि यह विदेशी आक्रमणकारियों का मुकाबला करने में असमर्थ हो गई और इसके प्रभाव का ऐसा युग शुरु हुआ जिसके बाद एक लम्बे समय तक अपनी उस प्राणवत्ता को पुन: पाने में असमर्थ रही।

भारत के इस पराभव का क्या कारण है? अनेक विद्वानों ने अनेक प्रकार की अटकलें लगाई हैं पर इनमें से अधिकांश अटकलें विदेशी विद्वानों के उस चिन्तन से प्रभावित रही हैं जिनका भारतीय संस्कृति और परम्परा का ज्ञान अपूर्ण और अधकचरा था। आज यह सभी मानते है कि भारत में धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है और भारत राजनैतिक अर्थ में नहीं बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक अर्थ में सदा से एक राष्ट्र रहा है। इसलिए भारत की राजनैतिक सीमाएं बराबर बदलती रही हों, परन्तु इसकी सामाजिक सांस्कृतिक मान्ताएं उन्हीं आदर्शों को लेकर आज तक चलती आ रही है।

सामाजिक असंतुलन का विष-वृक्ष

फिर क्या कारण है कि भारत का पराभव हो गया? इसका सब से बड़ा कारण है भारतीय समाज के उस संतुलन का बिगड़ जाना जिस पर वैदिक युग से भारतीय समाज टिका हुआ था। मनु-स्मृति में कहा गया है–आचार: परमोधर्म: अर्थात् आचार ही परम धर्म है। इससे स्पष्ट है कि भारतीय समाज में आचार का स्थान सर्वोपरि है। वर्ण-व्यवस्था का आधार आचार ही था। इसलिए गीता में गुण और कर्म के आधार पर समाज का विभाग किया गया है। इससे स्पष्ट है कि गुण और कर्म जनित इस विभाग में आचार के लिए स्थान है, जन्म के लिए नहीं। आज कई लोग भ्रमवश यह कहते हैं कि वर्ण-व्यवस्था गुण और जाति व्यवस्था एक ही है, पर यह सर्वथा असत्य मूलक है। वर्ण-व्यवस्था गुण और कर्म पर आधारित जबकि जाति व्यवस्था जन्म पर। इसीलिए वर्ण-व्यवस्था में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं है परन्तु जाति व्यवस्था में इसके लिए स्थान बना दिया है।

वर्ण-व्यवस्था जब जाति व्यवस्था में बदल गई तब भारतीय समाज का संतुलन हो गया और उसी असंतुलन से अस्पृश्यता का वह विष-वृक्ष पनपा जिसके कारण भारतीय समाज निरन्तर खोखला होता गया और विदेशियों को भारत को पराजित करने का अवसर मिला। अत: जब तक अस्पृश्यता को जड़-मूल से समाप्त नहीं किया जाता तब तक भारतीय समाज पुन: उस संतुलन को नहीं पा सकता जो वैदिक युग से इस की प्राणवत्ता और तेजस्विता का आधार रहा है।

वेदों में वर्णों के सम्बन्ध में जो अलंकारिक कथन आया है उसमें मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और पाद से शूद्र की उत्पत्ति की बात कही गई है। यह अलंकारिक वर्णन चार वर्णों की पारस्परिक निर्भरता और अन्योन्याश्रयता की ओर इंगित करता है। पर जब भारत के पराभव का युग आया तब इसी कथन को लेकर एक वर्ण से दूसरे वर्ण की श्रेष्ठता और विलक्षणता का प्रतिपादन किया जाने लगा। इससे जो वातावरण बना उसमें स्वभावत: जाति-व्यवस्था उठ खड़ी हुई जिसने भारतीय समाज को उस कलई में डाल दिया जिस के कारण इसकी आन्तरिक एकता समाप्त हो गई। इसके कारण भारत की जठराग्नि मन्द पड़ गई और विदेशी आक्रमणकारियों को आत्मसात करना तो दूर उनका मुकाबला करने में भी यह असमर्थ हो गई।

अस्पृश्यता अवैदिक अवधारणा

वेद में आया है—कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् हम सारे विश्व को आर्य बनायें। यदि वेद जन्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था को मानते तो उनकी ऐसी मान्यता नहीं होती और न वे सारे विश्व को आर्य बनने के लिए इस रूप में आह्वान करते। अत: अस्पृश्यता का कोई भी वैदिक आधार ढूंढना खरगोश के सींग ढूंढने के समान है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि साधारण लोगों का ही नहीं बल्कि विद्वानों का ध्यान भी इस बात की ओर नहीं जाता है कि दैत्य और देवता दोनों ही कश्यप ऋषि की संतान थे और वस्तुत: सौतेले भाई थे। कश्यप ऋषि की पत्नी दिति से दैत्य उत्पन्न हुए और अदिति से आदित्य अर्थात् देवता उत्पन्न हुए। अत: जिस आधार पर वर्ण-व्यवस्था और जाति-व्यवस्था तथा जाति-व्यवस्था का प्रतिपादन करने के लिए

(शेष ५ पर)

सम्पादकीय

पाठकों की शंकाओं का समाधान

श्री अशोककुमार आर्य ग्रा० पो० बेगा जिला सोनीपत तथा श्री बीरबलसिंह आर्य ग्राम दड़वा पो० देवघर जिला अम्बाला के आर्य सिद्धान्त विषयक कुछ प्रश्न प्राप्त हुए हैं। सबके हित की दृष्टि से उनका उत्तर सर्वहितकारी के माध्यम से दिया जा रहा है।

अशोककुमार के प्रश्नों का उत्तर

प्रश्न—वैसे तो शराब जहर है आत्मा शरीर दोनों या नाश करती है लेकिन जब कहते हैं कि इसको दवाई के रूप में लिया जाये तो यह फायदा करती है। आप इससे कहां तक सहमत हैं।

उ०—जब आप स्वयं इसे जहर स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि यह आत्मा और शरीर दोनों का नाश करती है तब दवाई के रूप में लेने के लिए क्यों तैयार हैं। शरीर से बढ़कर धर्म है। यदि धर्म का नाश और शरीर की क्षणिक रक्षा होती है तो धर्म को प्राथमिकता देनी चाहिए।

प्र०—मान लो एक व्यक्ति ने सर्वदा अच्छे कर्म किए हैं और बुढ़ापे में उसे दुःख घेर लेता है। तो यह कहा जाता है, शायद यह इसके पिछले बुरे कर्मों का फल वा भोग रहा है। अर्थात् पिछला कर्जा चुका रहा है और इस जन्म में जो अच्छा किया है इसका सुफल अगले जन्म में मिलेगा। इसी तरह मान लो एक चोर ने किसी के घर चोरी की और उसे पकड़कर पीटा गया तो क्या उसे इस आधार पर छोड़ नहीं देना चाहिए था कि यह तो उसने पूर्व जन्म का बदला लिया है। अर्थात् जो उसका कर्ज दूसरे पर चढ़ा हुआ था वह उसने चोरी करके उतार लिया है इसलिए उसे दण्ड क्यों दिया गया।

उ०—संसार में सुख और दुःख का सज्जन और दुर्जन दोनों के साथ सम्बन्ध है। इस जन्म में पूर्व जन्मों के कर्मों का भी फल मिलता है। यह शरीर भी पूर्वजन्म के कर्मों का ही फल है। किसी कर्म फल को मनुष्य यह नहीं बतला सकता कि यह अमुक जन्म का फल है। परमात्मा की व्यवस्था से फल मिलता रहता है। चोर ने जो चोरी की है इसमें कोई प्रमाण नहीं कि यह उसके पूर्वजन्म के कर्मों का फल दिया जा रहा है। फल ईश्वर देगा, चोर नहीं। इस जन्म में नए कर्म भी किए जाते हैं।

प्र०—पत्थर जड़ पदार्थ है यदि भूमि में जोतकर डाल दिया जाए और उसको पानी आदि भी दिया जाये तो वह बढ़ता नही है। इसके विपरीत यदि गेहूँ आदि को जुती हुई भूमि में डाल दिया जाये और पानी आदि देकर उसकी सुरक्षा की जाये तो वह बढ़कर अन्न का रूप हमें प्रदान करता है। इसका मतलब यह हुआ कि इनमें जीव होता है और इसको हम खाते हैं और इसकी तरह मांस आदि भी खाया जाता है अर्थात् जीवहत्या की जाती है। दूसरे रूप में जीव को खाया जाता है। लेकिन अन्न आदि को खाना पाप नहीं समझा जाता जबकि मांसभक्षण को पाप समझा जाता है जबकि दोनों में जीव है। तो क्या अन्न का सेवन भी पाप है।

उ०—जगत् जड़ और चेतन भेद से दो प्रकार का है। वृक्ष औषधि आदि जड़ जगत् में आते हैं चेतन में नहीं। जड़ होने से इनमें पीड़ा आदि की कोई अनुभूति नहीं होती इसलिए हिंसा नहीं है। वेद में लिखा है—'अजीजनद ओषधीर्भोजनाय' ईश्वर ने औषधियों को भोजन के लिए उत्पन्न किया है गौ आदि प्राणियों के मांस-भक्षण तथा अन्न आदि भक्षण में आकाश-पाताल का अन्तर है।

प्र०—जब स्वामी दयानन्द ने गृहस्थ जीवन को अपनाया ही नहीं तो उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश में विवाह सम्बन्धी बातों का स्पष्ट उल्लेख कैसे कर दिया क्योंकि जब तक नीम को चखा ही न जाये तब तक पता थोड़ा ही लगता है कि यह कड़वा है?

उ०—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इन चार प्रमाणों से पदार्थों को जाना जाता है। यह कोई आवश्यक नहीं कि उसे प्रत्यक्ष ही करके जाना जाए। सब जानते हैं कि जहर के खाने से मनुष्य मर जाता है, किन्तु कितने लोगों ने उसे खाकर देखा है। पृथिवी, सूर्य व चन्द्रमा के पश्चभाग को भी हम मानते हैं किन्तु देखा नहीं है। इस प्रकार अनुमान तथा शब्द प्रमाण से उन्हें जानते हैं। महर्षि ने सब शब्द प्रमाण से जाना है, प्रत्यक्ष प्रमाण से नहीं।

बलवीरसिंह आर्य के प्रश्नों का उत्तर

प्र०—सीता का जन्म जमीन खोदकर एक घड़े में हुआ यह कैसे?

उ०—सीता का जन्म घड़े से हुआ अथवा खूड से वह पैदा हुई यह मान्यता पौराणिक सम्प्रदाय की है। संस्कृत भाषा में सीता खूड को भी कहते हैं। हो सकता है इसके आधार पर किसी ने ऐसी कल्पना की है। सीता राजा जनक की बेटी थी।

प्र०—लक्ष्मण ने सीता के सिर्फ पैर ही कैसे देखे क्या और शरीर उसका नहीं देखा?

उ०—लक्ष्मण को जब सीता के आभूषण दिखलाए तब उसने यह कहा कि मैं सीता के अन्य आभूषणों नहीं पहचान सकता। मैं केवल सीता के पांव के आभूषणों को पहचान सकता हूं क्योंकि मैं उन्हें नित्य चरणों में प्रणाम करता था। इससे यह अनुमान किया जाता है कि लक्ष्मण ने सीता के अन्य शरीर को नहीं देखा था।

प्र०—जब रावण सीता जी को उठा लेगया था और उसको अपनी स्त्री बनाने के लिए लेगया था तो रावण ने सीता को अपने पास दो मास रखा यह हम सच्ची बात कैसे मानें कि वे सीता जी से सम्भोग नहीं कर सके और महर्षि दयानन्द जी के इसके बारे मे क्या विचार हैं जब रावण को मारकर श्री रामचन्द्र जी वापिस आये तो उन्होंने नकली सीता को जलाकर असली सीता को अग्नि में से पैदा किया क्या यह बात सच्ची है?

उ०—रावण सीता को ले गया और अपनी पत्नी बनाना चाहता था। बलपूर्वक वह अपनी पत्नी भी बना सकता था किन्तु सीता की इच्छा के विरुद्ध उसने ऐसा नहीं किया। सीता सहमत नहीं थी। असली सीता को अग्नि में से पैदा करने की बात सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से मिथ्या है।

प्र०—रावण को चार वेदों का विद्वान् कहते हैं। फिर वह रावण (ऐबी) कैसा है जो चारों वेदों का विद्वान् भी ऐसा कुकर्मी हो जाये।

उ०—रावण विद्वान् था किन्तु साक्षर व्यक्ति जब विपरीत आचरण करता है तब वह 'राक्षस' कहाता है। इसलिए रावण राक्षस कहाया। 'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः' आचार-हीन को वेद भी पवित्र नहीं करते।

प्र०—कुछ लोग यह कहते हैं कि ये आर्यसमाजी तबीज डोरा तागे आदि की तो पूरी आलोचना (काट) करते हैं लेकिन अपने तागे (उनेऊ) यज्ञोपवीत की प्रशंसा करते हैं और हमारे तागे को गले में से निकलवा देते हैं। लेकिन अपने तागे (जनेऊ) पहनावा देते हैं।

उ०—यज्ञोपवीत (जनेऊ) और तबीज आदि में बहुत अन्तर है। जनेऊ विद्या का चिह्न है। इसे तीन लोकों की विद्या प्राप्त करने के लिए

(शेष ५ पर

हरयाणा के कोने कोने में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का ५६ वाँ बलिदान दिवस गत सप्ताह हरयाणा प्रदेश के कोने कोने में श्रद्धापूर्वक मनाये जाने के समाचार प्राप्त हुए हैं जिन्हें संक्षिप्त रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

१—सिरसा

२३ दिसम्बर को आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में स्वामी श्रद्धानन्द जी को जीवनी पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन श्री दीवानचन्द जी लैंडलार्ड की अध्यक्षता में किया गया। इसमें ७ विद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। प्रथम मुकेशकुमार वर्मा, द्वितीय श्री संजय आर्य तथा श्री राकेश तृतीय स्थान पर रहे। इनको पुरस्कृत किया गया। चलविजयोपहार खालसा विद्यालय को दिया गया। विद्यालय के प्रबन्धक श्री नित्यानन्द जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन तथा उन द्वारा किये गये सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यों पर प्रकाश डाला। इस शुभावसर पर श्री दीवानचन्द जी ने ५१०० रुपये का आर्थिक सहायता विद्यालय को दी।

२—फरीदाबाद

२३ दिसम्बर को आर्यसमाज सैक्टर २३ न्यूटाउनशिप में यज्ञ की कार्यवाही के साथ श्रद्धापूर्वक मनाया गया। स्थानीय वक्ताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को महान् राष्ट्र भक्त, समाज सुधारक तथा आदर्श वीर संन्यासी बताया और उनके पद चिन्हों पर चलने की प्रेरणा की।

३—पलवल

२३-१२-८२ को आर्यसमाज नई कालोनी में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति पं० बालदिवाकर हंस, हरयाणा के आवासमन्त्री चौ० कल्याणसिंह, भू० पू० संसद सदस्य श्री रामचन्द्र 'विकल' आदि नेताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर अपने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर आर्य वीर दल पलवल ने स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तकालय के लिए ५०१) का अनुदान भी दिया।

४—भिवानी

२३ दिसम्बर को आर्यसमाज घण्टाघर में पं० फूलचन्द शर्मा निडर की अध्यक्षता में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस सम्पन्न हुआ। इस अवसर श्रीमती सत्यवती आर्या, श्री ओमप्रकाश गोयल, श्री गणपत सिंह आर्य, प्रो० चन्द्रभानु आर्य, श्री ओमसिंह चौहान तथा श्री राधाकृष्ण अग्रवाल ने स्वामी जी के शिक्षा, सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में किये गये योगदान का उल्लेख किया।

५—गुड़गांव

२४ दिसम्बर को आर्यसमाज अर्जुननगर में सभी आर्यसमाजों की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सभा के नवयुवक विद्वान् उपदेशक पंडित सुरेशकुमार शास्त्री विद्यावाचस्पति तथा अन्य वक्ताओं के प्रभावशाली प्रवचन तथा सभा के भजनोपदेशक पं० मुन्शीलाल के मनोहर भजन हुए। इस अवसर पर सभा को २०१) वेद प्रचारार्थ दिया गया।

६—रोहतक

२६ दिसम्बर रविवार को आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान में भक्तसिंह पार्क में स्वामी जीवनानन्द जी सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता की अध्यक्षता में बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पूर्व संसद सदस्य पं० शिवकुमार शास्त्री, पं० बाल दिवाकर हंस, वैद्य भरतसिंह आर्य, कुमारी सुषमा आर्या के स्वामी जी पर व्याख्यान तथा पं० विजय भूषण आर्य एवं श्रीमती सुषमा आर्या एम० ए० के संगीत हुए। पंडित बालदिवाकर हंस ने इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द की इच्छाओं के अनुसार शुद्धि आन्दोलन चलाने तथा राष्ट्र विरोधी अकालियों की चुनौती का मुकाबला करने के लिए हरयाणा रक्षा वाहिनी को सहयोग करने का जनता से अनुरोध किया।

७—कुरुक्षेत्र

२६ दिसम्बर को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में चौधरी सत्यदेवसिंह की अध्यक्षता में बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को विश्व का महान् क्रान्तिकारी बताते हुए राष्ट्र की एकता को सुदृढ बनाने की अपील की। इसी उपलक्ष में डा० देवव्रत योगाचार्य की देखरेख योग शिविर का आयोजन भी किया गया।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

भूल सुधार

सर्वहितकारी के गतांक में हरयाणा में शुद्धि समाचार के अन्तर्गत भूलवश ग्राम पेंगा जिला जीन्द के स्थान पर ग्राम बेगा जिला सोनीपत छप गया। अतः पाठक भूल सुधार कर पढ़ें।

वैद्य रतनसिंह आर्य शुद्धि प्रचारक

आर्य पर्व सूची १९८३

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के परिपत्र के अनुसार आर्य पर्व सूची इस प्रकार है—

पर्व	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी तिथि
मकर संक्रान्ति	१४ माघ शुक्ल २०३९	१४-१-१९८३
वसन्त पंचमी	५ फा० शुक्ल २०३९	१९-१ ,,
सीताष्टमी	८ फाल्गुन २०३९	५-२ ,,
दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि)	१४ फा० २०३९	११-२ ,,
वीर लेखराम तृतीया	३ फाल्गुन सु० २०३९	१६-२ ,,
नवसस्येष्टि होली	१५ ,, ,, ,	२८-३ ,,
नव सम्वत्सरोत्सव	१ चैत्र शु० २०४०	१४-४ ,,
रामनवमी	९ चैत्र ,, ,,	२१-४ ,,
हरितृतीया	३ श्रावण शु० ,,	११-८ ,,
श्रावणी उपाक्रम	१५ श्रावण शु० २०४०	२३-८ ,,
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	८ भाद्र० वदि ,,	३१-८ ,,
गुरु विरजानन्द दिवस	३ आ० शु० ,,	९-१० ,,
विजय दशमी पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जयन्ती	१० आ० शु० ,,	१६-१० ,,
ऋषि निर्वाण दिवस	३० कार्तिक वदी ,,	४-११ ,,
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	४ माघ वदी ,,	२३-१२ ,,

टिप्पणि—१-इन्हें आर्यसमाज के प्रचार और वैदिक धर्म के प्रसार का महान् साधन बनाना चाहिए।

२- देशी तिथियों के घट बढ जाने पर अंग्रेजी तारीखों में परिवर्तन हो सकता है। सभा मन्त्री

आर्ष शिक्षा केन्द्र

शाहबेरी (गाजियाबाद) में योग-आश्रम की स्थापना

लाला दोपचन्द आर्य कमला नगर दिल्ली के नाम से आज सारा आर्यजगत् परिचित है। उन्होंने अपने जोवन के अन्तिम १५ वर्षों में आर्ष साहित्य के प्रचार के लिए बड़ा भारो कार्य किया है। महर्षि के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों को लागत-मात्र मूल्य पर छापा और बहुत-सा साहित्य निःशुल्क भी वितरित किया। दयानन्द सन्देश पत्रिका के माध्यम से मतवादी लोगों को मुँह-तोड़ उत्तर दिए। महर्षि के वेदभाष्य की भास्कर नामक व्याख्या प्रकाशित की। महर्षि के ग्रन्थों का एक वैदिक कोष तैयार कराया। वे महर्षि के एक एक शब्द पर अगाध श्रद्धा रखते थे और महर्षि की योजनाओं को एक क्रियात्मक रूप देने की बड़ी तड़प थी। आर्यों के दौर्भाग्य से उनका गत वर्ष २८ दिसम्बर को स्वर्गवास हो गया।

उनकी उक्त लय-तिथि दिनांक २८-१२-८२ को शाहबेरी में प्रातःकाल यज्ञ-सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मेरे साथ स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती (गुरुकुल झज्जर), पण्डित राजवीर शास्त्री लाला दोपचन्द आर्य के परिवार के सदस्य तथा उनके श्रद्धालु जन उपस्थित थे। लाला जी ने यहां लगभग नान सो बीघा जमीन स्वर्गवास से कुछ मास पूर्व खरीदी थी और वे चाहते थे कि यहां एक योग-आश्रम स्थापित किया जाए। यज्ञ के उपरान्त उपरिलिखित विद्वानों तथा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अधिकारियों की एक आवश्यक बैठक हुई जिस में लाला जी की पवित्र भावना के अनुरूप यहाँ योग-आश्रम की स्थापना का निर्णय लिया गया। प्रारम्भ में इस आश्रम में एक विद्यालय प्रारंभ किया जाए जिसमें एक उच्चकोटि का आचार्य हो तथा कुछ विद्यार्थी जो केवल आर्ष पाठविधि से शिक्षा प्राप्त करके महर्षि के कार्य में ही अपना जीवन लगाने के इच्छुक हों, उन्हें प्रवेश दिया जाए। इस कार्य के लिए यहां अभी मकान आदि बने हुए हैं। लगभग ५० कर्मचारी इस भूमि पर काम करते हैं। चकबन्दी का कार्य पूरा होने पर इस संस्था का पूर्ण रूप से विकास किया जाएगा। लाला जी की पत्नी बालमती देवी तथा उनके पुत्र वेदपाल, धर्मपाल तथा सत्यपाल आदि इस कार्य में बहुत रुचि ले रहे हैं। भाई राजवीर जी शास्त्री भी बड़ी लगन से काम कर रहे हैं।

—सुदर्शनदेव आचार्य

सम्पादक के नाम पत्र

सर्वहितकारी की धूम

आपके साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी का आर्य संन्यासी विशेषांक मिला। विशेषांक वास्तव में आकर्षक एवं प्रभावशाली था। बड़े अच्छे-अच्छे लेख पढ़ने को मिले जिनको पढ़कर काफी जानकारी मिली तथा ज्ञानवृद्धि भी हुई। लेखों का चयन ठीक ढंग से किया गया है सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा। सर्वहितकारी का यह अंक विशेषांकों की शृंखला में एक नई कड़ी है। यह पत्र अपने विशेषांकों की परम्परा बड़े अच्छे ढंग से निभा रहा है। इस विशेषांक की सफलता के लिए आप विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

—रामकुमार आर्य

[पृष्ठ २ का शेष]

इनके भिन्न-वंशी होने की बात प्रचारित की जाती है वह भी सर्वथा निराधार ही है।

पूरे वैदिक साहित्य में जन्म पर आधारित अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं है। इतना ही नहीं बाल्मीकि जैसे व्यक्ति को आदि कवि मानकर उन्हें ऋषियों में इतना ऊंचा स्थान दिया गया। यह भी इस बात का प्रमाण है कि मूल भारतीय समाज व्यवस्था में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं है।

अस्पृश्यता वस्तुतः हमारे लिए सबसे बड़ा कलंक है। जो भारतीय संस्कृति अद्वैत दर्शन को मानती है, सृष्टि के कण-कण में ब्रह्म के अस्तित्व को स्वीकार करती है, वह इस प्रकार के भेद को प्रश्रय दे, इस से अधिक आश्चर्यजनक विरोधाभास और कुछ नहीं हो सकता। इसने भारतीय समाज को जर्जर कर दिया और जब तक अस्पृश्यता को जड़-मूल से दूर नहीं कर दिया जाता तब तक पुनः भारतीय समाज की प्राणवत्ता और तेजस्विता वापस नहीं आ सकती; और जब तक ऐसा नहीं होता तब तक भारत अपने ऐतिहासिक दायित्व को पूरा नहीं कर सकता, जिसके लिए विधाता ने भारत को पुनः एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में अपने दायित्व को निभाने का अवसर प्रदान किया है।

(युगवार्ता से साभार)

(३ का शेष)

तीन प्रकार के दुःखों के निवारण के लिए धारण किया जाता है। तदनुसार आचरण किया जाता है। संन्यास में उद्देश्य पूर्ति के उपरान्त इसे त्याग दिया जाता है। ब्रह्मचर्य आदि आश्रमों के साथ इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। तबीज आदि में यह बात नहीं है। पाखण्डी लोग कहते हैं कि इसके धारणमात्र से रोग-निवृत्ति हो जाएगी। तबीज डोरा किसी रोग की औषध नहीं है।

प्र०—यह मदारियों के पास की विद्या है कि ये कुछ से कुछ दिखाते है। जैसे अपने पास कुछ भी न होते हुए रेडियो वस्त्र सर्प आदि हो दिखा देते हैं। इसका कोई सही उत्तर दे सकते हैं।

उ०—मदारियों के पास हाथ की सफाई के अतिरिक्त कोई विद्या नहीं है।

—सुदर्शदेव आचार्य
सम्पादक

आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार का वार्षिक उत्सव

१७ से १९ दिसम्बर तक आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार का ६१ वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ, जिसमें स्वामी ध्यानानन्द, आचार्य सत्यप्रिय, प० ओमप्रकाश सिद्धान्त शिरोमणि, आचार्या राजबाला, महात्मा चेतनदेव, ब्र० कर्मपाल, बाबा मस्ताना, ब्र० सिद्धार्थ शुद्ध चैतन्य उर्फ अशफाकखान के व्याख्यान तथा पंडित आशानन्द, श्री जगतराम, श्री सुलतानसिंह के भजन हुए। संस्कृत पाठशाला की स्थापना हेतु ब्र० चैतन्य जी ने अपना सारा जीवन तथा दस हजार रुपये देने की घोषणा की यज्ञ के अवसर पर १० पुरुषों तथा ६ महिलाओं ने यज्ञोपवीत धारण किये। अत्तरसिंह आर्य मन्त्री

आर्योपदेशक पं० त्रिलोकचन्द शास्त्री की प्रथम वर्षी

आर्यसमाज के यशस्वी उपदेशक तथा लेखक पं० त्रिलोकचन्द शास्त्री की प्रथम वर्षी २९ दिसम्बर को जालन्धर में मनाई गई। इस अवसर पर विद्वानों ने उन्हें श्रद्धांजलियां दी और उनके जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। –वेदसुमन वेदालंकार

आर्यसमाज बांकनेर में मन्दिर का उद्घाटन

आर्यसमाज बांकनेर (दिल्ली) में ५ से १२ दिसम्बर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ में हजारों लोगों ने भाग लिया। पं० देवेन्द्र शास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा थे। श्री उदयसिंह की अध्यक्षता में ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर में २५ नवयुवकों ने आर्यसमाज के सिद्धान्तों का शिक्षण प्राप्त किया। ८ व ९ दिसम्बर को विशाल कुश्ती दंगल में ८० पहलवानों ने भाग लिया। १२ दिसम्बर को ... ट्रैक्टरों तथा ट्रकों के जलूस के साथ स्वागत किया गया। श्री देशराज बहल की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रेमनाथ एडवोकेट, श्री सरदारीलाल वर्मा ने व्याख्यान दिया। श्री सत्यपाल पहलवान ने पुरस्कार वितरित किये। इसी अवसर पर नवनिर्मित आर्यसमाज मन्दिर का वैदिक विधि से स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने उद्घाटन किया तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को अपना आशीर्वाद दिया।

मांगेराम आर्य एम० ए० प्रधान

भगतसिंह की कौम क्या थी ?

चण्डीगढ़, २७ दिसम्बर (सागर) हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने आज यहां अकालियों के इस दावे पर चोट की कि सिख पृथक कौम है। प्रो० शेरसिंह ने आज यहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि परम्परागत भाव से अकाली दल के अध्यक्ष हरचंदसिंह लौंगोवाल तथा लोकदल (च) के अध्यक्ष चरणसिंह एक कौम के हैं अर्थात् दोनों ही जाट हैं। अन्तर केवल इतना है कि लौंगोवाल सिख हैं जबकि चरणसिंह आर्यसमाजी हैं।

शहीदे आजम भगतसिंह भी जाट थे, सिख थे और आर्यसमाजी भी थे। उन्होंने लौंगोवाल से पूछा कि शहीदे आजम भगतसिंह की कौम क्या थी ?

(२८-१२-८२ पंजाब केसरी)



९ जनवरी १९८३ को खरखोदा व बेरी में रक्षा वाहिनी के जलसे

पंजाब के अकालियों ने एक आंदोलन चला रखा है। उनकी कुछ मांगें हैं जिनका विपरीत प्रभाव हरयाणा पर पड़ेगा, जैसे कि प्रधान मन्त्री के १९७० के फैसले के विरुद्ध हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर-फाजिल्का को हरयाणा में न मिलाना तथा हरयाणा के और क्षेत्रों को पंजाब में मिलाने की जिद करना, पंजाब के क्षेत्र से हरयाणा के लिए खोदी जा रही नहर के कार्य में रुकावटें डालना, नहरों के हैडवर्क्स पर केवल पंजाब का ही नियंत्रण रखना, हरयाणा में पंजाबी भाषा को बलात् लादना इत्यादि। अपनी इन हरयाणा-विरोधी अनुचित मांगों को मनवाने के लिए भूतपूर्व सिख सैनिकों, पुलिस कर्मचारियों आदि की जत्थेबन्दी करके भारत सरकार पर दबाव डाला जा रहा है।

हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से इनकी अनुचित मांगों का विरोध करने के लिए सत्याग्रह करने की तैयारी की जा रही है। इसी उद्देश्य से ९ जनवरी १९८३ को आर्यसमाज खरखोदा जिला सोनीपत में प्रातः ११ बजे तथा २ बजे स्वराजगंज बेरी में जलसे हो रहे हैं जिनमें त्यागी तपस्वी आर्य नेता स्वामी ओमानन्द जी महाराज, हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह भूतपूर्व रक्षा राज्य मन्त्री, पण्डित धर्मचन्द विद्यालंकार एम० ए० प्रचार मन्त्री, बहन किरणमयी आर्या संयोजक आदि नेता जलसे में जनता को सम्बोधित करेंगे।

संयोजक

हरयाणा रक्षा वाहिनी तथा आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं के नाम परिपत्र

माननीय प्रधान जी/मन्त्री जी, सादर नमस्ते।

१२ दिसम्बर १९८२ को दयानन्द मठ रोहतक में हरयाणा रक्षा वाहिनी की सभी शाखाओं की सम्मिलित बैठक हुई थी। इस बैठक में अकालियों द्वारा हरयाणा में पंजाबी को दूसरी भाषा लादने, चण्डीगढ तथा हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का के अतिरिक्त जिला सिरसा, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, करनाल के हरयाणा के क्षेत्रों की जो मांग कर रहे हैं इस पर विस्तार पूर्वक विचार विमर्श किया गया। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के प्रस्ताव पर सभी कार्यकर्त्ताओं ने सर्वसम्मति से निर्णय किया गया है कि हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जावे।

अत: आप से सानुरोध प्रार्थना है कि अपने नगर तथा ग्राम से इस सत्याग्रह में सम्मिलित करने के लिए स्वयंसेवकों को भर्ती आरम्भ कर दीजिए तथा उनके नाम व पते लिखकर हरयाणा रक्षा वाहिनी के कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। सत्याग्रह की रूपरेखा तैयार करने के लिए १६ जनवरी १९८३ को दुर्गाभवन रोहतक में पुन: हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक रखी गई है, जिसमें सारे हरयाणा के धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता सम्मिलित होंगे और सत्याग्रहियों को सूची तैयार की जायेगी।

आशा है आप पूर्व की भान्ति राष्ट्र रक्षा के कार्यों में तन मन व धन से सहयोग देंगे और सत्याग्रहियों की सूचि तथा सत्याग्रह संचालन हेतु अधिक से अधिक धन भी भेजकर कृतार्थ करेंगे। भवदीय

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय, सस्नेह नमस्ते।

सर्वहितकारी मुझे निरन्तर मिल रहा है। हरयाणा रक्षा वाहिनी के गठन एवं उसकी गतिविधि का पंजाब के हिन्दुओं पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा है और हौसला बढा है। केन्द्रीय सरकार पर भी इससे दबाव पड़ा है और अकालियों को भी जवाबी कार्यवाही होने की आशंका ने सहमा दिया है। सभी दृष्टियों से हरयाणावासियों का यह प्रयास समयोचित एवं फलप्रद सिद्ध हुआ है। प्रचार कार्य में अतिव्यस्त होने से मैं कोई लेख नहीं भेज सका।

अभी दीपावली विशेषांक पढ़ने को मिला। पठनीय एवं सभालकर रखने योग्य है, कई लेख तो बहुत ही अच्छे हैं। डा० सुरेन्द्रसिंह कादियाण का लिखा 'महर्षि दयानन्द कितने प्रासंगिक ?' लेख आर्यों को पुनर्विचार करने के लिए विवश करता है। लेखक ने आर्यसमाज का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में आज क्या योगदान है तथा वर्तमान सन्दर्भ में आर्यसमाज अपनी जनशक्ति का उपयोग कहां अथवा कैसे कर रहा है ? इसका चित्रण कुछ ऐसे ढंग से किया है कि दिग् भ्रान्त अथवा दिशाविहीन आर्यों की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त है। आर्यसमाज के कतिपय नेताओं के भाषणों और अधिकांश पत्रिकाओं के कालमों में सर्वत्र हिन्दुत्व विराट् हिन्दु सम्मेलन, विश्व हिन्दु परिषद्, हिन्दु राज्य की चर्चा होने पर उन्होंने हार्दिक संवेदना जिन मार्मिक शब्दों में अभिव्यक्त की है उसे पढ़कर कौन आर्य है जिसका हृदय द्रवित नहीं होगा। लेखक के प्रति संवेदनापूर्ण इन शब्दों को पढ़कर तो पाठकों के हृदय पर सीधा प्रहार करती है कि आर्य शब्द के प्रति आज के आर्यसमाजियों की नीति को भांपकर यदि यह सुझाव दे दिया जाये तो कैसा रहेगा कि जब सब कुछ बदल दिया है तो आर्यसमाज का भी नाम परिवर्तन 'हिन्दूसमाज' शब्द से क्यों न कर दिया जाये ? इन शब्दों को पढ़कर मैं तो तड़प कर रह गया। वास्तव में इन पिछलग्गू नेताओं और विद्वानों लेखकों ने आर्य समाज की एक शताब्दी के सम्पूर्ण प्रयासों एवं बलिदानों को व्यर्थ सिद्ध कर उसके गौरव तथा उपयोगी स्वरूप को मिट्टी में मिलाकर रख दिया है। लेखक का सम्पूर्ण लेख ही आर्यों को प्रायश्चित्त कर भूल सुधार कर अपने दिव्य स्वरूप को धारण करने की प्रेरणा देता है। श्री पं० शान्ति प्रकाश जी का लेख 'नामहीन क्यों होते हो ?' छोटा होते हुए भी महत्त्व पूर्ण है जिसके अन्त में ऋषि के विषपान विषयक चर्चा करते हुए यह अच्छा होता यदि पंडित जी उन अन्य लेखकों के भी नाम लिख देते जिन्होंने श्रीरामादि उन लेखकों के विरोध में लेख लिखे थे। उन दिनों आर्यसमाजी पत्रिकाओं में ऐसे लेखों की हलचल मच गई थी। पण्डित जी केवल एक ही ऐसे लेखक प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु का नाम देकर रह गये। श्री सुखदेव जी शास्त्री का यह लेख महर्षि का निर्वाण नहीं, महर्षि का महाबलिदान भी अति सुन्दर एवं पठनीय है। डा० रामनाथ वेदालंकार जी का 'वेदों की दीपावली जगमग जिसने की' लेख भी स्वाध्याय प्रेमियों के लिए ज्ञानवर्द्धक है। अन्त में सत्याचरण के अमर महादेव 'महर्षि दयानन्द' लेख के लेखक श्री निहालसिंह आर्य ने यह लेख लिखकर तो पाठकों को पूर्णतया निहाल ही कर दिया। प्रत्येक वाक्य से लेखक की श्रद्धा एवं समर्पण का भाव तो महर्षि के प्रति अभिव्यक्त ही है। साथ ही लेखक का तथ्यपूर्ण सशक्त भाषा द्वारा महर्षि के जीवन तथा भावना एवं गतिविधियों पर अत्यन्त स्पष्ट प्रकाश डाला है। मन करता है इस लेख को बार बार पढ़ा जाये और पुन: पुन: प्रेरणा प्राप्त कर महर्षि के ऋण से उऋण होने के लिए पूर्णतया समर्पण भाव से महर्षि के आदेश पालन में जुटे रहें।

वेदानन्द सरस्वती
वैदिक साधु आश्रम रोपड़ (पंजाब)

आवश्यकता है

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी जो अजमेर में ३ नवम्बर ६ नवम्बर १९८३ तक मनाई जावेगी उसे सफल बनाने हेतु ऐसे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है जो अजमेर में रहकर इस समारोह को सफल बनाने में अपना योगदान व सहयोग दे सके। उनके आवास व भोजन की व्यवस्था होगी। इच्छुक व्यक्ति नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम केसरगंज अजमेर

उठ, जाग जवान देश के

उठ, जाग जवान देश के
अब समय नहीं रे सोने का
शत्रु ने तुझको ललकारा है
अब समय नहीं रे सोने का

खुमार जो तुझ पर नींद का छाया
दूर इसे भगा दे रे
हम लाल हैं भारत माता के
शत्रु को बतला दे रे

नहीं डरेंगे
किसी बालक देश को धमकियों से
उठ, जाग जवान देश के
विश्व को बतला दे रे

—सत्यभारत सावरिया
अध्यक्ष मानव अधिकार संघर्ष समिति
१२/६६१ सन्त रविदास कालोनी रोहतक

आर्यनेता प्रो० रामसिंह का पत्र

मानतीय भाई भरतसिंह जी,   सप्रेम नमस्ते।

लगभग २-३ साल से अस्वस्थ ही चल रहा हूं। आपका 'सर्वहितकारी' अब ठीक मिल रहा है। समाचार हरयाणे के मिलते रहते हैं। विशेषत: रक्षा वाहिनी की गतिविधियों की जानकारी मिलती रहती है। यद्यपि हरयाणे के हितों का तथा साधारणतया हिन्दू-हितों का भी रक्षा वाहिनी के द्वारा कुछ संरक्षण होना सम्भव होना प्रतीत होता है, परन्तु प्रतिपक्ष इतना आगे बढ गया है कि रोकथाम के लिए अधिक परिश्रम करना अनिवार्य होगा।

जब से अकाली दल ने अपने आन्दोलन में रिटायर्ड फौजी अफसरों का आह्वान किया है तब से समस्या और भी जटिल प्रतीत होने लगी हैं।

मैं अब चलने फिरने से भी लाचार हूं। श्वांस भी चढने लगता है। पत्र भी कठिनता से लिख रहा हूं। श्री आदरणीय स्वामी जी महाराज तथा प्रो० शेरसिंह जी से मेरा निवेदन है कि वह गम्भीरता से सारे मामले पर विचार करें। अभी Statesman पत्र में पढ़ रहा हूँ कि ५ सिख रिटायर्ड फौजी अफसरों ने अत्यन्त विस्फोटक वक्तव्य दिया है–वह कहते हैं कि १२ लाख सिख फौज से रिटायर्ड भारत में हैं जिन में से ९५ प्रतिशत अकाली आन्दोलन के साथ हैं। इस प्रकार के बयानों का क्या दुष्परिणाम हो सकता है–यह भी विचारणीय है।

मैं यदि क्रियाशील होता, तो अवश्य ही रोहतक आकर आप महानुभावों के साथ सम्मिलित होता–परन्तु विवश हूं।

आशा है, आप सभी स्वस्थ और सानन्द होंगे। सभी बन्धुओं को नमस्ते।

आपका
रामसिंह

शोक समाचार

१—बड़े दु:ख का विषय है कि आर्यसमाज के महान् कर्मठ संन्यासी आर्यजगत् के देदीप्यमान महर्षि दयानन्द सरस्वती के महान् सन्देश वाहक आर्ष गुरुकुल गंगीरी अलीगढ के संस्थापक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री श्रद्धेय स्वामी योगानन्द जी सरस्वती का २५ नवम्बर १९८२ के देहावसान हो गया है तदर्थ स्वामी ओमानन्द जी आचार्य गुरुकुल झज्जर ने और उनके भक्तों ने गहरा शोक प्रकट किया तथा भगवान् से प्रार्थना की है कि उनके शोकसन्तप्त मित्रों को शान्ति प्रदान करे।

२—सभा के पुराने भजनोपदेशक पं० मुन्शीलाल, धर्मपाल जी आर्य की पूज्या माता श्रीमती बसन्ती देवी जी का २०-१२-८२ को देहावसान हो गया। उनकी आयु ८५ वर्ष की थी।

हम सर्वहितकारी परिवार की तरफ से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करे।

सुरेशकुमार शास्त्री सभा महोपदेशक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ १४ जनवरी १९८३

... १,९६,०८,५३,०८



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

"आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र"

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य,

वर्ष १० अङ्क ६ १४ जनवरी १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में १० पौंड एक प्रति ३० पैसे

अकालियों की हरयाणा विरोधी मागें स्वीकार की गई तो सत्याग्रह अवश्य होगा

सत्याग्रह की तैयारी के लिए स्वयंसेवकों की सर्वत्र भर्ती आरम्भ हो गई

खरखोदा तथा बेरी की सार्वजनिक सभाओं में प्रो० शेरसिंह की ललकार

रोहतक १० जनवरी—कल ९ जनवरी को हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से प्रातः ११ बजे खरखोदा जिला सोनीपत और दोपहर बाद २ बजे बेरी जिला रोहतक में सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया गया। खरखोदा में प्रो० शेरसिंह जी का आर्यसमाज खरखोदा, रोहणा, जटोला, फिरोजपुर बांगर, सिहोटी, समाल, किड़ोहली तथा निलोठी के कार्यकर्त्ताओं ने स्वागत करते हुए हरयाणा रक्षा वाहिनी हेतु ९०० रुपये की थैली भेंट की और उन्हें विश्वास दिलाया कि आपके आह्वान पर सत्याग्रह में प्रत्येक ग्राम से भारी संख्या में सत्याग्रही जेलों में भेजेंगे। आर्यसमाज रोहणा के कर्मठ नेता महाशय दरयावसिंह आर्य ने इस अवसर पर घोषणा करते हुए कहा कि हिन्दी रक्षा आन्दोलन में रोहणा से २५० व्यक्ति सत्याग्रह में गये थे। इस बार ५०० सत्याग्रही तैयार हैं। मास्टर दीपचन्द आर्य ने जनसभा में उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को राष्ट्र तथा हरयाणा विरोधी अकालियों के विरुद्ध सघर्ष में कूदने की अपील की। ग्रामीण कार्यकर्त्ताओं ने सहर्ष सत्याग्रह के लिए अपने नाम प्रस्तुत किये।

प्रो० शेरसिंह ने अपने भाषण में हरयाणा रक्षा वाहिनी के कार्य में सहयोग देने तथा सत्याग्रह में तैयार स्वयंसेवको का धन्यवाद किया और उ वादी अकालियों के आन्दोलन का विस्तार पूर्वक उल्लेख करते हुए बताया कि पंजाब हरयाणा का बटवारा होने पर जो वचन हरयाणा को उन्होंने अपने पवित्र स्थान अकालतखत अमृतसर में दिये थे, उनसे अब वे मुकर गये हैं। उन्होंने वचन दिया था कि हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा में मिलाये जावेंगे और पानी तथा बिजली का बटवारा इन्जीनियरों की रिपोर्ट के अनुसार किया जावेगा। परन्तु अब वे भारत सरकार के निर्णय के अनुसार अबोहर फाजिल्का को पंजाब में रखने तथा चण्डीगढ को भी पंजाब में मिलाने के लिए दुराग्रह कर रहे हैं। अकाली प्रधान मन्त्री, न्यायधीश तथा जनमत के निर्णयों की स्पष्ट उलघना कर रहे हैं। हरयाणा सरकार ने २० करोड़ रुपये सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई का खर्च पंजाब सरकार को दे दिया है, परन्तु अकाली इस नहर को खोदने के कार्य में रुकावटें खड़ी कर रहे हैं। इस नहर के तैयार न होने पर हरयाणा को ६ वर्ष से ७०० करोड़ रुपये को हानि हो चुकी है अर्थात् प्रतिदिन ३० लाख रुपये का घाटा हो रहा है। पंजाब सरकार रावी व्यास नदियों का फालतू पानी पाकिस्तान को दे रहे हैं परन्तु हरयाणा को उसके हक का पानी देने को तैयार नहीं है। यदि इस नहर का पानी हरयाणा को मिल जावे तो हरयाणा की चप्पा चप्पा धरती में फसलें हो सकती हैं। इस प्रकार किसान व्यापारी तथा मजदूर भी खुशहाल हो जावेंगे।

प्रो० शेरसिंह जी ने अखिल भारतीय दलों, कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी आदि के व्यवहार की निन्दा करते हुए कहा कि वे हरयाणा तथा पंजाब में पृथक् पृथक् बोलियाँ बोलती हैं। पंजाब के हिन्दू भी हरयाणा से हो रहे अन्याय के विरुद्ध एक शब्द भी कहने से डरते हैं। उन्होंने अमृतसर में हुई एक सभा में चण्डीगढ को पंजाब में मिलाये जाने की तो वकालत की है परन्तु अबोहर फाल्का के सम्बद्ध में एक भी शब्द कहने का साहस नहीं किया। अबोहर फाजिल्का विशुद्ध हिन्दी भाषी क्षेत्र हैं, परन्तु पंजाब सरकार ने वहां हिन्दी की पढ़ाई की सुविधा नहीं दे रखी। वहाँ लड़के तो राजस्थान व हरयाणा के स्कूलों में हिन्दी पढने जाते हैं, परन्तु वहां की लड़किया अपने गांव से दूर पढने जाने से डरती हैं क्योंकि निहंग सिखों का वहां राक्षसों जैसा आंतक फेला हुआ है।

प्रो० साहब ने इस सम्बन्ध में रक्षा वाहिनी द्वारा किये गये प्रचार कार्य का विवरण देते हुए कहा कि वहा को जनता के निमन्त्रण पर मैं स्वय वहा गया। वहां के लोग हरयाणा में लिनने के लिए तड़प रहे हैं परन्तु वहां धारा १४४ लगा कर सार्वजनिक सभाएं करने पर रोक लगा दी है। अकालियों पर नियन्त्रण करने को पजाब सरकार मे शक्ति नहीं है। हमारी ओर से वहां गांवों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ एक भजन मण्डली भेजी गई थी, परन्तु वहां उनका प्रचार नही होने दिया गया। इसके विपरीत अकाली हरयाणा में पजाबी भाषा को दूसरी भाषा थोंपने पर जोर दे रहे हैं।

अतः अब समय आ गया है कि हम हरयाणावासियों को हिन्दी रक्षा आन्दोलन की भाति अकालियो से टक्कर लेनी होगी। हमारे जवान पजाब के जवानो से किसी भी प्रकार कमजोर नही हैं। आपने हरयाणा की जनता को आह्वान करते हुए कहा कि सत्याग्रह के लिए स्वयंसेवको की सूची तैयार करके १६ जनवरी को दुर्गाभवन रोहतक मे हो रही प्रान्तीय स्तर को सर्वदलीय बैठक मे लावें ताकि सत्यग्रह की रणनीति तैयार की जा सके। हमने सभी धार्मिक तथा राजनीतिक संगठनों को आमन्त्रित किया है। ९ जनवरी को ही दोपहर बाद २ बजे बेरी जि० रोहतक के जलसे में हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रचार मन्त्री श्री धर्मचन्द विद्यालंकार, चौधरी अमीरसिंह एडवोकेट, सूबेदार हरिसिंह लोकदल नेता ने उपस्थित जनता को अकालियों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार होने की अपील की। प्रो० शेरसिंह जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि उग्रवादी अकालियो को भारत सरकार ने बातचीत करने का निमन्त्रण दे दिया है और सरकार के प्रतिनिधि उनसे बात करने के लिए चण्डीगढ जा रहे हैं। हो सकता है कि

[शेष पृष्ठ २ पर]

ओ३म्

अकाली आन्दोलन की वास्तविकता

ले०—श्री बलदेवकृष्ण आर्य करनाल

आज पंजाब प्रदेश के अन्दर अकालियों ने भारत सरकार और पंजाब सरकार से खालिस्तान की स्थापना की मांग की हुई है। इस मांग की पूर्ति के लिए उन्होंने मोर्चा बाजी आरम्भ कर रखी है। कहने को तो वह कहते हैं कि हम खालिस्तान नहीं चाहते लेकिन उनके मस्तिष्क पर सिख राज्य का भूत सवार है। अंग्रेजों के राज्य में यह खुल्लम-खुल्ला पाकिस्तान के स्वर में स्वर मिलाकर खालिस्तान बनाने की मांग किया करते थे। मुसलमानों को खुश करने के लिए और हिन्दुओं से अपनी अलग हस्ती साबित करने के लिए कहा करते थे कि सिख धर्म के लिए गाय की सेवा या गाय की हत्या का विरोध जरूरी असूल नहीं है। 'न हम हिन्दू न मैं मुसलमान' यह वाक्य सुनाकर सिखों को अलग हस्ती का ढोल पीटा करते थे।

आजाद भारत के नेताओं ने जब अपने संविधान में मजहब, जात-पात, रंग, नसल आदि किसी असूल पर भी कोई खास हक किसी भारत वासी को न देने का फैसला कर दिया तो अकालियों को कुदरतीतौर पर परेशानी हुई कि अब हम हिन्दुओं से अपनी अलग हस्ती कैसे बरकरार रखेंगे? अंग्रेजों ने पूरे ६०-७० वर्ष करोड़ों रुपये खर्च करके और कई कानून और सुविधाएं देकर हमें हिन्दुओं से अलग किया था। क्या हम अब फिर हिन्दु समाज में समा जायेंगे? दसवें गुरु के बाद जो हमारे अंग्रेज बनावटी अमृतधारी लीडर 'मैकालफ साहब' इतनी मेहनत से अंग्रेजी सरकार के ऐजेंट बनकर हमें हिन्दुओं से अलग कर गये, क्या उनका किया कराया सब मलियामेट हो जायेगा? बस यही चिन्ता है जो अकाली लीडरों को खाये जा रही है। अब भारत के नये संविधान में सिखों की अलग हस्ती के कायम रहने की गुंजाइश नहीं।

अंग्रेजों के राज्य में एक किशनचन्द फौज में भर्ती नहीं हो सकता था लेकिन ज्यों ही वह अपने को सिख जाहिर करके किशनसिंह नाम लिखवाता तो उसे फौरन भर्ती कर लिया जाता था। सरकारी नौकरी में मामूली क्लर्क की तो बात ही क्या थी। इंगलैंड के पास करदा बड़े-२ सरकारी हिन्दू अफसर या केस कटवाये हुए सिखों के लड़के जब पढ़कर आते थे तो उनको अंग्रेज सरकार में नौकरी प्राप्त करने के लिए पुन: केस रखने पर नौकरी मिल जाया करती थी। सन् १९११ से सन् १९३१ तक की जनगणना में पंजाब में सिखों की संख्या एकदम दुगुनी हो गई थी क्योंकि हिन्दुओं ने सिख बनकर सरकारी दफ्तरों में प्रवेश शुरु किया। खुद मास्टर तारासिंह बचपन में नानकचन्द पुत्र पिंडीदास थे। खालसा स्कूल में मुफ्त शिक्षा के लालच में बाप ने बेटे के केस रखवा दिये और जैसे नया नया मुसलमान बहुत अल्लाह अल्लाह पुकारता है वैसे ही यह नये सिख मास्टर तारासिंह भी सिख सिख की रट लगाकर ख्याति के आसमान पर चढ़ गये। सिखों के अकाली आन्दोलन में अनपढ़ जाटों के साथ एक ग्रेजुएट स्कूल मास्टर तारासिंह के लिए लीडरशिप हासिल करना कोई मुश्किल काम न था। बार बार जेलों में जाने से उनकी खास पोजीशन हासिल हो गई।

स्वतंत्र भारत के लीडरों ने एक बड़ी गलती की कि वह अभी तक अपने आपको अंग्रेजी राज्य की पैदा की हुई मनोवृत्ति से स्वतन्त्र नहीं कर सके। अंग्रेजों ने सारे देश में हिन्दू बहुमत की तुलना में मुसलमान सिख, ईसाई, पादरी, जैन, बुद्ध आदि को अल्पसंख्यक बताकर उनको अनेक प्रकार की सुविधाएं दीं। वह हिन्दू बहुसंख्यकों की संख्या और शक्ति को कमजोर करके उसकी तरफ से स्वराज्य की मांग को कमजोर कर दिया जावे। अंग्रेज चले गये, हमने अपने संविधान में मजहब के अधिकार पर कोई अल्पसंख्यक नहीं माना। हमने सिर्फ आर्थिक आधार पर बहुसंख्यक अल्पसंख्यक माना परन्तु पुरानी मनोवृत्ति के आधीन नेता अभी भी अंग्रेज के समय के समान मुसलमान सिख, ईसाई आदि को अल्पसंख्यक बनाए हुए हैं और चुनाव में टिकटें देते समय इसका विशेष ध्यान रखा जाता है यही सारी खराबी की जड़ है जो ऐसे अल्पसंख्यकों के मस्तिष्क को खराब कर रही है। इन नेताओं का दूसरा दोष यह है कि वे हिन्दुओं को तो उचित मांगों पर अक्सर अकड़ जाते हैं परन्तु दूसरों की अनुचित मांगों के आगे भी घुटने टेक देते हैं। इस घुटने टेक पौलीसी ने अकाली नेताओं का दिमाग बिगाड़ कर रख दिया है। हम सिखों को हिन्दुओं से हरगिज अलग नहीं मानते। गांधी जी के भक्त श्रीमान् काका कालेलकर प्रधान आल इण्डिया पिछड़ी जाति कमीशन ने बड़ी निडरता के साथ कहा था कि सिखों को अब हिन्दू समाज का वैसा ही अंग बन जाना चाहिए जैसे आर्यसमाजी, जैनी, सनातनधर्मी आदि है। इन्हें अपनी अलग सत्ता का राग अब बन्द कर देना चाहिए। कुछ व्यक्ति हिन्दू सिख एकता की बातें करते हैं। जब हिन्दू सिख दो शब्द प्रयोग कर लिए जाएं तो एकता का ख्याल व्यर्थ हो जाता है।

[क्रमशः]

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह अस्वस्थ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह १२ जनवरी से तेज ज्वर से पीड़ित हैं और विलिंगडन (राम मनोहर लोहिया) हस्पताल नई दिल्ली के विशेष कक्ष (३६) में उपचार करवा रहे हैं।

आप गत ४ मास से हरयाणा रक्षा वाहिनी के संगठन को सुदृढ करने तथा सभा कार्यों में निरन्तर भ्रमण यात्रा में व्यस्त रहे हैं।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
सभामन्त्री

प्रधान मन्त्री को रिपोर्ट

हमारे विशेष संवाददाता द्वारा नई दिल्ली, १२ जनवरी। गृहमंत्री श्री प्रकाशचन्द सेठी और रक्षा मन्त्री श्री आर० वेंकटरमण ने अकाली दल के प्रतिनिधि मण्डल से कल चण्डीगढ़ में हुई बातचीत के बारे में आज यहां प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को अवगत कराया।

गृहमन्त्रालय के सूत्रों के अनुसार अगली बातचीत आगामी सप्ताह के अन्त तक दिल्ली में होने की संभावना है। उन्होंने यह बताने से इन्कार किया कि अकालियों की राजनैतिक मांगों पर समझौता होने की आशा बनी है। पर उन्होंने यह संकेत दिया कि मामला अब भी पेचीदा बना हुआ है, हालांकि बातचीत में कुछ प्रगति अवश्य हुई है।

(नवभारत टाइम्स)

(१ का शेष)

उनके दबाव में आकर उनकी कुछ मांगें मान लेवें जिनका हरयाणा की जनता पर प्रभाव पड़ेगा। अतः अकालियों पर विश्वास नहीं किया जा सकता कि वे समझौता होने पर भी उसका अमल करेंगे। अब लड़ाई आरम्भ करने का समय आ गया है अकाली भारत सरकार पर दबाव डालने के लिए भूतपूर्व सैनिकों, पुलिस कर्मचारियों की सेना तैयार करके शाही इमाम बुखारी की सहायता से पाकिस्तान से हथियार प्राप्त करने का यत्न कर रहे हैं उनके आनन्दपुर के प्रस्ताव से यह स्पष्ट हो गया है कि अकाली देशद्रोही हैं। इसके विपरीत हरयाणा की जनता राष्ट्र-प्रेमी है। उसने सदा राष्ट्र हित का सम्मान किया है। अतः अब धर्मयुद्ध हमें छेड़ना ही होगा। आर्यसमाज बेरी के अधिकारियों तथा बेरी क्षेत्र के अन्य कार्यकर्त्ताओं ने प्रो० शेरसिंह को सत्याग्रह में बढ़-चढ़ कर शामिल होने का विश्वास दिलाया। सत्याग्रह की तैयारी के लिए १२ जनवरी को दूबलधन १४ जनवरी को कासनी जिला रोहतक में हरयाणा रक्षा वाहिनी के जलसे रखने का आयोजन किया गया है। हरयाणा के कोने-कोने में सत्याग्रहियों की भर्ती आरम्भ हो रही है।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

सम्पादकीय

हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाओ

अकालियों द्वारा सेवानिवृत्त सिख सैनिकों, पुलीस कर्मचारियों की जत्थेबन्दी करने के प्रयत्नों से अब यह स्पष्ट हो गया है कि वे राष्ट्र को विघटित करने के लिए विदेशों से मिलकर षड्यन्त्र रच रहे हैं। समाचार पत्रों में यह भी प्रकाशित हुआ है कि अकाली पंजाब में समान्तर सरकार बनाकर भारत सरकार के साथ टकराव की धमकी देकर अनुचित दबाव डालना चाहते हैं। इन अलगाववादी एवं उग्रवादी अकालियों के साथ जो महानुभाव भारत सरकार के साथ समझौता करवाने के लिए मध्यस्थ बने हुए हैं, वे भी प्राय: अन्दर से अकाली हैं तथा पंजाब राज्य से सम्बन्ध रखते है। उनसे आशा नहीं की जा सकती कि वे प्रधान मन्त्री के साथ अकालियों का समझौता करवाते समय हरयाणा के हितों की रक्षा का ध्यान रखेंगे। अकालियों को सन्तुष्ट करने के लिए चण्डीगढ को तो पंजाब में मिला ही दिया जाना निश्चित है। इसके साथ हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का के दिखावे के रूप में कुछ गांव हरयाणा को दिये जा सकते हैं। इनके बदले में भी हरयाणा के जिले सिरसा, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, करनाल आदि से पंजाबी भाषी के नाम पर काफी ग्रामों को पजाब में मिलाने का षड्यन्त्र चल रहा है। यदि ऐसा हुआ तो हरयाणा राज्य बहुत घाटे में रहेगा।

उधर सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई को बन्द कराने के लिए भी अकाली काफी दिनों से मोर्चा लगाकर रुकावटें खड़ी कर रहे हैं। इस नहर की खुदाई न हो सकने के कारण हरयाणा की जनता को एक अरब रुपये की हानि प्रतिवर्ष हो रही है। यदि इस नहर से हरयाणा में पानी आ जावे तो किसानों को तो लाभ होगा ही इसके साथ कृषि उत्पादन में वृद्धि होने पर हरयाणा के व्यापारी तथा मजदूर भाइयों को भी लाभ पहुंचेगा। अकाली भाई तथा पंजाब सरकार तीनों हैडवर्क्स रोपड़, हरिके पतन तथा भाखड़ा पर केवल पंजाब का ही नियन्त्रण रखना चाहते हैं। जबकि उन पर पंजाब तथा हरयाणा राजस्थान तीनों सरकार के प्रति अधिकारियों का नियन्त्रण भारत सरकार की अध्यक्षता में होना चाहिए ताकि पानी के बटवारे में पक्षपात न हो सके।

अकालियों की एक और मांग है कि पंजाबी को हरयाणा में दूसरी भाषा का दर्जा दिया जावे। यदि उनकी मांग भी दबाव में आकर स्वीकार कर ली गई तो इसका प्रभाव हरयाणा सरकार पर हिन्दी के साथ पंजाबी में भी परिपत्र आदि छपवाने पर दुगना खर्च बढ़ेगा, इसके साथ पंजाबी जानने वाले कर्मचारियों की भर्ती करनी पड़ेगी। स्टाफ पूरा न होने पर पंजाब राज्य से उम्मीदवारों को बुलाना होगा क्योंकि हरयाणा के कर्मचारी हिन्दी भाषा का ही प्राय: ज्ञान रखते हैं। इस प्रकार हरयाणा के कार्यालयों में पंजाब के कर्मचारियों का बोलबाला हो जावेगा और हरयाणा प्रदेश में बेरोजगारी बढ़ेगी।

हरयाणा रक्षा वाहिनी को इस बात का गर्व है कि उसने सर्वप्रथम इन सम्भावित समस्याओं पर राज्य की जनता तथा हरयाणा सरकार का इस ओर ध्यान आकर्षित किया। माननीय प्रो० शेरसिंह जो कि रक्षा वाहिनी के प्रधान हैं, ने इस सम्बन्ध में भारत की प्रधान मन्त्री को ज्ञापन प्रस्तुत किया तथा सारे हरयाणे का भ्रमण कर कार्यकर्ताओं की बैठकों तथा सार्वजनिक सभाओं का आयोजन करके हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए जनमत संग्रह किया। इनके प्रयत्नों से सभी जिलों में हरयाणा रक्षा वाहिनी की शाखाएँ स्थापित हो गई तथा हरयाणा में भी आन्दोलन की तैयारी आरम्भ होने लगी। इस प्रकार हरयाणा सरकार तथा अन्य राजनीतिक दलों ने भी हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए एक स्वर से आवाज बुलन्द की और इसका यह प्रभाव हुआ कि भारत सरकार ने अकालियों की अनुचित मांगों को अभी तक स्वीकार नहीं किया है।

हरयाणा प्रदेश का दुर्भाग्य रहा है कि यहां ईमानदारी से जो प्रदेश के हितों की रक्षा करने का यत्न करता है, उसकी भी आलोचना की जाती है तथा उनके सम्बन्ध में भांति-भांति की शंकाएं की जाती हैं। सहयोग देने की बजाय कोई न कोई बहाना बनाकर उन्हें बदनाम करने का यत्न किया जाता है। यह स्वस्थ परम्परा नहीं है। प्रदेश के हितों के लिए जो भी कार्य करे, उसमें सहयोग देना चाहिए। यदि उनके कार्य करने में कोई त्रुटि हो तो अपना सुझाव देकर तन, मन, धन से सहयोग करने में ही सभी का भला होता है।

अत: मैं खुले मन से हरयाणा रक्षा वाहिनी के संयोजक के रूप में हरयाणा के सभी कार्यकर्त्ताओं तथा राजनीतिक दलों को आह्वान करता हूं कि अपने पिछले मतभेदों को भुलाकर एक मंच पर एकत्रित होकर हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सांझा कार्यक्रम तैयार करें। हरयाणा के प्रत्येक धार्मिक तथा सामाजिक संगठनों के साथ राजनीतिक दलों के कुछ प्रतिनिधियों पर आधारित एक समिति का गठन किया जा सकता है। हरयाणा रक्षा वाहिनी इस प्रकार की समिति को स्वीकार करने के लिए तत्पर है। इस मामले में हमारा अपना कोई राजनीतिक स्वार्थ नहीं है। अकाली जैसे राष्ट्रघातक मोर्चे की चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए हम सामूहिक रूप में कार्य करें तो संसार की कोई शक्ति नहीं जोकि हरयाणा के हितों को हानि पहुँचा सके।

अकाली नेता भारत सरकार पर अपना दबाव डालने के लिए जो भूतपूर्व सैनिकों की जत्थेबन्दी करके अपनी सेना तैयार करना चाहते हैं, इससे भारत की सेना के अनुशासन तथा स्वस्थ परम्पराओं पर प्रभाव पड़ेगा। राष्ट्र के सभी वर्गों ने अकालियों की इस अलगाववादी नीति की आलोचना की है। यदि उन्होंने अपनी इस राष्ट्रघातक कार्यक्रम को स्थगित न किया तो हमें भी विवश होकर अपने राष्ट्र तथा प्रदेश की रक्षा के लिए हरयाणा के वीर सैनिकों को सगठित करना होगा। हरयाणा का सैनिक वीरता में सर्वोच्च स्थान रखता है। हम नहीं चाहते कि इस प्रकार का कठोर पग उठाया जाए।

इन सभी समस्याओं पर गम्भीरता पूर्वक निर्णय लेने के लिए दुर्गा भवन रोहतक में १६ जनवरी ८३ रविवार को १ बजे हरयाणा के सभी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक दलों के कार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक हो रही है। अत: आइये इस अवसर पर मिलकर एक सांझी रणनीति तैयार करें।

भवदीय

महाशय भरतसिंह

आर्यसमाजों से नम्र निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि फरवरी मास में अपने आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव अथवा प्रचार का आयोजन करके सभा को सूचित करें ताकि सभा के उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का समुचित प्रबन्ध किया जा सके।

इस समय सभा के अधिकारियों सहित पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी पं० देवव्रत शास्त्री, प० सुरेशकुमार शास्त्री, पं० धर्मचन्द विद्यालंकार एम० ए० उपदेशक तथा पं० हरलाल जी, पं० बनारसीलाल जी, पं० शेरसिंह जी, पं० चिरन्जीलाल, पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० मुन्शीलाल भजनोपदेशक निरन्तर प्रचार कार्य पर हैं।

जीवनानन्द सरस्वती वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक

एक वेद का बगीचा

दयानन्द वेद-विद्यालय, गौतमनगर दिल्ली

संस्कृत भाषा के पठन-पाठन की एक उत्तम पद्धति वैदिक काल में प्रचलित थी। वैदिक मर्यादाओं के पतन के साथ उस पद्धति का भी लोप हो गया था। महर्षि का मत है कि वैदिक मर्यादाओं का पतन महाभारतकाल से १ हजार वर्ष पूर्व अर्थात् आज से लगभग ६००० वर्ष पहले आरम्भ हो चुका था। इस पतन-काल में भाषा, संस्कृति, सभ्यता, आहार-विहार, रीति-रिवाज सभी में एक भारी परिवर्तन आया। संस्कृत-भाषा के पठन-पाठन की भी पद्धति बिल्कुल बिगड़ गई। ६००० वर्ष के उपरान्त महर्षि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जो मथुरा में एक संस्कृत पाठशाला (छत्ता बाजार में) चलाते थे और अपने शिष्यों को प्राचीन पद्धति से संस्कृत भाषा पढ़ाते थे, उन्होंने प्राचीन पठन-पाठन पद्धति का पुनरुद्धार किया। वे प्रज्ञा-चक्षु थे। उन्होंने किसी ब्राह्मण से पाणिनीय अष्टाध्यायी का पाठ सुन-सुन कर उसे कण्ठस्थ किया था तथा भट्टोजिदीक्षित की वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी भी उन्होंने पढ़ी थी। उन दोनों ग्रंथों की तुलना एवं समीक्षा से प्राचीन ऋषिकृत ग्रन्थों की महत्ता तथा मनुष्यकृत ग्रन्थों की लघुता (निकृष्टता) का प्रकाश उनके हृदय में प्रकट हुआ। इसी आधार पर उन्होंने पाणिनीय अष्टाध्यायी की पद्धति से संस्कृत व्याकरण आदि के पठन-पाठन की रीति को पुनः प्रचलित किया। स्वामी दयानन्द आदि अपने शिष्यों को उस प्राचीन पद्धति से संस्कृत व्याकरण तथा निरुक्त आदि शास्त्र पढ़ाए। हजारों वर्षों से लुप्त हुई एक पद्धति लोक में फिर से प्रचलित हो गई। इसी पद्धति के आधार पर महर्षि दयानन्द ने प्राचीन साहित्य का दूध पानी छान दिया। असत्य का कूड़ा-करकट दूर हटाकर सत्य का अमृत निखार दिया। स्वामी दयानन्द के ही सहपाठी गुरु विरजानन्द के शिष्य पण्डित उदयप्रकाश भी अपने जीवन काल में इसी पद्धति से पढ़ाते रहे। सुना है उन्होंने वेद पर भी कुछ कार्य किया था। उनके एक सुयोग्य शिष्य हुए जिनका नाम पण्डित गंगादत्त था, संन्यास दीक्षा के उपरान्त वे स्वामी शुद्धबोध तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध थे। वे वर्षों स्वामी दर्शनानन्द द्वारा संस्थापित गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में व्याकरण आदि विषय योग्यता और बड़ी लग्न के साथ पढ़ाते रहे। उनके प्रमुख शिष्य पण्डित राजेन्द्रनाथ जी शास्त्री जो आज स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती के नाम से आर्यसमाज में प्रसिद्ध हैं, उन्होंने गुरु विरजानन्द द्वारा पुनः प्रचलित की हुई वेद के पठन-पाठन की पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली में यमुना तट पर आज से लगभग ५० वर्ष पूर्व दयानन्द वेद-विद्यालय की स्थापना की थी।

इस विद्यालय ने स्वामी ओमानन्द सरस्वती (आचार्य भगवान्देव) पण्डित विश्वप्रिय शास्त्री तथा पं० सुरेन्द्र शास्त्री आदि उच्चकोटि के त्यागी, तपस्वी, विद्वान् कार्यकर्ता आर्यसमाज को दिए। अनेक विकट परिस्थितियों के कारण यह विद्यालय बीच में लड़-खड़ा गया था। इस के भवन जीर्ण-शीर्ण हो रहे थे। कबाड़ लोगों ने उतारकर अपने चूल्हों की भेंट कर दिए थे। कुछ महा ब्राह्मण लोग इसके उच्चकोटि के पुस्तकालय को चुरा लेगए और आज भी अपने घर में बैठे हैं। इन्होंने इस विद्यालय का अपने स्वार्थ के लिए खूब प्रयोग किया और इसे जी-भर कर लूटा। स्वामी ओमानन्द सरस्वती के प्रिय शिष्य ब्रह्मचारी हरिदेव जी ने लगभग ३ वर्ष पूर्व इस मुर्झाए हुए पौधे को सम्भाला, आज इसमें भारत के कोने-कोने से आए लगभग १५० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ब्रह्मचारी जी का दिल्ली के प्रतिष्ठित-जनों में बड़ा मान-सम्मान है। उनका सारा समय महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए ही लगता है। गत मास में इस विद्यालय के चतुर्वेद पारायण यज्ञ तथा उत्सव के अवसर पर वेद सम्मेलन में सम्मिलित हुआ। वेद सम्मेलन के अध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के आचार्य पण्डित रामप्रसाद जी थे और इसके संयोजक आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् दयानन्द सन्देश के सम्पादक पण्डित राजवीर जी शास्त्री थे। स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज जो यज्ञ के ब्रह्मा भी थे, आदि उच्च कोटि के विद्वानों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। मैंने भी ऋषि दयानंद के वेदभाष्य के महत्त्व पर अपने विचार रखे। यहां विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इस विद्यालय के एक छात्र ने यजुर्वेद का पाठ सुनाया। इस ब्रह्मचारी की आयु लगभग १४ वर्ष है। इसे सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ है। यह जहां से भी पूछे वहीं से यजुर्वेद का पाठ धारा-प्रवाह सुनाता है। अनेक छात्रों को पाणिनीय अष्टाध्यायी कण्ठस्थ है। ब्रह्मचारी हरिदेव जी तथा इस संस्था के अन्य प्रेमी कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से इस संस्था में फिर से नवजीवन का संचार हो गया है। अब इसे देखकर सभी आर्यों को बड़ी प्रसन्नता होती है।

गुरुकुल की सुयोग्य स्नातिका की रोहतक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में नियुक्ति

प्राचीन पद्धति से संस्कृत भाषा का अध्ययन करने वाले विद्वानों तथा गुरुकुल जगत् को यह जानकर हर्ष होना स्वाभाविक है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिका श्रीमती कृष्णा आचार्य को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के विद्वान् कुलपति चौ० हरद्वारीलाल जी ने अपने विश्वविद्यालय से सम्बन्धित महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्राध्यापक पद पर नियुक्त किया है। उन्होंने यह नियुक्ति उक्त विदुषी स्नातिका को उनकी विशेष योग्यता के आधार पर दी है। यह विदुषी एम० ए० के अतिरिक्त आर्ष विद्यापीठ से व्याकरण, वेद तथा इतिहास तीन विषयों में आचार्य है। आचार्य परीक्षा को एम० ए० के समकक्ष माना जाता है जबकि मौलिक योग्यता में दिन-रात का अन्तर है। आचार्य (संस्कृत) परीक्षा का माध्यम संस्कृत भाषा है जब एम० ए० परीक्षा का माध्यम हिन्दी तथा इंगलिश आदि भी हो सकता है। आज प्रायः हिन्दी माध्यम से एम० ए० (संस्कृत) पास करने का प्रचलन है।

कन्या गुरुकुल नरेला भारत में एक ऐसी शिक्षण संस्था है जहां कन्याओं को प्राचीन पद्धति से सम्पूर्ण पाणिनीय व्याकरण अर्थात् अष्टाध्यायी और महाभाष्य निरुक्तशास्त्र, छन्दशास्त्र, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त दर्शन, ईश आदि ग्यारह उपनिषद्, रामायण, महाभारत और मूल वेद पढ़ाए जाते हैं। पंजाब विश्वविद्यालय तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की एम० ए० कक्षा में सिद्धान्तकौमुदी के माध्यम से जो कारक तथा उदात्त आदि वैदिक स्वर एम० ए० कक्षा में पढ़ाए जाते हैं वे इस शिक्षा संस्था में माध्यमिक कक्षा में पढ़ा दिए जाते हैं। इसके अतिरिक्त सांख्य, योग, न्याय, वेद, कादम्बरी (साहित्य) आदि विषय भारतीय विश्वविद्यालयों में एम० ए० कक्षा में आंशिक रूप में पढ़ाए जाते हैं जबकि इस शिक्षा-संस्था में ये विषय शास्त्री (बी० ए०) परीक्षा में समाप्त हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त उक्त विश्वविद्यालयों में ऋग्वेद के कुछ निर्धारित सूक्त एम० ए० में पढ़ाए जाते हैं जबकि यहां यजुर्वेद के ३२ अध्याय शास्त्री परीक्षा तक पूरे हो जाते हैं। सम्पूर्ण पाणिनीय व्याकरण के पठन-पाठन की व्यवस्था केवल इन प्राचीन पद्धति की गुरुकुल शिक्षा-संस्थाओं में ही है। इतना होने पर भी संस्कृत भाषा के क्षेत्र में प्राचीन गुरुकुल पद्धति को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। गुरुकुल के विद्वान् स्नातक तथा विदुषी स्नातिकाओं के उन्नति के द्वार खोलने में बहुत बल लगाना पड़ता है। ऐसे सुयोग्य स्नातक व स्नातिकाओं को तथा प्राचीन गुरुकुल पद्धति को रोहतक विश्वविद्यालय के विद्वान् कुलपति ने उचित मान देकर उनका उत्साह बढ़ाया है, इस लिए वे अत्यन्त धन्यवाद एवं श्रद्धा के पात्र हैं।

सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक

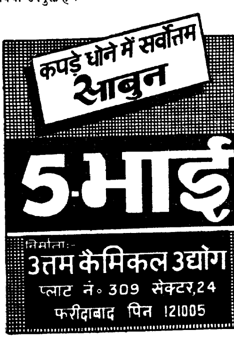
अजमेर ऋषि निर्वाण शताब्दी में पांच लाख यात्रियों के आवास की व्यवस्था

गत २१ नवम्बर को अजमेर में अ० भा० महर्षि निर्वाण शताब्दी समिति की बैठक में सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि १९८३ में ऋषि का निर्वाण हुए सौ वर्ष पूरे हो जाएंगे। इसलिए अजमेर में निर्वाण शताब्दी का मुख्य समारोह ३ से ६ नवम्बर १९८३ को मनाया जाए। ६ अक्तूबर से चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जाए। समारोह से सम्बद्ध विशाल शोभायात्रा ५ नवम्बर १९८३ को निकाली जाएगी। इस समिति में दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, राजस्थान, हरयाणा उत्तरप्रदेश हिमाचल तथा अन्य राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

समिति के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के परामर्श से समिति ने यह भी निश्चय किया कि ऋषि के जो ग्रन्थ है—जो अभी तक अप्रकाशित हैं, उन्हें प्रकाशित करने के लिए दस लाख रुपये की स्थिर निधि स्थापित की जाए। इस निधि से अन्य भाषाओं में ऋषिकृत ग्रन्थों के अल्पमोली सुन्दर संस्करण प्रकाशित किए जाएं। अनासागर स्थित ऋषि-उद्यान, यज्ञशाला और सरस्वती भवन को ऐसा कलापूर्ण रूप देने का भी निश्चय किया गया जिससे देश विदेश के पर्यटकों का वह आकर्षण केन्द्र बन सके।

अजमेर के इस विशाल समारोह में पाँच लाख लोगों के आने की सम्भावना है। इसलिए उतने बड़े पैमाने पर सारी व्यवस्था करने के लिए अर्थ समिति भोजन समिति, आवास समिति, प्रकाशन समिति, यज्ञ समिति आदि विभिन्न समितियों के संयोजक नियत करने का अधिकार दिया गया। समग्र कार्यों की रूपरेखा और व्यवस्था संभालने के लिए ६१ सदस्यों की संचालन समिति बनाई गई जिसमें सब प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधि परोपकारिणी सभा के पदाधिकारियों तथा अन्य विशिष्ट जनों के नाम रखे गए। प्रधान जी की ओर से शीघ्र ही संचालन समिति के नामों की घोषणा कर दी जाएगी।

बाहर से आए प्रतिनिधियों ने इस विशाल समारोह के लिये निर्धारित स्थान का जो अनासागर के तट के साथ दूर तक फैला हुआ है और विश्रामस्थली (पुष्कर रोड़) के नाम से विख्यात है, निरीक्षण किया और यह अनुभव किया कि पानी की तंगी या आवास स्थान की कमी की बात सर्वथा गलत है और वह स्थान सभी दृष्टियों से समारोह के लिए सर्वथा उपयुक्त है।



सम्पादक को बधाई

महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवालकलाँ (सोनीपत) के प्रधान चौधरी मान्द्रसिंह जी की अध्यक्षता में दिनांक २-१-८३ को गुरुकुल भैंसवाल में सम्पन्न अन्तरङ्ग सभा की बैठक में पारित प्रस्ताव—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी के संन्यासी विशेषांक में पत्र के सम्पादक डा० सुदर्शनदेव आचार्य द्वारा दी गई इस सूचना को पढ़कर सुनाया गया कि 'सर्वहितकारी' का फरवरी मास का एक अंक 'भक्त फूलसिंह विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया जावेगा। सभी सदस्यों ने इस शुभ प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने पत्र के सम्पादक को बधाई देते हुए 'बधाई प्रस्ताव' रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

धर्मचन्द्र शास्त्री उपमन्त्री महासभा

सिद्धान्ती भवन के लिये दान

आर्यसमाज क्योड़कगेट कैथल जिला कुरुक्षेत्र के प्रधान सेठ राममूर्ति जी सेठ की प्रेरणा से श्री सरोजकुमार तथा श्री पवनकुमार गुप्त कैथल निवासी ने अपने स्वर्गीय पूज्य पिता जी श्री ओमप्रकाश जी गुप्त की पुण्य स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय पंडित जगदेवसिंह सिद्धान्ती स्मारक भवन दयानन्द मठ रोहतक के लिए पाँच हजार रुपये का दान प्रदान किया है। सभा की ओर से उनका बहुत-बहुत धन्यवाद।

आशा है अन्य दानी महानुभाव भी अपने पूर्वजों की स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए इस निधि में दान देकर यश के भागी बनें।

रामानन्द सभा कोषाध्यक्ष

सोनीपत में ऋग्वेद महायज्ञ का आयोजन

वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत में ३१-१-८३ से ६-२-८३ तक टेलीफोन ऐक्सचेंज के सामने संघ वाले मैदान में ऋग्वेद महायज्ञ का आयोजन कर रही है। यह विशाल यज्ञ विश्व कल्याण की भावना से ऋषिमुनियों की प्राचीन शैली के अनुरूप होगा जिसके ब्रह्मा मान्यवर श्रद्धेय पंडित मदनमोहन विद्यासागर होंगे।

देवव्रत आर्य

आर्य कन्या की आवश्यकता

मुस्लिम मलिक परिवार से वैदिक धर्म में दीक्षित गोरेवर्ण, सौम्य स्वभाव, वैदिक धर्म-प्रचारक २८ वर्षीय डाक्टर आर्य युवक के लिए आयुर्वेद स्नातिका अथवा सेवा-रत आर्य कन्या की आवश्यकता है। सम्बन्ध के इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें। पता

सर्वहितकारी साप्ताहिक दयानन्दमठ रोहतक

शोक समाचार

चौधरी मामराज जी आर्य ग्राम खदरी जिला अम्बाला के कर्मठ कार्यकर्त्ता का १८ दिसम्बर को हृदयगति रुकने से निधन हो गया। आप आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्त्ता तथा धार्मिक व्यक्ति थे और अपने निकट के ग्रामों में आर्यसमाज का प्रचार करवाने में बहुत सहयोग करते थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

हरलाल आर्य सभा प्रचारक

२—खोतपुरा (पानीपत) आर्यसमाज के प्रधान चौ: सुबेसिंह के चाचा चौ: नारायण जी का २९-१२-८२ को देहान्त हो गया। वे आर्य समाज के कार्यों में सदा सहयोग करते थे। भगवान् उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

रामानन्द सिंगला
सभा कोषाध्यक्ष

आर्य कन्या गुरुकुल पंचगांव जि० भिवानी के दानोदाताओं की सूची

सेठ श्री बनवारीलाल जी आर्य देवराला, प्रधान आर्य कन्या गुरुकुल पंचगांव की प्रेरणा पर निम्नलिखित संस्थाओं एवं महानुभावों ने जिला भिवानी के एकमात्र गुरुकुल को अनुकरणीय दान दिया है। आशा है दानी महानुभाव भविष्य में भी इसी प्रकार गुरुकुल को सहयोग देते रहेंगे। गुरुकुल की प्रबन्धक सभा की ओर से सभी दानी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद है।

श्री गुरदयाल जी बेरलिया बम्बई	५१००	रुपये
जयभारत टेक्सटाइल बम्बई	,,	,,
खण्डविकास अधिकारी बाढड़ा भिवानी	५०००	,,
आर्यन्स सैन्ट्रल ट्रांसपोर्ट आफ इण्डिया प्रा. लि. बम्बई	३१००	,,
सूरजमल सन्तलाल भोजानिया बम्बई	,,	,,
श्री गोविन्दराम जी आर्य देवराला भिवानी	,,	,,
टेकचन्द कन्हैयालाल नरचैरेटी ट्रस्ट बम्बई	२१००	,,
सूजरमल बेजनाथ लोहा भवन पी. डी. मेलारोड बम्बई	१५०१	,,
तिरखाराम बशेसरलाल देवरालिया बम्बई	११००	,,
महेन्द्र साबू मे० वैस्टर्न इशन स्टील कम्पनी बम्बई	,,	,,
रामबिलास अग्रवाल मे० भगवती स्टील कम्पनी बम्बई	,,	,,
श्री मूलचन्द केजरोवाल मे. इण्डियन लाटेक्स सेल्ज कम्पनी बम्बई	,,	,,
मनियार एण्ड पन्थ बम्बई	,,	,,
शारदा सिल्क मिल बम्बई	११००	रुपये
श्री सत्यदेव जी आर्य देवराला भिवानी	,,	,,
प्रधश्री फूलचन्द जी देवराला भिवानी	,,	,,
श्रीरामश्याम टेक्सटाइल बम्बई	१००१	,,
श्री सत्यनारायण गुप्ता मे० जगन्नाथ स्टील कम्पनी बम्बई	५०१	,,
श्री नवलकिशोर बेरीवाल मै० एस. एन. ,, ,, ,,	,,	,,
श्री हरखचन्द जी मून्दड़ा बम्बई	,,	,,
श्री जवाहरलाल जी आर्य देवराला भिवानी	५००	,,

मन्त्री कन्या गुरुकुल पंचगांव

ग्राम दादूपुर (अम्बाला) में आर्यसमाज की स्थापना

दिनांक २३-११-८२ को श्री अजीतसिंह शास्त्री संस्कृत शिक्षक रा० उ० विद्यालय इमलोरा (भिवानी) वेद प्रचार के लिए ग्राम दादूपुर पधारे। उन्होंने २४ नवम्बर से २ दिसम्बर तक दादूपुर में सध्या तथा महायज्ञ के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार किया। ग्रामीण लोगों के पारस्परिक मतभेद को दूर किया तथा संगठन का पाठ पढ़ाया। इस अवसर पर ३५ नवयुवकों ने यज्ञोपवीत धारण किए धूम्रपान तथा सुरा पान आदि के दुर्व्यसनों के परित्याग का व्रत लिया।

आर्यसमाज के अधिकारियों का सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ है। प्रधान—दलबीरसिंह, उपप्रधान—कलीराम, मन्त्री–धर्मपाल, उपमन्त्री–कर्मवीर, कोषाध्यक्ष—विक्रमसिंह, व्यायाम शिक्षक—मामचन्द, लेखा निरीक्षक-सुभाषचन्द, प्रचारमन्त्री–बलदेवसिंह।

[श्री सुखदर्शनलाल मन्त्री आर्यसमाज किशनपुरा (अम्बाला) के पत्र पर आधारित सूचना]

—सुदर्शनदेव आचार्य

आर्ष गुरुकुल खानपुर का उद्घाटन

ग्राम खानपुर पो० मंढाना जिला महेन्द्रगढ में दिनांक १०-१०-८२ को प्रात: यज्ञ कर्म के पश्चात् ठीक साढे ८ बजे 'आर्ष गुरुकुल खानपुर' का स्थापना समारोह सैंकड़ों कार्यकर्त्ताओं की उपस्थित में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिस में आवास कक्ष का उद्घटान तपस्वी प्रभुभक्त पूज्य स्वामी क्षेत्रनाथ जी महाराज द्वारा किया गया। खानपुर ग्रामवासियों की ओर से अभ्यागतों के स्वागतार्थ माल्यार्पण करने पर गुरुकुल के आचार्य प्रद्युम्न जी ने गुरुकुल के उद्देश्य विषयक अपने विचार अत्यन्त प्रभावी शब्दों में प्रकट किये। आचार्य प्रवर स्वामी ओमानन्द जी द्वारा पुनरुद्धारित आर्ष पाठविधि के प्रचार एवं प्रसार के लिए सबका आह्वान किया। तदनन्तर पूज्य स्वामी त्यागानन्द जी, ब्र० विद्याव्रत नैष्ठिक, मा० सुखीराम जी सरपंच जलराना, श्री ईश्वरसिंह प्रधान आर्यसमाज नारनौल, राव धर्मीलाल जी प्रधान पंचायत समिति नीमराणा, महाशय प्रहलादसिंह जी नंगली श्रीमान् मास्टर ओमप्रकाश खानपुर आदि के उद्बोधक व्याख्यान हुए। व्याख्यानों में गुरुकुल की सहायतार्थ अपील की गई। जनता ने पूर्ण सहायता का आश्वासन दिया। पूज्य स्वामी क्षेत्रनाथ जी ने अत्यन्त सरल शब्दों में अपना आशीर्वाद और उपदेश दिया। ब्रह्मचारियों की दुग्ध पूर्ति हेतु एक सुन्दर सुडौल गाय प्रदान की। अध्यक्षीय भाषण प्रो० पी० डी० याज्ञ द्वारा दिये जाने के अनन्तर उपस्थित सज्जनों को यज्ञ-शेष वितरित किया गया।

महाशय मङ्गलसिंह
भूतपूर्व सरपंच खानपुर

सुविचार

—बुधराम आर्य हिसार

संस्कृत के विद्वान् एक श्लोक बोला करते हैं संसार "दीर्घ रोगस्य सुविचारो महा-औषधम्" अर्थात् यह संसार और इसमें बार बार पैदा होना और मरना एक लम्बी बीमारी है। यदि जन्म मरण के रोग से मुक्ति की इच्छा है तो इसकी एक ही दवाई है जिसका नाम 'सुविचार'। यह दवा केवल मात्र आर्यसमाज के पास है जो इस दवा को ग्रहण करेगा उसकी कीमत दुनियां में लाखों करोड़ों रुपये होगी और जो इस दवा को नहीं लेगा उसकी कीमत दुनियां में दो कौडी भी नहीं होगी और वह नीच से नीच भोग योनियों में जन्म लेगा। शायद आप दृष्टांत के द्वारा इसे और अच्छी तरह समझ लेंगे—

अकबर के दरबार में एक कलाकार दो मूर्तियां लेकर आया। मूर्तियां दोनों एक जैसी सुन्दर थी। उनमें जरा भी अन्तर नहीं दिखाई देता था। किन्तु उसने एक की कीमत दो लाख रुपये बनाई थी और दूसरी की कीमत दो कौडी बताई थी। कीमत सुनकर अकबर बादशाह बड़ा हैरान हुआ और उसने इस भेद को जानना चाहा। अकबर ने बीरबल को बुलाकर उसके सामने यह समस्या रखी। कुछ दिन के बाद बीरबल ने बादशाह को कहा—महाराज इनकी कीमत बिल्कुल ठीक है जिस मूर्ति की कीमत दो कौडी थी वह उन व्यक्तियों की, उन इन्सानों की प्रतीक थी जो वेद के प्रचार को, आर्यसमाज के प्रचार को सुविचारों को एक कान से सुनते हैं व बिना अमल किये दूसरे कान से निकाल देते हैं उसमूर्ति के दोनों कानों में आर-पार सुराख थे इसलिए उसकी कीमत दो ही कौडी होनी चाहिए थी। दूसरी मूर्ति जिसकी कीमत दो लाख रुपये बताई थी उसके भी एक कान में सुराख था और वह सुराख हृदय तक जाता था। यह मूर्ति वास्तव में उन इन्सानों की प्रतीक थी जो सुविचार सुनते हैं, वेदप्रचार सुनते हैं और उस पर हृदय में मनन करके अमल करते हैं। ऐसी मूर्ति की कीमत दो लाख नहीं अपितु बादशाह! दो करोड़ रुपये होनी चाहिए थी। बन्धुओं, बीरबल ने ठीक ही तो कहा—जो व्यक्ति अच्छे विचारों को सुनकर आचरण करता है दुनियां उसके आगे झुकती है उसका मान करती है।

आप देखते हैं आज विज्ञान के प्रसार (फैलाव) के कारण रेडियो टेलिवीजन, सिनेमा आदि ने सुविचारों के प्रचार को पछाड़ दिया है प्रचारक कम हैं। नये नहीं बन पाए हैं। पुराने वृद्ध होकर समाप्त हो रहे हैं। अच्छे विचारों के प्रचार न होने से दुनियां के हालात बिगड़ रहे हैं और संसार किसी भी समय अणुयुद्ध की भट्ठी में जल सकता है। क्या कारण है विज्ञान की चरम सीमा पर पहुँचने के बाद भी अमेरिका जैसे धनी देश की जनता अशान्त है, दुःखी है और शान्ति प्राप्त करने के लिए हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, मन्दिर, गीता, उपनिषदों आदि का सहारा लेने लगी है। क्या कारण है धर्म को अफीम कहने वाले कट्टर नास्तिक रूस जैसे देश की जनता भी अशान्त है, दुःखी है और शान्ति प्राप्त करने के लिए लेनिन व मार्क्स के बुतों पर फूल मालाएं चढ़ाते हैं, माथा टेकते हैं और दुआएं मांगते हैं तथा उन्हें भगवान् समझने लगे हैं। कारण स्पष्ट है उन देशों ने वेद के मार्ग को छोड़ दिया। सुविचारों को त्याग दिया और वे आज पुनः सुविचारों को अपनाने पर विवश होना चाहते हैं। हथियारों की होड़ से आज वे स्वयं भयभीत हैं। अन्त में मैं यही कहूँगा यदि सुख शान्ति चाहते हो संसार के जन्म मरण के बन्धन से मुक्ति चाहते हो अथवा पुनः मनुष्य जन्म चाहते हो तो देव दयानन्द के सुविचारों का प्रचार करो और उनके विचारों पर अमल करो।

प्रिंसिपल लाभसिंह पर गहरा आघात

आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल पानीपत के प्रिंसिपल लाभसिंह कादियान की ६, ७ वर्ष की सुपुत्री १० जनवरी १९८३ को अपने ग्राम सिवाह जि० करनाल में जी० टी० रोड़ की सड़क पार करते समय एक ट्रक के नीचे आकर कुचली गई। उसकी दुर्घटना स्थल पर ही मृत्यु हो जाने से सारे ग्राम में शोक की लहर फैल गई। सूचना मिलने पर पानीपत आर्य स्कूल बन्द कर दिया गया।

सर्वहितकारी परिवार की ओर से प्रिंसिपल लाभसिंह जी के परिवार को इस वज्रपात पर शोक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की जाती है कि दुःखी परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति तथा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

सम्पादक

सूचना

दिनांक ११-१-८३ मंगलवार को मिल्क प्लांट रोहतक के रास्ते By Pass Road, सैनी हाई स्कूल के आगे, जिला उद्योग केन्द्र गया था। मेरे पास एक थैला कपडे का साईकिल के पीछे रखा था जो गुम हो गया है उसमें जरूरी कागजात कापी है जिस सज्जन को भी मिले कृपया निम्नलिखित पते पर भेजने वाले को धन्यवाद सहित २५ रुपये नकद इनाम दिए जायेंगे। दूरभाष ४६६६

जवाहर भारत एण्ड कम्पनी कागज वाले
जगन्नाथ भवन रेलवे रोड़ रोहतक
नजदीक—मुलतानी सोप फैक्ट्री

गीत

वैदिक संस्कृति के सदा हरे चमन होंगे
भू-चाल लाख बीते और लाख विघन होंगे।
पर वैदिक संस्कृति के सदा हरे चमन होंगे।
पेशेवर कातिल थे, हमें खूब उजाड़ा है।
था सदाचार पावन, उसको भी बिगाड़ा है।
मिट मिटकर न मिट सकें, ऐसे आर्य-जन होंगे ॥१॥
चिनवा दिए जिन्दे ही मासूम दीवारों में।
भू कितनी बार रंजित हुई, रक्त फव्वारों में।
पर ओम् के गुंजित स्वर, सदा उच्च गगन होंगे ॥२॥
प्राणों से प्यार नहीं, प्रण से ही प्यार किया।
जहां आन की खातिर ही, तन-मन-धन वार दिया।
वहां सत्य सनातन ही बस वेद-मनन होंगे ॥३॥
हम जाग पढ़ें अपनी नित गौरव गाथाएं।
बच्चों को लोरी दें सीता जैसी माताएं।
'कला' फिर तो दयानन्द के साकार स्वप्न होंगे ॥४॥

—कलावती शास्त्री आचार्या
कन्या गुरुकुल मतेठी (कुण्ड)

क्रान्ति ही एक रास्ता है

अन्याय से लड़ना चाहते हो तो आओ
न्याय की मशालें जलाओ
तुम्हारे हाथों में जब न्याय की मशालें जलेंगी
तब इतिहास की भाषा अपने आप बदलेगी
अन्याय बौना हो जाता है जब न्याय का उजाला होता है
उठो और आसमान पर नया इतिहास लिखो
तुम्हारे भीतर भी एक मानव है
उसे अपने अधिकारों के लिए चेतो
तुम पर भविष्य की आस्था है
क्योंकि क्रांति ही एक रास्ता है
और क्रांति केवल ज्ञापन और घोषणापत्र नहीं
जागृति है, एकता है, संघर्ष है
परन्तु आज आदमी अपने में बन्द है

सत्य भारत सांवरिया
अध्यक्ष—मानव अधिकार संघर्ष समिति रोहतक

अकाली दल एक साम्प्रदायिक संगठन

—शेरसिंह

करनाल, २८ दिसम्बर (ब) हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने आरोप लगाया कि उग्रवादी अकाली धर्म युद्ध के नाम पर राजनीतिक लाभ उठाने के उद्देश्य से हिन्दुओं और सिखों में फूट डालकर तथा भूतपूर्व सैनिकों को हथियार बन्द बनाकर देश में साम्प्रदायिकता फैलाना चाहते हैं।

गत दिवस करनाल में वाहिनी के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए प्रो० शेरसिंह ने आरोप लगाया कि कुछ विदेशी ताकतें भी इन उग्रवादी अकालियों का समर्थन कर रही है। उन्होंने कहा कि सिख अलग कौम नहीं, बल्कि हिन्दुओं का ही एक अंग ही है। उन्हें किसी भी मूल्य पर अलग कौम नहीं कहा जा सकता।

उन्होंने अकाली दल को साम्प्रदायिक संगठन करार देते हुए इसे राष्ट्र विरोधी बताया। आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के बारे प्रो० साहब ने कहा कि उग्रवादियों का मुख्य उद्देश्य उक्त प्रस्ताव को मनवाने नहीं बल्कि 'खालिस्तान' बनवाना है और देश का विभाजन करना है जिसके लिए विदेशों से उन्हें मदद मिल रही है। उन्होंने कहा कि हरयाणा के लोग अब अपने हितों की रक्षा हेतु कोई भी बलिदान देने के लिए तैयार हैं।

(वीर प्रताप २९-१२-८२)

भक्त फूलसिंह विशेषांक

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज एवं हरयाणा प्रान्त की दिव्य विभूति भक्त फूलसिंह नामक सर्वहितकारी का विशेषांक मास फरवरी १९८३ के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित किया जा रहा है आर्य विद्वानों लेखकों और कविजनों से प्रार्थना है कि वे अपना लेख संस्मरण एवं कविता आदि २८ जनवरी १९८३ तक कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। मुख्य शीर्षक निम्नलिखित हैं—

१—भक्तजी का जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा।
२—आर्यसमाज में प्रवेश।
३—गुरुकुल शिक्षा पद्धति।
४—शुद्धि का कार्य।
५—हैदराबाद सत्याग्रह।
६—लुहारू नवाब से लोहा।
७—भक्त जी की वर्तमान शिक्षण संस्थाएं।
८—राजनीति और भक्त जी।
९—आर्यसमाज के प्राण।

लेख पत्र के एक ओर सुवाच्य अक्षरों में लिखा होना चाहिए।

—सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० न० 23207/73 पंजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ मुद्रक मुद्रक ३,६६,०८,५३ ०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—म० सत्यप्रिय शास्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष १०, अङ्क : २१ जनवरी १९८३ वार्षिक मूल्य १२) विदेश में १० पौंड एक प्रति ३० पैसे

संघर्ष का बिगुल बज गया—

३० जनवरी को दिल्ली में हरयाणा के एक हजार सत्याग्रही गिरफ्तारी देंगे

२९ जनवरी को भिवानी स्टैण्ड रोहतक में सार्वजनिक सभा का आयोजन

रोहतक १९ जनवरी—कल दुर्गाभवन रोहतक में हरयाणा रक्षा वाहिनी की प्रान्तीय बैठक प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर हरयाणा के कोने कोने से हरयाणा रक्षा वाहिनी तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं के कार्यकर्त्ता भारी संख्या में उपस्थित थे।

प्रो० शेरसिंह ने कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि अकालियों ने पंजाब में अराजकता फैलाकर तथा सत्याग्रह आदि करके अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर दिया है और उनके दबाव में आकर भारत सरकार के मन्त्रियों ने स्वयं चण्डीगढ़ आकर उनसे समझौते की बातें आरम्भ कर दी हैं। आपने रोष प्रकट करते हुए बताया कि जिस हरयाणा राज्य की सम्पत्ति (अबोहर फाजिल्का तथा नहर का पानी) पर झगड़ा है, उससे तो बात नहीं की जा रही पंजाब हमारी सम्पत्ति को हड़पना चाहता है, उस राज्य के उग्रवादी अकालियों के साथ उनकी इच्छानुसार उनके पास जाकर वार्त्ता की जा रही है।

आपने भारत सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि हम हरयाणा वासी किसी भी मूल्य पर हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को हरयाणा राज्य में मिलाये बिना चण्डीगढ़ को पंजाब को देना स्वीकार नहीं करेंगे और हरयाणा में जबरदस्ती पंजाबी भाषा को दूसरी भाषा [illegible] नहीं करेंगे। अकालियों के साथ किए जा रहे समझौते का विरोध करने के लिए हरयाणा की जनता ३० जनवरी को दिल्ली में सत्याग्रह आरम्भ करेगी। हम हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देंगे।

आपने भारत सरकार को स्मरण कराते हुए कहा कि अकालियों ने कई बार भारत सरकार के साथ हुए समझौतों को तोड़ा है। कमीशन द्वारा किये गये निर्णयों की अवहेलना की है। अकालियों ने चण्डीगढ़ के बदले अबोहर फाजिल्का सहर्ष हरयाणा को देना स्वीकार किया था, परन्तु अब वे चण्डीगढ़ के साथ अबोहर फाजिल्का को हिन्दी भाषी क्षेत्र को पंजाब में ही रखने के लिए दुराग्रह कर रहे हैं। यदि भारत सरकार ने उनके दबाव में आकर उनके साथ कोई समझौता कर भी लिया तो क्या गारन्टी है कि वे बाद में पूर्व की भान्ति फिर समझौते से न मुकर जावें।

अतः हरयाणा के हितों के विरुद्ध उनके साथ कोई समझौता नहीं करना चाहिए। नहर की खुदाई के लिए हरयाणा सरकार सारा खर्च पंजाब सरकार को दे चुकी है, परन्तु पंजाब के अकाली इस नहर को खोदने में रुकावटें डालकर हरयाणा को प्रतिदिन ३५ लाख रुपये की हानि कर रहे हैं। वे हरयाणा की बजाय पाकिस्तान को फालतू पानी देने में ही अपना धर्म मानते हैं। पंजाब में आज संविधान के अनुसार सरकार कार्य नहीं कर रही। अकाली खुल्लम खुल्ला कानून को तोड़कर गुरुद्वारों में छुप जाते हैं और सरकार उन्हें पकड़ने में असमर्थ है। अतः संविधान के अनुसार पंजाब सरकार को निलम्बित करके वहाँ राष्ट्रपति शासन की घोषणा करनी चाहिए।

अबोहर फाजिल्का के पूर्व विधायक श्री तेगराम ने अपने क्षेत्र की वर्तमान स्थिति का उल्लेख करते हुए कहा कि अबोहर की जनता पर पंजाब सरकार अत्याचार कर रही है। हिन्दी की पढ़ाई की व्यवस्था नहीं की जा रही तथा पंजाबी भाषा को बलात् ठोंसा जा रहा है जबकि वहां के ८० % बच्चे अपनी मातृभाषा हिन्दी में शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं। पंजाब सरकार में हिन्दू नवयुवकों को सरकारी नौकरियों में कोई स्थान नहीं दिया जा रहा। इसके विपरीत पटवारी से लेकर डिप्टी कमिश्नर तक सिखों को ही नियुक्त किया हुआ है। निहंग लोग घोड़ों पर सवार होकर जबरदस्ती किसानों के खेतों को उजाड़ रहे हैं तथा विरोध करने पर तलवारों से हमला करते हैं। सरकार उन्हें गिरफ्तार नहीं करती। वे थानों में जाकर भारत सरकार के विरुद्ध नारे लगाते हैं और पुलिस वाले डरकर थानों को बन्द कर लेते हैं। प्रधानमन्त्री ने अबोहर-फाजिल्का के क्षेत्र को हरयाणा को दिया था परन्तु हरयाणा वाले अभी तक अपने क्षेत्र को प्राप्त नहीं कर सके। वहाँ की जनता हरयाणा में मिलने के लिए तड़प रही है।

सनातन धर्म सभा दुर्गाभवन रोहतक के प्रधान श्री परमानन्द जुलो ने हरयाणा के कोने कोने से पधारे हुए कार्यकर्त्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि सिख हमारे भाई हैं। गुरुद्वारों में हिन्दू भी जाकर चढ़ावा चढ़ाते हैं। परन्तु अकाली गुरुद्वारों की आमदनी का दुरुपयोग हिन्दुओं के हितों के विरुद्ध कर रहे हैं। आपने प्रो० शेरसिंह को विश्वास दिलाया कि हम हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए कन्धे से कन्धा मिलाकर तन, मन, धन से सहयोग करेंगे। रेवाड़ी के प्रसिद्ध समाज सेवक राव रामचन्द ने भी विश्वास दिलाया कि हम जि० महेन्द्रगढ़ तथा गुड़गांव से हजारों की संख्या में शामिल होंगे।

बैठक के अन्त में श्री स्वामी ओमानन्द जी ने सिंह-गर्जना करते हुए भारत सरकार को सचेत किया कि हम अभी जीवित हैं। हमने बचपन में हैदराबाद सत्याग्रह में वहां के अत्याचारी नवाब के छक्के छुड़वा दिये थे और जवानी में पंजाब के मुख्यमन्त्री प्रतापसिंह कैरो ने जब हरयाणा में बलात् पंजाबी को थोंपनी चाही थी तो हमने डटकर मुकाबला किया था। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में हरयाणा से ५० हजार सत्याग्रही जेलों में भेजे थे। अब फिर समय आ गया है कि हरयाणा के

[शेष पृष्ठ ५ पर]

शुद्धि की प्राचीनता

— डा० रामेश्वर दयाल गुप्त M. A. P H D.



जवाहरलाल नेहरू ने Discory of India पुस्तक में वेस नहर के शिलालेख में वर्णित गरुडध्वज का उल्लेख किया है और इस ध्वज का चित्र भी दिया है। यह विदिशा (मध्यप्रदेश) में स्थित है। इस पर अंकित है कि तक्षशिला के यवन राजा का राजदूत दोलियोजेटस जो यहां रहता था, वैष्णव हो गया था और उसने वैष्णवों के हेतु गरुडध्वज का निर्माण कराया था। इस का समय ३०० वर्ष ईसा पूर्व है।

२—देवल स्मृति के उद्धरण [समय ८ वीं शताब्दी]

सिन्धुतीरे समासीन देवल मुनिसत्तमम्।
समेत्य मुनयः सर्वे इदं वचनमब्रवन।
भगवन्म्लेच्छनीता हि कथं शुद्धिमवाप्नुयुः ?
वलाद्दासीकृता येतु म्लेच्छ चाण्डाल दस्युभिः।

उत्तर

अशुभं कारितं कर्म गवादि प्राणि हिंसनम्।
उच्छिष्टमार्जनं चैव तथोच्छिष्टस्यभोजनम्।
खरोष्ट्र विड् वराहाणामामस्य भोजनम्॥

३—हरिवंश पुराण

अर्धशकानाम् शिरसो मुण्डयित्वा व्यसर्जयत्।
यवनान् शिरः सर्वे काम्बोजानाम तथैव च।
पारदः मुक्त केशाश्च पह्लवाश्मश्रुधारिणं।

४—ऐतरेय ब्राह्मण [१७/१८]

व्रात्यस्तोम यज्ञ का विधान करता है जिससे व्रात्य (यवन और म्लेच्छ) शुद्ध किये जाते थे।

५—काबुल का यवन शासक मिनियेन्डर हिन्दू धर्म स्वीकार करके मिलिन्द नाम से प्रख्यात हुआ।

६—केडाफिग्रस नामक कुशान राजा हिन्दू धर्म स्वीकार करके महपाल नाम से विख्यात हुआ। उसके सिक्कों पर शिव की प्रतिमा अंकित थी।

७—चैतन्य महाप्रभु के शिष्य रूपगोस्वामी और सनातन गोस्वामी मुसलमान से हिन्दू बने थे।

८—ऐसे समय में पृथ्वी परशुराम द्वारा क्षत्रिय विहीन की जा चुकी थी, तब विश्वामित्र ने वैदिक क्षात्रधर्म के पुनरुत्थान का बीड़ा उठाया और आबू पर्वत पर विशाल शुद्धि का यज्ञ किया। इसका टाड राजस्थान के भाग २ अ० १ पृष्ठ ३६३ पर वर्णन है। यह यज्ञ क्षीर सागर के विष्णु की आज्ञा से क्षत्रियों के पुनर्जनन के लिए किया गया था अर्थात् वैष्णव धर्म के पुनर्स्थापन के लिए। एक विष्णु की मूर्ति बनाकर तालाब में फेंकी गई। उसमें से एक शक्ति निकली जिसके एक हाथ में तलवार थी, दूसरे में वेद था और गले में यज्ञोपवीत था। उसी का नाम अन्हलपुर पातन रखा गया और वंश का नाम चालुक्य या सोलकी रखा गया। तीसरे कुल में रुद्र था जिस पर गङ्गा जल छिड़का गया और उसमें धनुष आ गया। उसके वंश का नाम परिहार रखा गया क्योंकि राक्षसों के साथ युद्ध करते समय उसका पैर सरक गया था। चतुर्थ वंश विष्णु की मूर्ति के प्रतिरूप बना और चतुर्भुज चौहान नाम रखा गया। तात्पर्य यह है कि बचे हुए क्षत्रियों से प्रायश्चित कराके उन्हें वैदिक धर्म ग्रहण कराया गया और उक्त ४ नाम दिये गये। उन्हें ४ पृथक् राज्य भी तभी मिले। भविष्य पुराण में तो यह दन्त-कथा आई है कि कण्व ऋषि भारत में एक भी क्षत्रिय न देख मिश्र देश जाकर दस हजार म्लेच्छ मिश्र से लाये और उन्हें शुद्ध करके भारत के राजपूताना में बसाकर क्षत्रिय संज्ञा दी। नोट—उनसे निम्न अल्लों का निकास है:-२८- वाक्लस २९- गोलास ३०- मलैया ३१- तैरह मनिया ३२- सौनगरा ३३- सिरोहिया ३४- सनेचरा ३५- रंमवार ३६- पचौलिया ३७- कोतवाल ३८- ऐतीवार ३९- वंकला ४०- कव ४१- चंद ४२- पल्लीवाल ४३-देवा ४४- कठोर ४५- नावल

इस स्थान का भी दर्शन हमने जून ७१ में जाकर किया। आबू से ४ मील की दूरी पर एक उपत्यका के प्रवेश द्वार पर हनुमान मन्दिर बना है। यहां से कोई आधा कि० मी० ऊपर चलकर ७५० सीढियां नीचे उतरकर गोमुख में से पानी की एक धारा निकलती है। इसके कुछ नीचे एक विशाल मन्दिर बना है। जिसका प्रबन्ध पहिले सिरोही राज्य करता था और वहां के कुल पुरोहित यहीं रहते थे। अन्दर वशिष्ट और राम लक्ष्मण की मूर्तियां बताई गई। परन्तु अन्दर जाकर टार्च से वस्त्र हटाकर देखा तो उन मूर्तियों के दाढ़ी पाई। मन्दिर के बाहर स्त्रियों की मूर्ति पश्चिमी देशों की वेश भूषा और श्रृंगार में थी। इनके हिन्दू नाम रख लिए गए हैं यथा कुन्ती आदि की मूर्ति। मन्दिर को स्थापत्य कला बौद्ध है। ८ वर्गीय निर्माण गया के मुख्य मन्दिर के ढंग पर है जो प्राचीन बौद्ध मन्दिर है। बाहर हाथियों की मूर्तियां हैं जो बौद्धों का चिन्ह है। मन्दिर के बाहर एक पीतल की विशाल मूर्ति है जो परमार राजा धारावर्ष की है। परमार उन प्रगट ४ क्षत्रिय वंशों में सर्व प्रथम था। अब पुरोहित जो इसे इन्द्र की मूर्ति बताते हैं। मन्दिर के बाहर यज्ञ कुन्ड है। बीकानेर के राजा गंगासिंह ने यहां ५० फीट नीचे एक खुदाई करवाई और यज्ञविशेषों की राखमात्र हो पाई। क्षत्रिय राजाओं ने इस स्थल पर ही आबू का विख्यात यज्ञ किया जाना माना है। यह स्पष्ट है कि विदेशों से लाये युद्ध-रत जातियों तथा बौद्ध हो गये हुए क्षत्रियों को यहां विशाल यज्ञ करके ब्राह्मणों पुरोहितों और ऋषियों ने उन्हें शुद्ध किया था। इन नवदीक्षित क्षत्रियों को अग्नि वंशी कहा गया है और इनके ४ वंश थे। वशिष्ठ पुरोहित को उपाधि है। स्थान इस लिये चुना गया था कि यह पहले से ही विख्यात धर्म स्थान था जहां महाराज युधिष्ठिर भी गये थे, जैसा पद्म-पुराण में उल्लेख है—

ततो गच्छेत धर्मज्ञ हिमवत्सुतमर्बुदम्।
पृथिव्या यत्र वै छिद्रं पूर्वनातोद युधिष्ठर॥
तत्नाश्रमो वशिष्ठस्य त्रिषु लोकेषु विश्रुतः॥
तत्रोष्ठ रजनीमेकां गो सहस्र फलं लभेत्॥

[महाभारत० वन पर्व तीर्थ यात्रा ८२-५५-५६ एवं पद्म पुराण २४-३-४] धर्मज्ञ युधिष्ठर हिमालय पर्वत के पुत्र आबू पर्वत पर ग , जहां पहले पृथ्वी में पाताल जाने के लिए एक छिद्र था। वहां का महर्षि वशिष्ठ आश्रम तीनों लोकों में विख्यात है। वहां यदि मनुष्य एक रात भी निवास कर लेता है, तो उसे हजार गौदान करने का पुण्य प्राप्त होता है।

नोट ७५० सीढियां ही वह छिद्र हैं। शुद्धि करने के लिए यह स्थान इसी महात्मय के कारण चुना गया था। यह स्थान वशिष्ठ के समय से पवित्र चला आता था। हर पुरोहित को वशिष्ठ उपाधि हो गई थी। निकट में गौतम आश्रम के निकट एक गङ्गा है। इसी में वशिष्ठ की कामधेनु गिर गई थी।

९- श्वपच शबर खस जवन जड़ पामर कोल किरात।
राम कहत पावन होत भुवन विख्यात॥ (तुलसीदास)

सम्पादकीय

हरयाणा की जनता से अपील

आज संसार के किसी भी कोने में कोई भी घटना घटित होती है तो प्रत्येक संवेदनाशील व्यक्ति वह चाहे किसी भी राष्ट्र, वर्ग का समाज का हो, प्रभावित होती ही है। जो घटना अपने ही देश में घटित होती है उसका प्रभाव बाह्य देश की घटना की अपेक्षाकृत अधिक अनुभव किया जाता है। जो घटना अपने ही प्रदेश के निकट हो रही होती है उसका अनुभव और भी गहराई से किया जाता है। आज यों तो आसाम में भी आन्दोलन चल रहा है जिसके अन्तर्गत पर्याप्त उग्रवादी हिंसात्मक घटनाएं हुई हैं लेकिन हम हरयाणावासी अकाली आन्दोलन को जितनी तीव्रता से अनुभव कर सकते हैं उतना असम-आन्दोलन को नहीं क्योंकि इस आन्दोलन की मांगों से हरयाणा सीधा जुड़ा हुआ है। यदि यह आन्दोलन-मात्र पंजाब का या पंजाब के किसी भाग का हुआ होता तो हमको इतना खतरा नहीं था जितना कि अब है। वैसे तो अकाली-आन्दोलन सारे ही देश की अखंडता के लिए ललकार भरी चुनौती है जिसको सारे देशवासी चाहे वे राजनीतिज्ञ हों या गैर-राजनीतिक सभी महसूस कर रहे हैं वहां पर यह आन्दोलन स्वयं पंजाब के लिए भी हित कर नहीं है क्योंकि इससे पंजाब प्रदेश की जनता में पारस्परिक-सौहार्द के स्थान पर वैमनस्य की खाई बढ़ती जा रही है जो कि स्वाभाविक भी है क्योंकि हमारे अकाली भाइयों की लगभग सभी मांगे ऐसी हैं जो उनकी दृष्टि को सन्दिग्ध बना देती है। वैदिक धर्म (हिन्दू) का अभिन्न अंग होने हुए भी अपने को अलग एक कौम (राष्ट्र) मानना कहां तक के संगत है क्या वे वही भाषा नही बोल रहे हैं जो भाषा कभी १६३४ में ब्रिटेन के 'इण्डिया-हाऊस' से मोहम्मद अली जिन्नाह और चौ० रहमत अली खाँ ने बोली थी। दिल्ली की जामा-मस्जिद के शाही इमाम द्वारा आनन्दपुर प्रस्ताव का खुला समथन क्या इस तथ्य को और भी उजागर नहीं कर देता है? पिछले दिनों जो हिंसक क्रूर काण्ड पंजाब में हुए उनसे जब सारे देश का जनमानस विक्षुब्ध हो उठा और सारे भारतीय धार्मिक राजनीतिक संगठनों ने अकाली उग्रवादियों के इस कुकृत्यों की कटु भर्त्सना की। जिससे अकाली देश के और लोगों से अलग-अलग पड़ गये तो आज अल्पसंख्यक बनकर विशेषाधिकारों की मांग उठा रहे हैं। क्या यह सब पृथकतावादी प्रकृति नहीं है? कवि के शब्दों मे कह सकते हैं—

हमने खिलाए थे जो गुल-गुलशन गुले गुलजार होगा,
हमको ये पता न था दामन इन्ही से तार-तार होगा।
मेरे दोस्त इतने गुमराह हो गये कि गैर हो उनके हमराह हो गये॥

हरयाणा के सन्दर्भ में अकाली-आन्दोलन का आकलन किया जाना चाहिए। आज हमारे अकाली भाई मांग उठा रहे हैं कि हरयाणा को रावी-व्यास का पानी न दिया जाये। जींद, अम्बाला, सिरसा, हिसार, करनाल के क्षेत्र पंजाब में मिलाये जायें। हरीके पतन, रोपड़, फिरोजपुर हैडवर्क्स को पानी का प्रबन्ध पंजाब की देखरेख में ही रहे। पंजाबी को हरयाणा की द्वितीय राज-भाषा का दर्जा दिया जाये।

उपरोक्त मुद्दों को लेकर पंजाब और हरयाणा का समझौता ३-४ बार हो चुका है। पहली बार २४ अक्तूबर १९५६ को दूसरी बार दिसम्बर १९६५; तीसरी बार जनवरी १९७०, चौथी बार ३१ दिसम्बर १९८१ को हुआ। मामला न्यायालय शाहआयोग को भी सौंपा गया, राजनैतिक समझौता भी हुआ। सभी ने अपने निर्णय दिये जोकि हमारे नेताओं ने ज्यों के त्यों मान लिए हालांकि इन निर्णयों मे हमको हानि भी उठानी पड़ी लेकिन हमारे अकाली भाई आज तक एक भी समझौते या निर्णय पर टिक नहीं पाये हैं। कितने बेपेंदी के लोटे हैं ये लोग? जिस बात को स्वयं कहते हैं व मान लेते हैं और फिर मुकरते हैं वायदा खिलाफी की भी एक हद होती है। जब जनवरी १९७० में प्रधान मन्त्री के ऐवार्ड के अनुसार (जोकि अन्तिम निर्णय माना गया था) चंडीगढ पंजाब को और अबोहर-फाजिलका (हिन्दी भाषी क्षेत्र) हरयाणा को दिया गया था तो आज चण्डीगढ लेने के लिए तो हमारे पंजाब के भाई तैयार हैं साथ ही में अबोहर-फाजिलका भी वे हमसे हड़प लेना चाहते हैं। पंजाब के सारे लोग चाहे वे किसी भी राजनीतिक दल या साम्प्रदायिक संगठन के क्यों न हों एक स्वर से यही भाषा बोल रहे हैं। तब हम शान्त क्यों बैठे हैं? अकालियों को आये दिन कुछ न कुछ हो हल्ला मचाने की आदत सी बन गई है क्योंकि उन्हें कुछ न कुछ मिल ही जाता है। वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन भी कर चुके हैं उसी के बल पर वे उछल रहे हैं और अपनी अनुचित मांगों के हर कीमत पर मनवाने के लिए उतावले हो रहे हैं। इतना ही नहीं उनकी बहुत बड़ी आशाएं भी हैं क्योंकि उनकी मांगों का समर्थन अब पंजाब के कांग्रेसी भाजपाई साम्यवादी सभी कर रहे हैं। वे केन्द्र सरकार तक को भी धमकी दे रहे हैं कि या तो हमारी मांगें मानो नहीं तो हम सारे देश को आग लगा देंगे आदि-आदि। कहने का तात्पर्य यह है कि वे संगठित होकर नाजायज मांगे उठा रहे हैं और हम लोग अपनी उचित मांग ही एक मच से उठाने में असमर्थता अनुभव कर रहे हैं: क्या यह हमारी दुर्बलता नहीं है? आज समय आ गया है जबकि हमको आपस के सभी मतभेद भुलाकर दलगत राजनीति से ऊपर उठकर कन्धे से कन्धा मिला कर एक जुट होकर कार्य करना चाहिए।

कितना बड़ा अन्याय हो रहा है हरयाणा के साथ कि हरयाणे की कीमत पर अकालियों और सरकार का समझौता होने जा रहा है। पंजाब को ही दोनों पक्ष मान लिया है कैसी विडम्बना है? किसी ने कहा भी है—

वही कातिल वही मुखबिर वही मुंसिफ ठहरा,
अकरबा मेरे खून का दावा करे किस पर।

अब आप सोच सकते हैं कि स्थिति कितनी प्रतिकूल है। हरयाणा की इस चुभन और कुढ़न को प्रो० शेरसिंह जी से ४ मास पूर्व सर्वप्रथम महसूस किया उन्होंने इस विषय में प्रधानमन्त्री को कई स्मरण-पत्र भी ओजपूर्ण भाषा में दिए। उनका हरयाणा के निर्माण में विशेष योगदान रहा है। इसलिए वे अपनी आंखों के आगे हरयाणा को टूटता लुटता हुआ नहीं देख सकते। इसीलिए उन्होंने सर्वदलीय समर्थन के आधार पर हरयाणा रक्षा वाहिनी का गठन किया। हरयाणा रक्षा वाहिनी ने हरयाणा के गांव गांव नगर मे शाखाएं स्थापित कर बैठकें और जलसे करके जन-जागरण का शखनाद किया है।

१६ जनवरी की प्रान्तीय स्तर की हरयाणा रक्षा वाहिनी में हरयाणे के हितों की अविलम्ब रक्षा के लिए २६ जनवरी को रोहतक में प्रान्तीय स्तर पर एक विराट् सम्मेलन के आयोजन का प्रस्ताव पारित हुआ है और यदि हरयाणा के हितों की अनदेखी की गई या और लटकाया गया तो ३० जनवरी से गांधी-समाधि राजघाट दिल्ली से पदयात्रा करके प्रधानमन्त्री निवास पर सक्रिय सत्याग्रह किया जायेगा। पहले ही दिन जिसमें सारे हरयाणे से लगभग १००० कार्यकर्ता भाग लेंगे।

सत्याग्रह के पहले जत्थे का नेतृत्व आर्यजगत् के 'भीष्म-पितामह' स्वामी ओमानन्द जी महाराज करेंगे। संघर्ष का बिगुल बज गया है। इसलिए सभी दलगत, वर्गगत स्वार्थों से ऊपर उठकर इस न्यायोचित-आन्दोलन में सक्रिय सहभागी बनिये और जल्दी से जल्दी अपने नगर तथा ग्रामों से सत्याग्रही जत्थे की सूचि और सहायता राशि भेजकर सत्याग्रह को सबल और सफल बनाइये। अपनी शक्ति को दिखाइये। अपनी मांगों को मनवाइये। यही हरयाणा की जनता से पुरजोर अपील है। यह हरयाणा की जनता की अग्नि परीक्षा है। हैदराबाद सत्याग्रह हिन्दी रक्षा सत्याग्रह की भान्ति अपनी शक्ति तथा संगठन का परिचय दीजिए। आपके सहयोग का इच्छुक— म० भरतसिंह वानप्रस्थ

सभा मन्त्री

३० जनवरी को प्रातः १० बजे राजघाट दिल्ली सत्याग्रह में भारी संख्या में पहुँचिए। ओमानन्द सरस्वती

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः

गायत्री मन्त्र की सच्ची महिमा

('सरिता' पाक्षिक के दिसम्बर १९८२, II के आक्षेपों का सप्रमाण उत्तर)

—डा० विश्वबन्धु 'व्यथित' अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी० ए० वी० कालेज अबोहर (पंजाब)

"सरिता" पाक्षिक जहां रोचक साहित्य और प्रगतिशील राजनैतिक समीक्षा के लिए प्रसिद्ध है, वहां आर्य संस्कृति पर निरन्तर आक्रमण करने का सुनियोजित आन्दोलन चलाने के लिए बदनाम भी है। रामायण, महाभारत, गीता और पुराणों पर विभिन्न आक्षेप करने के पश्चात् अब उसने अपने संस्थान का लक्ष्य 'वेद' और वैदिक साहित्य को बनाना प्रारम्भ किया है। इसका नवीनतम निकृष्ट उदाहरण है, दिसम्बर १९८२–II अंक के १४१ से १४६ पृष्ठों पर प्रकाशित श्री सुरेन्द्रकुमार शर्मा का 'गायत्री की झूठी महिमा' शीर्षक लेख। इस लेख के कुछ वाक्य इस प्रकार हैं—

१—गायत्री मन्त्र मानव द्वारा नहीं रचा गया, तो क्या यह मन्त्र दानवरचित है।

२- यदि गायत्री मन्त्र को ईश्वर ने बनाया है, तो ईश्वर निरक्षर भट्टाचार्य और वज्र मूर्ख साबित होता है।

३—यह मन्त्र न केवल छन्दगत अशुद्धियों से युक्त है, अपितु संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से भी पूरी तरह अशुद्ध है।

४—डा० विश्वबन्धु ने उपरिलिखित दोनों वैकल्पिक शुद्ध रूपों के अतिरिक्त एक अन्य रूप उपस्थित किया है इत्यादि।

इस लेख की व्यापक प्रतिक्रिया हुई है। मेरे लिए तो भी विडम्बना पूर्ण, क्योंकि उपर्युक्त वाक्य ४ को पढ़कर मेरे कई स्नेही और हितचिन्तक विक्षुब्ध हो गए। प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रिंसिपल श्रीमती के० सचदेव, प्रो० रोहताससिंह, श्री चांदकुमार जायसवाल और प्रो० सेवाराम आदि ने तो अविश्वासपूर्ण मुद्रा में घर आकर स्पष्टीकरण मांगा कि मैं कब से वेद में अशुद्धियां निकालने लगा। इनमें से अनेक इस तथ्य से सुपरिचित थे कि मैं अपनी सब प्रकाश्य पुस्तक "वेदार्थ प्रक्रिया" में इस गायत्री मन्त्र को अनुपमेय और निर्दोष प्रमाणित कर चुका हूं। अतः मेरे द्वारा इस भ्रान्ति का मार्जन नितरां अपेक्षित है।

वैसे भी सरिता में नित्य प्रति प्रकाशित ऐसे उत्तेजनापूर्ण लेखों से उत्तेजित पाठक सप्रमाण उत्तर की प्रत्याशा में आतुर देखे गए हैं। अतः सविवरण समीक्षा करनी उचित है। सरिता का एतद्विषयक समस्त नियोजन दो शैलियों में चलता है। जैसे—

१—हिन्दू समाज में व्याप्त उन कुप्रथाओं या मिथ्या धारणाओं का खण्डन, जिनका सशक्त विरोध और सप्रमाण खण्डन सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था। जैसे मूर्तिपूजा, मृतकश्राद्ध, जन्म गत जाति, छुआछूत, अनमेल विवाह, नारी असमानता, अशिक्षा, बाल विवाह और पौराणिक मिथ्या कल्पनाओं का प्रायः महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों के तर्कों के आधार पर (बिना उनका नामल्लेख के) खण्डन का प्रयास।

इस पत्र के संचालक इस प्रवृत्ति के समर्थन में प्रायः यह प्रसिद्ध तर्क देते हैं कि वे हिन्दू समाज की गली सड़ी रूढियों के दोष दिखाकर जनसामान्य को इनसे बचने की प्रेरणा देकर एक महान् सुधार आंदोलन का सूत्रपात कर रहे हैं। उनके इस तर्क में शायद कोई बल होता, यदि वे अपनी लेखनियों को यही तक सीमित रखते। लेकिन भारतीय मान्यताओं का खण्डन करने की उनकी दूसरी शैली ने उनका उद्देश्य और स्वरूप अनावृत्त करके रख दिया है।

२—सरिता के इस दूसरे आन्दोलन का निशाना हैं महर्षि दयानंद द्वारा प्रकाशित और व्याख्यात वेद एवं आर्षग्रन्थ और उनकी सर्वसुन्दर मान्यताएं। वेदादि आर्ष ग्रंथों पर कुठाराघात करते हुए वे उन्हीं पौराणिक, सायण, महीधरादि भाष्यकारों का आधार ग्रहण करते हैं, जिन्हें महर्षि दयानन्द ने भगीरथ प्रयास करके असिद्ध और अशुद्ध प्रमाणित करके उनके स्थान पर वेद के उत्तम, महिमामंडित, सर्वथा वैज्ञानिक, प्रामाणिक और लोकमांगल्यपूर्ण वेदभाष्य का प्रणयन किया था। आश्चर्य इस बात पर है कि 'सरिता' के वेदनिन्दक और नास्तिक लेखकों को महर्षि दयानन्द के जगत् प्रसिद्ध वेदभाष्य को उद्धृत करने का क्यों साहस नहीं होता? इसी से सरिता के दूषित पूर्वाग्रह और दुराग्रह का काफी सीमा तक पर्दाफाश हो जाता है।

सरिता में प्रकाशित प्रस्तुत लेख भी इन दोनों शैलियों का मिला जुला नमूना है। इस का विश्लेषण छः भागों में करके क्रमशः समीक्षा करने से पाठकों को सुविधा होगी जैसे—

पुराण निन्दा—

इस लेख के बहुलांश में पद्म, स्कन्द और देवी भागवत पुराण के आधार पर गायत्री जप और पापमोक्ष के सिद्धान्त का उपहास उड़ाया गया है। इसकी भाषा शैली में गाली-गलौच का सा वातावरण है जैसे यह स्तोत्र रचना निहात बेहूदी है। गायत्री को वेद जननी या ब्राह्मण जननी कहना प्रमत्त प्रलाप है। आदि

इस विषय में पहले ही लिखा जा चुका है कि सरिता वाले कैसे व्यर्थ पिष्टपेषण कर रहे हैं। लेकिन महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए मिथ्या कल्पनाओं के खण्डन और सरिता के इस तथाकथित सुधार आन्दोलन में एक और भी अन्तर है, जिसकी ओर प्रसिद्ध इतिहासक और समीक्षक डा० रामचन्द्र शुक्ल ने उत्साह निबन्ध में इस प्रकार संकेत किया है—

किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर निन्दा-स्तुति, मान-अपमानादि की कुछ परहवा न करके प्रचलित प्रथाओं का उल्लंघन करने वाले वीर या उत्साही कहलाते हैं।

[क्रमशः]

गोहत्या से आपको हानि

एक मीटिंग में हुए प्रश्नोत्तर का सार

आज देश में प्रतिदिन ४० हजार गायों का वध होता है, जिससे देश की आर्थिक व्यवस्था नष्ट हो रही है। विदेश के लोग बुद्धिमान् हैं वे भारत से गाय का मांस सस्ते दामों से मंगाकर अपनी गायों को कत्ल से बचा लेते हैं जबकि भारत में १९७३ से १९७६ के बीच दुधारू गायें ५.४ करोड़ से घटकर ४.२६ करोड़ रह गई।

प्रतिवर्ष जितनी गायें जन्म लेती हैं उससे दुगनी कत्ल की जाती हैं। इससे निश्चित है कि कुछ वर्षों में गौवंश नष्ट हो जाएगा जिससे खेती नहीं हो सकेगी और किसान लोग बेकार होकर शहर की ओर भागेंगे। इससे शहरों में भीड़ बढ़ेगी क्योंकि छोटे खेतों पर ट्रैक्टर नहीं चल सकते तथा ट्रैक्टरों के लिए पट्रोल विदेशों से मंगाना पड़ता है।

बैल खेत जोतता है तथा घास खाकर गोबर के रूप में सर्व श्रेष्ठ खाद देता है उससे गोबर गैस बनती है। वृद्ध बैल के गोबर से भी दो आदमियों की रसोई पक सकती है तथा बाद में गोबर सस्ती खाद के रूप में काम आती है जिससे अनाज सस्ता पड़ता है। सारे देश में ७० करोड़ टन गोबर होता है जिसका मूल्य सैकड़ों करोड़ों रु० होता है। गोबर के अभाव में जंगल काटकर लकड़ियां जला दी जायेंगी और शहर वालों को प्राप्त नहीं होगी।

देश की ४० करोड़ हैक्टर कृषि योग्य भूमि के लिए ७ करोड़ बैल आवश्यक हैं जबकि देश में साढ़े तीन करोड़ बैल ही उपलब्ध हैं। इससे अनाज कम उत्पन्न होता है तथा मंहगा हो रहा है। गायों की कमी से दूध की मंहगाई बढ़ रही है। जनता की आबादी बढ़ रही है इस से गायों की संख्या भी बढ़ानी चाहिए, पर वो कम हो रही है। देवनार कत्लखाने में इस साल १.१२ लाख बैल कत्ल हुए तथा अगले साल दो लाख कत्ल होने वाले हैं।

देश में तीस हजार करोड़ रुपयों की लागत से बनाई हुई रेलवे जितना सामान ढोती है उससे दुगना सामान देश में बैल तथा दूसरे जानवर ढोते हैं तथा गांव के कच्चे रास्तों से शहर की गलियों तक लाते हैं।

स्वस्थ और जवान बैलों को कत्ल करना गैर कानूनी है पर उसके डाक्टर झूठे सार्टीफिकेट दे देते हैं और जवान बैल कत्ल हो जाते हैं या उनके पैर तोड़ दिये जाते हैं इससे उन्हें कत्ल करने के सार्टीफिकेट मिल जाते हैं। इसलिए गोवंश के बचाने के लिए ये आवश्यक हो गया है कि सम्पूर्ण गोवध बन्दी हो।

आचार्य विनोबा भावे ने यह सब समझकर ही गोवध आन्दोलन खड़ा किया था। आपका कई प्रकार से इस सत्याग्रह में सहयोग चाहिये। यदि आप अपनी गौमाता की रक्षा के लिए कुछ नहीं कर सकते तो फिर ईश्वर भी आपके देश के लिए कुछ नहीं करेगा। गौमाता ने भारत के लिए कितना किया है पर कृतघ्नी देशवासी अब उसका मांस निर्यात करके धन कमाने की कोशिश कर रहे हैं। इस धन से भारत तो सुखी नहीं हो सकता। तीन सौ वर्ष के मुगल शासनकाल में भारत में गोवध बन्द था। अफगानिस्तान जैसे मुस्लिम देश में गोवध करने वाले को दस वर्ष जेल में रहना पड़ता है।

गांधी जी के शब्दों में गाय करोड़ों भारतवासियों को भरण पोषण देने वाली माता है। गोहत्या जब तक होती है तब तक मुझे लगता है कि मेरी खुद की हत्या है। गोरक्षा में देश की आर्थिक स्थिति का सवाल छिपा हुआ है।

विशेष सूचना के लिए कृपया निम्नलिखित पते पर अवश्य लिखिये सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति, सर्वोदय हास्पिटल, लालबहादुर शास्त्री मार्ग घाट कोपर, बम्बई ७६, फोन ५७६० १२.

कृपया इस समाचार को अन्य समाचार पत्रों वा पेम्फलेटों द्वारा प्रसार करें।

(ए० पंड्या के सौजन्य से)

जि० रोहतक के पत्रकार आदि सम्मानित



श्री राजन जंड

बेरी, १ जनवरी वीर बाल-किशोर सदन ऐजुकेशन सोसायटी द्वारा आयोजित डिप्लोमा वितरण एवं महानुभाव अभिनन्दन समारोह में रोहतक जिले पत्रकारों को उनकी १९८२ की सर्व श्रेष्ठ सेवाओं हेतु पुरस्कृत किया गया।

इनके अन्तर्गत दैनिक ट्रिब्यून के श्री सतपाल सैनी को आदर्श पत्रकार, इण्डियन एक्सप्रेस के श्री राजन जंड को वीर पत्रकार, मेडिकल कालेज के वरिष्ठ डा० श्री जे० सी० ढल को चिकित्सा केसरी, राजकीय कन्या उच्च विद्यालय के मुख्य अध्यापक श्री ऋषिकेश को शिक्षक शम्भु, श्री कपिलदेव शास्त्री, दैनिक वीर प्रताप को भाषा रत्न को मानद उपाधियों से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय कार्य करने वाले अन्य ८ व्यक्तियों को भी श्री आर० डी० गर्ग उपायुक्त रोहतक की ओर से श्री पी० सी० बिठान मैनेजिंग डायरेक्टर हरयाणा को-आपरेटिव सुगर मिल रोहतक ने आर० वी० टी० आई; बेरी प्रांगण में सम्मानित किया। प्रत्येक को एक एक रजत पदक भी प्रदान किया गया।

आर० वी० टी० आई जो कि वीरबाल-किशोर सदन ऐजुकेशन सोसायटी द्वारा संचालित के तथा बाल भारती माडल स्कूल के छात्र-छात्राओं ने एक रंगारंग कार्यक्रम भी महानुभाव के सम्मान में प्रस्तुत किया। यह सोसायटी प्रत्येक वर्ष इसी भांति डाक्टरों, पत्रकारों, खिलाड़ियों, शिक्षकों, समाज सेवियों को उनकी सर्वश्रेष्ठ सेवाओं के लिए सम्मानित किया करेगी।

(१ का शेष)

हितों की रक्षा के लिए अन्तिम समय तक संघर्ष किया जाये। आपने हरयाणा के सभी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को आह्वान करते हुए कहा कि ३० जनवरी को दिल्ली में होने वाले सत्याग्रह में हरयाणा के कोने-कोने से भारी संख्या में अपने-अपने झण्डे लेकर संगठन शक्ति का परिचय देवें। २६ जनवरी को भिवानी स्टैण्ड रोहतक में दोपहर बाद १ बजे पर एक विशाल सार्वजनिक सभा भी होगी जिसमें रणनीति घोषित की जावेगी। श्री स्वामी जी की अपील पर उपस्थित कार्यकर्त्ताओं ने हाथ खड़े करके विश्वास दिलाया कि हम हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए बढ़चढ़ कर भाग लेंगे।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी

रोहतक में चौ: छोटूराम जयन्ती सम्पन्न

१९ जनवरी को बसन्त पंचमी के अवसर पर प्रतिवर्ष की भान्ति दीनबन्धु चौ: छोटूराम की जयन्ती हरयाणा के सिंचाई एवं बिजली मन्त्री श्री शमशेरसिंह सुरजेवाला की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाई गई। प्रात: उनकी समाधि पर हवन यज्ञ किया गया।

इस अवसर पर चौ: छोटूराम को जिन नेताओं ने श्रद्धांजलियां दी उनमें डा० रणजीतसिंह, श्री सुखदेव शास्त्री, चौधरी धर्मसिंह राठी, चौ: माडूसिंह मलिक, चौ: हरस्वरूप बूरा, चौधरी प्रियव्रत छिक्कारा चौधरी रणवीरसिंह, चौधरी हरीचन्द हुड्डा, श्री धूपसिंह, श्री कपिलदेव शास्त्री, चौधरी नेकीराम, बहन बसन्ती देवी, श्री राममेहर एडवोकेट श्री अमीरसिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन नेताओं ने चौधरी छोटूराम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भारत सरकार से मांग की, कि उनकी स्मृति में भाखड़ाडैम पर उनका बुत लगाया जावे। वे भाखड़ा नहर के निर्माता थे। उन्होंने इस नहर को हरयाणा की जनता के लिए तैयार करवाया था। परन्तु अब इस पर पंजाब सरकार नियन्त्रण कर रही है। हरयाणा के नेताओं ने भारत सरकार को चेतावनी भी दी कि यदि अकालियो के दबाव मे आकर उनके साथ समझौता करते समय हरयाणा के हितों की रक्षा नहीं की गई तो हम भेदभाव तथा पक्षपात की नीति का विरोध करेंगे तथा अपने अधिकारों की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान भी करेंगे।

श्री सुखदेव शास्त्री ने हरयाणा निवासियों को ३० जनवरी से होने वाले सत्याग्रह में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की। इसकी तैयारी के लिए २६ जनवरी को १ बजे भिवानी स्टैण्ड रोहतक में सार्वजनिक सभा का आयोजन हो रहा है, जिसमें प्रमुख नेता पधारेंगे।

पटपड़ गंज बूचड़खाना दिल्ली का विरोध

दिल्ली, १८ जनवरी केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के महासचिव श्री अनिलकुमार आर्य ने एक व्यक्तव्य में दिल्ली प्रशासन द्वारा दिल्ली के यमुनापार पटपड़गंज क्षेत्र में खुलने वाले बूचड़खाने की तीव्र निन्दा की है, जिसमें दस हजार निर्दोष पशुओं के दैनिक वध करने की योजना है जो कि भारतीय संस्कृति के साथ खुला मजाक है।

श्री अनिलकुमार आर्य ने कहा-भारत महात्मा बुद्ध, महर्षि दयानन्द महात्मा गान्धी सरीखे महापुरुषों का देश है, तथा अहिंसा हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। भारत देश शान्ति व विश्व बन्धुता का सन्देश वाहक रहा है, ऐसे महान् राष्ट्र की राजधानी में दस हजार पशुओं का सामूहिक दैनिक वध निन्दनीय है।

उन्होंने सरकार से मांग की कि राष्ट्र की इस महान् धरोहर का सम्मान करते हुए बूचड़खाना खोलने की प्रस्तावित योजना को रद्द कर के अहिंसा व शान्ति के आदर्श स्थापित करने चाहियें। यदि सरकार ने इसमें ढिलाई बरती तो आर्यसमाज समस्त धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से मानवता की रक्षा के लिए जन आन्दोलन करेगा।

पाकसमा मण्डल की बैठक

हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए ३० जनवरी को आरम्भ होने वाले सत्याग्रह में भाग लेने की तैयारी हेतु भालोट जिला रोहतक में पाकसमा मण्डल की बैठक (निकट बस अड्डा) २३ जनवरी को हो रही है। अत: मण्डल के कार्यकर्त्ता समय पर पधारें।

रामचन्द्र आर्य मन्त्री

भजनलाल अब साथियों सहित त्याग पत्र दें —शेरसिंह

नई दिल्ली, १९ जनवरी (नि. स.) भूतपूर्व केन्द्रीय प्रतिरक्षा मंत्री प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा के हितों के विरुद्ध किसी भी प्रकार का निर्णय के लिए जाने के विरुद्ध सभी सम्बन्धित पक्षों को कड़ा आग्रह किया है।

प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा के सभी राजनीतिक दलों के नेताओं के नाम जारी एक खुले पत्र में हरयाणा के हितों के विरुद्ध किसी भी निर्णय के प्रति चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि ऐसा कोई फैसला लिया गया तो एक हजार सत्याग्रही स्वामी ओमानन्द सरस्वती के नेतृत्व में प्रधान मन्त्री निवास पर आगामी ३० जनवरी को गिरफ्तारी देंगे।

हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक के बाद समाचार पत्रों के लिए जारी अपने इस पत्र में श्री शेरसिंह ने हरयाणा के नेताओं से आग्रह किया है कि वे एक होकर हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सांझा मोर्चा बनाए। यह मोर्चा आन्दोलन चलाए और सामूहिक बलिदान व त्याग से हरयाणा के अधिकारों की एव गौरव की रक्षा करे।

पत्र में आशा व्यक्त की गई है कि सम्भवत: २४ जनवरी तक इस मामले में फैसला ले लिया जाएगा। तब तक सभी लोगों को तैयार हो जाना चाहिए।

प्रो० शेरसिंह ने सीधे प्रश्न किया है कि हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल अब चुप्पी साधे हुए हैं, जबकि उन्होंने आश्वासन दिया था कि यदि अकालियों के साथ वार्ता में हरयाणा को प्रतिनिधित्व न दिया गया तो अगला कदम उठाने पर विचार किया जाएगा।

(पंजाब केसरी से साभार)

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज जगाधरी का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सुभाषचन्द उपप्रधान—सुन्दरलाल, जगदीशलाल मदान, मन्त्री—इन्द्रसैन गुप्त, उपमन्त्री—बजनाथ दुग्गल, हरिदत्त जी महत्ता, प्रचारमन्त्री—लक्ष्मीदास आर्य, कोषाध्यक्ष—देशपाल नागपाल, पुस्तकाध्यक्ष—त्रिलोकचन्द

आर्य कन्या पाठशाला जगाधरी

प्रबन्धक-सर्वश्री विजयसिंह शास्त्री, उपप्रबन्धक—सत्यप्रकाश जी, श्रीमती प्रभा भल्ला, कोषाध्यक्ष—वीरेन्द्र जी

आर्यसमाज पिंजौर (अम्बाला)

प्रधान—श्री प्रेमचन्द शर्मा, उपप्रधान—श्री धर्मपाल, श्री जोगेन्द्रपाल मन्त्री—श्री राजेशसिंह, उपमन्त्री—श्री आर्यवीर, कोषाध्यक्ष—श्री रामगोपाल, प्रचारमन्त्री—श्री वेदपाल मलिक, श्री सुशीलकुमार, पुतस्काध्यक्ष श्री जयदास आर्य

आर्यसमाज सैक्टर ३२ चण्डीगढ

संरक्षक—पं० आशुराम आर्य, प्रधान—श्री सिकन्दरलाल उपप्रधान देशराज सतीजा, श्रीमती सत्या बेरी, मन्त्री—ओमप्रकाश सेतिया, उप मन्त्री-राजकुमार आर्य, सुभाष गोस्वामी, कोषाध्यक्ष—सुभाष गाबा पुस्तकाध्यक्ष-विजय मेहन, लेखानिरीक्षक—ओमप्रकाश चौपड़ा

आर्यसमाज शाहपुरा (राजस्थान)

प्रधान-श्री रामप्रकाश, मन्त्री-श्री अम्बाला आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री रामप्रकाशवेली

आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार

प्रधान-श्री अमरसिंह आर्य, उपप्रधान—हरिकिशन आर्य, मन्त्री—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, उपमन्त्री-इन्द्रसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—सेठ रामचन्द्र आर्य, लेखानिरीक्षक—डा० ओमप्रकाश आर्य

अकाली आन्दोलन की वास्तविकता

लें०—श्री बलदेवकृष्ण आर्य करनाल

(गतांक से आगे

(एक से जब दो हुए तब लुत्फे भलाई कहां) गांधी जी ने हिन्दू मुस्लिम एकता शब्द का प्रयोग करके सब से कड़ी भूल की। दोनों की अलग अलग सत्ता को मान लिया जिसका परिणाम पाकिस्तान के रूप में निकाला। हिन्दू सिख एकता का शब्द प्रयोग करना एक राष्ट्रीय पाप है। जब सिखों की हिन्दू समाज से अलग कोई सत्ता है ही नही तो फिर अलग नाम क्यों रखा जाए। हिन्दू सम्प्रदायों में ही सिखों की गिनती हो सकती है। हिन्दू के मुकाबले में सिखों की गिनती नही हो सकती। एक धर्मचन्द हिन्दू के दो लडके केश रहित शामलाल और केशधारी ध्यानसिंह मोना और सिख तो कहला सकते हैं परन्तु हिन्दू और सिख नहीं कहला सकते। इस प्रकार शामसिंह केशधारी हिन्दू के दो लड़के शामलाल और गुरुचरसिंह मोना और सिख तो कहला सकते हैं, हिन्दू और सिख नहीं कहला सकते। अब रहा प्रश्न पंजाबी भाषा का। यह बहुत प्राचीन भाषा है गुरु अंगददेव से पहले केवल देवनागरी अक्षरों में ही लिखी जाती थी। गुरु अंगददेव ने देवनागरी के अक्षरों को बिगाड़ कर एक और लिपि बनाई जिसको गुरुमुखी का नाम दिया गया। अब अकालियों की मांग यह है कि हरयाणा में इसे दूसरी भाषा का दर्जा दिया जाये। हरयाणा के ९६ % हिन्दुओं को यह मांग स्वीकार नहीं क्योंकि भाषा के आधार पर ही पंजाबी सूबा बन चुका है। जहा पर सारा काम गुरुमुखी लिपि में होता है। एक मांग उनकी यह भी है जिन क्षेत्रों में पंजाबी बोली जाती है उनको पंजाब में मिलाया जाए। आज पंजाबी बोली जम्मू-काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, नई दिल्ली में बोली जाती है। क्या इन सब प्रदेशों को पंजाब में मिला दिया जाए और यह बोली पाकिस्तानी पंजाब सीमान्त प्रान्त बहावलपुर में भी बोली जाती है अगर ऐसे क्षेत्र मिलाने की चाल है तो अपना मुंह हरयाणा की ओर न करके लाहौर की ओर कर दिया जाए फिर देखें कितना विशाल पंजाबी प्रान्त बनता है। इस सूरत में अकाली मोर्चा लगाना सिवाय हिन्दू सिखों में अलगाव पैदा करने या सरकार को बिना मतलब के बदनाम करने के सिवा कोई असर नहीं रखता। आर्यसमाज इसको राष्ट्र-विरोधी आन्दोलन समझता है। हर आर्यसमाजी को अब ऐसा यत्न करना चाहिए कि आर्यसमाज के पहले युग की तरह फिर से हजारों की संख्या में केशधारी सिखों को आर्यसमाज में शामिल किया जाये। एक बात का जिकर कर देना और आवश्यक समझता हूँ कि शहीदे आजम सरदार भगतसिंह के दादा सरदार अर्जुनसिंह ने अपनी छाती पर ऋषि दयानन्द की तस्वीर मशीन से खुदवा रखी थी। मास्टर तारा सिंह के गुरु अंग्रेज मैकालिफ के जहरीले भाषण से पहिले सिख भारी संख्या में आर्यसमाज के मैम्बर थे। आज फिर सरदार अर्जुनसिंह जैसे देश भक्तों की जरूरत है जो गुरु वाणी से वेद भक्ति सिद्ध किया करते थे और जिनका दावा था कि दसवें गुरु वैदिक धर्मी और पक्के आर्य थे और गुरु गोविन्दसिंह ने जब मुगलात राज्य के खिलाफ झण्डे के नीचे होने की अपील की थी तो उन्होंने कहा था कि जो तुम शिष्य हमारे आरज देओ सीस धर्म के कारज

आर्यसमाज कासनी (रोहतक) का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भान्ति मकर सक्रान्ति पर्व पर आर्यसमाज कासनी जिला रोहतक वार्षिक उत्सव १३, १४ जनवरी को सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज के प्रचारक स्वामी नित्यानन्द जी (पूर्व श्री नोनन्दसिंह) ने इस ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना तथा आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण किया था और प्रतिवर्ष इसका उत्सव करवाया करते थे। उसके स्वर्गवास के पश्चात् आर्यसमाज के प्रधान मा० दीपचन्द आर्य उनकी स्मृति में उत्सव का आयोजन करते हैं।

इस बार उत्सव पर सभा के नवयुवक विद्वान् महोपदेशक आचार्य देवव्रत जी शास्त्री के व्याख्यान तथा पण्डित ईश्वरसिंह तूफान व पं० सूरतसिंह की भजनमण्डलियों के मनोहर भजन हुए। प्रातःकाल आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ के पश्चात् मकर सक्रान्ति पर्व पर प्रकाश डाला गया।

स्वामी नित्यानन्द के प्रति --

धन्य धन्य हो धर्म धनी तुम धन्य तुम्हारा 'न्योनद' नाम।
परम धन्य है जन्म तुम्हारा धन्य कलोई का शुभ धाम॥
वार दिया तन-मन-धन तुमने सींचा प्यारा आर्यसमाज।
देश धर्म जाति का किया पूर्ण तुम्हीं ने बिगडा काज॥
उठा ओम् धवल ध्वजा तुम निकले वेद प्रचार किया।
ऋषि दयानन्द की वाणी का घर घर में प्रसार किया॥
सोते हुए आर्यजनों को तुमने था उद्बोध दिया।
कितने ही लोगों ने था हां सत्पथ में अवरोध किया॥
परवाह की न कांटों की भी बाधाएं कर दी सब दूर।
देख तुम्हारे अदम साहस को पर्वत भी था चकनाचूर॥
हरयाणा की पावन धरती यौधेयों का लीला धाम।
केशव की गीता गूंजी थी कौरव-पांडव समर ललाम॥
गत गौरव को याद दिलाकर सोता सिंह जगाया था।
पाखण्डी दम्भी लोगों को जयकर दूर भगाया था॥
जीवन की स्वर्णिम सन्ध्या में नाम धराया नित्यानन्द।
जीवन यज्ञ सफल कर पाया तुमने प्यारा परमानन्द॥

पं० धर्मचन्द्र विद्यालंकार एम० ए० 'समन्वित'

पंजाब के २२ गांव हरयाणा में शामिल होने को उत्सुक

पटियाला, १० जनवरी (स)। इस जिले के मुनरहेंड़ी ब्लाक के २२ गांवों के निवासियों ने प्रधान-मन्त्री को भेजे गये एक ज्ञापन में मांग की है कि इन गावों को हरयाणा के अम्बाला जिले में स्थानांतरित कर दिया जाए। इन गांवों में इस सम्बन्ध में दीवारों पर पोस्टर भी लगाये गये हैं।

ग्रामीणों ने अपने ज्ञापन में शिकायत की है कि उनकी जीवन के हर क्षेत्र में उपेक्षा की जाती रही है, यहाँ तक कि जीवन की मूल-भूत सुविधायें भी इन ग्रामीणों को नही मिल रही हैं। मौसनी नदी तांगड़ी के बायीं ओर हरयाणा से लंगते ये गांव यहा से ३० से ४० किलोमीटर दूर पड़ते हैं। इस नदी पर पुल के अभाव में ये गांव वर्षा के मौसम में जिला मुख्यालयो से बिल्कुल कट जाते हैं। जिला मुख्यालयों तक पहुँचने के लिए इन ग्रामीणों को अम्बाला होकर लगभग १०० कि० मी० का लम्बा मार्ग तय करना पड़ता है। यहाँ तक कि तहसील मुख्यालयों तक भी ये लोग नहीं पहुच सकते हैं।

इन गावो में से कुछ प्रमुख गांव हैं—बिन्जाल रोशनपुर, खांसियां, बुधनूर, मोहम्मदपुर, धगरोली, अहरूकलाँ, मेहताबगढ, मोलगढ, बीबीपुर, खरबढ, खतोली, अहरू ओहजान, रत्ताखेड़ी तथा चुगियाँ।

इन गांवों ने हाल ही में मेहताबगढ गांव में सम्पन्न एक सम्मेलन में धमकी दी है कि यदि २६ जनवरी तक इनकी सभी मांगें पूरी नहीं की जाती तो वे हरयाणा में शामिल होने के लिए आन्दोलन शुरु कर देंगे।

इन ग्रामीणों की अन्य शिकायत है कि अंतर्राज्य व्यापार प्रतिबन्ध के कारण उन्हें समालाबाद (हरयाणा) की मण्डी में कृषि उत्पादन बेचने नहीं दिया जाता जो कि इन गांवों से केवल ५ से ७ किलोमीटर दूर पड़ता है।

(दैनिक ट्रिब्यून)

हरयाणा आर्य युवक समाज का जवाबी आंदोलन की चेतावनी

पानीपत, ७ जनवरी—आर्य युवक समाज की एक बैठक गत दिनों आर्यसमाज के युवा नेता पं० रोहतास कुमार आर्य की अध्यक्षता में हुई जिसमें पृथकतावादी व साम्प्रदायिक तत्वों की आलोचना करते हुए चेतावनी दी गई कि ये अपनी कार्यवाहियां बन्द कर दें अन्यथा आर्य युवक समाज हरयाणा में अपना जवाबी आन्दोलन शुरु कर देगा।

इस अवसर पर श्री रोहतास ने कहा कि श्री टोहरा व श्रीमती राजेन्द्रकौर के बयानों से ऐसा लगता है कि वे पंजाब में शांति स्थापित करना नही चाहते। इसलिए ऐसे पग उठाए जाएं कि पंजाब में गैर सिख स्वय को सुरक्षित अनुभव कर सकें।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१९ दूरिष्ट सूचनाङ्क ६६६,०८,१३,०८१



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह शास्त्री सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य,

वर्ष १० अङ्क ८ २८ जनवरी १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में १० पौंड एक प्रति ३० पैसे

राष्ट्र विरोधी अकालियों की गीदड़ भभकी धमकियों का मुँहतोड़ उत्तर देने के लिए

हरयाणा के सभी धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ता, नेता संगठित हो गये

३० जनवरी के सत्याग्रह की तैयारी के लिए प्रो० शेरसिंह का तूफानी भ्रमण

रोहतक १४ जनवरी—हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से १६ जनवरी को दुर्गाभवन रोहतक में प्रान्तीय स्तर की की बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय किया गया था कि राष्ट्र एवं विशेषकर हरयाणा विरोधी अकालियों की गीदड़भभकी धमकियों का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए ३० जनवरी ८३ को प्रातः १० बजे राजघाट दिल्ली में एकत्रित होकर प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के निवास पर सत्याग्रह तथा अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया जावेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त त्यागी तपस्वी आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने इस जत्थे का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया है। यह समाचार सुनकर हरयाणा के जन-जन में चाहे उसका सम्बन्ध किसी भी धार्मिक तथा राजनीतिक संगठन से हो, जोश और उमंग की लहर फैल गई। समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुका है कि लोकदल (च तथा क) भारतीय जनता पार्टी तथा कांग्रेस (ई) के विधायकों ने भी निश्चय कर लिया है कि यदि अकालियों के दबाव में आकर भारत सरकार ने उनके साथ हरयाणा के हितों की उपेक्षा करके कोई समझौता किया तो सभी विधायक अपने अपने नेताओं द्वारा त्याग पत्र दे देंगे तथा संघर्ष के मैदान में उतर जावेंगे। मुख्यमन्त्री हरयाणा तथा सभी राजनीतिक दलों के नेताओं ने प्रधान मन्त्री से भेंट करके तथा पत्र लिखकर स्पष्ट कर दिया है कि किसी भी मूल्य पर अकालियों की अनुचित मांगे स्वीकार न की जावें।

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी ने भी प्रधान मन्त्री को पत्र लिखकर मांग की है कि अकाली किसी भी समझौते व निर्णय के पाबन्द नहीं रहते। अतः उनकी हरयाणा के हितों के विरुद्ध एक भी मांग न मानें। यदि आपने किसी प्रकार की कमजोरी दिखाई तो हरयाणा की जनता भी ऐसा कोई समझौता सहन नहीं करेगी। आपने भारत के गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी को भी भेंट करके सावधान कर दिया है कि अकालियों की गीदड़ भभकियों की परवाह न करें। हरयाणा के नवयुवक अकाली तथा निहंगों के मुकाबले अधिक शक्तिशाली तथा राष्ट्रभक्त हैं। सेना में हरयाणा के सैनिकों को उनसे वीरता में अधिक मैडल मिले हैं। आपने स्मरण कराया कि अकालियों ने एशियाड खेलों में गड़बड़ करने की धमकी दी थी, तब हरयाणा की पुलीस के जवानों ने अकाली सुरमाओं को पंजाब से आने वाली सभी सड़कों पर खड़े होकर हरयाणा की सीमा में नहीं घुसने दिया था।

३० जनवरी को होने वाले सत्याग्रह की तैयारी के लिए प्रोफेसर शेरसिंह ने २१ जनवरी को जिला रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम दूबलधन में एक विशाल जन-समूह को सम्बोधित किया तथा आस-पास के ग्रामों से एकत्रित लोगों को हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सत्याग्रह में भाग लेने का आह्वान् किया। प्रो० शेरसिंह कोवहां के ग्रामों की ओरसे ११०० रुपये की थैली भेंट करते हुए विश्वास दिलाया कि हम अपने-अपने ग्रामों से ११०० सत्याग्रह भी भेजेंगे। इसी प्रकार २२ जनवरी को १ बजे आप आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल पधारे। वहां के नवनिर्वाचित आर्य समाज के प्रधान श्री रतनसिंह लाठर ने ५०० रुपये की थैली भेंट करते हुए वचन दिया कि करनाल से अधिक से अधिक सत्याग्रही दिल्ली पहुँचेंगे। इस अवसर पर आर्यसमाज के वयोवृद्ध आर्य संन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं की हिन्दी रक्षा आन्दोलन की भाँति जेल भरने के लिए तैयार होने की अपील की।

प्रो० शेरसिंह २३ जनवरी को ही दोपहर बाद ३ बजे आर्यसमाज चबूतरों जिला अम्बाला के उत्सव में पधारे। वहां के आर्यसमाजों के अधिकारियों ने उनका हार्दिक स्वागत करते हुए विश्वास दिलाया कि हम भी अपने-अपने जत्थे लेकर दिल्ली पहुँचने की तैयारी कर रहे हैं। सभा के नवयुवक विद्वान् उपदेशक आचार्य देवव्रत शास्त्री तथा पण्डित हरलाल, बनारसीलाल, शेरसिंह ने भी अपने व्याख्यान भजनों द्वारा जनता को संघर्ष में कूदने के लिए ललकारा। प्रो० शेरसिंह ने अपने प्रभावशाली भाषण में अन्याय का मुकाबला करने के लिए संगठित होने तथा सत्याग्रह में भाग लेने के लिए आह्वान किया। २३ को ही दोपहर बाद ४ बजे आर्यसमाज यमुनानगर ७ बजे आर्यसमाज थानेसर तथा ६ बजे रात्रि सभा के पूर्व प्रधान श्री दलीपसिंह आर्य से पानीपत भेंट करके सत्याग्रह की तैयारी से अवगत किया और पानीपत से भी सत्याग्रही भेजने का अनुरोध किया। श्री आर्य जी ने प्रो० साहब को कहा कि पानीपत अपनी परम्पराओं के अनुसार किसी से पीछे नहीं रहेगा। रात्रि को ही १०-३० पर प्रो० शेरसिंह ने सोनीपत पहुँचकर श्री पँजूराम आर्य संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी जिला सोनीपत के निवास पर पधार कर उन्हें भी सत्याग्रह की तैयारी में जुट जाने का निर्देश दिया। उन्होंने विश्वास दिलाते हुए कहा कि हम जि० सोनीपत से दिल्ली अधिक से अधिक सत्याग्रही भेजने की तैयारी पूर्व हो कर रहे हैं। सत्याग्रह के संचालन के लिए सोनीपत के आर्यसमाजों (सोनीपत नगर, काठमण्डी आर्यनगर, ऋषिनगर, माडल टाउन तथा शान्तिनगर) की ओर से ६०५ रुपये की थैली भेंट की।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के कार्यालय में प्राप्त पत्रों से ज्ञात हो रहा है कि ३० जनवरी को हरयाणा के कोने कोने से भारी संख्या में सत्याग्रही दिल्ली पहुंचेंगे। दिल्ली तथा दिल्ली के उपनगरों में रहने वाले हरयाणावासियों ने प्रो० साहब को आश्वासित किया कि हम सत्याग्रहियों का स्वागत व भोजन का प्रबन्ध करेंगे। —केदारसिंह आर्य

आर्य महासम्मेलन मीनाक्षीपुरम में पढ़े गए अध्यक्षीय भाषण का प्रधान-अंश

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने भारत में रहने वाले लोगों को आर्य मानते हैं। उनको दृष्टि में हिन्दू कोई नहीं है। जैन, बौद्ध आदि धर्म नहीं, अपितु मत है। अतः आर्य नेताओं को महर्षि के मन्तव्य के अनुसार ही भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

—सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक

विदेशी षड्यन्त्र

आप सब यह बात भली-भांति जानते हैं कि फरवरी १९८१ में विदेशी धन के बल पर भारत और विदेश से आये सात हजार मुसलमानों ने इस गांव के गरीब हरिजनों का बलात् धर्म परिवर्तन कर भारतीय समाज में हलचल मचा दी थी। इस एक ही दुर्घटना ने देश के बुद्धिजीवी तथा धर्म परायण हिन्दु समाज और राजनीतिक दलों को एक नई परेशानी में डाल दिया। पेट्रो डालर को नई शक्ति से हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करके विदेशी इशारों पर नचाने वाले तथाकथित अल्पसंख्यक मुस्लिम सम्प्रदाय जहां धर्म के नाम पर भारत के राजनैतिक ढांचे को बदलना चाहते हैं और सत्ता हथियाने का स्वप्न ले रहे हैं, वहां उनका निशाना यह भी है कि भारत के १४ करोड़ों हरिजन को मुसलमान बनाकर बहुसंख्यक हिन्दुओं को भारत में अल्पसंख्यक बना दिया जाये।

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की दृष्टि जब १६ जनवरी, १९८१ के कुवैत से प्रकाशित अरब टाइम्स की कुछ प्रतियों पर पड़ी तब उन्हें मुस्लिम षड्यन्त्रों की पूरी जानकारी प्राप्त हुई। इनमें इस्लामिक कलचरल सेंटर लन्दन के डायरेक्टर मुहम्मद अब्दुलखरे बदवुई का इस आशय का वक्तव्य छपा था कि भारतीय हरिजनों का इस्लामीकरण कर भारत में मुसलमानों की संख्या २० करोड़ करने का यही सुनहरा अवसर है।

वस्तुतः यह योजना १९७३ में पान इस्लामिक फेडरेशन के तहत शुरु हुई जिसमें मोरक्को से लगाकर मलेशिया तक फैले हुए समस्त मुस्लिम राष्ट्र शामिल हैं। इसकी पहली बैठक में ही इस काम के लिए ५००० करोड़ रुपये मंजूर किए गए।

इस सम्बन्ध में हमें—अली बन्धुओं में उस षड्यन्त्र का स्मरण होता है जिसमें उन्होंने—हरिजनों को आधा-आधा बांट लेने को पेशकश को थी और जिसको उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपतराय और मदनमोहन मालवीय जी ने विरोध कर असफल कर दिया था। यहां उस षड्यन्त्र का उल्लेख करना भी प्रांसगिक होगा जो १९३६ में मिस्र में रचा गया था जिसमें भारत के दलित बन्धुओं को सामूहिक रूप में मुस्लिम बनाने की योजना थी। इन सब बातों का उल्लेख वर्तमान संकट को भूमिका को बतलाने के लिए ही कर रहा हूं।

इस योजना की पूर्त्यर्थ काहिरा के अल अजहर इस्लामी विश्वविद्यालय के रैक्टर शेख आलम ने भारत के हरिजनों के मुस्लिमकरण के लिए एक मिशन और २५ हजार पौण्ड एकत्र कर भारत भेजने को पहल की थी। यही नहीं उन्होंने भारत के मुस्लिम नेताओं को एक पत्र भेजकर एक सुनहरे अवसर से लाभ उठाने के लिए अपनी पूरी शक्ति से इस काम में जुट जाने का और अछूतों को मुसलमान बनाने का आह्वान किया था और यह भी पूछा था कि इस कार्य के लिए और कितने मिशनरी भेजे जाए। इस पत्र का उत्तर अन्जुमने इस्लाम के प्रधान ने इस रूप में दिया था कि अधिकांश अछूत दक्षिण भारत में रहते हैं।

इस पत्र के अनुसार ही मुसलमान नेताओं ने दक्षिण में धर्म परिवर्तन की योजनाबद्ध नीति को बनाया जो मुस्लिम नेता हरिजनों को दक्षिण में मुसलमान बनाने का कार्य कर रहे हैं उन्हीं की ओर से आज अल्पसंख्यक होने की आड़ लेकर केन्द्रीय सरकार को किसी न किसी रूप में परेशान किया जा रहा है। इसका एक उदाहरण अभी पिछले दिनों हमारे सामने आया है जबकि संसद के ४५ मुस्लिम सदस्यों ने संयुक्त रूप से प्रधानमन्त्री को ज्ञापन दिया। यह ज्ञापन आने वाले कल के खतरे की ओर संकेत करता है। हैरानी की बात है कि लोकसभा और राज्यसभा के जितने भी मुसलमान सदस्य हैं वे चाहे कांग्रेस पार्टी, जनता पार्टी, लोकदल या भारतीय जनता पार्टी से सम्बन्ध हों, उन सबका दृष्टिकोण इस्लामीकरण के प्रचार के लिए एक सा है। ये सब इस दृष्टिकोण पर अमल के लिए एक मजबूत मंच बनाने के प्रयास में जुटे हुए हैं। दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी जिनका सीधा सम्बन्ध पाकिस्तान से है, अब इस कोशिश में लगे हुए हैं कि किसी तरह तथाकथित अल्पसंख्यक अकाली सिख तथा उनकी विचारधारा के अन्य वर्गों का समर्थन लेकर एक ऐसा आन्दोलन चलायें जिससे राष्ट्रीय एकता में प्रयत्नशील और धर्म निरपेक्षता की पोषक सरकार धराशायी हो जाये।

खेद की बात है कि सब कुछ जानते हुए भी हमारी सरकार ने कबूतर की तरह आँखें बन्द कर रखी हैं। जो लोग केन्द्र को कमजोर करने पर तुले हुए हैं, वह उन्हीं के सामने झुक रही है और आर्यसमाज की बात को, जो केन्द्र को शक्तिशाली देखना चाहता है और राष्ट्रीय एकता में विश्वास रखता है, तभी सुनती है जब पानी सर से गुजर जाता है।

आर्य जगत् का दिशाबोध

इस पुनीत पावन अवसर पर यह धार्मिक और नैतिक कर्त्तव्य है कि आर्य जगत् को समुचित मार्ग का दिशा बोध कराया जाए। आर्य समाज का विशाल संगठन निश्चित रूप से अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा। इसके साथ ही मुझे यह भी आशा है कि समूचा हिन्दू समाज जिसके घटक के रूप में सनातन धर्मी, जैन समाज, बौद्ध धर्मावलम्बी एवं देश की एकता में विश्वास रखने वाले सिख भाई भी हैं। आर्यसमाज के धर्मरक्षा महाभियान के महान् आन्दोलन को सफल बनाने में पूरा योगदान देंगे।

[क्रमशः]

सम्पादकीय

समय की आवाज सुनो

विगत सप्ताह के सम्पादकीय में हमने 'अकाली-संकट' की पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डाला था। अकाली-संकट आज नया संकट नहीं है। १८५७ ई० के स्वतन्त्रता संग्राम के पश्चात् आज के हरयाणा के प्रदेश को आज के पंजाब को पुरस्कार स्वरूप दे दिया गया था। इस बात से हम अकालियों की देशभक्ति का भी अनुमान लगा सकते हैं। १८५७ १९६६ ई० मे जबकि हरयाणा प्रान्त का गठन हुआ। उसमें पूर्व भी अकालियों का जो बर्त्ताव हमारे साथ रहा है। वह भी क्या भुलाया जा सकता है ? सरकारी सेवाओं और अन्य महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक सेवाओं में हमारे अकाली भाइयो ने हमारे लोगो को उनकी योग्यता और संख्या के आधार पर भी न्याय नहीं दिया। सभी पदो को स्वय सुशोभित करते रहे थे। बजट जो उस समय महापंजाब का हुआ करता था अनुमानत: ८० करोड़ रुपया था। उसमें से ५७ करोड़ रुपया हमारे बड़े भाई (पंजाबी-अकाली) खुद ही डकार जाया करते थे। मात्र २३ करोड़ ही अपने बराबर के भागीदार हरयाणा को देकर अहसान जताते रहते थे। राजनीतिक प्रतिनिधित्व की दृष्टि मे भी हमारे लोगों को नाममात्र के लिए लिया जाता था। मुश्किल से हरयाणा का एक मन्त्री ले देकर तत्कालीन मन्त्री परिषद् का सदस्य होता था। किसी भी प्रकार के विकास-काय में हमको पहल और समुचित न्याय नही दिया जाता था। शिक्षा के नाम पर सारे हरयाणे में एक भी विश्वविद्यालय नही था। सारे विश्वविद्यालय पंजाबी-भाषी क्षेत्र में ही थे। हमको अपनी मातृ-भाषा हिन्दी से पढने का अधिकार भी नहीं था बल्कि हम पर बलात् पंजाबी थोंपी जाती थी। बिना पंजाबी के मैट्रिक पास युवक को किसी भी प्रकार की राजकीय, नागरिक या प्रशासकीय सेवा में भर्ती नहीं किया जाता था। इस प्रकार हम सदा ही दूसरे दर्जे के नागरिक बना कर रखे गये। उसी की मुक्ति के लिए तो १९५७ का 'हिन्दी-सत्याग्रह' छेड़ना पड़ा था। उसको भी इन लोगो ने कितनी क्रूरता पूर्वक कुचलने का प्रयत्न किया था। वह भी किसी से छुपा नही है। वही सभी कुछ आज ये लोग हमारे हिन्दी भाषी भाई अबोहर-फाजिल्का के लोगो के साथ कर रहे है। वहा पर दमन-चक्र अपने यौवन पर है। आप लोग कभी वहां पर जाकर तो देखिए। स्वामी केशवानन्द जी की साधना-स्थली हिन्दी साहित्य-सदन को क्या स्थिति है ? जो स्थान अखिल-भारतीय-स्तर का हिन्दी के प्रचार-प्रसार का साधना-मन्दिर रहा हो। जो एक तरुण तपस्वी की तपस्थली रही हो उसको आज पजाब सरकार के हौदेदार लोग पैरों तले रौदे, उसका निजी स्वार्थ के लिए दुरुपयोग करें, देखकर रोना आता है।

अबोहर-फाजिल्का के हिन्दी-भाषी हिन्दू लोग जिनकी संख्या ८० प्रतिशत है उनको अपने बच्चो को हिन्दी माध्यम से पढ़वाने की छूट नही दी जाती। हम पर ४% लोगो की भाषा पजाबी को दूसरो राज-भाषा बनाने के लिए दबाव डालते हैं। क्या यही इनका मानवीय-न्याय और धार्मिक-विवेक है ? अबोहर-फाजिल्का क्षेत्र के लोगों को जलसे जलूस करने तक की आजादी नहीं उन पर धारा १४४ लगाई जाती है क्या इसी को तुम स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र कहते हो ? जिस क्षेत्र को सन् १९५६, १९६५, १९६६, १९७० के फसलो मे उभय-पक्ष की ओर से हरयाणा को देना मान लिया गया। आज उस फैसले को मानकर भी उससे मुकर जाना क्या यह थूककर चाटने वाली बात नहीं है ? इससे बड़ी बेइमानी और बेइन्साफी कोई हो नही सकती। जो लोग संविधान, संसद, केन्द्र, सरकार, भाईचारा किसी के भी फैसलों को नहीं मानते वे 'देशद्रोही' नहीं तो और क्या कहला सकते हैं ? गुरुओं की शिक्षा के विरुद्ध आचरण करके हमारे अकाली भाई उनसे भी द्रोह कर रहे हैं। इसलिए वे गुरुद्रोही कहलाने के भी अधिकारी हैं

नहरों के हैड-वर्क्स पर अपना ही कब्जा जमा बैठना कहा का न्याय है ? जबकि १९७६ में निर्णय यह हुआ था कि हरयाणा, पंजाब व राजस्थान तीनों प्रदेशों का साँझा आयोग (Joint Comission) प्रबन्धक के रूप मे होगा। हरयाणे के जीन्द, करनाल सिरसा, हिसार और अम्बाला जिले मांगकर हरयाणा को ही खत्म करने पर वे तुले हुए है। आज तो अकाली ही क्या पजाब का चप्पा-चप्पा हमारा दुश्मन हो रहा है। जब वीरेन्द्र जी जैसे लोग हमारे आन्दोलन को जाति वादी बताते हैं और हमें पुनः अपना गुलाम बनाने के लिए महा-पंजाब की मांग उठा रहे हैं तो क्या वे उल्टी-गंगा नहीं बहाना चाहते हैं। वीरेन्द्र जी और इनके पूज्य पिता महाशय कृष्ण जी को हमने सदा ही सिर-आंखो पर रखा। उनका भी हमारे साथ आज क्या बर्ताव है ? इ आप 'वीर-प्रताप' के सम्पादकीय लेखों मे देख ही लेते होंगे। क्या यह वही बात नहीं है -

जिन्हे हम हार समझे थे गला अपना सजाने का
वही अब नाग बन बैठे हमे ही काट खाने को।

केन्द्र और अकालियो की त्रिपक्षीय वार्ता चल रही है। अकालियो ने अपनी जुनियर टीम को ही भेजा है। केन्द्र अकालियो को हरहालत में सन्तुष्ट करना चाहेगा क्योकि उसकी यही नीति रही है। दूसरे दिल्ली के चुनाव मे उनके वोट बटोरने की भी चिन्ता है। विपक्ष के मध्य मे आ जाने से अकालियों का सौदेबाजी पटती हुई नही दिखाई देती। वे फिर मोर्चा लगाएंगे और केन्द्र पर नाजायज दबाव डालेंगे और हमारी कीमत पर कोई न कोई सौदा कर ही लेंगे। इसलिए अब समय आ गया है कि हम भी पंजाब की तरह अपने हितों के लिए सभी प्रकार व्यक्तिगत तथा दलगत स्वार्थ और मतभेद भुलाकर एक जुट होकर तन, मन, धन जन से स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व में ३० जनवरी से सत्याग्रह में जुट जायें। यह समय की आवाज है। इसको पहचानो वरना पछताना पड़ेगा।

म० भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

गांव की धूल भी उमड-घुमड उठी है

अकालियो के तथाकथित 'धर्मयुद्ध' से जहां पर हरयाणा का नगर-मानस क्षुब्ध है। गाँव का जन भी अंगड़ाई लेकर अंगारे उगलने लगा है। समय की चुप्पी ने करवट बदली है। प्रो० शेरसिंह जी के सबल नेतृत्व में हरयाणा रक्षा वाहिनी के सर्वदलीय मंच के माध्यम से ग्रामीण जनता भी अपने हितों के प्रति उद्बुद्ध हो उठी है। इसका प्रबल प्रमाण विगत दिनो गावों मे आयोजित हरयाणा रक्षा वाहिनी के सम्मेलनों से मिलता है। खरखोदा और बेरी की भाँति दूबलधन जिला रोहतक में २१ जनवरी को हरयाणा रक्षा वाहिनी की एक जनसभा रखी गई जिस का आरम्भ हरयाणा प्रतिनिधि सभा के प्रचारक पं० ईश्वरसिंह तूफान के मधुर लोक-संगीत से हुआ। सभा का उद्घाटन हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रचार मन्त्री प० धर्मनन्द्र विद्यालंकार एम० ए० ने किया। अपने ओजस्वी भाषण में उन्होंने अकालियों की खुलकर खबर ली। ग्रामीण लोगों को अपने हितो की रक्षा के लिए ललकारा।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह जी सभा के मुख्य अतिथि रहे। उन्होने विस्तार पूर्वक अकाली समस्या को लोगों के सामने रखा। उन्होंने कहा कि हमने अकालियों के जवाबी आन्दोलन के रूप में मुँहतोड़ उत्तर देने लिए हरयाणा रक्षा वाहिनी का जन-आन्दोलन चलाया है। इसे व्यापक जन-समर्थन मिलना चाहिए और मिल भी रहा है। आज हमारे व्यक्तिगत या दलगत स्वार्थ और मतभेद नहीं उभरने चाहिए। हमे आखिरी दम तक हरयाणे के हितों की लड़ाई लड़ना है। उन्होंने लोगों को पुरजोर आह्वान किया। गांव के लोगो ने बढ-चढ कर भाग लिया और प्रो० साहब को ११०० रुपये की सहायता राशि भी प्रेम पूर्वक भेंट की। चौधरी भरतसिंह जो सरपंच का विशेष योगदान रहा।

हरयाणा से अन्याय तथा भेदभाव किसी भी अवस्था में सहन नहीं होगा
रोहतक की सार्वजनिक सभा में हरयाणा के नेताओं की सरकार को चेतावनी

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

रोहतक २६ जनवरी—भिवानी स्टैण्ड पर आयोजित सर्वदलीय विशाल सार्वजनिक सभा आर्यसमाज के ख्याति प्राप्त स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर पं० मुन्शीलाल सुमेरसिंह तथा श्री रामस्वरूप निडर के जोशीले भजनों ने समय को बान्ध दिया।

पाकस्मा मण्डल के नेता श्री सुखदेव शास्त्री ने हरयाणा के वीरों को सराहना करते हुए कहा कि अकालियों के नेताओं को हरयाणा विरोधी नीतियों को सफल नहीं होने देंगे। हिन्दी आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन के सेनापति स्वामी रामेश्वरानन्द भूतपूर्व लोकसभा सदस्य ने अकालियों को ललकारते हुए सावधान किया कि उनकी अक्ल ठीक करने के लिए अभी हम जीवित हैं। आपने पंजाब में उन द्वारा निहत्थों पर गोली चलाना, गायों को काटकर मन्दिरों में फेंकने से उन्हें बहादुर नहीं कहा जा सकता। गुरुद्वारों में हिन्दू भी जाकर चढावा चढाते हैं, परन्तु अकाली उसी आमदनी का दुरुपयोग हिन्दुओं के विरुद्ध ही कर रहे हैं। अतः हिन्दुओं को गुरुद्वारों में नहीं जाना चाहिए। अकाली हिन्दुओं को कतल करने वालों को गुरुद्वारों में शरण देकर उन्हें अपवित्र कर रहे हैं। वायुयानों का अपहरण करके पाकिस्तान ले जाते हैं तथा जामा-मस्जिद दिल्ली के शाही इमाम को बुलाकर उनसे आशीर्वाद मांगकर अपने गुरुओं का भी अपमान कर रहे हैं। यदि अकाली सन्त बहादुर हैं तो अपने तीर्थ स्थान ननकाना साहब जो पाकिस्तान में छोड़कर भाग आये थे, उसे आजाद करवाने के लिए हरयाणा की बजाय पाकिस्तान की ओर अपने निहंगों को लड़ने के लिए भेजें। हम भी आपके साथ लड़ेंगे। हरयाणा में सिखों का कोई तीर्थ स्थान नहीं है। अतः हरयाणे के अधिकारों पर छापा मारने का यत्न न करें। यदि इधर नजर की तो लेने के देने पड़ जावेंगे।

स्वामी ओमानन्द जी जिनके नेतृत्व में ३० जनवरी को दिल्ली में सत्याग्रह होगा, इस अवसर पर हरयाणा की जनता को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए चोकस रहने का आह्वान किया। सत्याग्रह में हरयाणा के सभी राजनैतिक तथा धार्मिक कार्यकर्त्ताओं को भारी संख्या में दिल्ली पहुँचकर अपनी शक्ति तथा संगठन का परिचय देना चाहिए। आपने स्मरण करवाया कि हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में हरयाणा की ओर से ५० हजार नर-नारियों ने पंजाब की जेलें भर दी थी। इस बार फिर हम संघर्ष के मैदान में उतरकर अकालियों को एक दिन में ही दिखा देंगे कि मांस शराब तथा अफीम का सेवन करने वाले अकाली हमारे से टकराने का साहस नहीं करेंगे।

हरयाणा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री बनारसीदास गुप्त ने अपने प्रभावशाली भाषण में अकालियों को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि उनका मोर्चा धर्मयुद्ध नहीं अपितु पापयुद्ध है क्योंकि उनकी मांगें राष्ट्र तथा हरयाणा विरोधी हैं। उन्होंने कई बार भारत सरकार के साथ समझौता किया है परन्तु थोड़े दिन के बाद समझौते को तोड़कर नई-नई मांगों के साथ आन्दोलन छेड़ देते हैं। पंजाब के विभाजन के समय पानी तथा बिजली का बटवारा नहीं हुआ था। हरयाणा के इस अधिकार को छीनने तथा आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव का नाम लेकर खालिस्तान बनाकर भारत के टुकड़े करना हम सहन नहीं करेंगे। आप ने हरयाणा के व्यापारी वर्ग को सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्हें भी अकालियों के विरुद्ध सत्याग्रह में भाग लेना चाहिए। हरयाणा में नहरों का पानी अधिक मिलने पर जहां किसानों की फसलों में हरियाली आवेगी, वहां व्यापारियों के व्यापार में भी वृद्धि होगी। अतः अब समय आ आ गया गया है कि हरयाणा के हितों को रक्षा के लिए सभी मतभेद भुलाकर स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व में सत्याग्रह में भारी संख्या में भाग लेवें। आपने राजनैतिक नेताओं से भी अपील करते हुए कहा कि वे व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर हरयाणा रक्षा वाहिनी के आन्दोलन में कन्धे से कन्धा मिलकर सहयोग करें।

चौधरी धर्मसिंह राठी भूतपूर्व विधायक पानीपत ने हरयाणा की जनता को उन नेताओं से सावधान रहने के लिए कहा जो कि प्रो० शेरसिंह की आलोचना करते हैं। वास्तव में प्रो० शेरसिंह ने सर्वप्रथम हरयाणा रक्षा वाहिनी का गठन करके सारे हरयाणे को जगा दिया है। अन्यथा आज हरयाणा के विरुद्ध एक तरफी फसला हो जाता। अकाली आन्दोलन का रोहतक शहर की ओर वैद्य भरतसिंह आर्य, श्री परमानन्द तुली तथा श्री पूर्णचन्द आजाद ने विश्वास दिलाया कि हम सत्याग्रह में सनातन धर्मी भाई हिन्दी आन्दलन की भान्ति तन, मन व धन से सहयोग करेंगे। इसी प्रकार जिला गुड़गांव की ओर दीवान भीमसेन जिला महेन्द्रगढ की ओर से प्रो० प्रभुदयाल यादव, जिला करनाल की ओर से श्री रतनसिंह लाठर, जिला जीन्द की ओर से मा. बद्रीप्रसाद, जिला सोनीपत की ओर से पंजूराम आर्य, दिल्ली के ग्रामों की ओर से श्री हरकिशनसिंह मलिक, पाकस्मा मण्डल की ओर से श्री महावीरसिंह आर्य, चौबीसी महम की ओर से श्री अर्जुनसिंह, तहसील झज्जर की ओर से श्री अर्जुनदेव आर्य आदि ने इस सत्याग्रह में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की घोषणाएं की।

सभा के अन्त में हरयाणा रक्षा वाहिनी के संयोजक महाशय भरतसिंह जी ने सभी कार्यकर्त्ताओं के सहयोग का आभार प्रकट किया तथा सत्याग्रह के कार्यक्रम की सूचना देते हुए बताया कि ३० जनवरी को प्रातः दस बजे राजघाट दिल्ली में यज्ञ करके प्रधान मन्त्री के निवास पर जलूस के रूप में जाकर अपनी माँगों का ज्ञापन देंगे।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

पाठकों को आवश्यक सूचना

सत्याग्रह की तैयारी के कारण सर्वहितकारी का भक्त फूलसिंह विशेषांक ७ फरवरी के स्थान पर फरवरी के अन्तिम सप्ताह में प्रकाशित किया जावेगा।

—व्यवस्थापक

वेद मन्त्रों के सस्वर एवं संगतिमय ध्वनिपूरित केसेट

सं. १ से २० तक प्रत्येक केसेट ५०) रु० का है। पैकिंग डाक व्यय सहित ६०) रु० ६ केसेट मंगाने पर डाक व्यय नहीं लगेगा।

१. सन्ध्या हवन केसेट—इसमें प्रातः सूक्त सार्थक ० सन्ध्या ० प्रार्थना मन्त्र अर्थ सहित ० दैनिक अग्निहोत्र ० स्वस्तिवाचन ० शान्तिकरण ० साप्ताहिक सत्संग होम तथा महावामदेव्य गान है। चारों वेदों की रीति से मन्त्र पाठ स्वर सहित है।

२. मन्त्र पाठ केसेट-इसमें यजुर्वेद की रीति से सस्वर पाठ निम्न अध्यायों का है-यजुर्वेद अध्याय १६ वां रुद्राध्याय ० ३१ वां अध्याय पुरुष सूक्त ० ३२ वां ब्रह्म सूक्त ० ३६ वा शान्त्याध्याय ० ४०वा ईश सूक्त तथा आत्मपावन एवं वैदिक श्री सूक्त हैं।

३. प्रवचन केसेट—गायत्री एवं यज्ञ विषय पर।

४. प्रवचन केसेट—सन्ध्या का क्रियात्मक एवं यौगिक रहस्य।

५. प्रवचन केसेट—वेद कथा एव शिवशंकर दयानन्द।

६. मन्त्र गान केसेट- प्रणव साम ० गायत्री ० ईशावास्यम् ० विश्वानिदेव ० त्र्यबंक यजामहे ० यज्जाग्रतो ० संगच्छध्वं ० समानो मन्त्रः ० समानीव आकूतिः ० महावामदेव्य सामागान ० स्तुता मया वरदा वेदमाता ० द्यौः शान्तिः ० मन्त्रों का गान वाद्य सहित वेद मन्त्रों के ही स्वरों में।

७. मन्त्र पाठ केसेट—गायत्री मन्त्र एवं त्र्यबकं यजमाहे मन्त्रों का सस्वर, संहिता, पद, क्रम, जटा घनादि पाठ हैं।

८ एवं ९ आर्याभिविनय केसेट—मन्त्र पाठ एवं महर्षिकृत अर्थ सहित।

१०. मन्त्र पाठ केसेट ऋग्वेद मन्त्र—प्रथम मण्डल के प्रथम ५ सूक्त तथा स्वराज्य सूक्त, ज्ञान सूक्त कः [प्रजापति] सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त, नासदीय सूक्त, अघमर्षण सूक्त, ऋग्वेद का अन्तिम संज्ञान सूक्त। ऋग्वेद रीति से तथा श्रुति परम्परा से अभ्यास पाठ नासदीय सूक्त का है।

प्रतिवेदानुसार सस्वर मन्त्राभ्यास निम्न अभ्यास केसेटों द्वारा घर बैठे सीखें—

इनमें श्रुति परम्परा से शुद्ध एवं सस्वर मन्त्राभ्यास सीखने के लिए मन्त्र का प्रत्येक चरण, पंक्ति और सम्पूर्ण मन्त्र ५-५ बार बोला गया है। जिससे प्रत्येक व्यक्ति सरलता से उसके साथ-साथ शुद्ध एवं सस्वर मन्त्राभ्यास कर सकेगा।

१० मिनट के प्रत्येक केसेट में १४ के लगभग मन्त्रों का अभ्यास पाठ तैयार होता है। अभ्यास केसेट निम्न प्रकार है—

केसेट नं. ११—गायत्री मन्त्र प्रातः सूक्त के ५ मन्त्र ईश्वर-स्तुति प्रार्थना के ७ मन्त्र यजुर्वेद रीति से

केसेट नं. १२ व १३—स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का अभ्यास २ केसेटों में।

केसेट नं. १४ व १५—शान्तिकरण के मन्त्रो का अभ्यास २ केसेटों में।

केसेट नं. १६ व १७—पुरुष सूक्त यजुर्वेद एवं ऋग्वेद की रीति से २ केसेटों में।

केसेट नं. १८—यजुर्वेद का ४० वाँ अध्याय।

केसेट नं. १९ सामवेद की प्रथम दशति एवं महावामदेव्य गान।

केसेट नं. २०—ऋग्वेद के प्रारम्भ और अन्त के सूक्त।

सम्पूर्ण यजुर्वेद संहिता स्वर-पाठ सहित ६००) रुपये

सम्पूर्ण सामवेद संहिता ५००) रु० डाक व्यय सहित

हमारे केसेटों की प्रति करना निषिद्ध है। मूल्य अग्रिम भेजकर शीघ्र मंगावें।

पता

वेद सदन, महारानी रोड़, इन्दौर ४५२००७

दिल्ली के आर्य कार्यकर्ता श्री देवीशरण आर्य के निधन पर शोक सभा

आर्यसमाज बिड़ला लाईंस दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्त्ता व उपप्रधान श्री देवीशरण आर्य के आकस्मिक निधन पर आज आर्यसमाज मन्दिर बिड़ला लाईन्स के सभागार में श्री प्रेमनाथ चड्ढा (प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) की अध्यक्षता में 'शोक सभा' आयोजित की गई।

सभा में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के अध्यक्ष ब्र० राजसिंह आर्य ने श्री देवीशरण आर्य को महान् कर्मयोगी तथा सदाचारव्रती बताया। आर्यसमाज के लिए उनका जीवन समर्पित था। वे सदैव युवकों का उत्साह बढाते रहते थे।

श्री देवीशरण आर्य जी को आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द का अनुयायी बताते हुए श्री लाजपतराय, पं० राजवीर शास्त्री, सम्पादक दयानन्द सन्देश, श्री देशराज पाराशर, श्री जगदीश भजनोपदेशक, श्री प्रेमपाल शास्त्री, श्री रामचन्द्र शास्त्री, पं० ईश्वर दत्त, वैद्य बालकृष्ण, श्री शिवप्रसाद गुप्त, प्रिंसिपल मुशीला मेठी, श्री गुरुदत्त गौतम, श्री श्यामलाल, श्री धर्मपाल आदि वक्ताओं ने भी अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के अतिरिक्त आर्यसमाज शक्ति नगर, जे० जे० कालोनी, सोहन गंज, हर्ष विहार सरस्वती विहार कबीर बस्ती, पुलबंगश, आर्यपुरा, मलका गंज, वैदिक सत्संग कमला नेहरू पार्क, प्रताप नगर, जहाँगीरपुरी, ने शोक प्रस्ताव पारित कर आर्य समाज की अपूरणीय क्षति बताया।

कार्यक्रम के सयोजक श्री जयकिशन आर्य, मन्त्री आर्यसमाज बिड़ला लाईन्स थे।

चन्द्रमोहन आर्य
कार्यालय मन्त्री
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश

मैकेनिकल ड्राफ्समैनों की आवश्यकता

दिल्ली में मैकेनिकल ड्राफ्समैनों के स्थान रिक्त हैं। अतः इच्छुक प्रत्याशी अपने प्रार्थना पत्र अपनी योग्यताओं के प्रमाण पत्रों सहित शीघ्र निम्न पते पर भेजकर लाभ उठावें।

प्रियव्रत जे/१/१६० राजौरी गार्डन नई दिल्ली

फरवरी में आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में फरवरी मास में निम्नलिखित आर्यसमाजों तथा सस्थाओं के प्रचार कार्यक्रम तथा वार्षिक उत्सव निश्चित हुए हैं—

आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल जि० फरीराबाद	५ से ११ फरवरी
„ खारवन जिला अम्बाला	१०, ११ „
„ सोनीपत शहर	१०, ११ „
„ कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत	१२ १३ „
„ सफीदों मण्डी जिला जीन्द	१२ से १४ „
„ समालका मण्डी जिला करनाल	१६ से २१ „
„ सालवन „ „	१९ से २१ „
„ ढोल जि० कुरुक्षेत्र	२५ से २७ „

मेवात में आर्य कार्यकर्ता शिविर

४, ५, ६ फरवरी ८३ को वेदमन्दिर ग्राम मरोडा नजदीक पिनगंवा जिला गुड़गांवा में एक आर्य कार्यकर्ता शिविर का आयोजन हो रहा है। इस अवसर पर स्वामी प्रेमानन्द जी, स्वामी जगदीशवरानन्द जी, श्री प्रेमभिक्षु जी, प० बालदिवाकर जो हंस आदि अनेक साधु महात्माओं का मार्ग दर्शन प्राप्त होता रहेगा। शिविर की समाप्ति पर सभी शिवरार्थी अपनी सुविधानुसार मेवात क्षेत्र के ग्रामों में बसे हिन्दू भाइयों में धर्म प्रचार हेतु पाँच पाँच व्यक्तियों की टोलिया बनाकर पदयात्रा करेंगे।

ग्रामीण क्षेत्रों में हिन्दुओं के बीच वैदिक धर्म प्रचार के मुख्य बिन्दु निम्नलिखित होंगे—

१—चोटी रखना, २—यज्ञोपवीत धारण करना, ३—सभी प्रकार की नशीली वस्तुओं से छुटकारा विशेषकर शराब आदि से, ४—गायत्री मन्त्र के प्रति आस्था व जाप, ५—यज्ञ व सन्ध्या करने की प्रेरणा देना

अतः सभी हिन्दू भाईयों से प्रार्थना है कि ऐसे अवसर पर शिविर व पदयात्राओं में तन, मन, धन से सहयोग देकर मेवात क्षेत्र मे हिन्दुओं का उत्साह बढावें। पदमचन्द आर्य

मन्त्री

आर्य जनता सावधान रहे

तथाकथित ब्रह्मचारी रामप्रकाश कुछ आर्यसमाजों में जाकर उपदेश करता है परन्तु आर्यसमाजों को उसके वास्तविक रूप की जानकारी नहीं है। चरित्र हीनता के कारण उसे आर्यसमाज शिमला, सोलन, सपाटू, डगशाई, पालम, आग आदि से निकाला हुआ है। आर्यसमाज कालका में भी उसके सम्बन्ध में इसी प्रकार की शिकायतें मिली हैं। वह शराबी, माँसाहारी भी है। अतः आर्यसमाजें उनसे सावधान रहें।

स्वामी सुरेन्द्रानन्द वेदमन्दिर परमाणु जि० सोलन

सिरसा में लोहड़ी पर्व

दिनांक १३-१-८३ को लोहड़ी का पर्व स्कूल के प्रांगण मे बड़ी धूम धाम से मनाया गया। स्कूल में सामूहिक रूप से छात्रों, अध्यापकों व प्रबन्ध समिति के सदस्यो ने यज्ञ में भाग लिया। यज्ञ यजमान श्री द्वारका प्रसाद जिन्दल प्रधानाचार्य बने। प्रबन्ध समिति के प्रबन्धक श्री नित्यानन्द जी, श्री बलदेवसिंह जी आर्य सस्दय अन्तरंग आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व श्री नेकीराम जो प्रबन्धक आर्य माडल स्कूल ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। यज्ञ की समाप्ती पर बच्चो में रेवड़ी वितरण की गई। इस प्रकार लोहड़ी का पर्व स्कूल में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। द्वारिका प्रसाद जिन्दल

डा० विद्यासागर जन्म दिन समारोह

डा० विद्यासागर जो कि मनोरोग के विशेष चिकित्सक तथा सुविख्यात समाज सेवी थे और आर्यसमाज के कार्यों में सदा वे अग्रणी रहते थे, का जन्मदिवस समारोह ३० जनवरी ७३ को १ बजे धनवन्ती आर्य कन्या विद्यालय रोहतक में मनाया जावेगा।

नन्दलाल आर्य

शोक समाचार

बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि श्री बलवीरसिंह आर्य ग्राम दुल्लागढ गोहाना (सोनीपत) का १८ जनवरी १९८३ को स्वर्गवास हो गया। वे गत दो मास से गम्भीर रूप से बीमार थे। उनका आर्यसमाज के प्रति काफी लगाव था। वे आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया करते थे तथा आर्यसमाज दुल्लागढ के कर्मठ एव प्रतिष्ठित व्यक्ति थे।

उनके निधन से काफी क्षति हुई है, जो अपूरणीय है। आर्यसमाज दुल्लागढ उनके निधन पर गहरी संवेदना प्रकट करता है। –रामकुमार आर्य

चौ० रामसिह रिटायर्ड, अकाऊण्टेण्ट, जाट कालेज हिसार का दिनांक ४-१-८३ को स्वर्गवास हो गया। वह ऋषि दयानन्द के पक्के अनुयायी थे। प्रभु उनकी सद्गति करे तथा परिवार को धैर्य प्रदान करें। सत्यवीर विद्यालकार

सभा उपमन्त्री

आर्यसमाज पण्डावल में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

पण्डावल जिला बुलन्दशहर में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन २० जनवरी से ४ फरवोर १९८३ तक आर्यसमाज पण्डावल के तत्वावधान में किया जा रहा है।

प्रशिक्षण का कार्य स्वामी सेवानन्द सरस्वती शिक्षक आर्य वीर दल कर रहे हैं।

दीक्षान्त समारोह में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संचालक श्री प० बालदिवाकर हस जी प्रशिक्षित आर्य वीर दल के सैनिकों को सम्बोधित करेंगे। इस शिविर में ५० सैनिक भाग ले रहे हैं। प्रचार मन्त्री

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः

गायत्री मन्त्र की सच्ची महिमा

('सरिता' पाक्षिक के दिसम्बर १९८२, II के आक्षेपों का सप्रमाण उत्तर)

—डा० विश्वबन्धु 'व्यथित' अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी० ए० वी० कालेज अबोहर (पंजाब)

(गतांक से आगे

यह देखकर बहुत से लोग केवल इस विरुद्ध (प्रशंसा) के लोभ में ही अपनी उछलकूद दिखाया करते हैं। शुभ या अशुभ परिणाम से उन्हें कोई मतलब नहीं। मैंने कई छिछोरों और लम्पटों को विधवाओं की दशा पर दया दिखाते हुए उनके पापाचार की लम्बी चौड़ी दास्तान हरदम सुनते सुनाते पाया है।

आशा है पाठक इतने से ही सरिता के इस आन्दोलन की पृष्ठभूमि और उस पर की जाने वाली पुराण-निन्दा के प्रसंग से भली भान्ति परिचित हो जाएंगे।

२—वेदनिन्दा

वेद की निन्दा करने हेतु पूर्व लिखित वाक्यों के अतिरिक्त अनेक वाक्य बिना किसी प्रसंगापेक्षा के भी लिखे गए हैं:—

अकेले ऋग्वेद में २४४९ मन्त्र गायत्री छन्द में रचे गए हैं। क्यों वे मूर्खों द्वारा बनाए गए हैं।

गायत्री मन्त्र में सिवाय बुद्धि की याचना के कुछ नहीं है, न कोई दार्शनिक चर्चा, न प्राकृतिक वर्णन, न कोई मानव हृदय का उद्गार और न कोई सांस्कृतिक महत्व की सूचना।

गायत्री मन्त्र पर लगाए गए सभी आरोपों का उत्तर आगामी पृष्ठों पर पढ़कर पाठक सरिता के लेखकों की बुद्धि पर तरस खाने लगेंगे। अतः यहां अधिक लिखना बेकार है।

३—हिन्दू मान्यताओं का उपहास

इस लेख में एक ओर ईश्वर के अस्तित्व और स्वरूप एवं जन्मांतरवाद के प्रति अनास्था करने का प्रयास है। दूसरी ओर पुराण में वेद की निन्दा और स्वयं वेद में वेदनिन्दा के प्रसंग खोजने की मिथ्या कल्पना की गई है—जैसे ईश्वर निरक्षर भट्टाचार्य और वज्रमूर्ख साबित होता है। साधारण संस्कृत जानने वाला भी ऐसी गलतियां नहीं कर सकता, जैसा कि ईश्वर कही जाने वाली काल्पनिक सत्ता (ईश्वर) ने की है।

जब तक जन्म-मरण के चक्र का अस्तित्व ही सिद्ध नहीं होता, तब तक उससे छूटने के लिए हाथ पैर मारने की क्या तुक है?

स्कंदपुराण, देवी भागवत और पद्मपुराण में गायत्री मन्त्र के अतिरिक्त अन्य सभी मन्त्रों को कूड़ा-कर्कट और निरर्थक बताया गया है।

स्वयं वेद में गायत्री मन्त्र के छन्द को अपूर्ण छन्द बताया गया है इत्यादि। लेखक के शब्द सरिता के कलुषित उद्देश्य को उजागर करने के साथ उसकी मिथ्यावादिता के सजीव प्रमाण हैं। उसने लेख के बहुलांश में पुराणों को वेद की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा करते दिखाया है, तो वही पुराण इतने घोर वेदनिन्दक कैसे हो गए? इसी प्रकार स्वयं वेद को वेद के विरुद्ध खड़ा करने को साहस कहें या दुस्साहस? यह भी विचारणीय है। वस्तुतः यह लेख अन्तर्विरोधों की गुत्थी है। एक ओर लेखक कहता है कि गायत्री मन्त्र अशुद्ध और बेकार है तो दूसरी ओर उसने कहा है—यह निर्विवाद है कि इस मन्त्र में बुद्धि की याचना की गई है। भाव अच्छा होने से मन्त्र को भी अच्छा कहना ही होगा। स्पष्ट है कि एक दिग्भ्रान्त लेखक जान-बूझ कर जनता को भटका रहा है।

४—छन्द-दोष

लेखक ने इस प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र को छन्द की दृष्टि से अशुद्ध बताकर साधारण पाठक को बहकाने का असाधारण प्रयास किया है। उसकी दूरदृष्टि की इसलिए भी दाद देनी पड़ती है कि उसने इस मन्त्र को लंगड़ी और अशुद्ध गायत्री सिद्ध करने के लिए जो एकमात्र गवाही दी है, वह स्वयं वेदमन्त्रों की है। क्या अद्भुत विदग्धता है? लेकिन चालाक आदमी स्वयं अपनी चालाकी में मारा जाता है। कोई भी सजग पाठक वेद को कैसे सरिता के विशेषांक के समान मान सकता है, जिस का सृजन ही वेद को निन्दा के लिए हुआ हो। अतः लेखक के इसी अन्तः विरोधी प्रमाण से यह सिद्ध हो जाता है कि निचृद् गायत्री उसकी मिथ्या कल्पना के आधार पर कोई लंगड़ा या अपूर्ण छन्द नहीं है, अपितु इस गायत्री छन्द का ही ऊपर प्रकार है। इस विषय में लेखक के वचनों का विश्लेषण आवश्यक है। उसका कथन है–

जिस गायत्री मन्त्र की इतनी ज्यादा महिमा गाई गई है, उसके सम्बन्ध में रोचक तथ्य यह है कि वह अशुद्ध छन्द है। शुद्ध गायत्री में तीन पाद और प्रत्येक पाद में आठ वर्ण होते हैं। आलोच्य जपनीय मन्त्र के प्रथम पाद में आठ की जगह सात वर्ण हैं। अतः वह लंगड़ा है। स्वयं वेद में इस गायत्री मन्त्र के छन्द को निचृद् गायत्री (२३ वर्णों वाला अपूर्ण छन्द) बताया गया है (देखिए यजुर्वेद ३१-३५, २२-७, ३०-२, ऋग्वेद ३-८२-१०, सामवेद मन्त्र संख्या १४६२)

यहाँ शर्मा जी ने सफेद झूठ बोलने का रिकार्ड कायम किया है। उपर्युक्त किसी भी मन्त्र में एक शब्द क्या कोई एक वर्ण भी ऐसा नहीं, जो गायत्री मन्त्र को लंगड़ा या अशुद्ध बताता हो यजुर्वेद के मन्त्र २२-७ में यह पाठ है 'विजृम्भमानाय स्वाहा, विचृताय स्वाहा'। जब शर्मा जी ने न जाने किसी खास चश्मे से इसे ही विचृत के स्थान पर निचृत् पढ़ लिया हो। खैर तब भी किस व्याकरण से 'विचृताय स्वाहा' का यह अर्थ होगा कि गायत्री मन्त्र अशुद्ध छन्द है। यही नहीं, यजुर्वेद में ३१-३५ संख्या वाला कोई मन्त्र ही नहीं। बेचारे शर्मा जी भूल गए कि यह अध्याय तो २२ मन्त्रों वाला प्रसिद्ध पुरुष सूक्त है। इसमें २३ वां मन्त्र ही नहीं, तो ३५ वां कहां से आएगा। इसे कहते हैं कि चोर के पांव नहीं होते।

अब रही मन्त्र के प्रथम पाद में आठ के स्थान पर सात वर्ण होने की बात और इसे लंगड़ा छन्द सिद्ध करने की कहानी। इस विषय में अपनी बात कहने से पूर्व आदरणीय शर्मा जी से कुछ प्रश्न पूछने को मन करता है—

क्या चारों वेदों में केवल इसी मन्त्र के प्रथम पाद में ७ वर्ण हैं?

वेद में निचृद् गायत्री छन्द कुल कितने मन्त्रों का है?

क्या गायत्री मन्त्र के केवल दो ही रूप उपलब्ध हैं, गायत्री और निचृद्गायत्री?

यदि गायत्री के और भी अन्य रूपभेद हैं, वे कितने हैं, और उनके क्या नाम हैं? वेद में अन्य छन्दों–अनुष्टुप, त्रिष्टुप, जगती, बृहती, पंक्ति, अष्टि, शक्वरी और उष्णिक् आदि छन्दों का भी केवल एक ही रूप है, अथवा उनके भी निचृद् विराट् आदि रूपभेद हैं? आदि।

यह भी बतादें कि क्या आप अपने प्रयास से ही स्वाध्याय करके इन प्रश्नों का उत्तर खोजकर बता सकेंगे, और जब तक आप पुनः अध्ययन में प्रवृत्त होकर द्विजन्मा बनें, तब तक आपके पाठक क्या आप के द्वारा फैलाई गई भ्रान्ति का शिकार बने रहें। [क्रमशः]

हरयाणा के महाशय हँसराज आर्य

(अशोक आर्य गिदड़बाहा)

जब देश जाति व धर्म संकट की अवस्था मे होता है तो वातावरण की दुर्गन्ध दूर करने के लिए महान् आत्माए इस धरती पर अवतरित होती हों। हमारे चरित्र नायक महाशय हँसराज जी आर्य भी एक ऐसे ही महापुरुष थे।

भारत के प्रथम स्वाधीनता सग्राम की अग्नि की चिगारिया अभी ठण्डी भी नहीं हुई थी कि १८६७ में महाशय हसराज जी का जन्म एक वाणिक परिवार में हुआ। अतः उनको युवा आयु में कदम पहुंचने तक महर्षि दयानन्द के नाम की दुन्दुभि सर्वत्र गूंज रही थी। ऐसी अवस्था में आप भी छोटी आयु में ही वेदिक धर्मी हुए। प० लेखराम व स्वामी दर्शनानन्द ग्रन्थ के अध्ययन से नई ज्योति जागृत हुई। सत्यार्थप्रकाश के बार-बार अध्ययन से तो कायाकल्प ही हो गया। अतः आप प्रायः जाखल क्षेत्र में आर्यसमाज के प्रसारार्थ लगे रहते। एतदर्थ कई शास्त्रार्थ भी करवाए। टोहाना तो पहले से ही आर्यसमाज का केन्द्र था। आपने अपने दोनों भाई श्री मोहनलाल व श्री रामशरणदास के सहयोग से जाखल को भी आर्यसमाज के क्षेत्र में महान् ख्याति दिलाई।

अद्वितीय शास्त्रार्थ महारथी प० मनसाराम वैदिक तोप भी इस त्रिमूर्ति के अभिन्न मित्र थे। विरोधो की चिन्ता किए बिना अनेकानेक संकटों का सामना करते हुए पाखण्डों के विरुद्ध डटे रहे। समाज सुधार निमित्त आप सदैव अगली पक्ति में ही रहे। देश सेवा के लिए तड़प तो मानो घुट्टी में ही मिली थी। स्वदेशी आन्दोलन में आपने भी स्वदेशी का कठोर व्रत धारण कर अपनी आहुति दे डाली एवं अपनी पत्नी श्री मती रामदेवी जी के हाथों का भोजन केवल तभी ग्रहण करने को तैयार हुए जब उन्होने भी स्वदेशी वस्त्र ग्रहण करना स्वीकार किया। ऐसे देशभक्त अन्यत्र मिलने असम्भव हैं।

जेल को आपने अपना घर बनाया तभी तो हैदराबाद सत्याग्रह व हिन्दी सत्याग्रह में हंसते खेलते दलबल सहित प्रस्थान किया। आप जानते थे कि साहित्य ही जनजागरण का प्रमुख साधन है। तभी तो साहित्य प्रकाशन का कार्य अपने हाथों में लिया और चेतावनी प्रकाश फलित ज्योतिष, आर्यसमाज क्या है? आदि कई पुस्तकं प्रकाशित करवाई। स्वास्थ्य की रक्षा आवश्यक है। अतः जन स्वास्थ्य मे सुधारार्थ पहले जाखल में और फिर बरेटा में धर्मार्थ औषधालय खोले। सेवा के इन कार्यों में माता रामदेवी (आपकी पत्नि) ने भी आपको पूर्ण सहयोग दिया। आपने कमाया भी खूब और दान भी दिल खोल कर दिया। निर्धन छात्रों को पढ़ाया। आपने यूथ लीग केरल को वेद प्रचारार्थ उदार दिल से सहायता करते थे। अब भी आपका ट्रस्ट इस मिशन के लिए नरेन्द्र भूषण जी को नियमित सहायता भेजता है।

आपने पं० मनसाराम वैदिक तोप की रक्षा करते हुए भिवानी के रूढिवादियों से लाठियां खाई। इस प्रकार की सेवा करते हुए आप ३१ जुलाई १९७१ को इस संसार से चले गए। वास्तव में ही आपका जीवन एक समर्पित जीवन था।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23307/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,०८३

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी
रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य,

वर्ष १० अङ्क ९ ७ फरवरी १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में १० पौंड एक प्रति ३० पैसे

११ फरवरी ऋषि बोधोत्सव पर्व पर

हरयाणावासी शिवरात्रि को हरयाणा चेतना दिवस के रूप में मनायें



महर्षि दयानन्द जिन्हें शिवरात्रि पर ज्ञान हुआ

'शिवरात्रि' के पर्व का हरयाणा प्रदेश के साथ ऐतिहासिक सम्बन्ध है। युगों तक हरयाणा उत्तरी सीमा पर भारत रक्षा का दायित्व वहन करता है। भारत संस्कृतिक दृष्टि से एक अहिंसा का पुजारी देश है; लेकिन अत्याचारी के आक्रमण के सामने झुकना अहिंसा नहीं—दीनता और कायरता है। अतः न्याय और स्वाभिमान के लिए शस्त्र धारण करना—मरना और मारना हिंसा का मंगलमय रूप है। इसी को शिव-ताण्डव कहते हैं। हरयाणा के यौधेयों ने इसीलिए 'हर-हर महादेव' का नारा बुलन्द करके सदियों तक भारत के सीमान्त पर प्रहरी का कर्तव्य निभाया।

हमारी युग-चेतना के साथ भी शिवरात्रि का पर्व ऋषि बोधोत्सव के रूप में जुड़ गया है। हमारा हरयाणावासियों से निवेदन है कि इस बार शिवरात्रि के पर्व को हरयाणा के नव-चेतना के पर्व के रूप में सब मिल कर मनाए—ईश्वर में शिवस्वपूर्ण संहारक रूप का ध्यान करके राष्ट्र की एकता और हरयाणा के हितों व स्वाभिमान की रक्षा का सामूहिक संकल्प दोहराए।

११ फरवरी १९८३ शुक्रवार को शिवरात्रि का पावन पर्व मनाना है। उस दिन सब हरयाणावासी मिलकर प्रभातफेरी जलूस तथा जन-सभाओं आदि का आयोजन करके हरयाणा में नई चेतना पैदा करें और सामूहिक संकल्प लें।

हरयाणा प्रदेश का शिव से अटूट सम्बन्ध है। 'हर' शिव को ही कहते हैं। कार्तिकेय देवताओं के सेनापति कहे जाते हैं और उनका वाहन मोर हैं। मोर को भारत ने आज राष्ट्रीय पक्षी के रूप में मान्यता दी है। हरयाणा के सभी भवनों और मकानों के शिखर पर मोर प्रतिष्ठित किया जाता है। यौधायों के गणराज्य के पुराने सिक्कों पर मोर और कार्तिकेय का चित्र मिलता है। हरयाणा के सभी मन्दिर शिवालय कहे जाते हैं। हरयाणा के वीरों का युद्ध का घोष भी 'हर हर महादेव' होता है। इसलिए शिवरात्रि के पर्व का हरयाणा प्रदेश के लिए विशेष महत्त्व है।

मेरी यह प्रार्थना है कि सभी हरयाणावासी मिलकर शिवरात्रि के पावन पर्व को 'हरयाणा चेतना दिवस' के रूप में मनायें।

शिव की मूर्ति संकल्प की प्रतीक है। शिव संकल्प के पाठ का रात्रि सोते समय विधान है। हम हरयाणावासी ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में भारी संख्या में इकट्ठे होकर यह संकल्प लें कि चाहे कितना ही बलिदान करना पड़े राष्ट्र की एकता पर ठेस नहीं आने देंगे तथा हरयाणा के हितों की जी-जान से रक्षा करेंगे। देश को तोड़ने और कमजोर करने के अकालियों तथा साम्प्रदायिक और भारत विरोधी तत्त्वों के मनसूबों को नहीं चलने देंगे और अकालियों को हरयाणा के पानी तथा क्षेत्रों को नहीं हड़पने देंगे।

प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान
एवं अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

म्हारा हरयाणा महान्

म्हारा प्यारा हरयाणा महान्
हम इस पै प्राण लुटावें
जित बहै पसीना साथी का
ऊडै अपणा लहू बहावें

डरें नहीं गोली से
हो जा छलनी छाती
हरयाणा के हक नै कोई छीनै
इब या बात सही ना जाती

अकालियां ने फैलाया है
चक्रव्यूह का जाल सा
हरयाणा वासियों के मन में उपजी सै
उसे मिटाण की लालसा

जय भारत की बोल
हरयाणा का हर वीर बढ़ै
दुश्मन आगे बढ़ै तो
उसकी छाती पै चढ़ै

सत्य भारत सांवरिया
अध्यक्ष मानव अधिकार संघर्ष समिति

हरयाणा के हितों की रक्षार्थ

स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व में हरयाणावासियों का दिल्ली में विशाल प्रदर्शन

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

दुर्गाभवन रोहतक में सम्पन्न १६ जनवरी की बैठक के निश्चय के अनुसार हरयाणा रक्षा वाहिनी के तत्वावधान में ३० जनवरी ८३ को दिल्ली में हरयाणावासियों ने अकालियों की अनुचित मांगों का विरोध करने के लिए एक विशाल प्रदर्शन किया गया। इसका नेतृत्व सुविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने किया। हरयाणा के कोने कोने से रक्षा वाहिनी के कार्यकर्त्ता अपने अपने जिले के नामपट्ट तथा तख्तियां उठाये हुए प्रातः ११ बजे राजघाट के सामने वाले पार्क में एकत्रित हुए। सबसे पूर्व पार्क में यज्ञ करके हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए बड़े से बडा बलिदान करने का संकल्प किया। उसी दिन वहां राष्ट्र पिता महात्मा गांधी को उनके बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलियां देने का समारोह भी हो रहा था।

११-३० बजे सभी कार्यकर्त्ता जलूस के रूप में अकालियों की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों तथा हरयाणा प्रदेश के अधिकारों को छीनने की नीतियों के विरुद्ध जयघोष करते हुए रवाना हुए। इस जलूस में गुरुकुल झज्जर, नरेला, गोतमनगर व इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों का योगदान विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। यह जलूस सिकन्दर मार्ग फिरोजशाह मार्ग, रफी मार्ग होता हुआ एक बजे राष्ट्रपति भवन के सामने बोटकलब पर पहुंच गया जहां हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से भोजन की व्यवस्था की गई थी। भोजन तथा विश्राम करने के बाद दो बजे जलूस में फिर गगनभेदी नारे लगाते हुए स्वयंसेवक सत्याग्रह करने के लिए भारत सरकार के गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द जी सेठी की कोठी पर पहुंच गये। द्वार पर पुलीस ने सत्याग्रहियों को रोक लिया परन्तु प्रो० शेरसिंह जी के प्रयत्न से गृहमन्त्री ने सभी सत्याग्रहियों को कोठी के अन्दर आने की अनुमति दे दी और पूरे जोश के वातावरण में सत्याग्रही अकालियों की मांगों के विरुद्ध में नारे लगाते हुए कोठी के अन्दर आंगन में बैठ गये।

प्रो० शेरसिंह जी ने गृहमन्त्री को हरयाणा की जनता की ओर से ज्ञापन की एक प्रति प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारी सभी मांगे न्याय संगत, युक्तियुक्त व राष्ट्रहित में है जबकि अकालियों की सभी मांगे राष्ट्र तथा हरयाणा विरोधी हैं। इसी कारण हम परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में सत्याग्रह के लिए दिल्ली आये हैं। माननीय गृहमन्त्री जी ने बहुत ही नम्रतापूर्वक सत्याग्रहियों से निवेदन किया कि भारत सरकार के साथ अकालियों की अभी तक जो वार्ता हुई हैं, उनमें उन्हें स्पष्ट कर दिया गया है कि आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव जिसमें पृथकता की झलक है, उस पर विचार करने से इन्कार कर दिया है। उनकी शेष मांगों के लिए भी जो नीति अपनाई गई है, उसमें जिन मांगों का सम्बन्ध अन्य प्रान्तों से है, पर विचार करते समय सम्बन्धित राज्यों से परामर्श करके तथा उनका पक्ष सुनकर ही न्याय किया जावेगा और उनकी धमकियों के आगे भारत सरकार नहीं झुकेगी। आपने यह आश्वासन दिया कि ८ से १० फरवरी को दिल्ली में जो अगली त्रिपक्षीय वार्ता होगी उसमें अकालियों के साथ भारत सरकार तथा विरोधी दलों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह को भी हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए आमन्त्रित किया जावेगा। गृहमन्त्री की इस घोषणा का सभी सत्याग्रहियों ने स्वागत किया।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने गृह मन्त्री के आश्वासन पर सत्याग्रह कुछ समय तक स्थगित करने का सुझाव दिया ताकि त्रिपक्षीय वार्ता के परिणाम की प्रतीक्षा की जावे। आपने गृहमन्त्री को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम जेलों में जाने से डरते नहीं क्योंकि हमारा जीवन ही संघर्ष का रहा है। हम भारत सरकार के लिए अकालियों की तरह कठिनाई उत्पन्न करना नहीं चाहते, यदि उग्रवादी अकालियों से प्रभावित होकर भारत सरकार ने हरयाणा के हितों के विरुद्ध कोई उनसे समझौता किया तो उसका डटकर मुकाबला किया जावेगा। इस बार तो हम एक हजार सत्याग्रही आये हैं, आवश्यकता पड़ने पर हम अकालियों से दुगनी संख्या में सत्याग्रह करने के लिए दिल्ली आवेंगे।

गृहमन्त्री ने हरयाणा रक्षा वाहिनी के शिष्ट-मण्डल को जिसमें स्वामी ओमानन्द, प्रो० शेरसिंह, दीवान भीमसेन गुड़गांव, श्री धर्मसिंह राठी जिला करनाल, श्री खेमलाल राठी एडवोकेट उच्चतम न्यायालय पूर्व नगर निगम आयुक्त दिल्ली, श्री कृष्णलाल वधवा कुरुक्षेत्र, श्री आश्चर्जलाल यमुनानगर, श्री हरकिशनसिंह मलिक पूर्व सैशनजज, श्री रामचन्द्रराव रेवाड़ी आदि सम्मिलित थे, को विश्वास दिलाया कि हरयाणा रक्षा वाहिनी के ज्ञापन की एक प्रति मैं प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी उचित कार्यवाही के लिए भेज दूंगा।

इसके पश्चात् सभी कार्यकर्ता हरयाणा रक्षा वाहिनी की जयघोष करते हुए अपने अपने घरों को लौट गये।

रोहतक में हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक का दृश्य





१६ जनवरी को दुर्गाभवन रोहतक में हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक में मंच पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रो० शेरसिंह बैठे हुए तथा सनातन धर्म सभा रोहतक के प्रधान श्री परमानन्द तुली कार्यकर्त्ताओं का स्वागत करते हुए दिखाई दे रहे हैं। दूसरे चित्र में हरयाणा के कोने-कोने से पधारे हुए प्रतिनिधि बैठे हैं।

सम्पादकीय

हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से ३०-१-१९८३ को

भारत के गृह मन्त्री तथा प्रधान मन्त्री की सेवा में ज्ञापन

पिछले १८ महीनों से अकालियों की जो गतिविधियां पंजाब में रही हैं वे मुख्य रूप से राष्ट्र विरोधी रही हैं। जो तत्त्व उनको बढ़ावा देते रहे तथा उनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समर्थन करते रहे वे भारत के अन्दर तो साम्प्रदायिक तत्त्व थे और भारत के बाहर भारत विरोधी तत्त्व। खालिस्तान स्वाधीनता, सिखों का बोलबाला, सिखों की पृथक् कौम (नेशन) आदि विचारों में थोड़ी-थोड़ी भिन्नता होते हुए भी इन सबका लक्ष्य एक ही रहा, भारत की एकता को तोड़ना, विभिन्न सम्प्रदायों के बीच वैमनस्य विवाद और कटुता पैदा करके राष्ट्र के नागरिकों की भावात्मक एकता और सद्भावना को छिन्न भिन्न करना। इस मनोवृत्ति के साथ किसी प्रकार का समझौता हरयाणा रक्षा वाहिनी की दृष्टि में राष्ट्र की एकता, सुदृढ़ता तथा महानता के लिए घातक सिद्ध होगा। हरयाणा रक्षा वाहिनी के लिए राष्ट्र हित सर्वोपरि है, और राष्ट्र की गरिमा को जिस निर्णय से थोड़ा-सा भी आघात पहुंचे वह इस संस्था को किसी हालत में स्वीकार्य नहीं हो सकता। राष्ट्र का हित आज इस बात में है कि केन्द्र अधिक मजबूत हो ताकि वह विघटनकारी शक्तियों को उभरने से रोक सके और अन्तर्राज्यीय विवाद जो विघटनकारी शक्तियां उठती हैं उनका न्यायपूर्ण और स्थायी हल निकालकर उसे दृढ़ता से लागू कर सके। इससे न केवल देश की एकता सुदृढ़ होगी, बल्कि देश के सभी क्षेत्रों का समुचित ढंग से विकास भी हो सकेगा और देश में समृद्धि की गति तेज हो सकेगी। हरयाणा रक्षा वाहिनी की यह मान्यता है कि प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों का अधिक से अधिक उपयोग हो सके उसके लिए जितना भी विकेन्द्रीयकरण आवश्यक है और जितनी स्वाधीनता प्रदेशों को देना वांछित है वह तो अवश्य करना चाहिये परन्तु राष्ट्र के समुचित तथा सभी क्षेत्रों के सन्तुलित विकास के लिए महत्त्वपूर्ण संसाधनों के बटवारे का तथा अन्तर्राज्यीय स्तर के निर्माण कार्यों का उत्तरदायित्व सीधा केन्द्र को अपने हाथ में लेना चाहिए। ऐसे कार्यों के लिए जो भी यन्त्र तन्त्र आवश्यक हो उनका गठन भी केन्द्र करे जिससे अन्तर्राज्यीय विवादों का न्याय संगत और सैद्धान्तिक समाधान हो सके। इस सदर्भ में हम आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव को जिसकी भाषा और भाव दोनों में पृथकता की स्पष्ट झलक और गन्ध है राष्ट्र विरोधी मानते हैं, इसलिए उसके नाम की चर्चा तक को राष्ट्रघाती समझते हैं। उस प्रस्ताव पर किसी भी प्रकार के विचार का हम जोरदार शब्दों में विरोध करते हैं।

जहां तक अकालियों की तथाकथित धार्मिक मांगे हैं उनके सम्बन्ध में हमारी मान्यता है कि उन पर विचार करते समय हम यह न भूले कि हमारा संविधान सम्प्रदाय निरपेक्ष (सेक्यूलर) है, इसलिए अकालियों की धार्मिक कही जाने वाली साम्प्रदायिक मांगों पर विचार करते समय यह ध्यान रखें कि इसी प्रकार की मांगे दूसरे सम्प्रदायों की ओर से आयेंगी तो उनको भी मानना पड़ेगा, और उसके कारण जो वातावरण देश में बनेगा, वह देश के विभिन्न सम्प्रदायों तथा वर्गों के बीच स्वस्थ संबंध तथा सद्भावना के निर्माण में बाधक तो नहीं होगा। गुरुवाणी के प्रसारण तथा अखिल भारतीय गुरुद्वारा विधेयक के सम्बन्ध में निर्णय लेने से पहिले यह सोच लेना चाहिए। केवल धार्मिक मांगों की संज्ञा देने से ही उन्हें धार्मिक मान लेना और मासूम समझ लेना ठीक नहीं होगा। इस मामले पर गहराई से विचार करके वही करना चाहिए जो किसी भी दूसरे सम्प्रदाय की मांग आने पर निःसंकोच रूप से किया जा सके। थोड़ी देर के लिए किसी एक सम्प्रदाय के तुष्टीकरण की बात मंहगी न पड़े, इसलिए इस प्रश्न पर दूरदर्शिता से चिन्तन करके ही निर्णय करना चाहिये। धर्म स्थानों में अपराधियों को शरण देने की किसी को छूट नहीं होनी चाहिए और उचित नोटिस देने के बाद भी यदि प्रबन्धक अपराधियों को न सोंपे तो धर्म स्थानों में पुलिस को प्रवेश करके अपराधियों को पकड़ लेना चाहिए। इस प्रकार धर्म स्थानों की पवित्रता की रक्षा होगी।

अकालियों की राजनैतिक मांगों के सम्बंध में हम एक बात स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हरयाणा रक्षा वाहिनी केवल न्याय मांगती है भीख नहीं, और किसी प्रकार का सौदा करने में यह संस्था विश्वास नहीं रखती है।

फाजिल्का-अबोहर को हरयाणा मे शामिल किये जाने के बारे में १९५६ से लेकर १९७० तक तीन बार अकाली, लिखित रूप से, अकाल तख्त में हुई बैठक में तथा संतफतहसिंह द्वारा भेजी पेशकश के रूप में मान चुके हैं। अपने माने हुए फैसलों से अकालियों को ना तो पीछे हटने देना चाहिये और ना ही उनकी धमकियों के कारण इसमें फेर बदल करना चाहिये। यह ३ लाख जीवित जागृत मनुष्यों के अपने इच्छानुसार भाषा के आधार पर बने प्रांत की भाषा बोलने के कारण उसमें शामिल होने के अधिकार से वंचित करने का किसी को अधिकार नहीं है। हरयाणा के मुख्यमन्त्री के समाचार पत्रों में छपे उस वक्तव्य की [illegible] निन्दा करती है जिसमे उन्होने इस क्षेत्र को चण्डीगढ की भांति [illegible] ४० % के अनुपात में पंजाब और हरयाणा को देने की बात कही [illegible]।

शाह-कमीशन की सिफारिश के अनुसार हरयाणा समूचे चण्डीगढ पर उचित रूप से अपना दावा कर सकता है। हरयाणा को [illegible] मिले तो पूरा मिलना चाहिये, उसका भाग नहीं। चण्डीगढ पूरा मिलने पर भी हरयाणा फाजिल्का-अबोहर क्षेत्र को नहीं छोड़ना चा[illegible]। हरयाणा किसी भी क्षेत्र का सौदा करने का भी अधिकार नहीं मा[illegible]। फाजिल्का अबोहर के लोगों का यह अधिकार है कि जिस भाषा का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में करते हैं, वे उस भाषा के आधार [illegible] हरयाणा में अपना विलय कर लें, परन्तु यदि उस क्षेत्र के लोग [illegible] कारण से हरयाणा में विलय नहीं चाहेंगे तो उनको बाध्य करने के [illegible] में नहीं हैं, परन्तु हम यह भी चाहते हैं कि पंजाब भी उनकी इच्छा [illegible] विरुद्ध उनको पंजाब में रहने के लिए बाध्य न करें। वे बराबर के भाई हैं, यदि अकालियों को किसी भी आधार पर अपना राज्य बनाने का अधिकार है तो फाजिल्का अबोहर के लोगों को भी उतना ही अधिकार पंजाब या हरयाणा किसी भी प्रदेश में जाने का है। उन्होंने अपनी इच्छा बार-बार प्रकट की है और उसको प्रधानमन्त्री, अकाली दल, हरयाणा सबने स्वीकार किया है। उसके साथ खिलवाड करने का किसी को अधिकार नहीं है।

रावी-व्यास का पानी—

रावी-व्यास के पानी के सम्बंध में मार्च १९७६ के निर्णय को पूर्ण रूप से उचित न होते हुए भी हरयाणा ने स्वीकार किया था। उसके अनुसार हरयाणा का भाग कम से कम ३५ लाख एकड़ फुट निर्धारित किया गया था, पानी की मात्रा बढ़ने पर उसका लाभ हरयाणा को ही होना था, पंजाब का अधिक से अधिक लाभ ३५ लाख एकड़ निर्धारित किया गया था, वह उससे किन्हीं अवस्थाओं में कम तो हो सकता था अधिक नहीं। ३१ दिसम्बर १९८१ के निर्णय के अनुसार मार्च १९७६ के फैसले को बदलकर हरयाणा का भाग तो ३५ लाख एकड़ पर हमेशा के लिए समाप्त कर दिया, अधिक पानी उपलब्ध होने पर भी उसे कुछ नहीं मिलेगा, और पंजाब का पानी बढ़ाकर आगे भी और बढ़ाने की अवस्था में उसको अधिक देने की बात मान ली। पहले फैसले को

बिल्कुल उलट दिया। यही नहीं राजस्थान के जितने पानी का राजस्थान नहर न बनने के कारण राजस्थान उपयोग नहीं कर पा रहा उस पर भी पंजाब का एकाधिकार मान लिया। हरयाणा के लिए इससे अधिक अपमानजनक फैसला और कोई नहीं हो सकता। इसलिए हरयाणा रक्षा वाहिनी ३१ दिसम्बर १९८१ के फैसले को हरयाणा के हितों के विरुद्ध होने के कारण किसी हालत में मानने को तैयार नहीं। अकाली इस निर्णय का विरोध करते हैं तो दो उद्देश्यों से। क्योंकि हरयाणा के मुख्यमन्त्री बार-बार उस निर्णय पर पुनर्विचार करने का विरोध करते हैं तो उनकी इस कमजोरी का लाभ उठाकर वे सौदा करना चाहते हैं जिससे इस दबाव में वे अतिरिक्त मिलने वाले २० लाख एकड़ फुट पानी का शेष भाग भी ले सकें।

दूसरा उद्देश्य—

उनका दूसरा उद्देश्य यह है कि सतलुज यमुनालिंक की नहर के निर्माण का कार्य रुक जाये उनको किसी भी आयोग या जज पर विश्वास नहीं है। हरयाणा रक्षा वाहिनी भी ३१ दिसम्बर १९८१ के निर्णय पर पुनर्विचार करने के पक्ष में हैं परन्तु उसके लिए उनकी तीन शर्तें हैं।

१—सतलुज यमुनालिंक नहर न बनने से हरयाणा को प्रतिदिन केवल कृषि उपज की कमी के कारण ३० लाख रुपये प्रतिदिन की हानि होती है और जब तक यह नहर नहीं बनती पानी पाकिस्तान में जाता रहेगा। इसलिए इस नहर के निर्माण के कार्य में जितना भी विलम्ब होगा उतना ही हरयाणा और राष्ट्र को नुकसान होता रहेगा। हरयाणा को कम या अधिक पानी तो मिलना ही है, और इसलिए नहर भी बननी जरूरी है। नहर में पानी तो उतना ही चलेगा जितना आयोग या ट्रिब्यूनल निश्चित करेगा। इसलिए भी ७००० क्यूसेक की नहर बनने के काम को रोकने को कोई तुक नहीं है। जो रोकने की बात करना है उसको शरारत भी है और राष्ट्र विरोधी मनोवृत्ति भी। अकालियों की पुनर्विचार की बात पर तभी विचार किया जाये जब वे नहर के निर्माण के काम को तेज गति से चलाने की बात को स्वीकार करें।

२—अकालियों का यह इतिहास रहा है कि जिस बात को आज वे मान लेते हैं, थोड़े दिन के बाद किसी दूसरे सन्त को आगे लाकर फिर उसको बदलने के लिए आन्दोलन चला देते हैं। पुनर्विचार की बात मानने से पहले अकालियों के सभी बड़े और सन्त यह लिखित तथा जन सभाओं में बोलकर यह आश्वासन दे कि ट्रिब्यूनल की बात को वे शत प्रतिशत मानेंगे और उसी दिन से उसके लागू करने में अपना सहयोग देंगे।

३—पानी के ट्रिब्यूनल का गठन करते समय जो अधिसूचना निकले उसमें अधिक से अधिक ३ महीने का समय फैसला देने के लिए निर्धारित किया जाए और न तो पक्षों को न कोई अड़ंगा लगाकर उस को लम्बा खींचने की इजाजत हो और न जजों को ही शिथिलता बरतने दी जाये।

यदि किसी पक्ष को ये शर्तें मान्य न हों तो मार्च १९७६ का फैसला जिसे ज्ञानी जैलसिंह ने १९७६ में हरयाणा से १ करोड़ रुपया लेकर तथा इसी प्रकार स. प्रकाशसिंह बादल ने १९७८ में १ करोड़ रुपया लेकर माना था, तुरन्त लागू कर देवें।

हैडवर्क्स का नियन्त्रण—

१९६६ में पास किये गये पंजाब पुनर्गठन कानून के इस प्रावधान का पंजाब सरकार द्वारा उल्लंघन होता आ रहा है, जिसके द्वारा रोपड़ फिरोजपुर और हरीके हैडवर्क्स का नियन्त्रण भाखड़ा प्रबन्धक बोर्ड को सौंपा जाना था। पंजाब के मुख्य मन्त्री ने ३१ दिसम्बर १९८१ के करार में यह माना था कि पंजाब सरकार हैडवर्क्स का नियन्त्रण भाखड़ा प्रबन्ध बोर्ड को सौंप देगी। हरयाणा और राजस्थान दोनों ही १६ वर्ष से हर वर्ष करोड़ों रुपये का घाटा पानी का अपना पूरा भाग न मिलने के कारण उठा रहे हैं। यह बात चलती है और भारत सरकार तथा हरयाणा और राजस्थान सरकार सो जाती है। इसका कारण हमारी समझ से बाहर है। क्या यह भारत के संसद का और किस संसद को संविधान ने शक्ति दी है उन दोनों का अपमान नहीं है। नदी घाटी योजनाओं द्वारा उपलब्ध होने वाली बिजली का अभी तक पक्का फैसला नहीं हुआ। भाखड़ा से उपलब्ध बिजली का व्यय हरयाणा से ४७ % लिया गया और बिजली केवल ३९.५ % दी गई। ब्यास की दोनों यूनिटों से कितनी बिजली हरयाणा को मिलती है और व्यय के ऊर्जा भाग का कितना व्यय हरयाणा दे रहा है उसका हमको पता नहीं है। पानी के साथ-२ बिजली का अन्तिम फैसला भी होना चाहिये।

भाषा—

४ प्रतिशत द्वारा अपनी भाषा को राज्य की दूसरी भाषा का दर्जा देने की बात बेइमानी है। उस पर अब विचार नहीं हो रहा इससे हमें सन्तोष है।

अन्य हिन्दी क्षेत्रों का हरयाणा में विलय—

पटियाला जिले के हिन्दी भाषी लालडू बसी आदि ग्रामों तथा संगरूर जिले के सुनाम जाखल के साथ लगते हिन्दी भाषी ग्रामों को हरयाणा को सौदे के रूप में दिए जाने की बात तो समाचार पत्रों में छपती रहती है परन्तु इन ग्रामों को हरयाणा के साथ मिलाने की बात सौदे के रूप में ही क्यों की जाती हैं? हम इस बात से तो खुश हैं कि हमारे अकाली भाई फाजिल्का-अबोहर की तरह ही इन ग्रामों को भी हिन्दी भाषी मानने लगे हैं परन्तु वे जिस बात को मान लेते हैं फिर उसको अपने उचित स्थान पर जाने की बात का विरोध क्यों करने लगते हैं, और क्यों उनको लेकर सौदे की बात करने लगते हैं? धमकियां देना और सौदे करना यह अकालियों का स्वभाव बन गया है। हरयाणा रक्षा वाहिनी न तो उनकी धमकियों से डरती है और न सौदा करना चाहती है। हमारा विश्वास शुद्ध न्याय में है। हम न तो पंजाब का अधिकार हड़पना चाहते हैं और न ही अपना अधिकार उनको हड़पने देना चाहते हैं। यदि कानून और न्याय से हमें कम मिलेगा तो उसमें सन्तोष करेंगे, परन्तु यदि कोई धमकियों से हमारे न्यायपूर्ण अधिकार पर छापा मारने की कुचेष्टा करेगा तो हमने यह निश्चय कर लिया है कि हम उसका यथायोग्य जवाब जरूर देंगे।

हमारा अन्तिम निवेदन यही है कि यदि भारत सरकार व प्रधान मन्त्री हरयाणा के साथ न्याय करने के लिए दृढ़ता दिखायेंगे तो हमारी जो भी तुच्छ शक्ति है वह उनके पीछे रहेगी। परन्तु यदि अकालियों की धमकियों के सामने झुककर हरयाणा के साथ अन्याय किया गया तो हरयाणा रक्षा वाहिनी सामने आकर निर्भीकता से अपने अधिकारों के लिए लड़ेगी और बड़े से बड़ा बलिदान करते हुए पीछे नहीं हटेगी। हम आपके निवास स्थान पर सत्याग्रह करने के लिए आये थे क्योंकि आप अकालियों की अनुचित मांगों के सामने नहीं झुकी हैं, इसलिए हम तब तक पूर्ण सहयोग देते रहेंगे जब तक आप न्याय के पथ पर जमी रहेंगी। जिस दिन आपकी ओर से इस सम्बन्ध में कोई कमजोरी दिखाई दी और हरयाणा के प्रति अन्याय किया, तो हमारा सत्याग्रह उसी दिन से आरम्भ हो जायेगा और पूर्व निश्चय के अनुसार स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, अध्यक्ष परोपकारिणी सभा १००० सत्याग्रहियों के साथ गिरफ्तारी देकर सत्याग्रह का कार्य शुरु कर देंगे।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान हरयाणा रक्षा वाहिनी

आर्य जगती को बनाएं

(राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति)

शुभ यह शिवरात्रि का
शुचि पर्व है पावन हमारा।
निहित है इसमें संदेश
जागरण का दिव्य नारा।

सत्य-शिव-सुन्दर समन्वित
दे रही सन्देश है।
नवल हो आलोक भू पर
पुण्यतम् सन्देश है।

था इसी शिवरात्रि ने
ऋषिवर दयानन्द को जगाया।
तिमिर जो फैला धरा पर
दूर था उसको भगाया।

आज इस शिवरात्रि पर हम
उठ पड़ें, संकल्प लें।
मनुजतापूरित पुनः हम
सुदृढ़ शुद्ध विकल्प लें।

भोगवादी वृत्ति का
छाया धरा पर है अंधेरा।
रश्मियों के देश को ही
तिमिर ने क्यों आज घेरा?

है घिरा पाखण्ड भू पर
धर्म आडम्बर घना है।
सत्य के पथ हो गए
विस्मृत मनुज-मन अनमना है।

हम बढ़ें कटिबद्ध होकर
आर्य जगती को बनाएं।
ऋषि दयानन्द के अधूरे
कार्य को पूरा कराएं।

हो धरा जाग्रत सुनिर्मल
धर्म का हो दीप्त दीपक।
हो प्रकाशित अवनि-अम्बर
जग उठे यह जग-जनक॥

शोक समाचार

मास्टर दरियावसिंह आर्य ग्राम ढाकला जिला रोहतक के कर्मठ कार्यकर्ता का १८-१-८३ को लम्बा रोगी होने से निधन हो गया। आप आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्त्ता तथा धार्मिक व्यक्ति थे। आप हैदराबाद सत्याग्रह में भी जेल गये। आप गुरुकुल झज्जर के एक विशेष सहयोगी तथा आस-पास के गांवों में आर्यसमाज के प्रचार आदि कार्यों में बड़ी रुचि लेते थे। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

फतेहसिंह भण्डारी
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

गांधीनगर (हिसार) में वेदप्रचार

दिनांक २७, २८ फरवरी को सन्त रविदास जयन्ती के शुभ अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ईश्वरसिंह जी तूफान पधारे। रात्रि में प्रभावशाली वेदप्रचार हुआ। प्रातःकाल रविदास भवन में महायज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के उपरान्त खुले अधिवेशन में छूआ-छूत, जातिप्रथा आदि पर अनेक विद्वानों के भाषण तथा भजन हुए। श्री सोणाभणे ए० डी० सी० हिसार ने सन्त रविदास के चित्र का अनावरण किया और हरिजनों में विद्यमान बुराइयों को छोड़ने की प्रेरणा दी। श्री मलूकदास बी० डी० ओ० आदि समाज-सेवक लोग यहां दलित वर्ग में बड़ा प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं।

यह आयोजन हरिजन सेवक सभा की ओर से किया गया। सभा ने प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ११०) रु० तथा १५) रु० सर्वहितकारी मध्य दान किए। आयोजन ऋतु-प्रतिकूलता में भी सफल रहा।

—सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक

त्रिपक्षी वार्ता में प्रो० शेरसिंह आमन्त्रित

३० जनवरी को हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से अपनी मांगों के लिए भारत सरकार के गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी के निवास पर विशाल प्रदर्शन किया गया था। गृहमन्त्री ने हरयाणा की जनता को विश्वास दिलाया था कि ८ से १० फरवरी को जो त्रिपक्षी वार्ता होगी, उसमें हरयाणा रक्षा वाहिनी को भी एक पक्ष मानकर वार्ता में प्रो० शेरसिंह जी को भी आमन्त्रित किया जावेगा। अतः इस निश्चय के अनुसार २ फरवरी को गृहमन्त्री की ओर से प्रो० शेरसिंह जी को हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए निमन्त्रण पत्र प्राप्त हो गया है।

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वत:

गायत्री मन्त्र की सच्ची महिमा

('सरिता' पाक्षिक के दिसम्बर १९८२, II के आक्षेपों का सप्रमाण उत्तर)

—डा० विश्वबन्धु 'व्यथित' अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी० ए० वी० कालेज अबोहर (पंजाब)

(गतांक से आगे)

नहीं पाठकों के साथ इस प्रकार का अन्याय कदापि सहन नहीं, अत. हम अपने पाठकों के साथ आपको भी यह तथ्य समझा देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि वेद में छन्दों के भेद और लौकिक संस्कृत के छन्दों के भेद एक समान नहीं होते। अत: यह आवश्यक नहीं कि वेद के मंत्रों में आप लौकिक छन्दों के समान नियम खोज सकें।

वस्तुत: वेद में छन्दों की संख्या को सीमित करने के उद्देश्य से उन्हें विभिन्न वर्गों और उपवर्गों में बांटा गया है। अत: उपर्युक्त गायत्री जगती, बृहती, पंक्ति, अष्टि, शक्वरी, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप् और उष्णिक् आदि वर्ग हैं। प्राय: इन सभी वर्गों के विराट्, निचृद्, आर्षी, आसुरी, भुरिग् और प्राजापत्या आदि उपभेद हैं। इनके योग से ही अनेक अन्य उपवर्ग भी बनते हैं। जैसे गायत्री छन्द के ही कुछ उपवर्ग या रूपभेद इस प्रकार हैं–

गायत्री छन्द, निचृद् गायत्री छन्द, विराट् गायत्री, आर्षी गायत्री, आसुरी गायत्री, विराडार्षी गायत्री, निचृदार्षी गायत्री, स्वराडार्षी गायत्री, प्राजापत्या गायत्री, भुरिग् गायत्री, भुरिक् त्रिपाद् गायत्री, वर्धमाना गायत्री और पिपीलिकामध्या, निचृद् गायत्री छन्द इत्यादि। इसी प्रकार अन्य छन्दवर्गों के भी उपवर्ग (प्रकार) हैं।

इन उपवर्गों के रूपभेद का एक विशिष्ट लक्षण इनके विभिन्न पादों में वर्ण-संख्या का कम या अधिक होना है। बच्चा भी समझता है कि किसी उद्यान में अनेक रंग के गुलाब होने से उस बगीचे की सम्पन्नता और शोभा में वृद्धि होती है। पीले, काले या सफेद गुलाब को लगड़ा या अपूर्ण बताने वाले महानुभाव को बच्चे क्या कहेंगे, वही जानें।

माननीय सुरेन्द्रकुमार शर्मा जी की ज्ञानवृद्धि के लिए इतना बता देना और अभीष्ट है कि वेद में (७+८+८ वर्गों) के निचृद् गायत्री छन्द का केवल यह एक चर्चित मन्त्र उदाहरण नहीं, अपितु इस छन्द में सैकड़ों मन्त्र हैं। यजुर्वेद के ३६ वें और २२ वें अध्याय में ही, जहां इस मन्त्र का 'भूर्भुव: स्व:' (व्याहृति) से युक्त और विरहित पाठ प्राप्य है, ७ मन्त्र गायत्री छन्द में हैं, और ७ ही निचृद् गायत्री छन्द में हैं। इन्हीं अध्यायों में उपर्युक्त अन्य वर्गों के अनेक भेदों के साथ साथ गायत्री वर्ग के भी अनेक उपवर्गों के उदाहरण मिलते हैं। लेखक यदि और जानकारी बढाना चाहें तो यजुर्वेद के ८ वें अध्याय को देखने का कष्ट करें, उन्हें इस अकेले अध्याय में गायत्री के ८ उपवर्गों के उदाहरण सहज ही मिल जाएंगे। इस विषय में इससे अधिक यहां बताना कठिन है, उसके लिए तो अन्तेवासी बनने की महती आवश्यकता है। सामान्य पाठकों को इतना पढ़कर ही पता चल जाएगा कि सरिता ने इस लेख में किस महामूढ़ता का परम प्रदर्शन करने का पुरुषार्थ किया है।

५—व्याकरणिक अशुद्धि

सामान्य पाठकों को सर्वाधिक चौंकाने वाला कुतर्क है, इस मन्त्र में व्याकरणिक अशुद्धियों की खोज और उसके बेतुके समाधान सुझाने का हास्यास्पद प्रयास। इस विषय में शर्मा जी का कहना है—

यह मन्त्र न केवल छन्दगत अशुद्धियों से युक्त है, अपितु संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से भी पूरी तरह अशुद्ध है।''' मन्त्र के शुरु का तत् शब्द नपुंसकलिंग है और तीसरे पाद का सम्बन्ध निदेशक सर्वनाम यो पुल्लिंग है। तत् और यो में परस्पर सम्बन्ध है, लेकिन लिंगगत असंगति के कारण इनका परस्पर अन्वय नहीं हो सकता। वाक्यारम्भ में नपुंसकलिंग तत् है, अत: यां तो उसी के अनुसार यो के स्थान पर यत् हो या प्रारम्भ में नपुं० तत् को सवितु: का विशेषण बनाया जाए अन्यथा गायत्री मन्त्र व्याकरणिक अशुद्धियों की गुत्थी मात्र रह जाता है।

इसका समाधान खोजने की दशा भी विचित्र है कि लेखक ने अपनी सुरक्षा के रूप में किसी अनाम अंग्रेजी लेखक की पुस्तक 'दा गायत्री इट्स ग्रामेटिकल प्राब्लेम' को सुरक्षा कवच के रूप में ओढकर अपनी बुद्धि से काम न लेने का व्रत निभा डाला प्रतीत होता है कि इस लेख का एकमात्र आधार वही पुस्तक होगी, क्योंकि कोई भी विद्वान् व्यक्ति अपनी ओर से किसी धर्म के आधारभूत मन्त्र पर इस तरह के घृणित आरोप नहीं लगा सकता।

इस लेख में सुझाए गए तीन संशोधनों को सक्षेप में इस तालिका से समझा जा सकता है—

लेखक	पुस्तक	सुझाया गया संशोधन
१. शत्रुघ्न	मन्त्रार्थ दीपिका	तत् के स्थान पर तस्य
२. हलायुध	ब्राह्मण सर्वस्व	तत् के स्थान पर तम्
३. डा० विश्वबन्धु		यो के स्थान पर यत्

संशोधनानन्तर मन्त्र का विकृत रूप

१. तस्य सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि०, २. तं सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि०, ३. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यन्न: प्रचोदयात्।

संयोगवश? डा० विश्वबन्धु के साथ पुस्तक का नाम भी नहीं, और सारे लेख में इस नाम के साथ किसी उपनाम, जाति या नगर तक का निर्देश न होने से नामभ्रांति होने की सर्वाधिक गुंजायश है। अत: शर्मा जी यह बता सकते हैं कि ऐसा लालबुझक्कड़ कौन है?

लालबुझक्कड़ की कथा इस प्रकार है कि एक गांव में एक महिला ने अपने घर के बरामदे के खम्भे को बांहों के घेरे में लेकर खेल रहे पुत्र के हाथों में चने दिए। पुत्र ने खम्भे से लिपटे हाथों में चने (भुने हुए) ले तो लिए, किन्तु वह उन्हें किसी प्रकार भी खा न पा रहा था। वह जिधर अपना मुंह घुमता, हाथ दूसरी ओर घूम जाते। अत: रोने लगा। अज्ञानी मां ने घोषणा कर दी कि खम्भे के भूत ने बालक को पकड़ लिया।

आखिर तीन लालबुझक्कड़ बुलाए गए। एक ने कहा–बच्चे की एक बांह काटनी पड़ेगी। दूसरे ने कहा–खम्भे को नीचे से चीरकर ऊपर खेंच लो। तीसरा बोला–यह असंभव है, अत: खम्भा चूर-चूर करके ही बालक को छुड़ना पड़ेगा। लेकिन अफसोस! यह किसी को न सूझा कि बालक के हाथों से चने ले लिए जाएं, जिससे वह अपनी बांहे खोलकर खम्भे से अलग होकर आराम से चने खा सके।

ठीक यही स्थिति इस पवित्र मन्त्र में व्याकरण की अशुद्धियों की कल्पना करने और विचित्र समाधान सुझाने वाले कथित लालबुझक्कड़ की है।

उन बेचारों को इस मन्त्र में नपुंसकलिंग और पुल्लिंग पदों का अन्वय नहीं सूझ रहा। अत: अपनी अपनी दुर्बुद्धि के अनुसार पद ही बदलने पर उतारू हैं। [क्रमश:]

शुद्धि हुए लोगों की सामाजिक, विवाहिक समस्याओं पर विचारार्थ—

महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह के एजेण्डा में सम्मिलित किया जाये

डा० सन्दीप मलिक

आर्यजनों को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि अब हजारों की संख्या में बिछुड़े हुए भाई-बहन अपने पूर्वजों के वैदिक धर्म में प्रवेश कर रहे हैं। किन्तु प्रसन्नता के साथ साथ यह भी बहुत खेद का विषय है कि आज प्रत्येक शुद्धिकृत व्यक्ति प्रश्न कर रहा है कि हमारा समाज में क्या अधिकार एवं स्थान है? क्योंकि जिन आशाओं के साथ कोई विधर्मी वैदिक धर्म में प्रवेश करता है वह सभी उसी समय धूमिल हो जाती है जब उसे उपेक्षित व्यवहार का सामना करना पड़ता है। यह एक वास्तविकता है कि आर्य (हिन्दू) समाज अपने में किसी विधर्मी को शुद्धि के पश्चात् भी पचाने की शक्ति नहीं रखता।

आर्य पत्र, पत्रिकाओं में प्रायः यह समाचार प्रकाशित होते रहते हैं कि मुस्लिम परिवार अथवा ईसाई परिवार ने शुद्ध होकर अपने पूर्वजों के वैदिक धर्म को पुनः स्वीकार किया किन्तु ऐसा कोई समाचार पढ़ने को नहीं मिलता कि अमुक आर्यसमाजी अथवा किसी आर्यसमाज के प्रधान या मन्त्री महोदय ने अपने पुत्र या पुत्री का विवाह किसी अमुक परिवार अथवा शुद्ध हुए व्यक्ति से किया हो जिसने विधर्मी जीवन त्याग कर वैदिक धर्म में प्रवेश किया। लाख ढोल पीटते रहो लेकिन कोई आर्य हार्दिक रूप से किसी शुद्धिकृत को अपने में पचाने में असमर्थता ही प्रकट करता है।

मीनाक्षीपुरम् में हरिजनों के सामूहिक धर्म परिवर्तन की घटना के पश्चात् आर्यसमाज ने धर्म रक्षा महाअभियान के अन्तर्गत शुद्धि कार्य आरम्भ किया। हजारों बिछुड़े हुए लोगों ने स्वेच्छा से अपने पूर्वजों के धर्म को अंगीकार किया, किन्तु उनको उनके अधिकारों से आज भी वंचित किया जा रहा है। उनकी सामाजिक समस्याओं का भी समाधान अवश्य किया जाना चाहिए परन्तु नहीं किया जा रहा।

वैचारिक विमर्श के तौर पर मैं कह सकता हूँ कि यदि मनसा, वाचा, कर्मणा के आधार पर कोई वैदिक धर्म में प्रवेश करता है तो उसे वैदिक समाज के पुनर्गठन के लिए सक्रिय रूप से अपने को आन्दोलित करना होगा ताकि आर्य नेताओं तथा जनता को अपने अधिकार तथा सामाजिक समस्याओं की ओर आकर्षित किया जा सके। यदि आर्यों ने व्यवहार में परिवर्तन न किया तो आर्य (हिन्दू) समाज को हानि निश्चित रूप से उठानी पड़ेगी और इसके कारण शुद्धि कार्य में भी अत्यन्त बाधा उत्पन्न होगी साथ ही शुद्ध हुए लोग पुनः इस व्यवहार से निराश होकर विधर्मी बन सकते हैं।

यदि आर्यों को कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्देश्य पूर्ण करना है तो हृदय को विशाल तथा उदार बनाना होगा तथा शुद्धिकृतों के प्रति संकोच और संकीर्णता को भी पूर्णतया त्यागना होगा। आज वातावरण की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन समय की अत्यन्त आवश्यता है।

ऋषि निर्वाण शताब्दी समारोह आर्यसमाज के जीवन मरण का प्रश्न लेकर नवम्बर १९८३ में मनाया जा रहा है जिसमें आर्यसमाज का लेखाजोखा जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया जायेगा यदि इस समारोह में शुद्ध हुए परिवारों की सामाजिक एवं विवाहिक समस्याओं को भी समारोह के एजेण्डा में सम्मिलित कर लिया जाये तथा आर्य जनता से उपरोक्त समस्याओं का समाधान करने का आह्वान किया जाये तो बहुत कुछ विषय में किया जा सकता है ताकि शुद्ध हुए लोगों में सामाजिक अधिकारों के प्रति उत्साह तथा जागृति उत्पन्न हो सके।

अतः मैं आर्य नेताओं से निवेदन करता हूं कि वह अपने धार्मिक कर्त्तव्यों का पालन करते हुए शुद्ध हुए लोगों की सामाजिक तथा विवाहिक समस्याओं को भी समारोह की सूची में अवश्य सम्मिलित करें। आशा है इन समस्याओं का समाधान अवश्य समारोह के माध्यम से करने का प्रयत्न किया जायेगा ताकि आर्यकरण की योजना सफल हो सके।

हरयाणा में ऋषिबोधोत्सवों के कार्यक्रम

आर्यसमाज सोनीपत तथा माडल टाउन सोनीपत	११ फरवरी
„ जवाहरनगर पलवल (फरीदाबाद)	„ „
„ नरवाना जिला जीन्द व नीलोखेड़ी	„ „
„ खारवन जिला अम्बाला	„ „
„ सैक्टर ७ फरीदाबाद	„ „
„ दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (स्वामी मुनीश्वरानन्द श्रद्धांजलि समारोह)	„ „
गुरुकुल धीरणवास जिला हिसार	१२, १३ „
„ झज्जर जिला रोहतक	„ „ „
कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत	„ „ „
आर्यसमाज दयानन्द मठ रोहतक	१३ „
„ सफीदों मण्डी (जीन्द)	१२, १३, १४ „
„ शाहबाद मारकन्डा जिला कुरुक्षेत्र	१३ से १७ „

उपरलिखित कार्यक्रमों में सभा के अधिकारी तथा उपदेशक, भजनोपदेशक पधारेंगे।

—सभा मन्त्री

शोक समाचार

१—घनोरामालड़ जिला कुरुक्षेत्र के चौ० विष्णुराम जी आर्य १२ जनवरी को स्वर्गवास हो गया। आप आर्यसमाज के अनन्य भक्त थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

हरलाल आर्य सभा प्रचारक

२—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहायक भजनोक श्री कंवलसिंह आर्य ग्राम जुवां (सोनीपत) की माता जी तथा उनके छोटे भाई श्री पूर्णसिंह का २६ तथा २७ जनवरी को निधन हो गया। आप आर्यसमाज के कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग करते थे। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुःखी परिवार को इस दुःख को सहन करने का धैर्य प्रदान करें।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

बोधरात्रि फिर आ गई लेकर पावन संदेश

रामकिंकर गुप्त, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

यह सुन्दर पावन पर्व महाशिवरात्रि जो आई है।
शिव भक्त मूलशंकर ने भी श्रद्धा से व्रत निभाया है॥

शिव मन्दिर में शिव भक्तों की संख्या बढ़ती जाती थी।
अर्धरात्रि बीत गई वहां सबको नींद सताती थी॥

सो गये सभी शिव पूजक शिवालय में सन्नाटा छाया था।
एक जाग रहा था मूल वहां बैठा था ध्यान लगाया था॥

सच्चे शिव के दर्शन की आशा हृदय में लगी हुई।
जाने कब शिव दर्शन देंगे थी लग्न नींद भी भगी हुई॥

टकटकी लगी शिव प्रतिमा पर देखा एक अजब तमाशा है।
मूषक निकले सब खा बैठे फल मेवा और पताशा है॥

बोला शंकर शंकर जागो यह मूषक भोग उड़ाते हैं।
डर नहीं आपका करते हैं सब भोग आपका खाते हैं॥

कहां चले गये हो शिवशंकर आओ यह मूषक धमकाओ।
सिर ऊपर मूषक चढ़े हुए कुछ चमत्कार दिखलाओ॥

नेत्र ज्ञान के खोल दिये चक्षु इस बोधरात्रि ने आकर।
चल पड़े छोड़कर टंकारा शुभनाम दयानन्द अपनाकर॥

सरिता के लेखों पर आपत्ति

आर्यसमाज डी. ए. वी. कैंपस की वार्षिक सभा में उपस्थित सभी आर्यजन इस समाचार से अत्यन्त विक्षुब्ध हैं कि सरिता के दिसम्बर II/१९८१ के अंक में ईश्वरीय वाणी वेद के पवित्र अंग गायत्री मन्त्र पर अशुद्धि और अर्थ की महत्वहीनता का मिथ्या आक्षेप लगाने का दुस्साहस करके लेखक और सम्पादक ने समस्त आर्य जनता की भावनाओं पर भारी चोट की है।

इससे पूर्व भी सरिता आर्य संस्कृति की अनेक मान्यताओं और हमारे महापुरुषों पर आघात करती रही है और अब गायत्री मन्त्र जैसे वैदिक संस्कृति के आधार-भूत पावन वेदमन्त्र पर मिथ्या दोषारोपण अत्यन्त निन्दनीय है।

यह सभा इस पत्रिका के संचालकों को चेतावनी देती है कि वे शीघ्र इस घृणित आक्षेप को वापिस लें, और भविष्य में इस प्रकार के कुकृत्य करने का प्रयास न करें।

सत्यपाल कुमार प्रधान
दयानन्द शिक्षा महाविद्यालय अबोहर

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 13201/73 रजि० नं० P.RTK 49 फोन ७६११ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य,

वर्ष १०, अङ्क १० १४ फरवरी १९८३ वार्षिक मूल्य १२) विदेश में १० पौंड एक प्रति ३० पैसे

त्रिपक्षीय वार्ता में हरयाणा रक्षा वाहिनी द्वारा हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत
अकालियों की हरयाणा विरोधी मांगें स्वीकार की तो कड़ा विरोध होगा

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

भारत सरकार ने अकालियों के साथ त्रिपक्षीय वार्ता आरम्भ कर दी है। इसमें भारत सरकार, विरोधी दल (जिसमें सभी राजनीतिक दलों के नेताओं में हरयाणा रक्षा वाहिनी सम्मिलित हैं) तथा अकालियो के नेता भाग ले रहे हैं। बैठकों में अकालियों की मांगों की खुल कर समीक्षा की गई। केन्द्रीय मन्त्रियों के सम्मुख हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल तथा राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माथुर ने स्पष्ट कर दिया कि नदियों के जल बटवारे के निर्णय पर पुनर्विचार न किया जावे। चौ० भजनलाल ने अपने पूर्व स्टैण्ड के अनुसार भारत सरकार से मांग की है कि हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा में मिलाये बिना चण्डीगढ को पंजाब को न दिया जावे।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने इस त्रिपक्षीय वार्ता में एक घण्टे तक हरयाणा का पक्ष बहुत ही निडरता पूर्वक तथा प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया। आपने प्रतिनिधियों को स्मरण करवाया कि अकालियों ने कई बार भारत सरकार के साथ समझौता करके तोड़ा है और अपनी अनुचित मांगे मनवाने के लिए प्रत्येक पांच वर्ष के बाद किसी नये सन्त का सहारा लेकर आन्दोलन आरम्भ कर देते हैं। शाह-आयोग ने पूरी जांच करके चण्डीगढ तथा खरड तहसील को हरयाणा में सम्मिलित करने की रिपोर्ट दी थी। प्रधान मन्त्री ने अकालियो के साथ समझौता करके अपना एवार्ड दिया था कि चण्डीगढ के बदले हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा को दिये जावेंगे। उस समय अकालियो ने पंजाब में दीप जलाकर इस समझौते का स्वागत किया था, परन्तु अकाली इस समझौते पर अमल करना नहीं चाहते। इसी प्रकार रावी व्यास नदी जल विवाद का समझौता भी हो गया था। हरयाणा ने सतलुज यमुना-लिंक नहर की खुदाई का पूरा खर्च पंजाब को अदा कर दिया, परन्तु अकाली नहर की खुदाई में रुकावट खड़ी करके हरयाणा की प्रतिदिन ३५ लाख रुपये की हानि कर रहे है। हरयाणा में केवल ४% पंजाबी भाषियों के लिए पंजाबी को दूसरी भाषा का दर्जा दिलवाने के लिए धमकियाँ दे रहे हैं, परन्तु पंजाब में ४८% हिन्दी भाषी जनता के लिए हिन्दी की पढ़ाई की सुविधाएं नहीं देना चाहते।

आपने भारत सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि अब हरयाणा की वीर जनता जाग चुकी है और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सभी राजनीतिक दल एकजुट हैं। अतः भारत सरकार को अकालियों की धमकियों के आगे झुकना नहीं चाहिए। यदि भारत सरकार ने किसी प्रकार की कमजोरी दिखाकर उनके साथ हरयाणा के हितों के विरुद्ध कोई समझौता किया तो हरयाणा की जनता उसका डटकर विरोध करेगी और अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए अकालियो की ईंट का जवाब पत्थर से दिया जावेगा। इस वार्ता में लोकदल (च) की नेता चन्द्रावती, जनता पार्टी के नेता चौ० देवीलाल आदि ने भी अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए हरयाणा के साथ अन्याय तथा भेदभाव न करने के लिए भारत सरकार को सावधान किया। अकालियों के अड़यल व्यवहार के कारण यह वार्ता १५ फरवरी को पुनः आरम्भ होगी।

हरयाणावासियों से आवश्यक निवेदन

भारत सरकार तथा अकालियों की समझौता वार्ता अभी जारी है। विरोधी दलों के नेता भी इसमें अपना पक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। उधर अकाली नेता अपनी मांगे न माने जाने पर भारत सरकार को धमकियाँ भी दे रहे हैं। अतः हरयाणा की जनता से निवेदन है कि वे अपने अधिकारों की रक्षा के लिए पूर्व की भान्ति तैयार रहें। सत्याग्रह के लिए स्वयंसेवकों की भर्ती जारी रखें।

प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

पानी और जमीन के नाम पर

पानी और जमीन के नाम पर
उपद्रव हो रहे हैं।
पंजाब के कुछ धार्मिक ठेकेदार
रो रहे हैं।
गुरुद्वारे इनके वसीयतनामे हैं
बारूद खाने, तलवा खाने है।
पच्चास, सौ जानों की इनको चिन्ता क्या
बस ये रहें, इनका धर्म रहे
चाहे ये बेशर्म रहे।
ये लोग तो इसी तरह
जमीन पर घृणा के बीज बोकर
पानी लेते रहेंगे।
जब तक इनकी सभी शर्तें
मान नहीं लेती सरकार
पानी और जमीन के नाम पर
उपद्रव होते रहेंगे।

सत्य भारत सांवरिया
अध्यक्ष मानव अधिकार संघर्ष समिति
गुरु रविदास मार्ग, रोहतक

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः

गायत्री मन्त्र की सच्ची महिमा

('सरिता' पाक्षिक के दिसम्बर १९८२, II के आक्षेपों का सप्रमाण उत्तर)

—डा० विश्वबन्धु 'व्यथित' अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी० ए० वी० कालेज अबोहर (पंजाब)

(गतांक से आगे)

जबकि इस मन्त्र का सीधा सादा अन्वय इस प्रकार है—

(वयं) सवितुः देवस्य तत् (नपुंसकलिंग वरेण्यम् (नपुं०) भर्गः (नपुं०) धीमहि। यो (देवः) सविता नः धियः प्रचोदयात्। इसी मन्त्र के व्याहृति सहित पाठ का अन्वय सहित अर्थ महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में वेदारम्भ प्रकरण में इस प्रकार किया है—

सवितुर्देवस्य (तव) (यद्) ओं भूर्भुवः स्वः वरेण्यं भर्गः (नपुं०) (अस्ति), तद् वय) धीमहि=(दधीमहि, धरेमहि ध्यायेम वा। यः (सविता देव.)=(परमेश्वरो भवान्) नः (अस्माक) धियः प्रचोदयात् (प्रेरयेत्)

इसमें क्या संदेह है कि यदि आपके लालबुझक्कड़ों ने या आपने कभी भूले से भी सत्यार्थप्रकाश में यह प्रसंग देख लिया होता, तो इस बखेड़े का जन्म ही न होता।

लेकिन आप जैसे कट्टर नास्तिकों और अंग्रेजी पुस्तकों द्वारा वेद विद्वान् बनने का दावा करने वालों से यह आशा ही कैसे की जा सकती थी। फिर भी आप अंग्रेजी के ही प्रसिद्ध विद्वान् एवं वेद के भाष्यकर्ता और कोषकार मैकडानल को कैसे नकारेंगे। उन्होंने भी अपने संस्कृत, अंग्रेजी शब्द कोश में भर्गः शब्द को नपुंसकलिंग माना है। जैसे—

ए० मैकडानल—संस्कृत डिक्शनरी—भर्गः=वैदिक (पु० एफल्जेंस, २-वैदिक (नपुं०) नपुंसकलिंग=गलैरियस (तेजोमय, गौरवशाली) धीमहि=वैदिक धातु (धा) धा।

स्पष्ट है कि श्री सुरेन्द्रकुमार की व्याकरण सम्बन्धी भ्रान्ति का कारण है 'भर्गः' को पुल्लिग मानना और उन्हें इसके अर्थ में कुछ करने योग्य इसलिए नहीं मिला कि वे 'धीमहि' पद का अर्थ केवल ध्यान करना लगाते हैं। महर्षि दयानन्द ने 'दधीमहि: धरेमहि और ध्यायेम' अर्थ करते हुए इस धीमहि पद की व्युत्पत्ति 'धा' और 'ध्यै' दोनों धातुओं से मानी है। जिनमें से ध्यै वाला अर्थ तो शर्मा जी को ज्ञात है, पर 'धा' =धारण और पोषण वाला अर्थ महर्षि दयानन्द और मैकडानल में एक समान होने पर भी शर्मा जी की बुद्धि से परे है। जहां तक भर्ग. का प्रश्न है, इसमें दोनों लिंग महर्षि दयानन्द और मैकडानल दोनो ने माने हैं। इस प्रसंग मे केवल नपुंसकलिंग का ही प्रयोग हुआ है, यह ऋषिवर के अन्वयार्थ में दिखाया जा चुका है। यदि इतने से सतोष न हो तो अन्य कोशों का हवाला भी दिया जा सकता है। फिर भी यदि शर्मा जी को तत् को तस्य में बदलने का दुराग्रह ही तो उसका भी श्रेष्ठ उपाय बिना किसी परिवर्तन के सम्भव है। वह इस प्रकार कि शर्मा जी किसी छोटे से व्याकरण को ही देख लें, तो उन्हें स्वयं पता चल जाएगा कि आखिर तस्य सवितुः का भी समस्त रूप तत्सवितुः ही बनता है।

'तत्' के विषय मे यह शंका उठाना भी व्यर्थ होगा कि 'यत्तदो नित्यसम्बध' पहले तो ऐसे सम्बन्ध गद्य में होते हैं पद्य और मन्त्रो में नही दूसरे 'तत्' केवल उनके कथनानुसार केवल सर्वनाम ही नही होता, वह विशेषण भी होता है और यहां वह निश्चित रूपेण भागवत और परिमाणगत आदि दूरी या अन्तर बताने वाले विशेषण के रूप में है। ठीक उसी प्रकार जैसे 'तत्वमसि' इस प्रख्यात दार्शनिक वाक्य में 'तत्' पद का प्रयोग हुआ है। शर्मा जी को ईश्वर के विषय में कुछ ज्ञान होता या आस्था होती, तो वे सरलता से जान जाते कि ईश्वर और उसके गुणों व स्वरूप की अभिव्यंजना हेतु यह 'तत्' पद कितना महत्त्वपूर्ण है। किन्तु ईश कृपा और परम पुरुषार्थ के बिना ऐसा कहां संभव है?

६—अर्थ की महत्त्व हीनता

इस लेख में पाठकों को गुमराह करने वाला सबसे अधिक प्रवंचना पूर्ण, बल्कि धूर्ततायुक्त आक्षेप है उसके अर्थ के विषय में 'अ आ' जाने बिना उसे बेकार सिद्ध करने का दूषित और असफल प्रयास। एक ओर तो लेखक ने पाठकों को श्रद्धा अर्जित करने के लिए लिख दिया कि भाव अच्छा होने के कारण मन्त्र को भी अच्छा ही कहना होगा दूसरे ही पल गिरगट से भी शीघ्र रंग बदलते हुए कहने लगे—

'गायत्री मन्त्र में सिवा बुद्धि की याचना के कुछ नहीं है। न कोई सामाजिक चर्चा, न प्राकृतिक वर्णन, न कोई मानव हृदय का उद्गार और न कोई सांस्कृतिक महत्त्व की सूचना।' बाकी रही अर्थ के अनुसार काम करने की बात। गायत्री मन्त्र का सीधा सादा अर्थ है, 'हम सविता देवता वरेण्य तेज का ध्यान करते हैं वह हमारी बुद्धियों को प्रेरित करे।' इसमें ऐसी कौनसी बात है, जिसके अनुसार काम किया जाए। जप करने वाला अब इस मन्त्र के अर्थ को कैसे आचरण में उतारे, इसमें व्यक्ति के लिए तो करने को कुछ भी नहीं है।

यह कहना कि अर्थ जानते हुए जप करना और अर्थ के अनुसार आचरण करना न केवल निरर्थक है बल्कि प्रवंचनापूर्ण भी है। 'इसे दुर्लभ मन्त्र कहना और तीनों वेदों में इससे श्रेष्ठ मन्त्र का नहीं होना बताना, सरासर पौराणिक गप्प है इत्यादि।

यदि इस प्रसंग में श्री सुरेन्द्र शर्मा जी लक्षसुप्त का अभिनय नहीं कर रहे, अर्थात् जानबूझकर अनजान नहीं बना रहे तो उनका दोष केवल उस बुद्धिमान के समान है, जिसे संसार के सर्वश्रेष्ठ अजायबघर पर समीक्षा करने को कहा जाए. और वह बेचारा उस विशाल और भव्य भवन को बाहर से देखकर लौट आए, और शपथपूर्वक कहे कि वहां आकर्षक दीवारों और ऊंची छत के सिवा कुछ नहीं है। अब आप उसे असत्यवादी और अपराधी भी कैसे ठहराएंगे। हां बदकिस्मत जरूर कह सकते हैं कि क्योंकि ज्ञान विज्ञान के खुले द्वार से दर्शन करना उसके भाग्य में नहीं था लेकिन अपने अज्ञान और मूढता को अपनी महानता समझना अवश्य अक्षम्य अपराध की कोटि में आता है।

[क्रमशः]

सम्पादकीय

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वित्तीय वर्ष १ बैसाख से ३० चैत्र तक होता है। आर्यसमाज के नियम-उपनियम के अनुसार आर्य समाजों का चुनाव प्रतिवर्ष होता है। चुनाव में आर्यसमाज के अधिकारी अन्तरग सदस्य तथा सभा के लिए प्रतिनिधियों को चुना जाता है। अधिकारियों तथा अन्तरग सदस्यों की अवधि एक वर्ष तथा सभा के लिए जो प्रतिनिधि चुने जाते हैं, उनकी अवधि आगामी ३ वर्ष के लिए होती है। सभा का चुनाव भी प्रतिवर्ष होता है। १९८० में आर्यसमाजों ने जो प्रतिनिधि चुन कर भेजे थे, उनकी अवधि पूरी हो चुकी है। अतः इस वर्ष आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि सभा के लिए चुन कर भेजेंगी, उन की अवधि आगामी तीन वर्ष अर्थात् १९८५ तक होगी। इस वर्ष सभा का चुनाव नये प्रतिनिधियों पर होगा।

अतः हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे अपने वार्षिक चुनाव अधिक से अधिक अप्रैल मास तक कर लेवें। चुनाव में सभा के लिए प्रतिनिधि भी चुनकर भेजने हैं। अतः इस सम्बन्ध में मैं आपका ध्यान आर्यसमाज के नियम उपनियमों की ओर दिलाना चाहता हूं, ताकि प्रतिनिधि स्वीकार करवाने में आपको किसी प्रकार की कठिनता न हो। नियमों के अनुसार चुनाव करने से स्थानीय आर्यसमाज तथा प्रान्तीय सभा दोनों को सुविधा रहेगी। आर्यसमाजों के चुनाव में आर्य समाज के नियम उपनियमों के अनुसार आर्य सभासद ही भाग ले सकते हैं।

आर्यसमाज के नियम ४ (क) के अनुसार आर्य सभासद वे होते हैं, जिनका नाम किसी आर्यसमाज में सदाचार पूर्वक दो वर्ष तक अंकित रहा हो और वह अपनी आय का शतांश (१०० वां भाग) मासिक वा वार्षिक अथवा २५०) वार्षिक वा अधिक धन समाज को देता रहा हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम २५ प्रतिशत तक हो तो वह आर्य सभासद माना जावेगा।

इस नियम के अनुसार आर्य सभासदों के लिए ३ कसौटी रखी गई हैं। एक सदाचार दूसरी अपनी आय का शतांश आर्यसमाज को देना तथा तीसरा आर्यसमाजों के सत्संगों में कम से कम २५ % तक उपस्थित अंकित करवाना। इन नियमों का जो आर्यसमाजी पालन करते हैं, वहां चुनाव के समय किसी प्रकार का विवाद नहीं होता। यदि किसी आर्य समाज के चुनाव सभा की देख-रेख में करवाने की मांग की जाती है, तो उस समय इन्हीं नियमों के आधार पर चुनाव समस्या सुलझाने का यत्न किया जाता है। अतः सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने आर्य सभासदों से उनकी मासिक वा वार्षिक आय का शतांश (१०० वां भाग जो भी बनता हो) प्राप्त करने का पूरा यत्न करें। आर्यसमाज एक धार्मिक संस्था है। सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य के परित्याग के लिए हमें सदा तैयार रहना चाहिए। यदि हम अपने आर्यसमाज को चन्दा देते समय अपनी वास्तविक आय को छुपा कर शतांश के अनुसार (यदि किसी की मासिक आय ५०० रुपये है तो उसे ५ रुपये मासिक चन्दा देना चाहिए) कम चन्दा देते हैं तो हमें आर्य कहलाने का अधिकार नहीं रह जाता। शतांश के अनुसार चन्दा देने पर जहां आर्यसमाज की आय में वृद्धि होगी, वहाँ सभा को भी उसके अनुसार दशांश की राशि अधिक प्राप्त होगी। आर्यसमाज की आय में वृद्धि होने से प्रचार आदि करवाने में सहायता मिलेगी और सभा को भी दशांश की राशि अधिक प्राप्त होने पर नये उपदेशक तथा भजन मण्डलियों की सेवाएं प्राप्त करने में सुविधा होगी। इसी प्रकार सदाचार तथा सत्संगों में उपस्थित के नियम का पालन करने से भी आर्य समाज के संगठन में दृढ़ता आवेगी।

अत: मैं आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन करता हूँ कि अपने आर्य सभासदों से इस वर्ष का चन्दा प्राप्त करते समय उनकी मासिक अथवा वार्षिक आय के अनुसार ही चन्दा प्राप्त करें। मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि जो आयसमाजें इस नियम का पालन नहीं करेंगी उनके चुने हुए प्रतिनिधि स्वीकार नहीं किये जावेंगे और किसी आर्यसमाज के आर्य सभासद ने इस सम्बन्ध में शिकायत भेजी तो उस आर्यसमाज को जाच-पड़ताल करवा कर चुनाव को अवैध घोषित कर दिया जावेगा। अत: आर्यसमाजें शतांश के अनुसार चन्दा न देने वालों को आर्य सभासद घोषित न करें। वे सहायक सभासद रह सकते हैं। समाज के चुनाव मे उन्ही को अधिकारी तथा सभा के लिए प्रतिनिधि चुना जाना चाहिए जो कि आयसमाज के नियम उपनियमों पर आचरण करने के लिए तैयार हो सकें। अधिक सभासदों के स्थान पर कम संख्या में आर्य सभासद ही आर्यसमाज के संघठन के लिए हितकर हो सकते है।

आर्यसमाजें जिस प्रकार की योग्यता वाले प्रतिनिधियों को चुनकर भेजेंगी, उसका प्रभाव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पर भी पड़ेगा, क्योंकि आर्यसमाजो के भेजे हुए प्रतिनिधियों पर ही आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा सार्वदेशिक सभा के चुनाव होते हैं। सभा के नियम के अनुसार जो आर्यसमाजें सभा को २ प्रतिनिधियों पर न्यून से न्यून ५१) वेद प्रचार निधि के लिए तथा आर्य सभासदों से प्राप्त आय का दशांश सभा को भेजेंगे, उनके प्रथम दस आर्य सभासदों पर एक प्रतिनिधि तथा शेष २० आर्य सभासदों पर एक एक प्रतिनिधि चुनकर भेजे जा सकते हैं।

जिन आर्यसमाजों के पास आर्यसमाज के नियम उपनियम की प्रति नहीं हैं, वे सभा को पत्र लिखकर मंगवा लेवें। नियमों के अनुसार यदि चुनाव करवाने में सभा के मार्ग दर्शन की आवश्यकता हो तो पत्र लिखने का कष्ट करें ताकि सभा की ओर से किसी महानुभाव को भेज दिया जावे। यदि प्रचार की आवश्यकता हो तो कम से कम एक मास पूर्व लिखकर अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेवें। प्रचार के अवसर पर सभा को वेद प्रचार दशांश तथा सभा के पत्र सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क भी देने की कृपा करें।

आशा है आर्यसमाजें कम से कम शतांश के नियम का ईमानदारी से पालन करेंगे ताकि आर्यसमाजों तथा सभा का चुनाव विधि पूर्वक हो सके और हरयाणा में आर्यसमाज का संघठन सुदृढ़ हो सके। यदि आर्यसमाजों के चुनाव नियमों के अनुसार होंगे तो सभा की शक्ति भी बढ़ेगी। हरयाणा में आर्यसमाज का संघठन सुदृढ़ होने पर ही हम राष्ट्र विरोधी शक्तियों का मुकाबला करने में सफल हो सकते हैं।

म० भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री



अब जाग गया हरयाणा

(पं० मुन्शीलाल सभा भजनोपदेशक)

अब जाग गया हरयाणा
डरने की कोई बात नही है
सत्याग्रह चलाना अब
पंजाबी भाई अकाली
इनकी सुनो बात निराली
खालीस्तान की मांग उठाते
देश द्रोही कुचाली
इन्दरा जी भी समझ गई
इनका गलत निशाना
अब जाग गया हरयाणा ॥१॥

चण्डीगढ पर जोर जमाते
अबोहर-फाजिल्का अपनाते
है हिन्दी भाषी क्षेत्र
पर टुक भी नही शरमाते
झुठी बात बनाते इनका
चले नही चिकनाना
अब जाग गया हरयाणा ॥२॥

रावी व्यास का पानी
उसको नहीं देने की ठानी
करना चाहते मनमानी
इनके दिल में बेइमानी
अभिमानी का बुरा नतीजा
कहता इतिहास पुराना
अब जाग गया हरयाणा ॥३॥

तुमने जो बाजी चुकी
तेरी धरती रहेगी सुखी
नहीं मिले वक्त पर रोटी
ये जनता मरेगी भुखी
साथलई जो चुपी होगा
फिर पीछे पछताना
अब जाग गया हरयाणा ॥४॥

स्वामी ओमानन्द ने टेर लगाई
सारी बात समझाई
तैयारी पकड़ो भाई
उठो लेकर के अंगडाई
मुन्शीलाल का जेल के अन्दर
होगा नया तराना
अब जाग गया हरयाणा ॥५॥

वैवाहिक विज्ञापन

गुरुकुल की स्नातिका एम० ए० (संस्कृत) की छात्रा आयु २१ वर्ष कद ५ फुट २ ईंच सुस्थापित आर्यसमाजी, स्वस्थ सुशील गृहकार्यों में दक्ष कन्या हेतु वर एवं आयु २४ वर्ष कद ५ फुट ६ ईंच सुन्दर स्वस्थ अपना कारोबार आय चार अंकों में लड़के हेतु वधु चाहिये। दहेज लेने देने के इच्छुक क्षमा करें। देवीसिंह आर्य

टी २६ पुरानी नांगल दिल्ली छावनी-१०



-हरयाणा के हितों की रक्षार्थ दिल्ली में ३० जनवरी के विशाल प्रदर्शन में हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से जलूस में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के नेतृत्व मे श्री मामचन्द रेवाड़िया मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, श्री छबीलदास आर्य प्रधान आर्यसमाज जीन्द; प्रो० प्रभुदयाल आर्य गुड़गांव, श्री हरकिशनसिंह मलिक भू. पू. सैशनजज मा० बद्रीप्रसाद आर्य संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी जीन्द के साथ वाहिनी का नामपट लिए हुए हरयाणा के नवयुवक दिखाई दे रहे हैं।

साथ के चित्र में भारत के गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी को हरयाणा की मांगों का ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए स्वामी ओमानन्द सरस्वती; श्री आइचजलाल [सनातन धर्म सभा के नेता एवं संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी यमुनानगर] प्रो० शेरसिंह, श्री हरकिशनसिंह मलिक, श्री खेमलाल राठी एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट, श्री मामचन्द रेवाड़िया तथा श्री अमरसिंह एडवोकेट रोहतक आदि नेता दिखाई दे रहे हैं।



आदर्श आर्य विवाह

आर्यसमाज के सिद्धान्तों को मानना एक अन्य बात है, परन्तु उन पर पूर्ण आस्था रखके दृढ़ता से चलना एक असिधारा पर चलने के समान महान् दृढ़-संकल्प का सूचक है। आर्यसमाज की सत्य मान्यताओं का प्रचार ऐसे कर्मठ दृढ़व्रतियों से हुआ है और भविष्य में भी इन दृढ़व्रतों के पालन करने की महती आवश्यकता है।

बडेसरा (भिवानी) निवासी श्री रामप्रसाद जी आर्य ने अपनी पुत्रियों को गुरुकुल नरेला में विद्याध्ययनार्थ प्रवेश कराया और वहीं से पूर्ण विदुषी बनने पर स्नातिका बनाया। उन्होंने उनके गुण, कर्म, स्वभावानुरूप योग्य वरों का चयन करके २५ जनवरी १९८३ को विवाह संस्कार कराया। कन्याओं के दृढ़व्रती पिता को महर्षि के प्रति दृढ़ आस्था रखने वाले गौरीपुर (भिवानी) निवासी श्री मामराज जी आर्य सम्बन्धि मिले, यह अतीव सौभाग्य की बात है। श्री मामराज जी ने भी अपने पुत्रों को आर्ष शिक्षा के केन्द्र गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर (रोहतक) में स्नातक बनाकर योग्य बनाया है। दोनों आर्य परिवारों की इस मिलन बेला का दृश्य वर्णनातीत ही था। विवाह संस्कार पर अनेक गुरुकुलों के आचार्य दर्जनों विद्वान् शास्त्री तथा अनेक मूर्धन्य संन्यासी उपस्थित थे। विवाह संस्कार का कार्य पूर्ण शास्त्रीय विधि से श्री रणवीर शास्त्री ने सम्पन्न कराया। यह विवाह संस्कार कार्यकारी अभियन्ता श्री अजमेर सिंह जी (हरयाणा पावर हाऊस, रोहतक रोड, दिल्ली) की कोठी पर सम्पन्न हुआ। योग्य पिताओं के योग्य पुत्र व पुत्रियों का यह विवाह सम्बन्ध इस प्रकार हुआ—श्री सत्यवीर शास्त्री का आयु० सविता से तथा श्री धर्मवीर शास्त्री का आयु० सुशीला से विवाह सम्बन्ध हुआ। विवाह सम्बन्ध तथा विवाह संस्कार में अनेक आदर्शों को भी अपनाया गया। आज के समाज को दूषित करने वाली दहेज जैसी भयंकर कुप्रथा को इस विवाह में न केवल तिलांजलि ही दी गई, प्रत्युत पंचायत के नियमानुसार एक रुपये से ही सारा कार्य सम्पन्न हुआ और विवाह के समय अश्लील फिल्मी गीतों का तथा बाह्य आडम्बरों का सर्वथा अभाव ही था और विवाह संस्कार पर निम्नलिखित संस्थाओं को दान राशि दी गई—

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक), आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली), गुरुकुल वेद विद्यालय यूसुफसराय (दिल्ली), गुरुकुल आमसेना कालाहाडी इन सबको १०१ रुपये और आर्यसमाज नरेला (दिल्ली) आर्यसमाज मुरादनगर (गाजियाबाद), आर्यसमाज गौरीपुर (भिवानी) इन सबको ५१ रुपये दान में दिए। राजवीर शास्त्री

अम्बाला छावनी में धर्मार्थ औषधालय स्थापित

अम्बाला शहर में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित श्रीमद्दयानन्द धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय कई वर्षों से सफलतापूर्वक चालू है। यहां की स्थानीय प्रबन्धक समिति ने १ फरवरी ८३ से इसकी शाखा आर्यसमाज कच्चा बाजार अम्बाला छावनी में भी स्थापित कर दी है। इस अवसर पर आर्यसमाजों के कार्यकर्ता तथा नगर के गण मान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। डा० जगदीशचन्द्र अग्रवाल की सेवाएं प्राप्त हो गई हैं। —पन्नालाल आर्य प्रबन्धक

आर्यसमाज द्वारा रजाइयां वितरित

आर्यसमाज नांगल डा० बहल जिला भिवानी के कार्यकर्त्ता श्री जोखीराम आर्य ने निर्धन तथा बेसहारा परिवारों में ३५०) की रजाइयां वितरित की हैं।

मोक्ष

हर्षप्रिय आर्य बंगलोर

मनुष्य के शरीर के अन्दर आत्मा, मन व बुद्धि तीनों अलग अलग किन्तु एक दूसरे के पूरक अवयव हैं। किसी भी पदार्थ को देखकर मन को उसे पाने की लालसा होती है वह उसका अच्छा या बुरा नहीं जानता। यह पहचान करना आत्मा का कार्य है। आत्माका निर्णय जानने के बाद मन यदि निर्णय के अनुसार और बुद्धिपूर्वक कार्य करता है तो वह पुण्य अन्यथा पापकर्म कहलाता है।

निरन्तर आत्मा के निर्णय के विरुद्ध कार्य करने से आत्म-शक्ति क्षीण पड़ जाती है और वह कार्यों के बारे में निर्णय नहीं दे पाती और मनुष्य में भय, शंका व लज्जा उत्पन्न नहीं होते जब वह किसी पापकर्म में लीन होता है। तब आत्मा अपना स्वरूप खोकर मन-स्वरूप हो जाती है और उसका कार्य केवल शरीर को जीवन देने मात्र तक ही सीमित हो जाता है और वह मनुष्य हमेशा पाप की ओर भागता है। इसके विपरीत निरन्तर आत्मा के निर्णयानुसार कार्य करने से आत्म-शक्ति प्रबल होती है और मनुष्य कार्य करते समय स्वयं को निडर, निश्शंक व गौरवान्वित अनुभव करता है। तब मन भी आत्मा-स्वरूप होकर सदा शुभ ही देखता है। इसी मन के आत्मा-स्वरूप होने में ही स्वर्ग और आत्मा के परमात्मा-स्वरूप होने में मोक्ष की प्राप्ति होती

आर्य समाज की गतिविधियां—

हरयाणा के कोने-कोने में ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

हरयाणा के कोने-कोने से ११ से १३ फरवरी को ऋषि दयानन्द बोधोत्सव मनाये जाने के समाचार कार्यालय में प्राप्त हुए हैं :— नरवाना जिला जीन्द में आर्यसमाज मन्दिर में ११ फरवरी को सभा की ओर से सभा के भजनोपदेशक प० शेरसिंह जी। आर्यसमाज नारायणगढ़ जिला अम्बाला में ६ से ११ फरवरी तक सभा के उपदेशक प० देवव्रत जी शास्त्री, आर्यसमाज खारवन जिला अम्बाला में ११ फरवरी को सभा के उपदेशक प० सुरेशकुमार विद्यावाचस्पति, आर्यसमाज सफीदो जिला जीन्द में १२ से १४ फरवरी को प० धर्मचन्द विद्यालंकार, प० सुरेशकुमार विद्यावाचस्पति उपदेशक तथा प० मुन्शीलाल, पं० सुमेरसिंह तथा प० चिरंजीलाल की भजन मण्डलियां, कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत में १२, १३ फरवरी को चौ० माडूसिंह जी सभा उपप्रधान तथा प० चिरंजीलाल जी तथा प० सूरतसिंह की भजन मण्डलियां गुरुकुल भज्जर जि० रोहतक में १२, १३ फरवरी को स्वामी ओमानन्द जी, प० अर्जुनदेव जी आर्य, प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान की भजन मण्डली, आर्यसमाज सोनीपत शहर तथा माडल टाउन सोनीपत में ११ फरवरी को पं० धर्मचन्द विद्यालंकार, प० सुखदेव शास्त्री तथा पं० बनारसीलाल जी भजनोपदेशक, आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक में ११ फरवरी को स्वामी जीवनानन्द जी, प० मुन्शीलाल जी, आर्यसमाज माडल टाउन रोहतक में ११ फरवरी को प० वेद प्रकाश साधक, आर्यसमाज ७ सैक्टर फरीदाबाद में ११ फरवरी को चौ० माडूसिंह जी सभा उपप्रधान, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार तथा चौ० राममेहर एडवोकेट, दयानन्दमठ रोहतक में १३ फरवरी को पं० रणवीर शास्त्री, स्वामी जीवनानन्द जी, प० विश्वामित्र शास्त्री, वैद्य भरतसिंह तथा पं० बनारसीलाल जी भजनोपदेशक पधारे।

केदारसिंह आर्य
कार्यालयाध्यक्ष

हरयाणा आर्य वीरदल सम्मेलन २४-२५ सितम्बर को भिवानी में होगा

आर्यसमाज घण्टा घर भिवानी में प्रो० उत्तमचन्द जी शरर सचालक आर्य वीरदल हरयाणा की अध्यक्षता में दिनांक २२-१-८३ को अत्यावश्यक बैठक हुई। जिसमे आर्य वीरदल के प्रान्तीय अधिकारियों एवं भिवानी शहर की तीनों समाजों के अधिकारी वर्ग एवं सदस्यगणों ने भाग लिया। लेख मे भिवानी शहर के प्रमुख आर्य सज्जनों के सहर्ष निर्णय लिया कि आगामी सम्मेलन भिवानी में २४-२५ सितम्बर को किया जावे।

प्रान्तीय मण्डलपति एवं उपमण्डलपति

फरीदाबाद—मण्डलपति श्री वेदप्रकाश आर्य, बल्लबगढ उपमण्डलपति श्री प्रो० सत्यप्रकाश, फरीदाबाद। गुड़गावां—मण्डलपति श्री रामचन्द्र आर्य, गुड़गांवा, उपमण्डलपति श्री किशनचन्द चुटानी गुड़गावां। भिवानी–मण्डलपति श्री प० प्रह्लादराम आर्य, भिवानी, उपमण्डलपति श्री नरेन्द्र प्रभाकर, भिवानी। रोहतक—मण्डलपति श्री जगदीश मित्र आर्य, रोहतक, उपमण्डलपति श्री देशराज आर्य, रोहतक। सोनीपत—मण्डलपति श्री छाजूराम आर्य, सोनीपत, उपमण्डलपति श्री पं० देवप्रिय, सोनीपत। करनाल—मण्डलपति श्री जगदीशचन्द मघोक, करनाल, उपमण्डलपति श्री आत्मदेव, करनाल। कुरुक्षेत्र—मण्डलपति श्री हरिराम, कैथल। अम्बाला—मण्डलपति श्री सुखदर्शन लाल, किशनपुरा माजरा, उपमण्डलपति श्री वेदमित्र गर्ग, अम्बाला। जीन्द—मण्डलपति श्री रामकुमार आर्य, नरवाना, उपमण्डलपति श्री मोहन लाल, जीन्द। हिसार—मण्डलपति श्री चेतनप्रकाश, हिसार। सिरसा—मण्डलपति श्री नौरंग सिंह एडवोकेट, सिरसा, उपमण्डलपति श्री राजकुमार जी आर्य, सिरसा।

मन्त्री : आर्यवीर दल हरयाणा

प्रान्तीय अधिकारियों की नियुक्तियां

१. सचालक : प्रो० उत्तमचन्द जी शरर पानीपत। २. अधिष्ठाता : श्री भीमसैन जी दीवान, गुड़गावा। ३ सह संचालक एवं लेखा निरीक्षक : श्री लाला लक्ष्मण दास जी आर्य, बल्लभगढ़। ४. उप सचालक : श्री चन्द्रप्रकाश जी सत्यार्थी, यमुना नगर। ५. मन्त्री : अजीत कुमार जी आर्य, पलवल। ६ उपमन्त्री : देवप्रकाश जी आर्य, रोहतक। ७. कोषाध्यक्ष : वीरभान जी आर्य, पलवल। ८, बौद्धिकाध्यक्ष श्री मनोहरलाल जी आनन्द, रोहतक। ९. बौद्धिकारक्ष : पं० विश्व मित्र जी, हिसार। १०. शिक्षाध्यक्ष : श्री सत्यपाल जी आर्य, पलवल। ११. शिक्षकारक्ष : श्री प्रह्लादराय जी भिवानी। १२. श्री कन्हैयालाल जी महता, फरीदाबाद तथा श्री सत्यपाल जी आर्य गुड़गावां। १३ प्रतिष्ठित सदस्य : डा० गणेशदास जी करनाल।

बल्लबगढ़ क्षेत्र में मुसलमानों द्वारा गौ-हत्या

फरीदाबाद जिले की बल्लबगढ़ तहसील के ग्राम घौज में मुसलमानों ने गायों की हत्या की। निकटवर्ती सूत्रों के अनुसार 12 गउए और लोगों के अनुसार कम से कम 40 गायो की हत्या की गई। जब पुलिस इन लोगो को पकड़ने के लिए गांव में गई तो गांव के मुसलमानों ने पुलिस को काफी मारा पीटा। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी जीवन-मृत्यु के बीच मे सघर्ष कर रहा है।

यह गौ-हत्या की खबर बल्लबगढ और आस-पास के क्षेत्रों में आग की भांति फैली। लोगों मे इस गौ-हत्या से रोष पैदा होगया और स्थिति गभीर हो गई। ऐसी घटनाएं पहले भी कई बार हो चुकी है। परन्तु इस बार लोगो में अधिक रोष देखने में आया। छात्रों ने इस गौ-हत्या के विरोध मे एक बड़ा भारी जलूस निकाला और दुकाने बन्द करवाकर पूर्ण हड़ताल की घोषणा कर दी।

छात्रों ने मथुरा-दिल्ली रोड पर यातायात ठप्प कर दिया। फरीदाबाद मे भी इस हत्याकांड की तीव्र प्रतिक्रिया हुई और वहां के राजकीय महाविद्यालय के छात्रों ने भी इस गौ-हत्या के विरोध में हड़ताल की।

ज्ञातव्य है कि घौज में मुसलमान काफी सख्या में रहते हैं और वह कई बार ऐसा काड कर चुके है। परन्तु हर बार राजनैतिक दबाव के कारण छूट जाते हैं। वह वहां के हरिजनों को जबरदस्ती मुसलमान बनाना चाहते हैं और उन्हें जिन्दा जलाने तक की धमकियां देते हैं। इन मुसलमानों को दिल्ली जामा मस्जिद के इमाम बुखारी के अलावा कई राजनतिक लोगों का भी आशीर्वाद प्राप्त है।

"दयानन्द बाल मन्दिर, नारनौल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न"

नारनौल। 29 जनवरी 1983 को आर्य समाज ग्राउंड मे दयानन्द बाल मन्दिर, नारनौल का चतुर्थ वार्षिकोत्सव एवम् पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रुदमीराम जी एडवोकेट ने की। स्थानीय राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य श्री ओ. पी. गुप्ता ने मुख्य अतिथि के सिंहासन को सुशोभित किया। श्री रुदमीराम जी एडवोकेट ने, विद्यालय व बच्चो के कार्यकलापों की प्रशसा करते हुए कहा कि हमने जिस उद्देश्य को लेकर इस विद्यालय रूपी पौधे को लगाया था, आज यह विद्यालय हमारी आकांक्षाओं से भी अधिक उन्नति के शिखर पर पहुंच चुका है। मुख्य अतिथि श्री ओ. पी. गुप्ता ने अपने करकमलों द्वारा बच्चों को पुरस्कार वितरण किया तथा उन्हें आशीर्वाद दिया कि वे भविष्य मे भी अपने स्कूल व अपने देश का नाम ऊंचा उठायें। वर्ष 1981-82 का पांचवीं कक्षा का परिणाम हर वर्ष की भांति शत प्रतिशत रहा। तत्पश्चात् विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती एस. गुप्ता ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद किया।

आर्य आदर्श प्राथमिक विद्यालय गन्नौर शहर को मान्यता

आर्यसमाज गन्नौर शहर जि० (सोनीपत) द्वारा संचालित आर्य आदर्श प्राथमिक पाठशाला गन्नौर शहर हरयाणा को जिला शिक्षा अधिकारी सोनीपत श्री वासुदेव छाबड़ा द्वारा कार्यालय आदेश क्रमांक सा० 1-82/5771-5800 31.1.1983 के अनुसार स्थायी मान्यता प्रदान की गई।

वैदिक कालीन सोमः एक विश्लेषण

कृष्णा आचार्य प्रवक्ता—यूनिवर्सिटी कालेज, रोहतक

विदुषी लेखिका कृष्णा आचार्य ने 'सोम' का ब्राह्मण-ग्रन्थ आदि प्राचीन साहित्य के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया है विद्वानों में यह एक विवादास्पद विषय है। आशा है इससे विद्वानों को समस्या के सुलझाने में सहायता मिलेगी। —सुदर्शनदेव आचार्य सम्पादक



प्राचीन भारत के ऋषियों ने अपने दीर्घ कालीन अन्वेषण से अनेक प्रकार की वनस्पतियों के गुणों का अध्ययन करके उनका उपयोग मानव समाज के लिए कितना लाभदायक है, यह सब आयुर्वेदीय ग्रंथों में प्रतिपादित किया है। इन सब वनस्पतियों का प्रभाव विभिन्न रोगों पर बहुत लाभदायक होता है। उस समय के वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर जिन वनस्पतियों का परीक्षण किया गया, यदि वह अनुसंधान की परम्परा उत्तरोत्तर आगे बढती रहती तो चिकित्सा के क्षेत्र में भारत का अपना ही स्थान होता, परन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि जो खोज हो चुकी थी उस को आगे बढाने का प्रयास तो किया ही नहीं गया। साथ ही हम उस अन्वेषित ज्ञान को सुरक्षित भी नहीं रख सके जो हमारे पूर्वजों ने न जाने कितनी साधना और तपस्या के बाद हमें वह ज्ञान दिया था और आज तो स्थिति यह कि आयुर्वेद के ग्रन्थों में वर्णित बहुत सी वनस्पतियों को हम पहचान भी नहीं सकते। उन वनस्पतियों का औषध के रूप में विभिन्न रोगों पर प्रयोग की बात तो बहुत दूर है। इसी प्रकार की एक वनस्पति 'सोम' है। जब हम इस वनस्पति के गुणों को प्राचीन भारतीय साहित्य में पढते हैं तो इसके दिव्य गुणों से आकर्षित होकर इसको प्राप्त करने की अभिलाषा मन में जागृत होती है।

वैदिक साहित्य में सोम के गुणों का विस्तार से वर्णन किया गया है। उस काल में सोम को दिव्य और पार्थिव दो रूपों में माना जाता था।

सोम का दिव्य रूप

ब्राह्मण ग्रन्थों में सोम को दिव्य एवं स्वर्गीय कहा गया है। इनका निवास स्थान गन्धर्वों के पास बताया गया है। यज्ञ में सोम का वही महत्व है जो शरीर में प्राणों का है। अतः इसे 'प्राण' नाम से भी पुकारा गया है। देवता लोग संकट के समय सोम को अपना राजा चुनते थे। वे इसको राजा बनाकर असुरों को जीत लेते थे। इस प्रकार सोम के दिव्य रूप का ब्राह्मण साहित्य में बहुत विस्तार से वर्णन मिलता है। सोम के दिव्य रूप का वर्णन पूर्णरूप से प्रतीकात्मक है। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि दिव्य रूप में वर्णित सोम ब्रह्माण्ड में व्याप्त एक महत्वपूर्ण तत्व है, जिसमें अमरत्व और प्रकाश दो दिव्य गुण विद्यमान हैं।

सोम का पार्थिव रूप

पार्थिव रूप में सोम एक लता थी जो प्राचीन भारत में विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध होती थी। जिसका सुश्रुत संहिता चिकित्सा स्थान अध्याय २९ में उल्लेख है—

हिमवत्यर्बुदे सह्ये महेन्द्रेमलये तथा
श्री पर्वते देव गुरौ गिरौ देवसहे तथा।
पारियात्रे च विन्ध्ये देव सुन्दे ह्रदे तथा।
उत्तरेण वितस्तायाः प्रवृद्धाये महीधरा ॥
पंच तेषामधोमध्ये सिन्धुनामा महानदः।
कुम्भवत्त लवते तत्र चन्द्रमा सोमः सत्तमः॥
तस्योद्देशेषु चाप्यस्ति मुञ्जवानं शुभानपि।
काश्मीरेषु सरो दिव्यं नाम्नाक्षुद्रकः मानसम्॥
गायत्रस्त्रैष्टुभः पाङ्क्ते जागतः शाक्वरस्तथा।
अत्र सन्त्यपरे चापि सोमाः सोम् समप्रभाः॥

सोमलता हिमालय, अर्बुद, सह्य, महेन्द्र, मलय, श्री पर्वत, देवगिरि परियात्र विन्ध्य, देवसुन्द तथा ह्रद (बड़े तालाब) में पाई जाती है। वितस्ता नदी के उत्तर में बहुत बडे पांच पर्वत हैं। उनके नीचे मध्य में सिन्धु नामक महानद है उसमे सोमों में श्रेष्ठ चन्द्रमा जलकुम्भी की भांति तैरता है। मुंजवान् और अंशुमान् भी चन्द्रमा नामक सोम के समीप रहते हैं। काश्मीर के क्षुद्रक मानस नामक दिव्य सरोवर हैं। वहां गायत्र, त्रैष्टुभ पंक्ति, जागत तथा शाक्वर एवं अन्य दूसरे चन्द्रमा के समान सुन्दर सोम भी है।

यजुर्वेद में सोम के २४ भेदों का संकेत प्राप्त होता है। सुश्रुत संहिता में २४ प्रकार के सोमों के नामोल्लेख करते हुए कहा गया है कि सोम एक प्रकार का है परन्तु स्थान, नाम, आकृति और वीर्य भेद से उस के २४ भेद हो जाते हैं जैसे—

१—अंशुमान २—मुञ्जवान ३—चन्द्रमा ४–रजतप्रभ ५–दूर्वासोम ६—कनीयान ७—श्वेताक्ष ८ कनकप्रभ ९—प्रतापवान १० तालवृन्त ११–करवीर १२—अंशवान् १२—स्वयंप्रभ १४—महासोम १५—गरुड़ाहृत १६—गायत्र १७—त्रैष्टुभ १८—पांक्त १९— जागत २०— शाक्वर (शांकर) २१–अग्निष्टोम २२— रैवत २३— त्रिपदा गायत्री २४— उडुपति

सम्भव है कि कोई २४ द्रव्य जो सोम के विशिष्ट गुणों से युक्त थे, इन चौबीस भेदों के अन्तर्गत आ गये हों। सोमलता के वर्णन में कहा गया है कि इसके सभी भेदों में १५ पत्ते होते थे। जो क्रमशः शुक्लपक्ष में निकलते कृष्णपक्ष में झड जाते थे। शुक्लपक्ष में सोमलता का प्रतिदिन एक एक पत्ता निकलता था इस प्रकार पूर्णमासी के दिन १५ पत्ते निकल आते थे। पुनः कृष्णपक्ष में एक एक पत्ता झड़ने लगता था तथा कृष्णपक्ष की समाप्ति पर केवल लता शेष रह जाती थी? इस प्रकार की कोई लता वर्तमान काल में उपलब्ध नही होती।

वैदिक साहित्य के अध्ययन से विदित होता है कि सोम एक दुर्लभ वनस्पति थी। सब उसका उपयोग नही कर सकते थे। ब्राह्मण साहित्य में कहा गया है सोम गन्धर्वों के पास था। ऋषियों ने इसको स्त्री का रूप धारण करने वाली वाणी के द्वारा खरीदा। इस काल में सोम को खरीदने के लिए गौ, चन्द्र (स्वर्ण) वस्त्र और छाग को प्रतिरूप में प्रदान किया जाता था। गौ के रूप में बिना ब्याई बछिया को दिया जाता था, जिसको सोम क्रयणी' कहा जाता था। सामान्य रूप से सोम का बेचना और खरीदना दोनों को ही अच्छा नही माना जाता था। सोम विक्रेता को पापी कहकर धिक्कारा गया है।

(क्रमशः)

आर्यसमाज के प्रचार महारथी श्री रामपत जी वानप्रस्थी का स्वर्गवास

यह सूचना अत्यन्त दुःख के साथ सुनी जावेगी कि हरयाणा में आर्यसमाज के पुरानी पीढ़ी के भजनोपदेशक श्री रामपत जी वानप्रस्थी का ७९ वर्ष की आयु में ९ फरवरी को प्रातः ९ बजे ग्राम मदोना जिला रोहतक में अचानक हृदयगति बन्द होने से स्वर्गवास हो गया। वास्तव में आर्यसमाज के प्रचार महारथी थे। उन्होने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार कार्य में व्यतीत किया। आपका जन्म जि० रोहतक के आसन ग्राम के एक किसान परिवार में हुआ था। बचपन मे ही आर्य समाज के उत्तरी भारत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० बस्तीराम जी के शिष्य बन गये और प्रचार कार्य में लग गये। आपने स्वर्गीय चौधरी छोटूराम जी के साथ रहकर भी ग्राम सुधार कार्यों मे सहयोग दिया। गुरुकुल भैंसवाल के संस्थापक भक्त फूलसिंह की प्रेरणा से गुरुकुल को प्रचार द्वारा सेवा की तथा अपने इकलौते पुत्र श्री सुखदेव जी शास्त्री को गुरुकुल का स्नातक बनाया। इसी प्रकार अपने दोहते को भी गुरुकुल में अपने खर्च से पढ़ाया। इसी प्रकार आपने गुरुकुल झज्जर, मटिण्डू, सिंहपुरा, नरेला, टटेसर आदि के लिए भी प्रचार द्वारा धन संग्रह करके महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। परमात्मा ने आपको चन्दा एकत्रित करने तथा भिक्षा मांगने की अनुपम शक्ति प्रदान की थी। जहां भी धन तथा अन्न संग्रह करने के लिए जाते थे, वहीं से आर्य संस्थाओं के लिए पर्याप्त सहायता मिलती थी। दयानन्द मठ रोहतक के निर्माण मे भी आपका योगदान सदा स्मरण रहेगा। यहां हिन्दी आन्दोलन के पश्चात् ऋषि लंगर को चालू रखने में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रतिवर्ष ग्रामो से अन्न संग्रह करके लाते रहे। आपने अपने पूज्य गुरु दादा बस्ती राम जी की स्मृति में धन संग्रह करके दयानन्द मठ रोहतक में दो कुटियो का निर्माण करवाया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अपने हरयाणा मण्डल के कई वर्षों तक सफलता पूर्वक प्रचार किया। आप जिस उत्सव में भी जाते थे, वहां आपके प्रचार का विशेष प्रभाव रहता था। हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गो रक्षा सत्याग्रह, कुण्डली मे बूचड़खाना बन्द करवाने आदि आर्यसमाज के सभी आन्दोलनो मे आप अग्रणी रहे। ५ वर्ष हुए आपने आप्रेशन करवाना पड़ा, जिससे शरीर मे काफी कमजोरी आ गई, परन्तु फिर भी दयानन्द मठ को प्रचार केन्द्र बनाकर आर्यसमाजों तथा गुरुकुलो के उत्सवों में जाते रहते थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके प्रेमियो को उनके वियोग को सहन करने की शक्ति देवे। शनैः शनैः आर्यसमाज के पुराने प्रचारक हमसे विदा हो रहे है। अतः उनके खाली स्थान को पूरा करने के लिए नये प्रचारक तैयार करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं० 23301/73 पंजि० नं० P R 1 L 44

ओ३म्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

[illegible]

अकाली समस्या पर हरयाणा [illegible] के प्रधान प्रो० शेरसिंह का त्रिपक्षीय वार्ता में वक्तव्य

[illegible]

अकालियों का यह प्रचार चलता रहा कि उनकी सब मांगों का उद्गम आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव से ही होता है, इसलिए उनकी मांगों पर विचार करते समय आरम्भ यहीं से किया जाये तो उचित रहेगा।

आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव—

इस प्रस्ताव के सब नहीं तो कुछ रूप रूपान्तर अवश्यमेव भारत सरकार तथा विरोधी दल के नेताओं के समक्ष आये हैं। इन सभी में से अलगाव की बदबूदार गन्ध जरूर आती है। मुझे खुशी है कि त्रिपक्षीय वार्ता में सम्मिलित सरकारी तथा विरोधी नेताओं ने केन्द्र तथा राज्यों के सम्बन्धों की चर्चा में इस प्रस्ताव का कहीं नाम तक भी न आये यह प्रशंसनीय निर्णय लिया है।

जो विशेषज्ञ इस विषय पर विचार करने के लिए नियुक्त किये गये उनको अपने चिन्तन में दो बातों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये

१—संशोधन के लिए जिन सुझावों पर विचार हो उनसे देश की एकता को बल मिले, और विघटनकारी शक्तियां कमजोर हों।

२—उनके द्वारा राष्ट्र के प्राकृतिक तथा मानवीय संशोधनों का अधिक से अधिक उपयोग सम्भव हो सके और राष्ट्र का तथा सभी क्षेत्रों का सुव्यवस्थित और सन्तुलित विकास भी।

प्राकृतिक ससाधनों का पूर्ण रूप से उपयोग करने के लिए और उत्पादन तथा उत्पादकता बढाने के लिए अधिक से अधिक लोगों को काम करने का अवसर दिया जाये, इसके लिए प्रदेशों को नये अधिकार देने में संकोच नहीं करना चाहिये, परन्तु सभी प्राकृतिक संसाधनों जैसे पानी कोयला, खनिज आदि का बटवारा केन्द्र के हाथ में रहे। इसी प्रकार ऊंची शिक्षा तथा अनुसन्धान भी केन्द्र के अधिकार में, जिससे प्रसिद्ध संस्थानों द्वारा चोटी का अनुसधान कार्य सम्भव हो सके।

तथाकथित धार्मिक मांगें—

गुरवाणी के प्रसार का विरोध तो किसी भी समझदार आदमी को नहीं करना चाहिए परन्तु वेदवाणी और सभी महापुरुषों धर्म गुरुओं तथा विचारकों के ऊंचे विचारों का प्रसार समान रूप से होना चाहिये। आकाशवाणी द्वारा ऐसे प्रेरणादायक विचारों के प्रसार से समाज के सभी वर्गों का नैतिक उत्थान होगा और जीवन गुणवान हो सकेगा। जहां तक अखिल भारतीय गुरुद्वारा विधेयक की बात है, इस सम्बन्ध में हमारा स्पष्ट मत है कि अपने धर्म स्थानों के प्रबन्ध में सभी सम्प्रदाय स्वतंत्र रहें, सरकार किसी सम्प्रदाय विशेष की प्रार्थना पर भी इसमें हाथ न डाले, परन्तु सरकार धर्म स्थानों को अपराधियों के संरक्षण के अड्डे न बनने दे और यदि किसी धर्म स्थान के प्रबन्धक लिखित मांग करने पर भी अपराधी को पेश न करें तो पुलिस धर्म स्थान में प्रवेश करके अपराधियों को गिरफ्तार करले।

धर्म युद्ध की बात बहुत पुरानी हो चुकी, यह मध्यकालीन युग की बात थी, जब सम्प्रदायों के नाम पर लम्बे युद्ध लड़े जाते थे। अपने पड़ोसी तथा खून के रिश्ते से भाई के अधिकारों को हड़पना पाप है, ऐसे पापी कर्म के लिए संघर्ष करना 'धर्म युद्ध' न होकर 'पाप युद्ध' ही कहलाएगा।

सिख संसार के कोने कोने में फैले हैं और प्रगतिशील लोग हैं। मासूम सिख जनसाधारण की भावनाओं को भड़का कर कृपाण की लम्बाई पर संघर्ष छेड़ना, परमाणु युग में अप्रांसगिक है। बाहरी कर्म काण्ड को गलत महत्त्व देकर जनसाधारण को महान् गुरुओं द्वारा धर्म के मर्म के सम्बन्ध में दिये उपदेशों से दूर ले जाना है और इससे स्वय महान् गुरुओं का भी असम्मान होता है। जेल में जाकर सत्याग्रही शराब और अफीम के लिए झगड़ा करें और गुरुओं का नाम लेकर धर्म युद्ध की बात करें, इससे क्या वे धर्म का तथा गुरुओं का सम्मान कर रहे हैं? विज्ञान के इस युग में यदि धर्म को जीवित रहना है तो अपनी मान्यताओं को तर्क संगत बनाकर उनको विश्व रूप देना होगा। विश्व के दो तिहाई मानव आज भूख कुपोषण बीमारी तथा अज्ञानता का शिकार है और ऐसे लोगों की संख्या भारत मे सबसे अधिक है। समय की मांग तो यह है कि सभी धर्मों के लोग अपने साधनों को इकट्ठा करके मिलकर इन दुःखी मानवों की पीड़ाओं को कम करने का प्रयास करें। धर्म का मर्म तो करुणा और भ्रातृभाव है। साम्प्रदायिकता जो मनुष्य को मनुष्य से लड़ाकर भाईचारा समाप्त करती है, वह धर्म के मूल पर प्रहार करती है, इससे बड़ा पाप और क्या हो सकता है। पंजाब के मामले को लेकर ही हम साम्प्रदायिक नेताओं की भूमिका देखें। यहां सभी सम्प्रदायों के लोग अपने अपने सम्प्रदाय के लिए खतरे का बावेला करते हैं। हरयाणा के १५ लाख अहीर, गूजर, जाट, राजपूत, ब्राह्मण, सैनी, खत्री हिन्दू ही तो हैं और ३ लाख मेव भी मुसलमान हैं तथा इतनी सख्या में सिख किसान भी तो सिख हैं, परन्तु इन किसानों को सिंचाई के पानी से वंचित करने की बात से किसी भी सम्प्रदाय को खतरा महसूस नहीं होरहा। सच्चाई तो यह है कि साम्प्रदायिक लोगों को जनसाधारण के हित से मतलब नहीं, उनका उद्देश्य तो इन सम्प्रदायों को लड़ाने में और घृणा तथा वैमनस्य की आग लगाकर उसमें अपनी रोटी सेकना है। इसलिए मैं अकालियों की तथाकथित धार्मिक मांगों को धार्मिक न कहकर साम्प्रदायिक मांगें ही कहूंगा।

अकालियों की राजनैतिक मांगें—

पंजाब के सभी दल और वर्ग राजनैतिक मांगों के मामले में अकालियों से आ जुड़े हैं। इसके कारणों में मैं नहीं जाऊंगा मैं उन

तर्कों पर अपने विचार दूंगा, जो अकालियों तथा उनके समर्थकों द्वारा अपनी मांगों के पक्ष में दिए जाते हैं।

चण्डीगढ़—

चण्डीगढ पंजाब को दिये जाने के बारे में वे केवल दो तर्क ढूंढ पाये हैं, परन्तु शाह कमीशन द्वारा दी गई रिपोर्ट को नजर अन्दाज कर रहे हैं।

(अ) चण्डीगढ पंजाब के लिए बना था।

(ब) 'महान् पंजाबी कहलाने वाले लोग कहते हैं कि चण्डीगढ पंजाब को दिए जाने से देश के विभाजन के समय के घाव भर जायेंगे।

(अ) चण्डीगढ पूर्वी पंजाब की राजधानी बटवारे के बाद बनी। १९५६ में अकालियों ने 'क्षेत्रीय फार्मूला' मंजूर कर लिया था और अपना विलय कांग्रेस में करके अकाली दल को केवल सांस्कृति संस्था मान लिया था। २४ अक्तूबर १९५६ की अपनी बैठक में भारत के गृह मन्त्री द्वारा बनाई गई समिति जिसमें ज्ञानी करतारसिंह अकालियों के प्रतिनिधि के रूप में शामिल थे, यह निर्णय किया कि चण्डीगढ शहर दोनों क्षेत्रों से बाहर रहेगा और उस पर दोनों क्षेत्रों का संयुक्त अधिकार होगा। चण्डीगढ को संयुक्त अधिकार का क्षेत्र मानने के लिए चण्डीगढ से पूर्व की ओर का गांव मनीमाजरा हिन्दी क्षेत्र में रहेगा और पश्चिम की ओर लगता हुआ गाव पंजाबी क्षेत्र में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'जैल चण्डीमन्दिर और जैल मुबारिकपुर का भाग हिन्दी क्षेत्र में शामिल किये गये'। १९६५ में अकाल तख्त पर हुई अकालियों तथा हरयाणा के प्रतिनिधियों की बैठक में १९५६ के निर्णय पर मुहर लगाई गई। उसके फलस्वरूप चण्डीगढ को संयुक्त अधिकार का क्षेत्र माना गया।

(ब) २० अक्तूबर को तथाकथित २० 'महान पंजाबियों' ने कहा कि चण्डीगढ पंजाब को दिये जाने से देश के विभाजन के समय विस्थापित हुए लोगों के घाव भर जायेंगे। वे शायद जरूर जानते हैं कि आज के पंजाब और हरयाणा में आकर बसने वाले विस्थापित की संख्या लगभग बराबर है। फिर केवल पंजाब को चण्डीगढ दिये जाने से दोनों के घाव (हरयाणा में बसे लोगों के घाव) कैसे भर सकेंगे, वे तो चंडीगढ के चमत्कारी छूमन्त्र से वंचित रह जायेंगे। चण्डीगढ के निवासी कहते हैं कि यदि चण्डीगढ पंजाब में चला गया तो उनके घाव हरे हो जायेंगे, उनमें से खून टपकने लगेगा। अब चण्डीगढ के निवासियों की बात ठीक मानें या दिल्ली की अट्टालिकाओं में बैठे महान पंजाबियों की। प्रधान मन्त्री ने अपने निर्णय के द्वारा चण्डीगढ पंजाब को देने के लिए कोई दलील नहीं दी, और न ही उसके औचित्य के बारे में कहा। शाहकमीशन ने अपने रिपोर्ट के अनुच्छेद १२९ में लम्बी दलीलें देकर अनुच्छेद १३० में सिफारिश की 'इसलिए हम यह सिफारिश करते हैं कि खरड़ तहसील जिसमें चण्डीगढ राजधानी शामिल है उसका विलय हिन्दी भाषी राज्य में कर दिया जाये'।

फाजिल्का अबोहर का क्षेत्र—

भारत के गृहमन्त्री द्वारा बनाई गई समिति के सदस्य के नाते ज्ञानी करतारसिंह ने १०५ गांव और दो कस्बे हिन्दी भाषी मान लिये, परन्तु उन्होंने थोड़े समय पूर्व फाजिल्का तहसील से निकाले हुए मुक्तसर तहसील के कंदूखेड़ा ग्राम के बीच में आने से हरयाणा और फाजिल्का अबोहर के सम्बन्ध के तार के टूटने की बात कही। हमारा पक्ष यह था कि पुनर्गठन भाषा के आधार पर होना है, इसलिए मुख्य बात यह नहीं होनी चाहिए। उस गांव के लोगों की भाषा एक महत्वपूर्ण बात होने के कारण इस जांच का काम हमारी प्रार्थना पर पं० गोविन्दवल्लभ पन्त ने अपने उपर लिया। ग्राम कन्दूखेड़ा के पंचायत के चुने हुए सरपंच तथा पंचों और नम्बरदारों को बुलाया गया। उन्होंने अपने आने तथा बसने का सब इतिहास सुनाया। ज्ञानी करतारसिंह ने अन्त में इस बात को मान लिया कि कन्दूखेड़ा निस्सन्देह हिन्दी भाषी है, इसलिए २४ अक्तूबर १९५६ की समिति की सिफारिश में स्पष्ट रूप से लिखा गया कि कन्दूखेड़ा भी हिन्दी क्षेत्र में रहेगा। १९५६ के क्षेत्रीय फार्मूले को मानने पर भारत के संविधान में क्षेत्रीय समितियों का प्रावधान किया गया। क्योंकि विधान सभा में चुने गये सदस्यों को अपने अपने क्षेत्र की समिति में बैठना था इसलिए विधान सभा के क्षेत्रों के बनाते समय आयोग के लिए जरूरी होगया कि एक ही भाषा के बोलने वाले लोगों के क्षेत्र को विधान सभा का हल्का बनाया जाये। गृह मन्त्रालय के इस आदेश का पालन करते हुए हल्काबन्दी आयोग ने अपने १९५६ के आदेश में कन्दूखेड़ा ग्राम को तहसील मुक्तसर से निकालकर हिन्दी भाषी होने के नाते अबोहर विधान सभा हल्के में शामिल किया।

२९ फरवरी १९७० का प्रधान मन्त्री का निर्णय २४ अक्तूबर १९५६ की सिफारिश पर आधारित है। निर्णय का प्रारूप बनाने में सरदार स्वर्णसिंह जी का भी हाथ था, उन्होंने भौगोलिक तारतम्य को बनाये रखने के लिए मुक्तसर तहसील का कन्दूखेड़ा गांव न देकर उस गांव की सीमाओं के अन्तर्गत एक फर्लांग चौड़ा रास्ता दिया। निस्सन्देह यह एक शरारत पूर्ण चाल थी। कन्दूखेड़ा हिन्दी भाषी है फिर भौगोलिक तारतम्य कैसे टूटता है यह तो हमें कोई समझाये।

१९६५ में सन्त फतेहसिंह ने फिर से पंजाबी सूबे की मांग उठाई और अम्बाला जिला, पानीपत छोड़कर करनाल जिला आदि बहुत से हिन्दी भाषी क्षेत्रों को पंजाबी सूबे के नक्शे में शामिल कर लिया। साथ ही क्योंकि हम भी

हरयाणा राज्य की मांग करते थे, इसलिए हमारा समर्थन भी मांगा। हमने उनको २४ अक्तूबर १९५६ के फंसले की याद दिलाई जिसमें उनके प्रतिनिधि शामिल थे। उन्होने प्रान्तों की सीमाओं के लिए २४ अक्तूबर १९५६ के फंसले को मानने का वचन दिया। बार बार मुकरने के कारण मेरा विश्वास नही जमता था इसलिए मैंने ये सब बातें और फंसले अकाल तख्त पर बैठकर करने को कहा। अकाल तख्त पर बैठक हुई जिसमें हरयाणा और अकालियों के प्रतिनिधि शामिल हुए और ९ वर्ष पुराने १९५६ के फंसले पर संयुक्त समिति की मोहर लग गई।

दिसम्बर १९६९ में सन्त फतेहसिंह ने चण्डीगढ पजाब को न दिये जाने पर आत्मदाह की धमकी दी। शाह कमीशन ने चण्डीगढ हरयाणा को दिया था, इसलिए हरयाणा के लोग भी मैदान में आ गये और समानान्तर प्रदर्शन चलने लगे। दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में एक दिन स० हरकिशनसिंह सुरजीत और स० सोहनसिंह बस्सी, राजस्व मन्त्री पंजाब सरकार तथा सन्त फतेहसिंह जी की ओर से प्रस्ताव (Offer) लेकर आये थे कि यदि हरयाणा के नेता पजाब को चण्डीगढ देना मान लें तो अकाली दल १९५६ के निर्णय के आधार पर फाजिल्का अबोहर हरयाणा को दे देगा। संघर्ष चलता रहा, यह बात प्रधान मन्त्री तक मैंने पहुंचा दी, उन्होने श्री उमाशंकर दीक्षित द्वारा इसकी सच्चाई की जांच करवाई। श्री दीक्षित ने सरदार हरकिशनसिंह सुरजीत से मेरे सामने सब मालूम करके सन्तोष व्यक्त किया। इन्हीं बातों के आधार पर अन्त में प्रधान मन्त्री ने फाजिल्का अबोहर क्षेत्र हरयाणा को दिये। जब प्रधान मन्त्री का निर्णय घोषित किया गया तो अकालियों ने पंजाब में दीवाली मनाई। हरयाणा के नवयुवकों ने प्रतिकार किया और अनेक नवयुवक पुलिस की गोलियों का शिकार हुए। उस समय के अकाली मुख्य मन्त्री सरदार गुरनामसिंह ने इस निर्णय को अपनी सरकार की ओर से स्वीकार किया।

सरदार दरबारासिंह और कुछ अकाली नेता समाचार पत्रों में कई बार कह चुके कि हरयाणा के लोग फाजिल्का अबोहर क्षेत्र का कुछ हिस्सा, और बाकी हिस्से के बदले मे पटियाला जिले के लालडू, बस्सी इलाके के गांव तथा जाखल सुनाम से लगते हुए संगरूर जिले के गांव ले लें। लालडू बस्सी क्षेत्र के गाँव और संगरूर जिले के ३५ गांव हिन्दी भाषी हैं और शाह कमीशन के सामने १९६६ में इन ग्रामों की मांग हरयाणा की ओर से की गई थी। यह खुशी की बात है कि अकालियों ने भी इन इलाकों को हिन्दी भाषी मान लिया है। अबोहर फाजिल्का के १०५ गाव और दो कस्बे तो वे हर बार हिन्दी भाषी मानते रहे हैं। किसी भी हिन्दी भाषी क्षेत्र का और विशेष रूप से फाजिल्का अबोहर क्षेत्र का कोई सौदा नहीं हो सकता। वे सभी इलाके जिनको अकाली हिन्दी भाषी मान चुके हैं उनको किसी आयोग के समक्ष रखने की जरुरत नहीं, वे सबके सब ऊपरलिखित क्षेत्र तुरन्त हरयाणा में मिला दिये जावे।

सरदार दरबारासिंह मुख्य मन्त्री पजाब तथा अकाली १९८१ की जनगणना का सहारा लेकर फाजिल्का अबोहर के क्षेत्र को पंजाबी भाषी सिद्ध करना चाहते हैं। पंजाब के साम्प्रदायिक नेता हिन्दू और सिख दोनों ही अपने अपने कारणों से हिन्दी भाषी क्षेत्रों को पंजाब में ले जाने के प्रयास में जुटे हैं। हिन्दू नेता तो पंजाब में हिन्दुओं की संख्या बढाने के लिए यह सब कुछ कर रहे हैं। अकालियों की यह मान्यता है कि हिन्दुओं की संख्या कितनी है यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्व इस बात का है कि राज्य में सुविधा से शासन चलाने के लिए सिख विधायकों की कितनी संख्या चुनकर आ सकती है। वह संख्या पूरी हो जाए तो उन्हें कोई चिन्ता नहीं। श्री यज्ञदत्त शर्मा ने १९८१ में हिन्दुओं से यह अपील की कि वे अपनी भाषा पंजाबी लिखवायें। सिखों ने तो इसके लिए जोर लगना ही था। दोनों मिल गये, और गणकों की छुट्टी हो गई उन्होने मनमाने ढंग से सब ग्रामीण लोगों की अपने आप पंजाबी भाषा लिख दी। इस प्रकार की जनगणना की कोई विश्वसनीयता हो सकती है क्या? १९६१ में जनसंघ के नेताओं ने पंजाबी क्षेत्र के हिन्दुओं को अपनी भाषा हिन्दी तथा हिन्दी क्षेत्र के हिन्दुओं को अपनी भाषा पंजाबी लिखवाने को कहा ताकि सारा पंजाब और दोनो क्षेत्र द्विभाषी साबित हो जायें और महा पजाब बना रहे। इसका भंडाफोड़ मैंने जोरों से किया और वे अपने मिशन में सफल नहीं हो सके। इसलिए १९६१ की जनगणना की विश्वसनीयता १९८१ की अपेक्षा कई गुणा अधिक है। पंजाब के पुनर्गठन के लिए भी क्योंकि १९६१ की जनगणना ही अन्तिम थी इसलिए उसका महत्त्व है।

अनुच्छेद १०८ (शाह कमीशन रिपोर्ट) फाजिल्का तहसील सम्बन्धी—

१९६१ की जनगणना के अनुसार पूरी फाजिल्का तहसील मे हिन्दी भाषी लोगों की संख्या ६७.६ % बनती है। इस तहसील के दक्षिण भाग मे बसे लोगो की भाषा बागड़ी है, इन लोगो की रस्म रिवाज और जीवन शैली बाकी फिरोजपुर जिले के लोगो से बिल्कुल भिन्न है।

हालाकि फाजिल्का तहसील के १०५ ग्रामो और २ कस्बो की अलग से जनसख्या का विवरण उपलब्ध नहीं है, परन्तु तहसील का दो तिहाई भाग होने के नाते बाकी एक तिहाई की मुख्य भाषा पजाबी होने के कारण इन ग्रामों की ८० से ९० % लोगो की भाषा हिन्दी है। क्या मेरे पजाब के भाई यह चाहते है कि राज्यों की सीमायें प्रत्येक जनगणना के बाद बदली जाया करें। यदि नही तो १९८१ की जनगणना की क्या प्रासगिकता है?

चण्डीगढ तथा फाजिल्का अबोहर क्षत्रों का फैसला जुड़ा हुआ कैसे?

प्रधान मन्त्री के १९७० के निर्णय के अनुसार चण्डीगढ पंजाब को और फाजिल्का अबोहर हरयाणा को अन्तिम रूप से दिया गया था। दूसरे इलाकों से सम्बन्धित हरयाणा पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश की मांगो पर विचार करने के लिए आयोग का गठन होना था। चन्डीगढ पंजाब को ५ वर्ष के बाद देना था, तथा फाजिल्का अबोहर क्षेत्र आयोग द्वारा दूसरे क्षेत्रो का निर्णय होने पैर दिया जाना था। हुआ यह कि न तो आयोग का गठन हुआ और न ही ५ वर्ष के चण्डीगढ हरयाणा को मिला। आज स्थिति वही है जो २९ जनवरी १९७० को थी। राजधानी बदलने में तो आज से नई राजधानी बनाने का काम आरम्भ हो तो ५ साल लगेंगे ही। चण्डीगढ का हस्तातरण तो १९८८ तक ही सम्भव हो सकेगा। परन्तु फाजिल्का अबोहर का इलाका हरयाणा का सौपने में तो केवल पंजाब के सरकारी कर्मचारियो को हरयाणा के कर्मचारियो को केवल सब कागज आदि सभलवाने हैं। इस काम मे तो दो चार दिन ही लग सकते हैं। दूसरे इलाको के लिए गठित आयोग २ या ३ महीने मे अपनी रिपोर्ट दे सकता है। शाह कमीशन को तो ७ सप्ताह ही लगे थे। जैसे ही रिपोर्ट आये उसी समय फाजिल्का अबोहर आदि क्षेत्रो का हस्तांतरण तुरन्त किया जा सकता है, ५ वर्ष तक प्रतीक्षा नही करनी पड़ेगी। प्रधान मन्त्री के निर्णय की यही व्याख्या हो सकती है। इसके अतिरिक्त कोई व्याख्या ठीक तभी हो सकती है जब हरयाणा को फाजिल्का अबोहर देने की नीयत न हो। अकाली अपनी नीयत साफ नही रखते और सब कुछ कहकर बदल जाते है। प्रधान मन्त्री समान रूप से पजाब और हरयाणा को चण्डीगढ तथा फाजिल्का अबोहर हृदय से देना चाहती हैं।

रावी व्यास का पानी संवैधानिक तथा कानूनी स्थिति—

सविधान की सप्तम अनुसूचि की सूचि १, लेखी नं० ५६ के अनुसार केन्द्र को अधिकार है कि वह उस सीमा तक अन्तर्राज्यिक नदियों और नदी दूनो का विनियमन और विकास जिसहद तक संघ के नियत्रणमें वैसे विनियमन और विकास को संसद् विधि द्वारा लोक हित के लिए इष्ट कर घोषित करे।

ससद् द्वारा पारित पजाब पुनर्गठन कानून १९६६ की धारा ७८(१) के अनुसार यदि पंजाब और हरयाणा रावी व्यास के पानी के बटवारे

का सहमति से निर्णय न कर पायें तो भारत सरकार इस मामले का निर्णय करेगी। पंजाब और हरयाणा की सरकारें २ वर्ष की अवधि में परस्पर कोई फैसला नहीं कर पाई, इसलिए कानून के अनुसार हरयाणा ने १६६८ में भारत सरकार के पास इस सम्बन्ध में प्रार्थना पत्र दे दिया।

हरयाणा का पानी में हिस्सा—

यह सब जानते हैं कि हरयाणा में रेतीले तथा सूखे से प्रभावित होने वाले अनेक क्षेत्र हैं और वहां पर सिंचाई का विकास पंजाब की अपेक्षा बहुत कम हो पाया है। पंजाब के पास भूमि के नीचे ६० लाख एकड़ फुट के लगभग मीठा पानी है, परन्तु हरयाणा में भूमि के नीचे मीठा खेती योग्य पानी केवल ४० लाख एकड़ के लगभग ही है। पंजाब में ऊपर बारी दोआब और सरहिन्द नहरों पर १००० एकड़ के लिए ३.५ क्यूसेक पानी मिलता है जबकि हरयाणा को भाखड़ा की नहरों पर केवल २.७ क्यूसेक पानी और पश्चिमी यमुना नहर पर केवल १.६ क्यूसेक पानी मिलता है। विश्व बैंक के पास हमारे प्रतिनिधियों ने यही कहा था कि सतलुज व्यास और रावी तीनों नदियों के पानी का पूरा उपयोग राजस्थान और हरयाणा के रेतीले और सूखाग्रस्त इलाकों में हो जायेगा। पंजाब का सिंचाई बिजली मन्त्री होने के नाते मुझे निजी-तौर पर इसकी जानकारी है। यह एक बहुत बड़ा तर्क था जिसके आधार पर भारत को तीन नदियां दी गई।

पंजाब की रामकिशन सरकार ने हरयाणा विकास समिति का गठन पं० श्रीराम शर्मा की अध्यक्षता में किया था, मैं भी उसका सदस्य था। उस समिति ने नदियों के पानी तथा भूमि के नीचे पानी का पूरा हिसाब लगाया और पंजाब हरयाणा को कितना कितना पानी उस समय मिल रहा था उसका भी हिसाब लगाया और हरयाणा को पंजाब जैसी पानी की सुविधायें देनी हों तो इस समिति की सिफारिश के अनुसार करीब करीब सारा रावी व्यास का ७० लाख एकड़ फुट पानी दिया जाना चाहिये। उसी सरकार ने १६६५ में श्री वाही चीफ इन्जीनियर सिंचाई विभाग की अध्यक्षता में खाद्य समिति (Food Committee) का गठन किया। उसने फसलों के आधार पर वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया और सिफारिश की कि हरयाणा के इलाकों को ४५ लाख ६० हजार एकड़ फुट पानी दिया जाना चाहिए। भारत के सिंचाई मन्त्री के नाते डा० के० एल० राव ने कई बार इसका अध्ययन करवाया और मित्रा समिति से भी रिपोर्ट मांगी। सभी अध्ययनों के फलस्वरूप हरयाणा को ५४% से ६० प्रतिशत तक रावी व्यास का पानी दिये जाने की सिफारिश की।

२४ मार्च १६७६ का निर्णय

हरयाणा के लिए सिंचाई की अधिक आवश्यकता स्वीकार करते हुए भी भारत सरकार ने हरयाणा को ३५ लाख एकड़ फुट पानी और बाकी पानी में से पंजाब को अधिक से अधिक ३५ लाख एकड़ फुट पानी दिया। अधिक पानी उपलब्ध होने पर हरयाणा को अपने हक के अनुपात से अतिरिक्त भी पानी मिलेगा। ऊपर लिखे सभी आंकड़े और दलीलें देकर मैंने २५ मार्च १६७६ को लोकसभा के अपने भाषण में इस फैसले का विरोध किया। पानी का मामला ८ साल से भारत सरकार के पास पड़ा हुआ था। इस डर से कि कहीं यह मामला और न अटक जाये, क्योंकि एक दिन देर होने से लाखों रुपये की हानि थी और नहर के निर्माण का खर्च समय के साथ साथ बढ़ता जायेगा, हरयाणा के सभी साथियों ने इस फैसले को स्वीकार कर लिया। १६७६ में ज्ञानी जैलसिंह मुख्य मन्त्री पंजाब ने नहर की खुदाई के लिए हरयाणा सरकार से १ करोड़ रुपया लिया और १६७८ में स० प्रकाशसिंह बादल ने भी १ करोड़ रुपया और लिया तथा मई १६७८ में अपने हाथों से नहर की खुदाई का उद्घाटन करने की घोषणा की, लेकिन दोनों में से किसी ने भी नहर की खुदाई का काम शुरु नहीं किया।

दिसम्बर १६८१ का करार एक आत्म समर्पण—

अकालियों ने १६८१ में आमना आन्दोलन प्रारम्भ किया और सतलुज यमुनालिंक नहर की खुदाई को आन्दोलन का मुख्य मुद्दा बनाया। अकालियों के दबाव के सामने झुककर ही पंजाब हरयाणा व राजस्थान के मुख्य मन्त्रियों ने इस करार पर हस्ताक्षर किये। इस करार की भारी कीमत हरयाणा को चुकानी पड़ी। हरयाणा के मुख्य मन्त्री ने रावी व्यास में मिलने वाला अतिरिक्त पानी पंजाब को सौंप दिया। पंजाब का हिस्सा ३५ लाख एकड़ फुट से नहीं बढ़ना था, वह बढ़कर ४२ लाख २० हजार एकड़ फुट हो गया और हरयाणा का हिस्सा वहीं ३५ लाख एकड़ रहा। राजस्थान नहर के अधूरा रहने के कारण राजस्थान अपने पूरे पानी का उपयोग नहीं कर रहा, उसका बचा हुआ पानी भी पंजाब को ही दिया जायेगा। नहर की खुदाई का काम प्रधान मन्त्री ने अप्रैल १६८२ में अपने कर-कमलों से आरम्भ किया। वह काम अब रुका हुआ है, और राष्ट्र का बहुमूल्य साधन (मीठा पानी) पाकिस्तान में जा रहा है। इसी पानी के लिए भारत सरकार पाकिस्तान को १०० करोड़ रुपये से अधिक दे चुकी, तथा १६६० के नदियों के पानी से सम्बन्धित भारत पाक समझौते के अनुसार ३१ मार्च १६७० के बाद तीनों नदियों के पानी का पूरा उपयोग करने का अधिकार मिल गया था। केन्द्रीय सिंचाई मन्त्रालय किस प्रकार की देख-रेख और प्रबोधन नहर को खुदाई के काम में कर रहा है यह बात नहीं जाने। तीनों नदियों के पूरे पानी का उपयोग भारत कर सके इसके लिए इस नहर का शीघ्र बनना देश के हित में है। जो लोग इस काम को रोकना या लटकाना चाहते हैं वे देश विरोधी काम कर रहे हैं। नहर का काम द्रुतगति से चलाना आरम्भ करने के बाद ही पानी के बटवारे के बारे में न्याय करवाने की बात कही जा सकती है। हरयाणा के साथ बटवारे में भी अन्याय हुआ और नहर न खुदने के कारण प्रतिदिन २० लाख से अधिक का घाटा हो रहा है।

हैडवर्क्स का नियन्त्रण—

पंजाब पुनर्गठन कानून १६६६ में यह प्रावधान किया गया था कि रोपड़ फिरोजपुर तथा हरीके हैडवर्क्स का नियन्त्रण भाखड़ा प्रबन्ध बोर्ड के पास रहेगा ताकि पंजाब हरयाणा तथा राजस्थान को अपने हिस्से का पानी पूरा मिलता रहे। व्यास योजना पूरी होने पर उस बोर्ड का नाम भाखड़ा व्यास प्रबन्ध बोर्ड हो गया। अब नियन्त्रण इस बोर्ड के हाथों में जाना चाहिए, क्योंकि यह एक निष्पक्ष बोर्ड होगा, जिसके अध्यक्ष भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी होंगे और पंजाब हरयाणा और राजस्थान का एक प्रतिनिधि भी इसमें रहेगा। पंजाब १६ वर्ष से इन हैडवर्क्स पर कब्जा पाये हुए हैं और दूसरे भी ऐसे बिन्दु हैं जहां से पानी का बटवारा होता है उन सब का नियन्त्रण एकदम भाखड़ा व्यास प्रबन्ध बोर्ड के पास जाना चाहिये। पंजाब द्वारा संसद से पारित कानून की अवहेलना किसी भी बहाने से नहीं होनी चाहिए। हरयाणा और राजस्थान को जब पानी जरूरत की है अपने हिस्से का पूरा पानी न मिलने से प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये की हानि होती है। यह सीना जोरी तुरन्त समाप्त की जानी चाहिए।

बिजली के हिस्से का भी अन्तिम निर्णय आवश्यक—

बिजली के बटवारे का मामला अभी तक अन्तिम रूप से निर्णित नहीं हुआ है, केवल काम चलाऊ और तदर्थ रूप में ही चल रहा है।

भाखड़ा के व्यय के बिजली भाग का ४७ प्रतिशत हरयाणा से ले लिया गया और बिजली केवल साढे ३९ प्रतिशत दी गई। व्यास के द्वारा जो बिजली पैदा हुई उसका इससे भी कम हिस्सा मिला है। खर्च में हिस्सेदारी और लाभ में हिस्सा, किसी हिसाब से होना चाहिए, मनमाने ढंग से नहीं। व्यास से जो बिजली पानी हरयाणा को मिले, वह खर्च की हिस्सेदारी के अनुसार होनी चाहिए। यह फैसला शीघ्र करके बिजली का हिस्सा भी अन्तिम रूप से निश्चित कर देना बहुत आवश्यक है।

भाषा समस्या और सच्चर फार्मूला—

अकाली भाई कुछ दिनों से १९४९ में बने सच्चर फार्मूले की बहुत चर्चा उठा रहे हैं। देश के विभाजन के पश्चात् अकाली दल का विलय कांग्रेस में हो गया। परन्तु जो लोग अकाली दल की टिकट पर चुन कर आये थे, वे मन्त्री मण्डल में पुराने सिख कांग्रेसी नेताओं को रखने के विरुद्ध थे और सिखों का एकमात्र प्रतिनिधि अपने आपको मानते थे। डा० गोपीचन्द भार्गव क्योंकि सरदार प्रतापसिंह कैरों को अपने मन्त्री मण्डल में से निकालने के लिए तैयार नहीं हुए, इसलिए उन्होंने अपना समर्थन श्री भीमसेन सच्चर को दे दिया और श्री सच्चर पूर्वी पंजाब के मुख्यमन्त्री बन गये। श्री सच्चर जब पूरी तरह अकालियों के हाथों में खेलने को तैयार नहीं हुए तो अकालियों ने दोबारा अपना समर्थन डा० भार्गव को देने का गुप्त रूप से फैसला कर लिया। ज्ञानी करतारसिंह पंजाबी भाषा को शिक्षा और शासन में ऊंचा स्थान दिलवाने के लिए अपने फार्मूले को स्वीकृति दोनों से करवा लेना चाहते थे। उन्होंने वही खेल खेला जो पिछले महायुद्ध में अंग्रेजों ने अरब और यहूदियों के साथ खेला। एक घोड़ा दो आदमियों को बेच दिया। श्री सच्चर से कहा यदि वे उनके फार्मूले को सरकारी स्वीकृति दिलवा दें तो उनको मुख्यमन्त्री के रूप में चलाया जायेगा। डा० गोपीचन्द भार्गव उससमय शिक्षा मन्त्री थे, उसको यह वचन दे दिया कि वे फार्मूले को सरकारी स्वीकृति दिलवाने का काम करें, और वह काम पूरा होने पर उनको पुनः मुख्यमन्त्री बना दिया जायेगा। दोनों नेताओं ने अपने अपने समर्थकों से अलग से यह कहकर कि उन्हीं दिनों में कांग्रेस कार्यकारिणी द्वारा भाषा सम्बन्धी निर्णय के आधार पर पंजाब में भी भाषा समस्या का हल और समाधान किया जायेगा। इस आधार पर समर्थन प्राप्त करके भाषा फार्मूला जो बाद में सच्चर फार्मूला कहलाया। श्री सच्चर और डा० भार्गव के हस्ताक्षरों से बन गया। डा० भार्गव १९४९ में पुनः मुख्यमन्त्री बन गये। इस फार्मूले के अनुसार कुछ इलाके पंजाबी भाषी, कुछ हिन्दी भाषी और कुछ द्विभाषी अकाली नेताओं की इच्छा के अनुसार घोषित किये गये। इस फार्मूले के पर प्रकाशन इसका तीव्र विरोध प० ठाकुरदास भार्गव संसद सदस्य तथा राजनैतिक दलों ने किया। उसी के आधार पर आज अकाली कुछ इलाके जो द्विभाषी ठहराये गये, उनके भागों की मांग कर रहे हैं। १९४९ तक देश में द्विभाषी तथा एकभाषी क्षेत्र किन सिद्धान्तों के आधार पर निश्चित किये जायगे, इस बारे में कोई फैसला नहीं हुआ था। अकाली तो पंजाबी भाषी ४% पर भी दूसरी राजभाषा की मांग कर रहे हैं, और उनके अनुसार यदि थोड़े से लोग भी दूसरी भाषा बोलते हों तो द्विभाषी बनाने की मांग करने से नहीं चूकते।

भारत में पहिली बार राज्य पुनर्गठन आयोग ने १९५४-५५ में यह सिद्धान्त बनाया कि किसी क्षेत्र की मुख्य भाषा के अलावा दूसरी भाषा बोलने वालों की संख्या यदि ३० प्रतिशत से अधिक हो, तभी उस क्षेत्र को द्विभाषी कहा जायेगा। राज्य पुनर्गठन आयोग के इस निर्णय को पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुए मुख्य मन्त्रियों के सम्मेलन ने १९६० में अपनी स्वीकृति दी। राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट आने के पश्चात् तथा संविधान द्वारा पंजाब में क्षेत्रीय समितियों बनाने का प्रावधान किये जाने पर ही हिन्दी और पंजाबी क्षेत्रों की सीमाओं के निर्धारण की बात प्रारम्भ हुई। गृहमन्त्री भारत सरकार ने इस कार्य के लिए समिति में ज्ञानी करतारसिंह भी एक सदस्य थे। १९४९ में ज्ञानी करतारसिंह ने ही सच्चर फार्मूला बनवाया था। २४ अक्तूबर १९५६ को सीमाओं के बारे में जो निर्णय किये गये और जिस अकाली दल के प्रतिनिधि के रूप में ज्ञानी करतारसिंह शामिल थे, पंजाबी और हिन्दी क्षेत्रों के सीमाँत का वही फैसला सही फैसला माना जायेगा।

अकाली पंजाबी को हरयाणा की दूसरी राजभाषा बनाने की मांग कर रहे हैं। राज्य पुनर्गठन आयोग ने सिद्धान्त बनाया था कि दूसरी भाषा का दर्जा किसी प्रदेश में दिये जाने के लिए उस भाषा के बोलने वालों की संख्या ३० प्रतिशत से अधिक होनी चाहिये। उस सिद्धान्त के अनुसार पंजाबी को दूसरी भाषा का स्थान देने की बात सोची भी नहीं जा सकती, क्योंकि उसके बोलने वालों की संख्या केवल ४ प्रतिशत है। यदि इस प्रकार थोडे से लोगों की भाषाओं को दूसरी तीसरी राजभाषा बनाया जाने लगा तो सभी राज्य बहुभाषी हो जायेंगे और भाषा के आधार पर जो जनसाधारण की सुविधा के लिए राज्यों का पुनर्गठन किया उसका उद्देश्य ही समाप्त हो जायेगा। राज्यों पर कई भाषाओं में सब काम होने के कारण कई गुणा व्यय बढ जायेगा, तथा कई भाषाओं में काम होने के कारण एक प्रकार से भाषाई अराजकता फैल जायेगी। इसीलिए उर्दू को बिहार की दूसरी राजभाषा बनाने का मैने विरोध किया था। भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए संविधान के अनुच्छेद ३५० में प्रावधान किया गया है, जिसके अनुसार सभी भाषाई अल्पसंख्यकों के बच्चों को उनकी भाषा प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ाई जा सके। वैसे तो अकाली सभी प्रकार के अल्पसंख्यकों की वकालत करते हैं, परन्तु फाजिल्का अबोहर के लोगों को अनुच्छेद ३५० की सुविधा नही दी और कई बार भाषाई अल्पसंख्यक आयोग की राष्ट्रपति को अपनी रिपोर्ट देने के बाद भी न्याय नहीं किया।

अकाली दल के भाई एक शिकायत करते हैं कि हरयाणा सरकार ने कुछ विद्यालियों में दक्षिण भारत की भाषा पढ़ाने का प्रबन्ध किया। हरयाणा सरकार राष्ट्र की एकता के हित में उठाये हुए इस कदम के लिए बधाई की पात्र हैं। दक्षिण भारत की भाषा दूसरी भाषा के रूप में कुछ विद्यालयों में पढाने के निर्णय के लिए मैं भी उत्तरदायी हूं, परन्तु इनकी पृष्ठभूमि में एक घटना है। १९६८ में द्रमुक सरकार ने तामिलनाडू में तीन भाषाई सूत्र को समाप्त किया और दो भाषाई सूत्र अपनाकर हिन्दी का अध्ययन बन्द कर दिया और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के भवन को भी जला दिया। किसी भी स्वैच्छिक संस्था को अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी के प्रसार के लिए कुल व्यय का ७५ प्रतिशत अनुदान रूप में भारत सरकार देती थी। २५ प्रतिशत उनको स्वयं जुटाना पड़ता था। ऐसी विषम अवस्था में उस सभा के लिए यह असम्भव हो गया। मेरे पास शिक्षा मन्त्रालय में भाषा विभाग था। हमने निश्चय किया कि भारत सरकार तामिलनाडू में शत प्रतिशत अनुदान देगी। इस इस पर द्रमुक के नेता बहुत बिगड़े। मैं द्रमुक के नेता श्री अन्नादुराय से मिला। वे मेरी बातें सुनकर लाजवाब हो गये, परन्तु उन्होंने कहा जिस दिन आप तामिल भाषा सिखकर तामिल में मेरे साथ बात करेंगे उस दिन मैं दिन में हिन्दी के अध्यापन का प्रबन्ध कर दूंगा। अन्नादुराय अब संसार में नही रहे, परन्तु उनकी वह बात मेरे कानों में गूंजती रहती है। मैं यह चाहता हूं कि सभी प्रान्तों में पृथक् २ विद्यालयों में भारत की सभी भाषाओं के पढ़ाने का प्रबन्ध हो और प्रत्येक राज्य के सचिवालय में सभी भाषाओं के जानने वाले कर्मचारी रखे जायें ताकि जिस प्रदेश से उनको अपनी भाषा में पत्र आये उसका उत्तर उसी भाषा में में दिया जाये। भारत की सभी भाषायें हमारे राष्ट्र की भाषायें और उन सबको उचित आदर मिलना चाहिये। हरयाणा ने इस दिशा में जो कदम उठाया वह इसलिए नहीं कि वे पंजाबी नहीं पढ़ाना चाहते बल्कि इसलिए कि दूसरी भाषा के रूप में दक्षिण भारत की भाषा भी राष्ट्र के नागरिकों के बीच भावात्मक एकता के लिए पढ़ायेंगे।

हरयाणा ने प्रधान मन्त्री भारत सरकार तथा आयोग सबके निर्णयों को माना है, आज वह उनको लागू करवाना चाहता है। हरयाणा की मांग इसलिए अमान्य नहीं करनी चाहिए कि वह शान्तिप्रिय है। ऐसा करना न सरकार के लिए सम्मानजनक है और न ही राष्ट्र के हित मे है। हरयाणा भिक्षा नहीं मांगता, न्याय मांगता है। न्याय के अनुसार उसे कम मिले तो उसमे सन्तोष करेगा, परन्तु अधिक मिलने का अधिकार होते हुए भी उसका अधिकार अकालियों की धमकियों के कारण उसे न मिले इसको हरयाणा सहन नही करेगा और पूरी शक्ति लगाकर उसका प्रतिकार करेगा। विरोधी दलों के नेता भी वार्ता में शामिल हैं, उनसे भी निवेदन है कि वे राष्ट्र के व्यापक हितों की रक्षा करते हुए हरयाणा के साथ भी न्याय करें।

कायवाही की बैठक पंजाब सरकार

हिन्दी व पंजाबी क्षेत्र निर्धारण हेतु दिनांक २४ अक्तूबर १९५६ को नहर विश्रामगृह देहली कमेटी में हुई

उपस्थित —

१—सरदार प्रतापसिंह कैरों मुख्य मन्त्री पंजाब २—प्रो० शेरसिंह सिंचाई एवं विद्युत मन्त्री पंजाब ३—चौधरी देवीलाल विधायक मुख्य संसदीय सचिव ४—पं० मौलीचन्द्र शर्मा दिल्ली ५—ज्ञानी करतारसिंह सदस्य विधान परिषद् ६—श्री वीरेन्द्र दैनिक प्रताप।

यह प्रसन्नता की बात है कि कमेटी के सभी छः सदस्य हिन्दी तथा पंजाबी क्षेत्र को जिला स्तर के आधार पर बटवारे के लिए एकमत हैं। परन्तु कुछ अपवाद हैं जो कि सदस्यों द्वारा केन्द्रीय सरकार की कमेटी को विचार के लिए प्रस्तुत किए हैं, जिनमे से एक तो यह जिस पर सभी सदस्य एकमत हैं कि संगरूर जिले के जीन्द तथा नरवाना को हिन्दी क्षेत्र में तथा अम्बाला जिले के रोपड़ तथा खरड़ क्षेत्र को पंजाबी क्षेत्र को दिया जाना चाहिए जो बशर्ते की—

१—राजधानी चण्डीगढ परियोजना क्षेत्र दोनों क्षेत्रों से अलग रखा जाए और एक संयुक्त संस्थान के रूप में मुख्य मन्त्री के विशेष दायित्व में छोड़ा जाए जब तक कि यह जनसख्या के आधार पर एक पूर्ण निर्वाचन क्षेत्र न बन जाए तथा इसका प्रतिनिधि पंजाब क्षेत्र की समिति में बैठेगा।

२—कालका तथा शिमला को हिन्दी क्षेत्र में शामिल किया जाए।

३—खरड तहसील के जैल चण्डी मन्दिर तथा जैल मुबारकपुरा के भागों को जो कि हिन्दी क्षेत्र के साथ घनिष्ठ हैं, हिन्दी क्षेत्र में शामिल होने चाहिएं।

४—एक और अपवाद जो कि श्री वीरेन्द्र द्वारा प्रस्तुत किया गया यह है कि कांगड़ा को पंजाबी क्षेत्र में शामिल किया जाना चाहिए।

५—एक और अपवाद जो कि ज्ञानी करतारसिंह, प्रो० शेरसिंह तथा चौधरी देवीलाल द्वारा प्रस्तुत किया यह है कि फाजिल्का का हिन्दी भाषी क्षेत्र तथा सिरसा व फतेहबाद तहसीलों का पंजाबी भाषी क्षेत्र क्रमशः हिन्दी व पंजाबी क्षेत्रों में शामिल किया जाना चाहिए परन्तु वे थाना जलालाबाद तथा थाना फाजिल्का (जैल व कस्बा फाजिल्का को छोड़कर जो कि हिन्दी क्षेत्र में होने चाहिए) को छोड़कर तथा अबोहर पुलिस स्टेशन के जैल चन्दा खेड़ा व जैल कुण्डल को छोड़कर तहसील फाजिल्का हिन्दी क्षेत्र में शामिल करने तहसील मुक्तसर के गाँव कन्दूखेड़ा को कि तहसील सिरसा के लोहगढ तथा फाजिल्का क्षेत्र के साथ लगता है, निसन्देह हिन्दी क्षेत्र में जायेंगे, इस पर सभी एकमत थे। जहां तक सिरसा तथा फतेहबाद तहसील का सम्बन्ध है, तहसील सिरसा की पूर्ण डबवाली जैल, खोखर जैल, जैल रोड़ी, पूर्ण कालांवाली जैल, जैल अलीका तथा फतेहबाद तहसील की जैल रिजरावन व थाना रतिया तथा टोहाना उपतहसील के जैल साफूवास पंजाबी क्षेत्र में जायेंगे।

हस्ता० प्रतापसिंह कैरों
मुख्य मन्त्री पंजाब

२४-१०-१९५६

इसकी एक प्रति निम्न को सूचनार्थ प्रेषित है—

१—प्रो० शेरसिंह, सिंचाई व विद्युत मन्त्री २—चौधरी देवीलाल विधायक मुख्य संसदीय सचिव, ३—ज्ञानी करतारसिंह सदस्य विधान परिषद् ४—श्री वीरेन्द्र दैनिक प्रताप जालन्धर, ५—पंडित मौलीचन्द्र शर्मा जालन्धर।

संसद और विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र की डैलइमिटेशन आर्डर १९५६ का अंश

(३१ मार्च १९५७ तक ठीक हुआ)

फिरोजपुर जिला का क्षेत्र

निर्वाचन क्षेत्र का नाम —अबोहर

निर्वाचन क्षेत्र की सीमा–अबोहर भाग थाना, लाम्बी भाग थाना और फाजिल्का तहसील थाना खुइनसखर थाना को कन्डवाला अमरकोट जैल अबोहर भाग थाना और मुक्तसर तहसील की रोरनवाला भाग जैल लाम्बी भाग के थाना में गांव कन्दूखेड़ा

निर्वाचन क्षेत्र का नाम—फाजिल्का

निर्वाचन क्षेत्र की सीमा–फाजिल्का नगरपालिका फाजिल्का थाना को फाजिल्का जेल और फाजिल्का तहसील का खुइनसखर थाना (कन्डुवाला अमरकोट डोल को छोड़कर)

निर्वाचन क्षेत्र का नाम—मलोट

निर्वाचन क्षेत्र की सीमा–मलोट भाग–कोटभाई थाना (डोडा जल को छोड़कर) मुक्तसर तहसील के लाम्बी भाग थाना (रोरनवाला भाग जैल कन्दुखेड़ा गाव को छोड़कर) और मलोट भाग थाना मुक्तसर भाग थाना और फाजिल्का थाना (फाजिल्का कस्बा और फाजिल्का जैल को छोड़ कर) और फाजिल्का तहसील के जलालाबाद भाग थाना की खुरज और चकशेरवाला भाग जैल

अन्तरंग सभा तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठकें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक २७ फरवरी रविवार को प्रातः ११ बजे तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक उसी दिन दोपहरबाद २ बजे दयानन्द मठ रोहतक में होगी। अतः सम्बन्धित महानुभाव समय पर पधारें।

म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री

आचार्य सुदर्शनदेव दयानन्द पीठ अजमेर में अध्यक्ष नियुक्त



आर्य जगत् को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर एवं गुरुकुल कांगड़ी के यशस्वी एवं विद्वान् स्नातक, सर्वहितकारी आदि पत्रों के सम्पादक तथा राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य की राजस्थान विश्व विद्यालय जयपुर के अन्तर्गत दयानन्द कालेज अजमेर में स्थापित दयानन्द वैदिक शोध पीठ में अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति हुई है। १४-२-८३ को राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक की प्राचार्या प्राध्यापक एवं संस्कृत विभाग की ओर से उनको भावभीनी विदाई दी गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इस नियुक्ति के लिए दयानन्द पीठ दयानन्द कालेज अजमेर के प्रबन्धकों का हार्दिक धन्यवाद करती है व आचार्य जी को हार्दिक बधाई देती है।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा उपमन्त्री

आगामी अंक महात्मा भक्त फूलसिंह विशेषांक होगा

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः

गायत्री मन्त्र की सच्ची महिमा

('सरिता' पाक्षिक के दिसम्बर १९८२, II के आक्षेपों का सप्रमाण उत्तर)

—डा० विश्वबन्धु 'व्यथित' अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी० ए० वी० कालेज अबोहर (पंजाब)

(गतांक से आगे

अब देखिए इस विषय में महर्षि दयानन्द क्या कहते हैं । वेदव्याख्यान की पहली शर्त निश्चित करते हुए उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्पष्ट किया है—

वेदों के व्याख्यान के विषय में ऐसा समझना कि जब तक सत्य प्रमाण, सुतर्क, वेदों के शब्दों का पूर्वापर प्रकरणों, व्याकरण आदि वेदांगों शतपथ आदि ब्राह्मणों पूर्वमीमांसा आदि शास्त्रों और शास्त्रान्तरों का यथावत् बोध न हो, और परमेश्वर का अनुग्रह उत्तम विद्वानों की शिक्षा, उनके संग से पक्षपात छोड़कर आत्मा की शुद्धि न हो तथा महर्षि लोगों के किए व्याख्यान को न देखे, तब तक वेदों के अर्थ का यथावत् प्रकाश मनुष्य के हृदय में नहीं होता । इसीलिए महर्षि यास्क ने भी कहा है—

न हि एष प्रत्यक्षमस्ति अनृषेः अतपसो वा पारोवर्यवित्सु तु वेदितृषु भूयः विद्यः प्रशस्यः भवति । अर्थात् वेद के अर्थ का प्रत्यक्ष करने की दो शर्तें हैं' या तो ईश्वर की अनुकम्पा से ऋषित्व प्राप्त हो, अथवा व्यक्ति कठिन परिश्रम द्वारा समस्त शास्त्र शास्त्रान्तरों और महर्षियों के व्याख्यान की सहायता से उनकी थाह तक पहुंचने का प्रयास करे । इस प्रकार वेद के अर्थों को गहराई जानने के प्रयास में जो विद्वान् जितना गहरा गोता लगाता है, वह भूयोविद्यावान् बनकर उतना ही प्रशंसनीय बन जाता है ।

अब रहा वेदों की गहराई के विषय में स्वयं वेद से स्पष्ट किया गया है—

चत्वारि वाक्परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणाः ये मनीषिणः ।
गुहा त्रीणि निहिता नेंगयन्ति, तुरीयं वाक् मनुष्याः वदन्ति ॥
ऋ० १-२२-१६५

अर्थात् वेद के पदों के अर्थ की गहराई की दृष्टि से चार स्तर हैं। लेकिन उन चारों और उनमें से गहनतम स्तर तक केवल वही वेद के पारंगत विद्वान् पहुँच सकते हैं, जो कठिन अध्यवसायी, स्वाध्यायशील, संयमी सदाचारी, सूक्ष्मदर्शी और मननशील होने से मनीषी या मनस्वी कहलाते हैं । वेदार्थ के इन स्तरों की यह भी विशेषता है कि इनमें से गहन, गहनतर और गहनतम तीन स्तर गुहा में निहित होने से साधारणतया संकेत रहित से प्रतीत होते हैं. और साधारण मनुष्य केवल चौथे (गहराई रहित और सर्वसामान्य) बाहरी स्तर तक पहुंच रखते हैं क्योंकि भाषा का वही स्तर उनकी बोलचाल का विषय होता है ।

स्पष्ट है कि ध्वनिविज्ञान और रूपविज्ञान के अतिरिक्त अर्थविज्ञान और शैली विज्ञान आदि की विस्तृत व्याख्याएं करता हुआ आधुनिक भाषा विज्ञान भी आज तक इतनी गहराई की कल्पना नहीं कर सका, जिसकी ओर इस वेदमन्त्र ने संकेत किया है । इन चारों स्तरों का क्या स्वरूप है ? उन्हें किस नाम से पुकारा जाता है ? उन स्तरों के संप्रेषण और संप्रापण की क्या प्रक्रियाएं हैं ? मानव किन अंगों की सहायता से और किस प्रयत्न से उन स्तरों तक पहुँच सकता है ? उन स्तरों की विभिन्नता का कैसे बोध होता है ? अर्थग्रहण करते समय कैसे उन स्तरों की सीमा रेखाएं पहचानी जाती हैं ? उन स्तरों की व्यापकता, सूक्ष्मता, कालापेक्षा, वेग, गति और प्रभाव को तुलनात्मक रीति से कैसे पहचाना जा सकता है ? अर्थ ग्रहण करते समय हम कैसे जानें कि इन शब्दों में कहां-कहां किस स्तर तक की गहराई है ? इसी आधार पर रचना के मूल्यांकन की कसौटी कैसे निर्मित हो सकती है ? गहनतम स्तर तक जाने से अर्थ के कौन से विशिष्ट स्तर उद्घाटित होते हैं ? उनका प्रत्यक्ष कैसे संभव है? वेद-व्याख्यान में इन स्तरों की जानकारी से कैसे क्या लाभ उठाया जा सकता है ? ऐसा करने से मानवता और मानव का क्या हित सम्पादन हो सकता है ? इत्यादि-२ दर्जनों प्रश्न क्या आज भी उत्तर के प्यासे प्रतीत नहीं होते ?

निश्चित रूप से ये सभी प्रश्न महत्त्वपूर्ण हैं और यह सूचना भी अवश्य चौंकाने वाली है कि भारतीय प्राचीन शास्त्रों और वेदांगों में इनका विस्तृत उत्तर प्राप्य है । लेकिन यहां वह समस्त जानकारी देना इसलिए सम्भव नहीं है कि यह विषय इतना गम्भीर और विस्तृत है कि एक निबन्ध क्या, उसके लिए तो एकाधिक शोध प्रबन्धों का कलेवर भी कम पड़ेगा । इन सब प्रश्नों का युक्तियुक्त उत्तर देते हुए इन पंक्तियों के लेखक ने इसी आधार पर वेद अलौकिकता और अनुपमेयता अपनी पूर्व चर्चित पुस्तक वेदार्थ प्रक्रिया में सिद्ध की हैं. और दर्जनों युक्तियों के आधार पर इसी गायत्री मन्त्र को सर्वोत्तम प्रमाणित किया है ।

श्री सुरेन्द्रकुमार शर्मा जी में जिज्ञासा जागे तो उनकी सहायता अवश्य की जा सकती है, लेकिन यहाँ तो यही कहना पर्याप्त है कि शर्मा जी ने गायत्री मन्त्र के साधारण अर्थ को भी ठीक से समझा होता तो उनकी सभी शंकाएं निर्मूल हो जातीं । अतः कहना पड़ेगा कि अजायब घर को भीतर से देखने की बात तो दूर रही, वे बेचारे तो भवन पर टंगा बोर्ड भी नहीं पढ़ सके । अतः उनकी सुविधा के लिए पूर्वनिर्दिष्ट अन्वय के अनुसार और उनकी अभिरुचि के अनुसार व्याहृति रहित अर्थ ही दिया जाता है । वह इस प्रकार है—

हम सब इस जगत् के उत्पादक, तेजोमय, दिव्य ऐश्वर्यशाली परमपिता के उन कल्याणमय और तेजस्वी गुणों को अपने जीवन में धारण करें, पहले से प्राप्त गुणों का पोषण करें, जो हमारी शक्ति के अनुकूल होने से हमारे वरेण्य अर्थात् चुनने योग्य हैं, अथवा हम उस सविता और देव परमेश्वर के वरेण्य और कल्याणमय स्वरूप का ध्यान करें जो परम पिता प्रकाशस्वरूप प्रभु हमारी बुद्धियों को प्रेरित करके सन्मार्ग पर लगावे । जैसा कि पहले भी व्याकरणिक शुद्धता प्रतिपादित करते हुए प्रबल प्रमाणों से सिद्ध किया जा चुका है कि भर्गः पद यहां नपुं० लिंग

है, तत् का अन्वय उसी से है। धीमहि पद ध्यै धातु से तो बनता ही है, जिसका अर्थ ध्यान करना है। साथ ही (दुधाञ्) धा से भी बनता है, जिसका अर्थ धारण, पोषण करना है। मेक्डानल ने केवल यही अर्थ माना है, महर्षि दयानन्द ने दोनों माने हैं। सरिता को केवल ध्यान करना मान्य है, लेकिन इस अर्थ में भी लेखक ने व्याकरण की भूल की है। उसने ध्यान करे के स्थान पर ध्यान करते लिखा है, अर्थात् धीमहि में विधिलिङ्ग के स्थान पर लट् मान लिया। कहां तक समझाएं, लौकिक व्याकरण में भी पा० सूत्र १।२।१७ 'स्थाघ्वोरिच्च' के अनुसार ए को ह आदेश विधिलिङ्ग में होता है, लट् में नहीं। अतः दुधाञ् (धा) धारणपोषणयोः आत्मनेपद, उत्तमपुरुष, बहुवचन में दधीमहि बनता है, इसके विपरीत लट् (वर्तमान काल) में दध्महे बनता है। अब इतना तो शर्मा जी जान ही सकते हैं कि इन दोनों से धीमहि किससे मिलता है, दध्महे से या दधीमहि से। अतः धीमहि का यह अर्थ हम गुणों को धारण और परिपुष्ट करें उन्हें भी मानना ही पड़ेगा।

अब यह कहना अनुचित न होगा कि यदि शर्मा जी ने इस मन्त्र का उपर्युक्त साधारण अर्थ भी जान लिया होता, तो उन्हें इतना तो पता चल ही जाता कि इस मन्त्र के अर्थ में करने को इतना कुछ है कि एक जन्म तो क्या अनन्त जन्म पाकर भी कोई साधक इस महान् कर्त्तव्य अथवा करणीय कर्म से मुक्त नहीं हो सकता और न ही इससे श्रेष्ठ किसी अन्य पुनीत कर्म की कोई कल्पना मानवीय जीवन के इतिहास में कर पाना सम्भव है, क्योंकि परमेश्वर के गुणों में से किसी एक गुण को आंशिक रूप से भी अपने जीवन में धारण करने के लिए सारी आयु लगा देने पर ही कुछ बनता है, किन्तु यह कामना बनी रह जाती है कि आयु के कुछ और वर्ष मिले होते तो प्रयोग की सफलता के अतिरिक्त अवसर उपलब्ध हो पाते। ध्यान से देखा जाए तो सभी महापुरुष क्या ऐसे प्रयोग में जुटे नजर नहीं आते? क्या इन सभी महापुरुषों का जीवन ईश्वर के एक एक गुण को प्राप्त करने की साधना का प्रतीक नहीं था? हरिश्चन्द्र की दानशीलता, राम का त्याग, कृष्ण की निष्कामता, बुद्ध की अहिंसा, महावीर की तपस्या, कालीदास का कवित्व; न्यूटन की विज्ञान साधना, महात्मा गांधी का सत्य, ईसा का प्रेम, मुहम्मद की एकता, वेदव्यास की ज्ञान साधना और महर्षि दयानन्द का यज्ञमय जीवन क्या यह प्रमाणित नहीं कर देते कि यदि मानव अपने सत्य पुरुषार्थ से ईश्वर के एक गुण को भी धारण या पुष्ट करने में लग जाए तो वह मानव से महामानव अथवा देवोपम बन जाता है। बल्कि कुछ लोग तो इसीलिए ऐसे महान् साधक को भगवान् कहने लगते हैं।

अब आप ही बताएं कि इससे श्रेष्ठ कौनसे कर्म की कल्पना आपके मस्तिष्क में है?

सर्वहितकारी—साप्ताहिक पढ़िये-पढ़ाइये, १५) शुल्क भेजकर इसके ग्राहक बनिये-बनाइये तथा सर्वहितकारी कार्यों में तत्परतापूर्वक जुट जाइये। —व्यवस्थापक
सर्वहितकारी साप्ताहिक दयानन्दमठ रोहतक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं० 23207/73 पंजि० सं० P/RTK 49   फोन 4...



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह शास्त्री सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह सम्पादक सत्यवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क १३   ७ मार्च १९८३   वार्षिक मूल्य १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

भारत सरकार अकालियों की अनुचित मांगे स्वीकार न करे
हरयाणा में पंजाबी को दूसरी भाषा का दर्जा सहन नहीं होगा

हरयाणा रक्षा वाहिनी की २७-२-८३ की बैठक में पारित प्रस्ताव

१—खेद है कि पंजाब के कांग्रेसी नेता तथा अन्य संस्थाओं के हिन्दू नेता अकालियों की राजनैतिक मांगों का अन्धाधुन्ध समर्थन कर रहे हैं। उनके पास क्योंकि कोई नई बात कहने को नहीं इसीलिए त्रिपक्षीय वार्ता में पंजाब की अन्य हिन्दू संस्थाओं को बुलाये जाने की तथा उनसे परामर्श करने की बात निरर्थक बताई जाती है परन्तु दूसरे प्रदेशों के सभी दलों के लोगों से परामर्श किया गया है। इस दृष्टि में पंजाब की हिन्दू संस्थाओं की बात में वजन तो है कि उन्हें भी आमन्त्रित किया जाना चाहिए। पंजाब का प्रतिनिधित्व तो केवल अकाली दल ही करता रहा है। पंजाब के कांग्रेस जन तथा अन्य संस्थाओं के हिन्दू नेता निर्भीक होकर अपनी बातें कहें तथा हरयाणा और राजस्थान के प्रतिनिधियों से बात करके न्याय पर आधारित हल निकालने में पहल करें।

२—सरदार दरबारासिंह ने रावी ब्यास के पानी के बारे में अकालियों से हट कर बात कही है। उन्होंने यह बात मानी है कि जब तक प्रस्तावित जल ट्रिब्यूनल का फैसला न हो, पुराने फैसले के अनुसार तीनों प्रदेश अपने हिस्से का पानी लेते रहें। ट्रिब्यूनल की बात सोचने से पहले हरयाणा सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई पूरी गति से युद्ध स्तर की जायेगी। यह स्पष्ट आश्वासन पंजाब तथा भारत सरकार से चाहेगा। सरदार दरबारासिंह ने अपनी बात में जो कल के समाचारों में छपी है, नहर की खुदाई का उल्लेख नहीं किया। हरयाणा का २० करोड़ ५० लाख रुपया लेकर भी उनके मन में यह बात क्यों उतरी, यह इस बात का प्रमाण है कि वे इस बात को महत्त्व नहीं देते हैं। सरदार दरबारासिंह और भारत सरकार इस सम्बन्ध में स्पष्ट आश्वासन दें।

३—सरदार दरबारासिंह ने फाजिलका-अबोहर के बदले लाडलूबसो क्षेत्र (जिला पटियाला) तथा सुनाम के साथ लगते संगरूर जिले के कुल मिलाकर ८० गांव देने की बात कही है। सरदार दरबारासिंह यह बात भूल जाते हैं कि प्रधानमन्त्री के १९७० के निर्णय को संशोधित करने का किसी को अधिकार नहीं है। यदि वह निर्णय समाप्त किया जाता है तो हम शाह कमीशन के फैसले से नहीं भाग सकते। उस अवस्था में पंजाब का तो कोई दावा चण्डीगढ पर रहता ही नहीं, चण्डीगढ फिर हरयाणा को मिलना चाहिए। जिन गांवों का जिक्र सरदार दरबारासिंह कर रहे हैं और उनको आयोग के दायरे से बाहर रखने का प्रस्ताव कर रहे हैं। उसके लिए हम उनके आभारी हैं। उन ८० गांवों को तो सबने हिन्दी भाषी मान ही रखा है, अकालियों ने भी श्री चन्द्रजीत यादव के प्रस्ताव के आधार पर इन गांवों को हिन्दी भाषी मान लिया है। फाजिलका अबोहर को तो अकाली नेता १९५६ से १९७० तक चार बार हिन्दी भाषी मान चुके हैं। मानकर मुकरना तो उनका स्वभाव ही है। केवल ८० गांव जो आज देने का प्रस्ताव कर रहे हैं और पंजाब के मुख्यमंत्री भी मान रहे हैं, उनसे किसी समय मुकर सकते हैं। भारत सरकार को चाहिए जिन गांव के बारे में अकाली और दूसरे पंजाब के नेता मान चुके हैं, फाजिलका अबोरह तथा पटियाला और संगरूर जिले के गांव वे हरयाणा को देकर बाकी विवादस्पद गावों का मामला चाहें आयोग को सोंप दें या आपस में बैठकर तय कर लें।

४—हरयाणा चण्डीगढ पंजाब को देने की बात तभी मान सकता है जब फाजिलका अबोहर क्षेत्र हरयाणा को दे दिए जायें। हरयाणा को न तो इस क्षेत्र को बांटा जाना मंजूर है और न ही चण्डीगढ का बांटा जाना स्वीकार है।

५—पंजाबी भाषा को हरयाणा की दूसरी भाषा बनाने की बात कहना ही व्यर्थ है। यह किसी अवस्था में भी सोचने योग्य भी नहीं है, मानना तो दूर की बात है। ४% की भाषा को दूसरी भाषा का दर्जा देने की बात सोचना ही हास्यास्पद है। पंजाब में हिन्दी को दूसरी भाषा के रूप में मान्यता दी जाय। पंजाब में यथाविधि कार्यों में हिन्दी माध्यम की छूट दी जाये। ४८% की हिन्दी भाषा को पंजाब में दूसरी भाषा का दर्जा दिया जाए। सरकारी स्कूलों में पहली कक्षा से ही हिन्दी माध्यम की छात्रों को पढ़ने की छूट हो।

६—हरयाणा रक्षा वाहिनी की मांग है कि सम्प्रदाय निरपेक्ष होने के नाते भारत सरकार अकालियों को साम्प्रदायिक मांगे मनाने से पहले अन्य सम्प्रदायों को भी वही सुविधाएं देने का निर्णय ले ले तथा धर्म स्थानों की पवित्रता की रक्षा के लिए उन्हें अपराधियों की पनाहगाह न बनने दे।

अकालियों की धमकियों के सामने झुककर उनसे कोई समझौता न किया जाये और उनकी हिंसात्मक साम्प्रदायिक तथा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को दृढता से दबाया जाये। यदि अकालियों की धमकियों के कारण कोई भी निर्णय हरयाणा के हितों के विरुद्ध किया गया तो हरयाणा रक्षा वाहिनी हरयाणा के सभी दलों के साथ मिलकर आन्दोलन चलाने के लिए कृत संकल्प हैं।

जिन्होंने अमर बलिदान से हरयाणा का संरक्षण किया—

आर्य तपस्वी नेता परोपकार पुञ्ज महात्मा भक्त फूलसिंह



मास्टर निहालसिंह आर्य

महा तपोधन जगदाचार्य महर्षि दयानन्द देव का तप, त्याग, विद्या योग, परमार्थ तथा राष्ट्रोत्थान का आदर्श जीवन सुधजनों को सश्रद्धा अपनी ओर आकर्षित करता है। उनके सत्संग शिक्षा उपदेश और स्मरण से आर्यसमाज के संगठन में सहस्रों लाखों साधु सन्यासी, विद्वान्, आचार्य और समाज सुधारक बने जिनका धर्म प्रभाव सारे जगत् में फैला। फलतः भारत के सभी प्रान्तों में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार हुआ। प्राचीन भारत के इष्ट देवता हर-हर महादेव शिव के धर्म प्रदेश हरयाणा में भी महर्षि जी के श्रद्धालु भक्त बहुत हुए हैं, क्योंकि यह गोपालक निरामिष भाजी ब्रह्मर्षि देश प्राचीन काल से ही आर्य संस्कृति का अनुगामी रहा है और सर्वखाप पंचायत के संगठन प्रचार से यहां स्वार्थी पौराणिक पण्डे पुजारियों की दाल बहुत कम गली है। गत सौ वर्षों से आर्यसमाज के उत्सवों, सम्मेलनों, जलूसों और आन्दोलनों में हरयाणा के लोग बढ चढकर भाग लेते रहे हैं। भारत के सभी प्रान्तों से अधिक २०-२५ आर्य गुरुकुल भी इसी पदेश में हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आर्यसमाज के महाधन पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द, स्वतन्त्रानन्द, ब्रह्मानन्द, दादा बस्तीराम, भीष्म जी, चौ० छोटूराम और भक्त फूलसिंह जी ने इस प्रदेश का विशेष नेतृत्व एवं रक्षण किया है।

चूंकि हरयाणा के आध्यात्मिक जन नेता भक्त फूलसिंह का पुण्य जन्म दिवस २४ फरवरी १८८५ है इसलिए उनके धर्मध्येय, परोपकार पुंज निष्काम जीवन का स्मरण कर उनके सत्कर्म को कृतज्ञता पूर्वक आगे बढाना हम सबका नैतिक कर्त्तव्य है। वे हमारे आर्य नेता, समाज सुधारक, जीवन प्रहरी प्रेम संगठन के देवता थे। उनका रक्त क्षत्रिय और स्वभाव शान्ति प्रिय ब्राह्मण था। वे दीनों के दुःख में द्रवीभूत हो जाते थे। वे अटूट ईश्वर भक्त और आत्मबल के धनी थे। आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर उन्होंने शेष सारा जीवन जनसेवा और आर्ष गुरुकुल संरक्षण में समर्पण कर दिया।

भक्त जी का जन्म तथा वंश—

आपका जन्म सन् १८८५ ई० में रोहतक मण्डल की गठवाला खाप के माहरा ग्राम में हुआ था। इसी वर्ष एटा जिले के अंग्रेज कलैक्टर ए. ओ. ह्यूम ने आर्यसमाज के विशुद्ध राष्ट्रीय प्रभाव को रोकने के लिए अंग्रेज हितकारिणी कांग्रेस की स्थापना की थी जो १९०५ के बंग-भंग आंदोलन के पश्चात् भारतीय कांग्रेस बनती चली गई। भक्त जी के पिता जी का नाम बाबर और पितामह का नाम चौधरी नेता था। आपके माता पिता भी सद्गृहस्थ धर्मात्मा दयालु थे। अतः आपके रक्त में इन गुणों का आना स्वाभाविक ही था। वंशक्रमानुगत गुण पीढी दर पीढी चलते हैं। भक्त जी के लोकोपकारक जीवन को जानकर इस गठवाला संगठन के एक ऐसे ही स्वदेश भक्त योगी पूर्वज का स्मरण हो गया यहां जिनका संक्षिप्त सा उल्लेख करना प्रासंगिक ही रहेगा। सर्वखाप पंचायत के इतिहास के लेखानुसार सं० १७७ वि० से २२२ विक्रमी तक पुरुषपुर (पेशावर) का प्रसिद्ध राजा कनिष्क बौद्ध मतानुयायी था जिसने कश्मीर में कुण्डल के स्थान पर सं० १९७ वि० में चौथी बौद्ध संगती की थी। इस सम्मेलन में ऋषक तुषार वंश के एक बाल ब्रह्मचारी विद्वान् धर्मात्मा महापुरुष 'लल' भी थे इन्होंने बौद्धमत के प्रचार में बड़ी लगन से दस प्रसिद्ध वंशों का गणतन्त्रीय संगठन करके अपना सारा ही जीवन स्वदेश उत्थान में लगाया था। ये ऊंचे त्यागी तपस्वी महात्मा थे। इस सम्मेलन में इनको सभा प्रधान अश्वघोष और उपप्रधान वसुमित्र ने ५०० पंचों और साधुओं के मध्य 'संगठन कर्त्ता' की उपाधि से अलंकृत किया था और राजा कनिष्क ने इनको ३२१ ग्रामों का जनपद देकर गजानन्दी (गजनी) का शासन प्रबन्ध सौंपकर सम्मान किया था फिर यह गण सं० १००७ वि० में हांसी हिसार के पास आ गया और पृथ्वीराज चौहाण की सहायता में सर्व पंचायती मल्ल दल में मिलकर कुतुबुद्दीन से युद्ध किया। वहां से वीर जटवाना के वंशज हुलाराम के नाम पर रोहतक गोहाना के पास हुलाणा, भैंसवाल, खानपुर, मदीना आदि ग्रामों की खाप (जनपद) बसाई। 'संठगनकर्त्ता' से ही 'गठवाला' नाम प्रचलित हुआ।

महात्मा लल के संगठन धर्मानुष्ठान तथा लोक कल्याण की इसी पावन परम्परा में इसी गठवाला खाप के माहरा ग्राम में दीनदयालु फूलसिंह ने जन्म लेकर उसी सन्मार्ग का अनुगमन कर जनसेवा से 'भक्त' की लोक पदवी प्राप्त की। उनमें सच्चरित्र एवं ईश्वर विश्वास का अदम्य आत्मबल था जिसके बल पर वे गोरक्षा, दलित उद्धार, झगड़े, वैर के निवारण, आर्ष गुरुकुल संस्थापन आदि महान् उद्देश्यों की पूर्ति में सफल हुए। वे जनता के सच्चे हितैषी, धर्माचार्य आध्यात्मिक आर्य नेता थे। आर्यसमाज के पत्रों तथा विद्वानों द्वारा भक्त जी के पुरुषार्थमय जीवन को सुनने समझने के बहुत सुअवसर मिलते रहे हैं। वे अतिधैर्यवान् कष्ट सहिष्णु तथा उदार हृदय थे। अपने संकल्प की पूर्ति में जान तक को बाजी लगा देते थे। अतः शत्रु भी उनके पैरों में गिरकर क्षमा याचना सहित आत्मसुधार कर लेते थे।

आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के संचालक—

पूज्य भक्त जी बहुत कुशल पटवारी थे। युवा होने पर आपको आर्यसमाज का सुयोग मिला। दिन प्रतिदिन वैदिक विद्या का रंग चढता गया। आर्य उत्सवों में निष्ठा सहित भाग लेने लगे। आर्य संन्यासियों के सत्संग से आपके पूर्व जन्म संस्कार जागृत हो उठे और अपनी सारी भूमि आर्यसमाज को दान देकर सन् १९१९ में भैंसवाल ग्राम में गुरुकुल की स्थापना भी कर दी और सारा समय इसी के लिए प्रबन्ध में लगे रहते थे। दृढ संकल्प लेकर कई वर्ष निरन्तर ग्राम-ग्राम में घूमकर भवन निर्माण तथा छात्रों के लिए विपुल धन राशि एकत्रित की। श्रद्धालुजन भी आपको पूरा सहयोग देते रहे और गुरुकुल सुन्दर रूप से चलता रहा।

[शेष ५ पर]

सम्पादकीय

अतिमान ही पराभव का मुख

संसार के समक्ष दो इतिहास उपस्थित हैं, एक धर्म की विशेषता धारण किये मनुष्यों का तथा दूसरा मानव देहधारी राक्षसों का। रामायण को देखिये— अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र राज्य रूपी आहुति किसके मुंह में डाली जाए। राम कहते हैं भरत के मुख में और भरत कहते हैं राम के मुख में। परिणामस्वरूप राज्य सभी का हो जाता है और अनन्त काल तक समाज के लिए आदर्श बनकर अपने पिता को अमर कर देते हैं। इसके विपरीत एक दूसरा उदाहरण भी है भारत के ही मुगल सम्राट् शाहजहां का। उसके भी चार लड़के थे और भारतवर्ष का बड़ा साम्राज्य था। आपा-धापी का शिकार होकर चारों ने उसे हड़पने का यत्न किया। चारों ने अपने अपने मुंह में आहुतियां डाली तो शतपथ ब्राह्मण की यह मान्यता कि— 'अतिमान पराभव का मुख है' सत्य सिद्ध हो गई। न केवल चारों पुत्र ही नष्ट हुये, मुगलराज्य की श्री-सम्पदा सदा के लिए लुप्त हो गई और मानव जाति के इतिहास में एक दूषित उदाहरण शेष रह गया।

स्त्री और धर्मानुसार सम्मिलन का नाम विवाह है और विवाह के उद्देश्यों में से मुख्य है सन्तान-निर्माण द्वारा संसार चक्र को गतिशील रखने में सहयोग करना। निर्माण का अर्थ केवल पति पत्नी द्वारा पुत्र अथवा पुत्री को जन्म देकर माता पिता नाम धरा लेना ही नहीं, बल्कि उसको मनु का धर्म धारण करने वाला मनुष्य बनाना है। पुत्र शब्द के अर्थों से विचार करने से यह तथ्य स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है कि हर बच्चा जो उत्पन्न होता है, पुत्र कहलाने के योग्य नहीं है। बेटे के लिए संस्कृत में अनेक पर्यायवाची शब्द हैं जैसे—तनयः अपत्यं, सूनुः, प्रजा, तुक्, तोक, तोवम, तवम, शेषः, अप्नः गयः, जाः यहुः, नपात् तथा बीजम् आदि। परन्तु पुत्र का एक विशेष अर्थ है। निरुक्त कर्त्ता आचार्य यास्क के अनुसार 'पुत्+त्र' अर्थात् नरक से बचाने वाला 'पुत्र' है। पुत् नाम नरक का है, उससे जो त्राण दिलाये, तारे, पार करे, वही तो पुत्र हो सकता है। मनु के अनुसार—

> पुंनाम्नो नरकाद् यस्मात् त्रायते पितरं सुतः।
> तस्मात् पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंभुवा:॥

यही पुत्र की परिभाषा है। यहां यह बात भली-भांति जान लेने योग्य है कि लड़के और लड़कियां तथा उनके भी लड़के और लड़कियां पुत्र के अन्तर्गत आते है।

नरक-त्राण भी तो मनुष्य के लिए एक समस्या है जिस पर विचार किये बिना कई उल्टी-सूधी परम्पराएं जन्म लेने लगती हैं। मानव समाज के एक वर्ग विशेष ने तो नरक को एक स्थान विशेष माना है जहां पापी लोग जाते हैं और यदि पुत्र हुत पितरों का श्राद्ध-तर्पण कर देता है तो उसके पितर नरक से छूटकर स्वर्ग चले जाते हैं। सत्य-सनातन और प्राचीन भारतीय कही जाने वाली वैदिक संस्कृति के कर्म और उस के फल के सिद्धान्त के यह बात सर्वथा विरुद्ध है। कोई भी मनुष्य एक ही जन्म में पूर्ण विकास या परम पद को प्राप्त नहीं हो जाता। जन्म-जन्मान्तर का अभ्यास इसके लिए जरुरी है और यह पुनर्जन्म के द्वारा ही होता है। अतः स्पष्ट है कि जो आज बाप है वह कल बेटा होगा। आज जिसको अगली पीढ़ी कहते हैं, कल वह पिछली हो जाएगी। इस प्रकार हर अगली पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा का भार पिछली पीढ़ी पर आता जाएगा। यह पिता पुत्र का सम्बन्ध जो आदि काल से प्रवाह-चक्र के समान चला आ रहा है इसमें यदि वर्तमान पीढ़ी ने अपनी सुरक्षित संस्कृति अपनी सन्तान के हाथ में जो भावी पीढ़ी है सौंपकर उसे समुन्नत न किया तो वर्तमान पीढ़ी का न तो यही जन्म समुन्नत हो पायेगा और न ही अगला जन्म समुन्नत हो सकेगा। इस प्रकार दोहरे परिणाम भुगतने पड़ेंगे। हां, यदि वर्तमान पीढ़ी अपनी सन्तान को दाय-भाग में दी जाने वाली सबसे बड़ी सम्पत्ति जो कोई पिता अपने पुत्र को दे सकता है, दे तो यह क्रम अनवरत रूप से चलता रहकर नरक त्राण का उचित माध्यम बन सकता है। उत्तम विरासत को पाकर पुत्र मां-बाप की सेवा करेगा, उनकी आज्ञा का पालन करेगा। इससे माता पिता को दुःख रूप नरक से त्राण छुटकारा मिलेगा और पुत्र भी दाय भाग में मिली इस सम्पत्ति को पिता के ही पुत्र रूप में उसके घर जन्म लेकर उसके पिता हो जाने पर पुनः वह विरासत उसे सौंप देगा जिससे आज के पिता का कल पुत्र रूपी भावी जीवन भी नरक से दूर अर्थात् स्वर्ग का जीवन बन सकेगा। क्रम के सतत चलते रहने से मनुष्य को नरक से दूर हटकर स्वर्ग को नहीं जाना होगा प्रत्युत् उत्तम सन्तान को पाकर स्वर्ग मनुष्य के समीप आता चला जायेगा।

किन्तु बड़े ही खेद का विषय है कि आज कहां है वह संस्कृति और कहां हैं उसके मानने वाले अर्थात् विरासत रूप में उसे पाकर दायित्व पूर्ण उसे भावी पीढ़ी को सौंपने वाले? यही तो कारण है कि वर्तमान पीढ़ी के पास बहुत कुछ है, पर फिर भी जीवन नारकीय है और पुत्र या सन्तान कही जाने वाली भावी पीढ़ी के पास अपने मा बाप को नरक से बचाने का कोई उपाय भी नहीं है बल्कि इतना ही नहीं, अपितु इसके विपरीत पुत्र माता पिता को नरक में धकेलते जा रहे हैं। शिक्षा का विस्तार होता जा रहा है। विज्ञान के आविष्कार बढ़ते जा रहे हैं किन्तु साथ ही साथ स्वर्ग भी लुप्त हो चला जा रहा है। दीक्षा विहीन शिक्षा का अर्थ पढ़-लिखकर नौकरी करते हुए अपने (संकुचित अर्थ में) लिये ही सुख की सामग्री एकत्रित कर लेना रह गया है। हर आहुति शाहजहां के पुत्रों की भांति अपने ही मुंह में जा रही है। परिणाम चहुँ दिशि दुःख हैं, भय हैं, त्राहि-त्राहि की ध्वनि है। ऐसे में किसी शायर के शब्दों में भारतीय संस्कृति का तो स्पष्ट अभिमत है कि—

> हम वो कुल किताब काबिले जब्ती समझते हैं।
> कि जिन्हें पढ़कर के बेटे बाप को खब्ती समझते हैं॥

तब क्या हम—

> क्या कहें साहब हमारे कारे नुमाया कर गये।
> बी. ए. किया नौकर हुए, पेंशन मिली और मर गये॥
> की दुखद परम्परा को आगे ही आगे बढ़ाते जाएंगे?

प्रत्येक मनुष्य को यह सदा स्मरण रखना चाहिये कि व्यक्ति तो मर जाते हैं किन्तु संस्कृतियां बनी रहती हैं। इतिहास के उदाहरण रूप में प्रस्तुत उपरोक्त दो पृष्ठ इसकी साक्षी हैं। कुलों की सन्तति, राज्यों की सन्तति, धन-सम्पत्ति की सन्तति से कहीं मूल्य वाली है संस्कृति की सन्तति। इसी सन्तति को चिरस्थायी बनाने के हेतु मनुष्य सन्तान चाहता है। संस्कृति की सन्तति मुख्य विरासत है; वही साध्य है। सन्तान उस सन्तति का साधन ही है जिसे अनवरत गति प्रदान करना वैसे तो प्रत्येक युग के मनुष्य का धर्म रहा है किन्तु इस युग तो उसके लिए इसका महत्त्व और भी अधिक है और इस ऊढ़-गुरु भार का बिना समुचित निर्वाह किये अतिमान से तो पराभव का मुख ही देखना पड़ेगा।

रणवीर शास्त्री
सह. सम्पादक

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म—उद्देश्य एवं विधेय विचार

वेदपाल एम० ए० रिसर्च स्कालर दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ

यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में आये 'श्रेष्ठतमाय कर्मणे' मन्त्रांश के अर्थ प्रसंग में शतपथकार भगवान् याज्ञवल्क्य ने "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" वचन का उल्लेख किया है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार इस प्रथम याजुष मन्त्र का निनियोग दर्श याग में किया गया है। अत: 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' का सम्बन्ध विनियोज्य दर्श याग के साथ होने से 'श्रेष्ठतमाय कर्मणे' का अर्थ 'दर्श नामकाय' हो होगा। यह धारणा मध्यकालीन याज्ञिक व्याख्याकरों को तथा तदनुकरण परायण कुछ आधुनिक विद्वानों की है। परन्तु याज्ञिक प्रक्रिया के विनियोग प्रपच से उन्मुक्त व्याख्याकार (स्वामी दयानन्द प्रभृति) श्रेष्ठतम कर्म का अर्थ उत्तोत्तम कर्म मानते हैं। यज्ञ शब्द का अर्थ भी ये व्याख्याकार श्रेष्ठतम कर्म में ही लेते हैं। दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में सम्पन्न वेद गोष्ठी में डा० अभयदेव शर्मा (अजमेर) ने अपने लेख में इस प्रकार के व्याख्याकारों को उद्देश्य एवं विधेय ज्ञान शून्यता के कटघरे में खड़े कर के उनकी पर्याप्त आलोचना की है तथा इस प्रकार के अर्थ को सरासर बेईमानी का फतवा भी दिया है।

आयातत: प० अभयदेव शर्मा का दृष्टिकोण यथार्थता के नजदीक तथा शतपथानुकूल प्रतीत होता है परन्तु स्वामी दयानन्द आलोच्यमान मन्त्र के भावार्थ में स्पष्ट 'श्रेष्ठ तमाभि: क्रियाभि: सयुक्तै र्भवितव्यम्' लिखकर अपना यही अभिप्राय व्यक्त किया है कि श्रेष्ठतम कर्म का अर्थ उन्तमोत्तम कर्म ग्रहण करना ही युक्त है तथा 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' इस शतपथ वचन का यही तात्पर्य स्वामी दयानन्द ने सम्भवत: ग्रहण किया है कि यज्ञ शब्द साहित्य में श्रेष्ठतम कर्मो का ही अभिव्यंजक है। इस प्रकार शतपथकार महर्षि याज्ञवल्क्य (जो वेदार्थ के विषय में सर्वथा प्रामाणिक आचार्य है) तथा वर्तमानयुगीन वेदार्थ वेत्ता महर्षि दयानन्द के मन्त्रार्थ में विभिन्न स्पष्ट प्रतीत होता। स्वामी दयानन्द के ऋषित्व पर आस्थाहीन विद्वान् स्वामी दयानन्द के इस प्रकार शतपथ विरोधी लगने वाले वेदार्थ को भ्रामक एवं अप्रबुद्ध लोगों को अपने वाग् जाल में फसाने वाला है यह घोषणा करने में नहीं हिचकिचाते, परन्तु जिस स्वामी दयानन्द ने अपने भाष्य को शतपथानुकूल होने की महती घोषणा की है तथा जिनके भाष्य में प्रत्येक मन्त्र की व्याख्या के अन्त में शतपथ व्याख्यान का संकेत किया है क्या उसे यज्ञो वे श्रेठतमम् में उद्देश्य तथा विधेय क्या है यह ज्ञात नहीं था? वैदिक साहित्य का सतत अध्येता व ऋषि वचनों पर अनन्य श्रद्धावान्, सत्य का महान् प्रवक्ता दयानन्द जनता को भ्रमित करने जैसा जघन्य कर्म करने का साहस कर सकता यह कोई द्वेष धूमाभिभूत व्यक्ति ही सोच सकता है।

वास्तविकता तो यह है कि ये उद्देश्य एवं विधेय के ज्ञानी शतपथ में व्याख्यात यज्ञों के यथार्थ स्वरूप को समझने में कुछ भी श्रम नहीं करते अपने पल्लव ग्राही पाण्डित्य के आधार पर इन पण्डित मानियों ने दर्शपौर्णमास आदि यज्ञों को मात्र एक कर्म काण्डीय प्रक्रिया विशेष समझा हुआ है। अत: इनके मस्तिष्क में यह भी एक धारणा है कि वैदिक मन्त्रों की रचना इन्हीं यज्ञीय विधियों की पूर्त्यर्थ की गई है तथा विधि पूर्वक किया गया यह कर्म काण्ड ही स्वर्गादि फल का देने वाला है।

इनकी यह धारणा शतपथकार के सर्वथा विपरीत है। यदि केवल मात्र विधिपूर्वक किया गया दर्श पौर्ण मासादि कर्म ही अभ्युदय का जनक होता तो शतपथकार क्रियमाण क्रियाओं की उपपत्तियां क्यों देते तथा अनेक अस्पष्ट मन्त्रार्थ को स्पष्ट क्यों करते और स्पष्टार्थ मन्त्रों के विषय में 'नात्र तिरोहितमिवास्ति' इत्यादि को लिखते। शतपथकार के इन निर्देशों से सुस्पष्ट है कि मन्त्रार्थ तथा क्रियमाण क्रिया को प्रयोजनीयता के ज्ञान के बिना केवल दर्शपौर्ण का अनुष्ठान किसी विशेष फल का जनक नहीं है।



सच तो यह है कि दर्शपौर्णादि यज्ञो के द्वारा जन्म से लेकर मरण पर्यन्त क्रियमाण श्रेष्ठकर्मों का बोध कराया गया है। वर्तमान जीवन का प्रारम्भ मातृगर्भ से होता है। उत्तम सन्तान पाने के लिए पति पत्नी को क्या क्या तैयारी करनी चाहिए तथा किन किन उत्तम संस्कारों को अपने आत्मा में पति पत्नी प्रतिष्ठित करें जिससे जायमान बालक सुसंस्कार युक्त होकर पैदा हो यह विद्या दर्श याग के द्वारा याज्ञिक ऋषियों ने प्रत्यक्ष क्रियाओं द्वारा स्पष्ट की है जो कि याजुष मन्त्रों के शब्दों में निहित है। यजुर्वेद के प्रतिपाद्य विषय पर ध्यान देने से तथा मन्त्र भाग पर विचार करने से विस्पष्ट होता है कि यजुर्वेद में मानव जीवन के प्रारम्भ से लेकर मरण पर्यन्त अनुष्ठेय कर्मों का विधान है। मानव का चरम प्राप्तव्य मोक्ष प्राप्ति की विद्या भी याजुष संहिता के अन्तिम अध्याय में प्रतिपादित की गई है। इससे स्पष्ट है कि यजुर्वेद के प्रारम्भिक दो अध्यायों में जिनका दर्श पौर्ण याग में महर्षि याज्ञवल्क्य ने विनियोग किया है मानव जीवन के प्रथम वय: के लिए अनुष्ठेय कर्मों का विधान है। मानव के प्राथमिक जीवन में पड़े शुभ या अशुभ संस्कार कितने प्रभावी हैं इसके बताने की कोई आवश्यकता नहीं है। गृहस्थ यदि उत्तम सन्तान नहीं पाता तो उसका सब ऐश्वर्य निरर्थक ही है। गृहस्थ जीवन का सर्वोत्तम कर्म उत्तम सन्तान तैयार करना है व्यपदेश भी अपेक्षा कृत होते हैं।

[क्रमश:]

चौ० माडूसिंह जी का सन्देश



चौ० माडूसिंह मलिक

प्रिय सम्पादक महोदय

सप्रेम नमस्ते

सर्वहितकारी का भक्त फूलसिंह विशेषांक पढ़कर प्रसन्नता हुई। हरयाणा प्रान्त के शान्तमना महात्मा के जीवन की झांकी को समस्त आर्यजनों तक पहुंचने का यह अत्यन्त उत्तम प्रयास है। मैं भी इस शुभ अवसर पर भक्त जी के प्रेमियों की सेवा में यह निवेदन करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ कि हमारी साधारण सभा ने भी फरवरी १९८५ में भक्त जी की जन्म शताब्दी मनाने का निर्णय लिया है जिसका विधिवत् उद्घाटन ब्र० कर्मपाल ने १३-२-८३ को किया है। इन दो वर्ष के मध्य, भक्त जी ने जहां-जहां अपने जीवन में व्रत किए थे, उन स्थानों पर उत्सवों का आयोजन किया जावेगा। रोहतक नगर में भी ऐसा आयोजन होगा। मैं सभी आर्यजनों से और विशेषकर उन व्यक्तियों से जो भक्त जी के सम्पर्क में कभी न कभी रहे हैं, इस प्रकार के आयोजन करने का तथा करवाने की अपील करता हूं और इस विशेषांक की सफलता की कामना करता हूं।

माडूसिंह मलिक

प्रधान-भक्त फूलसिंह जन्म शताब्दी आयोजन समिति

धर्म तुम्हारा खो गया है कहां?

पानी को न लाओ, जमीन को न लाओ
अपने स्वार्थों के बीच में
भाषा सब हैं प्रेम की
योरा न जाए मस्तिष्कों के बीच में

मदारी बनकर तुमने मजमा जमा लिया
गुरुद्वारों को तुमने मैदान बना लिया
मांग कर तुमने अनुचित मांगें
स्वयं को राष्ट्र में नंगा किया

धर्म तुम्हारा खो गया है कहां
आदर्श तुम्हारा सो गया है कहा
बन्दूक और तलवारें अब हैं कहां
दाल-रोटीयां सब खो गई हैं कहा

सुविधाओं का तुम बना रहे कुआ
मानव को आशाओं के खण्डहर
न तुम्हारा है कोई आदर्श
न तुम्हें है धर्म का डर

अब सरकार उलझ गई है
तुम्हारी अनुचित मांगों की डोर में
उत्तर भी प्रश्न बनते जा रहे हैं
तुम्हारे राजनैतिक स्वार्थों के शोर में

सत्य भारत सांवरिया
अध्यक्ष—मानव अधिकार संघर्ष समिति
सन्त रविदास कालौनी रोहतक

(२ का शेष)

फिर कन्याओं की शिक्षा की अनुभव करके सन् १९३२ में खानपुर ग्राम में कन्या गुरुकुल भी खोल दिया। इन दोनों गुरुकुलों में से कई सौ स्नातक, स्नातिकाएं बनकर आर्यसमाज और संस्कृत की सेवा कर रहे हैं। गुरुकुल खानपुर की आचार्या तो भक्त जी की धन्य पुत्री सुभाषिणी जी ही हैं। आर्य महोपदेशक पं० बस्तीराम और स्वामी नित्यानन्द जी ने भी इन गुरुकुलों को बहुत सहयोग दिया है।

दोनों के दुःखहर्त्ता और लोपोकारी—

भक्त जी कम शिक्षित थे परन्तु उन्होंने अपना सर्वस्व परोपकार में न्योछावर कर दिया। वे दीन दुखियों के कष्टों को अपना समझकर उनकी सहायता में हर प्रयत्न करते थे। आप दुराचारियों, दुष्टों और रिश्वत खोरों के लिए बहुत उग्र भी थे। एक बार गुरुकुल स्थापना से पूर्व वीर युवकों का जत्था बनाकर सम्भालका ग्राम में बनते हुए हत्थे को बलपूर्वक रोक दिया था। एक बार जूआं ग्राम में एक सप्ताह पर्यन्त अनशन करके वहां के वासियों को प्रभावित करके नहर पर पुल का निर्माण करा दिया। वे छुआछूत जाति-पाति की दलदल से घृणा करते और मनुष्यमात्र को समान समझते थे। एक बार उन्होंने अपने पटवार के ग्राम उरलाना में रहते दुर्भिक्ष के कारण असमर्थ रांघड़ों का भूमि लगान भी स्वयं अदा कर दिया। जिले हिसार के मोठ ग्राम में वहां के रांघड़ दीन हरिजन चमारों के लिए कुआं बनाने में प्रबल बाधक थे। भक्त जी ने वहां पहुँचकर १५-२० दिन के अनशन से कृशकाय होकर दुष्टों को भी झुका दिया वहां बड़े बड़े नेता गए और वह कुआं बनवाकर ही छोड़ा। आपकी पंचायती न्याय शक्ति में बहुत श्रद्धा थी जिससे अनेक समाज सुधार और पारस्परिक कलह झगड़ों को निर्णीत कराया। पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द, स्वतन्त्रानन्द, चौ० छोटूराम और दादा बस्तीराम ने भी आपको बहुत सहयोग दिया।

हैदराबाद, लोहारू सत्याग्रह यज्ञ के होता—

सन् १९३९ में हैदराबाद में निजाम के अत्याचारों के विरुद्ध स्वामी स्वतन्त्रानन्द के नेतृत्व में चलाए गए सत्याग्रह में भक्त जी भी अपना जत्था लेकर गए। मार्ग में रोहतक के मुसलमानों ने निर्दयता से इन पर लाठी बरसाई परन्तु आप धैर्य पूर्वक चोट सहन करके हैदराबाद पहुँचे। और पूर्ण सफलता प्राप्त करके आए। सन् १९४१ में लोहारू के नवाब द्वारा आर्यसमाज और हिन्दुओं पर किए गए अत्याचारों को रोकने के लिए आर्यों के उत्सव और जलूस में भक्त जी भी गए थे। वहां नवाबी पुलिस ने आर्यों पर निर्ममता से लाठियां बरसाई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द को और आपको गम्भीर चोटें आई। रक्तधारा बह गई। दोनों महानुभावों का उपचार दिल्ली में कराया गया। इस प्रकार मोठ ग्राम में हरिजनों का जलकूप बनवाने, हैदराबाद सत्याग्रह और लोहारू काड से आपकी धवलकीर्ति सारे आर्यजगत् में फैल गई।

भक्त जी की छोटी सुपुत्री मुजफ्फर नगर जिले के चेयरमेन चौ० बलवन्तसिंह के साथ ब्याही गई हैं। वे भी बहुत सुयोग्य शिष्ट और समाज सेवी सज्जन हैं। मैं भी उनसे शिशौली, सौरम के जलसों में और मुजफ्फर नगर में सप्रेम मिला हूं। इस समय राष्ट्र का विघटन करने वाले अकालियों की हठधर्मी के कारण पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द, स्वतन्त्रानन्द, भक्त फूलसिंह और सिद्धान्ती जी की विशेष स्मृति आ रही है। यदि ये होते तो सारे आर्यजनों और हरयाणावासियों का दृढ़ दुर्ग बनाकर समूचे राष्ट्र का न्यायपूर्वक संरक्षण करते। भक्त जी के दो विद्या स्मारक गुरुकुल भैंसवाल और खानपुर बड़ी शान से चल रहे हैं। उनका एक बहुत उत्तम जीवन चरित्र प्रकाशित करना चाहिए और सन् १९८५ में जन्म शताब्दी आर्य समारोह रोहतक में मनाना चाहिए। वे देश धर्म पर अपना बलिदान दे गए।

विनीत श्रद्धालु

निहालसिंह आर्य अध्यापक दिल्ली

आर्यसमाज की गतिविधियां—

आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के उत्सव

गुरुकुल भैंसवाल जिला सोनीपत	११, १२, १३ मार्च
आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी)	,, ,, ,, ,,
आचार्यकुल कन्या विद्यालय लोवाकलां (रोहतक)	,, ,, ,, ,,
दयानन्द मठ रोहतक वार्षिक सत्संग	१४ से २० ,,
गुरुकुल गदपुरी जिला फरीदाबाद	१८ से २० ,,
आर्यसमाज कुड़लान जिला करनाल	,, ,, ,,
,, कारद जिला करनाल	,, ,, ,,
,, साबापुर जिला अम्बाला	,, ,, ,,
,, नगीना जि० गुड़गाँव	,, ,, ,,
गुरुकुल टटेसर (दिल्ली राज्य)	,, ,, ,, ,,
आर्यसमाज विशनपुरा माजरा जिला अम्बाला	१९, २० ,,
,, आहूलाना जिला सोनीपत	२२, २३ ,,
गुरुकुल घरोण्डा जिला करनाल	२५ से २७ ,,
आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द	२५ से २७ ,,
,, प्रेम मोहल्ला तावडू जिला गुड़गांव	२५ से २७ ,,
,, हसनपुर (फरीदाबाद)	२५ से २७ ,,
,, गुन्दयाना (कुरुक्षेत्र)	२५ से २७ ,,
,, मन्धार जिला कुरुक्षेत्र	२७ से २९ ,,

इन उत्सवों पर वैदिक विद्वान् तथा सभा के अधिकारी, उपदेशक एवं भजनोपदेशक प्रचारार्थ पधारेंगे।

जीवनानन्द सरस्वती वेदप्रचाराधिष्ठाता

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शिविर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में दिनांक २२-३-८३ से १०-४-८३ तक डा० देवव्रत आचार्य की देखरेख में एक विशाल शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें योगाभ्यास के अतिरिक्त योग द्वारा चिकित्सा तथा ध्यान एवं समाधि की शिक्षा दी जायेगी। शिविर में भाग लेने वालों की व्यवस्था नियमानुसार होगी। यह शिविर आर्यसमाज के इतिहास का अनुठा अनुभव होगा। अतः इच्छुक महानुभाव तुरन्त सम्पर्क करें। इसी समय ८-९-१० अप्रैल को गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव भी उत्साहपूर्वक मनाया जायेगा। १० अप्रैल को शिविर का समापन समारोह होगा।

धर्मदेव विद्यार्थी
निरीक्षक गुरुकुल कुरुक्षेत्र

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह

३-४-५-६ नवम्बर दीपावली सन् १९८३ को अजमेर में बड़े धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर लाखों नर-नारी गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित करने अजमेर पधारेंगे, अतः आर्य शिक्षण संस्थाएं, आर्य समाजें, आर्य प्रतिनिधि सभाएं, व्यायाम शालाएं आदि इस समारोह को सफल बनाने के लिए अपनी सेवाएं सहर्ष समर्पित करने हेतु अपने नाम अंकित कराएं।

महर्षि दयानन्द की स्मृति स्थायी बनाने हेतु इस अवसर पर—एक भव्य यज्ञशाला, एक विशाल लाइब्रेरी कक्ष, अतिथिशाला एवं दयानन्द-वेद-शोध-संस्थान जिसमें वेद, वैदिक साहित्य के अध्ययन, शोध आदि की व्यवस्था रहेगी— ऋषि उद्यान अजमेर में निर्माण करने की योजना है। इस कार्य में लगभग पच्चीस लाख रुपये व्यय होगा। इन सब कार्यों के लिए आर्य नर-नारी मुक्त हस्त से अधिक से अधिक दान राशि भेजें।

निवेदक
स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती
प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर

वानप्रस्थी आनन्दमुनि द्वारा पानीपत में कब्र पूजा खण्डन



आर्यसमाज के लगनशील तथा उत्साही प्रचारक वानप्रस्थी श्री आनन्दमुनि ने गत मास से पानीपत के कलन्दर चौक जहां मुसलमान पीरों की कब्र बनी हुई है और हिन्दू औरतें उनकी पूजा करती हैं, पर प्रति वीरवार को दोपहर बाद ४ से ६ बजे तक अपने प्रचार द्वारा पीर कब्र पूजा खण्डन का अभियान शुरू कर रखा है। इनके प्रचार से प्रभावित होकर काफी औरतों ने कब्र की पूजा करनी छोड दी है। आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत के कार्यकर्त्ता इस शुभ कार्य में उन्हे सहयोग दे रहे है। उनकी प्रेरणा पर कलन्दर चौक का नाम स्वामी श्रद्धानन्द चौक रख दिया गया है।

आवश्यकता है

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर जो अजमेर में ३-४-५-६ नवम्बर १९८३ को मनाई जावेगी उसके लिए आवश्यकता है—

१—पण्डाल बनाने वाले, बांस बल्ली, डेरे तम्बू, दरियों वाले।
२—हलवाई जो उन तारीखों में हजारों लोगों के भोजन की व्यवस्था कर सकते हैं। भोजन का रेट्स साथ लिखें।
३—बिजली व पानी की फिटिंग करने वाले ठेकेदार।
४—बड़ा लाउडस्पीकर जिसे कम से कम पचास हजार व्यक्ति सुन सकें उसके व्यवस्थापक पत्र व्यवहार करें।
५—हिन्दी अंग्रेजी के शोर्टहैण्ड जानने वाले जो कि समारोह की कार्यवाही नोट कर सकें व टाईप कर सकें।
६— प्रदर्शनी के ठेकेदार जो विभिन्न राज्यों की दुकानें लगवा सके।

ऊपर लिखे कार्यों में जिनको रुचि हो वे निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें व अपनी पूरी जानकारी रेट्स आदि की देवें।

मन्त्री
दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह समिति
केसर गंज, अजमेर

प्रो० रामसिंह के स्वास्थ्य की कामना

सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध आर्य नेता प्रो० रामसिंह जी आजकल अस्वस्थ हैं। गत सप्ताह वे लाजपत नगर नई दिल्ली के एक नरसिंग होम में उपचारार्थ के बाद अब अपने निवास स्थान २३ बीडनपुरा करोलबाग में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। मैं उनसे मिलने के लिए दिल्ली के हस्पताल में गया था। सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य भी ५ मार्च को स्वास्थ्य जानकारी हेतु गये थे। डाक्टरों ने उन्हें कम बोलने का परामर्श दिया है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें शीघ्र स्वस्थ करें ताकि वे पूर्ववत राष्ट्र तथा आर्यसमाज का मार्ग दर्शन करते रहें।

महाशय भरतसिंह सभा मन्त्री

डा० रामनाथ वेदालंकार सम्मानित

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् एवं सुविख्यात लेखक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व आचार्य एवं उपकुलपति, महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ के भूतपूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० रामनाथ वेदालंकार को उत्तर प्रदेश संस्कृत ग्रन्थ अकादमी ने उनकी पुस्तक 'यज्ञ मीमांसा' (अग्निहोत्र दर्पण) पर एक हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया है। अकादमी द्वारा इस पुस्तक को यह पुरस्कार वर्ष १९८१ में प्रकाशित सर्वोत्तम संस्कृत पुस्तक के लिए दिया गया है। डा० वेदालंकार के इस सम्मान से न केवल उन्हीं का वरन् संपूर्ण आर्यजगत् का गौरव बढा है।

निर्वाण शताब्दी वर्ष और हमारा कर्त्तव्य

सोहनलाल शारदा, शाहपुरा जिला भिलवाड़ा (राजस्थान)

आर्यसमाज बीमार हो गया और उसके उपचार के लिए कई विद्वान् विचारक मनीषि विद्वानों ने अपने विचार प्रकट करते हुए आर्य समाजी पत्रों में कई कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। इतना सभी होते हुए भी नई पीढी आर्यसमाज में उल्लेखनीय नहीं आ रही हैं। इसके लिए हमें कुछ कार्यक्रम अपनाना होगा। वह कार्यक्रम है कि जब भगवान् दयानन्द आज से १०० वर्ष पूर्व जब शाहपुरा से प्रस्थान होकर जोधपुर को जाने को तैयारी में थे तब एक प्रश्न के उत्तर में उनके परमभक्त शिष्य राजाधि राजनाहर्षसिंह को कहे थे। उन्होंने कहा था कि नई पीढी को आर्य बनाने के लिए प्रथम आर्यसमाज के नियम १० व्याख्या सहित पढ़ाने को व्यवस्था करना वह पहली कक्षा में, दूसरी कक्षा में यथाविधि उचित समय पर नित्य सन्ध्या यज्ञोपासनविधि अर्थ सहित सिखलाना। तीसरी कक्षा में संस्कारविधिस्थ स्तुति प्रार्थनोसना स्वस्तिवाचनम् शान्तिकरणम् के साथ साथ सामान्य प्रकरण का भी ज्ञान करते हुए व्यवहारभानु आर्योद्देश्य रत्नमाला भी पढ़ाना है। आगे की कक्षाओं में सत्यार्थप्रकाश पढ़ाना है। ताके विद्यार्थी महाविद्वान् बन कर चक्रवर्ती राज्य करते हुए महान् सुख का भोग कर सकें।

इसी प्रथा को शाहपुरा नरेश ने शाहपुरा में अपने विद्यालयों में चालू किया जो उनके पुत्र और पौत्र ने स्वराज्य प्राप्ति तक अर्थात् १९४९ तक बराबर चालू रखा। फल यह हुआ कि शाहपुरा में अब भी कई जगह परिवारों में संध्या यज्ञ नित्य नियमित निरन्तर होते चले आ रहे हैं।

अतः अब भी आर्यसमाज को प्रगति देने के लिए हमारा कर्त्तव्य है कि हम सरल सुबोध पद्धति को अपनाकर प्रत्येक आर्यसमाजों में निम्न कार्य क्रम को चलाने की व्यवस्था करे। प्रत्येक आर्य अपने अपने स्थान पर अपना निजी कार्य अर्थोपार्जन का करता हुआ कम से कम ५ विद्यार्थियों को तो अवश्यमेव तैयार का विचार दृढ कर प्रथम उन्हें आर्यसमाज के दशोनियम व्याख्या सहित पढ़ावे।

पुनः नित्य संध्या यज्ञोपासनविधि सिखलाने की चेष्टा करें। सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास में भी यही आदेश है कि माता पिता आचार्य ५ ८ वर्ष के बालकों को संध्या सिखलायें। सो हमारा कर्त्तव्य है कि इस निर्वाण वर्ष में हम कम से कम बच्चों को जिनकी उम्र ५ से ८ वर्ष तक की हो संध्या हवन के मन्त्र और उनका संक्षेप से अर्थ अवश्य सिखला देवे। जो भी सज्जन आर्य महाशय पढ़ाना चाहें केवल महर्षि कृत ग्रन्थानुसार उन्हीं के शब्दों को सङ्कलन कर जो पुस्तक हमने प्रकाशित की है नित्य संध्या यज्ञोपासनविधि वह मगवा सकते हैं। इस का मुल्य सप्रेम भेंट है तथा डाकखर्च भी हम ही देते हैं।

पुनः संस्कार विधिस्थ ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना स्वस्तिवाचनम् शान्तिकरणम् तथा सामान्य प्रकरण पढ़ाना है ताकि उन्हें बृहद हवन कराने का एवं स्वयं करने का पूर्ण ज्ञान हो जावे। अन्य पुस्तक लेखकों को प्रमाण भाग में नहीं माने केवल भगवान् दयानन्द कृत ग्रन्थ पढ़ाने पर ही सभी समस्या ये हल हो जावेगी। यदि इस पुस्तक को पढ़ा दिया जावे वह भी थोड़ा सा जिसके लिए भगवान् दयानन्द स्वयं आदेश देते हैं कि इतना तो अवश्य पढ़ लेवे। न कि अशुद्ध रट कर मनमाने ढङ्ग से कार्यक्रम करने लग जाये, क्योंके यथाविधि उचित समय पर यज्ञ किया हुआ ही फलदायक होता है। हमारी प्रगति में बाधक अन्य कारणों के साथ साथ यथाविधि संध्यायज्ञ नहीं करना भी है और यथाविधि से तभी हम कर सकेंगे जब हम प्रथम यह विधि पढ़ेंगे पढ़ायेंगे तब।

इतना करने के पश्चात् इन विद्यार्थियों को सत्यार्थप्रकाश का छठा समुल्लास पढ़ाना चाहिए। देश काल परिस्थिति को देखते हुए आज इसकी महति आवश्यकता है। हम देख रहे हैं पाश्चात्य ढंग से शासन करते हुए निरन्तर देश में अराजकता बढ रही है। राक्षसी आसुरी प्रवृतियों को बढावा मिल रहा है। इनसे मुकाबला करने के लिए एक ही रास्ता है हम छठे समुल्लास को बच्चों को पढ़ावें। लेकिन सारे राष्ट्र पर राज्य करने के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। आगे कहा गया है इसी समुल्लास में वेद, मनुस्मृति के ७-८-९ अध्याय महाभारत का शान्ति पर्व का राजधर्म आपद्धर्म एवं शुक्रनोति विदुर प्रजागार को अच्छी प्रकार देखकर यानि पढ़कर, पढाकर पूर्ण राजनीति को धारण कर माण्डलिक अथवा चक्रवर्ती राज्य करे।

यह भी ध्यान अवश्य रखना है कि जैसा आगे वर्णन किया गया है कि यह समझें कि 'वयं प्रजापतेः प्रजा अभूम' यह यजुर्वेद का वचन है। हम प्रजापति अर्थात् परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हम उसके किंकर भृत्यवत् है वह कृपा करके अपनी सृष्टि में हमको राज्याधिकारी करें और हमारे हाथ से अपने न्याय की प्रवृत्ति करावे।

महाराज भरत के समान राज्य करने में समर्थ हो सके। यह सभी तभी हो सकेगा जब हम प्रत्येक आर्य आर्यसमाज मन्दिरों में पढ़ाने का विचार कर देश काल परिस्थिति को देखते हुए कुछ नवयुवक तैयार करने का विचार कर कार्य करने में जुट जाय तभी हमारा शताब्दी समारोह मनाना सफल हो सकेगा।

फार्म-४ सर्वहितकारी सम्बन्धी विवरण

१-प्रकाशन स्थान	सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक
२-प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३-मुद्रक का नाम	वेदव्रत शास्त्री आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द मठ रोहतक
क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
५-सम्पादक का नाम	महाशय भरतसिंह सभा मन्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
६-उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक सांझेदार या हिस्सेदार हों।	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद्दत घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

रक्षा वाहिनी के कार्यक्रम की सराहना

परम आदरणीय प्रो० साहब, नमस्ते।

बहुत इच्छा होते हुए भी मैं आज इस आवश्यक बैठक में सम्मिलित नहीं हो सका। मैं अपनी शुभ कामनायें भेज रहा हूं और न पहुंच सकने की क्षमा प्राप्ति हूं। जो भी निश्चय बैठक में होगा वह मुझे शिरोधार्य होगा। मैं तो एक तुच्छ सेवक के रूप में हर कार्य जो मुझे सौंपा जाएगा करने के लिए तैयार हूं। यदि ऐसी आज्ञा हो तो जेल जाने के लिए भी तैयार हूँ। कम लिखे को ज्यादा समझना। सद्भावना सहित, आपका अपनाती खेमलाल राठी

एडवोकेट उच्चतम न्यायालय नई दिल्ली-५७

श्रीमान् महाशय भरतसिंह जी, सादर नमस्कार।

आपका छपा हुआ सरकुलर पत्र दिनांक १६-२-८२ को मिला जिस को ध्यानपूर्वक पढ़ा, धन्यवाद। २७ तारीख को मुझे शादी में जाना है इसलिए मैं २७ को होने वाली मीटिंग में शामिल नहीं हो सकूंगा। बहरहाल मैं हरयाणा में आपकी संस्था को बधाई दिये बिना नहीं रह सकता कि आप लोग हरयाणा की हकूक की रक्षा के लिए पूरा संघर्ष कर रहे हैं और यह सभी के आपसी सहयोग का नतीजा है कि आज तक अकालियों के सपने साकार नहीं हो सके। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि नतीजा अच्छा ही रहेगा। आपका

चिरंजीलाल शर्मा संसद सदस्य

अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी के आशुलिपिक रखने की मांग

'इण्डियन एक्सप्रैस' के १४ फरवरी १९८३ के अंक में हरयाणा स्टेट बिजली बोर्ड, ३-बायस बिल्डिंग नं० १, २, ३ सैक्टर १७ डी, चण्डीगढ़ का एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है जिसके अनुसार उन्होंने दो दर्जन अंग्रेजी के के आशुलिपिकों से आवेदन पत्र मांगे हैं। आश्चर्य की बात है जबकि हरयाणा की क्षेत्रीय एवं राजभाषा हिन्दी है और उसके आदेशों के अनुसार उसके कार्यालयों में हिन्दी में ही काम कराया जाना आवश्यक है तो भी बोर्ड द्वारा हिन्दी के आशुलिपिक रखे जाने की बजाय अंग्रेजी के आशुलिपिक रखे जा रहे हैं। बिजली बोर्ड के अनेक अधिकारी हृदय से चाहते हैं कि वे हिन्दी में काम करें किन्तु उन्हें अंग्रेजी के ही आशुलिपिक दिए गए हैं और आगे भी धड़ाधड़ अंग्रेजी के ही आशुलिपिक नियुक्त किये जा रहे हैं। यही कारण है कि जनता के साथ सामान्य पत्राचार भी केवल अंग्रेजी में किया जा रहा है। इसका एक दुष्परिणाम यह भी हुआ है कि हरयाणा के जिन युवक और युवतियों ने हिन्दी की स्टेनोग्राफी सीखी है वे बेरोजगार होते जा रहे हैं और उनमें असंतोष बढ़ता जा रहा है। बिजली बोर्ड में अंग्रेजी के वातावरण से हरयाणा की जनता में भी काफी असंतोष है। अतः प्रार्थना है कि तत्काल उक्त विज्ञापन को रद् कराया जाए और अंग्रेजी के आशुलिपिकों के स्थान पर हिन्दी के आशुलिपिक नियुक्त कराए जाएं। भवदीय

रामेश्वरदास गुप्त

महा मन्त्री हिन्दी व्यवहार संगठन

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न 23207/73 रजि० न० P RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह ... सभा मन्त्री, सम्पादक— डा० सुदर्शनदेव आचार्य, ...

वर्ष १० अङ्क १४ १४ मार्च १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

महर्षि दयानन्द का धर्म स्वरूप निरूपण

— [illegible]

महर्षि दयानन्द के जन्म से पूर्व भारत देश में अंग्रेजों का राज्य था। चारों ओर पण्डित लोग अपनी पेट पूर्ति के लिए अनेकों प्रपच करते थे। धर्म और सत्य का लोप होता जा रहा था अधर्म और असत्य की वृद्धि होती जा रही थी, भारतवर्ष की अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी। मूर्ति-पूजा के पाखण्डों का बहुत प्रचार था। अविद्या का अधिक प्रचार था। यज्ञ में अनेकों प्रकार के पशुओं की बलि दी जा रही थी। स्त्रियों की दशा तो अत्यन्त घृणा के योग्य थी। पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल-विवाह इत्यादि कुप्रथाएं थीं। वे न तो वेद शास्त्रों को पढ़ने पढाने में समर्थ थी और न ही उनके लिए समाज में उचित स्थान ही था। जाति प्रथा का प्रचार बहुत प्रबल था। लोग अनेकों प्रकार से ईश्वर को मानते थे। ऐसे समय धर्म के उद्धार के लिए एक महान् आत्मा की आवश्यकता थी, जो इस प्रकार के समस्त दुर्गुणों का उद्धार करे। ऐसे ही समय में उन्नीसवी शताब्दी में महर्षि दयानन्द नाम से एक महात्मा ने टंकारा नगरी में जन्म लिया। जिसने सारे राष्ट्र को आक्रान्त कर दिया।

सर्वप्रथम तो हमें यह विचारना है कि धर्म क्या है। जो वेद शास्त्र में सत्य धर्माचरण की प्रेरणा होती है वह धर्म कहलाता है। वैशेषिक दर्शन में कणाद मुनि ने कहा—

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिःस धर्मः

जहां सांसारिक उन्नति अर्थात् धन, इष्टमित्र, पत्नी, पुत्रादि हैं पारलौकिक सुख वह है जिसको मोक्ष सुख कहते हैं। वह ही धर्म है। मनुस्मृति में भी मनु महाराज ने धर्म के लक्षणों को कितने सुन्दर शब्दों में वर्णित किया है।

धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ॥

दयानन्द ने कहा कि ईश्वर एक है वही बार बार जगत् की सृष्टि पालन और संहार करता है। वह आकार से रहित हैं। इसलिए शारीरिक दुख से वह पृथक् है। ईश्वर सर्वज्ञ वह स्वयंभू एवं सर्वव्यापक हैं। इस संसार में जो कुछ भी चेतन वा जड़ वस्तु है उन सब में ईश्वर निवास करता है। इसलिए ईश्वर का जन्म वा मरण नहीं होता है। वेद में भी कहा है कि ईश्वर का अवतार नहीं होता है। जिसकी महिमा अपरम्पार है, प्रमाण है-

न तस्य प्रतिमास्ति यस्य नाम महद्यशः। यजु० ३-२-३

जिस परमेश्वर का नाम स्मरण कीर्तिकार है। उसकी प्रतिमा अर्थात् परिमाण नहीं है। मूर्ति ईश्वर नहीं है इसलिए उसकी पूजा निरर्थक है।

देवता शब्द के अर्थ होते हैं प्रकाशकर्त्ता तथा सत्योपदेशकर्त्ता। माता पिता आचार्य ये तीन मूर्तिवान् देवता है। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, समूह ये प्रकाश युक्त देवता हैं। जो विद्वान् सत्योपदेश करते हैं वे भी देवता कहे जाते हैं।

यज्ञ के भी तीन अर्थ होते हैं। देव पूजा, दान और संगतिकरण। देव पूजा का अर्थ इस प्रकार है कि जो जो गुण, कर्म, स्वभाव परमेश्वर में है। उसके अनुसार मनुष्य अपना जीवन यापन करे। दान का अर्थ विद्यादान है। संगतिकरण का अर्थ इस प्रकार है कि जो विद्वान् पुरुष हैं उनका आदर सत्कार करके सत्योपदेश से उचित लाभ करना।

प्राचीन काल में गार्गी, मैत्रेयी इत्यादि बहुत सी स्त्रियां विद्वान् थी इसलिए ऋषि दयानन्द ने कहा—नारी तो सब प्राणियों की जीवन दात्री होती है। मनुस्मृति में मनु महाराज ने भी कहा है—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

अर्थात् जहां नारियां पूजी जाती हैं वहां देवता रमण करते हैं। अतः वेदों को पढ़ने पढ़ाने में प्रत्येक प्राणी अधिकार है। उसने कहा कि प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का पुत्र है इसलिए जाति प्रथा व्यर्थ है। अन्यत्र भी कहा है—

गुरोः प्रेतस्यं शिष्यन्तु पितृ मेघ समाचरन,

प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुध्यति।

यह श्लोक महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ-प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में हैं। वे लिखते हैं जब गुरु मृत्यु होवे, तब उसके शव को प्रेत कहते हैं। उसके शिष्य जो उसके मृतक देह को ले जाते हैं, उसको प्रेत-हार कहते हैं और उसे मरे हुए शरीर का अन्त्येष्टि संस्कार हो जाता है, उसको भूत कहते हैं। अर्थात् अमुक नाम का व्यक्ति था। वह आज नहीं है। ये भूत, प्रेत हैं। भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनि, पिशाचनी, शीतला आदि ये सब दुःखदायक प्रेमजाल है। सुख दुःख तो पाप पुण्य का फल होता है। ग्रह तो जड है इसलिए वह न कष्ट देता है न सुख देता है, जन्म पत्र तो शोक पत्र कहलाने योग्य है।

उस महर्षि ने वेद भाष्य किया किया। महर्षि के जन्म से पूर्व अनेकों वेद भाष्यकार थे। वे कहते थे कि जो यज्ञ में पशुओं की बलि देता है वे सब स्वर्ग लोक में जाते हैं। परन्तु ऋषि ने कहा कि अगर इस प्रकार हैं तो यजमान अपने माता पिता को मार कर क्यों नहीं स्वर्ग प्राप्त कर लेते। अतः वेद शास्त्र में भी जीव हिंसा नहीं है जीव हिंसा से ईश्वर प्रसन्न नहीं होता है।

[शेष ५ पर]

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म—उद्देश्य एवं विधेय विचार

वेदपाल एम० ए० रिसर्च स्कालर दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ

(गतांक से आगे

गृहस्थ के लिए जहां श्रेष्ठतम कर्म उत्तम सन्तान पैदा करना है वहां ब्रह्मचारी के लिए श्रेष्ठतम कर्म ज्ञानार्जन करना है तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में मुक्ति पान श्रेष्ठतम कर्म है। इसलिए वैदिक साहित्य में इन सब के लिए यज्ञ का प्रयोग उपलब्ध होता गीता तक में भी यज्ञ शब्द को इस अर्थ धारिता का दर्शन पाठकगण कर सकते। अतः यज्ञ शब्द अपने अपने क्षेत्र में क्रियमाण सब उत्तम कर्मों का अभिव्यंजक शब्द है। इस रहस्य को न समझकर डा० शर्मा अपने लेख में लिखते हैं —'श्रेष्ठतम कर्म वस्तुतः क्या हो सकता यह विचारने पर स्पष्ट होगा कि मानव अपने मानवत्व को पहचाने आत्म स्वरूप को साक्षात् करे' इत्यादि उनके लेख से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्होंने शतपथ को याज्ञिक क्रियाकाण्ड को क्या लक्ष्य गामिता है इस पर गहन विचार नहीं किया आत्म साक्षात्कार को कोई भी वैदिक विद्वान् अवर कर्म नहीं मानता परन्तु गृहस्थ के प्रकरण में उत्तम सन्तान पैदा करने के कर्म को श्रेष्ठतम कहना कोई अयुक्त वचन नहीं है। स्वामी दयानन्द की विमल प्रज्ञा ने इस रहस्य को समझा और मन्त्र के भावार्थ में स्पष्ट लिखा—तद् यथा—

सब लोगों को चाहिए कि अच्छे कामों से प्रजा की रक्षा तथा उत्तम गुणों से पुत्रादि को शिक्षा सदव करें जिससे प्रबल रोगों विघ्न और चोरों का अभाव होकर प्रजा और पुत्रादि सब सुखों को प्राप्त हो यही श्रेष्ठ काम सब सुखों की खान है। उपर्युक्त विवेचन से विस्पष्ट है कि यह ठीक है कि यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म में यज्ञ उद्देश्य नहीं अपितु विधेय है परन्तु यज्ञ का अभिप्राय कदापि यह नहीं की के दर्श पौण मास याग की स्थूल क्रियाओं को करना ही यज्ञ है अपितु दर्श पौण मास की प्रत्यक्ष क्रियाओं द्वारा ज्ञाप्य कर्मों को आत्म सात करना ही वास्तविक दर्श पौण मास यज्ञ है। केवलमात्र पत्थर पर पैर रखवाकर मन्त्र बोल देने मात्र से दाम्पत्य जीवन में स्थैर्य कदापि नहीं आ सकता स्थैर्य तभी आयेगा जब पत्थर के स्थिरत्व को पति पत्नी आत्म सात् करेंगे। अतः दर्श पौर्ण मास के रहस्य को समझकर तद् द्वारा बोधित कर्मों को जीवन का अंग बनाने पर ही पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान संसार को आह्लादित करने वाला उत्तम सन्तान प्राप्त किया जा सकता है। अतः गृहस्थ द्वारा अनुष्ठीयमान उत्तम तम कर्म ही दर्श याग है।

डा० शर्मा ने अपने इसी लेख में आगे सायण आदि कृत भाष्यों को शतपथादि ब्राह्मणों के अनुकूल बताकर उनकी वकालत करने का भी पर्याप्त किया है, जिसकी विवेचना अगले लेख में प्रस्तुत की जाएगी।

आर्यसमाज सफीदों जि० जीन्द का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१२, १३, १४ फरवरी १९८३ को आर्यसमाज सफीदों का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसमें शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० समरसिंह वेदालंकार, आर्यजगत् के नवोदित नक्षत्र श्री पं० सुरेशकुमार जी शास्त्री व हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से श्री धर्मचन्द जी विद्यालंकार के भाषण तथा संगीत केसरी श्री शोभाराम प्रेमी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से सर्व श्री चिरंजीलाल, मुन्शीलाल तथा सुमेरसिंह की सुप्रसिद्ध भजनमण्डलियों के मनोहारी भजन हुए जिन्हें जनता ने सराहा।

फूलचन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज सफीदों

शिक्षा सभा अजमेर का वार्षिक अधिवेशन

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर तथा उससे सम्बन्धित बारह अन्य शिक्षण संस्थाओं की प्रबन्ध कारिणी आर्यसमाज शिक्षा सभा का वार्षिक अधिवेशन दिनांक ७ फरवरी १९८३ को प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी तथा नगर सुधार न्यास और नगर परिषद् के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री कृष्ण गोपाल जी गर्ग की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

आगामी तीन वर्षों के लिए पुनः केन्द्रीय सिंचाई मन्त्री श्री रामनिवास जी मिर्धा प्रधान तथा दयानन्द कालेज के भूतपूर्व प्राचार्य प्रो० दत्तात्रेय वाब्ले (आर्य) सर्वसम्मति से शिक्षा सभा के मन्त्री चुने गये। जोधपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रो० आर० एस० कपूर उपाध्यक्ष और नगर परिषद् के भूतपूर्व चेयरमैन श्री देवदत्त शर्मा, एडवोकेट भी सर्व सम्मति से उपमन्त्री चुने गये। प्रबन्ध समिति के सदस्यों में से सर्व श्री कृष्णगोपाल जी गर्ग, डा० सूर्यदेवजी, प्रधानाध्यापक रामसिंह जी, प्राचार्य दिनेशसिंह जी, कृष्णराव जी वाब्ले, ठाकुर प्रेमसिंह जी (आर० ए० एस० रो०), प्रोफेसर जी० एल० जोशी मन्जूनाथ जी शास्त्री, शिवचरणसिंह जी तथा आचार्य गोविन्दसिंह जी के नाम उल्लेखनीय है।

सभा ने अपनी शिक्षण संस्थाओं के लगभग साठ लाख रुपये वार्षिक व्यय तथा उसके विस्तार और विकास एवं परीक्षा फल आदि पर भी विचार करके उन्हें स्वीकार किया।

मन्त्री आर्यसमाज अजमेर

सम्पादकीय

शंका समाधान —

अशोक कुमार के पत्र का उत्तर

प्रिय अशोककुमार जी, सप्रेम नमस्ते। पत्र आपका मिला। आप द्वारा भेजी शंकाए प्राप्त हुई। समाधान निम्नलिखित है—

प्रश्न—आत्मा एक है या अनेक। जीव और प्राण में कुछ अन्तर है या एक हैं, चेतन हैं या अचेतन। नित्य हैं या अनित्य। सर्वव्यापक भी हैं या नहीं।

उत्तर—आत्मा अनेक हैं, एक नहीं क्योंकि यदि प्राणियों का आत्मा एक हो तो एक के दुखी होने पर सब दुखी और एक सुखी होने पर सभी सुखी हो जाए किन्तु ऐसा नहीं होता है, इसलिये आत्मा अनेक है और वे अलग-अलग सुख और दुःख भोगते है। जीव और प्राण मे बहुत अन्तर है। प्राण को धारण करने वाला आत्मा जीव कहाता है। प्राण अपान आदि शरीर में रहने वाली वायु के नाम हैं। जीव चेतन है और प्राण अचेतन है। जीव नित्य हैं और प्राण अनित्य हैं। जीव और प्राण सर्वव्यापक नहीं है, वे एक देशी हैं।

प्र०—मृत्यु का समय निश्चित है और उसकी व्यवस्था परमात्मा के हाथ में है। मानलो जब कोई मनुष्य किसी दूसरे की हत्या करता है, तो जो हत्यारा है, परमात्मा ने उसको साधन बनाकर दूसरे की हत्या करवा दी तो इस तरह जो हत्यारा है उसे दण्ड क्यों दिया जाना चाहिए।

उ०—मृत्यु का समय निश्चित नहीं है, वह आत्मिक तथा सामाजिक कारणों से घटती बढती रहती है और सबकी व्यवस्था परमात्मा के अधीन नहीं क्योंकि जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है, वह किसी के प्रति हिंसात्मक कर्म कर सकता है। इसलिए जो कोई किसी की हत्या करता है, यह परमात्मा की व्यवस्था से कर रहा है, ऐसा कहना भ्रममूलक है। मनुष्य द्वेष के वशीभूत होकर हिंसा आदि कर्म करते रहते हैं। कर्म करने जीव के हाथ में है और दण्ड रूप फल देना ईश्वराधीन है।

प्र०—आर्यसमाज के दूसरे नियम में अनुपम शब्द आता है अर्थात् परमात्मा को किसी चीज के साथ उपमा नहीं की जा सकती। किन्तु यज्ञ रूप प्रभो ! हमारे भाव उज्जवल कीजिए में प्रभु को यज्ञ रूप कह कर उसकी उपमा की गई है।

उ०—आर्यसमाज के दूसरे नियम में जो अनुपम शब्द है उसका अर्थ यह है कि जगत् में ईश्वर के समान कोई नहीं है जब कोई समान नहीं है तो उससे अधिक कैसे हो सकता है। यज्ञरूप प्रभो० यह कोई वेद आदि प्रामाणिक ग्रन्थ का वचन नहीं है। यह पण्डित लोकनाथ तर्क वाचस्पति की बनाई हुई यज्ञ प्रार्थना है। इसलिए इसके अन्तिम चरण में नाथ शब्द का प्रयोग मिलता है। इस वचन पर आर्यसमाज में पर्याप्त विवाद रहा है और यज्ञ रूप प्रभो० के स्थान में सार्वदेशिक सभा ने पूजनीय प्रभो० कहने का सुझाव दिया है।

प्र०—प्रभु की व्यवस्था के अनुसार अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है, तो जब हम प्रार्थना करते हैं और उसमें अपनी मनोकाम पूरी होने की बात कहते हैं तो अगर परमात्मा मनोकामना पूर्ण कर दे तो क्या उसका न्याय कायम रह सकेगा और अगर मनोकामना पूरी नहीं करता तो फिर प्रार्थना करने का क्या लाभ हुआ ?

उ०—महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस विषय में लिखा है कि आर्य लोग जैसे ईश्वर प्रार्थना करें उसके अनुसार आचरण भी करे। प्रार्थना के अनुसार आचरण करने पर उसकी सफलता में सहायक होता है क्योंकि वह आत्मा का परम मित्र है। ईश्वर से उत्तम प्रार्थना करने का ही विधान है और उन्हें ही वह वैसा पयत्न करने पर सफल करता है। इससे उसके न्याय में कोई अन्तर नहीं आता। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि ईश्वर मेरे घर में झाडू लगा दे, मेरे कपड़े, वतन आदि साफ कर दे, इत्यादि पार्थना करना व्यर्थ है।

मेरा सुझाव है कि आप महर्षि के बनाए सत्यार्थप्रकाश को स्वयं अथवा किसी विद्वान् की सहायता से पढ़ें। इससे आपकी सब शंकाए दूर हो जाएंगी और थोडे ही दिनो में आप ऐसे बन जाओगे कि दूसरे लोगों की शंकाओं का समाधान किया करोगे।

अनिल कुमार आर्य के पत्र का उत्तर

श्री अनिलकुमार आर्य नगीना (गुडगाव) का लिखा पत्र मिला। उन्होंने ७ जनवरी १९८३ के सर्वहितकारी में किए शंका समाधान पर अपनी निम्नलिखित जिज्ञासा प्रकट की है —

वृक्ष आदि जड़ जगत् में आते हैं चेतन में नहीं लेकिन हम विज्ञान की दृष्टि से देखें तो वृक्ष आदि चेतन में आते हैं। जगदीशचन्द्र बसु ने अपने प्रयोगों से स्पष्ट किया है कि वृक्ष आदि भी हमारी तरह ही जीवन यापन करते हैं। उनमें वृद्धि होती है। वे हमारी तरह ही सोते जागते हैं। महात्मा गांधी ने भी एक स्थान पर कहा है कि सायंकाल के बाद वृक्ष आदि को नही छेड़ना चाहिए क्योंकि वह सायकाल विश्राम करते हैं।

समाधान—प्राचीन साहित्य में तथा विशेष रूप से आर्यसमाज के क्षेत्र में भी यह एक विवाद का विषय रहा है कि वृक्षो में जीव है कि नही। कुछ विद्वान् इसमें जीव मानते हैं और अपने पक्ष में प्रमाण और युक्ति देते हैं। जो इनमें जीव नहीं मानते वे अपने पक्ष में प्रमाण और युक्ति देते हैं। किसी भी विषय में सत्य-असत्य निर्णय के लिए वेद और ऋषि ग्रन्थो को प्रामाणिक मानकर चलने से सत्य का मार्ग मिल जाता है। जहां आत्मा का निवास होता है वहा इच्छा, द्वेष प्रयत्न सुख, दुःख, ज्ञान विद्यमान रहते हैं (इच्छा द्वेष सुख दुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम् न्याय॥) जहाँ आत्मा का निवास नहीं होता वहा उक्त इच्छा आदि छः लक्षण नहीं होते। इस लक्षण से वृक्षो में जीव की सत्ता नहीं मानी जा सकती। अतः मैंने इन्हें जड जगत् में गिना है। इनमें जीवात्मा का निवास मानने पर हिंसा आदि के अनेक दोष आ जाते हैं। फिर इनका सेवन मांस भक्षण के सदृश ही बन जाता है।

वृक्षों का प्राणियो के समान जीवन-यापन शयन, जागरण और विश्राम करना साध्य कोटि में है। डा० जगदीशचन्द्र वसु आदि ऋषियों के समान प्रमाण कोटि में नहीं आते। महात्मा गांधी का कथन यहा तक उपयुक्त प्रतीत होता है कि रात्रि में पक्षी आदि प्राणी वृक्षो पर विश्राम करते हैं, रात्रि को उन्हें छेड़ने से उनकी हिंसा होती है। उन्हें कष्ट होना है इसलिए उन्हें छेड़ना, काटना, तोड़ना आदि ठीक नहीं है।

सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक

आकाशवाणी रोहतक का धन्यवाद

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से सर्वहितकारी के सम्पादक एवं दयानन्द वैदिक शोध पीठ अजमेर के अध्यक्ष डा० सुदर्शनदेव आचार्य आदि आर्य विद्वानों के स्वर में प्रातःकाल चिन्तन कार्यक्रम मे पवित्र वेद-वाणी के प्रसारण का कार्यक्रम पूरा हो चुका है। यह प्रसारण शीघ्र ही आरम्भ हो जाएगा। इस केन्द्र के निदेशक विद्वान् इस उत्तम कार्यक्रम के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

म० भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

स्वर्गीय वानप्रस्थी रामपत जी का स्मरण

आज प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र 'आर्यजगत्' में श्री रामपत जी वानप्रस्थ के देहावसान का समाचार पढकर बहुत दुःख हुआ। श्री रामपत जी को मैं ४० वर्षों से भी अधिक समय से निरन्तर धर्म प्रचार करते हुए देख रहा था। वे आर्यसमाज की और हरयाणा परम्परा की कार्य शैली के प्रतीक थे। उन्होंने बहुत ही निष्ठापूर्वक वैदिक धर्म की सेवा की। स्वभावतः उनकी रिक्तता हरयाणावासियों को खटकेगी।

शिवकुमार शास्त्री
एम ८७ साकेत नई दिल्ली

आर्यसमाज के पुराने प्रचारकों, वक्ताओं, लेखकों और भजनोपदेशकों में बहुत अधिक धर्मनिष्ठा जोश और उत्साह था क्योंकि वे महर्षि दयानन्द की दूसरी और तीसरी पीढ़ी के कर्मठ मनीषी थे। हरयाणा के प्रसिद्ध उपदेशक पं० बस्तीराम जी महर्षि दयानन्द के समकालीन जोशीले प्रचारक थे और उनके शिष्य अथक वीर भजनीक प० रामपत जी वानप्रस्थी भी ऐसे ही लगनशील प्रभावशाली तेजस्वी उपदेशक थे। उनकी वाणी में तेज शक्ति और गूंज थी। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार, संगठन, उन्नति में लगाया। वे अकेले ही पूरे आर्य समाज के समान थे। बड़ी से बड़ी सभा उनके व्याख्यान और भजन दत्तचित होकर सुनती थी। वे कम पढे लिखे होते हुए भी सब साथियों से अधिक तार्किक, कट्टर धर्मानुरागी, निर्भीक और स्पष्ट वक्ता थे। वे वैदिक एवं सामाजिक आर्य मर्यादाओं के सुविज्ञ परिपालक थे। इसीलिए उनका मुख सदा लाल रहता था और उनका शरीर लोहघन के समान परिपुष्ट था। खल दुष्ट और दुर्जन मनुष्य उनसे डरते रहते थे। वे दिल्ली, पानीपत, रोहतक के मध्य तथा आस-पास के जनपद में लोकप्रिय विख्यात भजनीक थे। दादा बस्तीराम जी के सबसे अधिक भजन उन्हें ही कण्ठस्थ थे जिन्हें वे झूमकर करताल पर गाते थे। वे भरी सभा में नास्तिक और धर्म विरोधी लोगों को लताड़कर दबाने में समर्थ थे। वे आर्यसमाज के स्तम्भ सबल प्रचारक थे।

मैंने बहुत अवसरों पर उत्सवों और सम्मेलनों में उनके सत्संग मेल और मित्रता से लाभ उठाया है। वे मेरे तो पूज्य और प्रेमी सज्जन थे। हम अपने आर्यसमाज में उनको अवश्य बुलाते थे। हमें उनके सानिध्य से विशेष उल्लास एवं मनोबल मिलता था। समस्त आर्यजन उनके दर्शनों के लालायित रहते थे। दो तीन स्थानों पर उनके साथ मिलकर मैंने भी प० बस्तीराम जी द्वारा रचित महर्षि जी की काशी शास्त्रार्थ की पद्य गाथा सुनाई थी।

पं० रामपत जी का गढ स्थान महर्षि दयानन्द मठ रोहतक था। वे सैद्धान्तिक तथ्यों में आर्य नेता श्री सिद्धान्ती जी के सामने भी अड़ जाते थे। वे महर्षि दयानन्द के सुयशसी अमर गाथाओं को सर्वत्र सनाया करते थे। वे आर्यसमाज के प्रबल सहयोगी, सरक्षक और दानी थे। १२ फरवरी को गुरुकुल झज्जर के वार्षिक महोत्सव पर ६ फरवरी को हुए उनके देवलोकवास की सूचना पाकर हमें बहुत हार्दिक आघात पहुंचा। उनके एकमात्र सुयोग्य सुपुत्र श्री सुखदेव शास्त्री बहुत कुशल आर्य अध्यापक, विद्वान् वक्ता और लेखक हैं। स्वामी धर्मानन्द और नित्यानन्द उनके प्यारे साथी थे। पूज्य रामपत जी का निधन ग्राम मदीना जिला रोहतक में ६ फरवरी को हुआ था। ऐसे महान् आर्य उपदेशक का दाह संस्कार हजारों आर्यों के मध्य उनके निवास केन्द्र स्थान महर्षि दयानन्द मठ रोहतक में ही होना चाहिए था। वे संन्यासी तुल्य थे परन्तु बहुत खेद का विषय है कि उनका शव मदीना ग्राम से लाकर उनके ग्राम आसन में ही उनके परिजनों को उनका दाह संस्कार करना पड़ा।

निहालसिंह आर्य अध्यापक दिल्ली

पिछले दिनों आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक श्री रामपत जी का स्वर्गवास हो गया। वे उस कड़ी के उपदेशक थे जिसे प० बस्तीराम, चौः ईश्वरसिंह, चौ० तेजसिंह के बाद उनके उतराधिकारियों में गिना जाता था। श्री रामपत जी के स्वर्गवास से जौहरीसिंह जी के स्वर्गवास की याद स्वभाविक रूप में आती है। धीरे धीरे आर्यसमाज के तपे हुए उपदेशक इस लोक से जा रहे हैं और उनके स्थान की पूर्ति होने में नहीं आ रही है। पिछले ५० वर्ष श्री रामपत जी ने हाथ में खडताल लेकर जिस धुन के साथ प्रचार किया वैसा प्रचारक अब ढूंढे से नहीं मिल सकता। जब सभा उखड़ जाती थी तब रामपत जी को खडा कर दिया जाता था और तब वे अपनी तेज तरार आवाज में उखड़े हुए जलसे को जमा लेते थे। वे ऐसे पुरुषार्थी थे कि उनके साथ चाहे कितने ही व्यक्ति कहीं जाते उन्हें कभी भूखा नहीं रहने देते थे। दयानन्द मठ के लङ्गर के लिए भी जिस किसी से अन्न मांग लेते थे उन्हें कोई ना नहीं करता था। बीसियों वर्ष उनको निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। वे अपनी बात कहने में संकोच नहीं करते थे। बुरा माने चाहे भला वे अपनी बात कह आते थे। उन्हें अपनी पुत्रियों से बहुत स्नेह था इसलिए उन्होने अपनी कई दोहतियों को ऊंची शिक्षा दिलाई जिनमें से एक विद्यालकार है। उनके पुत्र श्री सुखदेव शास्त्री आर्यसमाज के जाने माने वक्ता और लगनशील व्यक्ति हैं। श्री रामपत प्रारम्भ में चौ० छोटूराम की जमीदारालिग के उपदेशक थे, उन दिनों वे अपने चाचा श्री सुरजा राम के साथ कुश्ती भी किया करते थे। एक समय ऐसा था जब श्री रामपत का गाव आसन आर्यसमाजी भजनोपदेशों का गांव कहलाता था। श्री रामपत की याद उन लोगों को सदा आती रहेगी जिन्होंने उन्हें बोलते सुना है, काम करते देखा है। श्री रामपत धुन के धनी थे, जिस काम को करने का निश्चय करते थे उसे कर डालते थे। वे बड़े गौरव से कहते थे कि मैं पं० बस्तीराम का चेला हूं। उनके जाने से आर्यसमाजी भजनोपदेशकों में से ऐसा व्यक्ति उठ गया है जिसका स्थान भरा नहीं जा सकता।

कपिलदेव शास्त्री

दिनांक २०-२-८३ को आर्यसमाज मन्दिर नारनोल में साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर पूज्य महात्मा रामपत जी वानप्रस्थी आसन और महाशय रामनारायण जी सलारपुर जिला महेन्द्रगढ निवासी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए परमात्मा से दोनों दिवगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की गई और उनके परिवारजनों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रेषित करने के प्रस्ताव पास किये गये।

आर्यसमाज की गतिविधियां—

आर्य वीर दल हरयाणा का रोहतक में नया उप-कार्यालय

पलवल । सभी आर्य सज्जनों आर्य वीर दल के अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सूचित किया जाता है कि आर्य वीर दल हरयाणा के उपमन्त्री श्री वेदप्रकाश जी आर्य (प्रधान आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक) ने अपनी समाज में एक उप-कार्यालय खोल लिया है ताकि दल कार्य को आगे बढाया जा सके।

समीपवर्ती इलाकों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि श्री वेदप्रकाश जी आर्य से सम्पर्क स्थापित करलें तथा दल कार्य को आगे बढावें। शिविर लगाने बारे योजना बनाकर सूचित करें तथा शिक्षक को आवश्यकता होने पर सम्पर्क करें। अपनी अपनी आर्यसमाजों में आर्य कुमार सभाएं भी प्रारम्भ करें।

अजीतकुमार आर्य

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

वर्तमान दुषित और मशीनी वातावरण के प्रभाव में जबकि व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से टूटता जा रहा है और घोर निराशा का शिकार होकर आर्थिकता की चक्की में पीस कर कपोषण और रोग ग्रस्त होकर आत्महत्या की ओर बढ रहा है। ऐसे समय में गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरयाणा में २२ मार्च से १० अप्रैल तक डा० देवव्रत आचार्य उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य वीर दल की देखरेख में एक योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया है। इसमें आसन प्राणायाम दण्ड बैठक, क्रिया लाठी, तलवार का प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा दमा, मठिया, टिपोड़ी गर्दन पिड़ा और नजला जुकाम, ब्लैड प्रेशर हृदय रोग मधुमेह आदि बिमारियों का इलाज अंग्रेजी दवाइयों का प्रयोग न कर केवल योग और प्राकृतिक साधनों से ही निःशुल्क इलाज किया जायेगा। इसमें योग, ध्यान, साधना का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसमें यहां रहने वालों से केवल ४ रुपये प्रतिदिन भोजन शुल्क लिया जायेगा। स्थान सिमित होने के कारण इच्छुक महानुभाव २० मार्च तक अपना प्रार्थना पत्र संयोजक योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर गुरुकुल कुरुक्षेत्र, हरयाणा D १३२११८ के पते पर भेजें व सम्पर्क करें २० मार्च के पश्चात् प्रवेश असम्भव होगा।

धर्मदेव विद्यार्थी
संयोजक शिविर गुरुकुल कुरुक्षेत्र

सम्पादक के नाम पत्र

सर्वहितकारी का कमाल

आदरणीय सुदर्शनदेव जी सादर नमस्ते।

आपके प्रिय साप्ताहिक पत्र 'सर्वहितकारी' का महात्मा भक्त फूलसिंह विशेषांक मिला। विशेषांक वास्तव में आकर्षक एवं अनूठा था। सभी लेख शिक्षाप्रद एवं पठनीय थे। सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा। वास्तव में यह पत्र महर्षि दयानन्द के मिशन आगे बढाने के लिए कृत संकल्प है। इस पत्र के विशेषांकों की बड़ी धूम रही है। यह विशेषांक भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। इस विशेषांक की सफलता के लिए इस पत्र के सुयोग्य सम्पादक आप विशेष बधाई के पात्र हैं। मैं आपकी चिरायु की कामना चाहता हूं।

रामकुमार आर्य पुस्तकाध्यक्ष
आर्यसमाज दुल्वागढ गोहाना

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आर्यसमाज

पश्चिमी सभ्यता से ओत-प्रोत कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में जिसकी स्थापना संस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में की थी परन्तु समय के थपेड़ों में वहां वैदिक धर्म का समुचित प्रचार न होने दिया। वहां पर अब गुरुकुल कुरुक्षेत्र के निरीक्षक श्री धर्मदेव विद्यार्थी और डा० अमीरसिंह जी के प्रयासों से आर्यसमाज का प्रचार कार्य कर भटके हुए नौजवानों को देश धर्म की याद दिलाने का कार्य आरम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम के अनुसार श्री दलवीरसिंह आर्य (कानून प्रथम वर्ष) एवं साथियों ने दिनांक २ फरवरी को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के लॉ हास्टल में रात्रि को क्रान्तिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश जी का प्रचार करवाया गया। दिनांक २२-१-८३ से ५-२-८३ तक विश्वविद्यालय में आर्य कार्यकर्त्ता शिविर श्री अमृतसिंह, श्री सुरेश जी इन्जीनियरिंग कालेज की देखरेख में ३० उत्साही नौजवानों का शिविर लगवाया गया जिसमें डा० अमीरसिंह, धर्मदेव विद्यार्थी, स्वामी रुद्रवेश जी, पं० मोनीराम जी ने नौजवानों में आर्यसमाज का कार्य करने की प्रेरणा दी।

१ मार्च को इन्जिनियरिंग कालेज में स्वामी रुद्रदेव जी का क्रान्तिकारी कार्यक्रम कराया गया। विश्वविद्यालय के नौजवान छात्रों में आर्यसमाज के कार्यक्रम में काफी रुचि व उत्साह दिखाया। शीघ्र ही विश्वविद्यालय में एक विशाल आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में २२ मार्च से १० अप्रैल तक एक विशाल स्तर का शिविर लगाया जा रहा है। इस शिविर में आर्यवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण भी होगा। अतः आर्य नौजवान इसमें प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए फार्म शीघ्र भेजें। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की शारीरिक और मानसिक बिमारियों का इलाज भी किया जायेगा तथा आसन प्राणायाम, योग, ध्यान साधना आदि का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। इस शिविर में डा० देवव्रत आचार्य के साथ सुप्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सकों का भी दल पहुँच रहा है। रोगों को प्राकृतिक चिकित्सा की जायेगी। इच्छुक महानुभाव यथाशीघ्र अपने नाम फार्म भरकर अपना स्थान सुरक्षित करावें।

धर्मदेव विद्यार्थी
संयोजक

(१ का शेष)

ऋषि दयानन्द इधर-उधर घूम घूम करके अनेकों स्थानों में मूर्ति पूजा के सम्बन्धि शास्त्रार्थ किए। उन्होंने कहा कि मूर्ति जड़ है। वह अनेक प्रकार से दुःख सहकर मनुष्यों को सत्योपदेश दिये।

ऋषिवर के विचारों से अनेकों विद्वान् प्रभावित थे। जैसे हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, अमर शहीद पं० लेखराम, आर्यसमाज के दिवाने लाला हंसराज और गुरुदत्त जी अन्य लोगों ने भी वैदिक धर्म के लिए अपने प्राणों की आहुतियां दी।

यतिवर ने कहा कि वेद ईश्वर के रचित हैं, अतः उसके प्रमाण अटल है। उनका स्वरचित सत्यार्थप्रकाश एक उच्चकोटि का ग्रन्थ है। वह एक निर्भीक ओजवान विद्वान् तथा धार्मिक, सामाजिक एव आत्मिक क्षेत्र में क्रान्तिकारी था। उन्होंने आर्यसमाज नाम की एक सस्था की स्थापना की। जब तक ईश्वर से रचित ये सब ब्रह्माण्ड की वस्तुएं हैं तब तक ऋषि दयानन्द का नाम अजर और अमर रहेगा।

पूर्वजों के वैदिक धर्म में वापस आइए

श्री मजीद श्री जयसिंह आर्य बने : पूर्व धर्मबन्धुओं को आह्वान

मातृभूमि और वैदिक धर्म की सेवा का व्रत

बागपत। आर्यसमाज बागपत में पुरोहित श्री मुरारीलाल आर्य द्वारा १६ जनवरी के दिन एक कार्यक्रम मे ग्राम मवीकला थाना बागपत जिला मेरठ निवासी श्री मजीद को वैदिक धर्म में दीक्षा दिए जाने के बाद यज्ञोपवीत धारण कराया गया उनका नाम बदलकर श्री जयसिंह आर्य रखा गया। श्री जयसिंह आर्य ने संस्कार के बाद घोषित किया—हमारे पूर्वज पहले हिन्दू धर्म अनुयायी और योगी सम्प्रदाय के सदस्य थे।

श्री जयसिंह आर्य ने राष्ट्र व समाज के कल्याणार्थ ऐसे सभी मुसलमानो को शुद्ध होकर हिन्दू धर्म में दीक्षा लेने का आह्वान किया, जिनके पूर्वज पहले हिन्दू थे और जिन्होने मुसलमान शासकों के अत्याचारों, भय व प्रलोभन आदि से प्रभावित होकर हिन्दू धर्म छोड़कर इस्लाम अपनाया था। उन्होंने अपने वैदिक धर्म मे लौटने को पुर्नमिलन घोषित किया। उल्लेखनीय है कि मवीकला के अनेक मुसलमानो द्वारा दबाव डालने के बावजूद श्री मजिद वैदिक धर्म मे वापस आ गए।

आर्यसमाज बागपत को दिए एक प्रतिज्ञापत्र में श्री जयसिंह आर्य कहते हैं—आज से मेरा इष्ट और उपास्यदेव ईश्वर, परमात्मा जिसका मुख्य नाम ओ३म् है, होगा। वेद मेरा धर्म पुस्तक और वेदों की शिक्षा-दीक्षा-वैदिक मेरा धर्म होगा। राम-कृष्ण-कणाद, कपिल, गौतम और दयानन्द आदि महापुरुष ही मेरे पूज्य महापुरुष होंगे। भारत भूमि मेरी मातृभूमि तथा गऊ मेरी माता होगी और इनकी रक्षा के लिए मैं सदैव प्रयत्नशील रहूंगा। मेरी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी होगी तथा मैं वैदिक धर्म, संस्कृति आचार-विचार, परम्पराओं व मान्यताओं के विरुद्ध कभी कोई आचरण नहीं करूंगा जिससे वे कलंकित हो।

हरयाणा छात्र परिषद का वार्षिकोत्सव

(रमेश भाटिया प्रैस रिपोर्ट द्वारा)

कलकत्ता परिषद् का २३ वां वार्षिकोत्सव गत दिनो विद्या मन्दिर सभागार मे सम्पन्न हुआ। सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री पुरुषोत्तम हलवासिया ने समारोह का उद्घाटन करते हुए परिषद् के कार्यो की भूरि-२ प्रशंसा की।

प्रधान अतिथि पद मे बोलते हुए विधायक श्री राजेश खेतान ने कहा कि परिषद् को सिर्फ कलकत्ते में रहने वाले ही हरयाणवी छात्रों की सहायता न करनी चाहिए बल्कि कलकत्ते से बसे दूर प्रवासी हरयाणवी भाइयों एवं छात्रों को भी समुचित रूप से आर्थिक सहायता करनी चाहिये। विशेष अतिथि पद से भाषण देते हुए कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री भानीराम सुरेका ने कहा कि परिषद् के छात्रों को दहेज विरोधी आन्दोलन आदि सामाजिक विषयों पर आवश्यकतानुसार आन्दोलन करना चाहिए। परिषद् के ट्रस्टो एवं संरक्षक श्री दयानन्द आर्य ने हरयाणा समाज की विभिन्न क्षेत्रों मे उपलब्धियों की चर्चा की। परिषद् के अध्यक्ष श्री सीताराम कलानोरिया ने समारोह की अध्यक्षता तथा अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने परिषद् के भवन निर्माण हेतु हरयाणा प्रवासियो से सहयोग को अपील की। परिषद् के प्रधान सचिव श्री सुभाष अग्रवाल ने परिषद् की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर परिषद् द्वारा आयोजित खेलकूद एवं साहित्य प्रतियोगिताओं मे विजयी छात्रों को विधायक श्री राजेश खेतान एवं श्री दयानन्द आर्य ने पुरस्कार वितरण किया।

मन्त्री हरयाणा छात्र परिषद्
४६ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

कलकत्ता आर्यसमाज में परोपकारिणी सभा के मन्त्री का स्वागत

परोपकारिणी सभा के मन्त्री भूतपूर्व संसद सदस्य श्री श्रीकरण शारदा दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह सम्बन्धी चर्चा करने हेतु कलकत्ता पहुँचे। वहां पर आर्यसमाज विधान सर्णी में आपका भव्य स्वागत किया गया तथा श्री शारदा ने उपस्थित आर्य नर नारियों को ३, ४, ५, ६ नवम्बर १६८३ को दयानन्द निर्वाण शताब्दी जो अजमेर में मनाई जावेगी उसमें भारी संख्या में उपस्थित होने का आह्वान किया। श्री शारदा ने अपील की कि इस समारोह को सफल बनाने हेतु आर्य जन तन-मन-धन से सहयोग देंवे।

आर्यसमाज विधान सर्णी में परोपकारिणी सभा के उपप्रधान पूनमचन्द जी आर्य, सयोजक अर्थ समिति दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर की अध्यक्षता में एक बैठक हुई जिसमें श्री सीताराम जी आर्य के सयोजक त्तवों में ११ सदस्य एक कमेटी गठित की गई जो कलकत्ता से निर्वाण शताब्दी हेतु तीन लाख रुपया एकत्रित करेंगी।

श्री पूनमचन्द जी आर्य ने सूचित किया कि निम्नलिखित सज्जन निर्वाण शताब्दी हेतु दान देने का आश्वासन दिया है।

श्री सीताराम आर्य ने	११००० रुपये
श्री गजानन्द आर्य ने	,, ,,
श्री रुलियाराम गुप्त ने	५००० ,,

दस हजार रुपये श्री मोहनलाल जो अग्रवाल एकत्रित करके देंगे। उपस्थित नर नारियों ने भारी संख्या में ऋषि निर्वाण शताब्दी पर अजमेर पहुँचने का आश्वासन दिया।

आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में दयानन्द निर्वाण शताब्दी सम्बन्धी एक बैठक स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें दिल्ली के प्रमुख आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता, परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री श्रीकरण शारदा, श्री देशराज जी बहल, श्री रामनाथ जी सहगल आदि महानुभाव उपस्थित थे और उन्होंने दिल्ली से दस लाख रुपया एकत्रित करने के आश्वासन को दोहराया। ब्र० राजसिंह ने एक हजार स्वयंसेवकों की स्पेशल ट्रेन लेकर अजमेर पहुँचने की घोषणा की। पं० क्षतीज जी वेदालंकार ने व स्वामी दीक्षानन्द जी ने अपने विचार रखे और अजमेर में निर्वाण शताब्दी को सफल बनाने की प्रेरणा दी। स्वामी जी ने यह भी सूचित किया कि दो सौ आर्य संन्यासी पचास पचास की टोली में चारों दिशाओं से यह यात्रा करते हुए निर्वाण शताब्दी के अवसर पर अजमेर पहुंचेंगे।

आर्यसमाज करोलबाग दिल्ली में रविवार के सत्संग में श्रीकरणशारदा मन्त्री दयानन्द निर्वाण शताब्दी समिति आप पुष्पहार पहनाकर भव्य स्वागत किया गया उन्हें वहा के मन्त्री ने आश्वास्त किया कि करोल बाग आर्यसमाज की ओर से अच्छी धनराशि अगले माह में उन्हें निर्वाण शताब्दी हेतु भेंट की जावेगी और भारी संख्या में आर्य नरनारी दीपावली के अवसर पर ऋषि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करने अजमेर पहुंचेंगे।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह

नई दिल्ली ६ मार्च। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण शताब्दी समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिसम्बर १६८३ में दिल्ली में भी मनाया जाएगा। देश विदेश के लगभग १५ लाख आर्य नर नारी इसमें भाग लेंगे। अजमेर में दीपावली के अवसर पर निर्वाण शताब्दी का प्रारम्भिक समारोह किया जाएगा। पूर्णाहुति और अन्तर्राष्ट्रीय समारोह दिल्ली में ही होगा।

मन्त्री सार्वदेशिक सभा

आर्यावर्त्त की दिव्य आत्माएं एवं महात्मा भक्त फूलसिंह

वीरेन्द्र विद्यालंकार शास्त्री गुरुकुल भैंसवालकलां

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।। मनु० ।।

महर्षि मनु ने आदि काल में इस सूक्ति से भारतीय गरिमा को चमत्कृत कर दिया था, और यह सिद्ध कर दिया था कि यह आर्यावर्त्त (भारत) देश देवों की भूमि है। महान् पुरुष इस पृथ्वी पर जन्म लेकर अपने चरित्रों की दिव्य-रश्मियों से समस्त पृथ्वी के मानवों को उद्बोधित करते रहेंगे। समस्त धरा को अपनी यशः समुद्भूत महक से सुवासित रखेंगे। आर्यावर्तीय महान् आत्माओं की यशः रश्मियां इस पृथ्वी मण्डल पर विकीर्ण होती रहेंगी और उनकी तपः समुद्भूत विद्याएं यथार्थ का ज्ञान कराती रहेंगी। आर्यावर्त्त की आध्यात्मिक विद्याएं इस विश्व में सदा आलोकित रहेंगी।

विभिन्न युगों से ही महान् आत्माएं इस आर्यावर्त्त (भारत) भूमि में आती रही हैं। सतयुग में ब्रह्मा, विष्णु, महेश जैसे महान् शास्त्रायों का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने अपने कठोर अनुशीलन से वेदों में छिपे रहस्य को प्रकट किया। भगवान् मनु ने राजनीति में अद्भुत कौशल प्राप्त किया।

त्रेतायुग में भगवान् राम सदृश मर्यादा पुरुषोत्तम इसी भूमि पर अवतरित हुए। जो अपने अनूठे आदर्श को सदा के लिए इस पृथ्वी पर छोड़ गए। जिस अनुकरणीय आदर्श का पठन-पाठन तथा अनुकरण सदा होता रहेगा। महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र जैसे ब्रह्मर्षियों ने अपनी ज्योत्स्ना से इस आर्यावर्त्त में चकाचौंध पैदा की। महर्षि भारद्वाज जैसे अद्वितीय उद्भट वैज्ञानिकों ने विज्ञान का विकास किया।

द्वापर युग में भगवान् कृष्ण का उदाहरण अद्वितीय है ही। भगवान् कृष्ण जैसा राजनीतिज्ञ तथा योगीराज इस विश्व को देने का गौरव भी इसी आर्यावर्त्त को प्राप्त है। विदुर और व्यास समान मुनि भी इस काल में हुए। युधिष्ठिर जैसे धर्मपरायण पुरुष और कर्ण जैसे वीर; उदार हृदय भी आर्यावर्त्त ने इस युग में प्रदान किए।

कलिकाल भी महापुरुषों को देने में पीछे नहीं रहा। इस युग ने भी परम्परा को बनाए रखा। इसी कलियुग ने ब्रह्मर्षि विरजानन्द को दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी इसी युग में वैदिक दुन्दुभि से दिग् दिगन्तों को मुखरित किया। महर्षि ने आर्यसमाज रूपी वृक्ष को अंकुरित किया। बम्बई में यह वृक्ष अंकुरित हुआ, परन्तु इसकी शाखाएं संकीर्ण नहीं रहीं; अपितु समस्त भारतवर्ष पर छा गईं। पंजाब और हरयाणा में तो जन साधारण ने इसकी शाखाओं की मधुर छांव से उठने का नाम न लिया। महर्षि की तपस्या फलीभूत होने लगी। स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, पं० लेखराम जैसे रत्न तथा स्वतन्त्रता के अग्रगण्य योद्धा भी आर्यावर्त्त में इसी आर्यसमाज की देन थी।

हरयाणा प्रान्त, जो क्षेत्र में बहुत छोटा किन्तु अपने छोटे से कलेवर में बहुत विशिष्टताएं समाहित किए हुए है। अपने गौरव से चमत्कृत इस हरयाणा प्रान्त में ही २४ फरवरी सन् १८८५ को हमारे चरितनायक भक्तफूलसिंह का जन्म हुआ। अपने पिता चौ० बाबरसिंह तथा माता श्रीमती तारादेवी की गोद में बड़े लाड़-प्यार में पला। हमारा चरित नायक एक आदर्श के रूप में हमारे दृष्टि पथ में आया।

प्रायश्चित् का धधकती ज्वाला में अपने को निखार कर इस अमर आत्मा ने गण्य दिनों में देवत्व पद प्राप्त कर लिया। ईश्वर की अनुकम्पा से हमें भी वैदिक वाणी—देवगिरा—संस्कृत भाषा, जिसमें हमारी सारी संस्कृति निहित है, का पठन-पाठन करने का सौभाग्य हमारे तपः और शान्ति के अग्रदूत भक्त फूलसिंह ने प्रदान किया।

'गुरु लोभी चेला लालची दोनों खेलें दाव।
भव-सागर में डूबते बैठ पत्थर की नाव ।।'

उक्त उक्ति के अनुसार जब गुरु और शिष्य इस संसार नैया पर डगमगाते दुखित स्वर में कराह रहे थे, उस समय भक्त जी हमारे सामने एक आदर्श गुरु के रूप आए। अपने असीम तप से उन्होंने दिगन्तों को गुञ्जरित किया और क्षुभित समाज ने उस देव-प्रतिमा की चरण-रज प्राप्त कर शान्ति प्राप्त की। 'आचारं ग्राह्यति' के अनुरूप भक्त जी आचार के चरमोत्कर्ष बनकर हमारे समक्ष आए और आचार्य पद को यथार्थ रूप में विभूषित किया।

स्त्री शिक्षा जब लुप्त प्रायः सी हो चुकी थी। 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्' कहकर शिक्षा के क्षेत्र को संकुचित कर दिया था। उस समय निरन्तर संघर्ष के फलस्वरूप हमारे चरित नायक ने स्त्री शिक्षा पर बल देकर कन्या गुरुकुल खानपुर कलां की विजयध्वजा दोलायमान की। आर्य समाज के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती की प्रेरणा से हरयाणा में सर्वप्रथम प्राचीन शिक्षा पद्धति के अनुरूप गुरुकुल शिक्षा पद्धति में पदार्पण कर सफलता प्राप्त की। इस प्राचीन परम्परा का यह प्रथम वृक्ष ग्राम भैंसवाल क्षेत्र में अंकुरित हुआ और भक्त जी इस गुरुकुल रूपी वृक्ष को समृद्ध रखने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती से गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक आचार्य युधिष्ठिर (स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती) को लाए, और शीघ्र ही यह पौधा फलीभूत होने लगा। सुयोग्य स्नातक रूप फल इस वृक्ष ने भक्त जी एवं आचार्य युधिष्ठिर जी के परिश्रम से प्रदान किए। आज वही वृक्ष एक अमरबेल के रूप में हमारे सामने विकसित है।

इस प्रकार भक्त जी ने शैक्षिक क्षेत्र में योगदान से आर्य जनता का महान् उपकार किया।

'थोथा चना बाजे घना' वाला स्वभाव हमारे नायक का नहीं था। समाज से बहिष्कृत 'हरिजन' रूप मानव समाज के लिए उन्होंने हर सम्भव प्रयास से सफलता के चरम बिन्दु का स्पर्श किया। भूख हड़ताल से अपने शरीर को जर्जर अपने आश्रित समाज को परिपुष्ट किया–उस घने परोपकारी तरुवर की तरह जो स्वयं आतप को सहन कर आश्रितों को अपनी छाया से शीतलता प्रदान करता है। गो हत्या के विरोध में गांव सम्भालका में विजय प्राप्त की। हैदराबाद सत्याग्रह में क्षीण काय से अपना सहयोग देकर अद्भुत कौशल, तप और कार्यक्षमता का परिचय दिया।

हमारे चरित नायक ने समाज को उन्नत रखने के लिए अपने जीवन की भी परवाह न की। परन्तु हा दुर्दैव ! यहां ऊंची आत्मा कतिपय दिन ही रहती है। हमने महर्षि दयानन्द ब्रह्मचारी के नश्वर शरीर को यहां रखने न दिया और हमने अपने ही आदर्श रूप अनुकरणीय पुरुष, महान् आत्मा की भी अवहेलना कर दी और वे भी अमर पद प्राप्त करके १४ अगस्त १९४२ को प्रस्थान कर गए। हमने अपने पावों में अपने ही हाथों कुल्हाड़ी मार ली और और हम निःसहाय हो गए। निःसहाय जनता की चेतना पुकार उठी—

एक निक्षेप बड़े गौरव से प्राप्त हुई,
उसे भी सम्हालने में क्षम नहीं हम हुए।
ईशकृत अनुकम्पा से विभूति हमें मिली,
विभूति को गंवा हम फिर भी अनाथ हुए ।।

वरणीय तात से उपकृत हम हुए,
देव प्रकृति के कृतज्ञ नहीं हम रहे।
धन्य यह अञ्जली में श्रद्धा के सुमन लिए,
मोतियों का थाल लिए शशि भी विराज रहे ।।

सरकारी कामकाज हिन्दी में करने पर अनेक व्यक्ति पुरस्कृत

नई दिल्ली २८ फरवरी, १९८३–केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् ने सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढाने के लिए, एक अगस्त १९८२ से ३० सितम्बर १९८२ तक की अवधि में सत्रहवी अखिल भारतीय हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इस प्रतियोगिता में देश के अनेक नगरों में स्थित केन्द्रीय सरकार के अनेक कर्मचारियों ने भाग लिया। इस वर्ष श्री अशोक जोशी, बैंक नोट मुद्रणालय देवास को सर्वप्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। दूसरा व तीसरा स्थान क्रमश: सर्वश्री राजेन्द्र चौ० और विजय कुमार त्रिवेदी, बैंक नोट मुद्रणालय देवास को प्राप्त हुआ है। पत्राचार विशेष पुरस्कार श्री जे० आर० अड़सुले, बैंक नोट मुद्रणालय, देवास को मिला है। ६ प्रतियोगियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए हैं। ५ ऐसे अधिकारियों को भी पुरस्कृत किया गया है जिनके अधीन कार्य करने वाले प्रतियोगियों के अंकों का जोड सर्वाधिक रहा है। लोको रोड़, उत्तर रेलवे शाखा, लक्सर के श्री राधेश्याम भटनागर 'कमल' को आयोजनकर्त्ता पुरस्कार तथा हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लि०, उद्योग मण्डल केरल के श्री तोमस फिलिप को विशेष पुरस्कार मिला है।

परिषद् द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार और प्रशस्तिपत्र नई दिल्ली में ११ मार्च १९८३ को होने वाले वार्षिक समारोह में दिए जाएंगे।

१९८३ में यह प्रतियोगिता १ अगस्त से ३० सितम्बर तक की अवधि में हिन्दी में किए गए सरकारी कामकाज के आधार पर होगी।

शोक समाचार

आर्यसमाज लाडवा की यह सभा अत्यन्त शोक प्रकट करती है कि हमारी समाज के उपप्रधान श्री सतप्रकाश गर्ग की धर्मपत्नी का ८-२-८३ की अर्धरात्रि को देहान्त हो गया। वे आर्य वैदिक विचारों की धर्म अनुरागिनी महिला थी। समाज के प्रत्येक कार्य में सोत्साह भाग लेती थी।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों को शोक सहन करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करें।

मन्त्री आर्यसमाज, लाडवा

श्री रमेशकुमार ग्राम दुल्लागढ गोहाना (सोनीपत) का १७ फरवरी १९८३ को आकस्मिक देहान्त हो गया। उनकी आयु लगभग १९ वर्ष की थी। वे बड़े होनहार आर्य युवक थे। उनका आर्यसमाज के साथ काफ़ी लगाव था। आर्यसमाज दुल्लागढ उनके निधन पर गहरी संमवेदना प्रकट करता है।

—रामकुमार आर्य

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

होली का पर्व प्राचीन वैदिक नवसस्य (अन्न) की इष्टि यज्ञ है। हमें चाहिए कि इस पर्व पर वेदानुसार फाल्गुन पूर्णिमा पर बड़ा यज्ञ करें। विधर्मियों को शुद्ध करें, दलितों का उद्धार करें, बिछुड़ों को गले लगाएं। भद्दे स्वाँग, जहरीले रंग, गाली गलोच बन्द करें, इनके स्थान पर कपूर—केसर मिला ढाक (टेसू) के फूलों का रंग प्रयुक्त करें, वेदमन्त्रों तथा सुन्दर कविताओं का पाठ करें। जहां होली जलाई जाती है वहां गांव मुहल्ले के निवासियों को तैयार करके बड़े हवन किये जाएं जिनमें गन्दी वस्तुएं न छोड़ी जायं; शुद्ध, सुगन्धित, हवन सामग्री, नया अन्न, जौ, होला, गन्ना, गुड़, मेवा, घी, पकवान आदि की आहुतियां दी जायं। ऐसे ही हवन मन्दिरों तथा घरों में भी हों।

होली-यज्ञ में निम्नलिखित मन्त्रों से, आरम्भ में ओ३म् और अन्त में स्वाहा बोलकर आहुतियां दें—

१. ओ३म् शतायुधाय शतवीर्याय शतोतयेऽभिमातिषाहे।

शतं यो नः शरदो अजीजाद् इन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा ॥स्वाहा॥

सैकड़ों शक्ति-पराक्रम-रक्षा वाले परमेश्वर की हम भक्ति करें। वही हमें सौ वर्ष तक जीवित रख सकता और सब पाप-दुःख-बुराइयों को दूर कर सकता है।

२. ओं ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति।
तेषां यो अज्यानिमजीजिमावहः
तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वे ॥स्वाहा॥

विद्वानों के चलने योग्य जो ४ मार्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) और ४ आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) हैं उनका जो पालन करता है उसी के लिए सब इन्द्रियां और सांसारिक वस्तुएं सुख देने वाली होती हैं।

३. ओं ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु।
तेषाम् ऋतूनां शतशारदानां निवात एषाम् अभये स्याम ॥स्वाहा॥

वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर—ये ऋतुएं हमारे लिए सुखदायी हों। उन ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार करते हुए हम सौ वर्ष तक अभय और सुखी रहें।

४. ओं इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानां ज्योग् जीता अहताः स्याम ॥स्वाहा॥
(मन्त्रब्राह्मण २-१-९-१२, गोभिल गृ० ३, ७, १०, ११)

इद्वत्सर, परिवत्सर और संवत्सर के अनुसार हम उचित आहार व्यवहार करें। यज्ञ-कर्त्ताओं की सुमति में चलकर हम सदा सुरक्षित रहें।

५. ओं पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः।
तमिहेन्द्रमुप ह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः ॥स्वाहा॥

पृथिवी, द्यौ, दिशायें (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) और उपदिशायें (आग्नेय, वायव्य, नैर्ऋत्य, ईशान) जिस इन्द्र (ईश्वर, सूर्य, विद्युत, राजा) के प्रताप से प्रकाशित रहती हैं उसका आह्वान करता हूं। हमारे शस्त्र कल्याणकारी हों।

६. ओं यन्मे किंचिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन्।
तन्मे सर्वं समृध्यतां जीवतः शरदः शतम् ॥स्वाहा॥

हे वृत्रों (दुष्टों, आपत्तियों तथा रोगों) के नाश करने वाले इन्द्र, हमारे इस कर्म में जो कुछ कमी रह गई हो वह सब पूरी हो। हमारी आयु सौ वर्ष हो।

७. ओं सम्पत्तिर्भूतिर्भूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठ्यं श्रैष्ठ्यं श्रीः प्रजामिहावतु
॥स्वाहा॥ इदमिन्द्राय, इदं न मम।

सम्पत्ति, ऐश्वर्य, भूमि, वर्षा, आयु, श्रेष्ठता, शोभा और लक्ष्मी यहां प्रजा को प्राप्त हों। इन्द्र को लक्ष्य में रखकर यह आहुति है। यह मेरी नहीं है।

८. ओं यस्याभावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम्।
इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीतां सा मे त्वनपायिनी भूयात् कर्मणि ।स्वाहा।
इदमिन्द्रपत्न्यै इदं न मम।

इन्द्र (सूर्य और राजा) से रक्षित जिस सीता (हल की फाला और रेखा) के होने पर वैदिक लौकिक कामों का ऐश्वर्य प्राप्त होता है उसका सम्मान और प्रयोग करता हूं वह मेरे कर्म में दुःख को दूर करने वाली हो। यह आहुति इन्द्र की पत्नी हल की रेखा को लक्ष्य में रखकर है, मेरी नहीं।

९. ओं अश्वावती गोमती सूनृतावती बिभर्ति या प्राणभृतो अतन्द्रिता। खलमालिनीम् उर्वराम् अस्मिन् कर्मणि उपह्वये ध्रुवां सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा, इदं सीतायै इदम् न मम।

इस सीतायज्ञ (कृषि कर्म) में मैं ध्रुवा (हल के नीचे के मुख्य भाग) का उचित उपयोग करता हूं, वह हमारे लिए सुखकारी हो। वह ध्रुवा श्रेष्ठ घोड़ों तथा बैलों से युक्त, अच्छा अन्न उत्पन्न करने वाली होकर तथा सदा कार्य में लगकर (अन्न उत्पन्न कर) प्राणियों की रक्षा करती है।

१०. ओं सीतायै स्वाहा।

सीता (हल का फाला तथा हल की पद्धति) को लक्ष्य में रखकर यह आहुति है। सीता का सच्चा उपयोग हो।

११. ओं प्रजायै स्वाहा।

प्रजा (जनता) को लक्ष्य में रखकर यह आहुति है। प्रजा के प्रति सत्य क्रिया हो। (शेष पृष्ठ ७ पर)

वैदिक कालीन सोमः एक विश्लेषण-२

कृष्णा आचार्या रोहतक

विदुषी लेखिका कृष्णा आचार्या ने 'सोम' का ब्राह्मण ग्रन्थ आदि प्राचीन साहित्य के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया है। विद्वानों में यह एक विवादास्पद विषय है। आशा है इससे विद्वानों को समस्या के समाधान में सहायता मिलेगी। सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक

सोमपान की अभिलाषा

सोम इस काल में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं था और इसको प्राप्त करने की अभिलाषा सभी जन करते थे जिसका परिणाम यह हुआ कि सोम को प्राप्त करने के अभिलाषी जनों में छीना-झपटी तथा प्रति-स्पर्धा होने लगी थी। फलतः समाज के विशिष्ट जन ही इसका पान कर पाते थे। जन-साधारण को सोम उपलब्ध नहीं हो पाता था। सामाजिक संगठन में सोम को ब्राह्मणों का भक्ष्य बताया गया है। क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को सोमपान का अधिकार नहीं था। क्षत्रियों की अभिलाषा भी सोमपान करने के लिए रहती थी। अतः वे सोमपान करने के लिए सचेष्ट रहते थे। क्षत्रियों की सोमपान की उत्कट अभि-लाषा को पूरा करने के लिए सोमपान के रूप में न्यग्रोध, उदुम्बर, अश्वत्थ और पलाश के फलों और रसों के पान करने करने का विधान किया गया है।

सोमरस का निर्माण—

सोमलता को पानी में धोकर, पत्थरों पर पीसा जाता था। पीसने से लता का रस निकलकर नीचे बिछे—'चर्माधिषवण' पर एकत्रित हो जाता था। सोमरस को 'दशापवित्र' छनना ३ से छानकर द्रोणकलश में भरकर सुरक्षित रखा जाता था।

सोमरस को अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए इसमें दही, मधु, घृत, दूध आदि विभिन्न पदार्थों का सम्मिश्रण किया जाता था। कौषीतकि ब्राह्मण में मधुमिश्रित और घृतमिश्रित सोम का उल्लेख है। ६ ऋग्वेद में गवाशिर ७ दध्यशिर ८ पुरोडाश सोम ९ और भवशिर १० शब्दों का उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि वेद में आये इस वर्णन के आधार पर सोम को दूध, दही, पुरोडाश यव (जौ) आदि मिलाकर खाने या पीने के लिए अत्यन्त स्वादिष्ट बनाया जाता हो। यह भी सम्भव है कि विभिन्न प्रकार के रोगों पर सफल उपचार के लिए इस प्रकार का सम्मिश्रण किया जाता हो।

सोम के लाभ—

सोमपान करने से शरीर में विशेष प्रकार की कान्ति, ओज, बल और वीर्य की वृद्धि होती थी। सुश्रुत संहिता चिकित्सा स्थान अध्याय २९ में वर्णन है कि जो सोमपान करता है वह दीर्घायु प्राप्त करता है। अग्नि, जल, विष, शस्त्र और अस्त्र का प्रभाव सोमपान करने वाले पर नहीं होता, हाथियों के समान बल को प्राप्त कर लेता है और समस्त वेद वेदाङ्ग तत्वज्ञ होकर अव्याहत गति से विचरण करता है। भाव प्रकाश में सोम को त्रिदोष नाशक और रसायन कहा गया है।

आधुनिक अनुसन्धान—

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सोम एक लता थी जिसके रस का पान विभिन्न प्रकार से किया जाता था। वर्तमान समय में भी सोम पर सतत अनुसन्धान चल रहा है। यद्यपि वैदिक एवं आयुर्वेदिक ग्रन्थों में सोम का पर्याप्त वर्णन मिलता है तो भी सोम का वास्तविक स्वरूप विदित नहीं हो सका। किस प्रकार सोम को निकाला जाता था यह भी निश्चित नहीं हो सका है। आधुनिक अनुसंधाता सोमलता की प्राप्ति में पर्याप्त प्रयत्नशील है और अपने अपने परीक्षण के आधार पर उन्होंने विभिन्न वनस्पतियों को सोम की संज्ञा दी है।

२० दिसम्बर १९८० के साप्ताहिक पत्र 'धर्मयुग' में "डा० जयन्ती लाल ठक्कर और कृष्णचन्द्र विद्यासागर" का सोम के सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित हुआ है। लेख के साथ सोमलता व उसको कुटकर तैयार करने के उलूखल आदि के चित्र भी दिये गये हैं। जो गुजरात प्रान्त के ओखा मण्डल के वन्य प्रदेश टोबर स्थान से प्राप्त हुए हैं। उलूखलों का निर्माण इस प्रकार के पत्थरों से किया गया है, जिन पर जलवायु का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इन पर निर्माण के समय जो पालिश की गई थी वह भी वैसी की वैसी बनी हुई है। इनकी बनावट विशालता तथा अत्यन्त दुर्गम स्थान से प्राप्त होने के कारण अनुमान यह लगाया गया है कि इनका निर्माण लगभग चार हजार वर्ष पूर्व जंगलों में रहने वाले ऋषि मुनियों ने सोमरस को निकालने के लिए किया था।

इन दोनों अनुसंधाताओं ने इसी वन्य प्रदेश से एक लता प्राप्त की, जिसके गुणों का परीक्षण सफेद कोढ़, गजेपन, छाजन आदि पर सफ-लता पूर्वक किया गया है। इसके रस का प्रयोग डा० जयन्तीलाल ने स्वयं अपने लिए भी किया, इनका कहना है कि जिह्वा के नीचे तालु भाग में इसकी एक एक बूंद कभी कभी डालते रहने से उन्हें शक्ति का भाव होने लगा और कुछ ही वर्षों में वे ७० वर्ष की आयु में अपने आप को ५० वर्ष का अनुभव करने लगे। चलते समय उनके पैरों में जो दर्द होता था वह भी प्रायः दूर हो गया। इस लता के विषय में इनका कहना है कि जिन परिस्थितियों में तथा जिस विधि से सोम रस का पान किया जाता था, अगर उन्हीं परिस्थितियों में उसी विधि से इस लता के रस का पान किया जाये तो इसके वही परिणाम होंगे जिनका वर्णन वैदिक साहित्य में है।

सोम के खोज का वैज्ञानिक अभियान आज से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व हुआ जब १७८४ में 'भगवद्गीता' का अंग्रेजी में अनुवाद यूरोप में पहुँचा और यूरोपियनों में इस औषधि के दैविक गुणों को पढ़कर इसे प्राप्त करने की अभिलाषा हुई। यह जिज्ञासा इंग्लैंड में इतनी तीव्र हुई कि वहां की सरकार ने भारत स्थित कर्मचारियों को आदेश कि इस औषधि की खोज की जाये। यह वह समय था जब इंग्लैंड के वनस्पति शास्त्री भारतीय वनस्पतियों का अध्ययन कर रहे थे और यहां से वन-स्पतियों को उनके लेटिन नामकरण हेतु इंग्लैंड फ्रांस आदि देशों को भेज रहे थे। (क्रमशः)

गायत्री मन्त्र का रहस्य तथा महत्त्व

लेखक—सुखदेव शास्त्री आसन, रोहतक



दिल्ली की एक कुख्यात पत्रिका 'सरिता' में गायत्री मन्त्र के विषय में सुरेन्द्र शर्मा अज्ञात का एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें उन्होंने गायत्री के विषय में वेदों की निन्दा करते हुए तथा गायत्री मन्त्र का उपहास करते हुए इसे अधूरा मन्त्र बतलाया गया है। इसके छन्द तथा देवता आदि का भी मजाक उड़ाया गया है। असल में सरिता के लेखकों का सदैव यहीं प्रयत्न रहा है कि चाहे जैसे भी हो भारत की प्राचीन संस्कृति का खण्डन करके उसके स्थान पर दूषित मान्यताओं की स्थापना की जाय। उसके प्रत्येक प्रकाशन में भारतीय पुरातन संस्कृति के खण्डन का नियमित रूप से षड्यन्त्र रचा जाता है। इन सब षड्-यन्त्रों को आर्यसमाज सदैव विफल करता रहा है किन्तु सरिता वालो ने तो अपना यह ध्येय ही बना रखा है; हमारी ओर से जो नम्रतापूर्वक इनके लेखों के जो युक्ति प्रमाण सहित उत्तर भेजे जाते है उन्हे भी वे प्रकाशित नहीं करते। हमारे वैदिक धर्म के अनेको विद्वानो ने उन्हे शास्त्रार्थ के लिए भी ललकारा है पर वे इसे भी स्वीकार नहीं करते। तो अब क्या हो? इसमे मेरा विचार है कि यदि सरिता वालो का साहस हो, तो वे मुसलमानो अथवा ईसाइयो के मत के खण्डन में लिख कर देखें, उन्हें छठी का दूध याद दिला दिया जाएगा। सिख गुरुओ के विषय मे या उनके मत के विरुद्ध लिखकर देखे, उन्हे किस प्रकार मोटर साइकल वालो के दर्शन होगे, जैसाकि आजकल पंजाब मे निरकारियों को सहन करना पड़ रहा है। किन्तु इस प्रकार के कार्य ठीक नही होते; अपने विचारों के प्रचार का सबको अधिकार है किन्तु क्या किसी के युक्ति प्रमाण सिद्ध धर्म के विषय में अनर्गल लिखना कहा तक ठीक है? हम नही चाहते कि हम अपने विचारों को किसी के ऊपर बलात् थोपें किन्तु उन्हे भी चाहिए कि वे हमें ठेस न पहुँचाए। इसके साथ ही यह बात भी बहुत ही ठीक है कि मूर्ख, मक्कार लोग गायत्री के रहस्य और महत्त्व को क्या समझें।

आर्य धर्म ने मानव निर्माण का कितना सुन्दर प्रशस्त मार्ग का विधान किया है, यह तो उसके सिद्धान्तो के मनन करने से ही मनुष्य को पता लगता है। उसमें मानव को सुसभ्य, सुसस्कृत बनाने के लिए १६ सस्कारों का जीवन में प्रत्येक काल में करने की आज्ञा दी है।

जिस समय बालक पैदा होता है उस समय से लेकर मनुष्य के मृत्यु पर्यन्त संस्कारों का मनुष्य जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। गर्भाधान संस्कार, पहला संस्कार है जिसमें माता पिता को बहुत ही सयम से तथा अनुशासन में रहने का विधान है। बच्चे के पैदा होने पर 'जातकर्म' संस्कार होता है। यह बहुत ही महत्त्व का है। इसमें महर्षि दयानन्द ने एक बहुत ही रहस्य की बात का उल्लेख अपनी सस्कारविधि में किया है—वे लिखते हैं कि जिस समय बच्चा पैदा हो तो उसके होते ही बालक के कान में बच्चे का पिता कहे कि हे पुत्र! 'त्वं वेदोऽसि' अर्थात् तू वेद है। ज्ञानवान् है। ज्ञानी बनना। इसके बाद बालक की जीभ पर पिता सोने की शलाका से मधु (शहद) लगाकर 'ओ३म्' लिखे इसका अभिप्राय: यह है कि बचपन से ही बालक शहद जैसा मीठा बोलना आरम्भ करे, और वह आजीवन ईश्वर का भक्त बनकर रहे। अगले संस्कारों का प्रभाव भी ऐसा ही सुन्दर है। जब वह विद्या पढ़ने के योग्य हो जाय तब बालक का पिता उसके गले मे माला डालकर गुरु के पास ले जाये। वहां जाकर आचार्य से कहे—हे आचार्य जी! अथवा हे पितर!

आधत: पितरो गर्भं कुमार पुष्करस्रज,
यथेह पुरुषोऽसत् ॥ यजुर्वेद ॥

अर्थात् हे आचार्य! आप मेरे इस गले में माला डाले हुए बालक को अपने गर्भ मे अर्थात् अपने निकटस्थ रख लीजिए जिससे यह बालक पुरुष हो जाए। सच्चा मानव बनाने के लिए आचार्य की शिक्षा दीक्षा की अत्यन्त आवश्यकता होती है। महर्षि दयानन्द तीसरे समुल्लास में अध्ययन अध्यापन की विधि को अनिवार्य कार्य बताते हुए लिखा है—

इसमे राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पाचवें अथवा आठवे वर्ष से आगे अपने लड़को और लड़कियों को घर मे न रख सकें। पाठशाला मे अवश्य भेज देवे, जो न भेजे वह दण्डनीय हो। ····पिता माता व अध्यापक अपने लड़का लड़कियों को अर्थ सहित गायत्री मन्त्र का उपदेश कर दें वह मन्त्र यह है—

गायत्री का महत्त्व—

ओ३म् भूर्भुव स्व. तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो न: प्रचोदयात्। यजु० ३६-९

इस मन्त्र का अर्थ करते हुए महर्षि लिखते हैं—

इस मन्त्र में जो प्रथम (ओ३म्) है उसका अर्थ प्रथम समुल्लास में कर दिया है, वही से जान लेना। अब तीन महाव्याहृतियो के अर्थ संक्षेप में लिखते हैं—भूरिति वै प्राण: ··· जो सब जगत् के जीवन का आधार प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक होके 'भू:' परमेश्वर का नाम है। 'भुवरित्यपान:' — जो सब दु खो से रहित जिसके सग से जीव सब दु.खो से छूट जाते हैं इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'भुव:' है। 'स्वरिति' व्यान:— जोनानाविध जगत् मे व्यापक होके सब का धारण करता है इसलिए उस परमेश्वर का नाम स्व: है। ये तीनो वचन तैत्तिरीय आरण्यक (प्रपा०। अनु० ५) के है। 'सवितु' जो सब जगत् का उत्पादक और सब ऐश्वर्य का दाता है। देवस्य' जो सर्वसुखो का देने हारा और जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं उस परमात्मा का जो (वरेण्यम्) स्वीकार करने योग्य अतिश्रेष्ठ (भर्ग) 'शुद्धस्वरूपम्' शुद्धस्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है (तत्) उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग (धीमहि) 'धरेमहि' धारण करें। किस प्रयोजन के लिए कि (य:) जगदीश्वर: जो सविता देव परमात्मा (न:) अस्माक हमारी (धिय:) 'बुद्धी' बुद्धियो को (प्रचोदयात्) 'प्रेरयेत्' प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामो से छुडाकर अच्छे कामो में प्रवृत्त करे।

इससे कुछ आगे परमात्मा की स्तुति करने के बाद महर्षि लिखते हैं-इस प्रकार गायत्री मन्त्र का उपदेश करके संध्योपासना की जो स्नान आचमन, प्राणायाम आदि क्रिया है, सिखलावे। महर्षि ने जो इस गायत्री मन्त्र का अर्थ रूप में महत्त्व प्रकट किया है वह अद्भुत है। अनोखा है। महर्षि की प्रभुभक्ति का महत्त्वपूर्ण परिचायक है।

इस गायत्री मत्र को महर्षि के आने से पहले किसी को कोई अधिकार नही था कि कोई इसे मुख से बोले. कान से सुने, इस पर कोई चर्चा भी करे, महर्षि के पहले के सभी आचार्यों ने इसके महत्व को नही समझा था। शंकराचार्य जी ने तो वेदान्त पर भाष्य लिखते हुए ऐलान किया था—अथास्य वेमुपश्रृण्वत: त्रपुजतुभ्यां श्रोत्रप्रतिपूरणं, उच्चारणे जिह्वाच्छेद: धारणेशिरभेद: कर्त्तव्य: केवल गायत्री मन्त्र की तो बात ही छोड़ दीजिए यदि कोई ब्राह्मणों के अतिरिक्त वर्ग का व्यक्ति वेद का श्रवण करे तो सीसा पिघलाकर कानो में डाल दे, यदि गायत्री वा दूसरे मन्त्रों का उच्चारण करदे तो उसकी जीभ काट ली जाय और यदि कोई वेद किसी भी शिक्षा को धारण कर ले तो उसका शिर काट लेना चाहिए। यह थी पाबन्दी महर्षि के आने से पहले। (क्रमश:)

हरयाणा में आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज जीन्द—

संरक्षक—श्री छबीलदास आर्य, प्रधान—श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता, उपप्रधान-श्री देसराज एडवोकेट, श्री तेलुराम आर्य, सचिव—श्री कृष्णदेव शास्त्री, सहसचिव-श्री सुरेन्द्रसिंह पूनिया, कंवर महावीरसिंह एडवोकेट कोषाध्यक्ष—श्री सतप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री टीकायाराम आर्य

सर्व श्री धर्मवीर आर्य, कुशीराम आर्य, मोहनलाल आर्य, डाक्टर रमेश आर्य श्रीमती सरला गोयल, श्रीमती दर्शना आर्या, अन्तरंग सभा के लिए चुने गए।

स्त्री समाज जीन्द—

प्रधान—श्रीमती कौशल्या आर्या उपप्रधान—श्रीमति मनोहरमां देवी, सचिव-श्रीमति सरला गोयल, सहसचिव-श्रीमति विमला चौधरी कोषाध्यक्ष—श्रीमति ज्ञान देवी प्रचारमन्त्री-श्रीमति कृष्णा नेहरू

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव—

प्रधान—श्री मुन्शीराम सचदेवा, उपप्रधान—किशनचन्द कोटी महामन्त्री-विद्याभूषण शास्त्री, मन्त्री—ओमप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष-सोमनाथ आर्य, लेखानिरीक्षक—लाजपत आर्य

आर्यसमाज सैक्टर २३ न्यू टाऊन फरीदाबाद—

सरक्षक—श्री कन्हैयालाल महत्ता, प्रधान-महावीर प्रसाद मगला उपप्रधान—शान्तिस्वरूप खुराना, हरप्रसाद जी गर्ग, मन्त्री नोनकरन आर्य, उपमन्त्री-प्रमोदकुमार भल्ला, कोषाध्यक्ष-मूलचन्द खटोर, स्टोर इंजार्ज-मनमोहन लाल, सदस्य- श्रीमती शशि चांदना, सुरेन्द्रर कोष श्रीमती नीलम कोशिक, श्री सतीशकुमार मित्तल, श्री कमलनरायण

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल—

उपप्रधान—वैद्य रतिराम जी, नरदेव शास्त्री; लाला अनन्तराम मन्त्री—हरीशचन्द्र गुलाटी, उपमन्त्री—महाशय बनारसी लाल, प्रचार मन्त्री—बलदेवकृष्ण आर्य, कोषाध्यक्ष-लक्ष्मीनारायण राजपाल, पुस्तकाध्यक्ष-मास्टर धर्मचन्द, यज्ञ प्रमुख-श्री शंकरदास जी

अन्तरंग सदस्य—

श्री रूलियाराम जी एडवोकेट, विद्यासागर महत्ता, श्री ज्ञानसिंह कादयान, मास्टर जसवन्तसिंह, मास्टर बनारसीदास, रूपलाल बजाज प्रेमस्वरूप, हरिचन्द्र इन्सपेक्टर, प्रेमपाल सन्धू, सन्दीप लाठर, रणजीत सिंह मान, मूलचन्द आर्य, अनिलकुमार, लालचन्द, नरेन्द्रसिंह, श्री यज्ञदत्त (दयालसिंह कालोनी)

प्रतिष्ठित सदस्य—

श्री आनन्ददेव वानप्रस्थी, महाराज कृष्ण चोपड़ा, देवदत्त विज, डा० जयचन्द मिगलानी, श्री देशराज शास्त्री।

आर्यसमाज सफीदों—

प्रधान-श्री सुरजभान गर्ग, मन्त्री—फूलचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष—जयदेवसिंह, प्रतिनिधि—धर्मवीर जी

आर्यसमाज फतेहपुर जिला कुरुक्षेत्र—

संरक्षक—महाशय छज्जुसिंह, प्रधान—युधिष्ठिरपाल, उपप्रधान-अशोक कुमार, मन्त्री—देशबन्धु, उपमन्त्री—बृजभूषण आर्य, कोषाध्यक्ष सुभाषचन्द आर्य, लेखानिरक्षक—रामेश्वर दयाल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री ग्यासुराम आर्य, प्रचारमन्त्री-राजकुमार आर्य

अन्तरग सभासद—श्री कृष्णाचन्द

प्रतिनिधि—श्री युधिष्ठरपाल जी, श्री कृष्णाचन्द जी

आर्यसमाज पिजौर (अम्बाला)

प्रधान—श्री प्रेमचन्द शर्मा, उपप्रधान—श्री धर्मपाल, जोगेन्द्रपाल जी मन्त्री—राजेशसिंह, उपमन्त्री—आर्यवीर जी, कोषाध्यक्ष—रोमगोपाल पुस्तकाध्यक्ष—जयदास आर्य, प्रचारमन्त्री—सुशीलकुमार

नवयुग लाना है

उठो मेरे अब आर्य बन्धुओ पर कारज करते जाओ।
मन मन्दिर में त्याग तपस्या, सत्य न्याय भरते जाओ॥
देश धर्म के काम करो तुम शूल को फूल बना डालो।
झूठ कपट, चोरी जारी का जग से नाम मिटा डालो॥
संघर्षों से खेलो निश दिन प्रेम का पाठ पढ़ा डालो।
काम, क्रोध, लोभ मोह को मन से शीघ्र मिटा डालो॥
संकट में तो कभी न डरकर सीखो नहीं लक्ष छोड़ना।
और न सीखो बाधाओं में साहस को कभी तोड़ना॥
भारतीय संस्कृति पर छाई घोर घटायें काली हैं।
आर्य जाति के नाश हेतु योजना अरि ने बनाली है॥
धर्म प्रणेता दिव्य विजेता वेदों के परिचालक हो।
धर्म धुरी के महामनुज तुम मानव तप सिचालक हो॥
लगे रहो तुम शुभ कर्मों में तूफानों से टकराओ।
अन्याय के आगे सिर न झुके काल से भय ना खाओ॥
देश धर्म की रक्षा करने को मिल कर कदम बढाना है।
परोपकार के काम करके 'शादा' नवयुग लाना है॥

कविराज बनवारीलाल शादा
प्रधान आर्यसमाज मोडलबस्ती

भक्त फूलसिंह के प्रति

गायन्ति भक्त बहुशो जना: प्रिया:
धन्या नरा: ये तमनुस्मरन्ति।
भक्तोऽपि लोके प्रियतामवाप्नुवत्
भक्ता: जना: लोकप्रिया: भवन्ति॥१॥

भक्तोऽपश्यत् विष्णो: स्वरूपम्
दिववि चक्षु: भुवि आततं परम्।
भक्ता: हि पश्यन्ति सदा तमीशं
व्याप्त्या य: लोकान् सर्वान् बिभर्ति॥२॥

प्रकृतिरेषा भक्तस्य कुरुते सर्व समुन्नतिम्
भक्त: फूलसिंहोऽपि तानेव प्रकृतिं गत:॥३॥

हरिजनान् तृषितान् श्रुत्वा सदैव: दुखितोऽभवत्।
जगाम शीघ्रं तं ग्रामं यत्रासन् तृषिता: नरा:॥४

त्रि सप्तदिवस पर्यन्तमुपवासं चकार।
ग्रामे मोठ नामाख्ये कूपं निर्मितान सौ॥५॥

जयतु सुकृतिर्देव: यावच्चन्द्र दिवाकरौ।
बभूव तत्र जयघोष: महत्यां जन संसदि॥६॥

भवतु भक्तारीदृशा: सदैव
येषां प्रसारात् हरि सदृशा: जना:।
गायन्ति श्लोकान् विदुषां समक्षे
उच्चै स्वैर: वार्षिक संस्कृतोत्सवे॥७॥

प्रवेश सूचना

श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, निकट शादीपुर अम्बाला में प्राज्ञ, विशारद तथा शास्त्री श्रेणियों में नवीन प्रवेश आरम्भ हैं। प्रवेश के इच्छुक कक्षा आठ या दस पास छात्र प्रधानाचार्य से पत्र व्यवहार करें। शिक्षा, भोजन और आवास सर्वथा नि:शुल्क है।

सर्वहितकारी—साप्ताहिक पढ़िये-पढ़ाइये, १५) शुल्क भेजकर इसके ग्राहक बनिये-बनाइये तथा सर्वहितकारी कार्यों में तत्परतापूर्वक जुट जाइये। —व्यवस्थापक

सर्वहितकारी साप्ताहिक दयानन्दमठ रोहतक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरयाणा का ७१ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ८-९-१० अप्रैल १९८३ को धुमधाम मे मनाया जा रहा है जिसमें आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् स्वामी ओमानन्द जी महाराज, स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज, आचार्य प्रियव्रत जी, आचार्य सत्यप्रिय जी के अतिरिक्त अनेकों क्रान्तिकारी भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

उत्सव के मुख्य आकर्षण—

दिनांक २२ मार्च से १० अप्रैल डा० देवव्रत आचार्य की देखरेख में योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिक्षक शिविर।

गौ प्रदर्शनी—जिसमें दुग्ध प्रतियोगिता तथा सुन्दर बछड़े बछड़ियों को भी इनाम दिए जाएंगे।

योग प्रदर्शन—गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा कांच पिसना, सरीये मोड़ना और अनेकों प्रदर्शन

सांस्कृतिक कार्यक्रम—गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा

उपनयन संस्कार—गुरुकुल में ६-१० वर्ष के बच्चों का प्रवेश १ अप्रैल १५ अप्रैल तक होगा। उत्तम आवास, पंखे, बिजली, फ्लैश प्रबन्ध जैसी सुविधाएं। अध्यापन शुल्क नगण्य। केवल भोजन के १०० रु० प्रति मास लिए जाएंगे। उच्चकोटि के स्टाफ की देखरेख में ब्रह्मचारियों का नैतिक व शैक्षणिक विकास, खेलों की समुचित व्यवस्था अगर आप चाहते हैं कि आपके लाल का नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाए तो आज ही अपने बच्चे को वैदिक शिक्षा दिलाने हेतु गुरुकुल कुरुक्षेत्र से १ रुपया डाक टिकट भेजकर विवरण पत्रिका मंगायें।

प्रधान
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गुरुकुल आमसेना के वार्षिक महोत्सव पर—

३८ ईसाई परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित

गुरुकुल के १५ वें वार्षिक महोत्सव पर ६ मार्च को ३८ ईसाई परिवारों के १३० व्यक्तियों का शुद्धि समारोह उल्लासमय वातावरण में श्री हरिप्रसाद गुप्ता (खरिया रोड) की अध्यक्षता में श्री पं० विशिकेशन शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इन व्यक्तियों को शुद्धि की प्रेरणा श्री सुभाषचन्द्र शास्त्री ने दी।

इस अवसर पर स्वामी सत्यानन्द जी, प० देशपाल जी दीक्षित (बिहार) श्री विजयसिंह जी 'विजय' (मथुरा) आदि अनेकों विद्वान तथा अनेकों आर्यसमाजों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। गुरुकुल की ओर से मध्याह्नोत्तर एक भव्य शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया। महोत्सव के अवसर पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर में लगभग १००० व्यक्तियों ने आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति से लाभ उठाया। इस प्रकार गुरुकुल का उत्सव इस क्षेत्र की जनता के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है।

कब्र पूजा करने व कराने वाले गौघाती हैं

—आनन्दमुनि वानप्रस्थ

पानीपत १४ मार्च (का० प्र०) वेदप्रचार समिति के संयोजक श्री आनन्दमुनि वानप्रस्थी ने लोगों से आह्वान किया है कि सदियों के दबे मुर्दों से डरने वाली जागो हिन्दुओ अपने और पराए की पहचान करो कब्र पूजा हटाओ और देश को बचाओ।

श्री आनन्दमुनि ने कब्र पूजा के विरोध का नगर में अभियान चला रखा है। वह प्रत्येक वीरवार को कलेन्दर चौक में कब्र पूजा विरोधी कार्यक्रम भी रखते हैं। इस अभियान में उनका साथ हिन्दू संगठन भी खुलकर दे रहे हैं।

श्री आनन्द मुनि जी के अनुसार कब्र पूजा करने वाला नास्तिक होता है कब्र पर सिर झुकाने वाली माँ की सन्तान माता पिता देश धर्म और जाति की दुश्मन है। मुनि जी कहते हैं कब्र पूजा से समय, धन धर्म तथा देश की हानि होती है। कब्र पूजा करने वाले एवं चढावा लेने वाले निकम्मे व दुराचारी हो जाते हैं। उनकी सन्तान भी बेकार हो जाती है।

श्री आनन्द मुनि ललकार कर कहते हैं कि कब्र पूजा करने वाले गौघाती हैं। ऐसे लोगों को गौ हत्या से बढकर पाप लगता है क्योंकि कब्र बनती हैं मुसलमान की जो गौ हत्या करते हैं। इसलिए राम कृष्ण की सन्तान कहलवाने वाले तथा गौ को माता मानने वाले को कब्र पूजा नहीं करनी चाहिए।

होली

होली का त्यौहार मनाओ प्यार से।
होती दुनिया वश में सच्चे प्यार से।।

मिल-जुल करके खुशी मनाओ
वैर-भाव को दूर भगाओ
होगा फिर उद्धार, सच्चे...।।

ऊंच-नीच का भेद मिटाओ
बिछुड़ों को फिर गले लगाओ
होगा देश सुधार, सच्चे ...।।

गली-गली में यज्ञ रचाओ
दुर्गन्धि को दूर हटाओ
रहे न कोई बीमार, सच्चे... ।।

गाजे-बाजे खूब बजाओ
सुन्दर मीठे गीत सुनाओ
गाओ राग मल्हार, सच्चे...।

चन्दन अबीर गुलाल लगाओ
फूलों की माला पहनाओ
करो हार शृंगार, सच्चे... ।।

केले सन्तरे और मिठाई
बांट-बांट कर खाओ भाई
'हरि' को दो चार, सच्चे प्यार से।।

हरिदत्त वि० प्र०
बीयू १६० प्रीतमपुरा दिल्ली—११००३४

स्वामी दयानन्द और देव ब्राह्म समाजी

—स्वामी रामेश्वरानन्द जी आचार्य गुरुकुल घरोण्डा (करनाल)

प्रश्न—ब्राह्म समाज प्रार्थना समाज तो अच्छा है।

उत्तर—कुछ कुछ बातें अच्छी और बहुत सी बातें बुरी हैं।

प्र०—ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज सबसे अच्छा है इनके नियम बहुत अच्छे हैं।

उ०—नियम सर्वांश में अच्छे नहीं। वेद विद्या हीन लोगों की कल्पना सर्वथा सत्य क्यो कर हो। जो कुछ इन्होने थोडे मनुष्यों को ईसाई होने से और कुछ कुछ पाषाण मूर्तिपूजा से हटाया और जाल ग्रन्थो से बचाया इत्यादि बात अच्छी हैं परन्तु इनमें स्वदेश भक्ति बहुत थोडी है ईसाइयों के आचरण बहुत से ले लिए हैं। खान-पान विवाहादि के नियम बदल दिए हैं। अपने देश की प्रशसा तो दूर रही निन्दा भरपेट करते हैं ईसाई अग्रेजों की प्रशसा भरपेट करते हैं। ब्राह्म आदि महर्षियों का नाम नही लेते ये कहते हैं कि आज तक अग्रेजो के बिना कोई विद्वान् नही हुआ यहां के लोग सदा मूर्ख रहे हैं इनकी कभी उन्नति नहीं हुई। वेदों की निन्दा करते हैं ब्राह्म समाज के उद्देश्य पुस्तक में ईसा मूसा मोहम्मद नानक चैतन्य को ही साधु माना है किसी ऋषि का नाम नही लिखा इससे जान पड़ता है कि ये इन्ही मतों के अनुयायी हैं। इस देश में उत्पन्न हुए यहां का खाते पीते है। अपने माता पिता के मार्ग को त्याग कर विदेशियों के मत पर झुक जाना तथा इस देश की सस्कृत विद्या से रहित होकर इग्लिश भाषा पढकर विद्वान् मानकर अपना अलग मत चलाना स्थिर वृद्धि कारक काम क्यो कर हो सकता है अंग्रेज यवन आदि के साथ खाने पीने से हमारा देश सुधर जायेगा इन्होने यही समझा है।

अंग्रेज सैकड़ों वर्ष से अधिक दिनों से आया है। उसने अपनी रीति नही छोड़ी मोटा कपड़ा पहनता है। अपने मनुष्यों को व्यापार आदि में लाभ देता है अपने देश की उन्नति में तन मन धन लगाता है। तुम में से बहुत से लोगों ने अंग्रेजो का अनुकरण कर लिया। अनुकरण (नकल) करना बुद्धिमानो का काम नही इनमें जाति भेद भी है जब कोई अग्रेज किसी अन्य देश की स्त्री से अथवा स्त्री अन्य देश के मनुष्य से शादी कर लेते हैं तब सब अंग्रेज उसका निमन्त्रण साथ बैठकर खाना छोड़ देते हैं वह चाहे किसी पद पर क्यो न हो यह जाति भेद नहीं तो क्या है इत्यादि वे जैसा कहते हैं तुम वैसा मान लेते हो।

प्र०—हम कोई पुस्तक ईश्वर प्रणीत सर्वांश सत्य नही मानते मनुष्य बुद्धि निर्भ्रान्त नही होती। इससे उसके बनाये ग्रन्थ सब भ्रान्त है। हम सत्य ग्रहण करते है वह चाहे वेद बाईबिल कुरान मे हो उसे ग्रहण करते हैं असत्य किसी का नही।

उ०—जिस बात से तुम सत्यग्राही होना चाहते हो उसी बात से असत्य ग्राही भी ठहरते हो। जब सब मनुष्य भ्रान्ति रहित नहीं तो तुम भी मनुष्य होने से भ्रान्ति सहित हो जब भ्रान्ति सहित ग्रन्थों के वचन सत्य नहीं है तब तुम्हारे वचनों का भी विश्वास नहीं होगा इससे तुम्हारे वचन भी विश्वास के योग्य नहीं फिर तुम्हारे पुस्तक व्याख्यान भी विश्वास योग्य नहीं क्योंकि ग्रन्थों के समान तुम हो तुम कोई सर्वज्ञ नहीं इससे तुम कभी सत्य को त्यागकर असत्य भी ग्रहण कर लेते होंगे।

जो तुम कहते हो कि सब ईश्वर से प्रकाशित होता है तब तुम सर्वथा सत्याथ ऋषियों की आत्मा में प्रकाशित वेदों को क्यो नही मानते। तुमने वेद नही पढे न वेद पढ़ने की इच्छा करते हो फिर तुमको वेदोक्त ज्ञान क्यो कर हो सकेगा बिना उपादान कारण के जगत् की उत्पत्ति और जीवो की उत्पत्ति जैसे ईसाई मुसलमान मानते हैं वैसा मानते हो बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति और उत्पन्न वस्तु का नाश न मानना सर्वथा असम्भव है। तुम्हारा यह भी दोष है कि प्रार्थना और पश्चाताप से पापो की निवृत्ति मानते हो।

पौराणिक तीर्थ यात्रा आदि से १ जैनी नवकार मन्त्र से ईसाई ईसा पर विश्वास लाने से मुसलमान तोबा: कहने से पापो का नाश मानते हैं इससे पापों से भय न मानकर पाप बढे हैं। इससे ब्राह्म समाजी एवं देव समाजी पौराणिक आदि के समान हैं जो वेदो की सुने बिना भोगे पाप क्षमा न मानते यदि बिना भोगे पाप क्षमा हो जाये तो ईश्वर का न्याय नष्ट हो जाये। जो तुम जीव की अनन्त उन्नति मानते हो यह भी सत्य नही क्योंकि ससीम जीव के गुण कर्म स्वभाव का फल अनन्त नहीं हो सकता ससीम ही सभव है।

प्र०—परमेश्वर दयालु है ससीम कर्मों का फल अनन्त दे देगा।

उ०—यदि ईश्वर ऐसा करे तो उसका न्याय नष्ट हो जाये तथा सत् कर्मों की उन्नति कोई न करेगा और थोड़े से सत् कर्मों का अनन्त फल हो जाये तथा प्रार्थना एव पश्चाताप से पाप नष्ट हो जाये तो इससे पाप की वृद्धि और धर्म की हानि हो जायेगी।

(क्रमशः)

(१ का शेष)

१२. ओं शमायै स्वाहा ।

शमा (शान्ति तथा सुख) के लिए सत्य क्रिया हो। यह आहुति इसी के लिए है।

१३. ओं भूत्यै स्वाहा ।

भूति (सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य) प्राप्त करने के लिए सत्य क्रिया हो। उसी लक्ष्य के लिए यह आहुति है। (५-१३ मन्त्र संस्कारविधि में पार० २-१७ के हैं)

१४. व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ स्वाहा ॥ (यजु० १८-१२)

चावल, जौ, उड़द, तिल, मूंग, चना, कंगुनी, पतला चावल, समा, पसाई के चावल, गेहूँ, मसूर—ये १२ अन्न मेरे लिए यज्ञ (ईश्वर कृपा और कृषि) से प्राप्त हों।

१५. ओ वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावतः ।
वाजो नो विश्वैर्देवैर्धनसाताविहावतु ॥ स्वाहा ॥ [यजु० १८-३२]

हमारा वाज (अन्न, बल, यज्ञ, शस्त्र-ज्ञान) ७ लोकों और चार दिशाओं में सब देवों के द्वारा धन के विभाग में हमारी रक्षा करे।

१६. ओं वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयम् ॥ स्वाहा ॥

अन्न हमारे दान को सदा प्रेरित करता है, अन्न ऋतुओं के साथ दिव्य गुण उत्पन्न करता है, अन्न ही मुझको सबसे वीर उत्पन्न करता है, मैं अन्न का रक्षक स्वामी होकर सब दिशाओं को जीतूं।

१७. ओं वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्द्धयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयम् ॥ स्वाहा ॥ [यजु० १८-३३-३४]

अन्न हमारी सामान्य और मध्यम दशा से दिव्य गुणों को हवि के द्वारा बढ़ाता है; अन्न ही मुझको सबसे वीर बनाता है, मैं सब दिशाओं में अन्न-पति होऊं। (आगे के ७ मन्त्र १८-२६ तक अथर्व० ३-१७ के हैं)

१८. ओं सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक् ।
धीरा देवेषु सुम्नयौ ॥ स्वाहा ॥

विद्वानों में धीर, चतुर मनुष्य सुख देनेवाले खेत में हलों को जोतते हैं और जुओं को अलग-अलग बैलों के कन्धों पर रखते हैं।

१९. ओं युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम् ।
विराजः श्नुष्टिःसभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमा यवन् । स्वाहा ।

हे मनुष्यो ! हलों को जोड़ो, जुओं का विशेष विस्तार करो, यहां तैयार खेत में बीज बोओ। जब अन्न की बालें अन्न से भर जाएं तब पक्के अन्न को हंसुले से काट लें।

२०. ओं लाङ्गलं पवीरवत् सुशीमं सोम सत्सरु । उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद् रथवाहनं पीवरीं च प्रफर्व्यम् ॥ स्वाहा ॥

फाले से युक्त, सुखप्रद, अन्न के लिए बनाया गया हल पृथिवी को बोने योग्य करे, स्थिर मिट्टी को, जिस पर रथ चलते हैं, मोटी और भुरभुरी कर दे।

२१. ओं इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् । स्वाहा ।

सूर्य हल की पद्धति को किरणों से ग्रहण करे, उसको पोषक किसान सब प्रकार रक्षा करे। पानी से सींची हुई वह हमारे लिए प्रतिवर्ष अन्न पैदा करे।

२२. ओं शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान् । शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै । स्वाहा

अच्छे फाले भूमि को सुखपूर्वक अच्छी तरह से खोदें, किसान बैलों के पीछे सुखपूर्वक चलें। वायु, सूर्य, मेघ और किसान पानी खाद से उपजाऊ बनाकर इस संसार के लिए अच्छे फलों वाली औषधियाँ और अन्न उत्पन्न करें।

२३. ओं शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् ।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय ॥ स्वाहा ॥

हल खींचने वाले बैल घोड़े सुखी हों, किसान सुखी हों, हल खेत को अच्छे प्रकार से खोदे, रस्सियां अच्छे प्रकार से बाँधी जायें; पैना चाबुक सुख से ऊपर उठाकर चलाओ।

२४. ओं शुनासीरेह स्म मे जुषेथाम् ।
यद् दिवि चक्रथुः पयस् तेनेमामुप सिञ्चतम् ॥ स्वाहा ॥

हे वायु और सूर्य तुम दोनों अनुकूल होकर रहो। आकाश में जो जल तुमने उत्पन्न किया है उससे इस भूमि को सींचो।

२५. ओं सीते वन्दामहे त्वा अर्वाची सुभगे भव ।
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः । स्वाहा ।

हम हल की पद्धति की प्रशंसा करते हैं। उत्तम ऐश्वर्य देने वाली वह इस प्रकार अच्छी तरह प्रयुक्त की जाए कि जिस प्रकार हमारे मन को प्रसन्न करे और अच्छे अन्न फलों को दे सके।

२६. ओं घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः । सा नः सीते पयसाभ्या ववृत्स्व ऊर्जस्वती घृतवत् पिन्वमाना ॥ स्वाहा ॥

हल में लगी फाल तथा हल की पद्धति मीठे जल से सींची गई और विद्वानों तथा वेश्यो आदि सभी जनों से स्वीकृत हो। वह अन्न-रस तथा बल से युक्त घी दूध से तृप्त करने वाली जल, अन्न और दूध के साथ हमारे सब ओर विद्यमान रहे।

२७. ओं इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा । इदमिन्द्राग्निभ्याम् इदन्न मम ।
इन्द्र और अग्नि को लक्ष्य में रखकर सत्य क्रिया हो।

२८. ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।
इदं विश्वेभ्यो देवेभ्य इदन्न मम ।

सब देवों विद्वानों तथा प्राकृतिक शक्तियों के प्रति सत्य क्रिया हो। इसी को लक्ष्य में रखकर यह आहुति है। यह मेरे लिए नहीं है।

२९. ओं द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा । इदं द्यावापृथिवीभ्याम् इदन्न मम ।

द्योलोक और पृथिवी दोनों के प्रति हमारी सत्य क्रियायें हों। यह आहुति इसी का ध्यान दिलाने के लिये है, स्वार्थ के लिए नहीं।

३०. ओं स्विष्टमग्ने अभि तत्पृणीहि विश्वांश्च देवः पृतना अभिष्यक् । सुगन्नु पन्था प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरं न आयुः । स्वाहा ।

हे परमात्मन् आप हमारे सब इष्ट कर्मों को सिद्ध कीजिए। हमारे लिए सुगम मार्ग का निर्देश कीजिए जिससे हमारी आयु पूर्ण हो तथा वृद्धावस्था में भी हम हृष्ट पुष्ट रहें।

३१. ओं यदस्य कर्मणो अत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वम् स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान् समर्द्धय ॥ स्वाहा ॥ इदमग्नये स्विष्टकृते इदं न मम ॥ (आश्वलायन १-१०-२२)

इस यज्ञादि कर्म में मैने जो अधिक अथवा कम किया हो उसको इष्टकर्त्ता अग्नि (ईश्वर और नेता विद्वान्) जाने तथा मेरी सब आहुतियों को उत्तम इष्ट करे। सब प्रायश्चित्त की आहुतियों की कामना को समृद्धकर्त्ता अग्नि के लिए (यह है)। वह हमारी सब कामनाएं पूरी करे। यह सुवचन सत्य क्रिया है। यह अग्नि के लिए है, वह मेरा नहीं।

कन्या गुरुकुल की रजत जयन्ती

आर्य कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) का रजत जयन्ती महोत्सव १३, १४, १५ मई १९८३ शुक्रवार, शनिवार, रविवार को पूर्ण तैयारी के साथ मनाया जा रहा है। १०० मन गोघृत का महायज्ञ एक वर्ष से निरन्तर चल रहा है जिसकी पूर्णाहुति १५ मई रविवार को होगी।

मन्त्री
कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली–४०

रोहतक पब्लिक स्कूल में यौगिक प्रदर्शन



रोहतक पब्लिक स्कूल रोहतक का एक प्रसिद्ध कोचिंग स्कूल है। यहां के प्रधानाचार्य श्री दयानन्द जी आर्य आर्यसमाज के दृढ अनुयायी हैं और स्कूल के माध्यम से छात्र-छात्राओं में वैदिक धर्म की मान्यताओं का भी प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। ये बड़ी कुशल अध्यापक तथा अनुशासन प्रिय प्रधानाचार्य हैं। दिनांक २५-२-८३ को १० वीं कक्षा के विदाई समा-

(रोहतक पब्लिक स्कूल के दसवीं के छात्र ब्र० ओमदर्शन आर्य ग्रीवा से ४ सूत का सरिया मोड़ते हुए।)

रोह के अवसर पर उन्होने अपने स्कूल के दसवीं कक्षा के सुयोग्य छात्र श्री ओमदर्शन आर्य के यौगिक प्रदर्शन का आयोजन किया। इस अवसर पर स्कूल के अध्यापक, अधिकारी तथा छात्र-छात्राओं के अभिभावक एवं निमन्त्रित अतिथि महानुभाव बड़ी संख्या में उपस्थित थे। श्री ओमदर्शन इस अवसर पर रेचक, कुम्भक आदि प्राणायाम सम्बन्धी अनेक योगासन गर्दन से ४ सूत का सरिया मोड़ना, हथेली से कांच पीसना आदि अनेक यौगिक प्रदर्शन किए। जिसे देखकर दर्शक आश्चर्य चकित रह गए। छात्रों में इससे प्राचीन योग-शिक्षा की प्रेरणा ली। आज के वातावरण में विद्यालय महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर भी योग-विद्या के प्रशिक्षण की अत्यन्त आवश्यकता है। श्री ओम्-दर्शन आर्य डा० बलवीर आचार्य के योग-शिष्य हैं।

—ओमप्रकाश आर्य संयोजक

आर्यसमाजों, गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज आहूलाना जिला सोनीपत		२२, २३ मार्च
गुरुकुल घरोण्डा जिला करनाल		२५, २६, २७ ,,
आर्यसमाज गुन्दयाना जिला कुरुक्षेत्र		,, ,, ,, ,,
,,	मुवाना जि० जीन्द	,, ,, ,, ,,
,,	प्रेम मोहल्ला ताबडू जिला गुड़गांव	,, ,, ,, ,,
,,	मन्धार जिला कुरुक्षेत्र	२७-२८-२९ ,,
,,	सांघी जिला रोहतक	२-३ अप्रैल
,,	भूरथला जिला रोहतक	२-३ ,,
,,	दामला जिला अम्बाला	२-३-४ ,,
,,	हसनपुर जिला फरीदाबाद	१-२-३ ,,
,,	नरेला (दिल्ली)	१-२-३ ,,
कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जिला करनाल		२-३-४

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

...पंजीकरण संख्या ... 23207/73 ...

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'



प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री   सम्पादक—श्री० ... आचार्य, ...

वर्ष १०, अंक १६   २८ मार्च १९८३   वार्षिक शुल्क ...   ...   एक प्रति ... पैसे

अकाली वार्ता में न आए तो केन्द्र एक पक्षीय निर्णय लेगा : सेठी त्रिपक्षीय वार्ता पुनः होगी, शिरोमणि कमेटी से अपराधी पुलिस के हवाले करने का अनुरोध

नई दिल्ली, २१ मार्च (जी० एस० चावला) केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री पी० सी० सेठी ने आज लोकसभा में घोषणा की कि केन्द्र सरकार पंजाब समस्या पर अकालियों को शीघ्र ही वार्ता के लिए पुनः आमंत्रित करेगी पर यदि अकाली वार्ता में भाग लेने न आए तो सरकार पहले हुई त्रिपक्षीय वार्ताओं व अन्य राज्यों के साथ हुए परामर्शों के आधार पर एक पक्षीय रूप से अपने निर्णय की घोषणा कर देगी।

श्रीमती गीता मुकर्जी (सी. पी. आई.) रतनसिंह राजदा (जनता) गुरचरणसिंह निहालसिंहवाला (इंका) द्वारा प्रस्तुत ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के उत्तर में गृहमन्त्री ने सदन को आश्वस्त किया कि निहित स्वार्थी तत्त्वों द्वारा अपराधियों व सशस्त्र अवांछित तत्त्वों से गठजोड़ करके धर्म स्थानों को अपवित्र व अपमानित करने की बढ़ रही प्रवृत्ति के बारे में सरकार शीघ्र ही कार्रवाई करेगी।

गृहमन्त्री ने कहा कि त्रिपक्षीय वार्ता में उठे मसलों पर सरकार विचार कर रही है और देख रही है कि क्या अकाली वार्ता के अगले दौर में भाग लेने के लिए आ सकते हैं।

श्री सेठी निहालसिंहवाला की इस बात से सहमत थे कि सरकार द्वारा अपनाए गए थोड़े ढीलेपन के कारण जरनैलसिंह भिंडरावाला हीरो बन गए। पर गृहमन्त्री ने कहा कि अतीत में चाहे जो गलतियां हुई हों, अब मौका नहीं दिया जाएगा···(व्यवधान)··· केन्द्र पंजाब सरकार से कहेगा कि ऐसे मामलों में कठोरता से निपटा जाए।

उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार धार्मिक स्थानों की पवित्रता बनाए रखने और उन्हें असामाजिक तत्त्वों का शरणस्थल बनने से रोकने के लिए आचार संहिता तैयार करने के लिए शीघ्र ही त्रिपक्षी दलों के नेताओं की एक बैठक बुलाएगी।

मौलाना अब्दुल वैदिक धर्म में प्रविष्ट

हजरत मौलाना अब्दुल हई साहिब जो बरबीघा(मुंगेर) बिहार के मुस्लिम मजहब के इमाम (आलिम) थे उन्होंने २१ फरवरी १९८३ को आर्यसमाज बरबीघा (मुंगेर) में यज्ञानुष्ठान के पश्चात् वैदिक धर्म में प्रवेश करते समय निम्न उद्गार प्रकट किए।

आपने कहा कि मैं मुस्लिम घर में पैदा हुआ उर्दू अरबी और अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की और एक लम्बे अरसे तक इमाम के रूप में मुस्लिम जगत् की खिदमत भी की, लेकिन दिल और दिमाग को सकून हासिल न हुआ ऐसा लगता था कि मैं तारीकी में भटक रहा हूं। मुझे पता चला कि मेरे दोस्त मौलाना सैय्यद खुर्शिदआलम साहब, इस्लाम तर्क कर श्री जयप्रकाश आर्य बन चुके हैं। मैंने उनसे खती किताबत की उन्होंने मुझे वैदिक धर्म की कुछ किताबें भेजी और इधर मेरी श्री राजेन्द्र जी सर्राफ प्रधान आर्यसमाज बरबीघा (मुंगेर) से बातें होती रही आखिर मेरी आत्मा में आगाज हुआ कि क्यों अंधेरे में भटक रहा है? वैदिक धर्म की शरण आ। इसलिए मैं अपनी बीबी और ५ बच्चों सहित इस्लाम तर्क करके वैदिक धर्म की सेवा में आया हूं। अब यह सारी उम्र वैदिक धर्म की सेवा में ही बीतेगी। आशा है आप सभी भाई बहन हमें अपनाकर हमारी खिदमतों का मंजूर करेंगे।

'जो बोले सो अभय – वैदिक धर्म की जय'

आर्यसमाज स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक मनावें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ने हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से अपील करते हुए कहा है कि इस वर्ष आर्यसमाज स्थापना दिवस अप्रैल मास में अपनी-२ सुविधा के अनुसार उत्साह पूर्वक धूमधाम से मनावें। इसी वर्ष नवम्बर में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी समारोह मनाये जाने की तैयारियां हो रही हैं।

हरयाणा की जनता पर आर्यसमाज का विशेष प्रभाव है। यहीं भारत भर में सबसे अधिक गुरुकुल स्थापित हैं जहां हजारों की संख्या में छात्र तथा छात्राएं वैदिक शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। आर्यसमाज के प्रत्येक आन्दोलनों में भी यहां की जनता ने सर्वाधिक संख्या में शामिल होकर भाग लिया है।

अतः आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने प्रदेश में आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार के लिए आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाने की तैयारी करें। इस अवसर पर प्रभात फेरियां तथा विशेष यज्ञ सभा एवं सार्वजनिक सभा का आयोजन करें। सभा कार्यालय से प्रचारार्थ ट्रैक्ट विश्व को आर्यसमाज का सन्देश तथा आर्यसमाज की विचार धारा आदि मंगवाकर मुफ्त वितरित करें। सभा की ओर से उपदेशक तथा भजन मण्डलियां भी भेजने का यत्न किया जावेगा। सर्वहितकारी पत्रिका में भी आर्यसमाज के विद्वानों के लेख प्रकाशित किये जावेंगे।

सभा मन्त्री

होली का पर्व

सुखदेव शास्त्री सभा उपदेशक

हमारे देश में चार पर्व मुख्य रूप से मनाए जाते हैं। ये हैं दीवाली; दशहरा, श्रावणी और होली। ये चारों पर्व ऋतुओं के अनुसार होते हैं। पर्व त्यौहार कुछ राजनीतिक भी होते हैं जैसे पन्द्रह अगस्त स्वाधीनता दिवस, छबीस जनवरी गणतन्त्र दिवस आदि। कुछेक महापुरुषों से सम्बन्धित होते हैं। उन्हें ऐतिहासिक भी कहा जाता है। जैसे शहीदी दिवस आदि।

होली का पर्व सारे देश में फाल्गुन शुदि पूर्णिमा को मनाया जाता इस त्यौहार का ग्रामीण किसानों से विशेष सम्बन्ध है। इसे होलकोत्सव भी कहा जाता है और आषाढी नवसस्येष्टि भी इसे कहते हैं। आषाढी शस्य (साढी) की फसल भारत की सब फसलों में सर्वश्रेष्ठ है। इसे किसान बड़े परिश्रम से तैयार करता है। इसमें विशेषकर गेहूं, चना, जौ, मटर, गन्ना आदि की फसल होती हैं। जब ये फसलें पक कर तैयार हो जाती हैं। तब नये अन्न को घर में आने की आशा से किसान बड़ी खुशियां मनाता है। जिन्होंने आषाढ से लेकर वषभर कड़ी जुताई करके अपने खेतों को तैयारी की थी, अच्छे अच्छे बीज बोकर, खाद, पानी देकर फसल को तैयार किया था, तब ऐसे समय में किसान भला आनन्द में विभोर क्यों ना हो जाए। इसे देश के सभी किसान मानते हैं और सृष्टि के प्रारम्भ से इस पर्व का बड़ा महत्त्व माना गया है। इसके साथ ही जाड़े का मौसम प्रायः समाप्त सा हो जाता है। फागन का मस्त महीना होता है। गर्म कपड़ों को लोग अब त्यागना आरम्भ कर देते हैं। इन दिनों में हरयाणा में कई शिवजी के मेले भी भरते हैं। लोग बड़ी खुशी से कुश्तियां करते हैं। बड़ी तैयारी के साथ पहलवान मेलों में आकर कुश्ती लड़ते हैं। हरयाणा के जवानों की ताकत की कड़ी परीक्षा होती है। ढोल की थाप पर जब नौजवान पहलवान अखाड़े में उतरते हैं तब हरयाणवीं जवान बहुत सुन्दर लगते हैं। असली जवानी के दर्शन होते हैं। स्थान स्थान पर गीत भजन संगीत भी होते हैं। बीन बांसुरी का लहरा, बेंजो की पतली सुरीली कानों को आकर्षित करने वाली आवाज, रबड़ बांधकर घड़वे पर जब थाप लगती है तब यह नजारा देखते ही बनता है। हरयाणवी तर्ज में जब ऊंची आवाज में संगीत शुरु होता है, तब साथियों में समां बन्ध जाता है।

इधर मस्त महीने फागन में सहेलियों के विरही गीत जब सुनते हैं तो तब सारा वातावरण गुंजित हो उठता है। शरीर में एक अजीब सी, अनोखी सी अनुभूति होती है। बूढा भी जवान हो उठाता है। बेचारी बुढिया भी आज धरती पर एड़ी मारकर छोटी सहेलियों को उत्साहित करती है। सभी स्त्री पुरुष बड़े प्रसन्न दिखाई देते हैं। ग्राम के चारों ओर कई महीने पहले इकट्ठी की हुई कैर की लकड़ियों में जब आग देते हैं और उसमें गाय के उपले डालकर जब उसे प्रज्वलित करते हैं तो सारा आकाश गर्म हो उठता है। ग्रामवासी आज चाहे इसका असली रूप भूल बैठे हों, फिर भी यह पर्व अपना-सा कुछ अपनापन तो लिये ही रहता है। सदियों से इस पर्व का कुछ रूप तो बिगड़ सा गया है, लेकिन इतना विकृत होने पर भी यह मनाया जाता रहा है इसलिए इसका अपना बड़ा महत्त्व है। आज किसी से आप पूछें तो इसके विषय में कोई बहुत महत्त्व की बात नही बता सकता। किन्तु प्राचीन आर्य ऋषि मुनियों तथा यहां के शिक्षित किसानों ने इसके महत्त्व को जानकर ही इसका प्रारम्भ किया था। इसे मनाया, मनाते रहेंगे।

जब किसानों के घरों में नये अन्न के आने की आशा जगती है, तभी वे अन्न आने से पहले ही सारे घर को हवनयज्ञादि से पवित्र किया करते थे। यज्ञ से ही ग्राम को चारों ओर से पवित्र किया जाता था। सभी लोग सामूहिक रूप से यज्ञ करते थे। यज्ञ में विशेष रूप से नए आगत अन्न जौ आदि की आहुति देते थे। गुड़-शक्कर तिल-सरसों को सामग्री में मिलाकर अग्नि में डालते थे।

यह यज्ञीय प्रदेश था, अतः यहां के लोगों को बहुत प्रिया था, क्योंकि वे यज्ञ के लाभों से पूर्ण परिचित थे। अतः सभी कार्यों के प्रारम्भ में वे यज्ञ किया करते थे। होली भी सामूहिक यज्ञ का ही एक रूप था। गेहूं चने की फसल जब पकने लगती थी, तभी गुग्गल आदि की सामग्री को अग्नि में डालकर वायु को संशोधित करके फसल को कीट आदि से रहित करते थे। उस समय के किसान कृषि विज्ञान के पूर्ण रूप से विशेषज्ञ थे। होली में भी कैर की लकड़ी डाली जाती थी, इसका भी एक बड़ा रहस्य है तथा गाय के गीले गोबर के उपले उसमें क्यों डाले जाते थे इसका भी अपना बड़ा महत्त्व है। साथ ही कैर की लकड़ियों के खांडे रंग करके क्यों डालते थे, इसका भी अपना बड़ा स्थान है।

यज्ञ के विशेषज्ञ इस रहस्य को बतलाते हैं कि आषाढी फसल पूरी पक चुकी है, अब इसे वर्षा के पानी की आवश्यकता नहीं रही। अतः वर्षा न हो, इसके लिए कैर की लकड़ी अग्नि में डाली जाती थी साथ ही गाय के गोबर के गीले उपले जब मन्दी जलती हुई कैर की लकड़ियों पर अग्नि में डालते तो उससे जोर का धुआं आकाश में चढ जाता था, उससे आकाशीय बादल फट जाते थे और वर्षा रुक जाती थी। वर्षा रोक दी गई, कैर की समिधा तथा गाय के गीले उपलों के धुवें में बादल को फाड़ने की शक्ति है। इस प्रकार समिधाएं तथा सामग्री के प्रयोग करने से वर्षा होती है, और इस प्रकार के शाकल्य से वर्षा बन्द होती है, इस विज्ञान को भारत के किसान पूरी तरह से जानते थे। अतः उन्हें यह यज्ञ करना पड़ता था। यदि वे यज्ञ करके वर्षा को बन्द न करते तो असामयिक वर्षा ओलावृष्टि होकर फसल नष्ट होने की पूरी सम्भावना होती थी। यही होली के पर्व के मनाने का असली कारण था क्योंकि 'होला' संस्कृत में अन्न को ही कहते हैं। उस नये अन्न के पक जाने पर जो उत्सव या पर्व मनाया जावे उसे ही होलकोत्सव कहा जाता है। चने की अधपकी कच्ची टाटों को तोड़कर अग्नि में अधपकी करके लोग उसे खाते हैं। उसे भी होले कहा जाता है। यही इसका असली रूप है। गेहूं जौ की बालियों को भी लोग भूनकर खाते थे।

कालान्तर में इस पर्व का रूप बिगड़ गया। जैसे आजकल बिगड़ा हुआ है। ग्राम के लड़के लड़कियां एक स्थान पर जोहड़ के पास कई महीने पहले इधर-उधर से जाल, कीकर की लकड़ियां या झाड़-झंखाड आदि लाकर ग्राम के गोरे इकट्ठी डाल देते हैं, महीने बीत जाने पर उस में चिड़ियां कीटो आदि पक्षी ब्या जाते हैं, होली के दिन अनपढ़ ब्राह्मण के द्वारा उसमें 'अग्न्याधान' करवाते हैं, जिससे जोर की आग धधक उठती है, सभी जीव जन्तु जो उसमें थे, वे भी साथ ही जल उठते हैं। उसमें कन्याएं गोबर के उपले डालती हैं जिसका कोई लाभ नहीं होता। एक नाममात्र की होली जलाई जाती है।

[शेष ८ पर]

आर्यसमाज की गतिविधियां—

पं० चन्द्रसैन वैदिक मिश्नरी हरयाणा लौटे

पं० चन्द्रसैन जी वैदिक मिशनरी सभा की ओर से वैदिक धर्म प्रचारार्थ गत २-३ मास से मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र बम्बई आदि में भ्रमण करके गत सप्ताह हरयाणा में लौट आये हैं। आपकी प्रचार यात्रा सफल रही। अनेक स्थानों पर विशेष समारोह के अवसर पर आपके प्रभावशाली व्याख्यान हुए। आपने प्रचार यात्रा में सभा के सर्वहितकारी पत्रिका के २०० के लगभग नये ग्राहक बनाये तथा सभा के भवन निर्माण के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त की। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने आपका प्रत्येक स्थान पर स्वागत किया। इन्दौर निवासी श्री आर्यकुमार और श्री सूर्यदेव के विशेष योगदान के लिए सभा आभारी रहेगी। सभा मन्त्री

आर्यसमाजों, गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

गुरुकुल कुरुक्षेत्र	८-९-१० अप्रैल
आर्यसमाज रेजमेण्ट बाजार अम्बाला छावनी	,, ,, ,,
स्त्री आर्यसमाज कैथल जि० कुरुक्षेत्र	११-१२-१३ ,,
आर्यसमाज नरवाना (जीन्द)	१५-१६-१७ ,,
बेरी मेले पर प्रचार	१७-१८ ,,
आर्यसमाज माडलटाउन सोनीपत	२२-२३-२४ ,,
,, खेल बाजार पानीपत	२९-३० अप्रैल १ मई
,, जैकमपुरा गुड़गांव छावनी	,, ,, ,, ,, ,,
,, रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ	७-८-९ ,,
,, लोहारू जिला भिवानी	७-८-९ ,,
,, लालकुर्ती बाजार अम्बाला छावनी	६-७-८ ,,
,, आयुध निर्माण मुरादनगर (उ० प्र०)	६-७-८ ,,
कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली)	२१-२२ ,,
आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप जिला अम्बाला	१५ से २२ ,,
,, खानपुर जिला महेन्द्रगढ	२१-२२ ,,

दिल्ली में महात्मा हंसराज दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली, डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी चित्रगुप्ता मार्ग, आर्य केन्द्रीय सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली आर्य संस्थाओं एवं आर्य जनता की ओर से प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज जी का दिवस समारोह १७ अप्रैल १९८३ को प्रात: ९ बजे से १२ बजे तक तालकटोरा गार्डन-इन्डोर स्टेडियम नई दिल्ली में मनाया जायेगा।

प्रात: ९ बजे यज्ञ आरम्भ होगा और १० से १२ बजे तक सार्वजनिक सभा होगी जिसमें महात्मा हंसराज जी को श्रद्धांजलि अर्पित की जायेगी। रामनाथ सहगल
सभा मन्त्री

हरयाणा में आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज फरमाना जिला रोहतक—

संरक्षक—आचार्य हरिश्चन्द्र, प्रधान—श्री बनारसीदास, मन्त्री—श्री धूपसिंह सारण, कोषाध्यक्ष—श्री बलबीरसिंह, लेखानिरीक्षक—श्री नन्दलाल सरपंच, श्री राजेन्द्र शास्त्री

आर्यवीर दल फरमाना का गठन—

प्रधान—श्री जयसिंह आर्य, मन्त्री—सुरेन्द्र, कोषाध्यक्ष—कुलदीप आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री जयसिंह आर्य, निरीक्षक—बलबीर आर्य

आर्यसमाज सजपुर जिला सोनीपत—

प्रधान—श्रीमति शान्ति राठी, वरिष्ठ उपप्रधान—श्री धर्मसिंह उपप्रधान—बालकिशन, छत्तरसिंह, कोषाध्यक्ष— रोहतास, मन्त्री—रघुबीरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—मूलचन्द, उपप्रचार मन्त्री— श्री महेन्द्रसिंह रतनसिंह।

चौ० प्रियव्रत रोहतक जाट शिक्षण संस्थाओं के प्रधान निर्वाचित



चौ० प्रियव्रत

२० मार्च को रोहतक स्थित जाट शिक्षण संस्थाओं का चुनाव पंजाब हरयाणा हाईकोर्ट की देखरेख में सम्पन्न हुआ। इस चुनाव में प्रधान पद पर प्रसिद्ध आर्य नेता एवं उद्योगपति चौ० प्रियव्रत भारी बहुमत से विजयी हुए। इसी प्रकार श्री दर्शन सिंह उपप्रधान, श्री हरिसिंह मलिक मन्त्री तथा श्री मेहरसिंह देशवाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

आशा है चौधरी प्रियव्रत के नेतृत्व में ये शिक्षण संस्थाएं पूर्व की भांति शिक्षा के प्रसार में एक आदर्श प्रस्तुत करेंगी। जाट स्कूल में आर्य समाज भी स्थापित थी और छात्रावास में दनिक सन्ध्या यज्ञ व वैदिक सत्संग का आयोजन भी होता था। इन संस्थाओं के पूर्व छात्र आजकल बड़े-२ पदों पर कार्यरत हैं।

लन्दन की चिट्ठी—

शिवरात्रि तथा ऋषिबोधोत्सव

आर्यसमाज के तत्वावधान में १३ फरवरी १९८३ को ऋषिबोधोत्सव बड़े उल्लास पूर्वक वन्देमातरम् भवन में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध भारतीय उद्योगपति श्री स्वराजपाल व उनकी धर्मपत्नी श्रीमति अरुणापाल थे। इस अवसर पर आयोजित वृहत यज्ञ के ब्रह्मा पं० विश्वबन्धु तथा यजमान श्री कुमार परिवार थे।

यज्ञोपरान्त समारोह के अध्यक्ष प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने श्री स्वराजपाल का परिचय देते हुए बताया गया कि जालन्धर का यह आर्य परिवार प्रारम्भ से ही वैदिक संस्कृति का उपासक रहा है। श्री स्वराज पाल के दादा जी को महर्षि दयानन्द जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तभी से यह सम्पूर्ण परिवार कर्त्तव्य निष्ठ आर्य हैं। जहां इस परिवार में एक ओर भारत के उद्योग में अपना उच्च स्थान बनाया है वहाँ श्री स्वराजपाल भी ब्रिटेन के प्रमुख उद्योगपतियों की श्रेणी में आते हैं। श्री पाल आर्योन्नति के साथ साथ भारत ब्रिटेन मंत्री भूमिका में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। श्री पाल के प्रयत्नों से ही सुप्रसिद्ध केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में जवाहरलाल नेहरू चेयर की स्थापना हुई जिनके लिए श्री पाल प्रतिवर्ष तीस हजार पौण्ड दान देते हैं। तत्पश्चात समीर चड्डा व मोना गाजरी ने श्रीमति स्वराजपाल का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। अरुण व तैजिला कोछड़ ने ऋषि बोधोत्सव पर अंग्रेजी में लघुनाटिका प्रस्तुत की जिससे प्रभावित होकर श्री पाल ने उन्हें पुरस्कृत किया। पुनीता गाजरी ने अंग्रेजी में अपने विचार प्रकट किए तथा मोना गाजरी ने गीतांजलि में से एक कविता सुनाई। उपप्रधान श्री धर्मवीर पुरी की उर्दू में स्वरचित कविता ने सबका मन मोह लिया।

समारोह के अध्यक्ष प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने ऋषि बोधोत्सव की घटना तथा उसके फलस्वरूप भारत में हुई धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्रान्तियों पर विस्तार से शोक प्रस्ताव डालते हुए वर्तमान समय में आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे महत्त्वपूर्ण कार्यों के सम्बन्ध में बताया। श्री कपिलदेव प्रिजा की कविता के पश्चात् कार्यवाहक मन्त्री श्री राजेन्द्र ग्रोवराय ने सूचनाएं दी। सामूहिक भजन 'धन्य हैं तुझको हे ऋषि'···के साथ ही शान्तिपाठ हुआ तथा यजमान कुमार परिवार द्वारा प्रदत्त प्रीतिभोज का सबने आनन्द लिया।

प्रेषक—गिरीशचन्द्र खोसला

स्वामी दयानन्द और देव ब्राह्म समाजी

—स्वामी रामेश्वरानन्द जी आचार्य गुरुकुल घरोण्डा (करनाल)

(गतांक से आगे)

प्रश्न—हम स्वाभाविक ज्ञान को वेद से भी बडा मानते हैं क्योंकि स्वाभाविक ज्ञान ईश्वर प्रदत्त है यदि स्वाभाविक ज्ञान हममे न होता तो हम वेदों को भी न समझ सकते न पढ सकते थे।

उत्तर—जो स्वाभाविक ज्ञान है वह किसी का दिया नही है। वह सहज ज्ञान है जो किसी का दिया हुआ ज्ञान है वह स्वाभाविक नहीं है। स्वाभाविक ज्ञान घटता बढता नही है। स्वाभाविक ज्ञान जगली मनुष्यों में भी है। वह अपनी उन्नति स्वाभाविक ज्ञान से आज तक भी कुछ नही कर सके।

नैमित्तिक ज्ञान ही उन्नति का कारण है। देखो बाल्यवस्था में हम तुम को कत्तव्याकर्त्तव्य का कोई ज्ञान नही होता स्वाभाविक ज्ञान के होते हुए भी जब विद्वानो से पढा सुना तब धर्माधर्म का ज्ञान हुआ है अर्थात् ईश्वर का ज्ञान ऋषियों को न मिला होता तो हम तुम जंगली मनुष्यों के समान होते। इससे नैमित्तिक ज्ञान ही उन्नति का कारण है।

जो तुमने पूर्व और पुनर्जन्म नही माना यह ईसाई मुसलमानों से लिया। जीव और उसके कर्म प्रवाह से अनादि अनन्त है कर्म और कर्म-वान् का नित्य सम्बन्ध है यदि पूर्वा पर जन्म न माने तो कृत हानि तथा अकृत अभ्यागम वैषम्य और नैर्घण्य दोष ईश्वर पर आता है।

यदि पुनर्जन्म न हो तो किये कर्मों के फल की हानि होगी और पाप पुण्य का फल बिना जन्म के कैसे होगा। जो दूसरे को हानि लाभ सुख दुःख दिया जाता है उसका फल जन्म शरीर धारण करके ही मिलता है और यदि इसमें पूर्व जन्म न था तो इस जन्म में हानि लाभ सुख दुःख कैसे होगा। यदि बिना पूर्व जन्म के पाप पुण्य के सुख दुःख होवे तो परमेश्वर अन्यायकारी होगा। दिव्य गुण वाले पदार्थों और विद्वानो को भी देव न मानना ठीक नही क्योंकि परमेश्वर देवों का देवन हो तो वह महादेव कैसे होगा।

अग्नि होत्रादि परोपकारक कर्मों को न मानना भी अच्छा नहीं तथा ऋषि महर्षियों के उपकार न मानकर ईसा आदि के पीछे झुक जाना ठीक नही। बिना कारण वेद विद्या के अन्य विद्या की प्रवृत्ति मानना ही असम्भव है।

विद्या का चिन्ह यज्ञोपवीत और शिखा को त्याग कर ईसाई मुसलमानों के समान बन बैठना ठीक नही जब पतलून आदि वस्त्र पहनते हो और तमगों की इच्छा हो तो क्या यज्ञोपवितादि का बड़ा भार होता है।

ब्रह्मा से लेकर पीछे भी बड़े विद्वान् हुए हैं। उनकी प्रशंसा न करके यूरोपियनों की ही स्तुति पर उतर पड़ना पक्षपात और खुशामद के बिना क्या कहा जाये ?

बीजांकुर के समान जीव की उत्पत्ति जड़चेतन के योग से मानना उत्पत्ति से पूर्व जीव का मानना और उत्पन्न का नाश न मानना पूर्वा पर विरुद्ध है। जो उत्पत्ति के पूर्व चेतन जीव न था तो जीव कहां से आया और सयोग किसका हुआ। सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व ईश्वर के बिना दूसरा कोई तत्त्व न मानना यह आपका पक्ष व्यर्थ है।

जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार करो नहीं तो हाथ कुछ नहीं लगेगा। हम आप सबको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना और अब भी पालन होता है और आगे भी होगा। उसकी उन्नति तन मन धन से सब मिलकर प्रीति से करें। जैसा आर्यसमाज देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि समाज की सहायता यथावत देवें तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बढाना समुदाय का काम है एक का नही।

अग्नि परीक्षा में सफल

श्री सीताराम आर्य हिसार के बड़े पुत्र की मृत्यु हो गई थी। वह अपने पीछे दो बच्चे छोड़ गये थे। श्री सीताराम ने अपने दूसरे लड़के श्री सत्यवीर को इस बात के लिए तैयार किया कि वह इस बहू से शादी कर ले। उसने सांसारिक सभी प्रलोभनों को ठोकर मारकर अपनी सहमति प्रदान की। बहू के परिवार वालों ने भी सहमति दी। दिनांक ६ मार्च को सार्वजनिक आयोजन में श्री सत्यवीर आर्य ने वेद मन्त्रों के बीच उस लड़की का पाणिग्रहण स्वीकार किया। यह कोई मामूली कार्य नही है। श्री सीताराम आर्य और उसका पूरा परिवार इस अग्नि परीक्षा में सफल हुआ।

इस अवसर पर श्री सत्यपाल आर्य ने मच का संचालन किया। आशीर्वाद देने वालों में चौ० हरिसिंह जी सैणी, श्री मनीराम गोदारा डाक्टर के० सी० गुप्त, प्रोफेसर रामविचार, डा० गुलाटी, प्रोफेसर पसरीचा, लड़की के दोनों भाई तथा अनेक प्रतिष्ठित नगरवासी उपस्थित थे। सभी ने होनहार नवयुवक के इस अनुकरण योग्य कदम की प्रशसा की।

शोक समाचार

१—प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी महाशय हुकमचन्द जी प्रधान आर्य समाज डबवाली मण्डी का ३ मार्च को स्वर्गवास हो गया। आप काफी समय से बीमार थे। आपकी आयु ७० वर्ष के लगभग थी। आपने आर्य समाज की सारी आयु सेवा की तथा आर्य बाल विद्यालय की स्थापना करके शिक्षा प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के सदस्य भी रहे हैं। उनकी स्मृति में १३-३-८३ को उनके परिवार में विशेष यज्ञ का आयोजन करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

२—आर्यसमाज बादली जिला रोहतक के मन्त्री श्री सम्पूर्णसिंह के पिता जी का १८-३-८३ को स्वर्गवास हो गया। आप वैदिक विचारों के प्रसारक थे और आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग करते थे।

३—आर्यसमाज लोहारू के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री सूबेदार मामचन्द जी का २ मार्च को स्वर्गवास हो गया। आर्यसमाज की अन्तरंग सभा में उनके वियोग पर शोक प्रस्ताव किया है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि उपरोक्त तीनों दिवंगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करें। सभा मन्त्री

ईज्जत

मिले खुशक रोटी जो ईज्जत से रहकर। वह है बेइज्जती के हलवे से बेहतर। हैं अनमोल हीरा ही ईज्जत जहां में, खरीदों इसे हर मुसीबत को सहकर।

—ओमप्रकाश बमबम
७०४/१२ भारत क्लब रोहतक

सम्पादकीय

जो होली, सो होली

त्योहार सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक होते हैं इसीलिए ये होते हैं जन-जीवन मे जागृति के प्रेरक। ये समष्टि जीवन को उत्साह प्रदाता हैं। हमारे पर्व हमारी राष्ट्रीयता एकता और अखण्डता के द्योतक हैं। इन्हीं की वह प्रतापी प्रथा है जिसने भारत को भारतभूमि से भी अधिक देवभूमि बना दिया है। दक्षिण का ओषम, उत्तर का दशहरा, पूर्व की पूजा और पश्चिम का महारास जिस समय एक दूसरे के गले मिलते हैं तो भारतीय तो अलग, परदेसियो तक के हृदय शतदल एक ही झोंके में खिल-खिल जाते हैं। इसमें अगर कहीं से बैसाखी के भंगडा का स्वर मिल जाये या राजस्थान की पनिहारी की रुनक घुल जाये तो फिर कहना ही क्या। भीलों का भगोरिया और गुजरात का गरबा अपने आप में लाख-लाख इन्द्र धनुषों की अल्हड़ता के साथ मोल लेने की क्षमता रखते हैं।

फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा बसन्त ऋतु का चरमोत्कर्ष काल है। सर्दी समाप्त हो चुकी है और गर्मी का आगमन हो रहा है। चहुँ ओर हर्ष और उल्लास छाया है। वसन्त यौवन पर है। ऐसे में प्रकृति वटी झूम झूमकर नाच रही है। वृक्षों पर नये पत्ते आ गये हैं। फूलो से गुजरकर आ रही बासन्ती बयार की मदमाती गन्ध ने वातावरण को भीनी-भीनी सुगन्ध से भर दिया है। इसी दिन होली का त्योहार आता है। भारतीय प्रमुख त्योहारों में इसका अपना एक विशेष स्थान है। यह मानवीय अनुराग और वैदिक प्रेम के सम्मिलन का पर्व है। आत्मा के मधुरतम और प्रियतम भाव को अनुभव किये बगैर होली के इस पर्व पर प्रकट होने वाले 'अपनेपन' को जो मानव हृदय में सहस्रो धाराओं में फूट पड़ता है, अनुभव नही किया जा सकता।

होली का त्योहार ऋतु से सम्बन्ध रखने वाला है। कृषि प्रधान भारत के किसान के लिए यह समय अपने खेतों में सुनहरी चुनरिया ओढे लहलाती फसल के काटने का है। भारतीय संस्कृतियों के अनुसार प्रत्येक वस्तु को यज्ञाग्नि को समर्पण के उपरान्त ही हुत-शेष के रूप में उपयोग में लाने का विधान है। साढी की फसल के इस नवान्न को यज्ञ देव को समर्पित करने के लिये ही 'नवान्नेष्टि' का यह पर्व मनाया जाता है। संस्कृत मे भुने हुए अन्न को 'होलक' और हिन्दी में 'होला' कहते है। लगता है, इसी कारण इस पर्व का नाम 'होली' पड़ा है।

ऐतिहासिक दृष्टि से इसका सम्बन्ध प्रह्लाद और होलिका की पौराणिक कथा से जुड़ा बताया जाता है। नास्तिक होने के कारण हिरण्यकश्यप को अपने पुत्र प्रह्लाद के आस्तिक होने पर कड़ी आपत्ति थी। उस मार्ग से हटने के बार-बार पिता द्वारा निर्देश दिये जाने के बाद भी जब पुत्र उस पथ का पथिक बना ही रहा तो राजा ने अपनी बहन होलिका को प्रह्लाद के साथ आग मे बैठने को कहा। होलिका जिसे अग्नि में से सुरक्षित निकल जाने का तकनीक का ज्ञान था बालक को गोद में लेकर बैठ गई। कथा के अनुसार होलिका जल गई और प्रह्लाद सुरक्षित बाहर आ गया। एक अन्य दन्तकथा के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा राक्षसी पूतना का इसी दिन वध किये जाने की घटना को भी इस पर्व से सम्बद्ध किया जाता है।

इस दिन लकड़ियां इकट्ठी करते हैं, होली बनाते है, स्त्रियां इसे उपलों के हार पहनाकर इसकी पूजा करती हैं और तब इसे आग लगा दी जाती है। लोग नाचते हैं, गाते हैं और इस आग में नई फसल के अनाज की बालियों को भुनकर खाते हैं। यह सब यज्ञ-प्रधान-भारत के अतीत की याद ताजा कर देता है। इससे अगला दिन 'धुलेंडी' अर्थात् फाग का होता है। बासन्ती बयार के झोंकों से इस दिन बूढे बूढियां भी जवानी का अनुभव करने लगते हैं। अबीर-गुलाल को एक दूसरे के मुंह पर मलकर रंग भरी पिचकारियों से एक दूसरे पर रंग फेंककर तथा कहीं-कहीं स्त्रियां पुरुषों की कोड़ों से पिटाई करके इस दिन का आनन्द लेती हैं। स्त्रियां स्त्रियों से तथा पुरुष पुरुषों के संग खेलें। इसमें तो किसी को भी आपत्ति नहीं, हां, जब दोनों एक दूसरे से गुत्थमगुत्था होते देखे जाते हैं तो लगता है 'मातृवत् पर दारेषु' की भारतीय भावना का सर्वथा लोप सा हो गया है। खेलना प्रेम का प्रतीक है। इसमें छोटे-बड़े ऊंची-नीच, राजा-रंक का भेदभाव समाप्त होने का सुयोग बनता है। अतः जिस क्रिया से आज द्वेषानल में दग्ध हुए जा रहे आर्त्त-भारत की आग शान्त हो उसका बढाया जाना तो सभी को सहर्ष स्वीकार्य होना चाहिए। हां, जिन कुत्सित क्रियाओं से इसे प्रचण्ड होने में बल मिलता हो उन पर सभी ओर से रोक लगाये जाने की तत्काल आवश्यकता भी सभी को अनुभव करनी चाहिये। रंग-गुलाल से भरी होली यही तो कहती है कि—

'वर्ष भर जो होली, सो होली, आइये ! अब नये उत्साह और प्रेम से नये वर्ष का स्वागत करें तथा पिछली बातों को भुलाकर परस्पर गले लगें।'

— रणवीर

आकाशवाणी रोहतक से वेदवाणी प्रसारण की मांग

आज की विषम स्थिति को ध्यान में रखते हुए जबकि चारों ओर ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, नैतिक पतन, भ्रष्टाचार, व्यभिचार आदि का बोलबाला है, यह सभा सर्वसम्मति से अत्यन्त आवश्यक समझती है कि आकाशवाणी पर नियमित रूप से प्रतिदिन ईश्वर की ज्ञानमय एवं मानवमात्र की भलाई के लिए शिक्षाप्रद वेदवाणी का प्रसारण किया जाये।

मन्त्री गणपतसिंह आर्य
जि० आर्य प्रतिनिधि सभा भिवानी

गौरवगन्धा होली

मत बैठे वसन्त निहारो, उठो होली खेलो उमंग बगारो ।।टेक।।
फूला फाग प्रेम रसिकों को, प्रीति पसार पुकारो।
मित्रो परता त्याग आग में झगडे झाड़ पजारो ।।१।।
उठो होली खेलो उमङ्ग बगारो।

नवल पत्र पाये वृक्षो में निरखो आंख उघारो।
यों प्यारी उजड़ी जनता को कर प्रसन्न शृंगारो उठो···।।२।।

पूरा मेल करो आपस मे वैर विरोध विसारो।
भेद भिन्नता पास न झांके ऐक्य प्रयोग पसारो उठो··।।३।।

सत्यागार बनालो मन को मधुर वाक्य उचारो।
त्याग प्रमाद धर्म के द्वारा कर्म-कलाप सुधारो उठो···।।४।।

गूदा एक फांक दस मासे ऊर्वारुक इव यारो।
शुद्ध भीतरी ऐक्य भाव पै असदनेकता वारो उठो···।।५।।

देखो विपदो वैतरणी को धीर न हिम्मत हारो
बन कैवर्त्त नीति-नैया के सबको पार उतारो उठो···।।६।।

मार सहो निदय दुष्टों की पर न किसी को मारो।
ऐसे तप से पा सकते हो जीवन के फल चारो उठो...।।७।।

दास, गुप्त, वर्मा, शर्मा, सब अन्त्यज, डोम चमारो।
हिंसा हीन असहयोगी हो कष्ट-कटक सहारो उठो··।।८।।

वीर ! कहो अन्याय दम्भ को न्याय नृसिंह बिदारो।
दीन-देश प्रह्लाद-भक्त को सौंप स्वराज्य उबारो उठो··।।९।।

धर्म दया आनन्द लोक में निशि वासर विस्तारो।
आर्य जाति को पारतन्त्र्य की अवनति से उद्धारो उठो··।।१०।।

भाई ! जीवन को भारत के भाल स्वतिलक प वारो।
'शंकर' श्री गांधी जी का गौरव ज्ञान प्रचारो।।११।।
उठो होली खेलो उमङ्ग बगारो।

(कविवर श्री पण्डित नाथूराम शर्मा 'शंकर')

पाठकों का सम्पादक के प्रति हार्दिक स्नेह

१—सम्माननीय आचार्य सुदर्शनदेव जी, सप्रेम नमस्ते।

महर्षि दयानन्द कालेज अजमेर को दयानन्द पीठ के अध्यक्ष पद पर आपको नियुक्ति को जानकर हृदय हर्ष मग्न हो गया है। ईश कृपा से यह आपको विद्वत्ता का यथायोग्य सम्मान हुआ है। आप अपने समवयस्क स्नातकों में सर्वाधिक शास्त्र-पण्डित है। आपने हरयाणा के विद्या केन्द्र अपने गुरुकुल झज्जर का यश भी चमकाया है। इस शोभनीय पद उन्नति के लिए आपको सप्रेम हार्दिक बधाई है। आशा है आप अपने आर्ष ज्ञान से इस संस्था का प्रभूत उत्थान करेंगे और हरयाणा का भी गौरव बढाएंगे। आपका शुभकानाओं सहित

निहालसिंह आर्य
३१ कविता कालोनी नांगलोई, दिल्ली–४१

२—मान्यवर आचार्य जी, सप्रेम नमस्ते।

आशा है कि आप कुशल एवं प्रसन्नचित होंगे। सर्वहितकारी २१-२-८३ में प्रकाशित समाचार से आपकी नियुक्ति के बारे में जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। हमारी हार्दिक बधाई है तथा मैं आर्यसमाज व अपनी ओर से शुभकामना करता हूं। सभा को तथा पत्रिका को आपके मार्गदर्शन से जो हमें लाभ हो रहा था उससे वंचित होना पड़ेगा परन्तु मैं फिर भी आशा करता हूं कि आप दूर बैठे भी हमें रास्ता दिखाते रहेंगे।

रोहतक में पत्रिका द्वारा आपने मेरी शंकाओं का विद्वतापूर्ण ढंग से समाधान करके हमारे ज्ञान में वृद्धि को जिसके लिए मैं आपका सदैव आभारी रहूंगा। आपका

दिनांक १४-३-८३ ओमदेव आर्य
४६० सेक्टर–२२ फरीदाबाबाद

भाई सोमदेव जी, सप्रेम नमस्ते।

आपकी हार्दिक बधाई प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। मैं महर्षि दयानन्द के कार्यक्रम की ओर अधिक सेवा करने की भावना से प्रेरित होकर यहां उनकी निर्वाण-स्थली अजमेर में आ गया हूं। मैं अपनी सर्वहितकारी पत्रिका की यथाशक्ति यहां से भी सेवा करता रहूंगा। आर्य जिज्ञासु जनों को शंकाओं का समाधान तो आजीवन चलता ही रहेगा। योग्य सेवा लिखते रहें। शोध-पीठ की ओर से भी एक वैदिक शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

शंका समाधान—

भाई इन्द्रजीत जी (यमुनानगर) सप्रेम नमस्ते।

आपका दिनांक १४-३-८३ का लिखा पत्र मिला। तदर्थ धन्यवाद। आपने सर्वहितकारी में छपने वाले हवन सामग्री के विज्ञापन चित्र में बने हवन कुण्ड पर अंकित स्वास्तिकचिह्न पर यह आपत्ति की है कि यह चिन्ह पौराणिक है, वैदिक नहीं। अतः वैदिक लोगों को इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। इस विषय में मेरा कथन यह है कि वेद में किन्हीं चिन्ह विशेषों का विधान नहीं है कि कोई व्यापार आदि कार्यों में अमुक प्रकार के चिह्नों का प्रयोग करें, ये चिन्ह मनुष्यकृत हैं। कोई अपने व्यापार आदि कार्यों में किसी प्रकार के चिन्ह-विशेष की रचना कर उसका अभीष्ट कार्य में प्रयोग कर सकता है। कृपया आप इस चिन्ह के विषय मे विस्तार से लिखें कि यह चिन्ह के किस किस सम्प्रदाय में किस किस कार्य विशेष के लिऐ एव भावना विशेष लिए प्रयुक्त किया जाता है, जिससे इस विषय में खुलकर विचार किया जा सके। तथापि इस विज्ञापन के स्थान पर नया विज्ञापन छापना आरम्भ किया जा रहा है।

सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक

गुरुकुल कांगड़ी में प्रतियोगात्मक परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र

विशेषज्ञों द्वा निम्नांकित प्रतियोगिता परीक्षाओं के प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध है।

१—भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई० ए० एस०)
२—राज्य प्रशासनसेवा (पी० सी० एस०)
३—संयुक्त चिकित्सा प्रवेश प्रतियोगात्मक परीक्षा (सी. पी. एम. टी.)
४—आई० आई० टी० प्रवेश परीक्षा
५—इन्जिनियरिंग प्रवेश परीक्षा
६—बैंक अधिकारी चयन परीक्षा
७— राष्ट्रीय रक्षा सेवा प्रवेश परीक्षा
८—संयुक्त सुरक्षा सेवा प्रतियोगिता परीक्षा
९—सचिवालय सेवा प्रतियोगितायें परीक्षा
१०—वन्य सेवा परीक्षा

इस केन्द्र में प्रशिक्षण प्राप्त करने के अभिलाषी व्यक्तियों को सूचना दी जाती है कि वे अपने नाम का पंजीकरण श्री आचार्य एवं उपकुलपति जी के पास ३१ मार्च तक निर्धारित प्रपत्र (मूल्य दो रुपये) भर करा लें। यह प्रपत्र प्रतिदिन १० बजे से १२ बजे तक आचार्य कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

कुलसचिव
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उ० प्र०)

वैवाहिक विज्ञापन

२६ वर्षीय गौरवर्ण जाट वंशोत्पन्न शास्त्री (एम० ए०) हिन्दी; संस्कृत जयपुर निवासी आर्यसमाज के कार्य क्षेत्र में कार्यरत मासिक आय ८०० रुपये युवक हेतु स्वस्थ्य, सुन्दर, सुयोग्य वधू की आवश्यकता है। दहेज तथा जाति बन्धन किसी प्रकार का नहीं। गुरुकुल की स्नातिका को प्राथमिकता। शादी सात्विक दहेज रहित होगी।

पत्र व्यवहार का पता
आचार्य भोगराज शास्त्री एम० ए०
आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत

वैदिक कालीन सोम: एक विश्लेषण-२

कृष्णा आचार्या रोहतक

सोम की खोज का श्रय 'एक्सवर्ग' को सौंपा गया और उन्होंने सर्वप्रथम १८१४ ई० में जिस वनस्पति (औषधि) का नाम सोम के रूप में दिया वह सदृदाब था। इस वनस्पति को एकत्र करके इंग्लैंड भेजा गया परन्तु परीक्षण करने पर यह सही सिद्ध नहीं हुई। इसके पश्चात् वर्ग ने १८२० ई० में को सोमलता कहा और यह दर्शाया कि इसमें प्रचुर रस होता है जिस स्थान पर यह प्रचुर मात्रा में पाया जाता है वहां के प्राणी इसकी कोमल शाखाओं को अपने मुंह में रखकर तृष्णा शान्त करते हैं।

इसके पश्चात् सोम की खोज का कार्य चलता रहा और अनेक वनस्पतियों को सोम के रूप में वनस्पति शास्त्रियों ने स्वीकार किया। इस विषय में निम्न विवेचन किया जा रहा है।

१—डा० वाट' ने 'सारकोस्टैम्मा (रोक्स) वोग़ (महारकुल) को सोम माना है। इसे संस्कृत हिन्दी और बंगला भाषा में सोमलता तथा मलायलम एवं 'तमिल' भाषा में 'सोमम्' कहा जाता है। कोंकण (महाराष्ट्र) कर्नाटक, सिंहभूम तथा रांची (बिहार) पुरी उड़ीसा तथा बंगाल में यह प्राप्त होती है। यह आरोही (ट्रलिंग या ट्वाइनिंग) झाड़ी के रूप में फैलती है। इसकी एक अन्य जाति को भी सोम कहते हैं। आधुनिक वनौषधि ग्रन्थों में इसके शुष्क तने का नामक के रूप में प्रयोग करने का वर्णन है तथा इसके पंचांग को कटु पौष्टिक शीतल एवं प्रकृति स्थापक बतलाया गया है।

२—'पेरिप्लोका एफाइल्ला डेकने (महारकुल) को भी सोम माना जाता है। पंजाब में इसे 'बरी' तथा बम्बई में 'बुराये' कहते हैं। यह पंजाब के मैदान में झेलम नदी से पश्चिम की ओर हिमालय के निचले भाग में बलोचिस्तान तक मिलता है। यह छोटा पत्रहीन पौधा होता है। इसके दूधिया रस का प्रयोग सूजन व फोड़े पर होता है एवं इसके पंचांग को मस्तिष्क गत ज्वर का निवारक तथा आमाशयोत्तेजक माना गया है।

३—'डा० उस्मान अली' तथा 'नारायण स्वामी' ने सिरोपिजिया जाति (मदारकुल) को सोम का प्रतिनिधि सिद्ध किया है। इसके कई प्रकार उपलब्ध होते हैं। जो उत्तर एवं दक्षिण भारत में उपलब्ध होती हैं। यह केरल में सोम के नाम से भी पुकारी जाती है। इसके मूल का प्रयोग टानिक पाचक एवं कटुपौष्टिक के रूप में होता है।

४—पेशावर विश्वविद्यालय के वानस्पतिक शास्त्री 'श्री एन० ए० काजिलवास ने एफेड्रा पेकिकलाडा वोसनेटेसी' तथा इसकी एक अन्य जाति को जो हिन्दू कुश पर्वत, सफेद कोह तथा सुलेमान रेंज में मिलती है। अकाट्य तथ्यों के आधार पर वेदों का सोम सिद्ध किया है। बताया गया है कि हरे पौधे को कुचल कर शहद में मिलाकर सन्धान करने के पश्चात् दूध आदि में मिलाकर पीने से यह श्रमहर, यौन दौर्बल्य दूर करने वाला तथा पारद के साथ औषध बनाकर लेने से कायाकल्प करने वाला है। अफगानीस्तान के चिकित्सक इसका प्रयोग करते हैं। इसी एफेड्रा की अन्य जाति 'एफेड्रा बल्गेरिस' का प्रयोग चीन में 'माहुआंग' के नाम से किया जाता है। पंचांग का क्वाथ बनाकर काली मिर्च के चूर्ण के साथ उसका प्रयोग कास, ठण्ड लगना, शीतपित्त, त्वचा रोगों में तथा श्रमहर के रूप में भी किया जाता है।

सोम की कुछ जातियां नेपाल तथा हिमालय में भी पाई जाती है। 'एफेड्रा जिरार्डियाना' चकरौता से ऊपर देवबन में मिलती है। आधुनिक औषध शास्त्री इसके 'एल्कलायड एल एफेड्रीन' व 'स्यूडो एफेड्रीन' का प्रयोग श्वास, कास हृदयरोग को विभिन्न अवस्थाओं एड्रीनेली के समान ही करते हैं। डा० मायर्स ने भी एफेड्रा को ही सोम माना है। दमे के रोगियों के लिए 'एफेड्रीन दिव्य औषधी का काम करती है।

५—कवक शास्त्री श्री रिचार्ड गार्डनवासन ने पन्द्रह वर्ष के अनुसंधान के पश्चात् फलाई अमेरिक नामक कुकरमुत्ते की जाति के प्रमानिता मस्कारिया को सोम बताया है। इस तथ्य को श्री एन० सी० शाह ने अपने एक लेख में प्रतिपादित किया है। इनके अनुसार यह कवक अफगानिस्तान एशिया के उत्तरी समशीतोषण वनीय भाग तथा उत्तर टाइबेरिया में भोजवृक्ष (बर्च) तथा चीड़ के बनों में पाया जाता है। इस कवक का प्रयोग मद के लिए किया जाता है। कवक के टुकड़े अथवा रस के सेवन से शारीरिक शक्ति बढ़ जाती है। कभी कभी रंगीन दिवा स्वप्न भी दिखाई देते हैं। इसमें मस्केरीन, एट्रोपीन, स्कोपोलेमीन, हाइयोसायेमीन आदि एल्कलायड पाये जाते हैं। वैदिक साहित्य में कहे गये सोम के गुणों से इस कवक का साम्य प्रतिपादित करके लेखक ने सन्देह निवारण करने का प्रयास किया है।

डा० आर० एन० चोपड़ा ने गिलोय एवं स्टाग्रेवियोलेंस को सोम बताया है। इस प्रकार लगभग सौ वनस्पतियों का नाम सोम के साथ जोड़ा गया है। चीन में प्राप्त होने वाली गिनसेंग नामक वनौषधि (पैनेक्स, शेनशु गम्रालिसेसो कु) के मूल में वे सब दिव्य गुण विद्यमान हैं, जो सोम के वर्णित हैं। चीन में इसका प्रयोग चिकित्सा में होता है।

सम्भव है अनुसंधान की ये परम्परा आगे बढ़ती रहेगी और भविष्य में वैदिक साहित्य में वर्णित तथा आयुर्वेदिक ग्रन्थों की दिव्य औषधि सोम का रहस्य खुल सकेगा।

(२ का शेष)

कुछेक मूर्ख लोग होली के पर्व का सम्बन्ध हिरण्यकश्यप तथा उस के प्रह्लाद से जोड़ते हैं, यह बिल्कुल झूठा इतिहास है। वे कहते हैं कि प्रह्लाद का पिता राक्षस था, वह अपने को ही भगवान् बतलाता था, किन्तु प्रह्लाद विष्णु का भक्त था, उसका पिता अपने बेटे को विष्णु की भक्ति करने से रोकता था। हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को बड़े कष्ट दिए पर वह न मानता था। अन्त में उसके पिता ने अपनी बहन 'होलीका' को बुलवाया और सारी बातें उसके सामने रखी। होलिका ने उपाय बताया कि अगर यह तेरी बात को नही मानता तो मैं इसे अपनी चद्दर ओढकर आग में इसे लेकर बैठ जाऊंगी इससे यह प्रह्लाद जल जाएगा और मैं बच जाऊंगी किन्तु जब होलिका आग में बैठी तो उसकी चद्दर स्वयमेव उड़कर प्रह्लाद पर ओढी गई, प्रह्लाद जलने से बच गया और 'होलिका' जल मरी। कहते हैं तब से ही यह होलिका त्यौहार प्रचलित हुआ। यह सब सफेद झूठ है। क्या कभी ऐसा हो सकता है। आग का धर्म है जलना, चाहे काई उसमें घी डालो या अन्य कोई चीज डालो वह तो जलाएगी। उसमें चाहे कोई पापी बैठो या कोई धर्मात्मा, जलाना उसका धर्म है। रही चद्दर की बात, चद्दर अपने आप उड़कर प्रह्लाद के पास कैसे चली गई, क्योंकि वह तो स्वयं जड चीज है। अपने आप जा नही सकती। तर्क की कसौटी पर कसने से यह बात झूठ प्रतीत होती है। ऐसा नही हो सकता।

कुछ लोग इस दिन जूआ खेलते हैं। शराब पीते हैं यह तरीका भी इसके मनाने का नहीं है। ये दोनों ही व्यसन विनाशकारी हैं। अतः इन्हें भी छोड़कर पवित्र ढंग से यह पर्व मनाना चाहिए। कुछ स्त्रियां फागन खेलती हैं, गन्दी गारा, कीचड़ उठाकर भले आदमियों को मारती हैं यह भी शोभाजनक नही है। कई बार तो वे बहुत करड़ी चोट मार जाती हैं, यह भी बन्द होना चाहिए। इस पर्व पर हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक झगड़े भी हो जाते हैं, यह भी न हों इसके लिए सभी सम्प्रदायों को पर्व समिति होनी चाहिए।

इस दिन प्रातःकाल स्नान-ध्यान कर शुद्ध साफ कपड़े पहनकर यज्ञ करना चाहिए। यजुर्वेद के अध्याय अठारह के मन्त्रों से आहुति देनी चाहिए। जैसे मन्त्र—

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितवन्ते पृथक्।

धीरा देवेषु सुम्नयो स्वाहा। आदि-२ मन्त्रों से हवन करें।

पूर्णमासी होने के कारण भी आहुतियां दें, दैनिक यज्ञ भी करें।

प्राचीन काल की भांति इसे बहुत पवित्र प्रकार से मनाया जावे तो यह होलकोत्सव है, नहीं तो यह होली का हुड़दंग ही कहा जाएगा।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] P.RTK 49 [illegible]

सर्वहितकारी

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक—[illegible] सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० [illegible] आचार्य, [illegible]

वर्ष १० अङ्क [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर

आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द

के उपकार कभी नहीं भुलाए जा सकते

जिस समय ऋषि दयानन्द का देश में पदार्पण हुआ उस समय देश में अनगिनत पाखण्ड कार्य कर रहे थे और लोग उनमें उलझे हुए थे। जिस समय ऋषि दयानन्द का पदार्पण हुआ, उस समय देश की हालत बहुत ही खराब थी। सबसे पहले ऋषि दयानन्द ने वेदों का प्रचार किया। जिसके अन्तर्गत समाज में फैली हुई अनेक बुराइयों का खात्मा किया। आपने सती प्रथा बन्द की और लोगों को विधवा विवाह के लिए उकसाया। पहले हमारे समाज में विधवाओं की हालत काबिले रहम थी। उनको चुडैल समझा जाता था। घर वाले प्रातःकाल उसका मुंह नहीं देखते थे और मुखातिब करने के तरीके भी गन्दे से गन्दे होते थे। उसको ताना दिया जाता था कि हमारे भाई या बेटे को खा गई। सुबह से शाम तक उससे घर का काम कराया जाता था और रात को सोने के लिए स्वच्छ बिस्तरा भी नहीं दिया जाता था। सारा दिन ताने सुनते सुनते वह अपने जीवन से निराश हो जाती थी और यह सोचती थी कि इस जीवन से तो मरना ही अच्छा। परन्तु मौत भी उनके पास नहीं आती थी। ऋषि दयानन्द ने बाल विवाह भी बन्द किया और विवाह की आयु निर्धारित की कि लड़की १६ साल और लड़का २५ साल तभी शादी होनी चाहिए। इसके इलावा ऋषि दयानन्द ने शिक्षा पर जोर दिया। उनके आने से पहले ज्यादातर लोग अनपढ़ रहते थे और जो बुराई अनपढ़ आदमी में होती हैं वे सब बुराइयां उनमें भी थी। जैसे किसी के लड़का न हो तो लड़का होने की दवाई व कार्य विधि बतलाई जाती थी। इसी प्रकार विवाह न हो, घर में सास झगड़ती हो, बहू काबू से बाहर हो, पति शराब पीकर आता हो, ससुर बेभाव की गालियां देता हो। इन सभी का इलाज पाखण्डियों के पास होता था। लोग बाग मूर्तियों से बहुत ज्यादा डरते थे कि यदि हमने मूर्तियों को गाली दी तो पता नहीं क्या हो जाएगा। इस पाखण्ड का नाश करने के लिए स्वामी दयानन्द ने बहुत प्रयत्न किया। परन्तु उनकी बात लोगों को समझ नहीं आती थी और जगह जगह ईंट पत्थर खाए और १७ बार जहर भी पीया। परन्तु अपने प्रयत्नों में कोई ढिलाई नहीं आई। आपने जहां एक ओर पोपों का खण्डन मण्डन किया, वहां दूसरी ओर शिक्षा पर बड़ा जोर दिया। जहां एक ओर स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल प्रणाली के हक में थे वहां दूसरी ओर महात्मा हंसराज कालेज की शिक्षा के हक में थे। जहां एक ओर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल प्रणाली में सफलता प्राप्त की वहां दूसरी ओर महात्मा हंसराज ने कालेज प्रणाली की शिक्षा चलाने में सफलता प्राप्त की।

स्वामी जी में पारस की पथरी के गुण बहुत हैं जैसे श्री अमीचन्द व स्वामी श्रद्धानन्द उनके सम्पर्क में आकर स्वर्ण बन गए। इसी प्रकार और बहुत से लोग स्वामी जी के सम्पर्क में आकर हीरा बन गए। स्वामी जी ने अकेले रहते हुए भी कभी दूसरों की परवाह नहीं की। कई बार स्वामी जी पर हमला किया गया। परन्तु हर बार शत्रुओं ने मुंह की खाई। नारी शिक्षा के बारे में स्वामी जी बड़े सतर्क थे। महिलाओं के पठन पाठन के लिए उनकी शादी की उमर भी बढा दी। जिसका परिणाम यह है कि भारत की प्रधान मन्त्री भी एक महिला है। महिला को विशेषकर से उनका एहसान मानना चाहिए क्योंकि पुराणों में महिलाओं को वेद पढ़ने या ज्यादा शिक्षा प्राप्त करने की मनाही थी। बल्कि हमारे महापुरुषों ने तो यहां तक लिखा है 'ढोल गंवार पशु और नारी, यह सब ताड़न के अधिकारी' और भी लिखा है कि 'नारी विष की बेलनी' जहां पुराने लोगों ने नारी का तिरस्कार किया है वहां ऋषि दयानन्द ने नारी व पुरुष की जोड़ी मानी है और कहा है कि एक के बिना विषय पूरा नहीं होता। जहां पुरुष के लिए भक्ति का श्रोत खोल दिया है वहां दूसरी ओर महिलाएं भी पूरी भक्ति कर सकती हैं वेद पढ़ सकती हैं और सारे क्रिया-क्रम कर सकती हैं। ऋषि की शिक्षा का यह फल है कि आज बड़े बड़े वकील, डाक्टर व अधिकारियों आदि में महिलाओं ने हर स्थान पर बहुत प्रगति की है। उसका असर यह हुआ कि नारी पांव की जूती न रहकर लोगों की सरों को गरद बन गई हैं। इसीलिए महिलाओं को भी विशेषकर ऋषि दयानन्द का धन्यवादी होना चाहिए और ज्यादा से ज्यादा तादाद में उनको आर्यसमाज के सत्संग में भाग लेना चाहिए।

सरला गोयल
मन्त्री स्त्री आर्यसमाज जीन्द

आर्यसमाजों, गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज रेजमैण्ट बाजार अम्बाला छावनी	८-९-१० अप्रैल
,, मतलोडा जिला करनाल	८-९ ,,
(इसी अवसर पर निःशुल्क नेत्रचिकित्सा शिविर भी लगेगा)	
,, माडलटाउन रोहतक	८ से १४ ,,
स्त्री आर्यसमाज कैथल जिला कुरुक्षेत्र	११-१२-१३ ,,
आर्यसमाज नरवाना में आर्यवीर दल शिविर	१७ से २४ ,,
,, बेरी मेला प्रचार	१७ से १९ ,,
,, माडल टाउन सोनीपत	२२-२३-२४ ,,
,, खेल बाजार पानीपत (करनाल)	२९-३० अप्रैल १ मई
,, जैकमपुरा गुड़गांव छावनी	२९-३० अप्रैल १ मई
,, लोहारू जिला भिवानी	६-७-८ ,,
,, लालकुर्ती बाजार अम्बाला छावनी	,, ,, ,,
कन्या गुरुकुल हसनपुर जिला फरीदाबाद	,, ,, ,,
आर्यसमाज रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ	७-८-९ ,,

गायत्री मन्त्र का रहस्य तथा महत्त्व

लेखक—सुखदेव शास्त्री आदरी उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

केवलमात्र वेद के पढ़ने पर ही पाबन्दी नहीं थी, ब्राह्मणों के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति देवनागरी के अक्षर भी नहीं सीख सकता था, वेदों की तो बात दूर रही। महर्षि ने काशी में जाकर ब्राह्मणों—पोपों को ललकारा। उन्होंने वेदों से प्रमाण देकर सबके लिए वेद पढ़ने का अधिकार बतलाया, उन्होंने कहा—"यथेमांवाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:" अर्थात् जैसे मैं ईश्वर तुम सबके लिए कल्याणी वेदवाणी का प्रवचन करता हूं उसी प्रकार तुम सब भी वर्गों के मनुष्य के लिए इस का अधिकार प्रदान करो चाहे वे शूद्र हों, अतिशूद्र हो, चाहे समाज का निम्न से निम्न व्यक्ति हो, पर वेद पढ़ने का अधिकार सबको है। गायत्री के बोलने और उसका जप करने का अधिकार सबको है।

काशी को महर्षि ने सात बार झिंझोड़ा। सभी पौराणिक पण्डितों को शास्त्रार्थ में पराजित किया। श्री पण्डित बस्तीराम जी जिन्होंने महर्षि के साथ सभा मञ्च पर वैदिक धर्म का प्रचार किया था, वे इस तथ्य को जनता के सामने कविता के रूप में यों प्रस्तुत करते थे–

ताकत राख थे संन्यासी, निर्भय जाय धंधेड़ी काशी।
जब काशी में तम्बू ताना, बैठे पोथा खोल पुराणा।
पूछा पाषाण क्यों पुजवायो, और वेदों में श्राद्ध दिखाओ।
क्यों क्षत्रियों को शूद्र बताओ, क्यों ना गायत्री सिखाओ।

यह अधिकार, उस वेदोद्धारक महर्षि ने ही हमें प्रदान किया। उससे पहले अपने अपने मतों के मन्त्र लोगों ने अपनी इच्छा से बना लिए थे। जनता को ढोंगी ठग गुरु इस प्रकार का मन्त्र देते थे—'ओं नमो भगवते वासुदेवाय' और इसे गुरु मन्त्र बतलाते थे। कुछ अनपढ़ ऊत गुरु अपने अनपढ़ चेलों को कान में गुरु मन्त्र देते थे—

काना बाती कुर, तू चेला मैं गुर।

कुछ अपना प्रभाव सा दिखलाकर मन्त्र देते थे।

ह्रीं श्रीं क्लीं। इसी प्रकार आजकल के कम्युनिस्टों जैसे उस समय के वाममार्गी चेला मूंडते समय गुरु मन्त्र देते थे

दं दुर्गायैनमः। भं भैरवाय नमः। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे। क्या ये गुरुमन्त्र हैं? इनका क्या कोई भावार्थ है, केवलमात्र शराब मांस के नशे में बके हुए वाक्य हैं। ठगों ने ठगने के लिए लोगों में मतभेद बढ़ाने के लिए मन्त्र भी अलग अलग रखे। किसी ने कहा सीतारामाभ्यां नमः सीता राम के लिए नमस्कार हो। श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः राधा और कृष्ण के लिए नमस्कार हो। गोविन्दाय नमः गोविन्द के लिए नमस्कार हो।

जब अयोध्या में गए तो वहां के गुरुओं ने कहा राम और सीता को नमस्कार किन्तु जब यही लोग मथुरा पहुंचे तो यहां भी उन्होंने सीतारामाभ्यां नमः यही गुरु मन्त्र पढ़ा तो यहां मथुरा के पण्डे कहने लगे कि यहां तो राधाकृष्ण को नमस्कार करो क्योंकि यह अयोध्या नहीं मथुरा है, इससे सभी प्रान्तों के लोग अलग अलग हो गए। साम्प्रदायिकता बढ़ गई। चारों वेदों का समान मन्त्र गायत्री ही था, जिसे सारे ही विश्व के ऋषि मुनि जपते थे। अपना आत्मिक कल्याण करते थे। यही मन्त्र सबका था। जैसे चारों वेदों के बीस हजार तीन सौ उनंचास मन्त्र सबके हैं जिनमें ज्ञान विज्ञान भरा हुआ है। इन्हें छोड़कर सारे संसार में अन्धेरा छा गया है।

आजकल भी नए नए पन्थ-मत-मजहब फिर से नए रूप में नया चोला पहनकर लोगों को चकाचौन्ध में डाल रहे हैं और गुरुमन्त्र दे रहे हैं। इनमें 'राधास्वामी सत्सग' ब्यास वाले बाजी मार रहे हैं। इनके यहां सत्संग नाम से बड़ा भीड़ भड़क्का रहता है, इनके गुरु भी बड़ी मुश्किल से इन्हें कान में चुपचाप मन्त्र फूंकते हैं और कहते हैं कि इसे किसी के सामने कहना मत। सत्संगियों में पुरुष और स्त्री दोनों ही जाते हैं। एक ही परिवार के पति पत्नी भी अपने गुरु के द्वारा दिए गए मन्त्र को आपस में नहीं जानते हैं। पति का मन्त्र कुछ और है, और पत्नी का गुपचुप मन्त्र दूसरा है। हो सकता है पत्नी को गुरु जी ने और ही किस्म का मन्त्र दे दिया हो, जिसे उसके पति को भी पता न लगे। ये कोई मन्त्र हैं या सी० आई० डी० का गुप्तचर स्टाफ है। मन्त्र तो गायत्री है जिसे संसार के करोड़ों लोग एक साथ बैठकर आहुति दे सकते हैं। अर्थपूर्वक उसका विचार कर सकते हैं। पापों से छुटकारा पा सकते हैं। इसी प्रकार की सन्तोषी माँ, जो कि बम्बई की कोई मुसलमानी हैं जिन्होंने अपना मुसलमानी नाम बदलकर सन्तोषी नाम से प्रकट किया है और मुसलमानों की तरह से शुक्रवार का व्रत रखने का प्रचार किया है। स्त्रियों में इनका अधिक प्रचार किया जा रहा है, व्रत आदि रखने का। ऐसे ही बालयोगेश्वर हरद्वार प्रेमनगर वाले भी गुरुमन्त्र एक रुपये में देते हैं। ये भी पिछले वर्षों में अमेरिका से एक देवी से मैरिज करके आए हैं। जब जम्बोजेट से अपने ७०० अनुयायियों के साथ दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पर उतरे तो कस्टम वालों के द्वारा तलाशी लेने पर घड़ियां तथा सोने की अंगूठियां इनसे स्मगलिंग की निकलीं। ये हैं चीर अवतार गुरु।

इसी प्रकार आजकल एक और भी पन्थ पनप रहा है, जिसका नाम है ब्रह्मा कुमारी इनका ढंग भी निराला है। ये भी जवान लड़के लड़कियां राजस्थान के आबू पर्वत पर जाकर अपने प्रजापिता से सीधा सम्पर्क करते हैं। ये भी आनन्द से आबू पर मन्त्र जपते हैं। एक और हैं जो अकेले ही हजारों चेले मुंडकर अमेरिका भाग गए हैं। बेचारे चेले पूना की सड़कों पर अफीम के नशे में रात्रि में 'हाय रजनीश' गुरु जी तुम हमें छोड़कर और दुःखदायी मन्त्र देकर चुपचाप 'भोग से समाधि' की ओर धकेल कर अपने आप अमेरिका के टैक्सास नगर में जाकर वहां एक करोड़पति लड़की से मैरिज रचाकर भोग की समाधि में डूब मरे हो। वापिस आकर हमें भी भोग का मन्त्र दो। बेचारे रजनीश के चेले गले में काठ की माला में उसकी मूर्ति पिरोए फिरते हैं। जैसे बन्दरिया अपने मृत बच्चे को लिए फिरती है। क्या ऐसे भोगी पुरुष की मूर्ति गले में डालने से मुक्ति मिल जाएगी, मुझे तो ऐसा लगता है कि इनकी मुक्ति सबसे पहले होगी, क्योंकि ये लोग भोग को ही सर्वोपरि मानते हैं योग को नहीं। भोगे रोग भयं–भोग से रोग, रोग से मृत्यु आती है। अतः संसार से जल्दी मुक्ति में जाने के इन्हीं के चांस ज्यादा हैं।

जनता से प्रार्थना है कि इन सब झूठे गुरु मन्त्रों को छोड़कर असली गायत्री मन्त्र का जप करें। जिसके जपने का विधान वेदों, उपनिषदों तथा दर्शनों में ऋषियों ने किया है। गीता का अमर सन्देश देते हुए श्रीकृष्ण ने भी इसे जपने का निर्देश दिया है। रामायण काल में श्रीराम ने इसे ही जपा है ऐसा इतिहास में लिखा मिलता है। महाभारतकाल में इसे ही जपने का उपदेश भीष्म पितामह ने दिया है।

गायत्री मन्त्र का रहस्य—

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसे चारों वेदों में समान मन्त्र माना है। चारों वेदों में समान रूप से इसकी व्याख्या आती है। विद्वानों ने इसके अर्थ ज्ञान, कर्म, उपासना के रूप में कई प्रकार से किये हैं। स्वयं महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में बालकों के लिए गायत्री सीखाने के लिए उपदेश देते हुए ईश्वर की उपासना के विषय में इसे लिखा है। यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उसके अध्याय ३६ के मन्त्र ३ की, इसी भूर्भुवः स्वः की व्याख्या करते हुए महर्षि ने इसकी व्याख्या कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड, ज्ञान काण्ड परक की हैं।

[क्रमशः]

आर्यसमाज के नियम उपनियम

चैत्र शुदी १ संवत् १९३२ वि० तदनुसार ७ अप्रैल सन् १८७५ ई० को महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज के संचालन हेतु जो नियम उपनियम बनाये गये, वे पाठकों की जानकारी हेतु प्रकाशित किये जा रहे हैं।

सम्पादक

१— नाम—इस समाज का नाम आर्यसमाज होगा और न्यून से न्यून ११ सदस्य होने पर समाज बन सकेगा।

२— उद्देश्य—इस समाज के उद्देश्य वही हैं जो इसके दस नियमों में वर्णित हैं।

३— आर्य सदस्य—जो व्यक्ति आर्यसमाज में नाम लिखवाना चाहे और समाज के उद्देश्यों के अनुकूल आचरण स्वीकार करे वह आर्य समाज में प्रविष्ट हो सकता है परन्तु उसकी आयु १८ वर्ष से न्यून न हो। इस प्रकार जो आर्यसमाज में प्रविष्ट हो वह 'आर्य सदस्य' कहलाएगा परन्तु कोई व्यक्ति एक समय में एक ही समाज का सदस्य हो सकता है।

आर्यसमाज में नाम लिखवाने के लिए मन्त्री के पास इस प्रकार का पत्र लिखना चाहिए।

'मैं प्रसन्नतापूर्वक आर्यसमाज के उद्देश्यों को (जैसा कि नियमों में वर्णन किए गए हैं) तथा मन्तव्यों एवं सिद्धान्तों को (जो वेदों के आधार पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में लिखे गए हैं) मानता और उनके अनुकूल आचरण स्वीकार करता हूँ। मेरा नाम आर्यसमाज में लिख लेवें।'

परन्तु अन्तरंग सभा को अधिकार रहेगा कि किसी विशेष हेतु से उसका नाम आर्यसमाज में लिखना स्वीकार न करे। यदि अन्तरंग सभा प्रवेश पत्र को अस्वीकार करे तो अन्तरंग को सूचना देकर प्रान्तीय सभा की अन्तरंग सभा में अपील हो सकेगी। यदि प्रान्तीय सभा के निर्णय से सन्तोष न हो तो प्रान्तीय सभा की न्याय सभा और अन्तत सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा में अपील हो सकेगी।

४— आर्य सभासद्- (क) जिनका नाम किसी आर्यसमाज में सदाचार पूर्वक दो वर्ष तक अंकित रहा हो और वह अपनी आय का शतांश मासिक वा वार्षिक अथवा २५० वार्षिक वा अधिक धन समाज को देता रहा हो और जिसकी उपस्थित साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम २५ % तक हो तो वह आर्य सभासद् माना जा सकता है।

(ख) आर्यसमाज में २ वर्ष भर नाम अंकित रहने का नियम समाज की स्थापना के तीसरे वर्ष में लागू होगा।

अन्तरग सभा किसी विशेष हेतु से चन्दा न दे सकने अथवा शतांश से न्यून देने वाले को आर्य सभासद् बना सकती है। परन्तु उनकी संख्या उक्त आर्य सभासदों की संख्या के ५ प्रतिशत तक हो सकती है और अंश पूर्णांक माना जाएगा। आर्य संस्थाओं को (चाहे वे आर्यसमाज के अन्तर्गत हों या न हों) धन देना शतांश न होगा।

विशेष अवस्थाओं में अन्तरग सभा किसी व्यक्ति के लिए उपस्थिति नियम को शिथिल कर सकती है परन्तु उनकी संख्या ५ प्रतिशत से अधिक न होगी। आर्यसमाज का सदस्य किसी भी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हो लेवे तो उसको उपस्थिति स्थानीय आर्यसमाज में मान ली जाएगी परन्तु जिस समाज में सदस्य साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित रहे उस समाज द्वारा १ मास के भीतर स्थानीय समाज को इस विषय की सूचना देनी होगी।

विशेष अवस्थाओं और संख्या का निर्णय करना समाज की अन्तरङ्ग का काम है। सदस्य का नगर या ग्राम से बाहर होना, रुग्ण होना व किसी ऐसी विवशता में ग्रस्त होना जिसके विषय में अन्तरंग सभा को पूर्ण सन्तोष हो विशेष अवस्थाएं समझी जा सकती है प्रमुखतः ऐसी छूट के अधिकारी वे ही महानुभाव हैं जिनके जीवन में क्रियात्मक रूप से धर्मावलम्बन पाया जाता हो तथा कम से कम पिछले वर्ष उनके जीवन का कुछ भाग आर्यसमाज और वैदिक संस्कृति के प्रचार में व्यय हुआ हो।

(ग) सम्मति देने का अधिकार केवल आर्य सभासदों को होगा। अन्तरग सभा प्रतिवर्ष ऐसे आर्य सभासदों के नाम निर्वाचन से एक मास पूर्व रजिस्टर में अंकित करेगी और ऐसे सदस्यों की सूची आर्यसमाज मन्दिर में तुरन्त टाँग दी जावेगी।

(घ) उपधारा (क) में प्रयुक्त सदाचार की परिभाषा इस प्रकार है—

संध्या आदि नित्य कर्म, शुद्ध वृत्ति, वैदिक संस्कार, पत्नीव्रत व पतिव्रत आदि सदाचार है। व्यभिचार, मद्यादि मादक द्रव्यों और मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन, जुआ, चोरी, छल, कपट, रिश्वत आदि दुराचार है।

(च) स्त्रियों को आर्य सभासद् बनने के लिए यदि उनकी आय अपने संरक्षक व पति की आय से पृथक् न हो तो संरक्षक व पति की आय के शतांश का १/५ देना काफी होगा।

५—जो आर्य सभासद् आर्यसमाज के उद्देश्यों अथवा वैधानिक नियमों के विरुद्ध आचरण और व्यवहार करेगा उसको आर्यसमाज की अन्तरंग सभा स्थगित और साधारण सभा आर्य सभासदों से पृथक् कर सकती है किन्तु अन्तरंग या साधारण सभा अपना निश्चय करने से पूर्व सम्बद्ध आर्य सभासद् को अपनी ओर से स्पष्टीकरण करने का पूर्ण सुविधा प्रदान करेगी। ऐसे स्थगित या पृथक् किए गए व्यक्ति को प्रान्तीय सभा में इस निर्णय के विरुद्ध अपील करने का अधिकार होगा। प्रान्तीय सभा को अधिकार होगा कि वह इस निर्णय को स्थगित करे या पलट दे।

६—आर्यसमाज में होने वाली सभाएं दो प्रकार की होंगी—

(१) धार्मिक, (२) प्रबन्धक।

धार्मिक सभाएं चार प्रकार की होंगी—

(१) दैनिक (२) साप्ताहिक, (३) वार्षिक, (४) नैमित्तिक।

प्रबन्धक सभाएं दो प्रकार की होंगी—

(१) वार्षिक, (२) नैमित्तिक।

धार्मिक सभा

७. दैनिक—यह सभा प्रतिदिन सम्मिलित संध्या, हवन, कथा और उपदेश आदि के लिए हो सकेगी।

साप्ताहिक—यह सभा प्रत्येक सप्ताह में एक बार हुआ करेगी। इसमें संध्या, हवन, वेदोपदेश, प्रार्थना, भजन, उपदेश आदि और अन्त में ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का उच्च स्वर में सम्मिलित पाठ हुआ करेगा।

टिप्पणी—जो कोई समाज सम्बन्धी मुख्य बात सभा के जानने योग्य हो वह भी इस सभा में बताई जाएगी।

वार्षिक—वार्षिक सभा (वार्षिकोत्सव) विशेष रूप से धर्म प्रचार करने और समाज में अधिक उत्साह लाने के लिए वर्ष में एक बार की जाएगी।

नैमित्तिक—किसी आवश्यक कार्य के लिए जब जब प्रधान या मन्त्री उचित समझें, यह सभा की जावेगी अथवा अन्तरंग सभा के २/३ सदस्य चाहें या साधारण सभा का १/३ भाग चाहे और मन्त्री व प्रधान को लिखें तब भी यह सभा की जायेगी।

प्रबन्धक सभा

८—वार्षिक—यह सभा प्रतिवर्ष नीचे लिखे प्रयोजनों के लिए हुआ करेगी—

१. अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, प्रान्तीय सभा के लिए प्रतिनिधि सदस्यों (जब अपेक्षित हो) तथा आय व्यय लेखानिरीक्षक के निर्वाचन के लिये।

२. समाज के पिछले वर्ष का वृत्तान्त सुनने आय व्यय स्वीकार करने तथा आय व्यय का आनुमानिक लेखा (बजट) बनाने के लिए।

३. अन्तरंग सभा के निश्चयों के विरुद्ध अपील सुनने के लिए।

४. उन विषयों का निर्णय करने के लिए जिन्हें अन्तरंग सभा ने निर्णयार्थ भेजा हो।

५. इस सभा के होने के समय आदि का विज्ञापन १५ दिन पहले दिया जाएगा जिसमें प्रवेशनीय विषयों के विवरण स्पष्ट लिखे जायेंगे।

चुनाव लिखित सम्मति (पर्चियों) द्वारा हुआ करेगा और सर्व-सम्मति होने पर हाथ उठाकर भी हो सकेगा। किसी झगड़े की अवस्था में अन्तिम फैसला प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का माननीय होगा।

नैमित्तिक

९—यह सभा जब कभी आवश्यकता हो, किसी विशेष काम के लिए नीचे लिखी दशा में की जाएगी—

१. जब प्रधान चाहे, और मन्त्री को आज्ञा दें।

२. जब अन्तरङ्ग सभा चाहे।

३. जब आर्य सभासदों का दसवाँ भाग व तीन आर्य सभासद्, जो भी अधिक हों, चाहें और इस निमित्त मन्त्री के पास विचारणीय विशेष महत्वपूर्ण विषय को स्पष्ट शब्दों में लिखकर भेजें तो इस दशा में आवेदन-पत्र प्राप्ति के १५ दिन के भीतर अधिवेशन बुलाना प्रधान और मन्त्री का कर्त्तव्य होगा। यदि प्रधान के परामर्श से नैमित्तिक, अधिवेशन बुलाने के लिए विज्ञापन नियत अवधि के भीतर न निकाला जाये तो आवेदन पत्र देने वाले आर्य सभासद् प्रान्तीय सभा को सूचना देकर नियमानुसार अधिवेशन बुला सकेंगे।

अन्तरङ्ग सभा

१०—समाज के सब कार्यों के प्रबन्ध के लिए अन्तरङ्ग सभा नियुक्त की जायेगी। उसमें दो प्रकार के सभासद् होंगे—१. अधिकारी, २. अन्तरंग द्वारा निर्वाचित जितने आर्य सभासद् घोषित हों उनके दस प्रतिशत तक निर्वाचित सभासद्। इस दस प्रतिशत में अधिकारियों की संख्या गणना में न आवेगी।

११—वर्ष वर्ष के पीछे अन्तरंग सभा के अधिकारी और आय-व्यय लेखानिरीक्षक वार्षिक साधारण सभा में फिर से नियत किये जावेंगे और कोई पुरा अधिकारी सर्वसम्मति होने के सिवाय निरन्तर ३ वर्ष से अधिक एक पद पर न चुना जा सकेगा।

१२—जब वर्ष से पहले किसी अधिकारी का स्थान रिक्त (खाली) हो तो अन्तरंग सभा स्वयं उसके स्थान पर किसी और योग्य पुरुष को नियत कर सकेगी।

१३—अन्तरंग सभा कार्य के प्रबन्ध निमित कोई उचित व्यवस्था कर सकती है परन्तु वह आर्यसमाज के उप-नियमों और दस नियमों के विरुद्ध न हो।

१४—अन्तरंग सभा किसी विशेष कार्य के लिए अपने में से कुछ सभासदों, अन्य आर्य सभासदों व विशेष गुण रखने वाले आर्य सदस्यों को मिलाकर उप सभा नियत कर सकती है।

१५—अन्तरग सभा का कोई सभासद् मन्त्री को एक सप्ताह पहले विज्ञापन दे सकता है कि कोई विषय सभा में निवेदन किया जाये और यह विषय प्रधान की आज्ञानुसार निवेदन किया जायेगा परन्तु जिस विषय के निवेदन करने में अन्तरंग सभा के ५ सभासद् या १/३ भाग (जो भी सख्या न्यून हो) सम्मति दे, वह अवश्य निवेदन करना पड़ेगा।

१६—एक मास में अन्तरङ्ग सभा एक बार अवश्य हुआ करेगी और प्रधान की आज्ञा से व जब अन्तरङ्ग सभा के ५ सभासद् या १/३ भाग (जो संख्या न्यून हो) मन्त्री को पत्र लिखें तब भी हो सकती है।

अधिकारी

१७—अधिकारी ७ प्रकार के होंगे—

१—प्रधान, २—उपप्रधान, ३—मन्त्री, ४—उपमन्त्री,
५—कोषाध्यक्ष, ६—पुस्तकाध्यक्ष, ७—अधिष्ठाता आर्यवीर दल

१७-(ख)—उपप्रधान, उपमन्त्री और पुस्तकाध्यक्ष इन पदों पर आवश्यकता होने पर एक से अधिक व्यक्ति नियत हो सकते हैं और जब किसी पद पर एक से अधिक व्यक्ति निर्वाचित हों तो अन्तरङ्ग सभा उन्हें काम बांट सकेगी।

इस धारा के अन्त में निम्नलिखित टिप्पणियां बढ़ायी जावें।

आर्यसमाज के अधिकारी, अन्तरङ्ग सभासद एवं आर्यसमाज की की किसी भी संस्था का प्रमुख अधिकारी बनाये जाने से पूर्व आर्य सभासदी की अवधि निम्न प्रकार होगी—

क—आर्यसमाज का प्रधान, मन्त्री अथवा आर्यसमाज की किसी भी संस्था का प्रमुख अधिकारी अथवा उसकी प्रबन्धकारिणी समिति का अध्यक्ष, मन्त्री अथवा प्रबन्धक बनाये जाने से पूर्व वह व्यक्ति न्यूनातिन्यून ३ वर्ष तक निरन्तर आर्य सभासद रहा हो।

ख—प्रधान एवं मन्त्री के अतिरिक्त अन्य अधिकारी एवं अन्तरङ्ग सभा का साधारण सभासद बनाये जाने से पूर्व वह व्यक्ति न्यूनातिन्यून दो वर्ष तक निरन्तर आर्य सभासद रहा हो।

ग—आर्यसमाज की अन्तरङ्ग सभा के प्रत्येक सदस्य एवं आर्य समाज की किसी भी संस्था के प्रमुख अधिकारी पद के हेतु आवश्यक होगा कि आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में उसकी उपस्थिति न्यून से न्यून ३३ प्रतिशत रही हो।

प्रधान

१८—प्रधान के नीचे लिखे अधिकार और कर्त्तव्य होंगे-

१-प्रधान अन्तरङ्ग सभा और समाज की सब सभाओं का सभापति समझा जावेगा।

२-सदा समाज के कामों के यथावत् प्रबन्ध करने में आर्य समाज की उन्नति और रक्षा में तत्पर रहेगा। समाज के समस्त कामों को देखेगा कि नियमानुसार किये जाते हैं या नहीं और स्वयं नियमानुसार चलेगा।

३-यदि कोई विषय तात्कालिक और आवश्यक प्रतीत हो तो उसका यथोचित प्रबन्ध उसी समय करे और उसके बिगड़ने में उत्तरदाता वही होगा।

४-प्रधान अपने प्रधानत्व के कारण उन सब उपसभाओं का जिनका अन्तरंग सभा निर्माण करे सभासद होगा।

१९—उपप्रधान, प्रधान के अनुपस्थित होने पर उसका प्रतिनिधि होगा और समाज के सब कामों में प्रधान की सहायता देना उसका मुख्य काम होगा। यदि एक से अधिक उपप्रधान हों तो उनमें से किसी एक उपप्रधान को प्रधान मुख्य उपप्रधान नियत कर सकेगा।

मन्त्री

२०—मन्त्री के नीचे लिखे हुए कर्त्तव्य और अधिकार होंगे-

१- अन्तरंग सभा तथा प्रधान की आज्ञानुसार समाज के सब कार्यों को चलाना और समाज की ओर से सबके साथ पत्र व्यवहार करना और समाज सम्बन्धी चिट्ठी और सब प्रकार के विशिष्ट पत्रों को संभाल कर रखना।

२- समाज की सेवाओं का वृत्तान्त लिखना और दूसरी सभा होने से पहले ही उसका वृत्तान्त पुस्तक में लिखना व लिखवा देना।

३- मासिक अन्तरंग सभाओं में उन आर्य सदस्यों व आर्य सभासदों के नाम सुनाया करना जो पिछली मासिक सभा के बाद आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए हों या उससे पृथक् हुए हों।

४- सामान्य प्रकार से समाज के भृत्यों के काम पर दृष्टि रखना और समाज के नियम उपनियम और व्यवस्थाओं के पालन पर ध्यान रखना।

५- आर्यसमाज की संस्थाओं के (यदि कोई हों) प्रबन्ध पर सामान्य प्रकार से दृष्टि रखना।

६– प्रत्येक सभा में नियत काल पर आना और बराबर ठहरना।

उपमन्त्री

२१—मन्त्री के अनुपस्थित होने पर उसका प्रतिनिधि होना और समाज के सब कामों में मन्त्री को सहायता देना उसका मुख्य काम होगा।

कोषाध्यक्ष

२२—कोषाध्यक्ष के नीचे लिखे कर्त्तव्य और अधिकार होंगे–

(१) समाज की सब आय का लेना, उसकी रसीद देना और उसको यथोचित, सुरक्षित रखना व रखवाना और कुछ भी धन बिना रसीद लिए और बिना लेखबद्ध आज्ञा प्राप्त किए किसी को न देना।

(२) किसी को अन्तरंग सभा की आज्ञा बिना रुपया न देना वरन् मन्त्री और प्रधान को भी उस परिमाण से जितना कि अन्तरंग सभा ने उनके लिए नियत किया हो अधिक न देना और उस धन से उचित व्यय के लिए वही अधिकारी जिसके द्वारा वह व्यय हुआ हो उत्तरदाता होगा।

३– सब धन के आय-व्यय का रीति-पूर्वक बहीखाता रखना और प्रति मास जांच कराके अन्तरंग सभा में हिसाब को बहीखाते समेत स्वीकारी के लिए उपस्थित करना।

पुस्तकाध्यक्ष

२३—पुस्तकाध्यक्ष के कर्त्तव्य ये होंगे–

पुस्तकालय में समाज की जो स्थिर पुस्तक और विक्रेय पुस्तक हों, उन सबकी रक्षा करे और पुस्तकालय सम्बन्धी हिसाब किताब रखे और पुस्तकों का लेन-देन मंगवाने और बेचने तथा पुस्तकालय सम्बन्धी प्रमाणपत्र रखने का काम भी करे।

टिप्पणी—स्थिर व विक्रेय पुस्तक अन्तरंग सभा की स्वीकारी से मंगाई जावेंगी।

मिश्रित

२४—सब आर्य सभासदों की सम्मति पत्र द्वारा निम्नलिखित दशाओं में ली जावेगी।

(१) जब अन्तरंग सभा का यह निश्चय हो कि समाज की भलाई के लिए सब आर्य सभासदों की सम्मति जाननी चाहिए।

(२) जब सब आर्य सभासदों का १/५ भाग या तीन सभासद (जो संख्या अधिक हो) इस निमित मन्त्री के पास पत्र लिखकर भेजें।

(३) जब बहुत से व्यय सम्बन्धी व प्रबन्ध संबंधी तथा व्यवस्था संबंधी मुख्य प्रस्ताव करने हों।

२५—जब किसी सभा में कुछ समय के लिए सभापति उपस्थित न हो तो उसके स्थान पर उस समय के लिए अपने में से किसी योग्य पुरुष को वह सभापति नियत कर सकती है।

२६—यदि नियमानुसार वार्षिक साधारण सभा में निर्वाचन न हो सके तो अधिक से अधिक ६ मास तक पुराने अधिकारी कार्य करते रहेंगे। यदि इस अवधि में निर्वाचन न हो सके तो प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा का प्रधान २ मास के भीतर निर्वाचन करा दे या उचित प्रबन्ध कर दे।

२७—सब सभाओं और उपसभाओं का वृत्तान्त यथासम्भव आर्य भाषा तथा देवनागरी लिपि में लिखा जाया करेगा और उसको यदि कोई आर्य सभासद् चाहे तो मन्त्री, प्रधान की अनुमति लेकर उसे दिखला दिया करेगा।

नोट—आर्यावर्त्त से बाहर के समाजों में जरुरत होने पर आर्य भाषा में वृत्तान्त लिखने का नियम शिथिल हो सकता है।

२८—सब सभाओं का काम तब प्रारम्भ हो जब १/३ (एक तिहाई) सभासद् उपस्थित हों।

२९–(क) सब सभाओं और उपसभाओं के सारे काम बहुपक्षानुसार निश्चित होंगे।

(ख) प्रधान के साधारण वोट (मत) के अतिरिक्त एक दूसरा निर्णायक वोट भी होगा।

३०—आय का दशांश स्थिरनिधि में रखा जायेगा।

३१—सब आर्य सदस्यों और सभासदों को संस्कृत एवं आर्य भाषा अवश्य जाननी चाहिए।

३२—सब आर्य सदस्यों और आर्य सभासदों का साप्ताहिक सत्संगों में सम्मिलित होना मुख्य कर्त्तव्य होगा।

३३—सब आर्य सदस्यों और आर्य सभासदों को उचित है कि लाभ और आनन्द के समय समाज पर भी दृष्टि रखें और उसको धनादि से सहायता किया करें।

३४—सब आर्य सदस्यों और आर्य सभासदों को उचित है कि शोक और दुःख के समय में परस्पर सहायता करें और आनन्द उत्सव में निमन्त्रण पर सम्मिलित हों, छोटाई बड़ाई न गिनें।

३५—यदि कोई आर्य भाई किसी हेतु से संकट में हो व किसी की दुःखी विधवा या सन्तान अनाथ हो जावे और उसका किसी प्रकार जीवन निर्वाह न हो सकता हो और आर्यसमाज को यह निश्चय हो जाये तो आर्यसमाज उसकी रक्षार्थ यथाशक्ति यथोचित प्रबन्ध करे।

३६—सार्वदेशिक सभा द्वारा बनाये गये सम्पूर्ण नियम जिनमें न्याय सभा का विधान भी सम्मिलित है आर्यसमाजों पर लागू होंगे।

३७—निम्नलिखित कारणों से अधिकारी और अन्तरंग सभासदों के पद रिक्त समझे जायेंगे—

१—मृत्यु होने पर, २—विक्षिप्त होने पर, ३—पद परित्याग करने पर, ४—यदि कोई व्यक्ति आर्य न्याय सभा अथवा राजकीय न्यायालय के निर्णयानुसार किसी ऐसे अपराध के लिए दण्डित हुआ हो जो अन्तरंग की सम्मति में उस सभासद् को सभासद् रहने के अयोग्य सिद्ध करे।

३८—प्रधान किसी विशेष अवस्था में अन्तरंग सभा की अनुमति लेकर किसी भी अधिकारी को स्थगित कर सकता है। परन्तु अन्तिम निर्णय के लिए १५ दिन के अन्दर नैमित्तिक साधारण सभा बुलानी होगी। यदि ऐसी सभा न बुलाई गई तो अधिकारी को स्थगित करने की आज्ञा निरस्त समझी जायेगी।

३९—प्रधान को अपने पद से च्युत करने के लिए साधारण सभा में प्रस्तुत अविश्वास के प्रस्ताव का कम से कम ७५ प्रतिशत मतों से स्वीकृत होना आवश्यक होगा।

अविश्वास प्रस्ताव के पारित हो जाने के तुरन्त उपरान्त वह अपने पद से पृथक् हो गया समझा जायेगा।

ऐसे प्रस्ताव को प्रस्तुत करने के लिए न्यून से न्यून आर्य सभासदों के १।२ के हस्ताक्षर आवश्यक होंगे।

४०—प्रत्येक प्रांत में एक मुख्य सभा होगी जिसका नाम 'आर्य प्रतिनिधि सभा' होगा। सब समाजों की व्यवस्था उसी के आधीन तथा अनुकूल होगी। यह सभा अपने नियमादि स्वयं बनावेगी।

४१—स्थानीय समाज की ओर से प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा की किसी आज्ञा व व्यवस्था का घोर और निरन्तर विरोध होने अथवा स्थानीय समाज में ऐसी अव्यवस्था हो जाने पर जो प्रान्तीय सभा की सम्मति में समाज के लिए हानिकर हो, प्रान्तीय सभा के प्रधान को अपनी अन्तरंग सभा की अनुमति से अधिकार होगा कि उस स्थानीय समाज के संगठन को नियत समय के लिए स्थगित कर देवे और समाज तथा समाज के आधीन संस्थाओं का प्रबन्ध उचित रीति से करावे।

४२—समस्त आर्य जगत् के लिए एक मुख्यतम सभा होगी जिसका नाम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' होगी। समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पुरुषार्थ को संयुक्त करके आर्य जगत् की समुचित व्यवस्था करना उसका मुख्य कर्त्तव्य होगा। यह सभा अपने नियमादि स्वयं बनायेगी।

४३—प्रांतीय सभाओं से सम्बद्ध आर्यसमाजों की रजिस्ट्री प्रांतीय सभाओं से पृथक् नहीं हो सकती। यदि कोई समाज अपनी सम्पत्ति और संगठन की रजिस्ट्री पृथक् करायेगा और प्रांतीय सभा चाहे तो वह धारा ४१ के अनुसार उस समाज के विरुद्ध कार्यवाही कर सकती है।

४४—ये उपनियम आवश्यकतानुसार 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' द्वारा यथोचित विज्ञापन देने पर शोधे, बढाए और घटाए जा सकते हैं।

किसी भी आर्यसमाज को या प्रांतीय सभा को इन उपनियमों को घटाने बढाने अथवा उनमें संशोधन करने का अधिकार नहीं है।

मन्त्री सार्वदेशिक सभा

कन्या गुरुकुल खानपुर का सफल उत्सव

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां (सोनीपत) का १२ वां वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से १२, १३ फरवरी को मनाया। उत्सव से पूर्व सात दिन तक पं० समरसिंह जी वेदालंकार की देख-रेख में यज्ञ का भी आयोजन किया गया। इस शुभ पर्व पर पं० चिरंजीलाल, श्री सूरतसिंह श्री खेमचन्द आदि के मधुर भजन तथा स्वामी इन्द्रमोहन, आचार्य विष्णुमित्र, पं० समरसिंह जी के उपदेश हुए।

दानी महानुभावों में प्रो० सतबीरसिंह दुहन, किसान कालेज जीन्द (ग्यारह हजार, ५१०० नकद व ६००० का वचन) ब्र० कर्मपाल गुलकनी (११००), श्री महेन्द्रसिंह मुजफ्फरनगर (११०० नकद व ६००० का वचन) मा० राजेन्द्रसिंह राजलूगढी ११०० रुपये, श्री महासिंह खेड़ो छिछड़ाना ११०० रुपये ग्राम न्याय सभा खानपुर १६०० रुपये तथा कन्या गुरुकुल हाई स्कूल छात्राओं व स्टाफ १०३६ रुपये आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस अवसर पर कन्या गुरुकुल हाई स्कूल की छात्राओं को प्रोफेसर सतबीरसिंह ने पुरस्कार दिए, इससे पूर्व प्रो० प्रकाशवीर दलाल ने प्रो० सिंह का विशद परिचय दिया। प्रो० सिंह ने संक्षिप्त भाषण में बहिन सुभाषिणी और चौ० माडूसिंह जी का संस्था में निमन्त्रण देने के लिए विशेष आभार प्रकट किया और संस्था की हमेशा सहायता करते रहने का आश्वासन दिया।

सन् १९८५ में मनाई जाने वाली भक्त फूलसिंह जन्म शताब्दी का ब्र० कर्मपाल ने उद्घाटन किया तथा प० सुखदेव शास्त्री ने भक्त जी के विषय में अपने विचार प्रकट किए। उत्सव की कार्यवाही का संचालन श्री धर्मचन्द्र जी शास्त्री उपमन्त्री महासभा ने बड़ी दक्षता से किया। अन्त में आरती व शान्तिपाठ पूर्वक उत्सव समाप्ति की घोषणा की गई। इसके बाद लगभग इक्कीस हजार की लागत से निर्मित आयुर्वेद कालेज के 'छोटूराम द्वार' का गुरुकुल सभा प्रधान चौ० माडूसिंह जी ने यज्ञ के साथ उद्घाटन किया। इस अवसर पर २०३ रुपये वेदप्रचार तथा २०० रु० दशांश के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दिए गये।

—किरण दलाल

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

पलवल। आर्य वीर दल हरयाणा के तत्वावधान में आर्यसमाज नरवाना की ओर से आगामी १७-४-८३ से २४-४-८३ तक एक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर लगाया जाएगा जिसमें आसन, व्यायाम, प्राणायाम, दण्ड बैठक, लाठी, भाला, तलवार आदि सिखाये जायगे। अतः इच्छुक शिविरार्थियों से निवेदन है कि समयानुकूल बिस्तर, वस्त्र थाली, कटोरी, लाठी इत्यादि आवश्यकीय वस्तुएँ साथ ले आवें। सभी शिविरार्थी अपनी अपनी समाज के प्रधान तथा संस्था के संचालकों से प्रमाण-पत्र भी साथ ले आवें तथा अपना प्रवेश पत्र मन्त्री, आर्यसमाज नरवाना के नाम से यथाशीघ्र भेज देवें। शिविरार्थियों के लिए निम्न शर्तें होंगी-

१—आयु कम से कम १५ साल या उससे ऊपर हो।

२—शिविरार्थी को अनुशासन का विशेष रूप से पालन करना होगा तथा पूरे समय तक शिविर स्थल पर ही रहना होगा।

३—प्रत्येक शिविरार्थी को प्रवेश शुल्क १५ रुपये अनिवार्य रूप से देना होगा।

४—गणवेश सफेद कमीज, खाकी नीकर, ब्राउन प्लीट तथा सफेद जुराब एवं व्यायाम के समय पहनने के लिए सफेद सैण्डोकट बनियान तथा काला कच्छा होना चाहिए।

शिविरार्थी १७-४-८३ को दोपहर तक आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द में पहुंच जावें ताकि ठीक ढंग से व्यवस्था हो सके।

अजीतकुमार आर्य
मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा

ईश्वर से कैसे मिलें ?

—आचार्य उदयवीर शास्त्री

शिष्य—अध्यात्म शास्त्रों में ब्रह्मज्ञान के अन्तरंग साधनभूत निदिध्यासन का उपदेश किया जाता है। गुरुपदेश से एक बार जान लेने पर ब्रह्मज्ञान हो जाना चाहिए, पर ऐसा देखा नहीं जाता, फिर शास्त्र ने ऐसा उपदेश क्यों किया ?

गुरु—निदिध्यासन उस अवस्था का नाम है, जब ब्रह्म का ध्यान करते करते समाधि-दशा समीप आ जाती है। अध्यात्म उपासना का यही विषय है, कि आत्मा देह में रहता भी देह से अलग एक चेतन तत्त्व है, और परमात्मा आत्मा का भी आत्मा है, तथा समस्त विश्व का अधिष्ठाता और अन्तर्यामी रूप से सर्वत्र व्याप्त है, इस स्थिति को साक्षात् रूप में जान लिया जाय। तुम्हारी जिज्ञासा का यह भाव प्रतीत होता है, कि जब इस विषय को एक बार जान लिया तो इसे बार बार दुहराने की क्या आवश्यकता है ? जब ब्रह्म के विषय में एक बार गुरु ने अथवा शास्त्र ने कह दिया, कि वह सर्वशक्तिमान्-सर्वान्तर्यामी सबका अधिष्ठाता एवं नियन्ता है, और सुनने वाले ने सुन जाने लिया; फिर उपासना आदि का निरन्तर अभ्यास करना अनावश्यक है।

इस विषय में यह समझ लेना चाहिए—उपासना आदि निदिध्यासन का फल ब्रह्म का साक्षात्कार करना है। एक बार उपदेश से जो ज्ञान होता है, वह केवल शब्दज्ञान है, साक्षात्कार नहीं, चाहे वह गुरु के उपदेश से हुआ हो, अथवा शास्त्र के अध्ययन से। जब तक साक्षात्कार न हो जाय, तब तक उपासना रूप में निदिध्यासन का निरन्तर अभ्यास करते रहना आवश्यक है। क्योंकि उपासना का यही प्रयोजन है, इसलिए प्रयोजन पूरा होने तक उसके साधनों का आदरपूर्वक निरन्तर अभ्यास करना अपेक्षित होता है। शास्त्र का यही उपदेश है कि फल-प्राप्ति तक प्रयत्न चालू रखना चाहिए।

शिष्य—क्या शास्त्रीय वचनों से यह ज्ञात होता है, कि ब्रह्मज्ञान के लिए निदिध्यासन का निरन्तर अभ्यास करना चाहिए ? एक ही बात की बार बार आवृत्ति करते रहना क्या उपयुक्त है ?

गुरु—निश्चित रूप से शास्त्र इस तथ्य का प्रतिपादन करता है। बृहदारण्यक उपनिषद् (४।५।६) में मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य का संवाद है। मैत्रेयी के पूछने पर कि क्या मैं इस धन-सम्पत्ति एवं सांसारिक ऐश्वर्यों के उपभोग से अमर हो जाऊंगी, याज्ञवल्क्य कहता है, ऐसा होना सम्भव नहीं। उस अवस्था को प्राप्त करने के लिए परमात्मा का दर्शन आवश्यक है (आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः)। निश्चित ही उस परब्रह्म का साक्षात् दर्शन अमृत अवस्था को प्राप्त करना है। साथ ही याज्ञवल्क्य ने कहा—उसके दर्शन के साधन श्रवण, मनन, निदिध्यासन हैं। शास्त्र अथवा गुरुओं द्वारा ब्रह्म के विषय में सुनना, सुनकर उसको स्वयं एकांत में मनन करना जिससे सुने हुए की यथार्थता परिपक्व हो सके। अनन्तर शास्त्र में बताई गई उपासना विधियों द्वारा उस तत्त्व का ध्यान करना। यह प्रक्रिया उस समय तक प्रवृत्त रखी जाती है, जब तक ब्रह्म का साक्षात् दर्शन नहीं हो जाता। अमृत अवस्था अथवा मोक्ष की प्राप्ति के लिए जिज्ञासु का परम ध्येय एवं लक्ष्य ब्रह्म का दर्शन है। यदि सकृत् उपासना से वह प्राप्त नहीं होता, तो उसकी असकृत् आवृत्ति (बार-बार) का किया जाना आवश्यक हो जाता है।

शिष्य—यह ठीक है, कि उपासना रूप निदिध्यासन का अभ्यास ब्रह्म दर्शन होने तक बराबर करता रहे, पर यह ज्ञात नहीं हुआ कि निदिध्यासन का वह विषय क्या है, जिसकी निरन्तर आवृत्ति की जानी चाहिए ?

गुरु—वेदादि शास्त्र और उनके मानने वाले ऋषि एवं अन्य आचार्य सर्वव्यापक परमात्मा को निदिध्यासन का विषय मानते हैं, और उपासक के लिए ऐसा उपदेश करते हैं। मुण्डक उपनिषद् (२।२।६) में बताया—'ओमित्येवंध्यायथ आत्मानम्'। 'ओम्' इस नाम द्वारा जप करते हुए सर्वव्यापक परमात्मा का ध्यान करो। जो ब्रह्म के सच्चिदानन्द स्वरूप को जान लेता है, वह स्वरूप से परब्रह्म परमात्मा में प्रवेश पाता है। उस आनन्द में निमग्न हो जाता है। यजुर्वेद (३२।११) में बताया—समस्त चेतन-अचेतन तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप को वेदादि अभ्यास धर्माचरण योगासनानुष्ठान आदि जानकर उपासक सर्वव्यापक परब्रह्म में प्रवेश कर जाता है, उस आनन्द का अनुभव करने लगता है।

बृहदारण्यक उपनिषद् (१।४।१०) में प्रसंग है—ब्रह्म व इदमग्र आसीत् तदात्मानमेवावेत्-अहं ब्रह्मास्मीति। सर्ग से पहले केवल वह ब्रह्म था, उसने अपने आपको जाना कि मैं ब्रह्म हूं। इसी सन्दर्भ में आगे वर्णन है—वह समस्त कार्य जगत् का उत्पादक है, इस तथ्य को देव ऋषि और मनुष्यों में जो जो जान लेता है वह वही हो जाता है, अर्थात् उस आनन्दस्वरूप का अनुभव करता है। आज भी जो उस तथ्य को जान सकता है, ब्रह्म के जगत्कर्तृत्वस्वरूप का साक्षात्कार कर लेता है, वह ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है। जो उपासक उस ब्रह्म से अन्य देवता की उपासना करता है, कि उपास्य देवता अन्य है और ब्रह्म अन्य है, वह यथार्थतत्त्व को नहीं जान पाता, अज्ञानान्धकार में पड़ा रहता है।

उपनिषद् के उक्त सन्दर्भ में यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है; कि 'अहं ब्रह्मास्मि' वाक्य को किसी उपासक जीवात्मा ने नहीं कहा। उपनिषत्कार की शैली के अनुसार वह वाक्य ब्रह्म संकल्परूप में कहा गया गया है। उपनिषद् की शैली से स्पष्ट है, उपनिषत्कार ने यह वाक्य ब्रह्म द्वारा कहलाया है। आगे इस सन्दर्भ में स्पष्ट कहा है—ब्रह्म से अतिरिक्त अन्य कोई देवता उपास्य नहीं है। स्वयं उपासक जीवात्मा को उपास्य के रूप में यहाँ नहीं कहा गया। आपाततः ऐसी भावना किसी वाक्य या वाक्यांश से प्रतीत हो तो उसे अतिशय भक्ति के उद्रेक का परिणाम जन औपचारिक समझना चाहिए, वास्तविक नहीं। ऐसे वर्णनों में प्रायः ब्रह्म को उपासक द्वारा अपना माता; पिता, भ्राता, सखा आदि कह दिया जाता है, जो वास्तविक नहीं कहा जा सकता; इसीलिए निदिध्यासन का विषय अर्थात् उपास्य देवता केवल परब्रह्म परमात्मा है, अन्य नहीं। परमपद की प्राप्ति के लिए उसी का ध्यान अपेक्षित है।

शिष्य—उपासना में क्या किसी भौतिक प्रतीक का आधार लेकर निदिध्यासन का अभ्यास करना उपयुक्त हो सकता है ?

गुरु—किसी भौतिक तत्त्व को आधार मान उनमें ब्रह्मभावना अथवा ब्रह्म की उपासना करना सर्वथा निष्प्रयोजन होता है; क्योंकि वह प्रतीकरूप भौतिक तत्त्व ब्रह्म नहीं है। उपासना अथवा निदिध्यासन का ऐसा आधार तत्त्वप्रतीक जड़ पदार्थ है, ब्रह्म चेतन, आनन्दस्वरूप है; उन दोनों में अन्धकार और प्रकाश के समान भेद है। ब्रह्मज्ञान के लिए जड़ की उपासना करना नितान्त प्रयोजनहीन है। इसलिए उपास्यरूप में चेतन ब्रह्म का निदिध्यासन होना चाहिए, अन्य किसी तत्त्व का नहीं।

शिष्य—उपनिषदों में अनेक ऐसे सन्दर्भ (छा० ३।१८।१, ३।१९।१) हैं, जहाँ मन एवं आदित्य आदि को ब्रह्म मानकर उपासना करना है; उनका क्या अभिप्राय हो सकता है ? मन आदि भी जड़ पदार्थ हैं, ऐसी उपासना का विधान क्यों किया है ?

गुरु—परमात्मा समस्त ब्रह्माण्ड में अन्तर्यामी रूप से व्याप्त है। ब्रह्माण्ड एक प्रकार से उसके शरीर के समान है। मन, आकाश, आदित्य आदि उसी के अंश हैं। जड़ शरीर चेतन अधिष्ठाता के बिना सचेत नहीं रह सकता। वस्तुतः शरीर रूप में उसका अवस्थित रहना चेतन अधिष्ठाता की महत्ता का द्योतक है; क्योंकि उसके बिना शरीर का अस्तित्व शरीर रूप में नहीं रहता। आकाश आदित्य आदि ब्रह्म हैं; इसका तात्पर्य है, कि इन सबमें ब्रह्म व्याप्त है, उसी की प्रेरणा इनके इस स्वरूप में प्रतीत होने का आधार है। यह सब उसी अचिन्त्य शक्ति परब्रह्म की विभूति है। उसी के अस्तित्व पर समस्त लोकान्तर प्रकाशित हैं।

(क्रमशः)

उदय हुआ जग के आंगण में आर्यसमाज

उदय हुआ जग के आंगन में आर्यसमाज महान् ।
तमस-तोम को भेद भगाया विकसा नव्य विहान ।।

मानव के मानस पर छाई,
घोर अविद्या की परछाई ।
विमल चन्द्रसा उदय हुआ यह,
तम की माया मार भगाई ।
नवयुग का सन्देश दिखाकर ज्योतितयह् दिनमान ।
तमस-तोम को भेद भगाया विकसा नव्य विहान ।।

जड़ीभूत हुआ था सारा,
सदियों का चेतन चिन्तन ।
मध्यकाल की ही माया को
मान लिया था जीवन धन ।
मेघ उमड़ते थे कलिकामय पूरा ज्योति वितान ।
तमस-तोम को भेद भगाया विकसा नव्य विहान ।।

सूखी सरिता सी थी नारी,
बन्धन था हां जिसपर भारी ।
बनी अविद्या की प्रतिमा थे;
सकल विश्व की जननैहारी ।
नारी शिक्षा द्वार खोलकर किया वेद जयगान ।
तमस-तोम को भेद भगाया विकसा नव्य विहान ।।

मानव मानव के मानस में,
गहरी अतल गहराई थी ।
ऊंच-नीच के भेद भाव ने,
निज दुन्दुभि बजाई थी ।
मानव मानव की समता का किया आज उद्गान ।
तमस-तोम को भेद भगाया विकसा नव्य विहान ।।

ऋषिवर देव दयानन्द प्यारा;
भारत-माँ का भाग्य सितारा ।
माता के सब बन्धन काटे,
'कृण्वन्तो-विश्व-मार्यं' उचारा ।
आर्यसमाज स्मारक उसका अमर अभय बलिदान ।
तमस-तोम को भेद भगाया विकसा नव्य विहान ।।

सत्य सूर्य को दर्शाया,
मिथ्या मन्डल दूर भगाया ।
कहदूं क्यों न आर्य-जाति को,
तूने सोती हुई जगाया ।
युगों युगों तक अमर रहे सन्देश तेरा पवमान ।
तमस-तोम को भेद भगाया विकसा नव्य विहान ।।

धर्मचन्द्र विद्यालङ्कार
'समन्वित' एम० ए०

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित ।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 पंजिकृत P/RTK 49 फोन ७२११ ७६१



ओ३म् कृण्वन्तो

सर्वहितकारी

रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह आर्यप्रदेश सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १०, अङ्क १८ | १४ अप्रैल १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

अकाली मांगें—

अंग्रेजों की पुरानी चाल का नया दौर

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

[illegible] प्रधानमन्त्री ने साम्राज्यशाही का भारत में अन्तिम खेल खेलने के [illegible] बेटन को चुना। सम्राट से उन्होंने पहिले ही बात [illegible] इतना बड़ा उत्तरदायित्व सम्भालने के पहिले माउंटबेटन चर्चिल का हार्दिक सहयोग अनिवार्य समझते थे। उन्होंने मिलकर अपनी पूरी योजना चर्चिल को बताई और क्योंकि योजना उनके चिंतन के अनुकूल थी। इसलिए उन्होंने अपने क्रियात्मक सहयोग का आश्वासन दिया। माउण्टबेटन को भारत का विभाजन करने के उद्देश्य से भेजा गया था। वे १९४८ के आरम्भ तक विभाजन करने की सोच रहे थे, परन्तु अचानक उन्होंने अपना विचार बदल लिया और छः महीने पहिले ही एकदम तैयारियों में लगकर अगस्त में ही विभाजन का काम पूरा करने का निश्चय कर लिया। ''फ्रीडम एट मिडनाइट'' के लेखकों से माण्टबेटन ने अपनी जल्दी का कारण तो नहीं बताया, परन्तु महात्मा गांधी की प्रशंसा करते हुए यह कहा कि वे भी भारत का विभाजन ठीक नही मानते थे और यदि उनको यह पता लग जाता कि जिन्नाह साहब 'जानलेवा' बीमारी से ग्रस्त हैं तो वे विभाजन को टाल देते और यदि जिन्नाह साहब चले जाते तो विभाजन रुक जाता। ऊपर लिखी बातों को जोड़, मेरा निष्कर्ष इससे बिल्कुल उल्टा था। लार्ड मांउटबेटन ने अचानक भारत के विभाजन का कार्यक्रम इसलिए बदला और जल्दी से अपना खेल खेलने के लिए उतावले हो गए, क्योंकि उनको पता लग गया था कि जिन्नाह यदि 'जानलेवा' बीमारी के शिकार हो गये तो विभाजन सम्भव नहीं हो सकेगा, इस लिए शीघ्र से शीघ्र अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी आवश्यक कदम एकदम उठा लिए जाएं। पिछले कई वर्षों में जब से 'फ्रीडम एट मीडनाइट' पुस्तक पढ़ी मैं अपना मन्तव्य सब जगह कहता रहा, परन्तु अधिकतर लोग यही समझते थे कि 'मैं बहुत दूर की सोच रहा हूं'। परन्तु अंग्रेज तो उससे भी दूर की सोचता है यह हम आसानी से भुला देते हैं।

अब जो चर्चिल और जिन्नाह का फर्जी नामो से हुआ पत्र व्यवहार प्रकाश में आया है। पता चला है कि जिन्नाह विभाजन के फलस्वरूप होने वाली साम्प्रदायिक मारकाट में करोड़ों मुसलमानों के कतल की सम्भावना से भयभीत होकर विभाजन की अपनी बात छोड़ने की बात बड़ी गम्भीरता से सोचने लगे थे। चर्चिल ने उनको बुलाकर फिर से पक्का किया और उसके पश्चात् जिन्नाह ने लन्दन से ही एकदम विभाजन करने की जोरदार मांग की। माउण्टबेटन का भी चर्चिल से सतत सम्पर्क बना हुआ था। अधिक समय लगने पर जिन्नाह का मन बदलने की आशंका थी और बीमारी के कारण चले जाने की भी। इसीलिए माण्उटबेटन अपने काम में जुट गए और जिस उद्देश्य को लेकर भारत में आए थे वह पूरा कर दिखाया। भारत उनको अपना मित्र समझता रहा और माउण्टबेटन ने पं० नेहरू और सरदार पटेल की उसी पुस्तक में खिल्ली उड़ाई है।

भारत के विभाजन के समय अंग्रेज पाकिस्तान और भारत के बीच में खालिस्तान भी बनाना चाहते थे। जिन्नाह ने अंग्रेजों का सुझाव नहीं माना और यह कहा कि पाकिस्तान के आधीन एक इकाई के रूप में वे उसे मानकर अल्प संख्यक के नाते सिखों को सब सुविधाएं देने को तैयार हैं। स० हरिदत्त सिंह मलिक ने भी अपने 'इण्डियन एक्सप्रेस' में छपे लेख में इसका जिक्र किया है। अंग्रेज विभाजन की जल्दी में थे और वे जिन्नाह की इच्छाओं के विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहते थे, इसलिए 'खालिस्तान' की उनकी योजना धरी की धरी रह गई। परन्तु अंग्रेज अपनी उस १९४७ की योजना को सदा के लिए छोडने को तैयार नहीं है। इसलिए अब ३५ वर्ष के बाद उसको फिर से खड़ा करने में अंग्रेज जी-जान से लगा हुआ है। ब्रिटिश दूरदर्शन पर जिस ढंग से जगजीतसिंह चौहान और भारत के उच्च आयुक्त का जिस चालाकी से रिकार्डिंग किया और फिर उसे प्रसारित किया। यह उनके प्रयास की एक कड़ी है कैनेडा में 'खालिस्तानियों' का अड्डा बनाना और अमरीका द्वारा जगजीत सिंह चौहान को वीजा देना भी उसी शृंखला में है। पाकिस्तान में भी 'खालिस्तान' के नारे ऐसे ही नहीं लगे। पाकिस्तान के समाचार पत्र जरूर आशंका प्रकट कर रहे हैं कि कहीं ऐसा राष्ट्र अपनी दीवारों से लगाकर बनाना इजराइल की तरह मुसीबत बनकर खड़ा न हो जाए। इसलिए पाकिस्तान में वह तेजी अब नहीं रह गई है।

अकाली आन्दोलन जो पंजाब में चल रहा है, उसमें दो तत्त्व काम कर रहे हैं, वे एक दूसरे से अलग दिखाते हुए भी एक दूसरे के सहायक के रूप में काम कर रहे हैं। यह तो स्पष्ट ही है कि एक की गतिविधियों से एक दूसरे को सहायता मिलती है, इसलिए वे एक दूसरे से मिलकर काम कर रहे हैं। जहां उनको अनुकूल पड़ता है वहां एक दूसरे की मधुर सी आलोचना भी कर लेते हैं, परन्तु एक दूसरे की भर्त्सना या खुली निन्दा नहीं कर रहे। पुलीस पर हमला करने वाले भिंडरावाला के साथी 'नानक निवास' में आ जाते हैं और खुलकर अपना आदमी बताने पर भी भिंडरवाला और सन्त लोंगोवाल का कोई संघर्ष नहीं है। सन्त लोंगोवाल हिंसक घटनाओं के दबाव में अपनी मांग मनवाने के लिए तो खूब कहते हैं परन्तु इन घटनाओं की निन्दा नहीं करते।

इन दोनों तत्त्वों में से एक तत्त्व तो भारत के अन्दर काम कर रही साम्प्रदायिक शक्तियों से जुड़ा हुआ है और भारत के बाहर भारत

विरोधी शक्तियों से। वे अंग्रेज का १९४७ का सपना पूरा करने के लिए उनका हथियार बने हुए हैं। विरोधियों की हत्या, हवाई जहाजों का अपहरण, गो माता के अंगों को काटकर मन्दिरों में डालकर हिन्दू सिख दंगे करवाने की कुचेष्टा, पुलिस पर आक्रमण इस प्रकार की गतिविधियां इस तत्त्व की रही हैं।

दूसरा नरमदल कहलाने वाला तत्त्व इस देश विरोधी, धर्मविरोधी हिंसात्मक तथा आतंकवादी गतिविधियों के दबाव में अपनी तथाकथित धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक माग मनवाने में लगा है।

अकालियों ने कुल मिलाकर ४५ मांगें पेश की हैं। इनमें से बहुत सारी इतनी अटपटी हैं कि उन्हें प्रचारित करने का हौसला वे स्वयं भी नहीं बटोर पाये। वे मांगें वास्तव में सिख जनता को दिखाने के लिए हैं। उन मांगों को दिखाकर वे सिख जनता को आश्वस्त करना चाहते हैं कि उनका कार्यक्रम लम्बा है और एक एक करके ये सब मागें मनवानी हैं, जिससे सिखों का पंजाब में ही नहीं पूरे राष्ट्र में बोलबाला हो जाए। पहिले पंजाब में आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के द्वारा स्वायत्तता के अधिकार लेकर सिखों का बोलबाला है, ऐसा विधान बनाना है और फिर सारे देश में। सारे देश में बनाने के लिए सिखों का अधिक से अधिक पदों पर कब्जा और सरकारी तन्त्र में अपनी संख्या से दस गुने से बीस गुने तक छोटी जगह से बड़ी जगह तक नुमाइन्दगी।

धार्मिक मांगों में उन्होंने अमृतसर और पटना को वेटिकन सिटी का दर्जा, अमृतसर को पवित्र नगरी घोषित करना, अमृतसर में अलग से स्वर्ण मन्दिर में ट्रान्समीटर लगाकर प्रसारण की सुविधा, हवाई जहाज से लेकर जेल तक कृपाण की छूट। अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून के द्वारा देश भर के गुरुद्वारों पर प्रबन्धक कमेटी द्वारा अकाली दल का प्रभुत्व इत्यादि। राजनैतिक मांगों में रावी व्यास के पूरे पानी और बिजली का स्वामित्व पंजाब का जिसमें उनका बोलबाला हो। चंडीगढ पंजाब को और फाजिल्का अबोहर भी हिन्दी भाषी होते हुए भी उनका। अम्बाला जिला, पानीपत छोड़कर करनाल जि. कैथल क्षेत्र को छोड़कर, कुरुक्षेत्र जिला, जिला जीन्द हिसार और सिरसा का बहुत बड़ा भाग भी पंजाब को दिया जाए। पुरानी भाखड़ा आदि की नहरों के हैडवर्क्स का नियन्त्रण भी पंजाब के पास रहे।

सेनाओं में सिखों के २५ प्रतिशत जवान और २५ प्रतिशत अफसर तीनों सेनाओं के या तो अध्यक्ष या उपाध्यक्ष सिख। केन्द्र की सब नौकरियों में १० प्रतिशत सिख। केन्द्रीय सचिवालय में १० प्रतिशत आई० ए० एस० (I. A. S) आदि सभी अखिल भारतीय सेवाओं में १० % सिख। यदि अनुशासनात्मक कार्यवाही सिख कर्मचारी के विरुद्ध करनी हो तो उसके लिए गठित तीन जजों के ट्रिब्यूनल में दो जज सिख रखे जायें।

५ राज्यपालों के अतिरिक्त उप-राज्यपाल भी, ५ राजदूत जिनमें से पाकिस्तान का राजदूत सदा सिख इत्यादि।

आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के कई संस्करण सामने आये, परन्तु सब में अलगाव की बात और सिखों के बोलबाले की बात मुख्य। अधिकतर राष्ट्रीय दलों ने देश विरोधी तथा साम्प्रदायिक मांगों का विरोध किया। अकेले पड़ने पर अकालियों ने ४५ मांगों में से १० मांगें ही रखी। भारत सरकार ने संसद में विरोधी दलों के प्रतिनिधियों को शामिल करके त्रिपक्षीय वार्ता आरम्भ की। वह भी असफल हो गई। अकाली फैसला नहीं चाहते, कुछ और चाहते हैं।

अकालियों की मांगों में यथार्थता नहीं है, क्योंकि आन्दोलन करना है, इसलिए कुछ मांगें तो बनानी ही पड़ेंगी, जिनका नाम लेकर लोगों को अपने साथ लगाया जा सके। सिख जनता को साथ लगाने के लिए उनको विशेष दर्जा दिलाने का या उनका अलग राष्ट्र बनाने की बात से बढ़कर और क्या बात हो सकती है। इसलिए नरमदल वालों ने पहली बात को और उग्रवादियों ने दूसरी बात को उछाला। ४५ मांगों में यही भावनायें झलकती हैं। तथाकथित धार्मिक मांगों को ही देखें। यदि स्वर्ण मन्दिर से गुरुवाणी का प्रसारण न हो और जालन्धर के आकाशवाणी केन्द्र से दूसरे धार्मिक कहे जाने वाले कार्यक्रमों के साथ गुरुवाणी का भी प्रसारण हो तो भी उस कार्यक्रम को उसी प्रकार अपने घरों में सुन सकते हैं, और किसी दूसरे सम्प्रदाय का धार्मिक कार्यक्रम उनके धर्म स्थान से हो रहा हो तो भेदभाव की बात कही जा सकती है, परन्तु ऐसा तो नहीं हो रहा, तो सिखों को क्या शिकायत हो सकती है। कृपाण को हवाई जहाज में भारत के अन्दर लेने की छूट थी, परन्तु उसका दुरुपयोग किया और डर दिखाकर हवाई जहाज का अपहरण किया। इसी के कारण कृपाण का हवाई जहाज में ले जाना बन्द किया। भर्त्सना तो ऐसे लोगों की सिख जनता में करनी चाहिए थी, जिन्होंने यह अपराध किया, उल्टा कृपाण की छूट को वापिस लेने के लिए सरकार को दोषी ठहराया जाने लगा। अमृतसर को पवित्र नगरी और वेटीकन सिटी का दर्जा देने की बात सिख जनता की भावनाओं को उकसाने के लिए की गई, और उन्हें भी मांगों के रूप में पेश किया गया। सभी धर्म स्थानों के पास पास शराब तथा नशे की दुकानें न हों केवल अमृतसर में ही और वह भी केवल स्वर्ण मन्दिर के पास ही क्यों? वेटीकन का दर्जा अमृतसर को दिया जाए और पटना को भी तो इस देश में अनेकों नगर वेटीकन बन जायेंगे। इन मांगों में कोई सार नहीं है। इसी प्रकार अनेकों पदों के लिए अपनी संख्या से १० गुना और २० गुना दिए जाने की बातों में कोई तुक नहीं है। जो राजनैतिक मांगें की गई उनके बारे में भी कोई तर्क उनके पास नहीं है। इन्हीं मुद्दों के फैसले हो चुके, आयोग भी कर चुके और राजनैतिक फैसले भी हुए जिनको अकालियों ने माना, परन्तु फिर वही मांगें उठा दी। जिस बात का फैसला आयोग ने दिया उसको राजनैतिक फैसले के द्वारा बदलने की कह रहे हैं और जो राजनैतिक फैसले दिए गए और उन्होंने स्वयं अनेकों बार माना, उनके लिए अब आयोग के गठन की बात करते हैं।

अकालियों की समस्या वास्तव में कोई समस्या है नहीं, बनाई गई है। ऐसी समस्या का एक तो वैसे ही समाधान सम्भव नहीं। परन्तु यदि कोई उनकी किसी बात को बीच बचाव करके मान भी लिया जाए ताकि देश में शान्ति बनी रहे। विदेशियों का प्रभाव समाप्त किया जा सके इस भावना से पड़ोसी प्रदेश कुछ घाटा भी उठालें, तो भी इनका यह भरोसा नहीं कि आज जो बात कहते हैं, उस पर कल टिके भी रहेंगे। शाह आयोग ने चण्डीगढ समेत खरड़ तहसील हरयाणा को दी। हरयाणा के लोगों ने फाजिल्का अबोहर के १०५ गांव जो हिन्दी भाषी हैं उनके दिए जाने पर सन्तोष कर लिया। अकालियों ने १९५९ में लिखित रूप से माना कि यह क्षेत्र हिन्दी भाषी है, फिर अकाल तख्त पर हुई हरयाणा और अकालियों के प्रतिनिधियों की संयुक्त बैठक में

[शेष ५ पर]

सम्पादकीय

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज का संविधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् १८७५ में बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। महर्षि का उद्देश्य यह था कि इस समाज के माध्यम से विश्व को आर्य बनाया जाए और प्राचीन वैदिक संस्कृति का विश्व में प्रसार किया जाय। आज आर्यसमाज की स्थापना को १०८ वर्ष हो चुके हैं किन्तु आर्यसमाज का यह उद्देश्य धूमिल ही होता जा रहा है। इसमें निम्नलिखित कारण हैं—

महर्षि कृत सत्यार्थ प्रकाश आर्यसमाज का संविधान है। उसमें वेद के आधार पर मनुष्य एक जाति स्वीकार की गई है। उसके आर्य और दस्यु दो भेद बतलाये हैं। आर्यों के ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र गुण कर्म, स्वभाव के आधार पर ये चार भेद हैं। इन्हें ही चार वर्ण कहते हैं। शिक्षा के उपरान्त आचार्य अपने शिष्यों को उनके गुण, कर्म तथा स्वभाव के अनुसार उक्त वर्ण प्रदान करता है। आर्यों को इनके अतिरिक्त और कोई प्रधान वर्गीकरण नहीं है। आज महर्षि के अनुयायी अपने आपको आर्य मानते हैं, यह तो बहुत अच्छी बात है, किन्तु वे प्रचलित जातिवाद के बन्धन में भी बुरी तरह फसे हुए हैं। जिस प्रचलित जाति में उनका जन्म हुआ है उसके ही हित चिन्तन तक सीमित रहते हैं। वे ही लोग उनको अच्छे लगते हैं। दूसरे वर्ग के लोग उन्हें परदेशी जैसे प्रतीत होते हैं। वे उनके साथ सामान्य व्यवहार तक चलते हैं, विशेष व्यवहार में अपने जन्मगत वर्ग के लोगों को ही महत्त्व देते हैं। अपने पुत्र-पुत्रियों का विवाह सम्बन्ध अपने जन्मगत वर्ग के लोगों के साथ ही करते हैं। दूसरे वर्ग के लोगों के साथ वे विवाह सम्बन्ध इसलिए नहीं करते कि या तो वे उन्हें अपने वर्ग से ऊंचा मानते हैं या उन्हें अपने से नीचा समझते हैं। यदि अपने से ऊंचे वर्ग में मैंने अपनी बेटी दे दी तो वे मेरी बेटी को नीच समझेंगे और यदि मैंने अपनी बेटी को अपने से नीचे वर्ग में दे दिया तो मेरी बेटी उस वर्ग को पसन्द नहीं करेगी। यह सब छुआ-छूत का परिणाम है। पौराणिक हिन्दू मत के अनुसार सभी प्रचलित वर्ग एक दूसरे से छोटे बड़े हैं। इसलिय उच्चवर्ग के लोग नीच वर्ग के लोगों से प्रत्येक व्यवहार में संकोच रखते हैं। यही संस्कार आर्यों के मन में भी बैठा हुआ है। उनके मन से यह संस्कार दोष अभी तक नहीं निकल पाया है। आर्यों के मन में यह बात अभी तक नहीं बैठी है कि मनुष्य जाति एक है और उसके उक्त ब्राह्मण आदि चार ही भेद हैं, अन्य सब भेद मानव की अपनी कल्पना है। स्वार्थी लोगों ने इन्हें ऊंच नीच बताया है।

वैदिक संस्कृति में ब्राह्मण आदि वर्णों की शरीर के मुख आदि अंगों से उपमा दी गई है। जैसे शरीर के मुख आदि अंगों का अपने-२ स्थान पर अपना अपना महत्त्व है, वैसे ब्राह्मण आदि वर्णों का अपने-२ कार्य में अपना अपना स्थान है। जैसे शरीर के सब अंग मिलकर एक पूर्ण शरीर की रचना करते हैं वैसे ये ब्राह्मण आदि वर्ग सब मिलकर एक पूर्ण आर्यों के समाज की रचना करते हैं। ऊंच नीच कोई नहीं। ऊंच नीच मानने पर समाज में घृणा और द्वेष का वातावरण जन्म लेता है। जैसे शरीर में सिर, हाथ, उदर और पैर सबकी आवश्यकता है, वैसे समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सबकी अपेक्षा है। आज इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि आर्यसमाज के नेता, विद्वान् तथा कार्यकर्त्ता लोग प्रचलित जातिवाद की गली-सड़ी चदरिया को दूर फेंककर प्राचीन वर्ण व्यवस्था का सुन्दर शाल धारण करें।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में आर्यों को समाज के लिए ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम का विधान किया है। इन आश्रमों में ब्रह्मचर्य और वानप्रस्थ आश्रम अनिवार्य है। जो गृहस्थ है उसके लिए यथासमय वानप्रस्थ आश्रम अनिवार्य है। ब्रह्मचर्य सबके लिए अनिवार्य है। गृहस्थ और संन्यास ऐच्छिक आश्रम है। यदि गृहस्थ आश्रम में जाने की इच्छा न हो तो न जावे। संन्यास आश्रम का विधान केवल ब्राह्मण के लिए है। क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र उसके अधिकारी नहीं हैं। ब्राह्मण को भी यदि अभीष्ट वैराग्य नहीं है तो वह संन्यास आश्रम में प्रवेश न करे।

आज आर्यसमाज में प्राचीन गुरुकुल पद्धति की उत्तम व्यवस्था न होने से ब्रह्मचर्याश्रम की पद्धति प्रचलित नहीं है। यह पद्धति वर्ण व्यवस्था का मूल है। इसलिए वर्ण व्यवस्था भी सुचारू रूप से नहीं चल रही है। इसका उपाय यह है कि आज आर्यसमाज की सभी शिक्षण संस्थाओं के लिए अपने ढंग का विश्वविद्यालय हो। सब शिक्षण संस्थाएं उसके साथ सम्बद्ध हो उसकी शिक्षा का विश्वभर में ऊंचा स्थान हो। आर्यों के सब पुत्र पुत्रियां उसी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करें और उससे अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार वर्णों में दीक्षित होकर समाज में श्रेष्ठ नागरिक बने।

आज आर्यों का सारा जीवन गृहस्थाश्रम में ही व्यतीत हो जाता है। इससे आर्यसमाज की बड़ी हानि हो रही है। यदि कोई वानप्रस्थ ले भी लेते हैं, वे भी अपने पुराने धन्धे में ही उलझे रहते हैं। आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए पूरा समय नहीं देते। इससे आर्य समाज पिछड़ता जारहाहै। आर्यसमाज स्थान स्थान पर वानप्रस्थ आश्रमों की स्थापना करे जिससे आर्य वानप्रस्थ लोग साधना कर सके और उन्हें अपने केन्द्र बनाकर समाज कल्याण के कार्यक्रम में योगदान कर सके। आज कुछ आर्य संन्यासी भी आर्यसमाज में वैदिक धर्म के प्रचार कार्य को छोड़कर राजगद्दी की ओर भाग रहे हैं। इससे आर्यसमाज की बड़ी क्षति हो रही है। जब आर्य संन्यासी भी राजगद्दी की ओर भागेंगे तो राजाओं को धर्म उपदेश कौन करेगा? गृहस्थी को त्याग पूर्वक भोग की शिक्षा कौन देगा? संन्यास त्याग का उच्च आदर्श है। उसका लोक से विलोप हो जाएगा और भोगवाद ही बढने लगेगा। संन्यासी को तो सारा समाज महाराज मानता है। फिर राजा बनने की क्या आवश्यकता है। जब संन्यासी किसी एक राजनैतिक दल से बन्ध जाएंगे तब वे सत्य एवं न्याय की बात नहीं कह सकेंगे, निर्भय नहीं रहेंगे। आर्य संन्यासियों के लिए सत्यार्थप्रकाश में महर्षि के लिखे ये शुद्ध मनन करने योग्य हैं—वेदादि सत्य शास्त्रों का प्रचार, धर्म व्यवहार का ग्रहण और दुष्ट व्यवहार के त्याग, सत्य उपदेश और सबको निःसन्देह आदि के लिए संन्यास आश्रम है परन्तु जो इस संन्यास के मुख्य धर्म सत्य उपदेश आदि नहीं करते वे पतित और नरकगामी है।

(सत्यार्थप्रकाश पंचम समुल्लास)

आर्य संन्यासियों का तथा आर्य नेताओं का यह मुख्य कर्त्तव्य है कि वे आर्यसमाज के सत्यार्थप्रकाश नामक संविधान को प्रचलित करे। जब तक कोई संविधान किसी समाज में प्रचलित नहीं होता तब तक वह एक मृत संविधान है। इस संविधान के प्रचलित किये बिना सच्चा आर्यसमाज नहीं बन सकता। यदि महर्षि का बनाया संविधान पुराना हो गया है और वह वर्तमान सामाजिक परिस्थिति में अनुपयोगी है, तो आर्यसमाज के कर्णधार कोई नया संविधान बनावें और पुराने संविधान को रद्द घोषित करें।

सुदर्शनदेव आचार्य

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय डा० सुदर्शनदेव जी सादर नमस्ते।

आपके पत्र का मैं तीन महीने से ही ग्राहक बना हूं। आपका विशेषांक वास्तव में बहुत आकर्षक लगा। पत्र बहुत नियमित है। आपके सम्पादकीय लेख मुझे बड़े प्रभावशाली लगे। हम सभी परिवार के सदस्य व पत्र को पढ़ने वाले पड़ोसी आपको अपनी ओर से हार्दिक बधाई भेजते हैं। परमब्रह्म परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आपकी उम्र काले नीम के बराबर हो ताकि आप समाज की ज्यादा से ज्यादा सेवा कर सकें।

बी० डी० शर्मा उदयपुर (राजस्थान)

सिरसा को पंजाब में मिलाने के लिए

जनता के साथ घिनौना षड्यन्त्र

हरयाणा की सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं का नियन्त्रण प्रबन्ध व संचालन, निदेशक शिक्षा विभाग हरयाणा द्वारा मान्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक द्वारा किया जा रहा है। सिरसा की तीन आर्य शिक्षण संस्थाओं (आर्य हायर सकैण्डरी स्कूल, आर्य कन्या उच्च विद्यालय, आर्य प्राईमरी स्कूल) का प्रबन्ध नियमानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा निश्चित विभिन्न प्रबन्ध समितियां करती आ रही हैं, परन्तु जब आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा इन संस्थाओं में सुधार हेतु जुलाई १९८२ को नई प्रबन्ध समितियां निश्चित की गई तो श्री नौरंगसिंह एडवोकेट (भूतपूर्व मैनेजर) व सेठ नन्दलाल (भूतपूर्व प्रधान) की तानाशाही व निजि स्वार्थों को ठेस लगी तो इन्होंने शिक्षा के पवित्र धर्म व राज्य एकता की पीठ में छूरा घोंपते हुए एक षडयन्त्र रचा। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारों व नियमों को उलंघन करते हुए तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को धोखा देते हुए एक नई सामान्तर समिति आर्य विद्या परिषद् पंजाब को इन शिक्षा संस्थाओं का दावेदार व अपने आपको इस अवैधानिक परिषद् का प्रतिनिधि जताने का गैर कानूनी व असामाजिक प्रयास किया। अपने इस नाटक को वास्तविक रूप देने हेतु मैनेजर की हैसियत से आर्य हायर सकैण्डरी स्कूल के प्रिंसीपल को धमकाने हेतु अनुशासनहीनता के सम्बन्ध में एक पत्र भेजा।

शिक्षा के पावन उद्देश्यों व प्रान्तीय एकता के नाम पर कलंक, इस गैर कानूनी षडयन्त्र का भण्डा फोड़ तब हुआ जब श्री नौरंगसिंह ने कोरसपोन्डेन्ट होने के नाते सरकार द्वारा भेजी गई स्कूल की ग्रांट निकलवाकर अपने कब्जे में कर ली और कई महीनों से देय शिक्षक वर्ग को तनखाह को देने का लालच देकर, आर्य हायर सकैण्डरी स्कूल में दिनांक ३०-३-१९८३ को अपने साथियों सहित आकर अपनी तानाशाही का परिचय देते हुए असफल हुआ। इतना ही नहीं, साथ में निदेशक शिक्षा विभाग हरयाणा द्वारा जारी किये गये विभिन्न आदेशों का उलंघन किया।

उपरोक्त षडयन्त्र इस बात का मुंह बोलता प्रमाण है कि ऐसे समाज विरोधी साम्प्रदायिक तत्वों की निष्ठा शिक्षा देश समाज और संस्था के सिद्धान्तों, नियमों व उद्देश्यों के प्रति नहीं बल्कि उनके द्वारा प्राप्त किये जाने वाले निजि हितों व स्वार्थों के प्रति होती है।

उपरोक्त सारे किस्से में हरयाणा के एक राज्य मन्त्री व विधायक का भी हाथ बताया जाता है। इस बात को इसलिए बल मिलता है कि आर्य स्कूल प्रिंसिपल को जिलाधीश द्वारा धमकाया जाना और ये कहना कि तुम (प्रिंसिपल) नौरंगसिंह एडवोकेट कहे अनुसार चलो। इतना ही नहीं उस तथाकथित समानान्तर आर्य विद्या परिषद्, पंजाब के दावे को सही साबित करने के बाद पंजाब के अकालियों की बात को भी बल मिलेगा कि सिरसा की संस्थाएं पंजाब से जुड़ी हुई हैं इस कारण सिरसा को पंजाब में मिलाया जाये। इन सब बातों से लगता है कि हरयाणा के इस राज्य मन्त्री व विधायक की अकालियों से सांठगांठ है। क्या उक्त राज्य मन्त्री व विधायक उपरोक्त बातों का स्पष्टीकरण सिरसा की जनता को देंगे? अगर इन बातों में सच्चाई नहीं है तो मन्त्री महोदय को उसका तत्काल खण्डन करना चाहिये ताकि जनता को असलियत का पता लगे।

(जंगजाबी है से साभार)

शुद्धि समाचार



रांची जिलान्तर्गत सिमडेगा क्षेत्र के श्री रामरेखा धाम में श्री देशपाल दीक्षित एवं श्री जयराम प्रधानाचार्य के तत्वावधान में २६-२-८३ को ६ परिवारों के ३३ ईसाई सदस्य पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित किये गये। एक ईसाई युवती को शुद्धि करके हिन्दू युवक के साथ अन्तर्जातीय विवाह भी सम्पन्न कराया गया।

देशपाल दीक्षित आर्य प्रचारक

चंडीगढ के बटवारे का सौदा हरयाणा के विरुद्ध

—प्रो० शेरसिंह

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने गत सप्ताह ६ अप्रैल को प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट करके उनसे अनुरोध किया है कि पंजाब तथा हरयाणा के मुख्यमन्त्रियों के सुझाव 'चण्डीगढ का ६० तथा ४० प्रतिशत के आधार पर बटवारा कर दिया जावे" पर अमल नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि इससे हरयाणा के हितों को हानि पहुँचेगी। इस बटवारे से हरयाणा को केवल ७ व ८ सैक्टर मिलेंगे। इनमें राजभवन के अतिरिक्त इन सैक्टरों में हरयाणा की राजधानी के लिए कोई सचिवालय, विधान सभा भवन, हाईकोर्ट भवन, कर्मचारियों के लिए आवास कक्ष, विश्वविद्यालय पी. जी. आई. जैसे महत्त्वपूर्ण स्थान बटवारे में नहीं मिलेंगे। हरयाणा को इन कार्यों के लिए बहुत अधिक धन खर्च करना पड़ेगा। यदि धन खर्च करना ही पड़े तो फिर क्यों नहीं हरयाणा के बीच में पड़ने वाले क्षेत्र में नई राजधानी बनाई जाये, ताकि राज्य की जनता को भी सुविधा हो सके। एक ही नगर में दोनों प्रदेशों को साथ-२ सीमाएं मिलने से किसी न किसी प्रकार से विवाद होते रहेंगे। आपने प्रधान मन्त्री को परामर्श देते हुए कहा कि हिन्दी भाषी क्षेत्र अपने पूर्व एवार्ड के अनुसार हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिलका का हरयाणा को तुरन्त स्थानान्तरित करके चण्डीगढ पंजाब को सौंप कर इस पर अमल करायें, ताकि पुरानी समस्या का अन्त हो सके। हरयाणा की जनता चण्डीगढ का बटवारा स्वीकार नहीं करेगी।

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से सुनिये

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से २८ अप्रैल को सायं ७ बजे ग्रामीण युवकों के विशेष कार्यक्रम में 'चन्द्रशेखर आजाद' के विषय में एक वार्ता प्रसारित करेंगे। अतः यथासमय सुनकर अपनी जानकारी में वृद्धि करें।

सभा मन्त्री

(२ का शेष)

माना और सन्त फतेहसिंह ने दिसम्बर १९५९ में स्वयं सन्देश भेजा कि चण्डीगढ मिलने पर फाजिल्का अबोहर हरयाणा को दे देंगे। हरयाणा में सूखा ग्रस्त क्षेत्र पीने के पानी के लिए भी तरसते हैं ऐसे राजस्थान और हरयाणा के क्षेत्रों को पानी देने के लिए ही रावी व्यास के पानी में से भारत सरकार ने अकालियों के दबाव में आकर १९७६ में पंजाब को हरयाणा के बराबर पानी दिया जबकि पंजाब में हरयाणा को तुलना में पहिले ही दो गुना पानी उपलब्ध था। हरयाणा ने उसे भी स्वीकार कर लिया ताकि वे व्यास का बांध तैयार होने तक लिंक नहर तैयार करके अपना थोड़ा ही सही हिस्सा ले तो लें।

माना फिर मुकरे

पंजाब की कांग्रेस सरकार ने १९७६ में हरयाणा से एक करोड़ रुपया लेकर नहर को खुदाई का काम आरम्भ करने का वचन दिया। इसी प्रकार १९७८ में बादल सरकार ने एक करोड़ रुपया और लेकर काम अपने हाथ से आरम्भ करने का वचन दिया, परन्तु १९७९ में फिर मुकर गए। पिछले मास त्रिपक्षीय वार्ता को यह मानकर कि राजस्थान के पानी का १९५५ का फैसला बरकरार रहेगा। दो दिन के बाद उससे भी मुकर गए। पानी का फैसला खोलने की बात भारत सरकार मानने को हुई तो यह कहकर कि हरयाणा को ट्रिब्यूनल का फैसला होने तक उतना ही पानी मिलेगा जितना आज उन्हें मिल रहा है। चाहे नहर खुदकर पहिले ही तैयार हो जाए और चाहे वह खाली पड़ी रहे, जितना आज १९७६ या १९८१ के फैसले के अनुसार उनको मिला है उतना भी ट्रिब्यूनल का फैसला होने तक उनको नहीं मिलना चाहिए। किसी भी फैसले पर पुनर्विचार करना हो तो जब तक अन्तिम निर्णय न हो तब तक पुराना फैसला ही लागू रहता है। परन्तु बात तोड़नी थी, इसलिए इसी बात पर उठ खड़े हुए और बात तोड़ दी।

उनकी तथाकथित धार्मिक मांगे मान ली गई। हालांकि 'धर्म निर्पेक्ष' राज्य को किसी एक सम्प्रदाय की बात अलग से नहीं माननी चाहिए, तो भी उसे 'फाड' कहकर ठुकरा दिया। इन्हीं आशंकाओं को जानते हुए ही मैंने प्रधान मन्त्री को अक्तूबर १९८२ में पत्र लिखा था, कि अकालियों से बात करना इसलिए व्यर्थ है कि वे आज जिस बात को मान लेते हैं, उसकी खुशी में दीवाली मना लेते हैं, उससे दो दिन के बाद मुकर सकते हैं। उनसे बात करना और किसी समाधान पर पहुंचना ऊंट को रेल में चढाने के बराबर है।

कानून व्यवस्था की समस्या

पंजाब में अकालियों की समस्या तो कानून और व्यवस्था की समस्या है, उसका मुकाबला उसी ढंग से करना चाहिए। असम की समस्या में कुछ वास्तविक मुद्दे हैं, जिनका समाधान निकालना राष्ट्र की सुरक्षा के लिए बहुत आवश्यक है। आज चाहे वहां भी कानून और व्यवस्था का प्रश्न आ गया, समस्या हल न निकल सकने के कारण। परन्तु पंजाब में कोई वास्तविक समस्या नहीं है। अकालियों का कोई अपना मन्तव्य नहीं है। वे हर बात का लाभ उठाकर अपनी मांग खड़ी कर देते हैं। असम की विदेश से आये लोगों को वोट काटने की बात थी। उनको वोट काटने की बात के पीछे आधार यह था कि वे भारत के नागरिक नहीं हैं तो श्री गुरचरणसिंह तोहड़ा ने भी उत्तरप्रदेश तथा बिहार से आए हुए हिन्दुओं की मांग खड़ी कर दी। यह इस बात का प्रमाण है कि उनकी मांगे ऐसे ही बनाई गई हैं उनका स्वतन्त्र रूप से कोई आधार नहीं है। प्रकाशसिंह बादल जैसे नरम दलीय अकालियों की तो एक ही मांग है कि उनको पंजाब की सत्ता सौंप दो। यदि ऐसा नहीं किया गया तो उग्रवादियों द्वारा हिंसा होगी। गैर अकाली विधायकों को भी त्याग पत्र देने के लिए मजबूर किया जाएगा। विधान सभा भंग करने पर भी मजबूर किया जाएगा और आतंक की मदद से चुनाव जीतकर अपना राज्य बनाया जाएगा।

हरयाणा की कीमत पर नहीं

इस स्थिति का मुकाबला हरयाणा की कीमत पर कोई फैसला करने से नहीं होगा। उसका प्रतिकार हरयाणा में भी डटकर होगा। अकाली उसे मानकर अपनी विजय मनायेंगे और फिर उससे मुकर जायेंगे। आज जो स्थिति बन गई है और पंजाब के दूसरे दल भी राजनैतिक मांगों के पक्ष में खुलकर आ गए हैं, शायद वे भी श्रेय लेना चाहें। अकाली पहले तो मानेंगे ही नहीं, अपनी नई मांग खड़ी कर देंगे और एक बार आन्दोलन की थकावट दूर करने के लिए मान भी गए तो उन्हीं मुद्दों पर और बढ़ा चढ़ाकर मांग पेश करके नये सिरे से आन्दोलन प्रारम्भ कर देंगे। पंजाब के कांग्रेसी, भारतीय जनता पार्टी के नेता कितना ही अकालियों की अनुचित मांगों का समर्थन करदें, श्रेय उनको नहीं मिलने वाला है और उनको फिर से बढ़ा चढ़ाकर उठाई हुई मांगों का समर्थन करना पड़ेगा।

क्षेत्रीय युद्धों की स्थिति

राष्ट्रीय पार्टियां जब तक क्षेत्रीयता में न बहकर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार कर न्यायोचित बातों के लिए खड़ी नहीं होंगी, क्षेत्रीयता बढती जायेगी। एक क्षेत्र दूसरे क्षेत्र के अन्याय से बचने के लिए क्षेत्रीयता अपनायेगा और हिम्मत के साथ सच को सच नहीं कहा और आतंक और हिंसा का डटकर मुकाबला नहीं किया गया तो प्रदेशों में अन्तर्युद्धों की स्थिति बन जाएगी। अकालियों का आन्दोलन राष्ट्र के लिए चुनौती है। अंग्रेज १९४७ में भी पाकिस्तान और भारत के बीच में सिख राज्य बनाना चाहता था, जिन्होंने उसको नहीं माना। अब फिर ३५ वर्ष बाद अंग्रेजों ने वही खेल शुरू किया है। देश की अखण्डता को जो खतरा उपस्थित हुआ है उससे देश को बचाने के लिए सभी राष्ट्रीय दलों को अपने दलीय स्वार्थों के ऊपर उठना होगा और अनुचित मांगों के बारे में हां में हां न मिलाकर न्याय और राष्ट्र हित को सर्वोपरि रखना होगा। अपनी सरकार बनती है, या किसी से मिलकर सरकार बनती है, इसको मन से निकालना होगा। इसी स्तर पर अकाली समस्या से सुलटा जा सकेगा। 'नान्यः पंथा' दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

(दैनिक भास्कर इन्दौर से साभार)

चौ० चरणसिंह को उग्रवादियों की तार द्वारा दी गई धमकी की निन्दा

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने पंजाब के उग्रवादी अकालियों की चौ० चरणसिंह को तार द्वारा भेजी गई धमकी की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए कहा है कि चौ० चरणसिंह ने अपने वक्तव्य द्वारा पंजाब के उग्रवादियों को राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का डटकर मुकाबला करने तथा साम्प्रदायिक संघटनों पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग करके राष्ट्रहित में पग उठाया है। सभी राष्ट्र प्रेमियों को उन के सामयिक वक्तव्य की सराहना करनी चाहिए।

प्रो० शेरसिंह ने उग्रवादियों को चेतावनी देते हुए कहा है कि वे अपनी गीदड़ भभकियों द्वारा चौ० चरणसिंह का कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। हरयाणा की वीर जनता अकालियों की ईंट का जबाब पत्थर से देगी। वे डराधमका कर अपनी अनुचित मांगें भारत सरकार से मनवाना चाहते हैं परन्तु उनका यह स्वप्न पूरा नहीं हो सकेगा। हरयाणा अपने हितों की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करेगा।

आपने भारत सरकार से मांग की है कि चौधरी चरणसिंह के प्रस्तवानुसार अकालियों जैसे साम्प्रदायिक दलों पर तुरन्त पाबन्दी लगा कर उनकी हिंसक तथा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से सख्ती से निपटना चाहिए।

नरवाना आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर स्थगित।

आर्य वीर दल हरयाणा के तत्वावधान में आर्यसमाज नरवाना की ओर से आयोजित १७ अप्रैल से २२ अप्रैल तक का आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर विद्यालयों की छुट्टीयों में आकस्मिक परिवर्तन के कारण स्थगित कर दिया गया है। अजीतकुमार आर्य

हर्ष समाचार



सर्वहितकारी के पाठकों को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य गगन के देदीप्यमान नक्षत्र 'श्री पंडित रणवीर जी शास्त्री 'विद्याभास्कर' एम० ए०, विद्यावाचस्पति को सर्वहितकारी का सह-सम्पादक नियुक्त किया गया है। इससे पूर्व ये दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में प्राध्यापक तथा सर्वहितकारी के व्यवस्थापक पद पर कार्य कर चुके हैं। साथ ही इन्होंने सभा को प्रचारार्थ अवैतनिक सेवाएं भी प्रदान की हैं।

अत: जो आर्यसमाजें इनसे लाभ उठाना चाहें वे सभा को लिखने की कृपा करें। आप प्रकाण्ड पण्डित, भारतीय संस्कृति के उद्भुट व्याख्याता एवं कर्मकाण्ड विशेषज्ञ हैं।

बधाई एवं शुभकामना

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर सर्वहितकारी के पाठकों को बधाई तथा नया सम्वत् सब प्रकार से मंगलमय होने की शुभकामनाएं।

सम्पादक मण्डल

श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती का अभिनन्दन

आर्यजगत् को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, त्यगी, तपस्वी और कर्मठ सन्यासी श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का चिरप्रतीक्षित अभिनन्दन समारोह दिनाक १५ मई १९८३ को कन्या गुरुकुल नरेला की रजत जयन्ती के अवसर पर करने का निर्णय किया गया है।

इस समारोह मे लगभग ७०० पृष्ठो का एक अभिनन्दन ग्रन्थ एवं एक जीप पूज्य स्वामी जी को भेंट करने की योजना है। इस सम्पूर्ण योजना के लिए डेढ लाख रुपयों की आवश्यकता है।

५०१ रु या इससे अधिक देनेवाले महानुभावो का नाम तथा ५००० रु. या अधिक देनेवालो का सचित्र सक्षिप्त परिचय अभिनन्दन ग्रन्थ मे प्रकाशित किया जाएगा।

स्वामी जी के जीवन, सेवा क्षेत्र एवं वैदिक सिद्धान्तो पर लेख आदि की दृष्टि से यह एक सग्रहणीय ग्रन्थ होगा। ५०१ रु. या अधिक देनेवाले सज्जनों को अभिनन्दन ग्रन्थ की प्रति नि:शुल्क भेंट की जाएगी।

अब तक ७५००० रु. के वचन तथा नकद राशि के रूप में प्राप्त हो चुके है। अभिनन्दन ग्रन्थ आधे से अधिक छप चुका है। अत सम्पूर्ण आर्यजगत्, गुरुकुल के स्नातक एव स्नातिकाओं, हरयाणानिवासियो, ग्रामपंचायतों, आर्यसमाजो तथा पूज्य स्वामी जी के विशिष्ट श्रद्धालुओ से विनम्र निवेदन है कि वे इस पितृयज्ञ मे श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार अधिक से अधिक आहुति प्रदान कर अनृण होने के साथ-साथ यश एव पुण्य के भागी बने।

इस पवित्र कार्य में धनराशि चैक, बैंक ड्राफ्ट या नकद रूप में निम्नलिखित स्थानो पर भेजे—

१- स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन समिति मुख्य कार्यालय-कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली
२- ,, ,, उप-कार्यालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक)
३- ,, ,, ,, ,, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक।

आशा है आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर इस पवित्र कार्य के लिए अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर हमारा उत्साहवर्धन करेंगे।

संयोजक— चन्द्रपालसिंह शास्त्री
स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन समारोह
कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली)

भूल सुधार

७ अप्रैल १९८३ के सर्वहितकारी में पृष्ठ ३ पर आर्यसमाज के नियम उपनियम दिए हुए हैं जो बम्बई में आर्यसमाज स्थापना के समय निर्धारित बताए गए हैं।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना के समय केवल २८ नियम बनाए थे और १८७७ में लाहौर में वर्तमान दस नियम तथा उपनियमों का विधान किया था। ये उपनियम पहली बार १९३५ में सार्वदेशिक सभा द्वारा संशोधित हुए थे और इसके पश्चात् भी ये संशोधित हुए थे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
संयुक्त मन्त्री

परवाणु में श्री रामहोत्सवम्

१४ से २२ अप्रैल तक वेद मन्दिर परवाणु में श्री रामनवमी के उपलक्ष्य में महान् पर्व का आयोजन किया जा रहा है। पवित्र वेद मंत्रों से गायत्री महायज्ञ तथा मृत्युञ्जय मन्त्र का जप होगा।

गायत्री मन्त्र का रहस्य तथा महत्त्व

लेखक—सुखदेव शास्त्री आदरी उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

इसी प्रकार आर्यसमाज के अनेकों विद्वानों ने केवलमात्र गायत्री मन्त्र को लेकर पुस्तक रूप में इसका प्रवचन किया है। इनमें जहां अनेक विद्वान् लेखक हैं उनमें प्रमुख हैं—गुरुकुल के कई वेद भाष्यकार जिन्होंने वेदभाष्य किए हैं और भी विद्वान् हैं जैसे म० नारायण स्वामी जी और म० आनन्द स्वामी जी महाराज तथा म० प्रभुआश्रित जी महाराज व पण्डित वीरसेन जी वेदश्रमी आदि गायत्री के विषय में लिखने वाले प्रमुख विद्वानों में से हैं।

गायत्री मन्त्र को संवत्सर (वर्ष) की प्रतिमा (माप तोल) बताते हुए श्री पं० वीरसेन जी अथर्ववेद के मन्त्र ३।१०।३ की व्याख्या करते हुए—

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वां राज्युपास्महे।
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण संसृज॥

के विषय में लिखते हैं—वेदमाता गायत्री संवत्सर की प्रतिमा है। उसमें संवत्सर का प्रतिमान अर्थात् रूप दर्शन होता है। इस अथर्ववेद के मन्त्र में संवत्सर की प्रतिमा को कहा गया है। उसकी उपासना का प्रयोजन आयुष्मती प्रजा धनैश्वर्य एवं पुष्टि बताया है।

इस मन्त्र में जिस रात्रि की उपासना करने और उसके फल की कामना का संकेत है वह गायत्री ही है।

सुखों को देने वाली तथा दुःखों को दूर करने वाली 'भूर्भुवः स्वः' रूपी त्रिविध ऐश्वर्य प्रदान करने वाली गायत्री ही है। यही त्रिविध ऐश्वर्य, आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक रूप से भी त्रिविध हैं तथा इन्हीं त्रिविध प्रकार के दुःखों को हरने वाली भी गायत्री ही है। त्रिविध ऐश्वर्यों की दाता होने से रात्रि शब्द गायत्री के लिए है। रा—अर्थात् देने वाली, त्रि—अर्थात् त्रिविध ऐश्वर्य। गायत्री का सवितुः पद समस्त ऐश्वर्य के उत्पत्तिकर्त्ता एवं ऐश्वर्य प्रदाता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। अतः वेदमाता गायत्री ही उपास्य रात्रिवाचक है।

गायत्री मन्त्र के द्वारा उपास्य सविता देव का भर्ग-वरण किया जाता है। अतः गायत्री साधन रूप से होने पर भी प्रारम्भ में उपास्य कही गई है। इसी उपासनीय गायत्री मन्त्र को महामन्त्र, गुरुमन्त्र तथा वेदमाता आदि नाम से कहा गया है। इस मन्त्र के अतिरिक्त जो गायत्री छन्दोमय मन्त्र हैं वे तथा सभी मन्त्र इस उपास्य गायत्री मन्त्र में अंगभूत रूप में सम्बन्धित हैं। अतः गायत्री छन्दोबद्ध अन्य मंत्रों को वह महत्त्व प्राप्त नहीं होता। इसलिए गुरुमन्त्र नाम से उपदिष्ट गायत्री मन्त्र का ही प्रधान रूप से महत्त्व है तथा उसी को वेदमाता भी माना गया।

उक्त गायत्री मन्त्र के महत्त्व को प्रकट करने वाला अथर्ववेद का उपरोक्त मन्त्र है। अतः कतिपय विद्वान्, तपस्वी, वेद मर्मज्ञ, सन्तों ने अथर्ववेद के उपरोक्त मन्त्र को ही गायत्रीमय होने से घोषित किया कि चारों वेदों में गुरु मन्त्र गायत्री है, जो कि अथर्ववेद में शब्द साम्य से नहीं अपितु परोक्ष स्वरूप साम्य होने से यही वह गायत्री है।

अथर्ववेद के उपरोक्त मन्त्र में गायत्री को संवत्सर की प्रतिमा कहा गया है अर्थात् संवत्सर के स्वरूप का इस गायत्री मन्त्र में दर्शन होता है, जो निम्न प्रकार है—

१—अहोरात्र में ६० घड़ी होती हैं। भूर्भुवः स्वः में चार अक्षर हैं और तत्सवितुः से धीमहि तक जहां प्रथम विराम है वहां तक १५ अक्षर हैं दोनों संख्याओं को गुणा करने पर ४×१५=६० संख्या प्राप्त होती है, जो अहोरात्र की ६० घटिकाओं की संख्या का प्रतिमान है।

२—अहोरात्र की ६० घटिकाओं में प्रति घटी में २४ मिनट होते हैं। गायत्री छन्द २४ अक्षर का माना जाता है। अतः प्रति घटिका के विभाग का प्रतिमान गायत्री में प्रकट होता है।

३—एक अहोरात्र में २४ घण्टे होते हैं। गायत्री छन्द में २४ अक्षर का माने जाने से अहोरात्र के घण्टों के रूप में गायत्री में प्रतिमान है।

४—अहोरात्र के पश्चात् संवत्सर (वर्ष) में सप्ताह का क्रम है। गायत्री के प्रथमचरण या पाद में तत्सवितुर्वरेण्यं-में सात ही अक्षर हैं। ये सात अक्षरों की संख्या सप्ताह में ७ दिनों का प्रतिमान है।

५—सप्ताह के पश्चात् पक्ष का क्रम है। पक्ष में १५ तिथियां होती हैं। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि इस प्रथम पंक्ति में १५ ही अक्षर हैं, जो पक्ष की तिथियों का प्रतिमान प्रकट करते हैं।

६—पक्ष दो होते हैं। पक्ष की तिथियों के प्रतिमान रूप जो गायत्री की प्रथम पंक्ति है वह गायत्री के २ चरणों में बनी है। अतः दो पक्ष की संख्या की बोधिका है।

७—दो पक्ष की तिथियों से ३० दिन का मास होता है। गायत्री की प्रथम पंक्ति के १५ अक्षरों की संख्या का उसी में निहित चरण या पाद संख्या से गुणा करने पर १५×२=३० संख्या का स्वरूप दोनों पक्ष से निर्मित एक मास की तिथियों का बोधक है।

८—पक्ष के पश्चात् मास का क्रम है। १५-१५ दिनों के एक-एक पक्ष से २४ पक्ष वर्ष में होते हैं। आठ पक्षों का युग्म रूप ही एक मास है गायत्री के २४ अक्षरों के युग्मों से १२ मासों की संख्या का प्रतिमान गायत्री में विद्यमान है।

९—दो दो मासों के युग्मों से ६ ऋतुओं का संवत्सर में अस्तित्व है। अतः १२ युग्मों के भी दो दो युग्मों से ६-६ चतुरक्षर समूह बन जाते हैं, जो कि ६ ऋतु संख्या के बोधक हैं।

१०—ऋतुओं के पश्चात् संवत्सर (वर्ष) के २ विभाग उत्तरायण एवं दक्षिणायन हैं। गायत्री त्रिपदा होने पर भी अवसान रूप से दो विभागों में विभक्त है। अतः सम्पूर्ण गायत्री का रूप में विभाजन दो अयनों को प्रकट करता है।

११—संवत्सर में नक्षत्रों का बहुत महत्त्व है। नक्षत्रों के कारण ही १२ राशियां बनती हैं। १२ राशियां ही १२ मास के रूप में हैं। प्रधान रूप से नक्षत्र २७ माने जाते हैं। गायत्री में तत्सवितुः से लेकर प्रचोदयात् तक २३ अक्षर हैं। उसमें महाव्याहृति भूर्भुवः स्वः के चार अक्षरों का योग करने पर २३+४=२७ नक्षत्र संख्या प्रकट हो जाती है। यही नक्षत्रों का प्रतिमान गायत्री में विद्यमान है।

१२—सावन संवत्सर के वर्ष में ३६० अहोरात्र होते हैं। गायत्री छन्द की २४ अक्षर संख्या में गुरु मन्त्र गायत्री की प्रथम पंक्ति की अक्षर संख्या १५ का गुणा करने से २४×१५=३६० अहोरात्र संख्या ज्ञात हो जाती है।

१३—संवत्सर में ५२ सप्ताह होते हैं। तत्सवितुर्वरेण्यं० इस सम्पूर्ण गायत्री में २३ अक्षर हैं। इस गायत्री के प्रारम्भ में ३ महाव्याहृतियां हैं। दोनों संख्याओं का योग करने से २३+३=२६ संख्या बनती है। गायत्री मन्त्र प्रथम पंक्ति २ चरणों की होने से २६ को २ से गुणा करने पर २६×२=५२ अंक वर्ष के सप्ताह का अंक प्राप्त हो जाता है।

१४—सम्पूर्ण संवत्सर का गायत्री में प्रतिमान बीज रूप से विद्यमान है, अतः गायत्री द्वारा संवत्सर का आच्छादन हो रहा है।

संवत्सर का निर्माण अहोरात्र शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष, षड्ऋतु, द्वादशमासों से होता है। यदि इस सबके अक्षरों की गणना की जाये तो २४ संख्या निम्न प्रकार प्रकट होती हैं—

अहोरात्र ४ अक्षर, शुक्लपक्ष ४ अक्षर, कृष्णपक्ष ४ अक्षर, षड्ऋतु ३ अक्षर, द्वादशमास ५ अक्षर, सम्वत्सर ४ अक्षर इस प्रकार सब मिलाकर २४ संख्या हो जाती है। अतः गायत्री सम्वत्सर का प्रतिमान है।

इस प्रकार गायत्री का समस्त सम्वत्सर (वर्ष) या काल चक्र में आच्छादन या विलय होने के कारण यह गायत्री रात्रि रूपा है। यजुर्वेद अध्याय तेईस, मन्त्र ५४ रात्रि को पिशंगिला कहा है अर्थात् रात्रि वह है जो सबके रूप को अपने में विलय करती, समाविष्ट करती एवं उन्हें प्रकट भी करती है। अतः गायत्री ही रात्रि है, जो कि सम्वत्सर (साल) की प्रतिमा अर्थात् प्रतिमान है (माप तोल करने वाली है) सब ऐश्वर्यों की उत्पत्ति कृत् होने से गायत्री की उपासना की प्रेरणा अथर्ववेद का उपरोक्त मन्त्र दे रहा है।

महर्षि पतञ्जलि के दर्शन के अनुसार गायत्री मन्त्र का जप तथा साथ ही साथ उसके अर्थ की भावना को लेकर नित्यप्रिय उसका ध्यान करना चाहिए।

इसी प्रकार से वेदों का, सृष्टि का, अग्निहोत्र का तथा मानवदेह का भी प्रतिमान (रहस्य) गायत्री में विद्यमान है।

यह थोड़ा सा गायत्री मन्त्र का महत्त्व तथा रहस्य जनता के सामने प्रकट किया है। आशा है भारतीय धार्मिक जनता इसका अर्थ पूर्वक विचार कर सदैव प्रातः सायं इसका ध्यान कर अपना जीवन सफल बनाएगी।

इसके साथ ही उस वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द को मेरा हजार बार चरणों में नमस्कार है जिसने हमें गायत्री पढ़ने व जपने का अधिकार दिया। अतएव भगवान् से प्रार्थना करता हूं—

याक्त्सूर्यश्च चन्द्रश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी।
तावत् ऋषि दयानन्दस्य कीर्त्तिर्भवतु भूतले।

अन्त में सुरेन्द्र शर्मा अज्ञात जैसे अज्ञानियों को भी बारम्बार धिक्कार है जो गायत्री मन्त्र का मजाक बनाकर धार्मिक भारतीय जनता के हृदय को आघात पहुंचाते हैं। अगर उनमें विद्वत्ता का दम है तो सामने आकर शास्त्रार्थ करें। आर्यसमाज के विद्वान् सदैव तैयार हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः; सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, माकश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका को एक पुरोहित की आवश्यकता है जो आर्य वीर दल, कुमार सभा और धर्म शिक्षा का कार्य सम्भाल सके। वक्तृत्वकला में भी रुचि रखता हो। योग्यता शास्त्री हो क्योंकि संस्कार इत्यादि भी कराने होते हैं। (ओ. टी. पास की आवश्यकता नहीं है) वेतन ३०० रुपये मासिक + भोजन + आवास सुविधा अथवा ४०० + आवास। २०-४-८३ तक प्रार्थना पत्र भेजें।

मन्त्री आर्यसमाज
फिरोजपुर झिरका जि० गुड़गांव

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं 23207/73 पंजि० न० P/RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १०, अङ्क १६ | २१ अप्रैल १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

श्री रामनवमी वा श्री रामजयन्ती

चैत्र सुदी नवमी

जय जय मर्यादापुरुषोत्तम धर्म धुरन्धर ।
जय जय एकादर्श भूमिपति महावीर वर ।।
नाशन म्लेच्छाचार दलन दल प्रबल निशाचर ।
करन यथोचित प्रजा प्रचारन दरन दुःख उर ।।
(पं० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' कृत)

भारतीय इतिवृत्त के इस निशाकाल के तिमिरावृत नभोमण्डल में कई ऐसी ज्योतियां जगमगा रही हैं, जो इस संसार मरुस्थली के मार्ग-भ्रष्ट पथिकों को पथप्रदर्शन करके अपनी जीवन यात्रा को पूरी करने में सहायता देती रहती है परन्तु उनमें इक्ष्वाकु कुल-कुमुदचन्द्र श्री रामचन्द्र जी का सर्वोत्कृष्ट-समुज्ज्वल प्रकाश ही इस कड़ी मंजिल को अन्त तक पहुंचाने या पूरी करने में सहायक और सबसे बढ़कर पथप्रदर्शक है। यूं तो इन चमकती हुई ताराओं की संख्या संख्यातीत है, पर उनमें सर्वनयनाभिराम श्री रामचन्द्र जी का प्रकृष्ट प्रकाश ही सर्वातिशायी और सर्वव्यापी है। यदि इस घनघोर अन्धियारी रात्रि में जगद्वन्द्य श्री राम के आदर्श जीवन की जाज्वल्यमान शीतल किरणावली का प्रकाश प्रसार न पाता, तो भारतीय यात्री का कहीं ठिकाना न था। इस सूचिभेद्य अन्धकार में उनको न जाने कहां से कहां भटकना पड़ता।

इस समय भारत के शृंखलाबद्ध इतिहास की अप्राप्यता में यदि भारतीय अपना मस्तक समुन्नत जातियों के समक्ष ऊंचा उठाकर चल सकते है, तो महात्मा राम के आदर्श चरित की विद्यमानता में। यदि प्राचीनतम ऐतिहासिक जाति होने का गौरव उनको प्राप्त है, तो सूर्य-कुल-कमल-दिवाकर राम की अनुकरणीय पावनी जीवनी की प्रस्तुति से। यदि भारताभिजनों को धार्मिक सत्यवक्ता, सत्यसन्ध, सभ्य और उन्नत होने का अभिमान है, तो प्राचीन भारत के धर्मप्राण तथा गौरवसर्वस्व श्री राम के पवित्र चरित्र की विराजमानता से।

यदि पूर्ण परिश्रम से संसार के समस्त स्मरणीय जनों की जीवनियां एकत्र की जायें तो हमको उनमें से किसी एक जीवनी में वह सर्वगुणराशि एकत्र न मिल सकेगी, जिससे सर्वगुणागार श्री राम का जीवन भरपूर है। आज हमारे पास भगवान् रामचन्द्र का ही एक ऐसा आदर्श चरित्र उपस्थित है जो अन्य महात्माओं के बचे बचाये उपलब्ध चरित्रों से सर्वश्रेष्ठ और सबसे बढ़कर शिक्षाप्रद है। वस्तुतः श्री राम का जीवन सर्वमर्यादाओं का ऐसा उत्तम आदर्श है कि मर्यादापुरुषोत्तम की उपाधि केवल उनके लिए रूढ हो गई है। जब किसी को सुराज्य का उदाहरण देना होता है तो "रामराज्य" का प्रयोग किया जाता है।

केवल लोकमर्यादा की अक्षुण्ण स्थिति बनी रखने के लिए निष्काम कर्म करते रहने के वैदिक धर्म के सिद्धान्त का पूर्ण रूप से पालन करके प्रातः स्मरणीय श्री रामचन्द्र ने ही दिखलाया था।

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च ।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः ।।
(वाल्मीकिरामायण)

अर्थ—"राज्याभिषेकार्थं बुलाये हुए और वन के लिए विदा किये हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में मैंने कुछ भी अन्तर नहीं देखा।" आदिकवि वाल्मीकि का यह शब्द चित्र निष्काम कर्मवीर श्री रामचन्द्र जी का ही यथार्थ चित्र था। वास्तव में वह स्वकुलदीपक, मातृमोदवर्द्धक तथा पितृनिर्देशपालक पुत्र, एकपत्नीव्रतनिरत, प्राणप्रियाभार्यासखा सुहृद्दुःखविमोचक मित्र, लोकसंग्राहक, प्रजापालक, नरेश, सन्तानवत्सल पिता और संसार-मर्यादाव्यवस्थापक, परोपकारक, पुरुषरत्न का एकत्र एकीकृत सन्निवेश, सूर्यवंश प्रभाकर, कौसल्योल्लासकारक, दशरथानन्दवर्धन, जानकी जीवन, सुग्रीवसुहृद् अखिलार्यनिषेवितपादपद्म, साकेताधीश्वर, महाराजाधिराज, भगवान् रामचन्द्र में ही पाया जाता है।

दक्षिणापथ के सुदूरवर्ती, अविद्यान्धकारपूर्ण महाकान्तार में वैदिक आर्य सभ्यता का प्रकाश प्राधान्येन सर्वप्रथम लोकदिग्विजयी श्री राम ने ही पहुँचाया था। यद्यपि इससे पूर्व अगस्त्य ऋषि ने वैदिक सभ्यता के आलोक को दक्षिण में फैलाने का यत्न किया था परन्तु उसको उससे पूर्ण आलोकित सूर्यकुल-रविराम ने ही किया था। महाराज रामचन्द्र के दक्षिण विजय से पूर्व विन्ध्याचल पार का महाकान्तार इन्द्रियलोलुप, अनेक कदाचारदत्तचित्त, नररक्त-पिपासु राक्षसों का लीलानिकेतन बना हुआ था, उनमें सर्वत्र उन्हीं का एकाधिपत्य वर्तमान था, वा यत्र-तत्र (कहीं कहीं) वानर वंश के एक दो छोटे राज्य विद्यमान थे। इन्हीं वानरों का एक राज्य पम्पापुरी (वर्तमान मैसूर राज्य मे उत्तरीय पेनर नदी के उद्गम स्थान पर चन्द्रदुर्ग के निकट) में वानरराज बाली की अध्यक्षता में उपस्थित था। परन्तु उसके राज-परिवार में धर्मपराङ्मुखता के कारण धन कलत्र को लक्ष्य करके गृहकलह मचा हुआ था और उसके फलस्वरूप वानरराज बाली का कनिष्ठ भ्राता सुग्रीव अपने मित्र हनुमान के साथ अपने ज्येष्ठ भ्राता से भय होकर ऋष्यमूक (वर्तमान मैसूर राज्य में उत्तरीय पेनर नदी का उद्गम स्थान चन्द्रदुर्ग पर्वत) पर जा छिपा था। इन्हीं वानरों और राक्षसों को वाल्मीकि रामायण के अन्तिम आधुनिक संस्करण में अलौकिक योनि राक्षस तथा ऋक्ष (रीछ) बतलाया गया है और उनके आकारों को असाधारण और भयंकर चित्रित किया गया है।

श्री रामचन्द्र ने पितृ आज्ञा को शिर धरकर, अयोध्या के महासाम्राज्य को त्याग कर और इसी महाकांतार दण्डकारण्य में निर्वासित होकर अपने प्रेम और सदुपदेश से उक्त वानर जाति को अपना मित्र बनाया और सुग्रीव से सौहार्द की स्थापना करके उसके धनकलत्रापहारी भ्राता बाली को मारकर इसका राज्य सुग्रीव को दिया था अत्याचारी राक्षसों के दमन के लिए महावीर हनुमान के सेनापतित्व में उन्हीं वानरों की अपनी संगठन शक्ति से प्रबल और सुशिक्षित सेना सन्नद्ध की। उसी सेना की सहायता से लंकाद्वीप के अतुल बलशाली तथा महापराक्रमी राक्षस जाति के साम्राज्य का अधीश्वर प्रबल प्रतापी अनाचारी रावण सहित विध्वंस किया, किन्तु श्री रामचन्द्र सदृश आर्य दिग्विजेता का विजय साम्राज्य-विस्तार वा सम्पत्ति संचयार्थ नहीं था।

[शेष ५ पर]

राम नवमी पर विशेष—

श्री राम ने कहा था

—रणवीर शास्त्री विद्याभास्कर, एम० ए०, सह-सम्पादक

मानव जीवन बड़ा पेचीदा है। इसका सम्बन्ध केवल एक व्यक्ति से नहीं किन्तु परिवार, समाज, राष्ट्र, देश, विश्व—ये सब मानव को केन्द्र बिन्दु मानकर उसकी विशाल परिधि का निर्माण करते हैं। स्थावर और जंगम सृष्टि भी मानव के साथ आबद्ध है। इससे मानवता वरीयता के पद पर अभिषिक्त तो हो जाती है पर साथ ही, अविच्छिन्न रूप से, भारी दायित्व का कांटेदार मुकुट भी उसे अपने सिर पर रखने के लिए बाध्य होना पड़ता है। दोनों में अविरोध, सामंजस्य और सन्तुलन रखना ही मानव का एकमात्र अनिवार्य कर्त्तव्य है। अक्षरों के रूप में इसे लिख देना तो सहज है पर इसे सतत परिवर्तनशील परिस्थितियों, परिवेशों और युग-युग में प्रादुर्भूत हो रहे उल्टे-सीधे, टेढ़े-मेढ़े कोणको के साथ समन्वित करना अत्यन्त दुरूह और दुष्कर है। हमारे वे पूर्वज वस्तुतः हमारे अर्घ्य के पात्र हैं जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों के होते भी समन्वय स्थापित कर महिमा मण्डित मर्यादाओं की परम्परा स्थापित की है। हमारी इन पंक्तियों के चरित नायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज उन पूर्वजों में अग्रगण्य हैं। उनके जीवन की एक-एक घटना, अपने सान्निध्य में आये जनों के प्रति उनके मुख से निकला एक एक शब्द धर्म प्रधान भारतीय संस्कृति के आदर्शों एवं मूल्यों के प्रति उनकी गहरी निष्ठा व आस्था का द्योतक है। उनके जन्म दिवस के इस पावन अवसर पर हम भारतीयों को उस पर मनन करने की आवश्यकता है।

वनवासी ऋषियों के व्रत भंग करने में समुद्यत अधर्मिणी ताटका के वध की प्रेरणा के उत्तर में श्री राम ने महर्षि विश्वामित्र से निवेदन करते हुये कहा था—आपके कथनानुसार ताटका को मारकर मैं गऊ और ब्राह्मण का हित साधन करने तथा इस देश के निवासियों को सुखी करने के लिए तैयार हूं। स्त्री होने के नाते मैं इसे मारना नहीं चाहता किन्तु मैं इसके हाथ पैर तोड़कर इसे दुष्ट कर्म करने योग्य न रहने दूंगा।

विमाता कैकेयी ने राम को जानबूझकर झूठ बोलते हुये यह कहा कि तुम्हारे पिता भय के कारण तुम्हें वन जाने और भरत को राजगद्दी पर बैठने की आज्ञा नहीं दे रहे तब श्री राम ने कैकेयी से कहा था—हे देवि ! मैं धन, राज्य तथा ऐश्वर्यादि का आकांक्षी होकर संसार में नहीं रहना चाहता, मुझे तो आप ऋषियों के समान ही धर्मनिष्ठ समझें। यदि अपने प्राण देकर भी मैं पूज्य पिता का अभीष्ट कर सकूं तो निःसंकोच करूँगा, वन जाने की तो भला बात ही क्या ? पिता की सेवा और आज्ञापालन से अधिक संसार में कोई धर्माचरण है ही नहीं। पिता के न कहने पर भी मैं केवल आपके ही आदेश से चौदह वर्ष तक निर्जन वन में वास करूंगा। हे कैकेयी ! मेरे लिए आप पिता से अधिक पूज्य हैं पर आप मेरे स्वभाव (माता-पिता की आज्ञा का पालन) को नहीं जान पाईं, यदि जानतीं तो ऐसी तुच्छ बात पिता से न कहतीं।'

राज्याभिषेक के स्थान पर श्री राम को वन-गमन के लिए तैयार होते देख लक्ष्मण आवेश में आ गये। धर्म की मुख्यता बतलाकर उन्हें शान्त करते हुए श्री राम ने कहा था—'लोक में धर्म ही पुरुषार्थ है, धर्म में ही सत्य प्रतिष्ठित है। पिता की आज्ञा भी धर्मानुसार होने से माता की आज्ञा से उत्कृष्ट है, अतः वही पालनीय है। मैं पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता। पिता के आदेश से ही कैकेयी ने मुझे वन जाने को कहा है। हे लक्ष्मण ! क्षात्र धर्म का अनुगमन न करने वाली इस दुष्ट बुद्धि को तू छोड़ दे। धर्म का आश्रय ले, उग्रता का नहीं। मेरी बुद्धि का अनुगमन कर। तीनों माताओं, मुझे, वैदेही और लक्ष्मण स्वयं तुम्हें भी पिता की आज्ञा में ही रहना चाहिये। यही सनातन धर्म है। अतः तुम क्रोध और शोक को त्याग धैर्य धारण करो और मेरे वन गमन रूपी अपमान को भूल कर प्रसन्न हो जाओ। मेरे वनवास और पिता द्वारा प्रदत्त राज्य के छिन जाने में दैव को ही कारण समझो। इसमें किसी का कुछ बस नहीं है। यदि दैव मेरे प्रतिकूल न होता तो मुझे पीड़ा देने के लिए माता कैकेयी की बुद्धि कभी ऐसी नहीं होती। लक्ष्मण ! दैव से कौन युद्ध कर सकता है क्योंकि इस (भाग्य) का प्रत्यक्ष कर्मों के फल भोग के रूप में ही होता है, अन्य किसी रूप में नहीं। सुख-दुःख, भय-क्रोध, लाभ-हानि और जीवन-मरण तथा अन्य सब कुछ इसी के आधीन है। कठोर तप करने वाले ऋषि भी भाग्य के द्वारा प्रेरित होकर कठोर तपस्या से अर्जित नियमों को त्याग कर काम क्रोधादि के कारण ऋषि पद से भ्रष्ट हो जाते हैं। जिस कार्य का कभी विचार भी न किया हो और वह अकस्मात् हो जाये तथा प्रयत्न द्वारा प्रारम्भ किया कार्य अनायास रुक जाये इसी को दैव (भाग्य) कहते हैं। हे लक्ष्मण ! मेरे लिए तुम सन्ताप न करो। राज्य और वनवास में कुछ भी अन्तर नहीं है। मेरे लिये तो वनवास ही महान्-कल्याणकारी है। अतः हे सौम्य ! मैं माता-पिता की आज्ञा के आधीन हूं तथा यही सन्मार्ग है।'

वन गमन के दुःखद समाचार को सुनकर आर्त्त हुई माता कौशल्या से प्रार्थना करते हुये श्री राम ने कहा था—'मातः ! कैकेयी ने महाराज को धोखा दिया है, मैं वन में जा रहा हूं और आप भी उन्हें छोड़ देंगी निश्चय ही, तब महाराज जीवित नहीं रह सकेंगे। पति का परित्याग करना स्त्री के लिए सबसे बड़ी क्रूरता है। ऐसे निन्द्य कर्म की तो आप को कल्पना भी नहीं करनी चाहिये। जब तक महाराज दशरथ जीवित हैं, आप उनकी सेवा करें, यही परम्परागत सनातन धर्म है। हे देवि ! मेरे पिता आपके पति हैं, गुरु हैं और श्रेष्ठ हैं और सबके स्वामी और पूज्य हैं। जब तक स्त्री जीये, उसे उचित है कि वह अपने पति को ही अपना देवता और स्वामी समझे। इस समय आपके और मेरे स्वामी राजा दशरथ ही हैं। जो स्त्री व्रतोपवास तो करती हैं पर अपने पति की सेवा नहीं करती, वह पाप की भागिनी होती है। पति की सेवा से ही नारी उत्तम सुख प्राप्त करती है। स्त्रियों के लिए पति सेवा ही प्राचीन लोकाचार सिद्ध, वेद और स्मृति अनुकूल है।'

अपनी अर्द्धांगिनी सीता जी को अयोध्या में ही रहने का परामर्श देते हुए श्री राम ने कहा था—'तुम भरत के सम्मुख मेरी प्रशंसा कभी न करना क्योंकि ऐश्वर्य सम्पन्न पुरुष दूसरे की स्तुति सहन नहीं कर सकते। मेरे वन चले जाने पर तुम्हें व्रत उपवास आदि पूर्वक रहना चाहिये, श्रृंगार आदि नहीं करना चाहिये। प्रातः उठकर यथाविधि सन्ध्या आदि कृत्यों से निवृत्त हो मेरे पिता राजा दशरथ नित्य को नमस्कार करना, मेरी माता कौशल्या वृद्धा हैं और मेरे वनगमन से दुःखी हैं, उनका सम्मान करना तुम अपना कर्त्तव्य समझना। मेरी जो अन्य माताएं हैं, उनकी भी वन्दना तुम नित्य प्रातः करना। भरत व शत्रुघ्न जो मुझे प्राणों से भी प्रिय हैं, उन्हें तुम अपने भाई और पुत्रवत् समझना। तुम कभी भरत के विरुद्ध आचरण मत करना क्योंकि वह देश के राजा और कुल के स्वामी हैं। अकुटिल भाव से आराधना और प्रयत्नपूर्वक सेवा किये जाने पर राजा लोग प्रसन्न होते हैं, अन्यथा कुपित हो जाते हैं। हे देवि ! तुम्हें अयोध्या में ही रहना है। मेरी तुम्हें यही शिक्षा है। तुम ऐसा आचरण करना जिससे कोई बुरा न माने।'

(क्रमशः)

सम्पादकीय

सिद्धान्त चर्चा–

वृक्षों में जीव है कि नहीं?

मैंने १४ मार्च १९८३ के सर्वहितकारी में श्री अनिलकुमार आर्य की एक शंका का समाधान किया है। इस समाधान पर कुछ पाठकों ने आपत्ति की है कि आपने अपने समाधान में वृक्षों में जीव की सत्ता स्वीकार नहीं की है। उन्होंने लिखा है कि महर्षि दयानन्द जब वृक्षों में जीव मानते हैं तब आपने पत्र में महर्षि के तत्सम्बन्धी स्थलों को प्रमाण रूप में उद्धृत किया है। उनके पत्र निम्नलिखित हैं—

सम्पादक

[पत्र—१]

आदरणीय सम्पादक जी, सादर नमस्ते

सनम्र निवेदन है कि १४ मार्च १९८३ का सर्वहितकारी साप्ताहिक प्राप्त हुआ और इसके सम्पादकीय में शंका समाधान भी पढ़ने को मिला।

इसमें ही शंकाकर्ता श्री अनिलकुमार आर्य द्वारा की गई शंका का समाधान आपने किया है कि वृक्ष में जीव की सता नहीं होती और आपने इन्हें जड़ जगत् में गिना है यद्यपि ये विषय आर्यसमाज में विवाद का विषय है क्योंकि इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख इत्यादि जीव के लक्षण हम वृक्षों में प्रत्यक्ष नहीं देख सकते और साथ ही कहा है कि यह विषय अभी साध्य कोटि में है।

परन्तु महर्षि दयानन्द जी महाराज ने वृक्षों में जीव की सता मानी है जैसा कि उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में ही जीव की गति का वर्णन करते हुए मनुस्मृति के श्लोक बताते हुए लिखा है— जब जिस जिस गुण से जिस जिस गति को जीव प्राप्त होता है उसको आगे लिखते हैं–जैसा कि श्लोक नं० २ में आता है कि जो अत्यन्त तमो गुणी है वे स्थावर वृक्ष, कृमि आदि जन्म को प्राप्त होते हैं। इसमें भी पहले एक और श्लोक लिखते हैं कि जो नर पर स्त्री गमन, चोरी इत्यादि करते हैं उनको वृक्ष आदि का स्थावर जन्म मिलता है।

अर्थात् वृक्षो में जीव होता है जो कि स्थावर अवस्था में आता है या वृक्षों की योनि में आकर अन्य ही स्थिति होती है। ये सब उदाहरण ऋषि ने वेद को स्वतः प्रमाण मानते हुए और ऋषित्व के आधार पर ही सत्यार्तप्रकाश में दिए हैं। उनसे बढ़कर तो कोई अभी तक सूक्ष्म एवं तत्वद्रष्टा तो नहीं हुआ है। अतः हम महर्षि वचनों को ही सत्य मानते हैं कि वृक्षों में जीव है। परन्तु किस अवस्था में है। जैसे कि गाढ निद्रा या सुषुप्ति की अवस्था होती है। हम अभी भी वृक्षों में जीव मानते हैं परन्तु किस अवस्था में ये साध्यकोटि में आता है और इसका समाधान भी हम महर्षि के मन्तव्यों द्वारा ही कर सकते है। या कोई अन्य रहस्य इस समुल्लास में दिये गये श्लोकों में दिया हो। क्योंकि आप इस पर अधिक प्रकाश डाल सकते हैं। शायद ऋषिवर ने भी वृक्षों को जड़ जगत् में माना हो। आप आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् हैं कृपया सर्वहितकारी में ही इस विषय पर प्रकाश डालने की कृपा करके मार्गदर्शन करें।

आपका सत्यपाल विमल
मन्त्री आर्यसमाज खारवन

[पत्र—२]

श्रीयुत सम्पादक जी. सादर नमस्ते

आपके प्रिय पत्र सर्वहितकारी के १४ मार्च के अंक में सम्पादकीय में शंका समाधानार्थ निर्मनलिखित पंक्तियां उचित प्रतीत नहीं होती क्योंकि इनका महर्षि दयानन्द के लेख से स्पष्ट विरोध है, अतः इन पर पुनर्विचार करने की कृपा करें—

"वृक्षों में जीव की सत्ता नहीं मानी जा सकती। अतः मैंने इन्हें जड़-जगत में गिना है। इनमें जीव आत्मा का निवास मानने पर हिंसा आदि दोष आ जाते हैं। फिर इनका सेवन मांस भक्षण के सदृश ही बन जाता है।" (सर्वहितकारी पृष्ठ ३)

महर्षि दयानन्द का लेख—

(१) जो अत्यन्त तमोगुणी है वे स्थावर वृक्षादि कृमि, कीट, मत्स्य, सर्प, कच्छप, पशु और मृग के जन्म को प्राप्त होते हैं।

(सत्यार्थप्रकाश दशम समु०)

(२) और जैसे वैद्य या आजकल के डाक्टर लोग नशे की वस्तु खिला व सुंघा के रोगी पुरुष के शरीर के अवयवों को काटते वा चीरते हैं; उसको उस समय कुछ भी दुःख विदित नहीं होता वैसे वायुकाय अथवा अन्य स्थावर शरीरवाले जीवों को सुख दुःख प्राप्त कभी नहीं हो सकता। जैसे मूर्च्छित प्राणी सुख दुःख को प्राप्त नहीं हो सकता वैसे वे वायुकायादि के जीव भी अत्यन्त मूर्च्छित होने से सुख दुःख को प्राप्त नहीं हो सकते। (स० प्र० द्वादश समु०)

(३) इस संसार में हम दो प्रकार के जन्मों को सुनते हैं। एक मनुष्य शरीर का धारण करना और दूसरा नीच गति से पशु, पक्षी कीट; पतंग वृक्षादि का होना। (ऋ० पूवर्जन्मविषय)

उपर्युक्त महर्षि वचनों से स्पष्ट है कि महर्षि वृक्षों में जीवों की सत्ता मानते हैं किन्तु वे वृक्षादि अत्यन्त मूर्च्छित दशा में रहते हैं परन्तु सम्पादकीय लेख में इन वचनों से स्पष्ट विरोध है।

आशा नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस विषय पर पुनः विचार करेंगे। परस्पर प्रेम पूर्वक विचार तो होता ही रहना चाहिए।

भवदीय राजवीर शास्त्री दिल्ली

प्रश्नों का उत्तर—

(१) श्री सत्यपाल विमल मन्त्री आर्यसमाज खारवन तथा श्री राजवीर शास्त्री ने महर्षि के ग्रन्थों से वृक्षों में जीव है इस विषय में जो प्रमाण उद्धत किए हैं उन्हें स्वाध्यायशील सभी आर्य जानते हैं। अच्छा तो यह होता कि उक्त विद्वान् श्री अनिलकुमार आर्य की शका का कोई अच्छा समाधान लिखकर भेजते।

(२) महर्षि के ग्रन्थों में ऐसे भी कुछ प्रकरण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि वृक्षों में जीव नहीं है। प्रकरण निम्नलिखित हैं—

(क) आकाश के पश्चात् वायु, वायु के पश्चात् अग्नि, अग्नि के पश्चात् जल, जल के पश्चात् पृथिवी, पृथिवी से ओषधि, ओषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से पुरुष अर्थात् शरीर उत्पन्न होता है।

(सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास वेदानन्द संस्करण पृ० १८९)

(ख) पञ्चतन्मात्राओं से अनेक स्थूल अवस्थाओं को प्राप्त होते क्रम से पांच स्थूल भूत जिनको हम लोग प्रयत्क्ष देखते हैं, उत्पन्न होते हैं। उनसे नाना प्रकार की ओषधियां वृक्ष आदि उनसे अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से शरीर होता है (स० प्र० अष्टम समु० वेदानन्द संस्करण पृष्ठ १९१)।

(ग) जो इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख और ज्ञान आदि गुणयुक्त अल्पज्ञ नित्य है उसी को जीव मानता हूं (स्वमन्तव्य० सख्या ४)।

(घ) इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख, ज्ञान, प्राण, अपान, निमेष, उन्मेष, गति, अन्तरविकार ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं। जब तक आत्मा देह में होता है तभी तक ये गुण प्रकाशित होते हैं, और जब शरीर छोड़ चला जाता है तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हो और न होने से न हों वे गुण उसी के होते हैं। जैसे दीप और सूर्य आदि के न होने से प्रकाश आदि का न होना और होने से होना वैसे जीव और परमात्मा का विज्ञान गुण द्वारा होता है।

(स० प्र० सप्तम समु० वेदानन्द संस्करण पृ० १६५)

(शेष ५ पर)

हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिंह का

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के नाम खुला पत्र

आदरणीया प्रधान मन्त्री जी,

गृहमन्त्री की ओर से वार्ता का निमंत्रण दिए जाने के पश्चात् यह प्राय: निश्चित ही है कि अकाली भी पुन: वार्ता आरम्भ कर देंगे।

तथाकथित धार्मिक मांगों का जो समाधान किया है, वह सम्प्रदाय निरपेक्ष संविधान की शब्दावली तथा भावना के अनुरूप तो नहीं है परन्तु मैं इस पर विवाद खड़ा करने के पक्ष में नहीं हूं। परन्तु भारत सरकार को चाहिए कि सभी धर्म ग्रन्थों के उद्धरण प्रसारित करने के लिए उसी अनुपात से समय निर्धारित करें जिससे गुरुवाणी के लिए समय दिया गया है, तथा सार्वभौम और मानवमात्र के लिए कल्याणकारी वेदवाणी के प्रसार का समुचित प्रबन्ध करे। इन सभी प्रसारणों के पीछे सम्प्रदायों की तुष्टि की भावना न रहकर, यही भावना रहे कि जो ऊंचे आदर्शों और विचारों से प्रभावित होकर देशवासी अपने व्यवहार में सात्विकता ला सकें और अपने जीवन में मानवीय गुणों की वृद्धिकर उसका स्तर ऊंचा कर सकें।

सिंधु घाटी की नदियों के विवाद का सुलहनामा १९६० में हुआ जिसके फलस्वरूप सतलुज, व्यास और रावी तीन नदियां भारत के हिस्से में आईं। इसके लिए भारत सरकार को ११० करोड़ रुपये पाकिस्तान को मुआवजे के तौर पर देने पड़े। अनेकों वर्ष बीतने पर भी आज पाकिस्तान में इन नदियों का पानी जा रहा है, इससे अधिक दुःख की बात नहीं हो सकती। पानी इसलिए जा रहा है क्योंकि सतलुज यमुना-लिंक नहर नहीं बनी है। जिस समय १९६० का सुलहनामा हुआ। हरयाणा संयुक्त पंजाब का भाग था, इसलिए १९५५ में जिसका पानी पंजाब को दिया गया, उसमें पूर्णरूप से हिस्सेदार था। हरयाणा में क्योंकि बहुत से सूखाग्रस्त इलाके हैं और उसकी नहरों का तन्त्र और व्यवस्था पंजाब क्षेत्र की अपेक्षा बहुत कम विकसित हैं, इसलिए रावी व्यास का अधिकतर पानी हरयाणा को मिलना चाहिए था। परन्तु यह सब कुछ मानते हुए भी भारत सरकार ने मार्च १९७६ के अपने फैसले के अनुसार पंजाब के बराबर ही पानी दिया। १९८१ में जो करार पंजाब हरयाणा और राजस्थान के मुख्य मन्त्रियों ने किया। उसके अनुसार पंजाब को और अधिक पानी ही नहीं दिया बल्कि राजस्थान जिस पानी का उपयोग राजस्थान नहर न बनने के कारण नहीं कर पा रहा वह भी पंजाब को दे दिया। अकाली इन दोनों ही फैसलों को बदलने के लिए जल अधिकरण (Water Tribunal) बनाने की मांग कर रहा है। सिद्धान्त रूप से हमको इस पर आपत्ति नहीं है परन्तु हरयाणा को न्याय मिल सके इसके लिए तीन शर्तें पूरी करके ही जल-अधिकरण को यह विवाद सौंपा जाए—

१—सतलुज यमुना-लिंक नहर की खुदाई का काम भारत सरकार का सिंचाई मंत्रालय तुरन्त अपने हाथ में लेकर १९८४ के अन्त तक अवश्य ही नहर को तैयार कर देवे।

२—नहर के तैयार होने पर जब तक जल-अधिकरण का फैसला न हो तब तक १९७६ के फैसले के अनुसार पानी की मात्रा सतलुज यमुना लिंक द्वारा हरयाणा को दी जाती रहे।

३—जल-अधिकरण का फैसला अन्तिम हो और दोनों राज्यों के लिए अनिवार्य तथा उस पर तुरन्त अमल कर दिया जाए।

जहां तक चण्डीगढ का प्रश्न है, मेरा निश्चित मत है कि इसका बटवारा समस्या को सुलझाने को बजाए इसमें नई उलझनें ही पैदा करेगा। जिस प्रकार चंडीगढ शहर बना और बसा है उसका बटवारा करने पर सचिवालय विधान सभा भवन, इन्जिनियरिंग कालिज; चिकित्सा के लिए स्नातकोत्तर संस्थान तथा विश्वविद्यालय सब एक राज्य को मिल पाएगे, क्योंकि ये सब के सब चंडीगढ के एक भाग में बने हैं। जिस राज्य को दूसरा भाग मिलेगा, उसे ये सभी आवश्यक पीठ नए सिरे से बनाने पड़ेंगे। जब सब नए सिरे से ही बनाने हैं तो राज्य के एक अन्तिम कोने पर बसे हुए चण्डीगढ में ही बनाए जाने में कोई तुक है क्या? वैसे भी राजधानियों की दीवार से दीवार मिली हो, तब अनेकों प्रशासनिक तथा कानून और व्यवस्था की नई समस्याएं प्रतिदिन खड़ी होती रहेंगी।

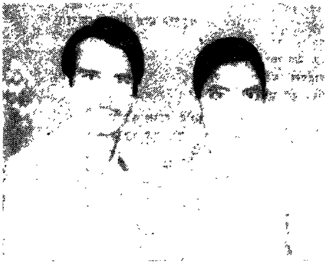
इसलिए यदि शाह आयोग की रिपोर्ट को मानना है तो हरयाणा को चंडीगढ और खरड़ तहसील का वह भाग जो पंजाब में चला गया है, मिलना चाहिए। यदि प्रधान मन्त्री का १९७० का फैसला मानना है तो पंजाब को चंडीगढ देने के साथ हरयाणा को फाजिल्का अबोहर का क्षेत्र देना चाहिए। जो अकाली चार बार फाजिल्का अबोहर क्षेत्र को हिन्दी भाषी मान चुके हैं, और प्रधान मन्त्री के फैसले का स्वागत करते हुए दिवाली मना चुके हैं, उनकी इस सम्बन्ध में पकड़ी हुई जिद्द की कोई परवाह नहीं करनी चाहिए। अब फिर उन्होंने सस्पर्शिता (Contiguity) का प्रश्न खड़ा करने की कोशिश की है। यह जानते हुए भी कि कन्दूखेड़ा ग्राम हिन्दी भाषी है और १९५६ में जिसे उन्होंने पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त के सामने लिखित रूप माना है, तथा १९५७ में यह ग्राम हिन्दी भाषी होने के नाते मुक्तसर तहसील में होते हुए भी अबोहर विधान सभा क्षेत्र का भाग बनाया गया था। प्रधान मन्त्री के फैसले का प्रारूप तैयार करते समय की गल्ती को बहाना नहीं बनाया जा सकता। १९७० में भी अबोहर हल्के के विधायक द्वारा घर घर जाकर की हुई गणना के आधार पर भी यह प्रमाणित हुआ कि इस ग्राम के बहुसंख्यकों की भाषा हिन्दी है (दस्तावेज गृह मंत्रालय के पास हैं)। जब कन्दूखेड़ा ग्राम हिन्दी भाषी है तो हरयाणा के साथ फाजिल्का अबोहर क्षेत्र की संस्पर्शिता (Contigiuty) टूटने का सवाल ही कैसे उठता है? इसलिए यह अनिवार्य है कि चंडीगढ पंजाब को सौंपने से पहले अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरयाणा को हस्तांतरित किया जाए। प्रधान मंत्री के फैसले के अनुसार किसी आयोग को इन क्षेत्रों के सम्बन्ध में विचार करने का अधिकार नहीं होगा।

सरदार दरबारासिंह तथा कुछ अकाली नेताओं ने श्री चन्द्रजीत यादव के सुझाव का सहारा लेकर यह प्रस्ताव रखा है कि फाजिल्का अबोहर क्षेत्र के बदले में पटियाला जिले के लालडू बसो क्षेत्र और संगरूर जिले के ३५ हिन्दी भाषी गांव हरयाणा को दिए जाएं। यह बात अब निर्विवाद है कि ये सभी क्षेत्र हिन्दी भाषी हैं और एक व्यक्ति को विधान सभा में चुने जाने की उत्कण्ठा के कारण ही ये क्षेत्र पंजाब में रह गये थे क्योंकि क्षेत्र के बारे में दोनों पक्ष सहमत हैं इसलिए इन को भी आयोग के दायरे से बाहर रखकर फाजिल्का अबोहर के साथ-२ ही हरयाणा में मिला देना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि पंजाब के भाई अपनी आदत के मुताबिक अपनी इस बात से नहीं मुकरेंगे। स्वयं एक बात मानने के बाद मुकरने की अकालियों की ही नहीं सभी पंजाब के नेताओं की है। इसीलिए मैं केवल अकालियों को दोषी नहीं ठहराता। संसद् द्वारा पास किए हुए कानून (जिसके अनुसार हैडवर्क्स का नियन्त्रण भाखड़ा व्यास प्रबन्ध बोर्ड के हाथ में रहना चाहिए था) की धज्जियां उड़ाने में अकाली, कांग्रेसी तथा भारतीय जनता पार्टी आदि कोई किसी से पीछे नहीं है। अलग अलग कारणों से ही सही परन्तु पंजाब के सभी दलों के नेता हरयाणा के अधिकारों के हड़पने में एक दूसरे से बढ़ चढ़कर हैं।

मेरा आपसे अनुरोध है कि अकालियों से वार्ता करते समय यह न भूलें कि हरयाणा दूसरा पक्ष है और उसके प्रतिनिधियों को भी शामिल करना चाहिए। केवल मुख्यमन्त्री से निजीतौर पर की गई बात काफी नहीं है और ऐसी बातों के आधार पर किए गए फैसले से हरयाणा के प्रतिनिधि और जनता बन्धे हुए नहीं हैं। दूसरे क्षेत्रों और मामलों के बारे

(शेष ५ पर)

आदर्श आर्य विवाह संस्कार



ग्राम मकड़ोली कलाँ जिला रोहतक के सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी म० बलवन्तसिंह ने अपनी भानजी सौ० सन्तोष आर्या का छारा निवासी डा० नरेश जी दलाल के साथ आदर्श विवाह किया। ३१ मार्च से ३ अप्रैल तक सभा के भजनोपदेशक प० पृथ्वीराम व पं० सूरतसिंह के मधुर मनोरंजक भजन हुए। प्रातःकाल दैनिक-यज्ञ के अवसर पर एवं रात्रि के समय सभा के महोपदेशक पं० धर्मचन्द्र विद्यालङ्कार एम० ए० के प्रभावशाली प्रवचन व व्याख्यान हुए।

३ अप्रैल को पं० धर्मचन्द्र विद्यालङ्कार व पं० वेदप्रकाश जी साधक ने 'पाणि-ग्रहण' संस्कार विशुद्ध वैदिक विधि से कराया। इस अवसर पर केवल पांच बाराती आये और एक रुपया दान में दिया गया। साथ में संस्कार विधि, सत्यार्थ-प्रकाश तथा महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट किया गया।

इस शुभावसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ३५० रुपये वेदप्रचारार्थ दिया। इसके अतिरिक्त गुरुकुल झज्जर को १०१) कन्या गुरुकुल नरेला को १०१) व गुरुकुल भैंसवाल, खानपुर, सिंहपुरा, मटिण्डू इन्द्रप्रस्थ, दयानन्द मठ रोहतक को भी ११, ११ रुपये दान दिया गया। संस्कार पर विद्वान् वृद्धों ने वर-वधू को आशीष दिया। इस प्रकार यह विवाह एक प्रकार से आदर्श विवाह के रूप में सम्पन्न हुआ।

सार्वजनिक सूचना

मैंने भारतवर्ष में आकर वैदिक धर्म अध्ययन किया है और इस धर्म से बहुत प्रभावित हुई हूं। इसी कारण मैं एक भारतवासी श्री मिश्रीलाल पासी ग्राम रामदी जिला कपूरथला से वैदिक धर्म के अनुसार स्वेच्छा से विवाह करना चाहती हूं।

कुमारी मनुला मार्गेट बोमरेट
द्वारा नागलपाल होटल रोहतक

(पृष्ठ एक का शेष)

उन्होंने विजित प्रदेश में धर्म की विजय-वैजयन्ती उड़ाकर भूतपूर्व लंकेश्वर रावण के स्थान में उसके अनुज, धर्मपरायण विभीषण को ही प्रजा पालनार्थ अभिषिक्त कर दिया। इस प्रकार दक्षिण पथ में आर्य सभ्यता का प्रसार करके अपनी वनवास यात्रा की अवधि पूर्ण होने पर श्री रामचन्द्र जी अपनी पैतृक राजधानी अयोध्या में लौट आए और स्वपितृपरम्परागत साकेत राज्य के सिंहासन पर अभिषिक्त होकर यावज्जीवन नृपति-धर्म का पालन करते रहे।

इस लघुनिबन्ध में पुण्यश्लोक, विश्वविश्रुतकीर्ति लोकाभिराम श्री राम की पुण्यगाथा कहां तक वर्णन की जा सकती है। काव्य उनके यशोगान से भरे पड़े हैं। भारतीय कवियों ने अपनी उच्च कल्पना का पूर्ण परिचय देकर शब्द चित्र के जितने मनोरम और सुन्दर स्वरूप बनाए हैं, देववाणी के सिद्ध सारस्वतों ने अपनी प्रखर प्रतिभा का जितना चमत्कार दिखलाया है, उनमें से अधिकांश में राम के पथप्रदर्शक पावन चरित्र का वर्णन पाया जाता है। भाषा कवियों की भी जिह्वा उनका यश वर्णन करने से नहीं थकती।

हमारे लिए इससे अधिक सौभाग्य और क्या हो सकता है कि हम ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्श चरित्र की सन्तान हैं। उन्हीं पवित्र नाम राम के जन्म दिन की शुभतिथि चैत्र सुदी नवमी है। हमारे पूर्वजों ने हम पर यह भी एक बड़ा उपकार किया है कि इस लोकाभ्युदयकारक के जन्म की तिथि इस चैत्र शुक्ला नवमी को हम तक अविच्छिन्न रूप से पहुँचा दिया है, परन्तु आजकल अज्ञानान्धकार में निमग्न आर्य सन्तान रामनवमी प्रभृति जन्मोत्सव को लाभप्रद रीति से नहीं मानते और उनके वास्तविक उद्देश्यों को भूलकर अनशन आदि वृथा रूढ़ियों में फंस गये हैं। शिक्षा से आलोकित हृदय सुधारकों और वैदिकधर्मावलम्बी आर्य महाशयों का कर्तव्य है कि लुप्त प्राय: विशुद्ध वीर-पूजा की प्रथा का पुनरुद्धार करें और अपने आदर्श महापुरुषों की जन्म तिथियों और स्मारकों को शिक्षाप्रद प्रकारों से मनाएं तथा सर्वसाधारण के लिये पथप्रदर्शक बनें। आज के दिन मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र के चरित्र के अध्ययन वा स्वाध्याय के लिए रामायण की कथा को प्रचारित करना चाहिए। यज्ञ और दान का शुभानुष्ठान होना चाहिये और अपने पूर्व पुरुषों के पद-चिन्हों पर चलते हुए धर्म के तीनों स्कन्ध यज्ञ, अध्ययन और दान के विशेष आचरण में ही ऐसे शुभ दिनों को बिताना चाहिये, जिससे कि हम अपनी उन्नति करते हुए अन्यों के उद्धार के हेतु बन सकें। (आर्य पर्व पद्धति से)

(३ का शेष)

इन उल्लिखित उद्धरणों में महर्षि वृक्ष आदि की उत्पत्ति पृथिवी आदि के तुल्य मानते हैं और जो महर्षि ने जीव का लक्षण दिया है वह वृक्षों में नहीं घटता। मैंने महर्षि के इस पक्ष को मानकर उक्त समाधान किया है।

आर्य विद्वानों से मेरा निवेदन है कि वे 'वृक्षों में जीव है कि नहीं–महर्षि मन्तव्य' इस विषय में अपने लेख सर्वहितकारी में भेजने की अनुग्रह करें जिससे इस विषय में खुलकर विचार किया जा सके।

सुदर्शनदेव आचार्य

(पृष्ठ चार का शेष)

में यदि पंजाब- हरयाणा और हिमाचली मांगों पर विचार करने के लिए प्रधान मन्त्री के फैसले के अनुसार आयोग का गठन किया जाए तो आपत्ति नहीं।

आशा है कि पानी तथा इलाकों जैसे महत्त्वपूर्ण मामलों पर जिन का प्रभाव इस पीढ़ी पर नहीं, आने वाली पीढ़ियों पर भी पड़ने वाला है, आप गम्भीरता से विचार करके, न्याय पर आधारित फैसला करेंगी। ससम्मान आपका

श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रधान मन्त्री
भारत, नई दिल्ली। शेरसिंह

सत्याग्रह के लिए स्वयंसेवकों की सूची भेजें

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि हरयाणा के हितों की रक्षार्थ सत्याग्रह हेतु स्वयंसेवकों की सूची तैयार करके १५ मई तक दयानन्द मठ रोहतक के पते पर भेजें। —:निवेदक:—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	भरतसिंह वानप्रस्थ
संरक्षक	अध्यक्ष	संयोजक

हरयाणा रक्षा वाहिनी दयानन्द मठ रोहतक

प्रो० सत्यवीर शास्त्री को बधाई



आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री एवं राजकीय महिला महाविद्यालय, रोहतक के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर सत्यवीर शास्त्री महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक की शिक्षा समिति (एकाडेमिक काउन्सिल) के लिए ३१-३-८३ को हुए चुनाव में महाविद्यालय प्राध्यापक वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित घोषित किए गए हैं। सभा प्रोफेसर

प्रो० सत्यवीर शास्त्री

सत्यवीर शास्त्री को इस चुनाव में सफलता प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई देती है तथा आशा करती है कि वे विश्वविद्यालय के नाम के अनुरूप महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों की रक्षा हेतु पूर्ण सजग रहेंगे। सभा मन्त्री

प्राध्यापक वर्ग का धन्यवाद

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से सम्बद्ध सभी महा विद्यालयों के प्राध्यापक वर्ग का मैं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की शिक्षा समिति (एकाडेमिक काउंसिल) के ३१-३-८३ को हुए चुनाव में आप सभी के पूर्ण सहयोग से निर्वाचित घोषित किया गया हूं।

अपने इस निर्वाचन के लिए मैं इस पत्रिका के माध्यम से आप सभी का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार प्रकट करता हूं।

सिद्धान्त विहीन राजनीति के इस युग में अपने मान्य सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए अपने विवेकशील एव जागरूक मित्रो के सहयोग से इस चुनाव में मुझे जो सफलता प्राप्त हुई है उसके लिए मैं आप सभी का अत्यन्त कृतज्ञ हूं। शिक्षा समिति के कार्यक्षेत्र से सम्बद्ध आपके सुझाव एवं समस्याएं सादर आमन्त्रित हैं। भविष्य में भी इसी प्रकार आपका पूर्ण सहयोग मुझे प्राप्त होता रहेगा इसी आशा के साथ एक बार पुनः आप सभी का हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

सत्यवीर शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय, रोहतक

तुमको शतशः मेरा वन्दन !

(रामनवमी के परम पुनीत पर्व पर श्रद्धा-सुमन)

वह आर्य जाति का उद्धारक,
मर्यादा तरणी का तारक।
रघुकुल रीति का उन्नायक,
भारत का प्यारा जन-नायक।

रम गया राम प्रति जन मन में,
बन रहा रक्त प्रति ही तन में।
वह सत्य समर का सेनानी,
वह आर्य मर्यादा अभिमानी।

था राज्य विभव का वह त्यागी,
जिस पर सब सम्पदा अनुरागी।
करने जन मन का प्राण-त्राण,
साधा जिसने बहु वेध-बाण।

बालि सा बन्धु संहारा,
रावण के सम्मुख हुंकारा।
जो दैत्य दलन में दक्ष रहा,
वह राम आज जन-मन प्यारा।

मर्यादा का सेतू बांधा,
यह पाप पुण्य हेतू बान्धा।
आर्यावर्त्त की सीमा मापी,
लंका की भुज सीमा-चांपी।

सोये भारत को जगा गया,
आलस्य भूत को भगा गया।
मानव से महा-मनुज बनकर,
चलना सिखलाया सत्पथ पर।

हे ! आर्य-वंश के पुत्र-पूत,
हे ! धर्म-धनी हे ! अग्रदूत।
कर स्मरण पुलकित हैं तन-मन,
तुमको शतशः मेरा वन्दन ॥

धर्मचन्द्र विद्यालङ्कार 'समन्वित' एम० ए०

उत्तर दिल्ली आर्य महासम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में २३ से २५ अप्रैल १९८३ को गुजरांवाला टाऊन, दिल्ली में एक विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें विघटनकारी एवं अलगाववादी अराष्ट्रीय एवं स्वार्थी तत्वों के प्रति जनता को सावधान करने के लिए राष्ट्रीय एवं आर्य नेता जनता का मार्गदर्शन करेंगे। सभामन्त्री

ईश्वर से कैसे मिलें ?

—आचार्य उदयवीर शास्त्री

(गतांक से आगे

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः ।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥

सूर्य, चांद, तारे, बिजलियाँ और अग्नि कोई पदार्थ उसको प्रकाशित नहीं करते । उसी के अस्तित्व से इनकी सत्ता है । उसी के प्रकाश से ये प्रकाशित हैं । ब्रह्म की उपासना इसी रूप में करनी चाहिए । यह उपनिषद् के उन वाक्यों का तात्पर्य है, जहां आदित्य आदि को ब्रह्म कहा है । ऐसे कथनों के आधार पर मानव निर्मित अथवा अन्य भौतिक प्रतीकों की छाया में ब्रह्म की उपासना न संभव है, न शास्त्रानुमोदित ।

मन अथवा अन्तःकरण समस्त इन्द्रियों को साथ लेकर शरीर में जीवात्मा के लिए प्रत्येक कार्य को सम्पादन करने का एक प्रधान साधन है । मन इन्द्रियों के साथ मिलकर आत्मा को विषयों की ओर आकृष्ट करता है । इन्द्रियों की अन्तर्वृत्ति दशा में यही मन जीवात्मा द्वारा अनुष्ठित ब्रह्मोपासना में पूर्ण सहयोगी होता है । शुद्धमन का सहयोग ब्रह्म के उत्कर्ष का दर्शन कराता है । परब्रह्म परमात्मा ने इन्द्रियों को विषयों की ओर खुला हुआ बनाया है, इसलिए स्वभावतः इन्द्रियां बाहर सांसारिक विषयों की ओर आकृष्ट हो भागा करती हैं । कोई विरला ही धीर पुरुष अमृतपद प्राप्ति की अभिलाषा रखता हुआ संयमपूर्वक इन्द्रियों को बाहर की ओर से मोड़कर अन्तरात्मा के दर्शन कर पाता है, ऐसे सब प्रत्यगात्मा के दर्शन के प्रयास मन के शुद्ध होने पर ही सम्भव हैं । 'मनोब्रह्मेत्युपासीत' वाक्यों का यही स्वारस्य है । मन को ब्रह्म समझकर उपासना करने का यह तात्पर्य नहीं, कि वहां मन की उपासना करनी है, प्रत्युत यही भाव है, कि शुद्ध, एकाग्रमन होकर ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए । शुद्ध आनन्दपूर उत्कृष्ट ब्रह्म के समीप अशुद्ध मन का पहुंचना सम्भव नहीं, इसलिए मन आदि प्रतीक में ब्रह्म भावना अथवा ब्रह्मरूप से उसकी उपासना करना अभिप्रेत नहीं; उपास्य तत्त्व एकमात्र ब्रह्म है ।

शिष्य—उपासना के विषय में यह समझा जा सका कि शुद्धान्तःकरण होकर भौतिक प्रतीक आदि के बिना ही परब्रह्म का चिन्तन आवश्यक है परन्तु क्या उपासना के लिए बैठकर नियत आसन आदि लगाकर लेटे हुए या दौड़ते भागते करने आदि में कोई नियम हैं; अथवा जैसे चाहे रहे ?

गुरु—उपासना या ध्यान उस स्थिति का नाम है, जब चित इधर-उधर न डोले, उसमें एक विषय की वृत्ति का प्रवाह निरन्तर बहता रहे । ऐसी स्थिति चलते-फिरते या दौड़ते भागते सम्भव नहीं हो सकती । चलना-दौड़ना चित्तवृत्ति को विक्षिप्त करता रहता है । खड़े रहना भी उपासना के लिए उपयोगी नहीं, क्योंकि इसमें शरीर धारणा की ओर मन की वृत्ति लगी रहती है, लेटकर उपासना करने में अकस्मात् निद्रा से अभिभूत हो जाने का भय बना रहता है । निद्रा दबा ले, तो उपासना धरी रह जाती है । इसलिए बैठकर उपयुक्त आसन लगाकर उपासना करना सम्भव होता है, योगशास्त्र में इसके लिए पद्मासन, सिद्धासन, स्वस्तिकासन आदि अनेक उपयुक्त आसनों का विधान किया गया है । गीता के छठे अध्याय में इस विषय का सुन्दर वर्णन है—

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥
तत्रैकाग्रं मनःकृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः ।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥
समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः ।
सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥ (६।११।१४)

योगाभ्यासी पुरुष शुद्ध स्थान पर अपना स्थिर आसन लगावे, जो न बहुत ऊंचा हो न बहुत नीचा; उस पर पहले दर्भ (दाभ-घास) फिर मृगछाला और फिर उस पर वस्त्र बिछावें । वहां चित्त और इन्द्रियों के व्यापार को रोककर तथा मन को एकाग्र करके आत्मशुद्धि के लिए आसन पर बैठकर योग का अभ्यास करें । शरीर के आग पीठ, मस्तक और गर्दन को सम करके अर्थात् सीधी खड़ी रेखा में निश्चल करके स्थिर होता हुआ दिशाओं को अर्थात् इधर-उधर न देखे; और अपनी नाक के अगले भाग पर दृष्टि जमाकर निर्भय हो शान्त अन्तःकरण से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तथा मन का संयम करते हुए परमात्मा में चित्त लगाकर सब प्रकार परब्रह्म में आत्मसमर्पण की भावना से तत्पर हुआ उपासना में संलग्न हो जावे ।

इसके अतिरिक्त एक और विशेष बात है, योग के आठ अंगों में निदिध्यासन अथवा ध्यान सातवाँ अंग है । चित्त की एकाग्रता की अवस्था है, जो निश्चेष्ट बैठी हुई दशा में सम्भव है । खड़े, चलते-फिरते या लेटे रहते हुए चित्त-एकाग्रता सम्भव नहीं, क्योंकि ये सब अवस्था चित्त में विक्षेप करने उत्पन्न करने वाली हैं जो ध्यान की विरोधी हैं । इस लिए उपासना के मार्ग में योगाङ्ग ध्यान की स्थिति से निश्चित होता है कि उपासना स्थिर आसन में बैठकर की जानी चाहिए ।

ध्यान करते हुए जब समाधि की दशा आने लगती है, इसी का नाम निदिध्यासन है । ऐसी स्थिति के लिए देह के निश्चल रहने की पूरी अपेक्षा रहती है । प्राचीन योगाभ्यासरत ऋषि-मुनियों एवं आचार्यों ने 'ध्यायतीव' का प्रयोग निश्चलता अथवा स्थिरता की अपेक्षा से किया है—'ध्यायतीव पृथिवी···ध्यायन्तीव पर्वताः' (छा० ७।६।१) । ध्यान की महत्ता का वर्णन करते हुए उपनिषत्कार ने कहा, पृथिवी मानो ध्यान कर रही है, पर्वत मानो ध्यान कर रहे हैं । यह पृथिवी एवं पर्वतों की अचलता की अपेक्षा से प्रयोग है । यह निश्चल बैठकर उपासना करने का प्रयोजक है । मनुस्मृति में भी जहां (२।३०-१०२) ब्रह्मचारी के लिए सन्ध्या करने का विधान है, वहाँ 'समासीनः' पद का प्रयोग है । उपासन उपासना, निदिध्यासन स्वयं ऐसे पद हैं जिनसे इन अनुष्ठानों को बैठ कर करने की भावना प्रस्फुटित होती है, ये सब परिस्थितियां उस बात की निश्चायक हैं, कि उपासना बैठकर की जानी चाहिए ।

शिष्यों के आवेदन पर गुरु जी ने उपासना सम्बन्धी चर्चा को आज यहीं समाप्त कर दिया ।

(वेदप्रकाश से साभार)

आर्यसमाजों, गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत	२२, २३, २४ अप्रैल
,, शिवानी मण्डी जिला भिवानी	,, ,, ,, ,,
,, जैकमपुरा गुड़गाव छावनी	२९, ३० अप्रैल १ मई
,, खेल बाजार पानीपत (करनाल)	,, ,, ,, ,, ,,
कन्या गुरुकुल हसनपुर जिला फरीदाबाद	६-७-८ ,,
आर्यसमाज नांगलराया दिल्ली छावनी	२ से ८ ,,
,, रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ	६ से ८ ,,
,, लोहारू जिला भिवानी	,, ,, ,,
लालकुर्ती बाजार अम्बाला छावनी	,, ,, ,,
,, जाखल जिला हिसार	१३-१४ ,,
कन्या गुरुकुल नरेला	१३-१४-१५ ,,
आर्यसमाज वर्कशाप जगाधरी जिला अम्बाला	१५ से २२ ,,
,, मदानाकलां जिला रोहतक	२१-२२-२३ ,,
,, खानपुर जिला महेन्द्रगढ	२१-२२ ,,
,, घण्टाघर भिवानी	२७-२८-२९ ,,
,, दामला जिला अम्बाला	३-४-५ जून
,, गन्नौर शहर जिला सोनीपत	१०-११-१२ जून

जिन आर्यसमाजों, गुरुकुलों ने अपने उत्सव अथवा वार्षिक प्रचार की तिथियां अभी तक निश्चित नहीं की हैं, उनके अधिकारियों से निवेदन है कि वे तिथियां नियत करके सभा को सूचित करें ताकि उपदेशकों तथा भजनीकों का प्रबन्ध समय पर किया जा सके । सभा मन्त्री

स्वामी ओमानन्द सरस्वती के अभिनन्दन हेतु दान-दाताओं की सूची

१.	सर्वश्री सुमेरसिंह जी स्वरूपगढ़ (भिवानी)	५१००-००
२.	,, आर्य हिन्दी विद्यालय चरखी दादरी (भिवानी)	५१००-००
३.	,, वेदव्रत जी शास्त्री आचार्य प्रिंटिंग प्रेस दयानन्दमठ रोहतक	११०१-००
४.	,, यज्ञदेव जी शास्त्री लूलोढ़ (रोहतक)	११०१-००
५.	,, प्रो० सत्यवीर जी शास्त्री डालावास (भिवानी)	११०१-००
६.	,, प्रो० योगानन्द जी भदानी, रोहतक	११०१-००
७.	,, चन्द्रपालसिंह राणा पाकस्मा, रोहतक	११०१-००
८.	,, सुरेन्द्रकुमार जी डी.ए वी. कालेज चण्डीगढ़	११०१-००
९.	,, ब्र० विरजानन्द जी दैवकरणि गुरुकुल झज्जर	११०१-००
१०.	,, आचार्य हरिदेव जी दयानन्द वेदविद्यालय गौतमनगर दिल्ली	११०१-००
११.	,, डा० सोमवीर जी रिटोली कबूलपुर, रोहतक	११०१-००
१२.	,, सत्यवीर जी शास्त्री गढी बोहर, रोहतक	११०१-००
१३.	,, सूबेदार यज्ञपाल जी पञ्चगाव (भिवानी)	५०१ ००
१४.	,, विजयपाल जी मुख्याध्यापक गुरुकुल झज्जर	५०१-००
१५.	,, स्वामी योगानन्द जी गुरुकुल झज्जर	११०१-००
१६.	,, आचार्य सुरेन्द्र जी लूखी	५०१-००
१७.	,, मनुदेव जी शास्त्री चरखी दादरी भिवानी	५०१-००
१८.	,, डा० विजयकुमार जी मातनहेल रोहतक	५०१-००
१९.	,, डा० रामबीर जी नेहरू कालिज हांसी (हिसार)	५०१-००
२०.	,, स्वामी सत्यानन्द जी गुरुकुल झज्जर, रोहतक	५०१-००
२१.	,, राजपाल जी शास्त्री रोहद, रोहतक	५०१-००
२२.	,, महावीर जी शास्त्री भालौठ, रोहतक	५०१-००
२३.	,, महावीर जी शास्त्री सुण्डाना, रोहतक	५०१-००
२४.	,, बलदेव जी मातनहेल, रोहतक	५०१-००
२५.	श्री रणबीरसिंह शास्त्री आसन, रोहतक	५०१-००
२६.	,, ऋषिपाल जी आचार्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी	११०१-००
२७.	,, धर्मपाल जी आचार्य गुरुकुल तातारपुर, मेरठ	११०१-००
२८.	,, डा० मोहरसिंह जी नया गाव झज्जर, रोहतक	५०१-००
२९.	,, ब्र० मेधाव्रत जी मेधार्थी शिमली, भिवानी	५०१-००
३०.	,, आजादसिंह पुरुषार्थी खुर्मपुर, रोहतक	१०१-००
३१	, रामतीर्थ शास्त्री गुरावड़ा, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़	१०१-००
३२	,, चन्दूलाल जी वैदिक आश्रम गूगोढ़ महेन्द्रगढ़	१०१-००
३३.	,, राममेहर जी खुंगाई झज्जर, रोहतक	१०१-००
३४.	,, राममेहर जी आर्य भदानी, रोहतक	१०१-००
३५.	,, इन्द्रसिंह जी नीलोठी, रोहतक	१०१-००
३६.	,, वानप्रस्थी महानन्द जी कासण्डी, सोनीपत	२०१-००
३७.	,, रामकुमार जी सिवाना, रोहतक	१०१-००
३८	,, ओम्प्रकाश जी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद	२०१-००
३९.	,, सत्यदेव जी शास्त्री बालन्द, रोहतक	१०१-००
४०.	, रामचन्द्र जी शास्त्री सेरिया, रोहतक	१००-००
४१.	,, धर्मपाल जी शास्त्री माण्डौठी, रोहतक	१०१-००
४२.	,, दयामित्र जी शास्त्री पौली जीन्द	१०१-००
४३.	, हरिदत्त जी उपाध्याय गुरुकुल मटिण्डू	१०१-००
४४.	,, अशोककुमार जी शास्त्री भरथल, दिल्ली	१०१-००
४५.	,, रामदेव जी जीणायचा	१०१-००
४६.	,, जयप्रकाश निदाना, रोहतक	१०१-००
४७.	,, सत्यवीर जी शास्त्री गोरीपुर, भिवानी	५०१-००
४८.	, पं० गोवर्धनलाल जी आर्य कसाला, रोहतक	११०१-००

निवेदक—मन्त्री, स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन समारोह

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ३८११



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १०, अङ्क २० २८ अप्रैल १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु

उग्रवादी अकालियों की अनुचित मांगों के विरोध हेतू सत्याग्रह की तैयारी करें

आपको समाचार पत्रों द्वारा ज्ञात ही होगा कि पंजाब के उग्रवादी अकाली अपनी अनुचित धार्मिक मांगें मनवाने के पश्चात् भी भारत सरकार को धमकियां दे रहे हैं कि (राष्ट्र तथा हरयाणा विरोधी) उन की राजनैतिक मांग भी स्वीकार की जावें। उन्होंने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए "करो या मरो" का नारा लगाकर स्वयसेवकों की एक लाख सेना की भर्ती करने की घोषणा की है।

भारत सरकार अकालियों से समझौता करने के लिये उन्हें पुनः वार्ता का निमन्त्रण दे रही है। सम्भवतः उग्रवादी अकालियों की हिंसक कार्यवाही के दबाव में आकर कभी भी हरयाणा के हितों के विरुद्ध फैसला हो सकता है। अतः इस प्रकार के हो सकने वाले समझौते को रुकवाने तथा संघठित रूप में इसका प्रतिकार (मुकाबला) करने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि हमें भी सत्याग्रह की तैयारी हेतु स्वय सेवकों की भर्ती तुरन्त प्रारम्भ करनी चाहिए।

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी के कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि हरयाणा के हितों का रक्षार्थ सत्याग्रह हेतु स्वयंसेवकों की सूची तैयार करके १५ मई तक दयानन्द मठ रोहतक के पते पर भेजें, ताकि आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त सत्याग्रह पूरी शक्ति से आरम्भ किया जा सके।

आपके सहयोग के इच्छुक

ओमानन्द सरस्वती	प्रा० शेरसिंह	भरतसिंह वानप्रस्थ
संरक्षक	अध्यक्ष	संयोजक

हरयाणा रक्षा वाहिनी दयानन्द मठ रोहतक

कुरुक्षेत्र में आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं महात्मा हंसराज जन्म दिवस आर्य समाज थानेसर (कुरुक्षेत्र) में बड़ी धूमधाम से मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रिंसीपल मेलाराम बर्क ने की। प्रातः यज्ञ-हवन के बाद मुख्य कार्यक्रम में प० चिरंजीलाल जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मधुर भजन हुए। डाक्टर के० सी० यादव कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रीयता आन्दोलन में दिए गए विशेष योगदान को विस्तार से चर्चा की। बालक जितेन्द्र कुमार आर्य ने ऋषि दयानन्द के कार्यों का विवरण देते हुए आर्यसमाज की आवश्यकता पर बल दिया।

आचार्य सत्यप्रिय जी महाराज ने आर्यसमाज व आर्य सिद्धान्तों की विस्तृत एवं स्पष्ट व्याख्या की। प्रिंसिपल मेलाराम बर्क ने अपने अध्यक्षीय भाषण में जनता को महर्षि दयानन्द, महात्मा हंसराज तथा आर्यसमाज के अमर शहीदों से प्रेरणा लेने एव आर्यसमाज के काम को आगे ही आगे बढ़ाने की बात कही। शान्तिपाठ के साथ कार्यवाही को समाप्त करने से पूर्व 'आर्यसमाज क्या है?' लघु पुस्तिका सभी श्रोताओं में वितरित की गई। मन्त्री आर्यसमाज थानेसर

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर पांच लाख व्यक्ति अजमेर पहुचेंगे

देश विदेश से आये पत्रों के अनुसार अब यह निश्चित हो चुका है कि ३ से ६ नवम्बर १९८३ में होने वाली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर ५ लाख से अधिक व्यक्ति अजमेर पहुंच रहे हैं।

सभी आगन्तुकों के निवास व भोजन की व्यवस्था के लिए व्यापक प्रबन्ध किये जा रहे हैं। लाखो व्यक्तियों के निवास भोजन की व्यवस्था स्वागत समिति कर रही है।

कार्यालय में प्राप्त पत्रो से ज्ञात होता है कि महर्षि दयानन्द के सभी अनुयायी अपने महान् गुरु को श्रद्धा सुमन अर्पित करने अजमेर पहुँचने की तैयारियां जोरों से कर रहे हैं। लन्दन, मारिशस, हालैंड, सुरीनाम, फीजी, सिंगापुर, ट्रिनीडाड, चार्टर्ड वायुयानों द्वारा आर्यजन अजमेर पहुँचने के लिए अभी से योजनाएं बना रहे हैं।

अजमेर का यह महोत्सव वैदिक-धर्मियों के लिए कुम्भ के मेले का रूप बन गया है। जिस युगान्तरकारी विचारधारा के प्रसार के लिए महर्षि ने अपने जीवन की लीला अजमेर में समाप्त की थी उसी स्थान मे एक बार फिर नये उत्साह के साथ वैदिक विचार धारा प्रचार का संकल्प लेने सभी हिन्दू वैदिक धर्म अनुयायी अजमेर आ रहे हैं।

सभी आगंतुक महानुभावों को सूचित किया जा रहा है कि वे निवास की सुविधा के लिए अपने आगमन की सूचना व व्यक्तियो की संख्या २ मास पूर्व पत्र लिखकर बता दें।

सारे देश के आर्य नेताओं व धर्मप्रेमी जनों ने स्वागत समिति को अपने सहयोग का आश्वासन दिया है। विदेशी षड्यन्त्रकारी, देशद्रोही विचार धाराओं की चुनौती स्वीकार कर अजमेर पहुंचना आज का राष्ट्रीय [illegible] बन गया है।

महर्षि दयानन्द के निर्वाण के १०० वर्ष पश्चात् एक नये उत्साह से ऋषि की ज्ञान ज्योति को भूमंडल में फैलाने का संकल्प ही शताब्दी का उद्देश्य है।

नयी आशा, उमंग और उत्साह से नयी क्रान्ति का आरम्भ शताब्दी पर होगा यह दृढ़ विश्वास लेकर शताब्दी के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। लाखों व्यक्तियों का विराट् जन-समूह भूमंडल को सत्य-ज्ञान शान्ति का अजस्र अमृत प्रदान करेगा, ऐसा दृढ़ विश्वास है।

श्री करण शारदा
मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर

श्री राम ने कहा था

—रणवीर शास्त्री विद्याभास्कर, एम० ए०, सह-सम्पादक

(गतांक से आगे)

सीता जी द्वारा वन में साथ चलने के जोरदार आग्रह को स्वीकार कर वन में साथ चलने की स्वीकृति देते हुये उन्होंने कहा था—'पहले काल के सज्जन जैसा धर्माचरण कर गये हैं, मैं भी वैसा ही आचरण करूंगा और तू भी कर। साथ के पाश में बन्धा पिता की आज्ञा पालनार्थ ही मैं वन जा रहा हूं। माता-पिता की आज्ञा मानना ही पुत्र के लिए धर्म है। मैं उनकी आज्ञा का उल्लंघन करना उचित नहीं समझता। माता-पिता और आचार्य की आराधना से तीनों लोकों की आराधना होती है। संसार में इससे बढ़कर और कोई पवित्र वस्तु नहीं है। मनुष्य के लिए सत्य, दान, मान और दक्षिणा सहित यज्ञ वैसे हितकर नहीं हैं जैसी माता-पिता की सेवा। माता-पिता की सेवा करने वाले मनुष्य के लिए स्वर्ग, धन-धान्य, विद्या, पुत्र और सुख—कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं होती।'

वन गमन से पूर्व श्री राम सीता और लक्ष्मण सहित पिता का आशीर्वाद प्राप्त करने गये तो राजा दशरथ को अत्यन्त शोक विह्वल और दुःखी देखा। उस समय पिता के अत्यन्त आग्रह पर भी श्री राम अपने दृढ निश्चय से विचलित नहीं हुये। उन्होंने आर्त्त पिता की सेवा में कातर स्वरों में निवेदन किया—'हे महाराज! मैं न राज्य चाहता हूं, न सुख, न मुझे सीता की इच्छा है और न राजभोगों की। मैं स्वर्ग भी नहीं चाहता। यहां तक कि मैं अपना जीवन भी नहीं चाहता। मैं तो केवल आपको सत्यवादी देखना चाहता हूं, मिथ्यावादी नहीं। आप देवता स्वरूप हैं। यह बात मैं आपके समक्ष सत्य और धर्म की शपथ खाकर कहना चाहता हूं। मैं अब यहां एक क्षण भी नहीं रह सकता। अतः आप धैर्य धारण करें, मेरा संकल्प अब बदल नहीं सकता।' इतना कह श्री राम सीता और लक्ष्मण सहित वन को चले गये। भरत को राज्य-कार्य के संचालन हेतु ननिहाल से बुलाया गया। उनके आगमन से पूर्व ही दशरथ का देहान्त हो चुका था। राम के वन चले जाने का हृदय विदारक समाचार सुनते ही भरत अवाक् रह गये। उन्होंने उसी समय श्री राम को सादर वापस लाने के लिए वन जाने की घोषणा कर दी। तीनों माताओं सहित अधिकारियों व कर्मचारियों का एक लम्बा लश्कर भरत के पीछे हो लिया। मार्ग की उड़ती हुई धूल को देखकर युद्ध करने के लिये ही भरत आ रहा है, ऐसी शंका कर लक्ष्मण के अत्यन्त क्रुद्ध हो युद्ध करने और भरत को मार देने के लिये उद्यत देख श्री राम ने कहा था—बन्धु-बान्धवों और इष्ट मित्रों का वध करके जो धन प्राप्त हो, मैं उसे ग्रहण नहीं कर सकता। मैं उसे विष मिश्रित भोजन सदृश त्याज्य समझता हूं। हे लक्ष्मण! मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि धर्म, अर्थ, काम और पृथिवी को अपने भाइयों के लिये ही चाहता हूं। हे लक्ष्मण! मैं अपने हथियारों को स्पर्श कर सत्य कहता हूं कि मैं राज्य की कामना भी भाइयों के पालन और सुख के लिये ही करता हूं। हे सौम्य! समुद्रों से घिरी इस पृथिवी का राज्य प्राप्त करना मेरे लिये दुर्लभ नहीं है पर मैं अधर्म से तो इन्द्र पद भी प्राप्त करना नहीं चाहता।'

भरत के वनागमनोपरान्त श्री राम ने प्रजा के कुशल समाचार जानने के अनन्तर राज्य रूपी ऊढ़ गुरु भार रूप दायित्व के कुशलता पूर्वक सम्पादन की जिज्ञासा प्रकट करते हुये राजा के लिये जानने योग्य कूटनीति विषय पर भरत से पूछा था—'हे तात! तुम विद्वान्, रक्षक, नौकर गुणी, पितृ, तुल्य वृद्धजन, वैद्य और ब्राह्मण—इनका सत्कार तो करते हो? तुम बाण और शस्त्र विद्या में निपुण और अर्थ शास्त्रज्ञ, धनुर्वेदाचार्य सुधन्वा का आदर तो करते हो? क्या तुमने अपने समान विश्वसनीय और नीति-शास्त्रज्ञ, लोभ रहित, उत्तम कुलोत्पन्न और संकेत समझने वाले व्यक्तियों को मन्त्री बनाया है? क्योंकि मंत्रणा को धारण करने वाले नीतिशास्त्र विशारद मन्त्रियों द्वारा गुप्त रखी गई मंत्रणा ही राजाओं के विजय का मूल होती है। तुम निद्रा के वशीभूत तो नहीं होते? यथा समय उठ तो जाते हो? रात्रि के पिछले प्रहर में अर्थ की प्राप्ति के उपायों का चिन्तन तो करते हो? तुम अकेले तो किसी बात का निर्णय नहीं कर लेते, अथवा तुम बहुत सारे लोगों में बैठकर तो विचार-विमर्श नहीं करते? तुम्हारा विचार कार्य रूप में परिणत होने से पूर्व दूसरों को विदित तो नहीं हो जाता? मन्त्रियों के साथ किये गये गुप्त निश्चयों को दूसरे लोग तर्क व युक्ति से जान तो नहीं लेते? तुम और तुम्हारे मन्त्री अन्यों के गुप्त रहस्यों का ज्ञान तो लेते हैं न? अल्प प्रयासों से सिद्ध होने वाले और महान् फलप्रद कार्य को करने का निश्चय कर तुम उसे शीघ्र प्रारम्भ कर देते हो न? उसे पूर्ण करने में विलम्ब तो नहीं करते? तुम हजार मूर्खों की अपेक्षा एक बुद्धिमान परामर्शदाता को अच्छा समझते हो न? संकट के समय बुद्धिमान व्यक्ति महान् कल्याण करता है। तुम उत्तम, मध्यम और साधारण भृत्यों को उनकी योग्यता के अनुसार ही कामों में लगाते हो न? क्या तुम धर्म, अर्थ, काम में सुपरीक्षित, कुलपरम्परा से प्राप्त, पवित्र और श्रेष्ठ व्यक्तियों को ही मन्त्री पद पर नियुक्त करते हो? तुम्हारे राज्य में उग्र-दण्ड से उत्तेजित प्रजा तुम्हारा अथवा तुम्हारे मन्त्रियों का अपमान तो नहीं करती? जिस प्रकार स्त्रियां पर स्त्री गामी पति का तिरस्कार करती हैं अथवा जैसे यज्ञ कर्म से हीन व्यक्ति का मजाक निरादर करते हैं, उसी प्रकार अधिक कर लेने से प्रजा तुम्हारा अपमान तो नहीं करती? उपाय कुशल वैद्य को, कर्त्तव्य पालक भृत्य को और ऐश्वर्य अभिलाषी शूर को जो राजा मार देता है—वह स्वयं मारा जाता है। क्या तुमने व्यवहार कुशल, शूर, बुद्धिमान, धीर पवित्र, कुलीन, स्वामी-भक्त और कर्मकुशल व्यक्ति को अपना सेनापति बनाया है? तुम्हारी सेना में जो अत्यन्त बलवान्, युद्ध विद्या निपुण, सुपरीक्षित और पराक्रमी सैनिक है, तुम उन्हें पुरस्कृत और सम्मानित तो करते हो? तुम सैनिकों को उनके कार्यानुरूप भोजन और वेतन उचित परिमाण और उचित काल में यथासमय देते हो न? क्षत्रिय कुलोत्पन्न भृत्य लोग तुम्हारे प्रति अनुराग तो रखते हैं न? क्या समय आने पर वह तुम्हारे लिए अपने प्राण न्यौछावर करने को तैयार तो रहते हैं? अपने राज्य में उत्पन्न दूसरों के अभिप्राय को समझने वाले, उत्तम बुद्धियुक्त, ठीक प्रकार सन्देशवाहक विद्वान् को तो तुमने अपना दूत बनाया है? हे भरत! तुम परस्पर अनभिज्ञ, तीन तीन गुप्तचरों द्वारा राज्य के पन्द्रह व पर-राज्य के अठारह तीर्थ अर्थात् महत्त्वपूर्ण और उच्चपदस्थ व्यक्तियों के चरित्र व गुप्त रहस्य जानते हो न? पराजित और भगाये गये शत्रुओं के किसी प्रकार पुनः राज्य में लौट आने पर तुम उन्हें दुर्बल समझ उनकी उपेक्षा तो नहीं करते? तुम नास्तिक ब्राह्मणों की संगति तो नहीं करते? अपने को पण्डित समझने वाले ये मूर्ख धर्मानुष्ठान से लोगों का चित्त हटाकर नरकगामी बना देते हैं। पापी लोगों से रहित, हमारे पूर्वजों द्वारा सुरक्षित और समृद्ध कोसल देश सुखी तो है? कृषि, गोरक्षा आदि में संलग्न समस्त प्रजाजन सुखी तो है? व्यवसाय में नियुक्त रहकर ही वैश्यगण धन-धान्य से युक्त तो हैं? तुम उन्हें इष्ट वस्तु प्रदान कर उन के अरिष्टों को दूर कर उनका भरण-पोषण तो करते हो न? तुम हाथी-हथिनियों और घोड़ों आदि पशुओं का ठीक प्रकार पालन-पोषण तो करते हो न? कहीं इनके लाभ से तुम तृप्त तो नहीं होते? हे राज पुत्र! तुम प्रतिदिन प्रातः उठकर और सब प्रकार से सुभूषित हो दोपहर से पहले सभा में जाकर प्रजाजनों से मिलते हो या नहीं? तुम्हारे भृत्य तुम्हारे सामने से सदा निर्भय होकर तो नहीं चलते? अथवा डर के मारे तुम से दूर तो नहीं रहते? तुम्हारे सब दुर्ग धन-धान्य, अस्त्र-शस्त्र, जल, यन्त्र, शिल्पी और धनुर्धारियों से पूर्ण तो हैं न? तुम्हारी आय अधिक और व्यय न्यून तो है न? तुम्हारे कोष का धन अपात्रों के लिये खर्च नहीं होता? तुम्हारा धन विद्वान्, रक्षक वर्ग, अभ्यागत, योद्धा और मित्रों पर ही तो व्यय होता है न? जब विशुद्धात्मा, पवित्र श्रेष्ठ व्यक्ति मिथ्या, चोरी आदि अपराधों के कारण न्यायालय में उपस्थित किये

(शेष ५ पर)

सम्पादकीय

स्वामी ओमानन्द का बोलबाला

स्वामी ओमानन्द जी आर्यसमाज की अनन्यतम विभूति हैं। यदि यह कह दिया जाए कि चलती-फिरती संस्थाओं का समूह आप हैं तो इसमें अतिशयोक्ति न होगी। तप, त्याग और भारतीयता के प्रति इनके समर्पण को कौन नहीं जानता। सत्य तो यह है कि स्वामी जी महाराज का एक-एक श्वास देश और धर्म की उन्नति के लिए समर्पित है। इनके विविध लोकोपकारी कार्यों और बहुमुखी प्रतिभा को देखकर सिर का इनके प्रति सादर झुक जाना स्वाभाविक है।

सम्भ्रान्त पिता के अकेले पुत्र आप हैं। जीवन ठाठ से जीने के लिये सब प्रकार की सामग्री घर में उपलब्ध थी। आराम से जीने की प्रेरणा देने वाली कालेज की पढ़ाई भी पर्याप्त पढ़ ली थी, किन्तु लक्ष्य तो जन-सेवा बन चुका था जिससे यह सब कुछ बाधक प्रतीत होने लगा। यौवनावस्था में आजीवन ब्रह्मचारी रहकर जनसेवा का दुस्साध्य व्रत ही न केवल आपने लिया प्रत्युत अनेक विघ्नों के उपरान्त आज भी उस व्रत का कठोर साधनापूर्वक पालन कर रहे हैं। आधुनिक शिक्षा पद्धति से निकले नवयुवक का पाणिनी की ओर श्रद्धाभाव से आकृष्ट होना कुतुहलमिश्रित श्रद्धा को उत्पन्न कर रहा है। राष्ट्र हित में शिक्षा की गुरुकुलीय पद्धति को ही सर्वोत्तम जानकर कुल-परम्परा से प्राप्त अशेष सम्पत्ति के द्वारा गुरुकुल झज्जर एवं कन्या गुरुकुल नरेला को पुष्ट किया और स्वयं बन गये भिक्षुक। इन दोनों संस्थाओं का शिक्षा जगत् को विशेष योगदान सदा अविस्मरणीय रहेगा।

शिक्षा का इतिहास से घनिष्ठ सम्बन्ध है। दुर्भाग्य से हमारे इतिहास का आज कोई भी सूत्र किसी क्रम में उपलब्ध नहीं है। इस महान् शिक्षा शास्त्री का ध्यान इस ओर कैसे न जाता। गाँव-गांव और खेड़ों की खाक छानकर उपलब्ध प्राचीन मुद्राओं आदि से इतिहास का पुनर्मूल्यांकन प्रारम्भ किया। गुरुकुल झज्जर में इनके द्वारा स्थापित पुरातत्व संग्रहालय इतिहास की बिखरी कड़ियों को पुन: जोड़ने के लिये किये गये कार्य का मुँह बोलता चित्र है। आर्यजगत् के पास सौभाग्य से आपके रूप में एक ऐसा इतिहासवेत्ता आज के दिन विद्यमान हैं जिसकी न केवल स्वदेशी इतिहास विदों में अपितु विश्व के इतिहास पण्डितों में गणना होती है। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास गोष्ठियो में सादर आमन्त्रित किया जाना तथा आपका उनमे सम्मिलित होकर प्रतिनिधित्व करना इसका प्रमाण है।

सेवा क्षेत्र को कौनसी ऐसी दिशा है जहां स्वामी जी महाराज ने शिविर लगाकर कार्य न किया हो। सत्य तो यह है कि जबसे इस क्षेत्र में आप प्रविष्ट हुए तभी से आर्यसमाज द्वारा चलाये गये प्रत्येक आन्दोलन में नीति निर्माता एवं प्रेरणा स्रोत आप रहे। एक सच्चे आर्य के रूप में स्वाधीनता संग्राम और उसमें भी विशेषकर क्रान्तिकारियों द्वारा चलाई जा रही हर गतिविधि में आपका किसी न किसी रूप में हाथ रहा है।

भाग-दौड़ भरा जीवन और परिणाम रूप में दुर्घटनाओं का अनेक बार शिकार हुये श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ने व्यस्तता में भी समय येन-केन-प्रकारेण निकालकर ५० से ऊपर पुस्तकें ब्रह्मचर्य, समाजसुधार, इतिहास, जीवन-चरित्र एवं आयुर्वेदादि अनेक विषयों पर लिखकर धर्मवीर पं० लेखराम जी के आदेश का भरपूर पालन किया है। मौखिक प्रचार तो स्वदेश में ही नहीं अपितु अनेक बार विदेशों में भी किया है। आपने देश का तो शायद ही कोई भूखण्ड ऐसा बचा हो जहां स्वामी जी महाराज के चरण इस निमित्त एकाधिक बार न पड़े हों। आप एक कुशल वैद्य हैं। आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ गुरुकुल झज्जर में आर्य रसायनशाला की स्थापना आपने की तथा सहस्रों द्रुतगति से मृत्यु का ग्रास बनते जा रहे रोगियों को नवजीवन दान आपसे मिला है।

इस महान् शिक्षा शास्त्री, महावैद्य, विद्वान् लेखक, प्रकाशक, इतिहास पुरातत्व विशेषज्ञ एवं गवेषक का प्रान्तीय और राष्ट्रीय सरकार ने तो विशिष्ट पुरस्कारों द्वारा अनेक बार सम्मान किया है किन्तु अद्भुत वाग्मी, अत्यन्त उत्साही, सतत उद्यमी, कठोर परिश्रमी, पराक्रमी, ब्रह्मचर्य तेजोयुक्त, ईश्वर-विश्वासी, योगाभ्यासी, राष्ट्रप्रेमी, क्रान्तिकारी ऋषि भक्त, जनमानसक्लेशापाहन्ता, अहर्निशयायावरवृत्तिवासी, निर्लोभी, त्यागी, तपस्वी, मनस्वी, प्राचीन भारतीय शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति अडिग आस्थावान् और विशेषकर वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रति पूर्णत: समर्पित ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारी संस्था आर्यों की शिरोमणि परोपकारिणी सभा के प्रधान श्रद्धेय श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के प्रति आर्य जगत् का भी कुछ कर्त्तव्य है जिसे आर्यों ने हृदय से अनुभव कर १५ मई को कन्या गुरुकुल नरेला के रजत जयन्ती महोत्सव पर उन्हें अर्घ्य प्रदान करने का आयोजन किया है जिसमें जिस रूप से भी कोई सम्मिलित हो सके उसी रूप में प्रत्येक पुरातन भारतीयता में विश्वास रखने वाले का उपस्थित होना कर्त्तव्य बनता है। आइये ! इस पवित्र आयोजन में सम्मिलित होकर अपने बुजुर्ग का वैदिक श्राद्ध सम्पन्न करते हुए मंगल-मूल-महेश से उनके दीर्घ आयुष्य एवं सुस्वास्थ्य की याचनाकर स्वयं को लाभान्वित करें।

—रणवीर

उग्रवादी अकालियों की धमकियों के आगेसरकार न झुके—

प्रो० शेरसिंह की केन्द्रीय नेताओं से भेंट

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी, विदेशमन्त्री श्री नरसिंह राव से भेंट करके मांग की है कि पंजाब के उग्रवादी अकालियों ने जो हिंसक कार्यवाही आरम्भ कर रखी है, उससे प्रभावित होकर भारत सरकार उनकी अनुचित मांगें किसी भी अवस्था में स्वीकार न करें और उनके सामने झुककर कोई समझौता न करे। आपने स्पष्ट किया कि उनके साथ राजनीतिक मांगों के सम्बन्ध में किये गये समझौते का विपरीत प्रभाव हरयाणा पर सबसे अधिक पड़ेगा।

प्रो० शेरसिंह ने भारत सरकार को सावधान करते हुए कहा कि हरयाणा के हितों के विरुद्ध किये गये समझौते को हरयाणा की वीर जनता कदापि सहन नहीं करेगी। आपने भारत सरकार को परामर्श दिया है कि उग्रवादी एवं राष्ट्र विरोधी अकालियों के साथ सख्ती से निपटा जावे। हिंसक अपराधियों को गुरुद्वारों से बाहर निकालने का कार्य सेना को सौंपा जावे। पंजाब में कानून व्यवस्था ठप हो रही है। अकालियों ने डी० आई० जी० पुलीस जैसे महत्त्वपूर्ण अधिकारी को हत्या करके सिद्ध कर दिया है कि दरबार साहेब अमृतसर उग्रवादी अकालियों की छावनी है। यह भारत सरकार को उनकी खुली चेतावनी है।

प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान तथा महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री ने हरयाणा की जनता को संगठित करने तथा अकालियो की धमकी का प्रतिकार करने की तैयारी के लिए हरयाणा का तूफानी दौरा आरम्भ कर दिया है। २६ अप्रैल को आर्यसमाज मन्दिर सोनीपत शहर में आर्य कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक में प्रो० शेरसिंह ने १५ मई तक सत्याग्रह के लिए स्वयंसेवकों की सूची तैयार करके कार्यालय में भेजने का निर्देश दिया। सोनीपत के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों ने सभा को तन-मन-धन से सहयोग करने का वचन दिया है।

इसी प्रकार प्रो० शेरसिंह तथा महाशय भरतसिंह २७ अप्रैल को कुरुक्षेत्र २८ अप्रैल को कैथल तथा ३० अप्रैल को गुड़गाव में आर्यसमाज तथा रक्षा वाहिनी के कार्यकर्त्ताओं की बैठकों में पधार कर हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु सत्याग्रह की तैयारी करेंगे।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यसमाज की गतिविधियां—

आर्यसमाज गऊकरण तालाब रोहतक

आर्यसमाज गऊकरण तालाब रोहतक द्वारा छात्रों में धार्मिक शिक्षा एवं चरित्र निर्माण हेतु वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया गया है। इसमें ६५०) के लगभग इनाम भी दिये जावेंगे। परीक्षा पाठ्यक्रम में आर्योद्देश्य रत्नमाला, आर्यसमाज के दस नियम, व्यवहारभानु तथा सत्यार्थप्रकाश सम्मिलित हैं। परीक्षा हेतु नामांकन के लिए ३० जून तक ब्र० कृष्णदेव जी नैष्ठिक दयानन्द मठ रोहतक से सम्पर्क करके छात्र लाभ उठावें।

आर्यसमाज चबूतरों जिला अम्बाला—

आर्यसमाज चबूतरों जि० अम्बाला के मन्त्री श्री मामचन्द आर्य की सुपुत्री जरनैलो देवी का शुभ विवाह ताहरपुरकलां निवासी श्री रणजीतसिंह के सुपुत्र श्री धर्मपाल के साथ वैदिक रीति के अनुसार २९ मार्च को सम्पन्न हुआ। पं० ज्योति स्वरूप आर्य ने विवाह संस्कार बहुत ही प्रभावशाली ढंग से करवाया।

आर्यसमाज मडलोडा जि० करनाल—

आर्यसमाज मडलोडा जिला करनाल का ७ वां वार्षिकोत्सव ८, ९ अप्रैल को मनाया गया। इस अवसर पर वानप्रस्थी आर्य देव मस्ताना, वैद्य मंगलदेव, श्री विक्रमसिंह भजनोपदेशक आदि के भजन हुए तथा यज्ञ पर यज्ञोपवीत देकर वैदिक शिक्षा दी गई। उत्सव पर ही आंखों के मुफ्त आप्रेशन के लिए शिविर भी लगाया गया।

आर्यसमाज रैजमैण्ट बाजार अम्बाला छावनी—

आर्यसमाज रेजमैण्ट बाजार अम्बाला छावनी के वार्षिक उत्सव ८ से १० अप्रैल पर पं० श्यामसुन्दर स्नातक, पं० धर्मचन्द्र विद्यालंकार एम० ए० सभा उपदेशक के वेद प्रवचन तथा पं० बनारसीदास एवं पं० महेन्द्रपाल के संगीत हुए। हरयाणा के स्वशासन मन्त्री ए० सी० चौधरी तथा स्थानीय विधायक भी इस अवसर पर पधारे।

आर्यसमाज साबापुर जिला अम्बाला—

आर्यसमाज साबापुर जिला अम्बाला का उत्सव १८, १९, २० मार्च को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सदानन्द जी, आचार्य देवव्रत जी के उपदेश तथा प० हरलाल, पं० बनारसीलाल, पं० शेरसिंह जी के प्रभावशाली भजन हुए। ग्राम के सरपंच श्री सावनराम की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। इस उत्सव में निकट के ग्रामों बाबरपुर, फतेहपुर, किशनपुरा माजरा, मन्धार आदि से भारी संख्या में आर्य नरनारी सम्मिलित हुए।

आर्यसमाज सांघी जि० रोहतक—

आर्यसमाज सांघी जिला रोहतक में २-३ अप्रैल को वार्षिक उत्सव के अवसर पर चौ० ईश्वरसिंह के सुयोग्य शिष्य श्री सत्यवीरसिंह तथा सभा के भजनोपदेशक पं० मुन्शीलाल, पं० सुमेरसिंह के प्रभावशाली भजन हुए।

उत्सव पर ही यौगिक प्रदर्शन का भी आयोजन किया गया, जिस में श्री देवमूर्ति जी तथा डा० बलबीरसिंह व उनके सुयोग्य शिष्य ब्र० ओमदर्शन ने प्रभावशाली ढंग से यौगिक प्रदर्शन यथा योगासन, रेचक, कुम्भक, चार सूत का सरिया ग्रीवा से मोड़ना, नाड़ी रोकना, हथेली से कांच पीसना, पीतल की थाली फाड़ना आदि अनेक क्रियाएं उल्लेखनीय रहीं।

आर्यसमाज आहूलाना जि० सोनीपत—

आर्यसमाज के २३ वें वार्षिक उत्सव २२-२३ मार्च पर आचार्य विष्णुमित्र जी के विद्वता पूर्ण व्याख्यान तथा पं० शोभाराम प्रेमी, पं० ईश्वरसिंह तूफान व पं० मुन्शीलाल, सुमेरसिंह की मण्डली के भजन हुए। यज्ञ पर यज्ञोपवीत दिए गए।

वैदिक आश्रम गुगोढ जि० रोहतक—

२८ मार्च को वार्षिक उत्सव पर स्वामी शरणानन्द जी की अध्यक्षता में यज्ञ तथा प्रवचन हुए। दोपहर बाद ब्र० विजयपाल गुरुकुल झज्जर द्वारा व्यायाम प्रदर्शन राव रंग राव खण्ड विकास अधिकारी की अध्यक्षता में हुआ। ग्राम की जनता ने भारी संख्या में सम्मिलित होकर सत्सग का लाभ उठाया।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र—

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ७१ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ८, ९, १० अप्रैल को कुलभूमि में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। उत्सव से पहले आर्य वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर व योग शिविर से उत्सव की गौरव-भूमिका २० दिन पहले से ही बनने लगी थी डा० देवव्रत आचार्य का सुयोग्य नेतृत्व व कार्य शैली ने सभी कुलवासियों में उत्सव के प्रति नये उत्साह का सचालन कर दिया। चौ० सत्यदेवसिंह प्रधान गुरुकुल की प्रेरणा ने जहां उत्सव को क्रियात्मक रूप दिया। वहां उत्सव की समाप्ति तक सभी कार्यकर्ताओं को आन्दोलित भी किया। कार्य के प्रति जागरूकता प्रधान जी का मुख्य ध्येय रहता है।

उत्सव का प्रारम्भ कुरुक्षेत्र जिले के अतिरिक्त पुलीस अधिक्षक श्री निवास शर्मा ने ध्वजारोहण से किया। ध्वजारोहण के समय ब्रह्मचारियों द्वारा बजाई जाने वाली धुनों ने उपस्थित जनसमूह को आन्दोलित किया। दोपहर बाद विशाल शोभायात्रा जिसमें सबसे आगे गुरुकुल के मुख्य संरक्षक ब्र० धर्मदेव विद्यार्थी ओ३मध्वज उठाये व केसरिया पगड़ी में घोड़े पर सवार थे। उसके बाद विभिन्न प्रान्तों से आये आर्यवीर लाठी का सुन्दर प्रदर्शन कर रहे थे। बच्चों द्वारा लेजियम व बैण्ड के प्रदर्शन की शहर वालों ने खूब सराहना की। शोभा यात्रा में विभिन्न झांकियां ट्रकटरों व रेहड़ों पर थी। शोभायात्रा का नेतृत्व किया अधिष्ठाता श्री हंसराज जी कपूर और संचालन डा० देवव्रत जी आचार्य ने किया।

९ अप्रैल यज्ञ के उपरान्त विभिन्न गुरुकुलों से आये ब्रह्मचारियों की भाषण प्रतियोगिता में प्रथम हिन्दू स्कूल सोनीपत व बलविजयी-पहार विजेता रहा तथा द्वितीय गुरुकुल कुरुक्षेत्र व तृतीय गुरुकुल इन्द्र-प्रस्थ रहे। इसका सफल सचालन ब्र० धर्मदेव जी ने किया।

१० अप्रैल को गऊ प्रदर्शनी समारोह महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता में हुआ जिसमें श्री प्रेमकुमार गोयल हरयाणा मिल्क फूडज ने पुरस्कार वितरण किया। यह प्रदर्शनी तीनों दिन चली। इस बार इसमें ऐसी गाय आकर्षण रही जो बिना ब्याये दूध देती है। इसका संचालन श्री दयालसिंह ने किया। अपराह्न स० तारासिंह अध्यक्ष हरयाणा विधान सभा ने पारितोषिक वितरण करते हुए गुरुकुल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। भयंकर तूफान व वर्षा के बावजूद भी डा० देवव्रत आचार्य ने योग सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने पुरस्कार वितरण किया और डा० रामप्रकाश प्रो० वायसचांसलर का व्याख्यान हुआ। तीनों दिन स्वामी रुद्रदेव जी और हरयाणा सभा की भजन मण्डलियों ने अपने क्रान्तिकारी भजनों द्वारा धूम मचाई। उत्सव पर आचार्य सत्यप्रिय हिसार, ब्र० सत्यप्रिय लाडवा, चौ० विशनसिंह एडवोकेट आदि के भी व्याख्यान हुए।

शहर में इस बार चर्चा हैं कि ऐसी शोभायात्रा व वार्षिकोत्सव वर्षों बाद गुरुकुल में देखने को मिला है। वास्तव में इस उत्सव ने अनेकों निराश दिलों में आशा की किरण जगाई है। इसमें चौ० सत्यदेवसिंह प्रधान, डा० देवव्रत आचार्य इन्जिनियरिंग कालेज कुरुक्षेत्र के छात्रों तथा समस्त स्टाफ का सहयोग सराहनीय रहा।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती के अभिनन्दन हेतु दान-दाताओं की सूची

(पृष्ठ ८ का शेष)

५० प्रो० सत्येन्द्रपाल वर्मा आर. के. कालेज शामली	५१)
५१ श्री धर्मवीरसिंह बालियान गोयला ,,	१०१)
५२ ,, वेदसिंह ,, ,,	१०१)
५३ ,, ओमपालसिंह ,, ,,	१०१)
५४ ,, महीपालसिंह ,, ,,	१०१)
५५ ,, जबरसिंह राठी ,, ,,	१०१)
५६ ,, धर्मपालसिंह ,, ,,	१०१)
५७ ,, पलटूसिंह ,, ,,	१०१)
५८ ,, सुरेन्द्रसिंह सु. झनकसिंह ,, ,,	१०१)
५९ ,, कदमसिंह ,, मुजफ्फरनगर	१०१)
६० ,, जयचन्द सु. रणजीतसिंह ,,	१०१)
६१ ,, कलीराम सु. हरवंशसिंह ,,	१०१)
६२ श्रीमती सुषमा जी गुरुकुल कागड़ी	१०१)
६३ ,, करुणादेवी राजकीय उच्च विद्यालय बालसमन्द	१०१)
६४ ,, चन्द्रप्रभा बवाना दिल्ली–३९	१०१)
६५ कुमारी वेदप्रभा जी शास्त्री बोहर	१०१)
६६ श्रीमती विद्यावती रावलधी, दादरी	१०१)
६७ ,, यशोदा देवी जयपुर	१०१)
६८ श्री म० भरतसिंह जी सभामन्त्री दयानन्द मठ रोहतक	१०१)
६९ ,, राममेहर जी एडवोकेट रोहतक	१०१)
७० ,, आचार्य हरिश्चन्द्र जी फरमाणा रोहतक	१०१)
७१ ,, चौ० देवेन्द्रसिंह दलाल रोहतक	१०१)
७२ ,, सत्यवीरसिंह शास्त्री माडल टाउन रोहतक	१०१)
७३ ,, ब्र० रामवीर कन्साला रोहतक	१०१)
७४ ,, पं० चन्दराम रामपुरा दिल्ली	१०१)
७५ ,, म० गुरदत्त जी हरियाणा कोच बाडी बिल्डर रोहतक	१०१)
७६ श्रीमती राजेश्वरी स्नातिका	१००)
७७ ब्र० यशोदा कुमारी सु० सेवाराम जी मुरादाबाद	१०१)
७८ ब्र० सुषमा कुमारी ,, ,,	१०१)
७९ श्रीमती कृष्णा मातनहेल रोहतक	१०१)
८० श्री धर्मपाल शास्त्री हरियावाला नैनीताल	१०१)
८१ चौ० जगवीरसिंह भोगपुर बुलन्दशहर	१०१)
८२ प्रो० सेवाराम जी मुण्डेढ़ सहारनपुर	१०१)
८३ श्री गोविन्दसिंह चोटीपुरा मुरादाबाद	१०१)
८४ ,, कु० गंगाप्रसाद आर्य सरकड़ी मुंडी मुरादाबाद	१०१)
८५ चौ० रामस्वरूप भवालपुर बांसली ,,	१०१)
८६ श्री रामदास जी आर्य आनन्दपुर बरेली	१०१)
८७ चौधरी परमसिंह धामपुर मुरादाबाद	१०१)
८८ श्री मा. वीरसिंह ,, ,,	१०१)
८९ ,, निरजनसिंह प्रधानाचार्य सरकड़ी मुंडी मुरादाबाद	१०१)
९० ,, कृपालसिंह ड्योढ़ी मुरादाबाद	५१)
९१ चौधरी धर्मपालसिंह धामपुर मुरादाबाद	१०१)
९२ श्रीमती श्यामादेवी जगाधरी यमुनानगर	१०१)
९३ श्री धर्मपाल शास्त्री भाण्डवा भिवानी	१०१)
९४ ,, रणवीरसिंह शास्त्री गढीबोहर रोहतक	१०१)
९५ ,, मा० रामफल नूनामाजरा रोहतक	१०१)
९६ ,, नरेन्द्रकुमार जी बम्बई	१०१)
९७ ,, यज्ञवीरसिंह शास्त्री किसरैंटी रोहतक	१०१)
९८ ,, सत्यव्रत शास्त्री मकड़ौली कलां ,,	१०१)
९९ ,, धर्मवीर एडवोकेट बारड़ा भिवानी	१०१)
०० ,, वेदपाल शास्त्री कंवाली सोनीपत	१०१)
०१ ,, वीरसेन शास्त्री मावन रोहतक	१०१)
०२ ,, जयप्रकाश शास्त्री निदाणा रोहतक	१०१)

[क्रमशः]

(पृष्ठ २ का शेष)

जाते हैं तब तुम्हारे वकील उनसे जिरह किये बिना ही, लालच में फंस उन्हें दण्ड तो नहीं दिला देते ? चोरी करते हुए पकड़े गए चोर जिसके पास चोरी का सामान भी मिला है—क्या रिश्वत के लोभ से उन्हें छोड़ तो नहीं दिया जाता ? धनी और निर्धन का झगड़ा होने पर तुम्हारे बहुश्रुत अधिकारी लोभ-रहित हो न्याय करते हैं न ? मिथ्या अपराधों के कारण दण्डित व्यक्ति के आंसू अपने भोग-विलास में आसक्त राजा के पुत्र और पशुओं का नाश कर डालते हैं। तुम वृद्ध, बालक, वैद्य और मुखिया लोगों को इष्ट वस्तु प्रदान कर, स्नेहपूर्ण व्यवहार और आश्वासन युक्त वचनों से प्रसन्न तो रखते हो न ? तुम धर्मानुष्ठान के समय को अर्थोपार्जन में और अर्थोपार्जन के समय को धर्मानुष्ठान में तो नष्ट नहीं कर देते ? अथवा काम वासना में फंस दोनों कर्त्तव्यों का समय तो नहीं गंवा देते ? धर्म, अर्थ और काम का विभाग कर सबका यथासमय अनुष्ठान तो करते हो न ? तुम एक ही काम में तो सारा समय नहीं बिता देते हो ? देखो ! राजा के चौदह दोष हैं--नास्तिकता, असत्य भाषण, क्रोध, प्रमाद, दीर्घ सूत्रता, सज्जनों से न मिलना, आलस्य, इन्द्रिय परवशता, मन्त्रियों की अवहेलना कर स्वयं ही सब निर्णय करना; अशुभ चिन्तकों से परामर्श, निश्चित कार्यों को आरम्भ न करना रहस्यों को प्रकट कर देना, मंगल कृत्यों का त्याग, सब शत्रुओं पर एक साथ आक्रमण, नीच-ऊँच सबके लिए खड़े हो जाना–इन चौदह राज दोषों का तुमने त्याग कर दिया है न ? हे भरत ! तुम दशवर्ग, पंचवर्ग, चतुवर्ग, सप्तवर्ग, अष्टवर्ग, त्रिवर्ग, तीनों विद्याएं, इन्द्रिय विजय, षड्गुण, देवमनुष्य सम्बन्धी आपत्तियाँ, राजकृत्य, विंशतिवर्ग, प्रकृति तथा मंडल यात्रा विधान और सन्धिविग्रह इन सबको हेय उपादेय रूप से जानते हो न ? क्या तुम नीतिशास्त्र के अनुसार तीन-चार मन्त्रियों को एकत्र करके एक साथ अथवा पृथक्-२ विचार उनके साथ करते हो ? क्या तुम अग्निहोत्रादि कर वेदाध्ययन करते हो? दान-भोग द्वारा क्या तुम अपना धन सफल करते हो ? हे भरत ! इस प्रकार धर्मानुकूल दण्डधारी, नीति-निष्ठ राजा-प्रजा पालन करता हुआ राजा ही स्वर्ग को प्राप्त होता है।

स्व० महाशय हुकमचन्द स्मृति दिवस



आर्यसमाज डबवाली मण्डी जि० सिरसा के कर्णधार महाशय हुकमचन्द जी का ३-३-८३ को स्वर्गवास हो गया था। उनका स्मृति दिवस २०-३-८३ को श्रद्धापूर्वक मनाया गया। डबवाली तथा निकट के ग्रामों से भारी संख्या में आर्य कार्यकर्त्ता इस अवसर पर सम्मिलित हुए। यज्ञ के पश्चात् उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलियां देते हुए उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का संकल्प किया गया।

इस अवसर पर उनके परिवार की ओर से आर्यसमाज डबवाली, आर्य विद्यामन्दिर डबवाली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के श्री सिद्धान्ती स्मारक के लिए १०१ रुपये का दान दिया गया।

चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी

सिद्धान्ती भवन के लिये दान

चौ० वेदमित्र जी की सुपुत्री श्रीमती सुमेधा देवदत्त डबास ग्राम सुलतानपुर डबास (दिल्ली) ने पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती स्मारक हेतु ५००) का दान भेजा है। सभा की ओर से इस परिवार का हार्दिक धन्यवाद।

सभा मन्त्री

३६० पंचायतों का शादियों पर फिजूल खर्चो रोकने का फैसला

गुड़गांव, २४ अप्रैल (निस)। गत सप्ताह फाड़सा ग्राम में गुड़गांव और महेन्द्रगढ़ जिले की ३६० ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन ब्रिगेडियर क. स. कटारिया की अध्यक्षता में हुआ। सम्मेलन में विभिन्न जाति बरादरियों के लगभग दस हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें पारित प्रस्तावों द्वारा बारातियों की अधिकतम संख्या ५१ तय की गई तथा सगाई टीका, लग्न, गोद भराई, गौरवा विदाई आदि पर अधिक से अधिक सौ रुपये देने की सीमा निर्धारित की गई।

यह फैसला किया गया कि बारात को बस से लाने का व्यय लड़के वाला करेगा तथा दुल्हन को दिये जाने वाले आभूषण प्रदर्शित नहीं किये जायेंगे। इसी प्रकार दहेज के प्रदर्शन पर भी इन पंचायतों के प्रतिनिधियों ने प्रतिबन्ध लगा दिया। बेंडबाजे के प्रयोग पर भी पाबंदी लगाई गई है। सम्मेलन ने फैसला किया कि शादियाँ दिन में ही की जायेंगी तथा बारात को केवल एक ही खाना दिया जायेगा। दहेज की अधिकतम सीमा एक तोला सोना दस तोले चांदी और १०१ रुपये नकद रखी गई। सगाई करके छोड़ देने वालों के लिए ११ हजार रु० के दण्ड तथा सामाजिक बहिष्कार का सुझाव दिया गया।

सम्मेलन ने शराब पीने की बुराई रोकने के लिए पंचायतों से आग्रह किया कि वे शराब पीने वाले को १०१ रुपये तथा शराब बेचने वाले पर ११०० रुपये का जुर्माना करें। (दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

पदयात्रा

१७-४-८३ को आर्यसमाज मन्दिर फतेहपुर में कुरुक्षेत्र जिले के आर्य कार्यकर्त्ताओं की एक हंगामी बैठक सम्पन्न हुई जिसमें कुरुक्षेत्र जिले में आर्यसमाज का कार्य और अधिक तेज करने के लिए जून माह में एक पदयात्रा करने का निर्णय लिया गया। इस एक सप्ताह की पदयात्रा में २१ जलसे और २१ नई आर्यसमाजें खोलना व वैदिक साहित्य जन जन तक पहुँचाया जायेगा। अगर आप इस यात्रा में शामिल होना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम मन्त्री आर्यसमाज फतेहपुर जिला कुरुक्षेत्र को भेजिये।

अखिल भारतीय लेख प्रतियोगिता

महर्षि दयानन्द विश्व की सर्वाङ्गीण उन्नति के मन्त्र द्रष्टा राष्ट्रीय पुनर्जागरण के जन्मदाता, महान् देशभक्त, चहुंमुखी क्रान्ति के अग्रदूत, स्वाधीनता के सच्चे प्रेरक, आदर्श समाज सुधारक, युग प्रवर्त्तक, दूरदर्शी तथा वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक थे। मानवता के सच्चे पुजारी, एक ईश्वर के उपासक, आर्यसमाज के संस्थापक एवं विश्व का दुःखों से छुड़ाने वाले यथा नाम तथा गुण के अनुसार दया और आनन्द के सागर थे।

आइये हम सब इस निर्वाण शताब्दी के पुनीत अवसर पर आत्म निरीक्षण करें तथा गत सौ वर्षों के कार्य कलापों का सिंहावलोकन कर आने वाले सौ वर्षों की योजना तैयार करें तथा उस पर कमर कसकर एवं आशाधन बनकर निम्न प्रतियोगिता में भाग लेवें।

विश्व को आर्य कैसे बनावें

विषय पर आर्य युवक परिषद् (पंजी०) दिल्ली द्वारा आयोजित लेख प्रतियोगिता में राष्ट्र की सुप्तआत्मा को जगाने वाले लेख लिखकर कोई भी स्त्री पुरुष भाग ले सकता है। लेख स्याही से, सुवाच्य अक्षरों में तथा अपने हाथ से, कम से कम २० फुलस्केप आकार के कागजों पर, हाशिया छोड़कर, कागज के एक ओर लिखकर १४ जून १९८३ तक भेजे जावें।

बड़े हर्ष की बात है कि परिषद् की प्रेरणा पर नवनीतलाल सत्यप्रिया धर्मार्थ ट्रस्ट नई दिल्ली ने सर्वप्रथम लेख पर ५००), द्वितीय पर ३००) और तृतीय पर २००) के नकद पारितोषिक देने की स्वीकृति प्रदान की है। विजेता लेखकों को दिल्ली बुलकर 'विशेष समारोह' में सम्मानित किया जावेगा। पुरस्कृत लेख ज्यों के त्यों तथा अन्य लेखों के विशेष उपयोगी अंशों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की योजना है। लेखकों को यह पुस्तक निःशुल्क भेंट की जाएगी।

हमें पूर्ण विश्वास है कि देश के स्वाध्यायशील सुयोग्य तथा मननशील बहन-भाई अपने अपने विद्वत्तापूर्ण लेख भेजकर इस स्वर्ण अवसर से पूरा पूरा लाभ उठायेंगे और राष्ट्र की भावी पीढ़ी का अपने सुलझे हुए विचारों से मार्गदर्शन करेंगे।

निवेदक
देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक
प्रधान आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)
कार्यालय १६५४, कूचा दखिनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली

सर्वहितकारी—साप्ताहिक पढ़िये-पढ़ाइये, १५) शुल्क भेजकर इसके ग्राहक बनिये-बनाइये तथा सर्वहितकारी कार्यों में तत्परतापूर्वक जुट जाइये। —व्यवस्थापक

सर्वहितकारी साप्ताहिक दयानन्दमठ रोहतक

दयानन्द वैदिक शोध पीठ (अजमेर) में शोध कार्य का शुभारम्भ

आज विश्वविद्यालय स्तर पर महर्षि दयानन्द आर्यसमाज तथा उनके द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों पर शोध कार्य करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। इसलिए सन् १९७६ में पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द वैदिक शोध पीठ की स्थापना की गई। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में भी गत कई वर्षों से दयानन्द वैदिक शोध पीठ महर्षि दयानन्द के विषय में कार्य कर रहा है।

शोध पीठ का उद्‌घाटन—

आर्यसमाज शिक्षा सभा की दिनांक १९-१०-१९८० को अन्तरंग सभा की बैठक हुई, जिसमें निश्चय किया गया कि दयानन्द कालेज अजमेर में दयानन्द वैदिक शोध पीठ की स्थापना की जाय। दिनांक ३०-८-१९८२ को राजस्थान सरकार ने इस पीठ को औपचारिक स्वीकृति प्रदान की और आर्यसमाज अजमेर की स्थापना शताब्दी के शुभ अवसर पर राजस्थान के महामहिम राज्यपाल जी ओमप्रकाश मेहरा के कर-कमलों द्वारा दिनांक ६ नवम्बर १९८२ को इस शोध पीठ का उद्‌घाटन बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस शोध पीठ की विशेषता—

पंजाब विश्वविद्यालय तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्द वैदिक शोध पीठ अपने विश्वविद्यालय के अधीन है और वे अपने ढंग से कार्य कर रहे हैं। इस शोध पीठ की अपनी विशेषता यह है कि यह आर्यसमाज अजमेर के प्रयत्न से दयानन्द कालेज में स्थापित किया गया है। आज तक भारत के किसी भी कालेज में शोध कार्य के लिए दयानन्द शोध पीठ नहीं है कालेज स्तर पर यह पहला शोध पीठ है। इस कालेज में एक दर्जन विषयों को स्नातकोतर कक्षाएं हैं तथा हिन्दी, अर्थ शास्त्र, वाणिज्य तथा भूगोल विभाग में शोध कार्य के लिए विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त प्राध्यापक वर्ग कालेज में सेवा कर रहा है। कालेज के प्राध्यापक वर्ग का शोध कार्य में उचित निर्देश एवं परामर्श तथा शोध छात्रों के समुचित मार्ग दर्शन की दृष्टि से इस शोध पीठ का अपना एक विशेष स्थान है। इस शोध पीठ की स्थापना का श्रेय शिक्षा सभा अजमेर के मन्त्री श्री दत्तात्रेय आर्य को है।

स्थायी कोष—

शोध पीठ के लिए पाँच लाख रुपये के स्थायी कोष की स्थापना हो चुकी है। आर्यसमाज अजमेर तथा शिक्षा सभा ने इसमें क्रमशः ३० हजार तथा एक लाख रुपये की राशियां दी हैं। आर्यसमाज से संबन्धित शिक्षण संस्थाओं, उनके प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने भी इसमें प्रशंसनीय योगदान दिया है। अनेक भूतपूर्व छात्रों और प्रमुख नागरिकों ने भी इसमें उदारता पूर्वक आर्थिक सहयोग दिया है। अब तक लगभग दो लाख रुपये एकत्रित हो चुके हैं, शेष के लिए प्रयत्न जारी है। इस स्थायी कोष के ब्याज से वैदिक सिद्धान्तों पर शोध कार्य करने वाले शोध छात्रों के लिए मासिक छात्रवृत्ति देने का प्रावधान है।

आर्यसमाज अजमेर तथा शिक्षा सभा के समान आर्यसमाज की सार्वदेशिक सभा, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सम्पन्न आर्यसमाजों का भी कर्तव्य है कि वे वैदिक सिद्धान्तों पर शोध कार्य करने वाले शोध छात्रों के लिए इस शोध पीठ के लिए उदारता पूर्वक दान दे। वे अपनी ओर से शोध छात्रो के लिए मासिक छात्रवृत्ति भेज सकते हैं। एक छात्रवृत्ति ५०० रुपये मासिक है।

शोध पीठ के उद्देश्य—

दयानन्द वैदिक शोध पीठ के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

१—महर्षि के जीवन का अध्ययन।

२—महर्षि दयानन्द के धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आदि कार्यों का अध्ययन।

३—आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति का गवेषणात्मक अध्ययन व उसके भविष्य पर गम्भीर चिन्तन करके आर्यजगत् को यथोचित प्रेरणा देना।

४—महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों का अध्ययन।

५—महर्षि के अपने ग्रन्थों तथा उनके द्वारा प्रतिपादित आर्य ग्रन्थों की व्याख्या लिखना तथा उसका प्रकाशन करना।

६—महर्षिकृत ग्रन्थों के हस्तलिखित लेखों का फोटोप्रिन्ट कराकर उनकी सुरक्षा करना तथा उनका शोध कार्य में उपयोग लेना।

७—आर्यसमाज के धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यों का अध्ययन।

८—महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज तथा वैदिक साहित्य पर शोध पीठ के अधीन शोध कार्य करने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति, पुस्तकें आदि की सुविधा प्रदान करना तथा शोध कार्य में मार्ग दर्शन करना।

९—सायण आदि भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों के किये वेद भाष्य को समालोचना करना।

१०—महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में प्रतिपादित आर्य ग्रन्थों के अध्ययन का प्रबन्ध करना।

११—प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का संकलन, उनकी सुरक्षा तथा उन पर शोध कार्य करना।

१२—शोध पीठ द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका के माध्यम से महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज तथा वैदिक सिद्धान्तों का प्रसार करना और वेद विरुद्ध मन्तव्यों का खण्डन करना।

१३—समय समय पर वैदिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में विद्वत् गोष्ठियों का आयोजन करना।

१४—दयानन्द कालेज अजमेर के संस्कृत विभाग, हिन्दी विभाग, समाज शास्त्र विभाग तथा राजनीतिक विभाग आदि के एम० ए० कक्षा के छात्रों को महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज तथा वैदिक सिद्धान्त के संदर्भ में शोध निबन्ध लिखने के लिए प्रेरित करना तथा उनका मार्ग दर्शन एवं आर्थिक सहायता करना।

१२—महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज तथा वैदिक सिद्धान्तों के सन्दर्भ में राजस्थान विश्वविद्यालय से शोध कार्य (एम. फिल. पी. एच डी.) करने वाले शोध छात्रों का मार्ग दर्शन करना तथा यथासम्भव सब प्रकार की सुविधा प्रदान करना।

आर्य विद्वानों से निवेदन—

दयानन्द वैदिक शोध पीठ के कार्य की यह संक्षिप्त रूप रेखा आर्य समाज तथा विशेष रूप से आर्य विद्वानों को सेवा में प्रस्तुत है। महर्षि के शेष कार्य को पूरा करने तथा कार्यकर्त्ता संस्थाओं को तन मन धन से सहयोग देने का कर्त्तव्य सम्पूर्ण आर्यजगत् का है। साहित्य के क्षेत्र में विशेष कार्य करने के लिए इस शोध पीठ ने कार्य का आरम्भ किया है। इस कार्य के लिए एक विस्तृत रूप रेखा तैयार की जा रही है। आर्य विद्वानों से मेरा निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध में अपने अमूल्य सुझाव भेजकर सहयोग प्रदान करें। शोध पीठ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका के लिए अपने शोधात्मक लेख भी भेजें।

सुदर्शनदेव आचार्य
अध्यक्ष दयानन्द वैदिक शोध पीठ, अजमेर

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के पास प्रतिनिधि फार्म कार्यालय से डाक द्वारा भेजे जा रहे हैं। अतः इस वर्ष के लिए जो नये अधिकारी तथा सभा के प्रतिनिधि चुने गये हैं, के नाम फार्म में भरकर वेदप्रचार दशांश सर्वहितकारी के शुल्क की राशि सहित शीघ्र भेजने की कृपा करें। प्रचार की आवश्यकता हो तो तुरन्त सभा को पत्र लिखें।

सभा मन्त्री

स्वामी ओमानन्द सरस्वती के अभिनन्दन हेतु दान-दाताओं की सूची

१ श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दयानन्दमठ दीनानगर	११११-००
२ बहन सुमित्रा एम ए. आचार्या कन्या गुरुकुल नरेला	११००-००
३ श्री बाबू रघुवीरसिंह माडल टाउन रोहतक	११००-००
४ ,, डा० रघुवीरसिंह मुमुक्षु रामजस कालिज दिल्ली	११००-००
५ ,, राजवीर शास्त्री प्रधान स्नातक मण्डल गुरुकुल भज्जर	११००-००
६ ,, देवदत्त जी भारती दिल्ली	११००००
७ ,, प्रकाशचन्द्र माडल बस्ती दिल्ली	११०० ,०
८ ,, स्व० आचार्य शिवकरण जी चरखी दादरी	११० - ००
९ ,, सूबेदार रूपचन्द पहलवान बामला दिल्ली	११००-००
१० चौ० आशाराम जी रसूलपुर मुजफ्फरनगर	११००-००
११ चौ० देवकराम दूधवा भिवानी	११००-००
१२ डा० महावीर मीमासक पश्चिम बिहार दिल्ली	११००-००
१३ श्री मा० होश्यारसिंह दहिया मण्डोरा, सोनीपत	५०१-००
१४ ,, डा० वीरदेव जी नेपाल	१०१-००
१५ ,, राजेन्द्रकुमार जी फरमाणा (महम)	१०१-००
१६ ,, सोमदेव जी शास्त्री बालन्द भिवानी	१०१-००
१८ ,, देवव्रत जी शास्त्री बारहा भिवानी	५०१-००
१९ ,, वेदपाल जी शास्त्री झोझूकला	१०१-००
२० ,, महादेव जी महाराष्ट्र	१५१-००
२१ ,, सुखबीरसिंह जी दूधवा भिवानी	१०१-००
२२ ,, राजवीर जी शास्त्री कुण्डल	१०१-००
२३ ,, राजेन्द्र जी अध्यापक गुरुकुल भज्जर	१०१-००
२४ ,, जिलेसिंह जी खरक जाटान रोहतक	१०१-००
२५ ,, ऋषिपाल शास्त्री नागल ठाकरान दिल्ली	५०१-००
२६ श्री महाशय रणसिंह जी बादली रोहतक	१०१ ००
२७ ,, इन्सपैक्टर सरूपसिंह जी बाजीतपुर	१०१-००
२८ ,, सुल्लूराम नया गाव पलवल गुड़गाव	१०१-००
२९ ,, दीपचन्द जी आर्य खारी बावली दिल्ली	५०१-००
३० ,, आर्यसमाज नूंह (गुड़गावा)	५१-००
३१ ,, आर्यसमाज फिरोजपुर	१०१-००
३२ ,, आर्यसमाज नगीना (गुड़गावा)	१०१-००
३३ ,, स्व० स्वामी सत्यमुनि जी	१०१-००
३४ ,, स्वरूपसिंह बाजीतपुर दिल्ली	१०१-००
३५ ,, ईश्वरसिंह जी ढाकला	१०१-००
३६ ,, फतेहसिंह जी भण्डारी रैय्या	१०१-००
३७ ,, प्रीतसिंह जी पौली जीन्द	१०१-००
३८ ,, प्रतापसिंह जी करनाल	२५०-००
३९ ,, हव० रत्नसिंह जी यादव जखाला, रोहतक	१०१-००
४० ,, सुरेन्द्रकुमार लूखी	१०१-००
४१ ,, जगराम जी मातनहेल	१०१-००
४२ वीरेन्द्रसिंह जी शोरों मुजफ्फरनगर	१०१-००
४३ ,, वैद्य दलीपसिंह जी बामला भिवानी	१०१-००
४४ ,, कूडेराम बलवन्तसिंह ढराणा	१०१-००
४५ ,, मागेराम सुपुत्र चुन्नीलाल चीमनी रोहतक	१०१-००
४६ ,, मा० लज्जेराम समसपुर	५०१-००
४७ ,, गगासहाय शास्त्री गदपुरी गुड़गाव	१०१-००
४८ ,, वेदपाल जी शास्त्री रसूलपुर	१०१-००
४९ ,, आचार्य रणधीरसिंह आर.के. कालिज शामली मुजफ्फरनगर	१०१-००

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] 23207/73 [illegible] P/RTK 43



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

"आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र"

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १०, अङ्क २२ | १४ मई १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

विवाह आदि अवसरों पर फिजूल खर्च बन्द करने के अभियान

हरयाणा भर में सर्वखाप पंचायतों के सम्मेलनों में प्रस्ताव पारित

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

रोहतक— ८-५-८३ को हरयाणा के ऐतिहासिक नगर रोहतक के छोटूराम पार्क में सर्वखाप पंचायत का सम्मेलन प्रातः १० बजे हवन यज्ञ की कार्यवाही के साथ चौ० महावीरसिंह एडवोकेट उच्चतम न्यायालय (पूर्व न्यायधीश इलाहाबाद उच्चन्यायालय) एवं अध्यक्ष सर्वखाप पंचायत की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। सम्मेलन का संयोजन चौधरी प्रियव्रत प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला रोहतक ने किया। इस सम्मेलन में जिला रोहतक, सोनीपत, गुड़गांव, फरीदाबाद, महेन्द्रगढ, अलवर, जयपुर, मेरठ तथा मुजफ्फरनगर के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर सर्वखाप पंचायत के मन्त्री चौ० कबूलसिंह शोरम जिला मुजफ्फरनगर, मास्टर निहालसिंह आर्य, श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री अलवर, प्रिंसीपल होशियारसिंह (दिल्ली), बहन बसन्तीदेवी एम० एल० ए० चौ० धीरपाल एम० एल० ए०, चौधरी किताबसिंह एम० एल० ए०, दादा भलेराम बाहूलाना, जमादार रिसालसिंह, चौ० शेरसिंह भैंसवाल, चौ० धर्मवीर बीधल, श्री कपिलदेव शास्त्री, श्री सुखदेव शास्त्री, चौधरी राममेहर एडवोकेट, चौ० उदयसिंह मान, चौ० सूरजमल सांगवान एडवोकेट गोहाना, चौ० ताराचन्द (राजस्थान), चौ० नफेसिंह दहिया एडवोकेट सोनीपत, चौ० फतेहसिंह एडवोकेट सोनीपत, चौ० प्यारेलाल आर्य प्रचारक, श्री सत्यदेव शास्त्री भापड़ोदा आदि नेताओं ने विवाह आदि अवसरों पर फिजूल खर्च बन्द करने के लिए सुझाव रखे तथा हरयाणा की जनता से मांग की कि अब समय आ गया है कि पुनः सर्वखाप जैसी ऐतिहासिक तथा प्रभावशाली पंचायत के संगठन को पुनः सुदृढ करके सामाजिक बुराइयों को दूर करें। स्मरण रहे दिल्ली के चारों ओर १०० मील के क्षेत्र में सर्वखाप पंचायत ने सामाजिक सुधार तथा राष्ट्र रक्षा के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। बेरी सिसाना, शोरम आदि में पूर्व भी सर्वखाप की पचायतें हुई हैं तथा इनमें विवाह आदि में फिजूल खर्ची बन्द करने के लिए नियम बनाये थे परन्तु यह नियम सारे हरयाणा में लागू न हो सके। महंगाई दिन प्रतिदिन बढ रही है। अतः अब आवश्यक हो गया है कि सर्वखाप पंचायत के नियमों का पालन करना चाहिए। गत मास बावल जि० महेन्द्रगढ, बीरुहेड़ा गुड़गांव, बादली जिला रोहतक, लडायन जिला रोहतक में खापों की पचायत हुई हैं जिनमें कम खर्च करने के प्रस्ताव पास किये गये हैं। रोहतक की पचायत में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किये गये—

१—मृत्यु भोज बन्द, २—शादी विवाह व अन्य उत्सवों पर दिखावा बिल्कुल बन्द, ३—शराब का पीना या पिलाना बिल्कुल बन्द, ४—विवाह के सम्बन्ध में किसी प्रकार की रस्म में १) से लेकर १०१) से अधिक नहीं दिया जावेगा, ५—कन्यादान में १) ही दिया जावेगा, ६—विवाह में जेवर की मद में कोई पक्ष एक तोला सोना व ५ तोले चांदी से अधिक नहीं घलायेगा, ७—विवाह में एक ही वक्त खाना दिया जावेगा। ८—बारात के लिए बस आदि का किराया लड़के वाले ही देंगे। ९—बारात में अधिक से अधिक २५ व्यक्ति जा सकते हैं, १०—विवाह में बाजा नाच, कूद बन्द रहेगा, ११—सगाई, लगन, भात, छूछक और लड़की देखने में तथा उजर खाई में ५ से अधिक व्यक्ति नहीं जावेंगे, १२—दूसरा, तीसरा, सक्रान्ति व सिन्धारा बन्द, १३—रिश्ते के बाद लड़की नहीं छोड़ी जावेगी।

उपरोक्त प्रस्तावों को लागू कराने के लिए प्रत्येक खाप अर्थात् प्रत्येक गांव में कमेटी बनाई जावेगी। जो इन प्रस्तावों को नहीं मानेगा उस पर पचायत जैसा उचित समझे जुर्माना कर सकती है, तथा उसका सामाजिक बहिष्कार भी हो सकता है।

उपरोक्त प्रस्तावों को और दूसरे इलाकों में लागू कराने के लिए एक विशाल सर्वखाप पंचायत १२-९ ८३ को होगी। उससे पहले प्रत्येक खाप अपने यहां कमेटी बनाले तथा इन प्रस्तावों के सम्बन्ध में हुई प्रगति की सूचना महामन्त्री या प्रधान सर्वखाप पचायत को भी दी जावे। ये प्रस्ताव १५-५-८३ से लागू हो जायेंगे। इन प्रस्तावों की सूचना प्रत्येक गांव की पचायत अपने गांव में ढिंढोरा पिटवाकर दे।

कबूलसिंह महामन्त्री
सर्वखाप पचायत मुख्यालय
शोरम, जि० मुजफ्फरनगर

प्रियव्रत संयोजक रोहतक

भारत सरकार को चेतावनी

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

छोटूराम पार्क रोहतक में ८-५-८३ सर्वखाप पचायत हरयाणा के सम्मेलन में एक सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार को चेतावनी दी गई है कि यदि उग्रवादी अकालियों की हिंसक धमकियों के कारण समझौता में हरयाणा के हितों की उपेक्षा की गई तो हरयाणा की जनता की ओर से तीव्र आन्दोलन किया जावेगा।

सुलतानसिंह की घोषणा

चंडीगढ अवार्ड बदला, तो आन्दोलन

जाडवा, ९ मई (निस) कांग्रेस (इ) नेता श्री सुलतानसिंह ने घोषणा की है कि यदि चंडीगढ अवार्ड में परिवर्तन किया गया तो हरयाणा कांग्रेस (इ) इसके विरुद्ध आंदोलन चलायेगी। सुलतानसिंह ने चेतावनी देते हुए कहा कि दल के कार्यकर्त्ता प्रधानमन्त्री निवास के बाहर क्रमिक भूख हड़ताल करेंगे जो कि बाद में मरणव्रत में बदल जाएगी। उन्होंने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से अपील की कि पंजाब समस्या का हल निकालते समय हरयाणा के हितों पर कुठाराघात न किया जाये।

(दैनिक ट्रिब्यून)

एक प्रश्न के विचारार्थ कतिपय पहलू

—स्वामी वेदानन्द सरस्वती वैदिक साधु आश्रम रोपड़

(गतांक से आगे)

आर्यसमाज की स्थापना के समय से भारत के स्वतन्त्र होने से दस पन्द्रह वर्ष पश्चात् तक हिन्दू समाज अपनी रक्षा विधर्मियों से करने में अपने को असमर्थ जानकर आर्यसमाज को ही अपना रक्षक और इसके नेताओं को ही अपना नेता समझता था। तब तक हिन्दू समाज के अपने नेता नहीं थे, किन्तु अब स्थिति बदल गई। अब हिन्दू समाज के अपने नेता उत्पन्न हो गये हैं उसके अपने संरक्षक, संगठन बन गये हैं। जो न केवल हिन्दुओं के संगठित होने और उनकी रक्षा करने का उद्घोष भी करते हैं अपितु तत्परता से हिन्दू समाज को संगठित एवं उसके सुरक्षा और उसके संरक्षण का प्रयास भी करते हैं। वे संगठन एवं संस्थाएं हैं–राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्वहिन्दू परिषद् और राजनैतिक रूप में जन-संघ अथवा अब जन-संघ का आधुनिक संस्करण भारतीय जनता पार्टी इन्हीं संगठनों को हिन्दू समाज तन मन धन से अपना सहयोग भी करता है। अब आर्यसमाज की आवश्यकता ही अब हिन्दू समाज अपने लिये अनुभव नहीं करता। अतः अब कोई हिन्दू समाज का सदस्य(हिन्दू) आर्यसमाजों के सत्संगों, उत्सवों आदि कार्यक्रमों में उसी प्रकार सम्मिलित होने की जरूरत नहीं समझता जिस प्रकार मुसलमान ईसाई, जैनी और सिक्ख आर्यसमाज के कार्यक्रमों में नहीं आते। हमारे सब कार्यक्रमों में उपस्थिति निराशाजनक बहुत ही कम होती है। हिन्दुओं के पास अपने मन्दिर हैं, अपने साधु संन्यासी हैं, अपने उपदेशक हैं, अपने नेता हैं, अपनी सुरक्षा के लिए अपने संरक्षक, संगठित संस्थाएं हैं। बिना आवश्यकता के अब कोई हिन्दू आर्यसमाज में क्यों आये ?

५—हिन्दू नेता अब वे सब कार्य करने लगे हैं जिन कार्यों को कभी आर्यसमाज ही करता था और हिन्दुओं का लाभ होता था। जैसे शिक्षा संस्थाएं खोलना हरिजनों (दलित) उद्धार, उनसे स्नेह पूर्ण व्यवहार मुसलमानों ईसाइयों की शुद्धि करना आदि। बृहद् यज्ञादि करना चाहे तुलसीदास की रामायण से ही आहुति देते हों।

६—हिन्दू समाज के नेता अब हिन्दू समाज का संरक्षण तो करते ही हैं पर आर्यसमाज तथा आर्यसमाज को हानि भी पहुंचाते हैं और योजनाबद्ध षड्यन्त्र करते ही रहते हैं। दत्तात्रेय वाब्ले के शब्दों में-'कुछ समय पूर्व आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने सार्वजनिक रूप से आशंका व्यक्त की है कि देश के अनेक स्थानों में और यहां तक कि अफ्रीका जैसे विदेशों में भी राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के कार्यकर्ता आर्यसमाज में प्रवेश करके उस पर अपना अधिकार करने का प्रयत्न करने लगे हैं। कई समाजों में उनके द्वारा प्रबन्ध समितियों पर कब्जा किया गया और समाज मन्दिरों में से ऋषि दयानन्द के चित्र हटाकर स्वामी विवेकानन्द के चित्र लगाये गये। जोधपुर में जनता पार्टी के राज्य के समय महर्षि दयानन्द मार्ग का नाम बदलकर दीन-दयाल उपाध्याय मार्ग करने का प्रयत्न किया गया। पजाब प्रान्त में भी कई स्थानों पर ऐसा दृश्य देखा जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में आर्यसमाज हिन्दू समाज का अंग बनाकर अपना भविष्य सुरक्षित व उज्जवल रख सकेगा यह चिन्तनीय है।

७—आर्यसमाज के शत्रु बड़े चालाक तथा षड्यन्त्रकारी हैं। सामने की ओर से आक्रमण करने की अपेक्षा वे पार्श्ववर्ती आन्दोलन चलाकर आर्यसमाज को नष्ट करने अथवा इसे दुर्बल बनाने में सफल हो सकते हैं।

८—पृथक् स्वतन्त्र व्यक्तित्व आर्यसमाज का होना नितान्त अनिवार्य है। विशाल हिन्दू समाज के नमकीन सागर में आर्यसमाज का अस्तित्व विलीन होने में देर न लगेगा। 'हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में हैं भाई भाई।" इसी नशीले उद्घोष से पृथक् रहने वाले मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सम्प्रदाय स्वतन्त्रता के बाद भारत में वृद्धि को प्राप्त हुए हैं। नशे में हिन्दू ने अपना पर्याप्त कुछ खोया है। ये कुछ विचार आर्य महानुभावों के सम्मुख विचारणीय जानकर लिखे हैं ताकि उपर्युक्त निर्णय लेने में सुविधा हो सके।

आर्यसमाज जीन्द शहर द्वारा वेद कथा

१४ अप्रैल से १७ अप्रैल १९८३ तक आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में आर्यसमाज का १०८ वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर वेदों के प्रख्यात विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र जी विद्यामार्तण्ड के सार गर्भित प्रवचन तथा प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं० चन्द्रभान जी के मधुर भजन हुये। श्रोताओं ने वेद तथा आर्यसमाज विषयक जानकारी और महर्षि दयानन्द के ऐतिहासिक राष्ट्रवादी कार्यों से जानकारी प्राप्त कर अपने आप को लाभान्वित महसूस किया। योग विद्या का प्रचार और प्रसार भी आर्यसमाज के कार्यक्रम का प्रमुख अंग है। इसी उद्देश्य से ब्रह्मचारी ओमदर्शन सुपुत्र सुदर्शनदेव जी आचार्य ने यौगिक क्रियाओं का प्रभावशाली प्रदर्शन किया जैसे कण्ठ से सटाकर लोहे की चार सूत की छड़ मोड़ना, धातु की थाली कपड़े की तरह फाड़ना, नंगी हथेलियों से कांच चबाना तथा चलती गाड़ी को रोकना आदि।

१७ अप्रैल रविवार को साप्ताहिक सत्संग और उसके पश्चात् दोपहर को प्रीतिभोज के साथ यह धार्मिक आयोजन सम्पन्न हुआ जिस में सैंकड़ों आर्य सदस्य एवं शहर के प्रतिष्ठित नागरिक शामिल हुये। इस सारे आयोजन में सभी आर्य नर-नारियों का तन मन धन से सहयोग मिला और वक्ताओं ने विशेष रूप से इस बात पर विशेष बल दिया कि महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज देश और जाति का सदा सजग प्रहरी रहा है और भविष्य में भी राष्ट्र और धर्म के लिए बलिदान देने हेतु तैयार रहेगा।

कृष्णदेव शास्त्री
मन्त्री आर्यसमाज जीन्द शहर

व्रतधारी–ब्रह्मचारी–स्वामी

—नाज 'सोनीपती'

१. वीतराग, अनुपम संन्यासी, सर्वहितकारी ओमानन्द।
यशस्वी, त्यागी, तपस्वी, परोपकारी ओमानन्द॥

२. अगणित, अनुसन्धानों द्वारा, भारत का सम्मान बढाया।
देश विदेश में भ्रमण करके, ऋषिवर का सन्देश सुनाया॥

३. वैदिक नाद बजाकर जग में, मानव का उत्थान किया है।
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को नव-जीवन प्रदान किया है॥

४. ओजस्वी वाणी का स्वामी, तेरी लेखनि शक्तिशाली।
आर्यसमाज का संरक्षक तू, वेद उपवन का रक्षक माली॥

५. ऋषिवर स्वामी दयानन्द के पद्चिन्हों पर चलने वाला।
निडर, साहसी, सबल, सुधारक, शत्रु-दल को दलने वाला॥

६. गऊ हत्या के बन्द कराने हेतु, अब भी जूझ रहा है।
मदिरा के मतवालों को भी होश दिलाने खड़ा हुआ है॥

७. असंख्य रोगियों को, रोगों से, मुक्त कराया, कष्ट निवारे।
आयुर्वेदिक, स्वास्थ्य सुधा पीकर सुखी हुए दुखियारे॥

८. तेरी नस-नस में पर-हित की आशा का सागर लहराए।
श्वास-श्वास में, रोम-रोम में, तेरे सेवा भाव समाये॥

९. तूने हरयाणे का सचमुच, जग में ऊंचा भाल किया है।
भारत भू पर सत्य के मोती बोकर मालामाल किया है॥

१०. जीवन ज्योतिमय, समुज्ज्वल, 'नाज' ! चरित्र महान् तुम्हारा।
जय-जय स्वामी ओमानन्द की यह है गौरव गान हमारा॥

सम्पादकीय

श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द सरस्वती का भव्य अभिनन्दन

आर्य जगत् में यह समाचार बड़े हर्ष-उल्लास के साथ पढ़ा और सुना जा रहा है कि आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती (आचार्य भगवानदेव) को आर्य कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) के रजत जयन्ती महोत्सव पर दिनांक १५ मई १९८३ को एक भव्य अभिनन्दन ग्रन्थ तथा वेद प्रचार यात्रा के लिए एक जीप बड़े सम्मान पूर्वक भेंट की जा रही है।

स्वामी जी महाराज का सारा जीवन देश सेवा के लिए समर्पित है। उन्होंने अपने जीवन से लाखों को जीवन प्रदान किया है, कितनों का मार्गदर्शन किया है। वे गत अर्ध शताब्दी से समाज में एक प्रकाश स्तम्भ एवं प्रेरणास्रोत बनकर समाज को अपने नेतृत्व, बुद्धिमता विद्या, शिक्षा, सदाचार, कर्मठता भारतीय सभ्यता के प्रति अगाध निष्ठा, त्याग तप से विभूषित जीवन पद्धति आदि कितने ही गुणों से एक अपने अद्भुत व्यक्तित्व से क्या बच्चे, क्या जवान, क्या वृद्ध, क्या गृहस्थ, क्या ब्रह्मचारी, क्या सन्यासी, क्या वानप्रस्थ, क्या नेता और क्या विद्वान् सभी प्रकार से समाज को दिशा प्रदान करते रहे हैं। ऐसी दिव्य विभूति का समाज जितना सम्मान करे उतना थोड़ा है।

उन्होंने अपने जीवन में जितने भी कार्य किये हैं, उनका मूल आधार गुरुकुल शिक्षा पद्धति रही है। उसको केन्द्र मानकर उन्होंने अन्य कार्यों का सचालन किया है। गुरुकुल झज्जर तथा कन्या गुरुकुल नरेला उनके अपने बनाये प्रधान केन्द्र हैं। इन संस्थाओं के माध्यम से ऐसे विद्वान् तथा विदुषियां तैयार करते रहे हैं जो शारीरिक दृष्टि से बलवान् ज्ञान की दृष्टि से विद्वान् तथा चारित्रिक दृष्टि से ब्रह्मचारी (सरस्वती) नागरिक हों। गुरुकुल में पढ़ने वाला कोई ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणी सरकारी परीक्षा न दे, गृहस्थ में न जावे और सरकारी नौकरी न करे अपितु ब्रह्मचारी रहकर वैदिक धर्म का देश देशान्तर तथा द्वीप द्वीपान्तर में प्रचार करे। स्वामी जी की इस उत्तम प्रेरणा का यह परिणाम हुआ कि गुरुकुल के अनेक स्नातक तथा स्नातिकायें आज उच्चकोटि के विद्वानों में गिने जाते हैं, शारीरिक दृष्टि से सभी साधारण जनों से विशेष होते हैं, गृहस्थ होकर सदाचारी नागरिक, जहां वे रहते हैं, उनका समाज में अपना विशिष्ट स्थान होता है। कुछ गुरुकुल के स्नातक ऐसे भी निकले कि जिन्होंने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर आजीवन वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार का व्रत लिया, घर परिवार से मुख मोड़कर देश सेवा को ही सर्वोपरि मान लिया और इससे समाज सुधार का बड़ा भारी कार्य हुआ। जिन हरिजन आदि वर्गों के लोगों को अछूत कहा जाता है, लोग जिन्हें अपने पास बैठाने में भी घृणा करते हैं, ऐसे वर्ग के लोगों को संस्कृत भाषा का उद्भट विद्वान् बनाया। नारियों को वेदाचार्य आदि पदवी से विभूषित स्नातिकाएं बनाकर नारी जाति को शूद्र के तुल्य बतलाने वाले लोगों के मुख पर जोर का चपत लगाया।

स्वामी जी महाराज स्वयं संस्कृत भाषा के वरिष्ठ विद्वान् हैं। इसलिये भारत सरकार ने उन्हें शुद्ध पण्डित (संस्कृत भाषा) की उपाधि से अलंकृत किया। शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, उपनिषद्, रामायण महाभारत, मनुस्मृति, वैदिक सिद्धान्त आदि का बड़ा अच्छा स्वाध्याय एवं वैदिक साहित्य के प्रति उनकी अगाध निष्ठा है। इसलिए हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर व नरेला से अनेक अनुपलब्ध ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य होता रहता है। इतिहास तथा पुरातत्व के वे एक अधिकारी विद्वान् माने जाते हैं। इस विषय में पी० एच० डी० आदि के रूप में शोध कार्य करने वाले विद्वान् उनसे परामर्श लेकर अपने शोध निबन्ध लिखते हैं। उन्होंने अपने अतुल परिश्रम से इतनी ऐतिहासिक सामग्री संकलित की है, जिसके प्रभाव से केवल भारतीय विद्वानों को नहीं अपितु विदेशी विद्वानों को भी अपनी मान्यताओं पर फिर से विचार करने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। यह कोई छोटा कार्य नहीं। स्वामी जी महाराज को त्यागी, तपस्वी, ब्रह्मचारी, सन्यासी के अतिरिक्त बहुत अच्छे अध्यापक, वक्ता, प्रचारक, लेखक, चिकित्सक, पुरातत्त्वज्ञ, इतिहासज्ञ, कृषि विशेषज्ञ, परोपकारी, उत्तम परामर्शदाता, शुभचिंतक आदि अनेक रूपों में इन पंक्तियों के लेखक ने अत्यन्त निकट से देखा है। एक व्यक्ति में इतने गुणों का समावेश ईश्वरीय शक्ति के प्रभाव से ही कहा जा सकता है।

स्वामी जी महाराज अपने शिष्य तथा शिष्याओं से एक माता से भी बढ़कर प्यार करते हैं, पिता से बढ़कर उनका संरक्षण करते हैं। किन्तु उस प्यार में मन्यु का मिश्रण होने से नासमझ शिष्य व शिष्यायें उनके दुलार के रहस्य को भूल जाते हैं और मन्यु का रूप ही उन्हें दिखाई देता है। इसका परिणाम यह हुआ कि अधिकतर उनका शिष्य मण्डल उनके निर्देशन में कार्य न कर सका। यदि उनके शिष्य स्वामी जी महाराज के स्वरूप को ठीक प्रकार से समझ कर उनके साथ मिल कर कार्य करते तो आज समाज में स्वामी जी महाराज का जो स्थान होता है वहां कल्पना की ही पहुँच हो सकती है। स्वामी जी महाराज के विरक्त तथा गृहस्थ दोनों प्रकार के शिष्य मिलकर स्वामी जी महाराज के निर्देशानुसार कार्य करें और स्वामी जी उनके गुण योग्यता के अनुसार सहनशीलता पूर्वक उनसे कार्य लेवें तो वे समस्त आर्य जगत् में छा सकते हैं और आर्यसमाज की शिक्षा, समाज सुधार आदि सभी दिशाओं में एक चमत्कारपूर्ण क्रान्ति आ सकती है। आर्यसमाज की सब शिक्षण संस्थाएं सब सभाएं तथा अन्य सभी संगठन एक होकर अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ सकते हैं। स्वामी जी महाराज का यह अभिनन्दन सर्वोपरि अभिनन्दन होगा।

सुदर्शनदेव आचार्य

पं० सुखदेव शास्त्री को धन्यवाद

सरिता नामक पाक्षिक पत्रिका में प्रति-पक्ष वेद के विरुद्ध कुछ न कुछ लिखा जाता है। उसका उत्तर आर्यसमाज की पत्रिकाओं में प्रकाशित होता रहता है। अभी आर्यसमाज के विद्वान् पं० सुखदेव शास्त्री आसन (रोहतक) ने सरिता पत्रिका में प्रकाशित गायत्री मन्त्र की आलोचना का स्वाध्यायपूर्वक बहुत अच्छा उत्तर दिया है। अन्य आर्य विद्वानों से भी प्रार्थना है कि सरिता के वेद-विषयक प्रलाप का उत्तर देने के लिए सर्वहितकारी को माध्यम बनावें। आदरणीय पं० सुखदेव जी शास्त्री को सर्वहितकारी की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक

आर्यसमाजों, गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली)	१३ से १५ मई
आर्यसमाज जीन्द जक्शन	१६ से २२ ,,
आर्यसमाज बावल जिला महेन्द्रगढ़	१८ से २० ,,
लो. नि. वि. विश्रामगृह बहादुरगढ़ (वेदप्रचार)	१६ से २२ ,,
आर्यसमाज मदानाकलां जिला रोहतक	२१ से २३ ,,
,, भिवानी	२७ से २९ ,,

वृक्षों में जीव है

—हरकिशन मलिक एडवोकेट दिल्ली

(गतांक से आगे

वृक्षादि प्राणी भी हैं क्योंकि अन्य जीवधारियों के समान सांस लेते हैं. हाँ फेफड़े न होने के कारण वृक्ष मनुष्य की भांति बार-बार सांस नहीं लेते छोड़ते परन्तु यह तो उस परम कारीगर की कारीगरी है। मछलियां भी तो सांस लेती हैं परन्तु मनुष्य की भांति नहीं। जिस प्रकार मनुष्य पशु आदि में लहू भ्रमण करता है इसी तरह वृक्षों में भी एक प्रकार का रस भ्रमण करता रहता है। किसी वृक्ष के तने में घाव कर दीजिये तो उसके भ्रमण का पता लग जाएगा। प्रकृति में जीवात्मा के सान्निध्य के बिना स्वयं तो कोई क्रिया नहीं होती। क्या यह क्रियाएं जीवात्मा का अस्तित्व प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त नहीं।

वृक्षादि मनुष्य तथा पशुओं के समान आहार लेते हैं और पानी पीते हैं। अन्तर केवल यह है कि उनका आहार मनुष्य के आहार से भिन्न है परन्तु इससे क्या ? मनुष्य का आहार अनेक पशुओं के आहार से भी भिन्न है। यदि किसी वृक्ष को आहार न मिले तो सूख जाए। पानी न मिले तो सूख जाए। वृक्ष आहार को आत्म सात कर लेते हैं। आखिर क्यों ? पत्थर या सूखे लकड़ आहार क्यों नहीं लेते और उसे आत्मसात क्यों नहीं करते ? तनिक विचार कीजिये। आहार को आत्म सात करने की शक्ति आत्मा के सान्निध्य के बिना आ कहां से सकती है। मनुष्य ने आज कितने ही नकली इन्सान बना दिये जो नाचते हैं, गाते हैं, मनुष्य के समान फैक्ट्रियों में काम करते हैं परन्तु वह भी भोजन नहीं कर सकते क्योंकि उनके आत्मा नहीं। वृक्षादि आहार लेते हैं और उसे अपने शरीर का अङ्ग बना लेते हैं क्योंकि उनमें आत्मा है।

विचारणीय प्रश्न

१—महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में भौतिक सृष्टि की उत्पत्ति में पृथिवी से वृक्ष, औषधि आदि की उत्पत्ति बतलाई है, जिसका अर्थ यह है कि वृक्ष पृथिवी का विकार है। देखो—तस्माद्वा एतस्मादात्मन: ०, तथा सत्वरजस्तमसा०।

(स० प्र० अष्टम समुल्लास)

२—'भला जो वृक्ष जड़ पदार्थ है, उसका क्या अपराध था कि उसको मार दिया और वह सूख गया' (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १३, समीक्षा ७८)। यहां महर्षि ने वृक्ष को जड़ लिखा है और उसे निरपराध बतलाया है।

३—अफ्रीका के मांसभक्षी वृक्ष क्या प्राणियों को ज्ञानपूर्वक खाते हैं कि अज्ञानपूर्वक ? आप जब उनमें गौतम के लक्षण के अनुसार ज्ञान मानते हैं तब अज्ञानपूर्वक नहीं कह सकते हैं, यदि वे निकटवर्तीमात्र को खा जाते हैं तो यह भक्षण ज्ञानपूर्व नहीं कहा जा सकता। अज्ञान पूर्वक की गई चेष्टा आत्मा की द्योतक नहीं।

४—आपने जो मनुस्मृति का प्रमाण दिया है, वहां मूल में नक्षत्र-योनि का भी वर्णन है, जबकि नक्षत्र कोई योनि नहीं। शूद्र योनि का भी उल्लेख है जबकि शूद्र वर्ण है, योनि मनुष्य है। वहां शूद्र और सुअर की एक ही गति लिखी है, क्या शूद्र और सुअर भी एक ही समान हैं। इसलिए यह प्रकरण सर्वांश में प्रामाणित नहीं कहा जा सकता। महर्षि का अभिप्राय इतना ही है कि मनुष्यों को कर्मानुसार नाना योनियां प्राप्त होती हैं।

५—आप एक तरफ ज्ञान और तमोगुण को परस्पर विरोधी बतला रहे हैं और इस लेख में वृक्षों में ज्ञान भी सिद्ध कर रहे हैं। जब आप इन्हें तमोगुणी मानते हैं, फिर ज्ञानसिद्धि के लिए आपका प्रयत्न करना व्यर्थ है।

६—आपने वृक्षों में पुत्रैषणा बतलाई है, जब पुत्रैषणा है, तो वित्तैषणा और लोकैषणा क्यों नहीं ? फिर तो सब इच्छाएं होनी चाहिएं।

७—सन्तान के लिए वृक्ष सम्भोग करते हैं। गर्भाधान के पश्चात् एक प्राणी से जो प्राणी उत्पन्न होता है, वह तदाकार वाला होता है। गर्भाधान के पश्चात् तो तदाकार वृक्ष उसके अन्दर से निकलना चाहिए। गर्भाधान की पद्धति एरण्डी खरबूजा में है, और में नहीं यह कोई तर्क नहीं। सब गर्भाधान क्यों नहीं करते। वृक्ष का वृक्ष में बीज नहीं बोया जाता अपितु वह भूमि में बोया जाता है। गर्भाशय और प्राणी भिन्न भिन्न नहीं होते, एक ही शरीर में होते हैं।

८—वृक्ष शरीर नहीं छोड़ना चाहते। आपने पहले स्वयं लिखा है कि जब ज्ञान ही नहीं फिर इच्छा आदि गुण कैसे हो सकते हैं। फिर आप बतला रहे हैं कि वृक्षों में शरीर न छोड़ने की इच्छा है। यह आप का कथन परस्पर विरोधी है।

किसी भी वृक्ष की आयु चीरकर जानी जा सकती है। क्या अन्य मनुष्य पशु आदि प्राणियों की आयु भी उन्हें चीर-फाड़कर बतलाई जा सकती है। क्या ही नवीन विज्ञान का आविष्कार हुआ है।

१०—सूरजमुखी का फूल अपना मुख सूर्य की ओर ही क्यों रखता है।। इससे लगता है कि आपने सूरजमुखी का फूल देखा ही नहीं है। उसका मुख सूर्य के समान होता है, इसलिए उसे सूरजमुखी कहते हैं, इसलिए नहीं कि सदा सूर्य की ओर मुंह किए रहता है।

११—अनिलकुमार के प्रश्न के उत्तर में सूखा अन्न खाने का आपने विधान किया है, और गीला अन्न खाने में तो फिर हिंसा ही रहेगी, क्योंकि उसमें जीव है।

सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक

'दहेज'

मानता हूं मेरी कीमत बेशक आज खाक है।
लेकिन कुछ समय बाद जरूर एक लाख है।
ज्यादा भी हो सकती थी अगर न होती मेरे खाज।
क्योंकि दहेज का तो है हमारे समाज में रिवाज।।

आज जो बहू दहेज नहीं ला सकती है।
वह चैन से रोटी नहीं खा सकती है।।
आज मांग है उससे फिर की कल टी. वी. भी जुड़ जाएगा।
नहीं तो इतना मंहगा मिट्टी का तेल किस काम आएगा।।

आज पैदा हुआ जिनके लड़का है।
समझो भाग्य उनका चमका है।।
लेकिन पैदा हुई है लड़की जिनके आज।
करो फिकर दहेज की बजाते रहो झांझ।।

इतनी गर्मी है आज दहेजकी हमारी खालों में।
जितनी गर्मी होती है ऊनी शालों में।।
दुल्हा बिकता है आज बाजार के भाव।
वह भी नहीं निकालता है अपने मुख से आवाज।।

यह प्रथा होगी तब ही बन्द।
जब हमारे समाज से निकलेगी गन्द।।

—संजीव मंगल पलवल

योग्य वर की आवश्यकता

गृह कार्य में दक्ष, सुन्दर, लम्बा कद, योग्यता मैट्रिक चमार कुलोत्पन्न आर्य परिवार की कन्या के लिए योग्य वर की आवश्यकता है निम्नलिखित पते पर आवश्यक जानकारी के लिए पत्र व्यवहार करें।

वेदपाल आर्य
सब पोस्टमास्टर उचाना (हरयाणा)

क्या सायण वेदार्थ–ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुलोम है ?

लेखक—वेदपाल एम० ए० रिसर्च फैलो दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ

डा० अभयदेव शर्मा (अजमेर) ने अपने शोध पत्र में (जो उन्होंने दयानन्द पीठ द्वारा आयोजित वेद गोष्ठी में पढ़ा था, तथा बाद में जिसे अपनी पत्रिका वेद सविता में प्रकाशित कर दिया) इस बात को बडे जोरदार शब्दों में प्रकट किया है कि सायण का वेदार्थ तो ब्राह्मण, कल्प सूत्र एवं मीमांसादि ऋषिकृत ग्रन्थों के अनुकूल है। अतः जिनको सायण का वेदार्थ उचित प्रतीत नहीं होता उनको ऐतरेय शतपथादि ऋषि कृत ग्रन्थों की आलोचना करनी चाहिये। पाठकों के परितोष के लिए डा० शर्मा के ओजस्वी शब्दों को यहां प्रस्तुत कर देना उपयुक्त होगा, जिससे डा० शर्मा के विचारों की स्पष्ट झलक पाठक वृन्द को मिल जाये वे लिखते हैं —'याज्ञिक कर्मकाण्डपरक अर्थ करने के कारण कुछ लोग (मेरे विचार में स्वामी दयानन्द तथा आर्य विद्वान्) रात दिन पानी पी-पी कर सायण को कोसा करते हैं। संयोग की बात है कि सायण के वेदार्थ सर्वाधिक प्रसिद्धि पा गये अन्यथा सायण से पहले और पश्चात् के लगभग सब प्रमुख वेदभाष्यकारों के अर्थ याज्ञिक कर्मकाण्ड परक हैं। अकेले सायण को पकडकर उसको कोड़े लगाना द्वेष मूलक गर्हित मनोवृत्ति मात्र है फिर सायण ने जो अर्थ किये हैं उनका आधार कल्प सूत्र है और उससे भी आगे ब्राह्मण ग्रन्थ है कोसना है और तिलां-जलि देनी है तो कल्पसूत्रों ब्राह्मण ग्रन्थों और पूर्व मीमांसा दर्शन का इनको भाजन बनाइये बेचारे सायण के पीछे क्यों पडे हैं पर ऐसा करने में हिचक इसलिये आती है कि कल्प सूत्र वेदांगों में परिगणित है। पूर्व मीमांसा एक आस्तिक दर्शन है और ब्राह्मण ग्रन्थों को त्याज्य ग्रन्थों की सूची में शामिल नहीं किया गया है। पूर्वाग्रह किस प्रकार साम्प्रदायिक दृष्टि वाले वेदानुशीलकों के पैर बान्धे हुये है यह इस मनोरंजक प्रसंग से स्पष्ट है। पृष्ठ ५.

माननीय डा० शर्मा के इस लम्बे लेखांश से दो बातों का स्फुरण हो रहा है, एक तो यह कि वेद के केवल याज्ञिक अर्थ परक भाष्य ही उपलब्ध होते हैं दूसरी यह कि सायण का वेदार्थ उन प्राचीन याज्ञिक वेद व्याख्यानों के अनुलोम है जो ऋषि कोटि के थे।

प्रथम यह स्पष्ट कर देना उपयुक्त होगा कि वेदार्थ करने का केवल मात्र एक याज्ञिक पद्धति ही नहीं है, वास्तविकता तो यह है कि प्राचीन ब्राह्मणकार ऋषियों ने वेदार्थ को रोचक ढंग से प्रत्यक्ष कराने के लिए उन बाह्य प्रतीकों को चुना जो कर्मकाण्ड में पूर्णतया उपयुक्त होकर एक विशेष अर्थ को प्रकट करने की क्षमता अपने अन्दर समेटे हुए थे। उदा-हरण के रूप में दर्शेष्टि में प्रयुक्त होने वाली पलाश शाखा को लीजिये, पलाश शब्द जहां वृक्ष विशेष के अर्थ को प्रकट की शक्ति रखता है वहां ब्राह्मण और ज्ञान को प्रकट करने की क्षमता भी रखता है इसी प्रकार गौ जहां प्राणी विशेष का वाचक है वहां वह दुग्धसम आत्मिक शक्ति को बढाने वाली ज्ञान धाराओं की वृष्टि करने वाली वेदवाणी का भी प्रख्यापक है। अतः वैदिक शब्द प्रतीकात्मक अर्थ पद्धति के प्रसारण में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुए और यह प्रतीक शैली कालान्तर में इतनी जनप्रिय एवं उपयोगी सिद्ध हुई कि सहस्रों मन्त्रों की व्याख्या ऋषियों ने इस पद्धति से प्रस्तुत कर डाली। ये ऋषिकृत याज्ञिक व्याख्याएं युक्ति युक्त थी, तथा इनको सभी ऋषि महर्षि स्वीकार करते थे। महाभारत युद्ध के पश्चात् काल में इन श्रौत यज्ञों का एक दूसरा ही रूप उभरा जो मात्र अनुष्ठान प्रधान था, तथा वेदार्थ की भावना गौण होते होते सर्वथा विलुप्त होने लगी और विधिपूर्वक अनुष्ठित दर्श पौर्ण मास आदि यज्ञ ही स्वर्ग प्रापक हैं यह भावना एकान्त होती चली गई, जिस का परिणाम यह हुआ कि भारतीय याज्ञिक पण्डित समुदाय ने वेदार्थ के चिन्तन की धारा से किनारा कर लिया और विधि विधान ज्ञापक सूत्र ग्रन्थों के पठन पाठन तक उनका अध्ययन क्षेत्र सीमित रह गया। शनैः शनैः इन याज्ञिक क्रिया कलापों को दिग्देशकालानुबन्धिनी परिस्थितियों ने प्रभावित किया और नाना कुत्सित अश्लील एवं क्रूर अनुष्ठानों का समावेश इन पद्धतियों में होता रहा। इस प्रकार जो ज्ञान गंगा की विमल धारा हिम शिखर से प्रादुर्भूत हुई थी, वह अनेक मलिन नागर नालों के मेल से दूषित होती हुई अपने असली स्वरूप को ही खो बैठी। एक समय आया जब भारतीय पण्डित मण्डली ने निःसंकोच यह घोषणा कर डाली कि वेदों की रचना केवल याज्ञिक विधि विधानों में पूर्त्यर्थ की गई है। इन्हीं भाव प्रभावों से आवेष्टित सायण कण्व संहिता भाष्य की भूमिका में लिख गया—"द्विविधश्च वेदे द्वौ काण्डौ कर्मकाण्डो ब्रह्म काण्ड श्च। बृहदारण्यकाख्यो व्याख्यो ग्रन्था ब्रह्म काण्ड स्तद् व्यतिरिक्तं शतपथ ब्राह्मण संहिता चेत्यनयो ग्रन्थयोः कर्मकाण्ड त्वम्।

अर्थात् वेद में दो ही काण्ड हैं एक कर्मकाण्ड दूसरा ब्रह्मकाण्ड। ब्रह्मकाण्ड केवल बृहदारण्यक में है तथा समस्त यजुर्वेद में दर्श पौर्णमास आदि कर्मकाण्ड है।

प्राचीन वैदिक साहित्य के व्याख्यात्मक ग्रन्थों के अध्ययन से यह धारणा निर्मूल हो जाती है, जबकि वेदार्थ की नैरुक्त प्रणाली वेदमन्त्रों की विविध व्याख्याएं प्रस्तुत करती है तथा यह मान्यता तब और भी बलवती हो जाती है जबकि यास्क एवं ब्राह्मण प्रवक्ता याज्ञवल्क्य के काल का मध्य दूरी अधिक सिद्ध नहीं हो पाती। न केवल नैरुक्त आचार्य अपितु स्वयं ब्राह्मणकारों ने भी वैदिक शब्दों की बहुविध व्याख्याएं प्रस्तुत करके यह स्पष्ट कर दिया है कि वेदमन्त्रों की व्या-ख्याएं अनेकधा हो सकती हैं। जिज्ञासु पाठक शतपथ के निम्न स्थलों को देख सकते हैं—

१. वाग् ह वा असौन्द्रवायवः। एतनन्वध्यात्मम् का. ४ अ.। बा ३ कण्डिका ?
२. क्रतू दक्षो ह वास्य मित्रावरुणौ। एतन् न्वध्यात्मम् का. ४ अ.। बा ४ क. ?
३. अथाध्यात्मम् आत्माग्नि प्राणाः शिवयम।

ये तीन तो केवल निदर्शन मात्र है अकेले शतपथ ब्राह्मण में अनेकत्र बहुविध अर्थ योजना महर्षि याज्ञवल्क्य ने प्रकट करके यह संकेत दे दिया है कि वेदार्थ को एक मात्र किसी एक प्रक्रिया तक सीमित नही किया जा सकता।

इत्थं निर्भ्रान्त मन से हम कह सकते हैं कि वेद मन्त्रों के अर्थ यज्ञीय विधि विधानों के बन्धनों से उन्मुक्त होकर भी किये जा सकते हैं और इस परम्परा का दर्शन, व्याकरण महाभाष्य में व्याख्यात् 'चत्वारि श्रृङ्गा त्रयोऽस्य पादा." इत्यादि मन्त्र के व्याकरण परक अर्थ के रूप में भी स्पष्ट हो रहा है। अतः इस धारणा को हमें अपने मन से निकाल देना चाहिये कि वेद के अर्थ केवल याज्ञिक पद्धति से ही किये जा सकते हैं। सायण का वेदार्थ याज्ञिक प्रक्रिया की उस धारा के पर्यावरण में प्रसूत हुआ है जबकि वह अपने उद्भव ज्ञान स्रोत से विदूर जाकर वाम-मार्गीय पौराणिक दूषणों से आलिप्त हो चुकी थी। इसलिए सायण के भाष्य में धातु प्रत्यय प्रदर्शन, यज्ञीय विधि विधानों के उल्लेख और पौराणिक असंगत गाथाओं के अतिरिक्त कुछ भी नूतनता का दर्शन हमें नहीं होता। पता नहीं हमारे लेख के आलोच्य डा० शर्मा ने किस मूढ में आकर सायण के वेदार्थ को ऋषि प्रज्ञा द्वारा प्रकाशित ब्राह्मण व्या-ख्यानों की समता में खडा करने का साहस किया है।

जिन भी विद्वानों ने ब्राह्मण साहित्य के अध्ययन में श्रम किया व साम्प्रदायिक भावना से उन्मुक्त होकर चिन्तन करने का साहस बटोरा है, उनकी सम्मति हम सायण के अनुकूल नही पाते। यद्यपि इस पंक्ति में हम स्वामी दयानन्द को प्रथम स्थान पर खड़ा कर सकते हैं जिन्होंने साम्प्रदायिक बन्धनों को तोडकर यथार्थता के दर्शन करने का महान् उद्योग किन्तु डा० शर्मा ने ऐसे सम्प्रदायवाद के प्रबल विध्वंसक को भी साम्प्रदायिकता के कटघरे में खड़ा करने का साहस करने में किञ्चित मात्र भी हिचक नहीं की। शान्त पापम्

[क्रमशः]

हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु सर्वत्र जोश

(निज संवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान एवं हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने सभा मन्त्री महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ के साथ गत सप्ताह हरयाणा के विभिन्न नगरों का भ्रमण किया है। आप जहां भी गये वहां हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सर्वत्र जोश की भावना देखने को मिली।

८ मई की साय सभा के दोनों अधिकारी आर्यसमाज यमुनानगर मे आयोजित बैठक में पधारे। यमुनानगर हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रधान श्री आश्चर्जलाल, सभा अन्तरग सदस्य वैद्य रामलाल तथा स्थानीय तीनो आर्यसमाजो के कार्यकर्त्ता इस बैठक मे उपस्थित थे। प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान की प्रेरणा पर पजाब के उग्रवादियों ने पटियाला आदि नगरो मे जो हिंसक गतिविधियो से आंतक फैला रखा है, के विरोध मे यमुनानगर मे एक दिन की हड़ताल करने का निर्णय किया गया, यह भी निश्चय किया गया कि एस० डी० एम० जगाधरी को ज्ञापन देकर भारत सरकार से मांग की जावे कि वे अकालियो के दबाव मे आकर उनकी हरयाणा विरोधी अनुचित मांगें स्वीकार न करे। तीनो आर्यसमाजो की ओर से सभा अधिकारियो को यह भी विश्वास दिलाया गया कि श्री सिद्धान्ती स्मारक में एक कमरा बनाने के लिए १० हजार रुपये सग्रह करके भेजा जावेगा। हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए यमुनानगर तथा जगाधरी क्षेत्र से एक हजार स्वयं सेवकों की भर्ती की जावेगी।

९ मई को ९ बजे सभा प्रधान जी सभा मन्त्री जी के साथ कुरुक्षेत्र पधारे। वहां भी कुरुक्षेत्र हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रधान चौ० सत्यदेव सिंह तथा आर्यसमाज थानेसर के अधिकारियो ने यमुनानगर की भांति सभा को पूर्ण सहयोग तथा एक दिन की हड़ताल का कार्यक्रम बनाया गया। उसी दिन प्रातः १० बजे सभा अधिकारी आर्यसमाज नीलोखेड़ी पधारे। आर्यसमाज के अधिकारियों ने इनका स्वागत करते हुए वचन दिया कि हरयाणा रक्षा वाहिनी के निर्देश पर नीलोखेड़ी की जनता किसी से पीछे नहीं रहेगी। इस बैठक मे विश्वहिन्दू परिषद् जिला करनाल के प्रधान श्री चमनलाल जी भी उपस्थित थे। सभा भवन के लिए शीघ्र ही ५ हजार रु० भेजने का आश्वासन भी दिया गया।

९ मई को ही साढे बारह बजे सभा अधिकारी आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल पधारे। आर्यसमाज तथा आर० डी० आर्य कन्या स्कूल के अधिकारियो ने इनका स्वागत किया तथा दोपहर बाद २ बजे एक विशेष बैठक मे निश्चय किया गया कि सभी आर्यसमाजो तथा रक्षा वाहिनी की बैठक करके एक दिन की हड़ताल तथा उपायुक्त करनाल को ज्ञापन देकर मांग की जावेगी कि अकालियों के साथ समझौता करते समय हरयाणा के हितो की उपेक्षा न करें। सभा भवन के लिए भी एक कमरा बनाने का वचन दिया गया। इस अवसर पर सभा अधिकारियों ने आर० डी० कन्या विद्यालय होली मोहल्ला करनाल का निरीक्षण किया। इस विद्यालय का इस वर्ष आठवीं श्रेणी का परिणाम ७७% रहा है तथा धार्मिक परीक्षा में भी छात्राएं भारी संख्या में उत्तीर्ण हुई हैं। इस आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी यथाशीघ्र मनाने की तैयारी हो रही है।

९ मई को सायंकाल ७ बजे पानीपत में सभा के पूर्व प्रधान श्री दलीपसिंह आर्य के निवास पर पधारे। वहाँ सभा के कोषाध्यक्ष एवं आर्यसमाज पानीपत के प्रधान श्री रामानन्द जी आदि अधिकारियों के साथ वर्तमान परिस्थितियो पर विचार विमर्श हुआ। इस अवसर पर ला० दलीपसिंह जी आर्य ने सभा निर्माण हेतु ५ हजार रुपये और भेजने का वचन दिया। गत वर्ष भी इन्होंने ५ हजार रुपये प्रदान किये थे। ला० रामानन्द जी ने भी आर्यसमाज की ओर से ५ हजार रुपये भेजने का विश्वास दिलाया। इस आर्यसमाज की भी स्थापना शताब्दी समारोह अगले वर्ष मनाया जावेगा। पानीपत से भी रक्षा वाहिनी को पूर्ण सहयोग देने का निर्णय दोहराया गया। प्रो० शेरसिंह जी ७ मई को फरीदाबाद पधारे थे।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

चंडीगढ पंजाब को न दो : चरण द्वारा इंदिरा को पत्र

नई दिल्ली, १२ मई (य. वा.) प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी को लिखे एक पत्र में लोकदल के नेता चौ: चरणसिंह ने अकाली आन्दोलन के समाधान के तौर पर चंडीगढ पंजाब को दिये जाने का विरोध किया है।

श्री चरणसिंह ने अपने पत्र में एक स्थानीय अखबार में छपी इस खबर का भी खंडन किया है कि १० मई को विपक्षी नेताओं की बैठक मे इस बात पर आम सहमति थी कि चण्डीगढ पंजाब को दे दिया जाना चाहिए।

भूतपूर्व प्रधान मन्त्री ने इस तथ्य को निराधार बताया और कहा कि हमने अपनी बातचीत के दौरान पजाब बनाम हरयाणा की मांगों पर उन्होने यह भी कहा था कि यदि १९६६ में ही केन्द्र ने शाह आयोग की रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया होता तो आज की स्थिति न पैदा होती।

(पंजाब केसरी)

आर्यसमाजो तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी के अधिकारियों से निवेदन है कि हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए स्वयं सेवकों की भर्ती करके सूची शीघ्र कार्यालय में भेजे।

संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी

दयानन्दमठ गोहाना रोड़ रोहतक

आर्यसमाजों को आवश्यक निर्देश—

प्रत्येक आर्यसमाज में आर्य वीर दल की शाखाएं शुरु की जायें

आर्यसमाज में नये रक्त का सचार सामयिक दृष्टि से नितान्त आवश्यक है। इसके लिए हर समाज अपने यहा तत्काल आर्य वीर दल तथा आर्य कुमार सभाओं का गठन करें तथा प्रतिदिन समाज मन्दिरों में सुविधानुसार इनकी शाखा लगाई जाये। आर्यसमाज में जहां जहाँ पुरोहित कार्य कर रहे हैं, वहा वहां यह कार्य इन्हें सौंपा जाये तथा स्थानीय समाज के अधिकारी इस कार्य में उनका रुचि लेकर सहयोग करें। विशेष प्रशिक्षण तथा शिविर आदि में हरयाणा आर्य वीर दल के अधिकारियो तथा शिक्षको का सहयोग भी प्राप्त किया जा सकता है।

वैसे भी हरयाणा आर्यवीर दल का शिक्षक वर्ग यदा-कदा इस कार्य को गति देने हेतु समाजों से सम्पर्क करे तो अधिकारी वर्ग उनका भोजन-निवासादि की सभी सुविधाएं उन्हें उपलब्ध करवायें। आर्य समाज का अधिकारी वर्ग इस दिशा में यथाशीघ्र योजनाबद्ध रूप से कार्यारम्भ करेगा, इसी आशा और विश्वास के साथ-

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक

आर्यसमाज की गतिविधियां—

एक समाज रक्षक दम तोड़ रहा है

(सत्यवीर आर्य हिसार द्वारा)

हिसार २२ अप्रेल, यहां से २४ कि० मी० दूर गांव कँवारी ११-४-१९८३ सुबह ६ बजे से अत्तरसिंह आर्य गांव में शराब पीने व बेचने के विरुद्ध आमरण अनशन पर बैठ गये थे। गांव के कुछ युवक बालक जिनमें इनके दो पुत्र शामिल हैं। रोजाना सुबह चौपाड़ में (जहां अनशन चल रहा था) यज्ञ करते थे तथा सुबह शाम शराब विरोधी नारे लगाया करते थे। ११ दिन तक लगातार अनशन चला। दूर-दूर तक चिंता शुरु हुई। आस-पास के सात गांवों की पंचायत इकट्ठी हुई। अनशन का बहुत प्रभाव पड़ा। समाज विरोधी तत्वों की हिम्मत कुछ कम हुई। बहू-बेटियों की इज्जत का खतरा कुछ कम हुआ। पंचायत ने शराब पीने वालों पर ५० रु० तथा निकालने वालों पर १०० रुपये जुर्माना घोषित कर दिया व शराब निकालने या पीने की सूचना देने वाले को २५ रुपये ईनाम घोषित हुआ। परन्तु इतना होते हुए भी इस समाज रक्षक क्रांतिकारी नवयुवक का त्याग पूर्णत: सफल नहीं हुआ था। अत्तरसिंह आर्य के अनुसार गांव में शराब का मुख्य स्रोत वे १५० भूतपूर्व सैनिक हैं। जो फौजी कोटे की दो-दो बोतलें प्रति माह सैनिक १८-१८ रु० की लाकर ५०-५० रुपये में खुले आम बेच रहे हैं। इससे गांव में शराब से आतंक अभी भी जोरों पर है।

इस शेष मांग को लेकर २१-४-१९८३ तक ये अनशन पर थे कि कुछ गांव के लोगों द्वारा उपायुक्त को पत्र लिख दिया कि गांव में अत्तरसिंह के अन्तिम दिन हैं। २१-४-१९८३ को १२ बजे (दोपहर) पुलिस गार्ड आकर इन्हें आत्म हत्या (३०९ धारा) का झूठा केस बनाकर गिरफ्तार करके हिसार सैन्ट्रल जेल की सी श्रेणी में डाल चुकी है।

अत्तरसिंह आर्य साहसी तथा ३२ वर्षीय नवयुवक है। इनके दो लड़के हैं। वे अपने निर्णय पर अडिग हैं। उनका कहना है कि मुझे गांव में फैले आतंक के बदले प्राण देने में जरा भी डर नहीं लग रहा है।

हिसार के सक्रिय समाज सेवी सीताराम आर्य तथा हरिसिंह (शाहपुर) जब उनसे मिलने गये तो पता चला कि उन्हें निम्बू का पानी जेल अधिकारियों द्वारा भी उपलब्ध नहीं कराया गया है। उनकी हालत बिगड़ती जा रही है।

जलालुद्दीन जयदेव आर्य बने

आर्यसमाज ओबरा ७ अप्रैल १९८३ को आर्यसमाज ओबरा के तत्वावधान में श्री जलालुद्दीन ने वैदिक धर्म की विशेषताओं से प्रभावित होकर इस्लाम धर्म का परित्याग कर श्री नन्दकिशोरसिंह तथा श्री द्वारिकाप्रसाद जी के पौरोहित्य में अपने पुराने धर्म-वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) को स्वीकार किया। इस अवसर पर उपस्थित पांच हजार से भी अधिक नागरिकों के समक्ष शुद्धि के बाद माला बनर्जी नामक कन्या से उनका विवाह संस्कार भी सम्पन्न हुआ। कन्या पाणिग्रहण का कार्य श्री टी० एन० शुक्ल एवं उनकी पत्नी ने धर्मपिता एवं माता के रूप में कराया। श्री प० सुरेशचन्द्र वेदालंकार ने शुद्धि एवं विवाह संस्कार में आये मन्त्रों की अत्यन्त भावपूर्ण शब्दों में व्याख्या प्रस्तुत की जिसे जनता मन्त्र मुग्ध होकर सुनती रही और इस वैदिक पद्धति का जनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा। श्री आर० डी० शर्मा, श्री कपिलदेव आर्य और श्री रामयश, पुष्पजीवी श्री रामेश्वरसिंह, श्री गुलाबसिंह एवं श्री कैलाशनाथ ने इस कार्य में बहुत सहयोग प्रदान किया। उपस्थित भारी जनसमूह ने इस अवसर पर वर-वधू को हार्दिक आशीर्वाद दिया।

द्वारिका प्रसाद आर्य
मन्त्री आर्यसमाज, ओबरा जनपद मिर्जापुर

पलवल में रामनवमी महोत्सव

दिनांक २१-४-८३ वीरवार आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल की ओर से चौ० रामजीलाल एम० ए० मु. अ. टीकरी ब्राह्मण की अध्यक्षता में रामनवमी का महोत्सव बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इसमें सैकड़ों स्त्री पुरुषों ने भाग लिया। वक्ताओं ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन पर प्रकाश डालते हुए आज के वातावरण के दृष्टिगत तमाम हिन्दुओं को आर्यसमाज को सहयोग देते हुए एक ओम्ध्वज के नीचे एक हो जाने का आह्वान् किया। इस अवसर पर श्री आनन्दस्वरूप भाटिया ने दो प्रस्ताव रखे जिसके अनुसार केन्द्रीय सरकार से अनुरोध किया गया कि भविष्य में रामनवमी पर सार्वजनिक अवकाश तथा भारत को आर्य राष्ट्र घोषित करे। जनता ने हाथ उठाकर प्रस्तावों का अनुमोदन किया। —आनन्दस्वरूप भाटिया

मन्त्री आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के पास प्रतिनिधि फार्म कार्यालय से डाक द्वारा भेजे गये हैं। अत: इस वर्ष के लिए जो नये अधिकारी तथा सभा के प्रतिनिधि चुने गये हैं, के नाम फार्म में भरकर वेदप्रचार दशांश सर्वहितकारी के शुल्क की राशि सहित शीघ्र भेजने की कृपा करें। प्रचार की आवश्यकता हो तो तुरन्त सभा को पत्र लिखें। यदि किसी समाज को अभी तक फार्म न मिले हों तो पत्र लिखकर मंगवा लेवें।

सभा मन्त्री

स्वामी ओमानन्द सरस्वती के अभिनन्दन हेतु दानदाताओं की सूची

आर्यसमाज नरेला, दिल्ली	६१०१
आर्यसमाज, नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद	५०००
पांच भाई साबुन वाले, बल्लभगढ	११००
सूबे० रूपचन्द धनासरी, भिवानी	१००१
श्री देवकराम जी, दूधवा, भिवानी	५०५
श्री जयदेव शास्त्री, मुन्नावाली, हिसार	५०१
आर्यसमाज, सेवासदन, बल्लभगढ	५००
ब्र० आनन्दकुमार सुरीनाम (अमेरिका)	५०१
चौ० प्रतापसिंह रायबहादुर, करनाल	५००
वैद्य अवतारसिंह, बिलसूरी, बुलन्दशहर	५०१
श्री नवनीतलाल एडवोकेट, निजामुद्दीन, दिल्ली	५०१
म० बलवन्तसिंह आर्य, मकड़ोली कलाँ रोहतक	१०१
श्री आचार्य राजकुमार शास्त्री, सुनारियां, रोहतक	१०१
श्री धर्मवीर शास्त्री नयाबास	१००
डॉ० लोकेशचन्द्र जी राज्य सभा सदस्य, दिल्ली	१०१
श्री सोमप्रकाश प्रमोदकुमार, टिम्बरमर्चेण्ट, यमुनानगर	१०१
श्री लाला रामेश्वरदास गुप्त, दिल्ली	१०१
श्रीमती जमुनादेवी, लुधियाना	१००
श्री जे० के० धीर चण्डीगढ	१००
श्री मेदसिंह, दहकोरा, रोहतक	१०१
श्री ओम्प्रकाश सर्राफ, मेरठ	१०१
श्री उदमीराम एडवोकेट, नारनौल	१०१
आर्यसमाज गुड़गांव छावनी	१०१
ब्र० सुपर्णा यति, कोटली कालोनी, जम्मू	१०१
मा० मांगेराम आर्य बांकनेर, दिल्ली	१०१
डॉ० रणवीर शास्त्री, पौली जीन्द	१०१
श्री रामपाल शास्त्री, समाल, रोहतक	१०१
श्री मुहम्मद अहमद जैयद प्रेस, बल्लीमारान दिल्ली	१०१
११ जाट बटालियन	१११
कविराज योगेन्द्रपाल, कन्या गुरुकुल कनखल	१०१
प्रो० रामप्रसाद आचार्य गुरुकुल कांगड़ी	१००
मेजर चन्दनसिंह, बादली	१०१
योगेन्द्र पुरुषार्थी, ज्वालापुर	१०१
चौ० शिशुपाल, बादली, रोहतक	१०१
चौ० मनीराम जी, आदर्श नंगला, मेरठ	१०१
प्रो० वेदप्रकाश जी मान आदर्श नगला मेरठ	१०१
डॉ० मनोहरलाल, कैथल	१०१
श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक, गुरुकुल झज्जर	१०१
चौ० उमरावसिंह, सत्यपाल, गाजियाबाद	१०१
मा० निहालसिंह आर्य, दिसोर खेड़ी	१०१
श्रीमती विद्यावती शास्त्री, लुहारहेड़ी	१०१
श्रीमती ब्रह्मवती शास्त्री, पाकसमा	१०१
श्रीमती प्रेमवती शास्त्री, कन्यागुरुकुल दाधिया, अलवर	१०१
श्रीमती सुखदा शास्त्री, कन्हौरी, महेन्द्रगढ	१०१

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १०, अङ्क २३ | २१ मई १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त त्यागी तपस्वी आर्य संन्यासी—

स्वामी ओमानन्द सरस्वती का आर्य जनता द्वारा भव्य अभिनन्दन सम्पन्न

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वीतराग त्यागी तपस्वी विद्वान् लेखक महावैद्य, भारतीय संस्कृति के प्रतीक, वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रति पूर्णतः समर्पित, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के रक्षक, महान समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी तथा आन्दोलनों के प्रमुख संचालक स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (पूर्व आचार्य भगवानदेव) का १५ मई को उन द्वारा स्थापित कन्या गुरुकुल नरेला की रजत जयन्ती के अवसर पर आर्य जनता विशेषकर स्नातक मण्डल गुरुकुल झज्जर की ओर से भव्य अभिनन्दन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता आर्य जगत् के जाने माने उच्चकोटि के संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी की ओर इस अवसर पर आर्य जगत् के एक आदर्श महान् संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने शिष्य स्वामी ओमानन्द जी को ५० वर्ष से निरन्तर आर्यसमाज की दिनरात निस्वार्थ भावना से सेवा करने के उपलक्ष में एक अभिनन्दन ग्रंथ व वस्त्र भेंट किया। इस अवसर पर हरयाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान से हजारों की संख्या में उनके श्रद्धालु आर्य नर-नारी उपस्थित थे। इससे पूर्व कन्या गुरुकुल नरेला की यज्ञशाला में एक सौ मन गौ-घृत से चतुर्वेद पारायण यज्ञ (गत वर्ष के उत्सव से आरम्भ) की पूर्णाहुति बहुत ही आकर्षक रूप में सम्पन्न हुई।

अभिनन्दन समारोह की कार्यवाही का सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री ने किया तथा सभा के पूर्व मन्त्री डा० रणजीतसिंह ने जनता को स्वामी ओमानन्द जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि स्वामी जी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के एक महान् आर्य साधु हैं, जिन पर आर्यसमाज को गर्व है। आर्यसमाज का गत ५० वर्षों का शानदार इतिहास इनसे जुड़ा हुआ है। इस प्रकार के साक्षात् ऋषि मूर्ति एवं महापुरुषों का जन्म कभी कभी होता है। अतः इनका अभिनन्दन करके हम अपने कर्त्तव्य का ही पालन कर रहे हैं। स्वागत समिति के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने स्वामी जी का स्वागत करते हुए कहा कि स्वामी जी ने ५० वर्ष तक आर्यसमाज की सेवा की है, परन्तु अपने शरीर के लिए कुछ नहीं रखा। दिल्ली के निकट पैतृक सम्पत्ति सैकड़ों बीघे उपजाऊ भूमि जिसका मूल्य आज करोड़ों रुपये से अधिक है, गुरुकुलों तथा आर्य समाज के प्रचार के लिए दान कर दी और स्वयं एक लंगोटी, चादर में नंगे पैरों रहकर तप त्याग का जीवन अपनाया है। हमने सम्मानार्थ इन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ तो तैयार कर दिया है परन्तु अभी तक जीप भेंट करने के लिए पूरा धन संग्रह नहीं हो सका। अतः मैं अपनी ओर से ११००) देते हुए आर्य जनता से धन संग्रह की अपील करता हूं ताकि स्वामी जी नई जीप द्वारा आर्यसमाज की सुविधापूर्वक सेवा करते रहें। इस अपील पर आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के प्रधान महात्मा



स्वामी ओमानन्द सरस्वती

आनन्दमुनि जी, स्वामी धर्मानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा श्री सोमनाथ मरवाह कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, चौ० प्रतापसिंह उप प्रतिनिधि सभा हरयाणा, म० भरतसिंह वानप्रस्थ मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, स्वामी रत्नदेव जी कुलपति गुरुकुल कुम्भाखेड़ा, खरल, कुमारी सुमित्रा आचार्या कन्या गुरुकुल नरेला, ब्र० बिजपाल गुरुकुल झज्जर, आचार्य देवदत्त भारती मन्त्री गुरुकुल गदपुरी, चौ: हीरासिंह भूतपूर्व कार्यकारी पार्षद डा० लोकेशचन्द्र संसद सदस्य, पं० क्षितीश कुमार वेदालंकार सम्पादक आर्य जगत्, ला० दलीपसिंह आर्य पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा श्री रामलाल मलिक दिल्ली, स्वामी रुद्रवेश क्रान्तिकारी भजनोपदेशक, प्रिंसीपल लाभसिंह पानीपत, आचार्या हरिदेव दिल्ली, चौ० हरकिशन मलिक पूर्व न्यायधीश दिल्ली, प्रिंसीपल होशियारसिंह, मास्टर निहालसिंह आर्य, चौ० कबूलसिंह मंत्री सर्वखाप पंचायत आदि नेताओं ने स्वामी जी के अमूल्य कार्यों की सराहना करते हुये तथा उनके दीर्घ जीवन की कामना की। स्वामी सत्यप्रकाश जी अभिनन्दन करने के लिए स्नातक मण्डल का धन्यवाद किया और कहा मुझे हरयाणा प्रदेश में सबसे अधिक गुरुकुलों के स्नातक, सबसे अधिक साधु तथा सबसे अधिक आर्यसमाज का प्रचार देखकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है। स्वामी ओमानन्द जी का परिश्रम सफल हो रहा है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि मेरा अगला जन्म हरयाणा में होवे।

कन्या गुरुकुल की रजत जयन्ती के अवसर पर गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने योग, तलवारें तथा लाठियां आदि चलाने का शानदार प्रदर्शन किया।

क्या सायण वेदार्थ–ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुलोम हैं ?

लेखक—वेदपाल एम० ए० रिसर्च फैलो दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ

(गतांक से आगे)

अस्तु मैं स्वामी दयानन्द के सायण विषयक मत को छोड़ता हूं क्योंकि डा शर्मा का विश्वास स्वामी दयानन्द के वेदाध्य एवं चिन्तन पर नहीं है। परन्तु ये देखिये शतपथ भाष्यकार पं० मोतीलाल शर्मा जिन्हें जयपुर वासी महा महोपाध्याय पंडित मधु सूदन ओझा से १५ वर्ष निरन्तर शतपथ के अध्ययन करने का गर्व है तथा अपने आपको सनातन धर्म का प्रखर प्रवक्ता भी मानते हैं सायण के विषय में क्या धारणा रखते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में कृतभूरिश्रम विद्वान् लेखक ने शतपथ विज्ञान भाष्य के आत्म निवेदन के पृष्ठ ६१ पर शतपथ के चार प्रसग प्रस्तुत कर सायण की वेदार्थ करने की योग्यता की जांच पड़ताल की है, जिन्हें लेख विस्तार भय से संक्षेप में यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।

१. शतपथ १—४—५—४ में देवता और असुर परस्पर प्रतिस्पर्धा करने लग पड़े इस पृथिवी लोक को माध्यम बनाकर उनके बीच में गायत्री खड़ी हो गई इत्यादि।

२. वृत्र नामक असुर सब पर छा गया इन्द्र ने वज्र प्रहार से उसे मार दिया। वृत्र का शरीर जल में तंरने लगा इत्यादि शतपथ १-१-३-४-५

३. यज्ञ देवताओं को छोड़कर पलायित हो गया वह काला मृग बनकर विचरण करने लगा इत्यादि शतपथ १-१-४-१-२

४. मनु के पास बैल था जिसकी ध्वनि से असुर निष्प्राण वत् हो जाते थे इत्यादि शतपथ प्रथम काण्ड।

शतपथ ब्राह्मण प्रथम काण्ड के इन चार प्रसंगों को लिखकर मधु सूदन ओझा के प्रगल्भ शिष्य सायण के भाष्य पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं—

"हमने यहां चार उदाहरण उद्धृत किये हैं उनके लिए पाठक सायण भाष्य पर दृष्टि डालने का अनुग्रह करें। स्पष्ट हो जायेगा कि ज्ञान विज्ञानात्मिक परिभाषाओं से आत्यन्तिक रूपेण तटस्थ वेद भाष्यकार श्री सायणाचार्य भी इन वंदिक आख्यानों का पारिभाषिक समन्वय नहीं कर सके"

५. पाठक समझ गये होंगे कि ब्राह्मण प्रोक्त वेद व्याख्यानों के उद्घारन कि वा अवगमन में सायण की पहुंच कहां तक थी। वास्तविकता तो यह है कि सायण वैदिक विज्ञान के आलोक से अतिदूर मध्य कालीन अवैदिक पौराणिक परम्पराओं के अन्धेरे में रहकर वेदभाष्य करने में प्रवृत्त हुआ था और उसका परिणाम क्या हुआ यह सर्वविदित है। वैदिक ज्ञान धाराओं से सर्वथा अनभिज्ञ पाश्चात्य विद्वानों ने इसी सायण के वेदार्थ के सहारे ही उस विश्व वारा वैदिक संस्कृति एवं सर्व ज्ञानमय मन्त्र संहिता को, ज्ञान विज्ञान शून्य नाना देवी देवताओं के आराधक, अनपढ़, नरबलितक करने वाले क्रूर लोगों की सस्कृति एव देवी वाग् वेद को ग्रामीण गीत प्रचारित करने में भरपूर सहायता प्रदान की, जो आज भी भारतीय प्रज्ञा को दिग्भ्रमित कर रही हैं यही कारण था कि महाप्रज्ञ, निरपेक्ष चिन्तक, योगिराज अरविन्द ने इस यथार्थता को पहचाना और लिखा—

But it is central defect of Sayana's system that he is obsessed always by the ritualistic formula and seeks continually to force the sense of the Vedas into that norrow mould. So he loses many clues of the greatest suggestiveness and importance for the external sense of the ancient scripture······

The Secret of Veda. Page 18

सन्दर्भ का भाव स्पष्ट है कि सायण ने प्राचीन ऋषि कृत वेदार्थ सिद्धान्तों का परित्याग करके जबरदस्ती सभी मन्त्रों को कर्मकाण्ड के संकुचित सांचे में डालने की महती भूल की। सायण के वेदार्थ की समीक्षा करते हुये योगिराज अरविन्द आगे पुन: लिखते हैं—

The out come is representaion of the Rishis their thoughts, their aspirations, so norrow and poverty stricken that if accepted it renders the ancient reverence for the Veda its sacred authority, its divine reputation quite incomprehensible to the reason or only explicable as a blind and unqnestioning tradition of faith starting an original error.

The secret of the Veda. Page 18

इस लम्बे उदाहरण का सारांश यह है कि यदि सायण भाष्य को ऋषियों के विचारों, अभीप्साओं तथा उनकी संस्कृति का प्रतिनिधि स्वीकार कर लिया जाये तो बिना ननु नच किये यह मानना पड़ेगा कि इस वैदिक वाद का प्रारम्भ एक मौलिक भूल से हुआ।

परम सौभाग्य की घड़ी थी वह जब ऋषि दयानन्द की विमल प्रज्ञा ने, दिव्य मेधा ने यह परख लिया कि सायणादि कृत वेदार्थ, मन्त्र की मूल भावना तथा ऋषि व्याख्यानों के प्रतिलोम हैं। यद्यपि महर्षि दयानन्द ने अपने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकादि ग्रन्थों में सायण महीधर आदि की पौराणिक याज्ञिक व्याख्याएं कथम्त या शतपथादि ब्राह्मण व्याख्यान के प्रतिकूल है इसका दिग्दर्शन सोदाहरण करा दिया था परन्तु आश्चर्य है डा० शर्मा का ध्यान उधर नहीं गया।

सम्पादकीय

कमी किस की ?

लगभग ३६ वर्ष से भारत की प्राकृतिक तथा अप्राकृतिक सम्पदा भारतीय सत्ता के आधीन है। इस लम्बी अवधि को पार कर चुकने के बाद भी इसका आर्थिक विकास उतना नहीं हो पाया है। देश की आधी से अधिक जनसंख्या अभी भी निर्धनता की रेखा से नीचे जी रही है। बौद्धिक विकास में उल्लेखनीय प्रगति यद्यपि हुई है किन्तु सांस्कृतिक विकास तो नगण्य सा ही हो पाया है। चापलूस, चाटुकार और जी-हजूरिये नोकर तैयार करने में तत्पर शिक्षा क्षेत्र ही इसका मुख्य कारण है। ३६ वर्ष का समय एक देश के आत्म निर्भर होने के लिए सर्वव्यापी भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए तथा आदर्श शिक्षा पद्धति की स्थापना कर योग्य नागरिक निर्माण करने तथा देशव्यापी सर्व-क्षेत्रीय, समन्वित और सर्वांगीण निर्माण की क्रांतिकारी भावना को जन-जन में जागृत करने के लिए कम नहीं होता। विश्व के कई देशों का इतिहास इसका साक्षी है।

इसके कारणों पर विचार करते हुये केवल एक ही कारण दृष्टि-गोचर होता है जो सब कारणों का जनक है। यह है भारत में भारतीयों की कमी। जैसे सब साधनों तथा साध्यों के रहते भी साधक के अभाव में सब निरर्थक हो जाते हैं वैसे ही भारत भूमि के रत्नगर्भा होने पर भी भारतीयों में भारतीयता के अभाव के कारण इसकी सभी विशेषताएं निरर्थक होकर रह गई हैं। मात्र भारत में पैदा होने तथा भारतीय नागरिकता कानून द्वारा प्राप्त कर लेने से ही कोई भारतीय नहीं हो जाता है जब तक कि उसमें भारत के प्रति सच्चा प्रेम न हो। जरा आग्रहों से मुक्त होकर विचार करने बैठें तो हमें पता चलेगा कि हम भारतीय नहीं प्रत्युत असमी हैं, बंगाली हैं, महाराष्ट्रियन हैं, गुजराती हैं, पंजाबी हैं, मद्रासी हैं, हरयाणवी हैं और इतना ही नहीं बल्कि सिख हैं, मुसलमान हैं, ईसाई हैं, जैनी हैं तथा उनमें भी ब्राह्मण हैं, बनिये हैं, जाट हैं, राजपूत हैं, चूहड़े हैं, चमार हैं, तेली हैं, धोबी हैं या फिर इसी प्रकार के कोई और हैं। हाँ, भारतीय नहीं हैं। यदि होते तो देश को स्वतन्त्र वातावरण में भी इतनी विकराल समस्याओं का सामना न करना पड़ता। सर्व साधन सम्पन्न भारत में भी यदि आज किसी चीज की कमी है तो केवल इसके नागरिकों में भारतीयता की। हमारा क्षेत्रीय, जातीय और साम्प्रदायिक दृष्टिकोण ही समग्र राष्ट्रीय विकास में बाधक है।

भारत की अधिकांश जनता लगभग अशिक्षित तथा निर्धन है। इसके ग्रामीण तथा शहरी दो वर्ग हैं। अशिक्षित नागरिक चाहे वह शहरी हो या देहाती, उसपर अभारतीयता का दोषारोपण नहीं किया जा सकता। अशिक्षित होने के कारण बेचारा क्षम्य है। ज्ञान की कमी तथा उसकी अपनी गरीबी उसे भारत के प्रति अपना कर्त्तव्य समझने नहीं देती। हाँ, शिक्षित समाज इसके लिए निश्चित ही उत्तरदायी है। शिक्षित भारतीय भी अधिकांश अर्द्ध शिक्षित तथा कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त होने से दो भागों में विभक्त हो जाते हैं। इन दोनों ही श्रेणियों के लोग शिक्षा के द्वारा जीविको पार्जन करते हैं। शिक्षित होने के कारण इन्हें ज्ञान है और सभी काम ये लोग बुद्धि के साथ करते हैं अतः इन्हें उक्त दोष से दूषित कहा जा सकता है। इन्हें जहां देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का बोध होना तथा उन कर्त्तव्यों की पूर्ति में प्राण-पण से जुटना चाहिये वहां हो इसका उल्टा रहा है। आज देश का कौनसा ऐसा स्थान है जहां घूसखोरी, चोरबाजारी, पर अधिकार हरण की कुचेष्टा तथा उचित-अनुचित का ध्यान न कर स्वयं को तथा स्व-जनों को ही पुष्ट करने में यह वर्ग नहीं जुटा। भ्रष्टाचार की नित्य नई तकनीक को आविष्कृत करने में यह वर्ग जी-जान से लगा है। देश का चाहे सार्व-जनिक क्षेत्र हो या व्यक्तिगत, धार्मिक हो या सामाजिक और फिर सांस्कृतिक हो या शैक्षिक सभी अनाचार के जंकशन बने हैं। अखबारों में छपे मिथ्या ब्यान, घोषणा और आंकड़े इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। यह दोनों प्रकार का शिक्षित वर्ग विकास के कागजी घोड़े दौड़ाकर ही अपनी इतिकर्त्तव्यता समझ लेता है। यह कहते हुये खेद होता है कि आज देश में जितना भी कुछ अनुचित हो रहा है उसे करता अर्द्धशिक्षित तथा प्रश्रय देता है उच्च शिक्षा प्राप्त भारतीय जो इंजिनियर हैं, डाक्टर है, वकील, प्राध्यापक है या फिर ऐसा कुछ और है। इसमें दो मत नहीं हैं कि यदि उक्त शिक्षित वर्ग चाहे तो राष्ट्र के पुर्ननिर्माण में महत्त्वपूर्ण रोल अदा कर सकता है।

देश की जनसंख्या का चौथा वर्ग नेताओं का वर्ग है। यद्यपि यह भेद शिक्षा की दृष्टि से तो नहीं किया जा सकता किन्तु इन बेचारों को अलग श्रेणी में रखना ही उपयुक्त है। इन्हीं पर तो देश का भविष्य निर्भर करता है। सरकार इनके हाथों में रहती है। देश के विकास की रूप-रेखा इन्हीं को तैयार करनी होती है। देश के अन्दर हर प्रकार की उथल-पुथल लाने वाला भी यही वर्ग होता है। वास्तव में यही देश का कर्णधार है।

एक समय था जब भारत के नेता जनता के बीच घूमते हुये जनता को प्रजा बनाया करते थे। देश हित के लिए अपने बड़े से बड़े सुख व उसे जुटाने वाले साधन को ठोकर मार देते थे। तभी वे देवतुल्य भी समझे जाते थे। हां उस समय इनकी संख्या इतनी न थी जितनी आजहै। कारण स्पष्ट है। पग पग पर आने वाले कष्टों का सामना करना हर-एक के बस की बात नहीं। फिर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक कर्त्तव्य शेष था, इसे प्राप्त करते ही लगता है उसका भी अन्त हो गया। स्वतन्त्र देश का नेता अधिकारों की दुनियां का नेता है। तभी तो कुर्सियों की छीना-झपटी देश के हर क्षेत्र में जोरों पर है। आज का नेता 'बिकाऊ' की उपाधि से विभूषित है नित्य नये राजनैतिक दलों का जन्म इसी का परिणाम तो है। अब इन नेताओं की इति कर्त्तव्यता येन-केन-प्रकारेण कुर्सिया हस्त-गत करने में ही रह गई है। पद-प्राप्ति की लिप्सा में आज का नेता धर्म को धर्म से, जाति को जाति से, वर्ग को वर्ग से तथा प्रान्त को प्रान्त से लड़ा रहा है। चुनाव से पहले और चुनाव के बाद का इसका रूप देखने वाला ही होता है। वैसे इसका अपना दावा तो यही रहता है कि देशोत्थान के लिए सर्वथा निस्वार्थ भाव से कर्त्तव्य का पालन वह ही कर रहा है। इस वर्ग को भी यह जान लेने की नितान्त आवश्यकता है कि इसका कर्त्तव्य न तो कुर्सी हेतु लड़ना तथा न ही यह उपलब्ध हो जाने पर बैठे-बैठे इसे तोड़ते रहना है। क्या उनका कर्तव्य यह नहीं है कि वे जो कानून बन चुका है, उसका परिचय जनता से करवायें तथा उसके पालनार्थ जनता में नैतिक बाध्यता उत्पन्न करें जिससे आदेशा-त्मक बाध्यता का अन्त हो। तभी तो देश के हर वर्ग और हर क्षेत्र में शान्ति और कर्त्तव्य भावना का विस्तार होगा। तभी अधिकार रूपी विष की ज्वाला का अन्त हो सकेगा।

कर्त्तव्यकर्म बाध्यता मूलक ही होता है। पर जब 'अर्के चेन्मधु-विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत' बातों से ही काम चल जाता हो तो कर्त्तव्य के पचड़े में कौन पड़े। पर कमी का अर्थ यह नहीं होता कि उस वस्तु का सर्वथा अभाव है बल्कि यही होता है कि है तो सही पर कम है। भारत में भारतीय भी हैं पर वर्तमान में उनकी संख्या बहुत कम है। यहां तक कि समुद्र में बूंद के समान। सामयिकता को देखते हुए प्रत्येक भारतवासी को चाहिये कि अतीत में तथा वर्तमान में जो लोग अपनी मूक व प्रत्यक्ष सेवाएं इसको अर्पित कर चुके या कर रहे हैं उनके द्वारा छोड़े गये पद-चिन्हों का अनुकरण कर वह कर्त्तव्य की दुनियां में प्रवेश करे। देश कल्याणार्थ कृतशक्ति कर्त्तव्य में निवास करती है, अधिकार में नहीं। अतः देश के एक प्रखर एवं प्रौढ़ चिंतक के ये शब्द- यहां तक कि महत्त्वपूर्ण से महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी मृत्यु से नहीं बच सकता। हां, यदि हम सभी भारतवासी विशुद्ध भारतीय बनकर प्रयत्न करें तो देश को मरने से अवश्य बचाया जा सकता है' विचारणीय हैं।

—रणवीर

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी महोत्सव

इसी अजमेर नगरी में १९३३ में महर्षि दयानन्द के निर्वाण की अर्धशती का समारोह बड़े ही विशाल एवं भव्य रूप से परोपकारिणी सभा द्वारा मनाया गया था। समारोह के प्रधान तत्कालीन परोपकारिणी सभा के प्रधान महाराजाधिराज श्रीमान् उमेदसिंह जी बने थे और समारोह के कार्यकर्त्ता प्रधान थे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रद्धेय महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, शेष सभी अधिकारी सभा के थे और धन का संग्रह एवं व्यय परोपकारिणी सभा द्वारा किया गया था। उस विशाल आयोजन को सफल बनाने में सभा के प्रतिष्ठित अधिकारी व सभासद श्री हरविलास जी शारदा, श्री घीसूलाल जी एडोकेट, चांदकरण जी शारदा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आज जब महर्षि दयानन्द के निर्वाण को सौ वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं तो स्वाभाविक ही था कि परोपकारिणी सभा अपने दायित्व को समझती और उसको पूरा करती, और इसी उद्देश्य से आज से लगभग पांच वर्ष पूर्व परोपकारिणी सभा ने प्रस्ताव किया तथा शताब्दी समारोह मनाने की तैयारी प्रारम्भ की। फिर नवम्बर १९७८ में परोपकारिणी सभा के साधारण अधिवेशन में स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी जी की अध्यक्षता में समारोह को अजमेर में सम्पन्न करने के संकल्प को दोहराते हुये सर्वसम्मत प्रस्ताव को पारित करते हुये ऋषि उद्यान में भव्य यज्ञशाला, पुस्तकालय, शोध संस्थान के निर्माण की योजना पारित की, उस समय के परोपकारिणी के सदस्य और सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले की सहमति थी और उन्होंने पहले व्यक्ति के रूप में सभा के समारोह और योजना में सर्वात्मना सहयोग देने की घोषणा की। इस निर्णय के अनुसार सभा ने परोपकारिणी मासिक पत्र के माध्यम से आर्य जनता तक सभा का पुनीत संकल्प पहुँचाना प्रारम्भ किया। इसके लिए अपेक्षित सहयोग के लिये धन संग्रह की टिकटें व रसीदें छापी।

शताब्दी के स्थाई कार्य के रूप में बहुत व्यय एवं समय साध्य कार्य स्वामी जी महाराज के ग्रन्थों का शताब्दी संस्करण प्रकाशित करना था, सभा ने इस कार्य को प्रमुखता दी और स्वामी ओमानन्द जी ने विद्वानों की प्रकाशन समिति गठित की और सभा ने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। अभी तक दयानन्द ग्रन्थमाला २ भाग, सामपद-पाठ, आत्मकथा आदि प्रायः बीस ग्रन्थ छप चुके हैं। स्वामी सत्यप्रकाश जी के सम्पादकत्व में स्मृति ग्रन्थ, डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा लिखित दयानन्द जीवनी, वेद और वेदभाष्य छप रहे हैं। इन पर कई लाख रुपया सभा व्यय कर रही है। यह शताब्दी का मुख्य कार्य है, समारोह पहले भी बहुत हुये हैं और आगे भी होते रहेंगे परन्तु इस कार्य को परोपकारिणी सभा ही कर सकती थी, दूसरी सभाय नहीं।

समारोह की विशालता एवं कार्य की व्यापकता को ध्यान में रखते हुये अखिल भारतीय समिति के गठन का भी निश्चय पांच वर्ष पूर्व ही ले लिया गया था। समिति का विधिवत् गठन १९८१ में हो चुका था और इस समिति का प्रथम अधिवेशन नवम्बर १९८२ में अजमेर में सम्पन्न हुआ और व्यापक रूप से कार्य प्रारम्भ किया गया। समिति का दूसरा अधिवेशन दिसम्बर १९८२ में दिल्ली में सम्पन्न हुआ और तीसरा अधिवेशन इस मई मास की २२ तारीख को दिल्ली में होने जा रहा है।

कार्य को सम्पन्न करने के लिए स्थानीय समितियों का भी गठन किया गया है। अनेक स्थानों पर समितियां कार्य कर रही हैं विशेष रूप से कलकत्ता, अहमदाबाद, चण्डीगढ़, लुधियाना, अमृतसर, दिल्ली, बड़ोदा आदि स्थानों की समिति पूरे जोर से कार्य कर रही है और सभी का सहयोग ले रही है, निश्चय ही निर्वाण शताब्दी समारोह पहले की भांति पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न होगा। किन्तु कहते हैं 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' कल्याणकारी कार्य जितने महत् होते हैं उसमें उतनी बाधायें भी स्वाभाविक रूपेण आती ही हैं। इस कार्य में भी बाधा पहुंचाने वाले सज्जनों की कमी नहीं रही। १९३३ में महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा ने अविस्मरणीय दिशा निर्देशन किया वहां आज सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी ने सहयोग का आश्वासन देकर अपना हाथ खींच लिया, इतना ही नहीं सभा की ओर से दिल्ली में १९८३ में ही शताब्दी समारोह का आयोजन करने की घोषणा कर दी जिससे जो शक्ति कार्य को आगे बढ़ाने में लगनी थी वह विवाद में लग गई। कुछ समय के लिए सामान्य आर्यजन किंकर्तव्य की भावना में रहे परन्तु सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज एवं उनके सहयोगियों की दृढ़ता से आर्य जगत् में समारोह के प्रति उत्साह व्याप्त हो गया। ऐसे तुच्छ तर्क आर्य जनता के गले नहीं उतर सके कि अजमेर में पानी का अभाव है, स्थान का अभाव है और सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने भी आर्य जनता के मानस को भली प्रकार समझा और अपने निर्णय पर पुनः विचार किया। ऐसे समय में राजनीतिक दुर्भावना से पीड़ित लोगों ने संगठन को फिर गुमराह करने का प्रयत्न किया और आर्य जनता को उपहास का पात्र बना दिया है।

इसमें उन्हीं तारीखों में समारोह का आयोजन सार्वदेशिक सभा द्वारा अजमेर में करने की घोषणा मुख्य है और इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए कुछ लोगों ने समिति गठित कर ली और प्रस्ताव भेज दिया है कि परोपकारिणी सभा अपना कार्यक्रम स्थगित कर दे समितियों को भी भंग कर दे जिसका कोई औचित्य नहीं और ना ही उनको इस बात का कोई अधिकार ही है।

आर्य जगत् इस तथ्य से भली प्रकार अवगत है। परोपकारिणी सभा ने सद्भावना पूर्वक समाज के सभी वर्गों एवं सभी लोगों से संपर्क किया है, सहयोग मांगा है और समितियों में प्रतिनिधित्व दिया। अखिल भारतीय समिति में सभी का प्रतिनिधित्व है वहां स्थानीय स्तर पर अजमेर के सभी आर्यसमाजों व प्रतिष्ठित आर्यजनों का सहयोग लिया है। स्थानीय समिति में आर्यसमाज केसरगंज व व्यास सहित सभी की उपस्थिति बैठकों में रही है। श्री दत्तात्रेय वाब्ले, डा० सूर्यदेव जी शर्मा मन्त्री एवं प्रधान आर्यसमाज केसरगंज ने स्वयं भाग लिया और बैठकों की अध्यक्षता की है। ऐसे में उनका विवेक कैसे जागा कि शताब्दी समिति भंग कर दी जावे यह आर्य जनता स्वयं समझ सकती है।

परोपकारिणी सभा ने समारोह के कार्य को प्रारम्भ किया है। किसी बाधा के होने पर भी सफलता पूर्वक मनाने के लिए कृतसंकल्प है। आर्य जनता प्रबुद्ध है उसे किसी धोखे में नहीं डाला जा सकता। सभी को आदर पूर्वक यथायोग्य सम्मान के साथ सबको साथ लेकर चलने में सभा का विश्वास है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला राम गोपाल जी से हमारा विनम्र निवेदन है वे कुछ दुर्भावना प्रेरित लोगों के बहकावे में न आवें। आर्य जनता के हित में पूर्व घोषित पूर्ण सहयोग के संकल्प को क्रियान्वित कर आर्य जनता का मार्ग दर्शन करें। सभी प्रान्तीय सभायें भी सार्वदेशिक सभा के अनुसार ही कार्य करेंगी। थोड़े स्वार्थी लोग कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेंगे।

आर्य जनता के मार्गदर्शक यति मण्डल ने समारोह की सफलता के लिये अपना पूर्ण आशीर्वाद प्रदान किया है और परमेश्वर की असीम कृपा से यह आर्य जनता का समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न होगा।

मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर

ओमानन्द सरस्वती के अभिनन्दन हेतु दान–सूची

१	आर्य कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली	११०००)
२	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	५१००)
३	प्रबन्धकारिण सभा दयानन्दमठ रोहतक	२१००)
४	चौ० मनफूलसिंह जी हांसी	१५००)
५	बादू धीरजसिंह जी कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली	१२०२)
६	चौ० आशाराम रसूलपुर मुजफ्फरनगर	११११)
७	प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रोहतक)	११००)
८	स्व० आचार्या शिवकरण चरखी-दादरी	११००)
९	कु० सुमित्रा एम. ए. आचार्या कन्या गुरुकुल नरेला	११००)
१०	श्री वैद्य बलवन्तसिंह बलियाणा (रोहतक)	११००)
११	श्री सुखवीरसिंह आर्य, ताजपुर (फरीदाबाद)	११००)
१२	मा० कंवलसिंह आर्य समसपुर भिवानी	११००)
१३	आर्यसमाज नारनौल	११००)
१४	आर्यसमाज करौलबाग नई दिल्ली	११००)
१५	प्रो० राजसिंह मलिक भैंसवाल, रोहतक	११००)
१६	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, दिल्ली	११००)
१७	स्वामी शक्तिवेश गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ	११००)
१८	श्रीमती शान्तिदेवी स्नातिका घेवरा दिल्ली	११००)
१९	वैद्य कर्मवीर जी V ४५ नरेला देहली	११००)
२०	चौ० हीरासिंह जी मुखमेलपुर देहली	११००)
२१	प्रिंसिपल होशियारसिंह बाजीतपुर देहली	११००)
२२	चौ० रतनसिंह जी नरेला दिल्ली	११००)
२३	चौ० ओमप्रकाश सुपुत्र नेकीराम जी नरेला (दिल्ली)	११००)
२४	पंडित बालकिशन जी नरेला देहली	११००)
२५	मा० रोहतास जी माजरा डबास देहली	१००२)
२६	श्री रामजीलाल नगला साधान कुरुक्षेत्र	१०००)
२७	चौ० सूरतसिंह हलालपुर (सोनीपत)	१०००)
२८	स्व० पंडित जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती, दिल्ली	१०००)
२९	ब्रह्मचारी बदनसिंह जी मिस्तौली जि. मेरठ (उ. प्र.)	१०००)
३०	बहिन लक्ष्मीदेवी जी रेलवे रोड रोहतक	१०००)
३१	चौ० सत्यदेव गुरुकुल कुरुक्षेत्र	५०१)
३२	म० महावीरसिंह प्रधान बोहर (रोहतक)	५०१)
३३	श्री नारायणदेव शास्त्री दौराला मेरठ	५०१)
३४	,, रामचन्द्रसिंह कलीना मेरठ	५०१)
३५	,, बलवीर आचार्य फजलपुर, मेरठ	५०१)
३६	,, जयलाल सुपुत्र सहीराम मामूरपुर नरेला	५०१)
३७	,, राममेहर सुपुत्र भरतसिंह किसरैंटी रोहतक	५०१)
३८	आर्यसमाज रोहणा, रोहतक	५०१)
३९	म० दरयावसिंह की बहन भाग्यवती	५०१)
४०	ज्ञानवती स्नातिका कन्या गुरुकुल नरेला	५०१)
४१	मा० राजेन्द्रसिंह माजरा डबास दिल्ली	५०१)
४२	चौधरी मनफूलसिंह सिरसा	५०१)
४३	,, देवसीराम जी मुन्नावाली सिरसा	५०१)
४४	वैद्य रामलाल यमुनानगर अम्बाला	५०१)
४५	श्री सत्यवीर शास्त्री मदाना खुर्द रोहतक	५०१)
४६	,, बलवान्सिंह प्रहलादपुर किड़ौली रोहतक	५०१)
४७	,, सूरतसिंह रामपुर कुण्डल रोहतक	५०१)
४८	लाला दलीपसिंह पानीपत	५०१)
४९	प्रो० कुशलदेव नान्देड़ महाराष्ट्र	५०१)
५०	श्री राजपाल आर्य नरेला दिल्ली	५०१)
५१	चौधरी हरफूलसिंह जी गांव मदानी, रोहतक	४०४)
५२	श्री धर्मवीर शास्त्री नयाबास, रोहतक	४००)
५३	माता शान्तिदेवी पूर्व आचार्या गुरुकुल नरेला	३००)

[क्रमशः]

हम उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं

कौन ऐसा भारतीय होगा जो प्रो० रामसिंह जी से भलीभांति परिचित न हो। आपने वर्षों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद को सुशोभित कर आर्यजगत् का मार्गदर्शन किया है। आपके नेतृत्व में ही पंजाब सभा ने विभाजन के समय खोई अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त किया था। हिन्दू महासभा के तो आप स्तम्भ रहे हैं। भारतीय संस्कृति को ठेस पहुँचाने वाले प्रत्येक तत्त्व को आपकी फटकार से हर भारतवासी मुसीबत के समय में साहस प्राप्त करता रहा है। सत्य तो यह है कि भारत में हिन्दू (आर्य) साम्राज्य की कल्पना करने वाले तथा उसके लिए प्राण-पण की बाजी लगा देने वाले भारत माता के वीर सपूत स्वर्गीय श्री सावरकर जी तथा भाई परमानन्द जी के बाद आज आप ही जीवित हैं।

दुर्भाग्य से गत कई मास से आप बुरी तरह रोगग्रस्त हो शैय्या पर पड़े, मृत्यु से लोहा ले रहे हैं। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा इसके प्रत्येक घटक की ओर से दयालु देवेश के पवित्र चरणों में आपके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की याचना करता हूं तथा सर्वहितकारी की सीमाओं में रहने वाले अपने प्रत्येक आर्य बन्धु से यह अपेक्षा भी करता हूं कि वह ऐसी स्थिति में अपनी व्यस्तताओं से समय निकालकर उनकी सेवा में उपस्थित हो। उनके तथा उनके परिवार के प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य ज्ञापित करेगा। प्रो० साहब को इस दारुण व्यथापूर्ण अवस्था में भी हमारी कितनी चिन्ता है, इसका आभास उनसे मिलने वालों को दिये गये इस उलाहने से सहज ही हो जाता है कि—'हम देश में आर्य साम्राज्य की स्थापना नहीं कर सके, आप इसके लिए काम करते रहना।'

हमें ऐसे महापुरुषों का अपने पर जो ऋण है, उसे अनुभव करना है। यही हमारा कर्त्तव्य भी है। हमारे जिन नेताओं ने हमारे लिए अपने जीवन को तिल-तिल कर होम दिया, मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि कम से कम आर्य उनके बलिदान का मूल्यांकन अवश्य करेंगे। मैं पुनः जगदीश्वर से अपने नेता के शीघ्रातिशीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूँ। प्रो० रामसिंह जी से निम्न पते पर मिलकर उनके प्रति आभार प्रदर्शित कीजिये—

प्रो. रामसिंह २२ बिडनपुरा, करौलबाग, नई दिल्ली

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ, रोहतक

शोक समाचार

१—यह समाचार दुःख से पढ़ा जाएगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री बनारसीलाल जी आर्य की पूज्या माता जी का १४-५-८३ को देहावसान होगया है। सभा दिवंगतात्मा को स्वकर्मानुसार सद्गति हेतु जगदीश्वर से प्रार्थना करती है।

२—यज्ञप्रेमी श्री गणेशदास आर्य प्रवाना मोहल्ला रोहतक का २७ अप्रैल को ७६ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप यज्ञ मण्डली दयानन्द मठ रोहतक के सक्रिय सदस्य थे। आर्यसमाज के कार्यों में बहुत रुचि रखते थे। उनके परिवार ने उनकी स्मृति में सभा को २५) वेद प्रचारार्थ दान दिया है।

३—चौधरी मुख्त्यारसिंह जी सरपंच पट्टिकल्याणा तहसील पानीपत के अध्यापक एकमात्र सुपुत्र का आकस्मिक निधन होगया। उनके इस निधन से हमें बहुत ही गहरा दुःख हुआ। प्रभु इस दुःख को सहन करने के लिए शक्ति दें जिससे यह आकस्मिक दुःख सहा जा सके।

म० भरतसिंह वानप्रस्थी

पर ! जग ज्योतिर्मान किया

कौन ऋषि था जिसने फिर से
वेदों का सन्देश दिया ?
आर्य जनों को पुनः जगाकर
अमृत सा उपदेश दिया ?

नवल क्रान्ति की शिखा दीप्त कर
बिखरायी चहुं अरुणायी ?
किसके सिंह निनादों से
जग गयी भरत भू तरुणायी ?

किसने फूंका स्वतन्त्रता का
मंत्र स्वदेश के प्रांगण में ?
अंगड़ाई ले उठी भारत भू
जगी चेतना कण-कण में ?

भगत बोस बिस्मिल सावरकर
किससे हुए अनुप्राणित ?
किसके जीवन से ज्योतित हो
हुए लाजपत राष्ट्र समर्पित ?

किसके सतत प्रयासों से वह
मिली हमें है आजादी ?
किसने रोकी मानवता की
मानव कर से बर्बादी ?

धर्माडम्बर पाखण्डों को
किसने निर्भय ललकारा ?
पोप-पुरोहित मुल्लाओं को;
किसने था अति फटकारा ?

किसका उर हो उठा द्रवित था
सुनकर गौवों का क्रन्दन ?
नारी जाति का उद्धारक बन
किसने किया उन्हें वन्दन ?

किसने पालन ब्रह्मचर्य कर;
जाति का उपकार किया ?
किसने अपनी शत्रु मण्डली
को मधु मिश्रित प्यार दिया ?

किसने दूर किया भारत की
विधवाओं का दारुण क्रन्दन ?
बाल विवाह निषिद्ध बताया
वर्णाश्रम का मुख पालन ?

कौन महान् हिमालय से भी
गंगा से भी अधिक सुदिव्य ?
नव भारत का निर्माता वह
कौन उषा से था नव्य ?

महामनुज वह कौन हमारा
सागर से भी अति गम्भीर?
किसने सारे महिमण्डल को
दिया चुनौती, बन अति धीर ?

किसने वैदिक धर्म ध्वजा को
फिर से नव सम्मान दिया ?
राम कृष्ण की रक्षा करके
आर्यों को अभिमान दिया ?

मृत्युञ्जयी ! किसके पद तल पर
हुआ विनम्र गगन था ?
किसके जीवन से धरती पर
आया नव जीवन था ?

दलितोद्धार अछूतो द्धार
किया किसने बन सेनानी ?
किसने लिखी पुनः मानवता
की अति गौरव भरी कहानी ?

किसने किया राष्ट्र भाषापद
पर हिन्दी को स्थापित ?
किसने दिया अमृत उस कण को
जो था अब तक अभिशापित ?

किसने धराधरा के उर में
नव जागृति का स्पन्दन ?
ओ३म् तथा वेदों का किसने
किया मधुरतम अभिनन्दन?

हिमगिरि से ले हिन्द जलधि तक
किसने जय उद्घोष किया ?
सत्यम् – शिवम् – सुन्दरम् का
पावन किसने सद्घोषित किया ?

जीव प्रकृति की, परमेश्वर को
किसने भ्रान्ति विलीन किया ?
किस ऋषि ने इस भूमण्डल को
असुर वृत्ति मलीन किया ?

गूंज रहा अवनी अम्बर में
इन प्रश्नों का एक उत्तर।
महामनुज था भारत सुत
वह महर्षि दयानन्द ऋषिवर।

जिसने इस जगती के हित में
स्वयं गरल का पान किया।
स्वयं बुझा दीपावलि के दिन
पर, जग ज्योतिर्मान किया ॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

योग्य वर की आवश्यकता

—१ गृह कार्य में दक्ष, सुन्दर, लम्बा कद, योग्यता मैट्रिक चमार कुलोत्पन्न आर्य परिवार की कन्या के लिए योग्य वर की आवश्यकता है निम्नलिखित पते पर आवश्यक जानकारी के लिए पत्र व्यवहार करें।

वेदपाल आर्य
सब पोस्टमास्टर उचाना (हरयाणा)

२—२१ वर्षीया ब्राह्मणकुलोत्पन्न हायर सेकंडरी प्रभाकर व शास्त्री (वाराणसी) उत्तीर्ण कद ५ फुट १ इंच कन्या हेतु उपयुक्त संस्कृतज्ञ आर्य वर अपेक्षित। जाति बन्धन नहीं।

इन्द्र जीतदेव, नवीकरण मण्डल
नहर कालोनी यमुनानगर, जि० अम्बाला

आर्यसमाजों तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी के अधिकारियों से निवेदन है कि हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए स्वयं सेवकों की भर्ती करके सूची शीघ्र कार्यालय में भेजें।

संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी
दयानन्दमठ गोहाना रोड रोहतक

हरयाणा के अमर साहित्यकार—

यशवन्तसिंह वर्मा टोहानवी

डा० भवानीलाल भारतीय चंडीगढ

सरल भाषा में नाटकों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों तथा प्राचीन इतिहास के गौरवपूर्ण अध्यायों को जनसमाज के समक्ष प्रस्तुत करने वाले यशवन्तसिंह टोहानवी सच्चे अर्थों में लोक साहित्यकार थे। इनका जन्म टोहाना (जिला हिसार) में १८८१ ई० में हुआ। यद्यपि इनकी शिक्षा सामान्य उर्दू, हिन्दी तक ही सीमित थी, किन्तु सहज प्रतिभा के कारण आगे चलकर नाटक रचना करने और दृश्य काव्य के इसी माध्यम से आर्यसमाज के विचारों का प्रचार करने में इन्हें प्रशसनीय सफलता मिली। संगीत और सितारवादन में इनकी रुचि विशेष रूप से थी। टोहाना निवासी श्री देवीदयाल गुप्त तथा अपने बड़े भाई जयसिंह वर्मा के सहयोग से इन्होंने टोहाना कस्बे में आर्यसमाज की स्थापना की। समय समय पर आर्यसमाज के उत्सवों में गीत प्रस्तुत करने तथा संगीत के द्वारा प्रचार करने का अवसर मिलने के कारण वर्मा जी को संगीत प्रधान नाटक लिखने की प्रेरणा मिली। इनके द्वारा लिखे गये भजन संग्रहों तथा नाटकों का विवरण इस प्रकार है—

आर्य भजन दीपिका तथा आर्य भजन सागर इनकी प्रारम्भिक कृतियां हैं। इनमें ईश्वर भक्ति, समाज सुधार, देशप्रेम, कुरीति निवारण जैसे विषयों से सम्बन्धित भजनों का संग्रह है। कालान्तर में आपने जो संगीत प्रधान नाटक लिखे वे अत्यन्त लोकप्रिय हुए। ये नाटक पाठ्य के साथ साथ अभिनेय भी हैं। इन नाटकों की लोकप्रियता का पता इसी बात से चलता है कि प्रत्येक के हजारों की संख्या के अनेक संस्करण अब तक निकल चुके हैं। सामान्य कोटि के पाठकों में इन नाटकों का बड़ा प्रचलन है।

वर्मा जी द्वारा लिखित संगीत नाटक—

१—आर्य संगीत रामायण ४६ संस्करण, २—आर्य संगीत महाभारत २० संस्करण, ३—संगीत हकीकतराय २१ संस्करण, ४—संगीत हरिश्चन्द्र १९ संस्करण, ५—संगीत पृथ्वीराज ८ संस्करण (प्रथम संस्करण देवीदयाल गुप्त द्वारा १९३० में प्रकाशित) ६—संगीत बालशहीद ६ संस्करण, ७—संगीत ऋषि दयानन्द ५ संस्करण

नाटकों की विषय वस्तु के चयन की दृष्टि से विचार करें तो ज्ञात होता है कि लेखक ने प्रायः प्राचीन इतिहास तथा मध्यकालीन इतिहास के उन कथानकों को चुना है जो देशवासियों में पुरातन गौरव को पुनः स्थापित करने तथा वीरभावों को उत्तेजित करने में समर्थ हैं। रामायण और महाभारत की कथावस्तु युग-युगान्तरों से भारतवासियों के लिये प्रेरणा स्रोत रही है। आर्यसमाज ने इन ऐतिहासिक काव्यों के प्रति देशवासियों को एक सही दृष्टि दी तथा राम एवं कृष्ण जैसे मर्यादा पालक महापुरुषों के आदर्श का अनुकरण करने की बात कही थी। इसी प्रकार राजा हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता, सम्राट पृथ्वीराज का पौरुष और पराक्रम, गुरु गोबिन्दसिंह के पुत्रों का आत्मत्याग तथा ऋषि दयानन्द के आदर्श चरित्र को नाटकों के द्वारा प्रस्तुत करने में लेखक को अद्भुत सफलता मिली है।

यह सत्य है कि इन नाटकों में उच्चकोटि के साहित्यिक गुणों का चाहे अभाव हो क्यों न हो किन्तु लेखक का प्रयोजन तो बोलचाल की भाषा और संगीत की लोकधुनों के द्वारा पुराकालीन इतिवृत्तों को प्रस्तुत करना ही था। इस प्रकार उपर्युक्त नाटकों में वीर रस (हरिश्चन्द्र नाटक में सत्यवीर, पृथ्वीराज में युद्धवीर तथा ऋषि दयानन्द में धर्मवीर) करुण, शान्त आदि विभिन्न रसों की पूर्ण रूप से निष्पत्ति हुई है।

डा० सुशीला आर्या के अनुसार ये नाटक मूल रूप से उर्दू में लिखे गये थे। पुनः इनका हिन्दी रूपान्तरण भी किया गया। कई नाटकों के पंजाबी रूपान्तर भी हुए।

यशवन्त सिंह टोहानवी का देहान्त १९५७ में हुआ।

आर्य विद्यालय जीन्द शहर को दान

आर्यसमाज जीन्द शहर द्वारा संचालित आर्य विद्यालय नगर में प्राथमिक शिक्षा तथा पवित्र धार्मिक संस्कारों का एकमात्र प्रमुख केन्द्र है। इसके निःस्वार्थ, पुनीत तथा नैतिकतापूर्ण विद्या दान के कार्यों से प्रभावित होकर दानी महानुभावों ने इसे जो सात्विक दान दिया है, वह इस प्रकार है—

१—श्रीमती मनोरमादेवी धर्मपत्नी बद्रीप्रसाद ८०००)

२—श्रीमती मुन्नीदेवी धर्मपत्नी स्वर्गीय मास्टर देशराज मदान की पुण्य स्मृति में ७०००)

३—श्रीमती कौशल्या देवी धर्मपत्नी चौ: जयसिंह एडवोकेट ६०००)

४—श्रीमती रामकली धर्मपत्नी श्री कृष्णकुमार ने अपनी सास स्व० गोदावरी देवी की पुण्य स्मृति में ६०००)

आर्यसमाज के अधिकारियों ने दानी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट किया और अपना संकल्प दोहराया कि आर्य विद्यालय जीन्द सदा विद्यालय के माध्यम से बच्चों के चरित्र निर्माण तथा राष्ट्र निर्माण के पवित्र यज्ञ में जी-जान से लगा रहेगा।

कृष्णदेव शास्त्री

सिद्धान्ती भवन के लिये दान

सभा के महोपदेशक पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी की प्रेरणा पर आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद के प्रधान एवं फरीदाबाद में दयानन्द महिला कालेज तथा दयानन्द पब्लिक स्कूलों के संचालक श्री कन्हैयालाल मेहता ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भवन के लिए ११०० रु० दान दिया है। गत वर्ष भी उन्होंने दान भेजा था। इस उदारता के लिए इनका बहुत बहुत धन्यवाद।

आशा है अन्य आर्यसमाज भी भवन निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

सभा मन्त्री

हरयाणा के हितों की रक्षार्थ स्वयंसेवकों द्वारा बलिदान देने की शपथ

कन्या गुरुकुल नरेला के उत्सव पर १५ मई को उपस्थित हजारों नर-नारियों को हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह के आह्वान पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने उग्रवादी अकालियों की राष्ट्र तथा हरयाणा विरोधी अनुचित मांगो का विरोध तथा हरयाणा के हितों की रक्षा करने के लिए निम्नलिखित शपथ दिलाई:—

"मैं ईश्वर को साक्षी करके शपथ लेता/लेती हूं कि राष्ट्र की एकता को सुदृढ करने, अकाली दल तथा अन्य साम्प्रदायिक एवं भारत विरोधी तत्वों के षड्यन्त्र को विफल करने और हरयाणा प्रदेश के हितों की रक्षा के लिए सब प्रकार के बलिदान के लिये तैयार हू और समय आने पर एक स्वयंसेवक के नाते सब प्रकार का बलिदान देने में अग्रणी रहूगा/रहूंगी।

स्वामी ओमानन्द जी ने नवयुवक तथा नवयुवतियों को ललकारते हुए कहा कि राष्ट्र संकट की घड़ियों से गुजर रहा है। पजाब जैसे सीमावर्ती प्रदेश में कुछ सिरफिरे उग्रवादी प्रतिदिन हिंसक कार्यवाही कर रहे हैं। सरकार अपराधियों को पकड़ने में असमर्थ हो रही हैं क्योकि वे अपराध करके गुरुद्वारों मे छिप जाते हैं। अकाली अनुचित मागें मनवाने के लिए भारत सरकार पर दबाव डाल रहे हैं। अत: अब समय आगया है कि राष्ट्र रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए तैयार रहें। हमें आर्यसमाज के लिए जीना तथा आर्यसमाज के लिए ही मरना चाहिए।

हरयाणा रक्षा वाहिनी द्वारा सत्याग्रह के लिए स्वयंसेवकों की सूची

हरयाणा रक्षा वाहिनी की अपील पर हरयाणा के विभिन्न क्षेत्रों से स्वयंसेवकों की सूची भेजने का निर्देश दिया था ताकि समय आने पर उग्रवादी अकालियों के प्रतिकार के लिये सत्याग्रह प्रारम्भ किया जावे।

रक्षा वाहिनी के कार्यालय मे निम्नलिखित स्थानों से स्वयंसेवकों की सूची प्राप्त हुई है:—

पानीपत जिला करनाल 200, ग्राम नीमड़ीवाली जिला भिवानी 34, ग्राम चबूतरों जिला अम्बाला 50, ग्राम अटायल जि० रोहतक 10, ग्राम असफपुरा भटिण्डू (सोनीपत) 10, ग्राम रोहणा जि० रोहतक 198, ग्राम सुण्डाना रोहतक 25, ग्राम सिवाना जिला रोहतक 150, ग्राम कासनी जि० रोहतक 50, ग्राम माजरा दूबलधन जि० रोहतक 100, ग्राम औरंगाबाद जि० जि० फरीदाबाद 20, ग्राम मनाना जि० करनाल 50, ग्राम भाटा जि० करनाल 30, ग्राम रसूलपुर भोरा जि० सोनीपत 32, ग्राम माजकोष जि० भिवानी 31, ग्राम ऊण जि० भिवानी 31, आर्यसमाज भिवानी 100, ग्राम खरककला जि० रोहतक 31, ग्राम मदावाकलां जि० रोहतक 71, ग्राम मिर्जापुर बाछोद जि० महेन्द्रगढ़ 11, ग्राम फरमाना जि० सोनीपत 110; ग्राम सलीमसर माजरा जि० सोनीपत 100, ग्राम डीडवाड़ा जि० जीन्द 20।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

(क्रमशः)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० न 23207/73 पंजि० न० P/RTK 49 ——अन ८८११



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १०, अङ्क २४ | २८ मई १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

५ जून से १२ जून तक

आर्यों द्वारा कुरुक्षेत्र जिले की प्रचारयात्रा

कुरुक्षेत्र (रणवीर शास्त्री) दयानन्द के १०० दीवने ५ जून को अपराह्न ३ बजे फतेहपुर-पूण्डरी (कुरुक्षेत्र) से साइकिलों द्वारा जिले भर की प्रचार यात्रा हेतु प्रस्थान करेंगे। इससे पूर्व कस्बे की अनाज मण्डी में एक सार्वजनिक सभा होगी उसके उपरान्त आर्य जगत् के तपस्वी सन्त श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी महाराज हरी झण्डी दिखलाकर यात्रा दल को विदा देंगे। जिले भर के ग्रामीण अंचल का भ्रमण कर भोले ग्रामीणों को धर्म के नाम पर छाये अन्धविश्वास, द्रुतगति से पैर फैलाती जा रही पिशाची शराब, नग्नतापूर्ण फैशन की जानलेवा आंधी, दहेज के नाम पर हो रही सामाजिक बर्बादी, आपसी प्रेम और भाईचारे के अभाव में एक से दूसरे के बीच बढ रही दूरी, साम्प्रदायिकतता और जाति-पांति विस्तार तथा राष्ट्रीय अखण्डता को दी जा रही चुनौतियों से सावधान करते हुये स्वामी रुद्रवेश जी, प्राचार्य डा० सर्वदानन्द, डा० अमीरसिंह, प्रो० भागसिंह आर्य, आचार्य देवव्रत, चौ० सत्यदेवसिंह पूर्व एस० एस० पी०, श्री० [illegible] सिंह आदि आर्य जनों के नेतृत्व में यह काफिला १२ जून को सायं कुरुक्षेत्र पहुंचेगा। वहां नगर में रात्रि ८ बजे इसके समापन्न के उपलक्ष्य में एक सार्वजनिक सभा होगी। इस यात्रा के संयोजक श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने हमें बताया कि एक सप्ताह में जिले भर में ३० सार्वजनिक सभाएं उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु की जाएगी तथा २१ नई आर्यसमाजों की स्थापना भी की जायेगी।

जिले भर में स्थान स्थान पर विशेष बैठकें कर वातावरण को अदर्य गर्माया जा रहा है। जिले के सभी वर्गों के लोग इस शुभ समाचार को सुनते ही भाव विभोर हो इस जत्थे के स्वागत की तैयारियां करने में जुटने लगे हैं।

सेठ यशपाल जी आर्य ठोल की अध्यक्षता में एक तैयारी समिति का गठन भी किया जा चुका है जिसे उक्त सभी महानुभावों के अतिरिक्त डा० ओमप्रकाश पेहवा, चौधरी श्यामसिंह चिनारहेड़ी, देशबन्धु जी एवं सुभाष आर्य फतेहपुर, कृष्णलाल जी वधवा कुरुक्षेत्र, लाजपतराय जी इस्माइलाबाद, ला० जीवनदास जी शाहबाद, समशेरसिंह जी फरल तथा श्री उमेद शर्मा कैथल का पूरा पूरा सहयोग मिल रहा है।

सभा कार्यालय में उपस्थित होकर यात्रा विषयक चर्चा किये जाने पर महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थ सभा मन्त्री एवं श्री नवाबसिंह जी सभा गणक ने भी अपनी विभिन्न व्यस्तताओं से दो दिन का समय निकालकर इन पंक्तियों के लेखक को साथ ले उक्त यात्रा में सम्मिलित होने की घोषणा की।

चण्डीगढ हरयाणा के गांवों को उजाड़ कर बना —लछमनसिंह

चण्डीगढ २३ मई (एन० एस० परवाना) हरयाणा के मन्त्री सरदार लछमनसिंह ने पजाब के सभी राजनीतिक दलों के इस दावे को चुनौती दी है कि चंडीगढ पजाब के गावों को उजाड़ कर बनाया गया है।

आज यहा सम्वाददाताओं से बातचीत करते हुए श्री लछमनसिंह ने कहा कि जिन गांवों को उजाड़ कर चंडीगढ का निर्माण किया गया था वे ३१ सालपूर्व कालका सब तहसील जो आज अम्बाला जिला में हैं, के भाग थे। उन्होंने कहा कि चंडीगढ जिस भूमि पर आबाद किया गया है वह ८० % भूमि हरयाणा की है। अतः इस खूबसूरत शहर पर हरयाणा का ही अधिकार बनता है। इसी तर्क को सामने रखकर १९६६ में शाह आयोग ने भी अपना निर्णय दिया था कि तहसील खरड़ सहित चंडीगढ हरयाणा को दिया जाए।

उन्होंने कहा कि १९६६ तक चंडीगढ का इलाका सब तहसील कालका का ही भाग था। उसके बाद भी चंडीगढ पंजाब को नही दिया गया बल्कि केन्द्र सरकार ने इसे केन्द्र शासित क्षेत्र ही रहने दिया।

श्री लछमनसिंह ने यह भी सुझाव दिया कि चडीगढ के विभाजन के उपरान्त इसे उत्तर भारत का एक व्यावसायिक केन्द्र बना दिया जाए। कोई भी सरकार इस नगर में आने जाने वाले सामान में किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न लगाए।

जहां तक अबोहर फाजिल्का व अन्य हिन्दी भाषी इलाकों का प्रश्न है उसे सीमा आयोग को सौंप दिया जाए। वह जो भी निर्णय दे उसे सभी पक्ष स्वीकार कर लें। (पंजाब केसरी)

हरयाणा के हितों की रक्षार्थ

सत्याग्रह के लिए स्वयंसेवकों की सूची

नूरपुर मुगलान जिला करनाल ११, फुलकाना जि० करनाल २२, भोरा रसूलपुर जिला सोनीपत ११, कारका जिला अम्बाला ११, इक्कस जिला जीन्द ५१

आर्यसमाजों तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी के अधिकारियों से निवेदन है कि वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए अपने नगर तथा ग्राम से स्वयंसेवकों की सूची तैयार करके शीघ्र कार्यालय में भेज देवें, ताकि आवश्यकता पड़ने पर सत्याग्रह आरम्भ किया जा सके।

ज्ञात रहे उग्रवादी अकालियों की ओर से अपनी अनुचित मांगें मनवाने के लिए प्रतिदिन किसी न किसी प्रकार का दवाव डाला जा रहा है। अतः हमें अपने संघठन को सुदृढ करना होगा।

सभा मन्त्री

वैदिक धर्म की दार्शनिक भूमिका

ले०—स्वर्गीय स्वामी विश्मेश्वरानन्द सरस्वती
प्रेषक—ब्रह्मदत्त स्नातक

महान् वैदिक धर्म के उदात्त स्वरूप को ठीक-ठीक समझने के लिए वैदिक विचार धारा को दार्शनिक भूमिका को समझ लेना आवश्यक है।

अनेकानेक परिस्थितियों के कारण वैदिक विचारधारा में क्रमशः परिवर्तन होते रहे हैं, इसको सब कोई स्वीकार करेंगे। ऐसी स्थिति में उसकी दार्शनिक दृष्टि में भी क्रमिक परिवर्तन का होना अनिवार्य था। इसलिए इस लेख मे जिस दार्शनिक भूमिका को हम दिखाना चाहते हैं, उससे हमारा अभिप्राय प्रायेण वैदिकधारा को उस दार्शनिक दृष्टि से है, जिसको लेकर वह मूल में आगे बढी थी।

वैदिक दार्शनिक दृष्टि का आन्तरिकस्वरूप अथवा किसी भी दार्शनिक दृष्टि का आन्तरिकस्वरूप जीवन को दृष्टि और चरमलक्ष्य में प्रतिबिम्बित या पर्यवसित होना चाहिए। इसलिए वैदिक विचारधारा को दार्शनिक भूमिका के स्वरूप और प्रेरणा को ठीक-ठीक समझने के लिए वैदिक जीवन को दृष्टि और चरमलक्ष्य पर विचार करना आवश्यक है। इसलिए इन दोनों प्रश्नों पर और उनसे सम्बन्धित 'सृष्टि का प्रयोजन' इस प्रश्न पर ही यहाँ हम विचार करेंगे।

वैदिक धर्म की दृष्टि और चरमलक्ष्य—दार्शनिक दृष्टिकोण से वैदिक जीवन की दृष्टि और चरमलक्ष्य को जैसा हम समझ सके हैं, वह जीवन और उसके लक्ष्य के विषय में हमारी सहस्रों वर्षों की परम्परा से प्राप्त दृष्टि से मौलिक रूप में भिन्न है। इसलिए उसके अपने स्वरूप को दिखाने से पहले परम्परागत दृष्टि को संक्षेप में दिखला देना आवश्यक है।

जीवन के विषय में परम्परागत दृष्टि—जीवन के विषय में हमारी परम्परागत दृष्टि (संसार और जीवन दुःखमय है; अतएव हेय है। इससे मोक्ष या छुटकारा पाना ही हमारा ध्येय होना चाहिए।) का मौलिक आधार हमें बहुत कुछ वैदिकेतर संस्कृति या संस्कृतियों में ही दिखाई देता है। इस विषय में परम्परागत विचार दृष्टि, वैदिक दृष्टि (संसार और जीवन का उद्देश्य हमारे उत्तरोत्तर विकास का ही नाम अमरत्व है, यही निःश्रेयस है।) से जैसा हम नीचे दिखाएंगे, अत्यन्त भिन्न है। दोनों में बहुत कुछ वैसा ही अन्तर है, जैसा कि साधारणतया जीवन के विषय में एक जरा-जीर्ण बूढ़े मनुष्य तथा सच्चरित्र नवयुवक की दृष्टियों में पाया है।

उक्त परम्परागत दृष्टि का मौलिक आधार जो भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि इधर सहस्रों वर्षों से भारतवर्ष के वातावरण में वह व्याप्त रही है। हमारे सारे दर्शन (वैदिक और वैदिकेतर कहे जानेवाले) तथा पुराण, धर्मशास्त्र आदि का सारा साहित्य उसी दृष्टि को लेकर चलता है और उसी को पुष्ट करना चाहता है।

यहाँ हम विषय विस्तार के भय से अन्य पुराणादि के साहित्य को न लेकर केवल दर्शनों को ही लेकर, इस विषय पर कुछ प्रकाश डालना चाहते हैं।

यह मानी हुई बात है कि हमारे सारे दर्शनों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय यही है कि मनुष्यों को सांसारिक जीवन के दुःखों से छुटकारे का वास्तविक मार्ग दिखाया जाए। इसके लिए वे सब अपने अपने दृष्टिकोण से सांसारिक जीवन को दुःखमय और इसीलिए 'बन्ध' कहते हैं और उससे छूटने को मुक्ति, मोक्ष 'अपवर्ग' या निर्वाण जैसे शब्दों द्वारा व्यक्त करते हैं। प्रायः सब किसी न किसी रूप में हेय (त्यागने के योग्य, अर्थात् दुःख) हेयहेतु (अविद्या आदि कारण जिनसे दुःख उत्पन्न होता है) हान (दुःख का मुक्ति रूप में नाश) और हानोपाय (दुःख से मुक्ति पाने के तत्त्वज्ञान आदि उपाय) इन चार पदार्थों का मुख्यतया प्रतिपादन करते हैं।

उदाहरणार्थं, गौतम न्यायसूत्र में कहा है—

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषादि, बाधनालक्षणं दुःखम्।
तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः, विविधबाधनायोगाद् दुःखमेव जन्मोत्पत्तिः।
(न्या० सू० १/१/२-२१-२२ तथा ४/१/५५)

अर्थात् दुःख जन्म, प्रवृत्ति, दोष और मिथ्याज्ञान, इनमें से उत्तरोत्तर मिथ्याज्ञान आदि के उपाय से उनके अनन्तर आने वाले दोष आदि का आभास हो जाता है, और इस प्रकार अपवर्ग अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है। दुःख के अत्यन्त अभाव को ही अपवर्ग कहते हैं। अनेक सकटाकीर्ण होने से जन्म को दुःखस्वरूप ही मानना चाहिए।

इसी प्रकार कपिलकृत सांख्य सूत्र का कहना है कि—

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः।
ज्ञानान्मुक्तिः। बन्धो विपर्ययात्
(सांख्य सू० ११ तथा ३।२३-२४)

अर्थात् आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन तीनों प्रकार के दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति ही मनुष्य का परम पुरुषार्थ है। तत्त्वज्ञान से मुक्ति होती है और बन्ध का कारण मिथ्याज्ञान है। इसी प्रकार हेय, हेय-हेतु, हान तथा हानोपाय की व्याख्या के साथ-साथ पातञ्जल योग-सूत्र का कहना है—

दुःखमेव सर्वं विवेकिनः। (पा० सू० २।१५)

अर्थात् विवेकी मनुष्य की दृष्टि में यह सारा संसार दुःखरूप ही है।

बौद्ध दर्शन में भी 'सर्वं दुःखम्' (संसार में सब कुछ दुःखमय है) ऐसी भावना पर लक्ष्य-भूत मोक्ष के लिए उनका पारिभाषिक शब्द 'निर्वाण' (दीपक की लौ की तरह बुझ जाना) है, जिसमें स्पष्टतः अभावात्मक अर्थ की प्रधानता है।

इसी प्रकार वेदान्त-दर्शन, जैन-दर्शन आदि में भी बन्ध, दुःख और मोक्ष का सिद्धान्त किसी न किसी रूप में मनाया गया है। (क्रमशः)

सम्पादकीय

हमारी समस्याएं और हम

मनुष्य जीवन के ऊपर प्राय: दो दृष्टियों में विचार किया जाता रहा है। एक दृष्टि से इसे भिन्न-भिन्न जन्म-जन्मान्तरों की शृंखला में एक कड़ी स्वीकार किया गया है। जिसकी मजबूती पर सारी जंजीर का मजबूत होना निर्भर करता है। इसके सम्बन्ध में दूसरा दृष्टिकोण इसे एक आकस्मिक घटना-मात्र मानकर इसे पांच तत्त्वों के पुतले के सिवाय कुछ और न समझना है। भारतीय ग्रामीण लोगों की मजलिस में बैठकर उनकी चर्चाओं को सुनते हुए जो रहस्मय गुर वहाँ सुनाई पड़ते हैं उनसे तो यही निष्कर्ष निकलता है कि हमारे पूर्वजों ने मनुष्य जीवन पर विचार करते हुए प्रथम दृष्टिकोण अपनाया है अर्थात् इसे एक समस्या स्वीकार कर (अचानक या आकस्मिक घटना न मानकर) इस समस्या का हल खोजने का प्रयास किया है जिसमें उन्हें निस्सन्देह सफलता भी मिली। इतना ही नहीं हमारे पूर्वजो जो भारतीय संस्कृति के निर्माता थे, ने इस समस्या का हल जीवन को एक निश्चित आदर्श में बांधकर किया था।

वह आदर्श था सब में अपने को देखना और अपने में सबको देखना। उनके अनुसार ऐसा करके ही व्यक्ति सन्देहों से ऊपर उठता हुआ निश्चयात्मक जीवन व्यतीत करता है। मनुष्य में इसी 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्' की वैदिक भावना को उत्पन्न कर उसे विकसित करने हेतु ही उन्होंने मानव जीवन को चार भागों में बांटा था जिन्हें जीवन के चार आश्रम कहा गया। ब्रह्मचारी से गृहस्थ, तब वानप्रस्थ और फिर संन्यासी के रूप में परिणत करने का उनका यही उद्देश्य था। प्रथमावस्था में वे मूल्य जिनसे 'एकत्वमनुपश्यः' का भाव प्रजागार हो सके, इसके लिए बालक को गुरुजनों का सामीप्य करने का आदेश किया। उनके सान्निध्य में रहकर जो कुछ बालक सीखता है आगे के जीवन में उसे उसको क्रिया का रूप देना होता है। इस प्रकार पर-पीड़ा हरण की विशेषता से मानव मात्र को युक्त कर पूर्वजों ने मानव की समस्याओं को हल किया था।

किन्तु दुर्भाग्य से आज का भारतीय अपने पूर्वजों द्वारा दिखाये गये मार्ग से उल्टा हटने लगा है। यही कारण है, हमारे पुन: समस्याग्रस्त होने का। आज भारत का बहुसंख्यक समुदाय चारों ओर से समस्याग्रस्त है। इसके लिए गृहस्थ होने का आदर्श जो जीवन के आदर्श की पूर्ति में एक साधन था, दुस्साध्य होता जा रहा है। भारतीय बहुसंख्यक समुदाय से सम्बन्धित किसी भी सदस्य के घर में लड़की केलिए लड़का ढूंढ कर उसके हाथ पीले करने की समस्या, उसके लिए दहेज की समस्या ऐसा न किये जाने की अवस्था में या फिर किसी ऐसे ही कारणवश उत्पन्न तलाक की समस्या आज उसकी नींद हराम कर रही है। यद्यपि महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज के प्रचार से प्राप्त हुये प्रकाश में हमने स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देकर तथा विधवा विवाह प्रारम्भ कर सामाजिक दृष्टि से कुछ समस्याओं से जहां छुटकारा पा लिया है वहीं लड़का इतना पढ़ा है, या वह इतनी सम्पत्ति का स्वामी होने वाला है, अत: विवाह के समय वधू के अतिरिक्त एक मोटी राशि नकद में तथा आने जाने में सुविधा हेतु साइकिल कार तक रेडियो से टेलिविजन तक मनोरंजन, आजीवन पहनने के कपड़े तथा और भी बहुत कुछ उसे मिलना ही चाहिये, लड़की को देखने जैसे कार्य के लिए पुरुष और स्त्रियों का दल, लड़की पसन्द आने पर उनको मोटी दक्षिणा लड़की वालों की ओर से भी लड़के की व्यक्तिगत योग्यता की सर्वथा उपेक्षाकर उसकी पारिवारिक और उसमें भौतिक (सम्पत्ति सम्बन्धी) योग्यता को ही प्राथमिकता देना, टीके पर एक मोटी रकम की मांग, बारात के नाम पर शराबियों तथा खरमस्ती करने वालों की लम्बी फौज, इस सब पर होने वाला व्यर्थ का व्यय, जिसे न सह सकने की स्थिति में भयंकर परिणाम जैसा बहुत सी समस्याओं को जन्म भी दे दिया है।

इन समस्यों का ही परिणाम है कि आज भारतीय जन मानस अशान्त है, असन्तुष्ट है और है निराश तथा हताश। जिनके पास पर्याप्त साधन है, वे मिथ्या प्रतिष्ठा के मोह में उपरोक्त सब समस्याओं को जन्म दे रहे हैं तथा शेष क्योंकि या तो नकलची हैं या फिर किसी विवशतावश उन्हें जैसे तैसे इनसे निपटना ही पड़ता है। बातचीत में प्रत्येक व्यक्ति इन नई उत्पन्न हुई समस्याओं पर खूब चिन्ता व्यक्त करता है किन्तु अवसर आने पर वह भी इनके बढ़ने और बढ़ाने में ही सहायक हो रहा है। ऐसा कोई होगा जिसके घर में केवल लड़के ही लड़के हों। फिर क्यों लड़के का पिता लड़की के विवाह के समय आ चुकी या आने वाली समस्या को भूल जाता है? क्यों उसका मुंह इतना खुल जाता है कि सारा संसार भी उसमें ठूंस दिया जाए तो भी वह न भरा जाये? हमारे चारों ओर समस्याए मुंह बाये हमें डसने को तैयार खड़ी हैं और हम हैं कि उन्हें और बढ़ाने जा रहे हैं।

समस्याओं के इस अंधियारे में सर्वखाप पंचायत जैसे आयोजनों से प्रकाश को किरणें एक बार फिर से दिखाई देने लगी हैं। पर सबके लिए नहीं केवल एक जाति विशेष के लिए ही। जब भारतीय समाज जातियों का समूह बन गया है तब प्रत्येक जाति के अगुवा पुरुषों को चाहिए कि वे इन समस्याओं से निपटने वालों को भरपूर सहयोग दें। पंचायत के अधिकारियों को भी चाहिये कि वे इसके आगामी आयोजन में जो सम्भवत: १२ जून को गोहाना में हो रहा है, सभी वर्गों, जातियों के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित कर इसमें लिए जाने वाले निर्णयों से इन को भी सम्बद्ध करें। सर्वखाप पंचायत के नाम से भिन्न-भिन्न स्थानों पर हुई बैठकों में लिये गये निर्णय भी एक रूप नहीं हैं। आगामी आयोजन में उनमें एक रूपता लाई जाने की महती आवश्यकता है।

भारतीय समाज का हम सब अंग हैं। एक अंग की पीड़ा सारे शरीर की पीड़ा बन जाती है और फिर जब सारा शरीर ही पीड़ाग्रस्त हो तो उसका निदान तत्काल किये जाने को आवश्यकता होती है। जो सामाजिक कार्यकर्त्ता समाज से इन समस्याओं को निकालने में जुटे हैं वे निस्संदेह भारतीय मनीषियों के आदर्श का अनुकरण कर रहे हैं, ऐसे में समाज के प्रत्येक घटक का भी दायित्व बन जाता है कि इस महत्त्वपूर्ण कार्य में वह जी-जान से उनका सहयोग करे।

—रणवीर

(पृष्ठ ८ का शेष)

चौ० रावतसिंह मुहाग मातनहेल रोहतक	,,
ड० रणजीतसिंह माडल टाउन रोहतक	,,
मन्त्री आर्यसमाज खरक कला	,,
मास्टर पूर्णसिंह जी मामूरपर नरेला दिल्ली	,,
चौ० सिंहराम जी मोहल्ला जाटान करनाल	,,
श्री कर्नल हरगुलाल जी ग्रेटर कैलाश देहली	,,
श्री जयभगवान् जी हुमायुंपुर रोहतक	,,
स्वामी आनदमिश्र जी नयाबास देहली	,,
महाशय फकीरचद जी रोहतक	,,
चौ० रामसिंह जी मामपुर नरेला देहली	,,
श्री अतरसिंह जी मामपुर नरेला देहली	,,
चौ० होश्यारसिंह जी मामपुर नरेला देहली	,,
पंडित मूलचन्द पाना पपोसिया नरेला देहली	
चौ० भीमसिंह जी नरेला देहली	,,
मा० चित्रसिंह आर्य तिगीपुर देहली	,,
पटवारी रामसिंह नरेला देहली	,,
चौ० यादराम जी किसरेंटी रोहतक	,,
चौ० राजेराम जी खातीवास दादरी (भिवानी)	५०१-००
ब्र० सुरेन्द्रकुमार ,, ,,	१०१-००
वैद्य बलवन्तसिंह आर्य बालयाणा रोहतक	११००-००
डा० यज्ञवीर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक	१०१-००
प्रो० डा० सुदर्शनदेव आचार्य, रोहतक	१०१-००

निर्वाण शताब्दी के उपहार

महर्षि दयानन्द के प्रामाणिक जीवन चरित का प्रकाशन

अजमेर—आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महर्षि दयानन्द का प्रामाणिक विस्तृत तथा शोधपूर्ण जीवन चरित प्रथम बार हिन्दी भाषा में लिखा जाकर निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित किया जा रहा है। अब तक की शोध तथा खोजों के आधार पर लिखा गया लगभग ६०० पृष्ठों का यह विशाल ग्रन्थ आर्यसमाज ही नहीं अपितु हिन्दी साहित्य की एक मूल्यवान कृति होगा। इसमें स्वामी दयानन्द के प्रामाणिक चित्रों के अतिरिक्त उन स्थानों के चित्र भी दिये जा रहे हैं, जहां स्वामी जी पधारे थे और रहे थे। डा० भारतीय ने अपने जीवन के ३० वर्ष महर्षि के जीवन तथा व्यक्तित्व अध्ययन में समर्पित किये हैं। अतः उनकी लेखनी से प्रस्तुत यह ग्रन्थ संग्रहणीय होगा। इसका प्रकाशन परोपकारिणी सभा कर रही है

प्रबन्धक वैदिक यन्त्रालय अजमेर

शहीद बिस्मिल की बहन को आजीवन सहायता की पेशकश

नई दिल्ली, १० मई (मंगलवार) केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश की कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव में शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की बहन व स्वतन्त्रता सेनानी श्रीमती शास्त्री देवी को आजीवन संरक्षण देने की पेशकश की है। एक भेंट पत्र में उनसे अनुरोध किया गया कि वे परिषद् के मुख्यालय आर्यसमाज कबीर बस्ती में जीवन पर्यन्त रहें, जहां उनके खानपान व आवास की सुन्दर व्यवस्था की जायेगी।

आर्य युवकों का एक प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र ही इस संदर्भ में श्रीमती शास्त्री देवी से पुनः भेंट कर कारगर कदम उठायेगा।

परिषद् के महासचिव श्री अनिलकुमार आर्य ने स्वयंसेवी संस्थाओं और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को आह्वान किया है कि वे देश के लिए शहीद हुए परिवारजनों को हर प्रकार का सहयोग दें। न कि सरकार से मांग करें या प्रदर्शन करें। इसी प्रकार चौ० राममेहर एडवोकेट रोहतक ने श्री जयपाल आर्य पुस्तक विक्रेता द्वारा बहन जी के पास सन्देश भेजकर निवेदन किया है, वे जब चाहे उनके निवास पर आ सकती हैं। सभी आर्यों के घर के द्वार बहन शास्त्री देवी के लिए खुले हैं।

सम्पादक के नाम पत्र

मान्यवर महोदय,

इधर अनेक समाचार पत्रों में ८ मई, रविवार को आर्यसमाज केसरगंज, अजमेर की बैठक में मेरी उपस्थिति को तथ्यों से हटाकर प्रस्तुत किया गया है जिसके कारण अनेक लोगों को भ्रान्ति हो गई है कृपया अपने पत्र में इस स्पष्टीकरण को स्थान देकर तथ्यों को पाठकों तक पहुंचाने में सहयोग करें।

मुझे सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने मिलने के लिए आग्रह पूर्वक बुलवाया था और सन्देशवाहक के रूप में श्री दत्तात्रेय बाव्ले तथा श्री छोटूराम जी मेरे पास आये थे। मैंने शिष्टाचार वश जाना उचित समझा और लाला जी से मिलने गया। सभा में अपने वक्तव्य में मैंने स्पष्ट रूप में कहा था कि परोपकारिणी सभा ने ५ वर्ष पूर्व से निर्वाण शताब्दी की घोषणा कर दी है और आज जब समारोह की तैयारियां पूर्ण हो चुकी हैं ऐसी परिस्थिति में किसी प्रकार का परिवर्तन सम्भव नहीं है साथ ही इस समारोह के लिए विधिवत अखिल भारतीय समिति का गठन किया गया जिसके प्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज हैं। यदि आपको कोई बात करना है तो उन्हीं से करें। यह भी निवेदन है कि दिनांक २१-११-८२ को पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में निर्वाण शताब्दी कार्यालय का उद्घाटन स्वयं अपने कर-कमलों से कर चुके हैं। अतः नवीन कार्यालय खोलना उचित नहीं है। ऐसे वक्तव्य के बाद भी कुछ लोगों के द्वारा मेरे सहयोग देने की बात का प्रचार करना उनके दुर्भावनापूर्ण व्यवहार को इंगित करता है। समस्त सज्जनों से मेरा निवेदन है कि वे परोपकारिणी सभा द्वारा मनाये जा रहे समारोह को सफल बनाने में तन-मन-धन से सहयोग करें और मिथ्या प्रचार में न आवें।

श्रीकरण शारदा
मन्त्री, परोपकारिणी सभा

हरयाणा के हितों की रक्षार्थ भू० पू० सैनिक आंदोलन करेंगे

झज्जर, २५ मई (निस) हरयाणा के भूतपूर्व सैनिकों ने चेतावनी दी है कि यदि केन्द्रीय सरकार ने अकालियों के दबाव में आकर हरयाणा के हितों के विरुद्ध कोई निर्णय किया तो राज्य के भू० पू० सैनिक इसका डटकर विरोध करेंगे।

भूतपूर्व सैनिकों की बैठक में पारित प्रस्ताव में निर्णय किया गया कि यदि केन्द्र ने हरयाणा विरोधी फैसला किया तो उसके विरुद्ध आंदोलन शुरु किया जायेगा।

बैठक के पश्चात् भूतपूर्व सैनिक नेता कप्तान हवासिंह नांदल ने पत्रकारों को बताया कि आन्दोलन के लिए जून में भूतपूर्व सैनिकों का एक विशाल सम्मेलन रोहतक में होगा जिसमें २० हजार से अधिक भू० पू० सैनिक भाग लेंगे।

श्री नांदल ने बताया कि लोकदल नेता चौ० चरणसिंह की सुरक्षा के लिए ५० भूतपूर्व सैनिकों को नियुक्त किया जायेगा। यह पग अकाली नेताओं की ओर से चौ० चरणसिंह को दी गई धमकियों को ध्यान में रखकर उठाया जा रहा है। (दैनिक ट्रिब्यून)

जून मास में आर्यसमाजों के कार्यक्रम

आर्यसमाज दामला जि० अम्बाला	३ से ५ जून
,, दहकोरा जि० रोहतक	१ से २१ जून
(चतुर्वेद पारायण यज्ञ तथा वेद सम्मेलन)	
,, गन्नौर शहर जिला सोनीपत	१० से १२ जून
,, गोकरण तालाब रोहतक	१० से १२ ,,
,, रामपुर कुण्डल जि० सोनीपत	१० से १२ ,,
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ (रोहतक)	१३ से १९ ,,

आर्यसमाज की गतिविधियां—

हरयाणा में आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज सिरसा—

प्रधान—श्री आत्माराम आर्य, उपप्रधान—प्रकाशचन्द, मनफूलसिंह आर्य, मन्त्री—रामचन्द, उपमन्त्री—सत्यपाल मिस्त्री, प्रचारमन्त्री—श्री बलदेवसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—सुभाषचन्द, कोषाध्यक्ष—मोहनलाल

आर्यसमाज चरखी-दादरी जि० भिवानी—

संरक्षक-श्री लज्जेराम अध्यापक, प्रधान—दुलीचन्द गुप्त, उपप्रधान—कंवरसिंह अध्यापक, पं० हरिचन्द, मन्त्री—हुकमचन्द, उपमंत्री रिजुराम, कोषाध्यक्ष—म० कृष्णचन्द, उपकोषाध्यक्ष—श्री श्यामसुन्दर प्रचारमन्त्री—म० प्रभुदयाल

आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द—

प्रधान—श्री राजपाल, उपप्रधान—पृथ्वीसिंह, मन्त्री—सूरजभानु, कोषाध्यक्ष—नारायणदत्त, प्रचारमन्त्री—ईश्वरसिंह

स्त्री आर्यसमाज मुवाना जि० जीन्द—

प्रधाना-श्रीमती कमला देवी, उपप्रधाना—सरोज, मन्त्री—किरण देवी, उपमन्त्री- रोशनी देवी, कोषाध्यक्ष —लीलादेवी, प्रचारमन्त्री—श्रीमती कमलेश

आर्यसमाज आटा जिला करनाल—

प्रधान—ब्र० ओमस्वरूप कुलपति गुरुकुल डिकाडला, मन्त्री—श्री धर्मवीर एम० ए०, कोषाध्यक्ष—श्री ओमसिंह

आर्यसमाज मनाना जिला करनाल—

प्रधान—श्री रतनसिंह, मन्त्री—मास्टर सहदेव, कोषाध्यक्ष—श्री इन्द्रसिंह

आर्यसमाज रामपुर जाटान जिला अम्बाला—

प्रधान—श्री साहबसिंह, मन्त्री—श्री रामकुमार, कोषाध्यक्ष—श्री फूलसिंह

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत (करनाल)

प्रधान—ला० दलीपसिंह आर्य, उपप्रधान-लाला रामानन्द, कालूराम, मन्त्री—आदित्य प्रकाश, उपमन्त्री—अश्वनी कुमार, प्रचारमन्त्री-सहदेव, कोषाध्यक्ष—कुलभूषण, पुस्तकाध्यक्ष—प्रेमचन्द

आर्यसमाज ताहरपुर कलां जिला अम्बाला

प्रधान—श्री राजाराम आर्य, उपप्रधान—जरनैलसिंह आर्य, मन्त्री प्रेमपाल आर्य, उपमन्त्री—मदनलाल आर्य, कोषाध्यक्ष-बचनलाल, आर्य प्रचारमन्त्री—रतनलाल आर्य, पुस्तकाध्यक्ष —सीताराम आर्य

आर्यसमाज थानेसर जिला कुरुक्षेत्र—

प्रधान-श्री बुटामल शर्मा, मन्त्री—देवदत्त भारती, कोषाध्यक्ष—श्री पूर्णचन्द

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद जिला महेन्द्रगढ

प्रधान—श्री विश्वम्भरदयाल, मन्त्री-ताराचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री श्यामलाल

आर्यसमाज कालका जिला अम्बाला—

प्रधान—श्री महेन्द्रपाल, मन्त्री—श्री सुरेन्द्रपाल, कोषाध्यक्ष—श्री पूर्णचन्द

आर्यसमाज भोरा रसूलपुर जि० सोनीपत—

प्रधान-श्री लक्ष्मणसिंह, मन्त्री-ज्ञानीराम, कोषाध्यक्ष-चन्दगीराम

हेलीमण्डी में आर्यसमाज मन्दिर बनाने की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी प्रिंसिपल के प्रयत्न व बा० जयनारायण आर्य सेवा निवृत्त रेलवे स्टेशन मास्टर के सहयोग से पंचायत की ओर से हेलीमण्डी जिला गुडगांव में आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए सड़क पर १८०० गज भूमि दान में मिली है। हेलीमण्डी तथा इसके आस पास के गांवों में अभी तक कोई आर्यसमाज मन्दिर नहीं है। यहां मन्दिर बन जाने पर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार का एक मुख्य केन्द्र बन सकता है। इस क्षेत्र की जनता आर्थिक दृष्टि से कमजोर है। आर्यसमाज के प्रचार की वहां आवश्यकता है।

अतः हम दानी महानुभावों से अपील करते हैं कि हेलीमण्डी में आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए उदारता पूर्वक अधिक से अधिक दान भेजकर यश के भागी बनें। दान मनीआर्डर द्वारा बा. जयनारायणआर्य सेवा निवृत्त रेलवे स्टेशन मास्टर दयानन्द मार्ग टोडापुर पोस्ट आफिस हेलीमण्डी जिला गुडगांव के पते पर भेजें। निवेदक

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ, रोहतक

योग्य वर की आवश्यकता

२१ वर्षीया ब्राह्मणकुलोत्पन्न हायर सेकंडरी प्रभाकर व शास्त्री (वाराणसी) उत्तीर्ण कद ५ फुट १ इंच कन्या हेतु उपयुक्त संस्कृतज्ञ आर्य वर अपेक्षित। जाति बन्धन नहीं।

इन्द्र जीतदेव, नवीकरण मण्डल
नहरू कालोनी यमुनानगर, जि० अम्बाला

मुसलमान परिवार वैदिक धर्म में

बिजोर जिला अम्बाला की एच० एम० टी० फैक्ट्री में श्री प्रेमसिंह पहलवान के संयोजन में चार मुसलमान भाइयों ने स्वेच्छा से १२-५-८३ को यज्ञ के अवसर पर वैदिक धर्म में प्रवेश किया है। इस प्रकार श्री नवाया—नवाबसिंह, श्री रहीमखां—रणवीरसिंह, श्री अजमनखां—अजमेरसिंह तथा श्री सरजू से सूरजमल बन गये हैं।

विक्रमसिंह आर्य

सर्वहितकारी के आजीवन सदस्य

सभा के महोपदेशक पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी ने गत मास अपने प्रचार कार्य में श्री अनिलकुमार गुप्त मकान नं० ३५८ लालकुर्ती बाजार अम्बाला छावनी, आर्यसमाज सोनीफलिया महर्षि दयानन्द मार्ग सूरत (महाराष्ट्र) श्री हरदास जी पहलवान आदर्श मेडीकल स्टोर आगरा मार्ग धूलिया (महाराष्ट्र) को सर्वहितकारी साप्ताहिक का २०१) लेकर आजीवन सदस्य बनाया है। वेद मन्दिर परवाणु (हिमाचल) से आर्यसमाज के वयोवृद्ध कर्मठ संन्यासी स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी ने श्री १००) मनीआर्डर द्वारा भेजकर सर्वहितकारी को आर्थिक सहायता की है।

आशा है अन्य महानुभाव भी २००) भेजकर सर्वहितकारी साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बनेंगे।

सभा मन्त्री

आर्य वीर दल पलवल का प्रथम वार्षिकोत्सव

पलवल। आर्य वीर दल हरयाणा के तत्वावधान में आर्य वीर दल पलवल की ओर से ३० मई से ५ जून तक आर्य वीर शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आर्य वीरों को देश भक्ति तथा वर्तमान सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने का प्रयास किया जाएगा। इस शिविर में शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन आदि की शिक्षाएं भी दी जायेंगी जिसका सामूहिक प्रदर्शन शिविर समापन के दिन दिखाया जाएगा। इस शिविर में स्वामी ओमानन्द जी महाराज (अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) प्रो० उत्तमचन्द जी शरर (संचालक आर्य वीर दल हरयाणा) श्री चन्द प्रकाश जी (उपसंचालक आ. वी. द. हरयाणा) पंडित सत्यप्रिय जी (प्राचार्य दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय हिसार) आदि विद्वान् नेता भाग लेंगे। ४ व ५ जून को आर्य वीर दल पलवल का वार्षिक उत्सव होगा जिसमें दीवान भीमसेन डा० प्रशान्तकुमार वेदालंकार प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली तथा श्री प्रियव्रत जी शास्त्री आदि विद्वान् वक्ता पधारेंगे तथा श्री सोहनलाल जी भजनोपदेशक के मनोहर गीत भी होंगे।

ग्रीष्म कालीन आर्य वीर शिक्षण शिविर

आर्य वीर दल हरयाणा के तत्वावधान में आर्य वीर दल पानीपत की ओर से आर्यसमाज माडल टाऊन पानीपत में २५-५-८३ से ३०-५-८३ तक आर्य वीर शिक्षण शिविर लगाया जाना निश्चित हुआ है। इसका प्रबन्ध आर्यसमाज माडल टाऊन के अधिकारी बड़े लगन और उत्साह से कर रहे हैं। इस शिविर मे युवको को शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक प्रेरणायुक्त शिक्षा दी जायेगी तथा इसके साथ व्यायाम, प्राणायाम, योगासन आदि की क्रियायें सिखलाई जायेंगी। इस शिविर में आचार्य सत्यप्रिय जी (प्राचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार) प्रोफेसर उत्तमचन्द जी शरर (संचालक आर्य वीर दल हरयाणा) प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु (डी. ए. वी. कालेज अबोहर) श्री अजीतकुमार आर्य (मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा) आदि भाग लेंगे। शिविर का प्रशिक्षण कार्य श्री सत्यपाल जी आर्य, श्री प्रह्लादराय आर्य, श्री जगदीशचन्द्र जी वसु आदि विद्वान् शिक्षक करेंगे। इस शिविर में १५ वर्ष से ऊपर की आयु के युवक गणवेश मे आमन्त्रित हैं।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस, (जि० अलीगढ़)

१ जुलाई १९८३ से नया वर्ष। शिशु कक्षा से बी० ए० स्तर एवं आचार्य तक को निःशुल्क शिक्षा। गुरुकुल पद्धति पर निःशुल्क छात्रावास सबका सीधा-सादा, एकसा रहन-सहन, कड़ा अनुशासन, नगर से दूर स्वास्थ्यप्रद जलवायु। सामान्य विषयों के अतिरिक्त धर्म, संगीत, नैतिकता, गृहकार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा। देशी घी, दूध नाश्तों सहित भोजन शुल्क ८० रुपये मात्र। नियमावली मगवायें।

—मुख्याधिष्ठात्री

अनुकरणीय सेवा कार्य

इस नए वर्ष में ढाई हजार अप्रेशन, ६६ हजार बच्चों के स्कूलों में जा-जा कर नेत्र परीक्षण और दिल्ली के ६६ देहातों के ग्रामों में जाकर नेत्र रोगियों का उपचार किया जायेगा। यह घोषणा आज महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट के प्रधान, दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य नेता महाशय धर्मपाल जी ने एक प्रेस वक्तव्य में की है।

महाशय धर्मपाल जी ने घोषणा की कि म० चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा बनाए जा रहे जनकपुरी में दो सौ बिस्तरे के विशाल चिकित्सालय जिस पर २ करोड़ रुपये खर्च आने का अनुमान है, साढे ४ लाख रुपए के अतिरिक्त व्यय करके २५ बिस्तरे का अस्थाई चिकित्सालय बना दिया है जो जुलाई के प्रथम सप्ताह में अपना कार्य आरम्भ कर देगा, इस वष बिल्कुल निःशुल्क कार्य करेगा।

आर्यसमाज

जिसने महिमण्डल को फिर से
वेदों का सन्देश दिया।
भ्रमित जनों को मार्ग दिखाकर
पावनतम् , उपदेश दिया।
जिसके संस्थापक थे ऋषिवर
दयानन्द से विज्ञाता।
जो आगे बढ बना देश का
प्रहरी, गौरव उद्गाता।

मनुजता सम्पूरित जो है, सत्य अहिंसा जिसकी साज।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् जिसमें, वही हमारा आर्यसमाज॥

लेखराम श्रद्धानन्द जैसे
मिले इसे हैं बलिदानी।
भारत के इतिहास पृष्ठ पर
अंकित गाथा लासानी
जिसके अमर सपूतों ने है
तोड़ा भारत मां का बंधन।
जिसने नष्ट किया भारत
की अबलाओं का दारूण क्रंदन।

सोता राष्ट्र जगाया जिसने बढता प्रगति पथ पर आज।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् जिसमें वही हमारा आर्यसमाज॥

भूले भारत के जनगण को
जिसने मार्ग दिखाया है।
वैदिक संस्कृति पुराकाल की
पुनः धरा पर लाया है।
जिसने भूमण्डल भर के
अज्ञान तिमिर को ललकारा।
बीच भवर में फंसी मनुजता
को जिसने है उद्धारा।

ढोंगी-ठग-मुल्लाओं का सब खोल दिया है जिसने राज।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् जिसमें वही हमारा आर्यसमाज॥

आर्यसमाज बढ़े उन्नति पथ
स्वर्ग बनेगी वसुन्धरा।
कण-कण प्रमुदित होगा निश्चय
हर्षित होगी दिव्य धरा।
बढो सपूतो! ओ३म् ध्वजा,
सारे जग में फहराना है।
शान्ति सफलता समृद्धि का
संगीत हमें अब गाना है।

दृगोन्मेष कर रही दिशाएं, जाग उठा है अब गिरिराज।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दम् जिसमें, वही हमारा आर्यसमाज॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

गुरुकुल करतारपुर में नया प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर में (पंजाब) जून १९८३ नया प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेश के लिए कम से कम कक्षा ५ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। प्रवेश नियम निःशुल्क मंगावें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी और परोपकारिणी सभा

डा० भवानीलाल भारतीय

पर्याप्त समय से समाचार पत्रों तथा वार्तालाप के प्रसंगों में ऋषि की निर्वाण शताब्दी अजमेर में मनाये जाने के औचित्यानौचित्य को लेकर पर्याप्त तीखी कभी कभी कटुतापूर्ण तथा यथार्थ से हटकर बातें लिखी और कही जा रही हैं। अनेक महानुभावों ने इस प्रसंग में सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी को प्रतिद्वन्द्वी तथा एक दूसरे को स्पर्धा करने वाली संस्थाओं के रूप में चित्रित करने का भी प्रयास किया है। वस्तुतः महर्षि दयानन्द ने संसार के उपकार करने जैसे अत्यन्त व्यापक उद्देश्य को सामने रखकर आर्यसमाज की स्थापना की थी। परन्तु परोपकारिणी सभा के निर्माण में उनका उद्देश्य नितान्त भिन्न था। इस संस्था को उन्होंने अपनी उत्तराधिकारिणी इस अर्थ में बनाया कि उनके निधन के पश्चात् उनके ग्रन्थों के मुद्रण, प्रकाशन तथा प्रचार प्रसार का दायित्व इसी सभा का होगा। इसके साथ ही उनके ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों की देखभाल, सुरक्षा तथा उनके द्वारा शास्त्र प्रचार की दृष्टि से स्थापित वैदिक यंत्रालय जैसे संस्थान की व्यवस्था का दायित्व भी उन्होंने परोपकारिणी सभा को ही सौंपा था। आर्यसमाज का सुधी पाठक ही इस बात को जान सकता है कि सार्वदेशिक सभा की स्थापना (१९०८ ई०) से पूर्व यद्यपि पंजाब, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान में प्रान्तीय सभायें स्थापित हो गई थी, किन्तु अखिल भारत की आर्य समाजों के पारस्परिक विचार विमर्श तथा नीति निर्माण का एकमात्र केन्द्र परोपकारिणी सभा ही थी। यही कारण है कि इस सभा के विगत शताब्दी के अन्तिम दशकों में हुये वार्षिक अधिवेशनों में सुदूर प्रान्तों की आर्यसमाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित होते थे तथा आर्यसमाज की सामूहिक नीतियों के सम्बन्ध में वैचारिक आदान प्रदान करते थे।

जब १९०८ में विधिवत सार्वदेशिक सभा की स्थापना हो गई, तो परोपकारिणी सभा ने अपनी कार्य प्रवृत्तियों को ऋषिकृत ग्रन्थों के मुद्रण, प्रकाशन तथा प्रचार प्रसार तक ही सीमित कर लिया। उचित भी था, क्योंकि आर्यसमाज की व्यापक गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक स्तर के संगठन सफलता पूर्वक कार्य कर रहे थे। यह कहना और लिखना भी तथ्यों की अनदेखी करना ही है कि परोपकारिणी सभा ऋषिकृत ग्रन्थों के मुद्रण व प्रकाशन के कार्य में किसी भी प्रकार से कर्त्तव्यच्युत हुई अथवा इसमें प्रमाद और शैथिल्य दिखाया। यों तो हर कार्य में सुधार और तरक्की की गुंजाइश होती है, तथापि यह निर्व्याजभाव से कहना होगा कि अपने १०२ वर्षों के इतिहास में वैदिक यंत्रालय ने परोपकारिणी सभा के निर्देशन में ऋषिकृत ग्रन्थों के मुद्रण, प्रकाशन का जो यत्न किया, वह पर्याप्त संतोषप्रद ही रहा।

१९३३ में जब ऋषि के परलोक प्रस्थान को ५० वर्ष हो गये, परोपकारिणी सभा को भी कापी राइट कानून के अन्तर्गत एक कठिनाई का सामना करना पड़ा। अब तक तो ऋषिकृत ग्रन्थों को प्रकाशित करने का पूर्ण अधिकार इसी सभा को प्राप्त था, किन्तु लेखक की मृत्यु के ५० वर्ष पश्चात् कोई भी व्यक्ति उसके ग्रन्थों को छाप ले, इस नियम का लाभ लेकर अन्य प्रकाशकों ने भी ऋषि के ग्रन्थों को छापना आरम्भ कर दिया। सभा ने इस पर कोई टीका टिप्पणी नहीं की। यद्यपि यह सुविदित तथ्य है कि रामलाल कपूर ट्रस्ट अथवा आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, आर्य साहित्य मण्डल आदि कुछ अपवादों को छोड़कर अन्य प्रकाशकों ने स्वामीकृत ग्रन्थों के मुद्रण एवं प्रकाशन में यथोचित सावधानी नहीं बरती, जिसके फलस्वरूप महर्षि के ग्रन्थों के मुद्रण गैट अप आदि के स्तर की रक्षा नहीं हो सकी। ध्यान केवल इस बात का रखा गया कि कम से कम मूल्य में ग्रन्थ बिकें, उनकी शुद्धता पाठगत प्रामाणिकता आदि को सर्वथा ओझल कर दिया गया।

एक हल्ला यह मचाया गया कि परोपकारिणी सभा के ग्रन्थ भण्डार में महर्षि द्वारा लिखित अनेक ग्रन्थ ऐसे पड़े हैं, जो अद्यापि अप्रकाशित हैं तथा सभा की लापरवाही से वे अभी तक प्रकाश में नहीं आ सके हैं। यह बात वही कहेगा, जिसको वस्तुस्थिति का ज्ञान न होगा। इन पंक्तियों का लेखक, न केवल सभा का उत्तरदायी अधिकारी ही है, उसकी विद्वत् समिति का संयोजक होने के कारण सभा के प्रकाशनों की नीतियों का निर्माता भी है। मैं स्वयं १२ वर्ष तक (१९६९ से १९८०) अजमेर में रहकर वैदिक यंत्रालय द्वारा प्रकाशित होने वाले सभी ग्रन्थों तथा सभा के ग्रंथालय में सुरक्षित ग्रन्थों, पाण्डुलिपियों आदि से सम्बन्धित तथ्यों की अपनी पूरी जानकारी के आधार पर आर्य जनता से प्रथम बार और स्पष्ट रूप से निवेदन करना चाहता हूं कि वे ऋषि कृत ग्रन्थों की वास्तविकता से परिचित हों।

सभा के पाण्डुलिपि भण्डार में दयानन्द कृत 'चतुर्वेद विषय सूची' थी, जिसे लगभग १०-१२ वर्ष पूर्व ही प्रकाशित कर दिया गया। बहुत अधिक चर्चा इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में चलाई गई थी कि यह भावी वेद भाष्यकारों के लिए अत्यधिक उपयोगी होगा आदि। मैं नहीं जानता कि इस दशक के वेद भाष्यकारों ने इस ग्रंथ से कितनी सहायता ली है। आज भी यह ग्रंथ बहुत कम बिकता है। जिन दो तीन अन्य ग्रंथों को प्रकाशित किये जाने के सम्बन्ध में चर्चा होती है, वे हैं—ऋग्वेद के प्रारम्भ के अनेक सूक्तों का विस्तृत भाष्य। यहां यह ध्यातव्य है कि सभा पाण्डुलिपि भंडार में इन पंक्तियों के लेखक को ऋग्वेद के प्रारम्भिक २३ मन्त्रों का स्वामीकृत भाष्य उपलब्ध हुआ था। वह भी लगभग १० वर्ष पूर्व प्रकाशित किया जा चुका है। जहां तक ७० मन्त्रों के विस्तृत भाष्य का प्रश्न है, उसकी अभी तलाश जारी है। मैंने व्यक्तिगत रूप से पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक से निवेदन किया था कि वे समय निकाल ७० मन्त्रों के इस भाष्य का संधान करें। गत नवम्बर मास के आरम्भ में मेरे इसी अनुरोध पर, श्री मीमांसक जी जयपुर में सम्पन्न हुए प्राच्य विद्या सम्मेलन के पश्चात् अजमेर आये और निरन्तर दो दिनों तक इस हस्तलेख की तलाश की। पाण्डुलिपि नहीं मिली। यदि निकट भविष्य में मिलती है तो इसे प्रकाशित कर सभा प्रसन्नता का अनुभव करेगी।

दूसरी अप्रकाशित पुस्तक जिसकी अधिक चर्चा है, वह है स्वामी जी द्वारा कराया कुरान का हिन्दी अनुवाद। इसे यदि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाशित कराया गया तो पृथक् बात है, अन्यथा आज कुरान के अच्छे से अच्छे अनुवाद उपलब्ध हैं। उस स्थिति में उसका सभा द्वारा प्रकाशन क्या औचित्य रखता है, यह विचारशील महानुभाव सोचें। मैं व्यक्तिशः इसे प्रकाशित करने के पक्ष में नहीं हूं और यह भी बता दूँ कि स्वामी जी ने वैदिक यंत्रालय को वेदादि सत्य शास्त्रों तथा अन्य आर्ष ग्रथों के प्रकाशन का ही अधिकार दिया था न कि सैमेटिक मजहब के धर्म ग्रन्थों के प्रचार का। अस्तु ! परोपकारिणी सभा के पाण्डुलिपि भण्डार में कतिपय ऐसी नोटबुक्स हैं जो निरुक्त ब्राह्मण तथा अन्य शास्त्र ग्रन्थों की सूचियों के रूप में हैं। इनकी संख्या पर्याप्त अधिक है इन नोटबुक्स को स्वामी जी ने ग्रन्थ लेखन के समय उपयोग हेतु (Ready Reference) लिखा था, न कि पुस्तकाकार प्रकाशन के लिए। जैसे मूल ग्रन्थ के छप जाने पर उसके प्रणयन में सहायता करने वाले नोट्स, टिप्पणियां आदि केवल संग्रहालय में ही रखे जाने योग्य रहते है, वही स्थिति इन सूची ग्रन्थों की है। यदि इनका प्रकाशन स्वामी जी को अभिप्रेत होता तो उनके मुख पृष्ठों पर वे लेखक रूप में अपने नाम आदि का अवश्य निर्देश कर जाते।

(क्रमशः)

स्वामी ओमानन्द सरस्वती अभिनन्दन हेतु प्राप्त दान-सूची

श्री महेन्द्र प्रताप जी मुजफ्फर नगर	३७२-००
,, प्रधान आर्यसमाज दीनानगर	२५०-००
,, प्रो० सत्यवीर जी मुजफ्फर नगर यू०पी०	२५०-००
श्रीमती सोमवती खरक पाण्डवान जीन्द	२०१-००
आर्यसमाज अमर कालोनी दिल्ली	२०१-००
प्रि० माधवसिंह बड़ौत मेरठ	२०१-००
स्त्री आर्यसमाज अमर कालोनी लाजपत नगर नई दिल्ली	१८१-००
स्त्री आर्यसमाज करौल बाग नई दिल्ली	१७६-००
कुलपति गुरुकुल आटा डिकाडला (करनाल)	१११-००
आर्यसमाज विनयनगर	१०१-००
मा० करतारसिंह माजरी	१०१-००
श्री होश्यारसिंह मलकपुर	१०१-००
,, धर्मव्रत शास्त्री हड़ौदा कलां	१०१-००
,, केहरसिंह बलियाणा	,,
,, रणधीरसिंह बलियाणा	,,
,, लालचन्द जी मदाना खुर्द	,,
,, सुखवीर शास्त्री आदर्श नंगला मेरठ	,,
,, धर्मपालसिंह ,, ,, ,,	,,
मा० दीपचन्द आर्य कासनी रोहतक	,,
दरयावसिंह की बहन रुक्मणी	,,
श्री हंसराज आर्य हांसी (हिसार)	,,
,, यज्ञवीरसिंह शास्त्री बवाना दिल्ली	,,
,, स्वामी धर्मानन्द गुरुकुल आमसेना उड़ीसा	,,
मा० चेतराम जी बांकनेर	,,
श्री दलीपसिंह (वैद्य कर्मवीर के भाई)	,,
मा० हरिसिंह नागल ठाकरान दिल्ली	,,
श्री मनफूलसिंह रामपुर कुण्डल	,,
श्रीमती सावित्री देवी बाजीदपुर दिल्ली	,,
श्री जिलेसिंह शेरसा सोनीपत	,,
ला० जगन्नाथ नरेला की सुपुत्री	,,
ला० जगन्नाथ नरेला की धर्मपत्नी	,,
श्री राममेहर सरपंच लगरपुर रोहतक	,,
श्रीमती सावित्री स्नातिका रोहतक	,,
म० चन्दराम आर्य नरेला	,,
आचार्य देवव्रत व्यायामाचार्य	,,
मा० कुन्दनसिंह आर्य रासीवास भिवानी	,,
चौ० सिहरामसिंह कुटबा मुजफ्फर नगर	,,
डा० ईश्वरसिंह मलिक	,,
श्री राजपालसिंह शोरो मुजफ्फर नगर	,,
प्रो० सत्यवीर मलिक जाट कालिज हिसार	,,
श्रीमती प्रियंवदा कासण्डी सोनीपत	,,
आचार्या कन्या गुरुकुल ओम्ब	,,
आचार्य राजपाल शास्त्री गु० खेड़ी	,,
श्री धर्मवीरसिंह लाखू बुवाना करनाल	१०१-००
,, अजीतसिंह शास्त्री काकड़ोली भिवानी	,,
मा० लालमणि आर्य टरेसर दिल्ली	,,
श्रीमती राजबाला घवरा दिल्ली	,,
ब्र० ओम्वती स्नातिका नरेला	,,
श्रीमती सावित्री स्नातिका क० गु० नरेला	,,
श्रीमती विद्योत्तमा शास्त्री झज्जर रोहतक	,,
श्री परमानन्द तुली प्रधान दुर्गा भवन रोहतक	,,
म० हरद्वारीलाल आर्यनगर रोहतक	,,
सेठ दुलीचन्द चरखी दादरी	,,
श्री अमरसिंह गाजियाबाद	,,
,, लाला रामप्रताप चरखी दादरी	,,
वैद्य रत्नदेव कुण्डली सोनीपत	,,
चौ० देशराज उद्यान पाना नरेला	,,
आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल	,,
म० लालचन्द मदाना खुर्द रोहतक	,,
श्री भवानीप्रसाद चरखी दादरी	,,
प्रि० लाभसिंह आर्य हा० से० स्कूल पानीपत	,,

(क्रमशः)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी० न 23207/73 पोस्ट० न० P/RTK 49 फोन ७८११



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क २५ | ७ जून १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

आर्य वीरों द्वारा हरयाणा के हितों की रक्षार्थ बलिदान करने की शपथ

केदारसिंह आर्य द्वारा

रोहतक २८ मई—आर्य वीर दल रोहतक के तत्वावधान में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में बोलते हुए हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रोफेसर शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री ने कहा कि अब समय आ गया है कि राष्ट्र विरोधी तथा हिंसक गतिविधियों में सक्रिय अकालियों को अनुचित मांगों के प्रतिकार के लिए आर्यवीरों को मैदान में कूदना चाहिए। राष्ट्र के टुकड़े करने के लिए विदेशी ताकतों से अकाली सहायता ले रहे हैं। आपने पंजाब समस्या का उल्लेख करते हुए कहा कि पंजाब के अकाली रावी व्यास नदियों का फालतू पानी पाकिस्तान को मुफ्त में देकर खुश हैं परन्तु हरयाणा तथा राजस्थान को उनके हिस्से का पानी न देने के लिए आन्दोलन कर रहे हैं जबकि नहर खोदने के लिए हरयाणा की ओर से खर्च पंजाब सरकार को दिया जा रहा है। अपनी अनुचित मांगें स्वीकार करवाने के लिए पंजाब में हिंसा का वातावरण तैयार करके भारत सरकार पर दबाव डाला जा रहा है। पंजाब में उग्रवादी अकाली हिन्दूओं तथा निरंकारियों की हत्या करके गुरुद्वारों में शरण ले रहे हैं। इस प्रकार अकाली पृथक् खालिस्तान की मांग करके राष्ट्र को पुन: विभाजित करने का षड्यन्त्र रचा रहे हैं। पाकिस्तान, इंगलैण्ड, अमरीका तथा अरब देश इनकी सहायता कर रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह ने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यसमाज के योगदान का विवरण सुनाते हुए कहा कि वीर सावरकर, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, शहीद भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद आदि आर्यसमाज से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता संग्राम में कूदे थे। महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये सत्याग्रह में ८० प्रतिशत आर्यसमाज ही कार्यकर्त्ता थे।

आपने आर्य वीरों को आह्वान करते हुए राष्ट्र तथा हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए निम्नलिखित शपथ दिलाई:—

"मैं ईश्वर को साक्षी करके शपथ लेता हूं कि राष्ट्र की एकता सुदृढ करने के लिए अकाली दल तथा अन्य साम्प्रदायिक तत्त्वों के षड्यन्त्र को विफल करने और हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सब प्रकार का बलिदान करने के लिए तैयार हूं और समय आने पर स्वयंसेवक के नाते सब प्रकार का बलिदान देने में अग्रणी रहूंगा"।

इसी अवसर पर आर्य वीर दल हरयाणा के संचालक प्रोफेसर उत्तमचन्द शरर ने राष्ट्र की वर्तमान समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इतिहास इस बात का साक्षी है कि राष्ट्र रक्षा के कार्यों में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता सबसे आगे रहे हैं। वर्तमान राजनैतिक दल अपने पक्ष में वोट प्राप्त करने के लिए साम्प्रदायिक संघठनों से गठजोड़ करके राष्ट्र का हित नहीं कर सकते। अत: आर्य वीर दल के स्वयंसेवक प्रो० शेरसिंह के आह्वान के अनुसार राष्ट्र विरोधी तत्त्वों से टक्कर लेने के लिए तैयार हैं।

सभा के भजनोपदेशक पं० सूरतसिंह ने हरयाणा की रक्षा पर एक गीत प्रस्तुत किया। पं० जयदेव जतोई वाले ने भी युवकों को राष्ट्र रक्षा करने की अपील की। वार्षिक उत्सव से पूर्व आर्यवीर दल रोहतक की ओर से एक सप्ताह तक भगतसिंह पार्क में वेदकथा हुई जिसमें महात्मा प्रेमभिक्षु जी के प्रवचन तथा पं० सत्यदेव स्नातक के भजन हुए। इसी प्रकार दयानन्द मठ में एक सप्ताह तक आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें १०० से अधिक नवयुवकों ने श्रद्धापूर्वक भाग लेकर प्रात: जागरण, व्यायाम, प्राणायाम, स्नान, सन्ध्या; हवन तथा वैदिक शिक्षा ग्रहण की। व्यायाम शिक्षकों ने आर्य वीरों को लाठी चलाना, लाठी का प्रहार ओटना आदि का अभ्यास करवाया।

२७ मई शुक्रवार को दोपहर पश्चात् नगर कीर्तन का कार्यक्रम भी बहुत प्रभावशाली रहा। इसमें रोहतक नगर के सभी आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं ने ओ३म् ध्वज के साथ उत्साह पूर्वक भाग लिया। वैदिक धर्म, आर्यसमाज अमर रहे, शराब, मांस, भ्रष्टाचार बन्द करो, राष्ट्र रक्षा कौन करेगा ? हम करेंगे आदि जयघोषों से आकाश गूंज उठा। जलूस मे आर्यसमाज के अधिकारियों के अतिरिक्त महाशय भरतसिंह सभा मन्त्री, वैद्य भरतसिंह आर्य, चौ० किशनचन्द, प्रो० उत्तमचन्द शरर, श्री जगदीश आर्य तथा उनके सहयोगी आर्य वीर तथा कार्यकर्त्ता भारी संख्या में उपस्थित थे। इस प्रकार आर्य वीर एक सप्ताह तक प्रशिक्षण तथा राष्ट्र रक्षा करने की शपथ लेकर अपने कार्य में जुट गये।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की सूचना

नई दिल्ली २५ मई १९८३ को मध्यान्ह १२ बजे आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग के समाज भवन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान आदरणीय श्री रामगोपाल शालवाले परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज, प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री वेदव्यास जी, सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी और स्वामी सत्यप्रकाश जी की एक बैठक महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर के सम्बन्ध में हुई।

सर्वसम्मति से यह निर्णय किया गया कि आगामी दीपावली के अवसर पर ३, ४, ५, ६ नवम्बर को यह महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी सम्मिलित रूप में अजमेर में एक ही मंच पर मनाई जाएगी।

आर्य जनता से प्रार्थना है कि महर्षि निर्वाण शताब्दी को सफल करने के लिए तन-मन-धन से सहायता करें। धन राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ और परोपकारिणी सभा अजमेर को भेजें।

मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

वैदिक धर्म की दार्शनिक भूमिका

ले०—स्वर्गीय स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती
प्रेषक—ब्रह्मदत्त स्नातक

(गतांक से आगे)

उक्त दार्शनिक विचारधारा का जीवन की दृष्टि और उसके परमलक्ष्य के सम्बन्ध में क्या अर्थ निकलता है, इस पर निश्चित विचार करने की आवश्यकता है।

सबसे मुख्य बात यही है कि उक्त दार्शनिक विचारधारा की दृष्टि से हमें मानना पड़ता है कि—

(१ यह संसार, चाहे वह ईश्वर का बनाया हुआ है, या हमारे अदृष्ट पुण्य तथा अपुण्य) के कारण या अन्यथा अपने रूप में आया है, निश्चित रूप से हमारे कर्मों के फलों को भोगने का स्थान है।

(२) हमें इन फलों को भोगने के लिए किसी अदृश्य शक्ति द्वारा जबरन इसमें डाला गया है।

(३) अतएव यह हमारे लिए बन्ध दूसरे शब्दों में कारागृह या जेल के रूप में है। इसीलिए यह संसार चाहे प्रकृति ने इसे कितना ही सुन्दर क्यों न बनाया हो, हमारे लिए केवल दुःखमय है। स्वभावतः कोई भी कैदी जेल के अन्दर के सौन्दर्य में कोई रुचि नहीं रख सकता। उसका मन तो सदा अपनी मुक्ति की प्रतीक्षा में ही व्यग्र रहता है। इसी तरह हमारा प्रथम कर्तव्य हो जाता है कि किसी न किसी प्रकार से इस दुःखमय संसार के बन्धन से मुक्ति की प्राप्ति हो जाए।

सृष्टि का प्रयोजन

इस विचारधारा के अनुसार सृष्टि का प्रयोजन केवल यही रह जाता है कि वह हमारे लिए एक जेल का काम कर सके। ऐसी अवस्था में हमारे दुःखमय जीवन का चरमलक्ष्य भी केवल निषेधात्मक या अभावात्मक मोक्ष या छुटकारा मात्र रह जाता है।

इस प्रकार जेल की मनोवृत्ति में आशावाद, उल्लास और उदात्त नैतिक भावनाओं के स्थान में केवल निराशवाद, अवसाद और नैतिक पतन का ही प्रचार हो सकता है। ऐसे वातावरण में जीवन का नीरस और भाररूप हो जाना स्वाभाविक है। इस विचारधारा का हमारे पुराणादि साहित्य पर कैसा प्रभाव पड़ा है, उसके कुछ नमूने हम नीचे उद्धृत करते हैं—

संसार या मृत्युलोक के विषय में कोई कह रहा है—

> मृत्युलोके महादुःखं, कथयामि ततः शृणु।
> संसारः स्वप्नमात्रश्च चलाः प्राणा धनं तथा।
> सुखं तत्र न पश्यामि दुःखं तत्र दिने-दिने॥
> इन्द्रजालमयो दृष्टः संसारः··· ।
> अभ्र मध्यं च पश्यन्ति, चंचला विद्युतां गतिम्।
> क्षणं दृष्ट्वा च पश्यन्ति तथा संसारिणो जनाः॥
> चले च बुदबुदो यद्वत् तद्वत्संसारिणो जनाः।

अर्थात् मृत्युलोक में महादुःख है। संसार एक स्वप्नमात्र है। प्राण, धनादि अस्थायी हैं। उसमें सुख नाममात्र को नहीं है. दुःख प्रतिदिन रहता है। संसार इन्द्रजालमय या धोखे की चीज है। बादलों में चंचल विद्युत अथवा पानी में बुलबुले के समान ही मनुष्यों का जीवन है, इत्यादि। इसी प्रकार के संसार को हेय, असार और मिथ्या तथा जीवन को क्षणभंगुर और दुःखमय बताने वाले विचार हमारे पुराणादि में तथा संस्कृतेतर प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य में भी भरे पड़े हैं। भारतवर्ष की जनता पर और विशेषकर हमारे पारिवारिक आदि जीवन पर उनका जैसा निराशामय प्रभाव रहा है और अब तक है, वह किससे छिपा है?

उपर्युक्त विचारधारा की तुलना में अब हमें वैदिक विचारधारा को देखना चाहिए। वैदिक विचारधारा के अनुसार हमारा जीवन एक कैदी का-सा दुःखमय, निराशामय जीवन न होकर, हमारे उत्तरोत्तर विकास की एक आशामय अवस्था विशेष है। जैसे अपनी बुद्धि और ज्ञान के उत्तरोत्तर विकास के लिए इच्छुक छात्र उत्साह और उमंग के साथ एक श्रेणी से दूसरी में, दूसरी से तीसरी में और इसी तरह क्रमशः उत्तीर्णता प्राप्त करता हुआ, अपने विकास के मार्ग में अग्रसर होता जाता है, वैसे ही जीवन की यात्रा में उन्नति की विरोधी भावनाओं और शक्तियों पर विजय प्राप्त करता हुआ, आत्मा बराबर अपने उत्तरोत्तर विकास की ओर उन्नति करता जाता है—

> उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
> देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ (यजु० २०/२१)

(अर्थात्, अज्ञान से प्रकाश की ओर बढ़ते हुए हम अपने को उत्तरोत्तर समुन्नत करें) आदि वैदिक वचनों में इसी उत्तरोत्तर विकास की ओर संकेत है। इस दृष्टि से मनुष्य-जीवन के स्वरूप का वर्णन हम अपने शब्दों में इस प्रकार कर सकते हैं—

> जीवनं परमोत्कृष्टः प्रसादो जगतीपतेः।
> तस्य तत्त्वं रहस्यं च ये विदुस्ते मनीषिणः॥
> कर्मैव जीवनं तस्माद् विकासस्तस्य भास्वरः।
> उत्तरोत्तरलोकेषु कर्तव्यत्वेन मन्यताम्॥
> उत्तरोत्तरमुत्कर्षं जीवनं शाश्वतं न हिः।
> अस्पष्टं तमसा चापि मोहरूपेण सर्वथा॥

(रश्मिमाला, १४, १५)

अर्थात् यह हमारा जीवन भगवान् का परमोत्कृष्ट प्रसाद है। मनीषी लोग ही इसके तत्त्व और रहस्य को समझते हैं। कर्म ही तो जीवन है। उसका प्रकाशमय उत्तरोत्तर विकास ही हमारा कर्तव्य है। वास्तव में तो आत्मा का जीवन शाश्वत है। वह सर्वदा उत्तरोत्तर उत्कर्ष की ओर चलता है। वह मोह अथवा निराशारूपी अन्धकार से रहित है। इस विचारधारा की दृष्टि से यह स्पष्ट है, इस सृष्टि का प्रयोजन हमको बन्ध या कैद में डालकर दण्ड देने का नहीं है, अपितु हमारे सतत समुन्नतिशील विकास में सहायक होना ही है। जगत् सृष्टि के मूल में जो भी सर्जन करने वाली शक्ति है, वह निश्चय ही चेतनायुक्त होने के साथ साथ करुणामयी भी है। उसके द्वारा उत्पन्न की हुई इस सृष्टि का सारा उद्देश्य या प्रयोजन केवल हमारे विकास में सहायता देने का ही है। ठीक उसी तरह जैसे एक सुन्दर रमणीय विद्यालय का निर्माण बच्चों के सर्व प्रकार के विकास के लिए होता है। ऐसे स्कूल या विद्यालयों के छात्रों और जेल के कैदियों की मनोवृत्तियों में कितना मौलिक अन्तर होता है। एक कैदी के निराशामय, दुःखमय, जीवन की तुलना में छात्र के जीवन में आशा, उल्लास और उत्साह होते हैं। उसका हृदय आशा के प्रकाश से सदा प्रकाशित रहता है। उसके जीवन का पहला मन्त्र होता है—

> निराशायाः समं पापं मानवस्य न विद्यते।
> आशा सर्वोत्तमं ज्योतिर्निराशा परमं तमः॥

(रश्मिमाला ४, ६)

अर्थात् मनुष्य के लिए निराशा के बराबर दूसरा पाप नहीं है। आशा सर्वोत्तम, उत्कृष्ट प्रकाश है और निराशा घोर अंधकार है।

> विश्वमेतद् यया शक्त्या धार्यते पाल्यते तथा।
> नूनं सा प्रथमं बुद्धिश्चेतनाचैव मान्यताम्।
> तया स हेतुकं विश्वमाब्रह्माण्ड व्यवस्थितम्।
> चाल्यते हितभावेन··· ॥

(रश्मिमाला ३००, ३०१)

ऊपर के विवेचन से यह स्पष्ट है कि वैदिक विचारधारा के अनुसार जीवन का चरमलक्ष्य दुःख का अभावरूप मुक्ति या मोक्ष की तरह अभावात्मक न होकर निश्चित रूप से भावात्मक ही है। वह चरम लक्ष्य केवल अमृतत्व, श्रान्त्य या निःश्रेय ही कहा जा सकता है। वैदिक साहित्य में प्रायः इन्हीं शब्दों द्वारा चरम लक्ष्य का निर्देश किया गया है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय

हरयाणा में पंचायत चुनाव

हरयाणा में आगामी २० से २७ जून तक पंचायतों के चुनाव होने जा रहे हैं। सौभाग्य ही समझिये कि प्रजातन्त्र आधार स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में से एक ग्राम पंचयतों का गठन लोकतन्त्रात्मक पद्धति से ही ठीक पांच वर्ष पश्चात होने जा रहा है। प्रान्त के ६५०० ग्रामों के ६४ लाख मतदाता ५५०० पंचायतों का चुनाव इस एक सप्ताह की अवधि में करेंगे।

भारत गांव-प्रधान देश है। गांवों के लोगों में पंच का स्थान परमेश्वर के बाद दूसरा है। यहां पंच को परमेश्वर का प्रतिनिधि माना जाता है। परमेश्वर के उन्हीं प्रतिनिधियों का चुनाव हरयाणा के ग्रामवासी करने जा रहे। यही कारण है कि जैसे जैसे समय निकट आता जा रहा है, गांवों में चुनाव चर्चा जोर पकड़ती जा रही है। तिकड़में लग रही हैं। गांव के बूढे जवान सभी मथन में लगे हैं। देखना यह है कि इस मंथन से वे मक्खन भी निकाल पाते हैं कि नहीं।

क्योंकि भारत गांव का देश है, इसकी दो तिहाई आबादी गांव में रहती है। अतः यह तथ्य तो निर्विवाद रूप से स्वीकार कर लिया जाना चाहिये कि भारत की उन्नति भी गांव की उन्नति पर ही निर्भर करती है क्योंकि असली भारत गांव में ही निवास करता है। गांव की उन्नति वहां की पंचायत पर निर्भर करती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यों तो शासन ने शहरों के विकास पर अधिक ध्यान देकर गांवों के महत्त्व को कम किया है जिसका यह परिणाम है कि गांवों से भोले-भाले देहाती भी शहरों की ओर दौड़ रहे हैं। शहरों की जनसंख्या में सीमातीत वृद्धि होने का यह भी एक कारण है। नगरों में शिक्षा की चिकित्सा की तथा यातायात की सभी सुविधाएं हैं और इससे भी बढ कर अधिक से अधिक रोजगार प्राप्त करने तथा आगे बढने के अवसर यहां उपलब्ध हैं।

इतना होने पर भी देश की सारी आबादी तो नगरों में नहीं आ सकती। खेत-खलिहान में काम करने वाले को तो गांव में ही रहना होगा। किन्तु गांव रहने वाले ये लोग भी देश के नागरिक तो हैं। इनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखा जाना भी उतना ही आवश्यक है। पंचायत प्रणाली का आविष्कार चाहे कभी हुआ हो, परन्तु हुआ इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु था। इस प्रणाली द्वारा गांव के लोगों को यह अधिकार दिया गया है कि अपने लिए आवश्यक सुख-सुविधा जुटाने में जिस किसी को वे सक्षम तथा समर्थ समझें उसे अपना प्रतिनिधि बनाकर उनके लिए यह सब कुछ जुटाने का दायित्व उसे सौंप दें। इसी हेतु चुनाव की यह प्रक्रिया चलती है, जो शुरु होने जा रही है।

प्रजातन्त्र में उम्मीदवार से अधिक ममत्व मतदाता का है क्योंकि अधिकार प्राप्त करने की इच्छा तो न्यूनाधिक प्रत्येक में ही रहती है। यह काम मतदाता का ही है कि वह देखे कि जो उनकी ओर से अधिकृत होने जा रहा है वह उनसे अधिकार पत्र लेने का सच्चा अधिकारी भी है या नहीं। चुनाव एक साधारण सी क्रिया नहीं है। इसका प्रजातन्त्र में कितना महत्त्व है, इसको तो आज पश्चिम के लोग ही जानते हैं। मतदाता के द्वारा चुना गया व्यक्ति उसके लिए वरदान भी हो सकता है और अभिशाप भी। वह होगा वही जिसकी उसमें योग्यता है। आज का भारत विगत के ३५ वर्षों के चुनावों का परिणाम है। आज के भारतीय गांव आजादी के बाद हो चुके ग्राम पंचायतों के चुनाव तथा उनके पंच एवं सरपंचों की नीतियों तथा कार्यों का ही क्रियात्मक रूप हैं। यदि किसी गांव ने उन्नति में नगर को भी पीछे छोड़ दिया है तो इसका श्रेय वहां की पंचायत को ही तो जायेगा। गांव सुविधा सम्पन्न बन पाया हैं तो पंचायत उसके यश की पात्र है। हां, जैसा कि देखा जा रहा है, गांवों में रहने वालों में परस्पर दूरी पैदा होती जा रही है, सन्देह पनपने लगे हैं, ईर्ष्या-द्वेष बढ़ने लगा है, लोगों का आचरण गिरने लगा है, सभी गांव-वासियों के भले की जगह अपने ही भले की धारणा बल्वती होने लगी है तथा सबसे ज्यादा भयंकर जो हुआ है वह यह है कि इन सब कुचेष्टाओं को जन्म देने वाली पिश्ची शराब की गांव की गलियों में बाढ़ रहने लगी है, तो इसका दोषारोपण किसके ऊपर किया जाये? क्या पंच सरपंचों पर नहीं? और नहीं, तो क्यों? कुरुक्षेत्र जिले के किसी गांव को आज से लगभग दस वर्ष पूर्व की वह पंचायत क्या आदर्श नहीं थी जो अपने गांव का एक भी झगड़ा-मुकद्दमा थाना, तहसील तथा कचहरी में नही जाने देती थी? पूर्वजों की यह कल्पना कि राम-राज्य पंचायत व्यवस्था द्वारा ही धरती पर पुनः स्थापित किया जा सकता है, केवल कल्पना नहीं थी। हां, हम इसे भले ही साकार न कर सके।

भारतीयों के आदर्श उस राम राज्य पर विचार करने तथा उसे स्थापित करने का स्वर्णिम अवसर आज हरयाणा के भोले भाले ग्रामीणों के हाथों में है। यदि उनकी पैनी दृष्टि अपने अपने गांव के लिये आगामी ५ वर्ष हेतु ऐसे लोगों को ढूंढ सकने में सफल हो जाती है, जो आज की गन्दी राजनीति से ऊपर उठ सकने में समर्थ हों तो उन सब घिनौने कुकृत्यों का अन्त होते देर नहीं लगेगी जिनका प्रति-पल शिकार इन भोले गांव वालों को होना पड़ रहा है। निराशावादी होना यद्यपि एक वैदिक धर्मी के लिए किसी भी तरह उचित नहीं तो भी काल-चक्र को देखते हुए सम्भावना कम ही है क्योंकि आज सभी स्तरों पर एक चौकड़ी घेरा डाले बैठी है। दुर्भाग्य से चौकड़ी के सभी सरदार राजनीतिज्ञों के चाटुकार और दरबारिये रहने से पौ-बारह कर चुके हैं, अतः साधन सम्पन्न हैं। गांव का साधारण मतदाता मौलिक सूझ-बूझ रखते हुए भी इस चौकड़ी से सहमा रहता है क्योंकि थाना-कचहरी सभी जगह तो इन सरदारों की चलती है। ऐसे में क्या करना तथा क्या नहीं, इस सम्बन्धी सभी अधिकार चौकड़ी ने हथिया लिये हैं।

ऐसे में आवश्यकता है गांव के पढ़े-लिखे सदाचारी देशभक्त नवयुवकों के आगे आने की। यदि ये लोग लंगर-लगोट कसकर मैदान में उतर पड़ें और डट जायें तो साधारण स्तर पर साहस का संचार हो सकता है। यही तरीका है इस चौकड़ी के धराशायी करने का तथा इससे निजात पाने का। हरयाणा के लोग यदि इसमें चुक गये तो दूध दही और घी की नदियां बहाने बहाने वाला यह हरि और हर का प्रदेश शराब की नदियां बहाने वाला तो पहले ही बन चुका है, हां दिन रात ईर्ष्या-द्वेष, वैमनस्य और स्वार्थ की वेग से चल रही आंधी में खून की नदियां बहाने वाला प्रदेश कहीं न बन जाये। हरयाणा के ग्रामीण फैसला करें कि वे स्वर्ग में जाना चाहते हैं या नरक में। शहर में सबके सब तो जा नहीं सकते। हां, यदि सूझ-बूझ का परिचय दिया जाये तो गांवों को शहरों में बदलने को कार्य आरम्भ अवश्य किया जा सकता है जिनमें सुविधा शहरों को हों और आदर्श गांव के। यही उनका स्वर्गधाम होगा, जिसका निर्णय उन्हें आगामी २० से २७ जून तक करना है। उन्हें निर्णय करना है कि सरकार से मिलने वाली मैचिंग ग्रांट गांव के पंच सरपंचों की गरीबी दूर करने में प्रयुक्त होती रहे या समूचे गांव-वासियों की गरीबी दूर करने करने में।

—रणवीर

क्रान्तिकारी आर्य नेता प्रो० रामसिंह जी स्वर्ग सिधार गए



सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी एवं स्वतन्त्रता सेनानी वयोवृद्ध आर्य नेता प्रो० रामसिंह नई दिल्ली अपने निवास स्थान पर जीवन मृत्यु के साथ काफी दिनों से संघर्ष करने के पश्चात् २ जून १९८३ को ८८ वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधार गये। नगर निगम बोधघाट पर वैदिक मन्त्रों के साथ उनकी अन्त्येष्टि की गई। इस अवसर पर दिल्ली तथा हरयाणा के सैकड़ों की संख्या में उनके श्रद्धालु उपस्थित थे।

आपका जन्म सन् १८९४ में जिला सोनीपत के ग्राम फरमाना में एक वैश्य परिवार में हुआ था। आपके पिता जी का नाम इच्छाराम दादा का नाम ला० नाथूराम पटवारी था। आपके एक दादा जी राव तुलाराम जी के साथ प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में दिल्ली में शहीद हुए थे। आपका यज्ञोपवित संस्कार स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा हुआ था। आपके पिता जी की मित्रता हरयाणा में आर्यसमाज की प्रथम पीढी के नेताओं चौ० पीरूसिंह (संस्थापक गुरुकुल मटिण्डू) चौधरी जुगलाल जैलदार (फरमाणा) तथा भक्त फूलसिंह (संस्थापक गुरुकुल भैंसवाल) के साथ रही है। आप इन्हें ताऊ जी कहकर पुकारा करते थे। भक्त फूलसिंह ने पटवार के समय ली गई रिश्वत आपके पिता जी का परामर्श लेकर वापिस की थी।

आप बचपन से ही क्रान्तिकारी विचारों के रहे हैं। कालेज में प्रो० का पद त्यागकर स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े और सन् १९१९ में पंजाब मार्शल ला के तहत आपको बन्दी बनाया गया था। आपने महान् क्रान्तिकारी नेता वीर सावरकर व भाई परमानन्द जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। इसी कारण आप का सम्बन्ध हिन्दू महासभा से अन्त तक जुड़ा रहा। आप कई वर्ष तक इसके अध्यक्ष भी रहे। आप १९५१ में दिल्ली नगर निगम तथा १९५२ में दिल्ली का विधान सभा के लिए चुने गये। हिन्दू महासभा के साथ-साथ आपका आर्यसमाज की गतिविधियों में भी सक्रिय योगदान रहा है। आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य रहे। आप प्रतिनिधि सभा पंजाब के पाकस्मा जि० रोहतक के साधारण अधिवेशन में सन् १९६३ को प्रधान चुने गये। इस प्रकार आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार के भी कुलपति रहे।

आप समाज सुधार के कार्यों में सदा अग्रणी रहे हैं। हिन्दी रक्षा आन्दोलन के आप प्रमुख नेता थे। आप बहुत ही निडर प्रवृत्ति के थे। सच्ची बात कहने में कभी संकोच नहीं करते थे। हिन्दी संस्कृत तथा अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान् थे। आपके व्याख्यान बहुत ही प्रभावशाली होते थे। राष्ट्र के प्रमुख नेता आपके निवास पर आकर राष्ट्रीय समस्याओं पर मार्ग दर्शन लेते थे। आपकी यज्ञ में प्रगाढ श्रद्धा थी। जीवन के अन्तिम समय में बिमार होते हुए भी यज्ञ करते रहे।

आपका आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से विशेष प्रेम था। आपने अपनी जन्मभूमि ग्राम फरमाणा में आर्यसमाज मन्दिर बनवाने के लिए ग्रामीण मकान की वसीयत अपनी मृत्यु से पूर्व ५-३-८३ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम पर कर दी थी।

आप अपने पीछे धर्म परायण पत्नी भाग्यवती प्रभाकर, सुयोग्य सुपुत्र श्री वाचस्पति आर्य तथा एक लड़की के परिवार को हरा-भरा छोड़ गये हैं।

परमात्मा से प्रार्थना है कि इस महान् आर्य नेता की आत्मा को सद्गति प्रदान करें। इनके रिक्त स्थान की पूर्ति करना सम्भव नहीं है।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

शोक समाचार

१—पं० हरपाल जी शास्त्री, वेद वाचस्पति, आर्यमहोपदेशक ७५ वर्ष की आयु में दिनांक २९-४-८३ मंगलवार को प्रातः २ बजे आकस्मिक हृदयगति अवरुद्ध हो जाने के कारण निधन हो गया। शास्त्री जी आर्य समाज के प्रहरी थे। वेद और दयानन्द के लिए आप अन्तिम क्षणों तक जीएं। आप संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे, वाणी में मधुरता एवं तेज था। अपने जीवन में आपने हजारों वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न कराये होंगे। आप पंजाब सभा के भी उपदेशक रहे।

अन्तिम संस्कार डा० देवव्रत आचार्य प्रधान संचालक सार्व० आर्य वीर दल, डा० विनोदचन्द्र विद्यालंकार, स्वामी रुद्रवेश जी, ब्रह्मचारी ध्रुवदेव जी, प्रेम जी हलद्वानी, श्री लाकेलाल जी कजल प्रधान आर्य समाज नैनीताल द्वारा सम्पन्न हुआ।

१/८४ गांधी भवन विनोद कक्ष सुभाष भवन पन्तनगर में विद्यार्थियों ने भी शान्ति यज्ञ एवं शोक सभा का आयोजन किया। IV/१०३१ पन्तनगर में शास्त्री जी के वर्तमान निवास पर २९-४-८३ को एक बहुत बड़ी शोक सभा एवं शान्ति यज्ञ का आयोजन हुआ। इसमें उनके पुत्र श्री नरेन्द्रदेव आर्य ने प्रति मंगलवार को यज्ञ करने और उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का संकल्प लिया।

रणवीरसिंह आर्य

२—सभी आर्य महानुभाव और गुरुकुल प्रेमी सज्जनों को यह जानकर अतिकष्ट होगा कि गुरुकुल झज्जर के भूतपूर्व प्रधान चौधरी लेखराम टोंकरी कलाँ (दिल्ली निवासी) का ८-५-८३ को अचानक देहावसान हो गया। आप ८५ वर्ष के थे। आप पुराने आर्य सैनिक थे। आर्यसमाज और गुरुकुल के सभी कार्यों में सदा विशेष सहयोग देते रहे हैं। इनके सुपुत्र वेद देव शर्मा गुरुकुल के स्नातक हैं। दस वर्ष तक गांव के सरपंच भी रहे।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि मृतक की आत्मा को सद्गति और शोक सन्तप्त परिवार को कष्ट सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

निवेदक
फतेहसिंह भण्डारी

श्री अर्जुनदेव विद्यालंकार दिवंगत

अम्बाला निवासी श्री अर्जुनदेव विद्यालंकार का जो गुरुकुल कुरुक्षेत्र के मुख्याधिष्ठाता तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सहायक मुख्याधिष्ठाता अनेक वर्ष तक रहे, पिछले दिनों ज्वालापुर के वानप्रस्थाश्रम में ७५ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वह स्वभाव से बड़े मिलनसार थे। उनका सारा परिवार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का भक्त था। सम्पन्न परिवार होते हुए भी उनका जीवन अत्यन्त सादा और नियमित था।

भगवान् से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा परिवार वालों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। सभा मन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियां—

१०६ मूलेजाटों द्वारा वैदिकधर्म में प्रवेश

हिन्दू शुद्धि समिति हरयाणा को एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार २०-५-८३ को ग्राम खेड़ी संडोल व कलासर जिला जोन्द में समोति के प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य तथा महामन्त्री श्री रतनसिंह आर्य के समक्ष १०६ मूले जाटों ने हवन यज्ञ को कार्यवाही के साथ स्वेच्छा पूर्वक वैदिक धर्म में प्रवेश किया।

इस अवसर पर ग्राम के पूर्व सरपंच श्री ज्ञानचन्द, श्री दुलाचन्द प्रधान आर्यसमाज कलासर, श्री रामजीलाल प्रधान आर्यसमाज मड-मोड़ा आदि कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

१२ जून को गोहाना में सर्वखाप पंचायत का आयोजन

विवाह शादियों पर कम खर्च करने तथा अन्य सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए आर्य स्कूल गोहाना जिला सोनीपत में १२ जून १९८३ रविवार को सर्वखाप पंचायत का विशाल आयोजन हो रहा है। इसमें प्रमुख खापों के प्रतिनिधि शामिल होंगे।

चौ० प्रियव्रत के प्रस्ताव पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को कार्य कारिणी ने अपनी २२ मई की बैठक में सर्वखाप पंचायत के इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग करने का निश्चय किया है। सर्व खाप पंचायत के निर्णय को लागु कराने के लिए प्रान्तीय स्तर पर सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत करने पर भी विचार किया गया। सभा के उपदेशक तथा भजनोपदेशक प्रचार द्वारा जनमत तैयार कर रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग बैठक

हरयाणा में आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ करने तथा वर्तमान समस्याओं पर विचार आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा, की बैठक १९ जून रविवार को दयानन्द मठ रोहतक में प्रातः १० बजे बुलाई गई है।

इसी दिन दोपहर बाद १ बजे हरयाणा रक्षा वाहिनी की भी बैठक करने का निश्चय किया गया है जिसमें अकालियों की हिंसक गतिविधियों द्वारा भारत सरकार पर अपनी अनुचित मांगें स्वीकार कराने के लिए दबाव डाला जा रहा है, उनके प्रतिकार के लिए हरयाणा की जनता को क्या पग उठाया जावे, इस विषय पर विचार किया जावेगा।

आर्यसमाजों के आगामी सप्ताह में उत्सव

आर्यसमाज गन्नौर शहर जिला सोनीपत	१० से १२ जून
„ गोकरण तालाब रोहतक	१० से १२ „
„ रामपुर कुण्डल जिला सोनीपत	१० से १२ „
„ फतेहपुर जिला अम्बाला	१० से १२ „
„ चुलकाना जि० करनाल	१० से १२ „
„ जाजनपुर जिला कुरुक्षेत्र	१० से १२ „
„ नमोकक „ „	१७ से १९ „
„ दहकोरा जिला रोहतक (यज्ञ)	१ से २१ „

गुरुकुल करतारपुर में नया प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर में (पंजाब) जून १९८३ से नया प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेश के लिए कम से कम कक्षा ५ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। प्रवेश नियम निःशुल्क मंगावें।

हेलीमण्डी में आर्यसमाज मन्दिर बनाने की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो प्रिंसिपल के प्रयत्न व बा० जयनारायण आर्य सेवा निवृत्त रेलवे स्टेशन मास्टर के सहयोग से पंचायत की ओर से हेलीमण्डी जिला गुड़गांव में आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए सड़क पर १८०० गज भूमि दान में मिली है। हेलीमण्डी तथा इसके आस पास के ग्रामों में अभी तक कोई आर्यसमाज मन्दिर नहीं है। यहां मन्दिर बन जाने पर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार का एक मुख्य केन्द्र बन सकता है। इस क्षेत्र की जनता आर्थिक दृष्टि से कमजोर है। आर्यसमाज के प्रचार की यहां आवश्यकता है।

अतः हम दानी महानुभवों से अपील करते हैं कि हेलीमण्डी में आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए उदारता पूर्वक अधिक से अधिक दान भेजकर यश के भागी बनें। दान मनीआर्डर द्वारा बा. जयनारायणआर्य सेवा निवृत्त रेलवे स्टेशन मास्टर दयानन्द मार्ग टोडापुर पोस्ट आफिस हेलीमण्डी जिला गुड़गांव के पते पर भेजें। निवेदक

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ, रोहतक

जाट स्कूल रोहतक में आर्यसमाज का सत्संग

२९ मई रविवार को जाट स्कूल रोहतक के हाल में आर्यसमाज का सत्संग प्रातः ८ से १० बजे तक आयोजित किया गया। आर्यसमाज माडल टाउन के पुरोहित तथा सभा के उपदेशक पं० सुरेशकुमार जी शास्त्री ने यज्ञ करवाया। सभा के पूर्वमन्त्री प्रिंसिपल डा० रणजीतसिंह ने इस अवसर पर यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डाला। सभा के भजनोपदेशक पं० सूरतसिंह, मुन्शीलाल तथा सुमेरसिंह के प्रभावशाली भजन हुए। इस अवसर पर जाट स्कूल, जाट कालेज, छोटूराम पोलिटैक्नीक तथा छोटूराम शिक्षा महाविद्यालय रोहतक के अध्यापक तथा प्राध्यापक उपस्थित थे। चौ० प्रियव्रत प्रधान जाट शिक्षण संस्था ने अपने भाषण में इस संस्था में आर्यसमाज के प्रचार के महत्व और आवश्यकता पर बल दिया। आपने स्टाफ से आर्यसमाज का सदस्य बनकर समाज सुधार के कार्यों में भाग लेने का अनुरोध किया। यज्ञ शेष के वितरण तथा शान्ति पाठ के साथ सत्संग की कार्यवाही सम्पन्न हुई।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यसमाज नांगलराय नई दिल्ली में वेदसप्ताह

२ मई से १० मई तक आर्यसमाज नांगलराय नई दिल्ली में स्वामी धर्ममुनि जी आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ की कथा होती रही जिसमें जनता बड़ी श्रद्धा से सम्मिलित हुई। इनके साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक पं० मुन्शीलाल व हरिसिंह की मण्डली के मनोहर भजनोपदेश होते रहे जिनका जनसाधारण पर बहुत ही अच्छा प्रभाव रहा तथा प्रातःकाल यज्ञ पर भी स्त्री पुरुष बड़ी श्रद्धा से आते रहे। इस अवसर पर सभा को वेद प्रचारार्थ १७५ रु० दिये गये।

मन्त्री आर्यसाज नांगलराय नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा

आर्य जनता को यह तो पता ही है कि महर्षि दयानन्द जी का जिस मकान में जन्म हुआ था, वह मकान एक जैनी के पास है। इस मकान को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार तथा गुजरात सरकार से बहुत समय से बातचीत चल रही है और इसके मिलने की पूरी आशा है। यह मकान और इसके साथ वाला मकान महर्षि दयानन्द के जन्म के समय एक ही मकान था और बाद में उसके दो हिस्से कर दिये गये। दूसरा जो हिस्सा है, वह टंकारा ट्रस्ट ने आज से १० वर्ष पहले खरीद लिया था और उसकी रजिस्ट्री भी ट्रस्ट के नाम करवा ली थी। पीछे टंकारा में ऋषि मेले के उपलक्ष्य में हरयाणा व पंजाब से जो ऋषि भक्त आये थे उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि उस स्थान को एक सुन्दर मन्दिर का रूप दिया जाए जैसे कि अन्य महापुरुषों के जन्म स्थान हैं। इस सुझाव को ट्रस्ट ने सहर्ष स्वीकार किया। ट्रस्ट ने यह कार्य हरयाणा के प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता एवं उद्योगपति श्री जगन्नाथ जी मालवीय चौक पानीपत को सौंप दिया है। मैं आर्यजनता से प्रार्थना करता हूँ कि इस उपलक्ष्य में अधिक से अधिक दान देवें। श्री जगन्नाथ जी जिन महानुभावों से सम्पर्क नीजितौर पर या अपील द्वारा करें, उन्हें वह पूरा सहयोग एवं दान प्रदान करें। जो सज्जन इसके लिए धनराशि भिजवाना चाहते हैं वह टंकारा ट्रस्ट के मुख्य कार्यालय, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट; टंकारा, सौराष्ट्र–३६३६५० अथवा टंकारा के उपकार्यालय आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—११०००१ के पते पर मनीआर्डर/चैक व ड्राफ्ट द्वारा भेजने की कृपा करें। आर्य जनता की जानकारी के लिए यह भी सूचित कर दूं कि टंकारा ट्रस्ट इन्कम टैक्स से मुक्त है। २५० रु० से अधिक दान की राशि इन्कम टैक्स से मुक्त है। अगर इस कार्य में आर्य जनता हमें सहयोग दें तो तुरन्त ही इस कार्य को आरम्भ किया जा सकता है।

रामनाथ सहगल मन्त्री—ट्रस्ट

युवा उद्घोष पाक्षिक का विमोचन

नई दिल्ली, २४ मई अखिल भारतीय महर्षि निर्वाण शताब्दी समिति के कार्यकर्त्ता सम्मेलन में महर्षि दयानन्द बलिदान शती अजमेर में विशाल पैमाने पर मनाने का विचार हुआ।

इस अवसर पर आर्यसमाज के युवा संगठन 'केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के मुखपत्र युवा उद्घोष' पाक्षिक के प्रथम अंक का विमोचन आर्यसमाज के विख्यात विद्वान् व सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी ने किया। स्वामी जी ने पत्र के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह युवा वर्ग में जागृति व चेतना का कार्य करे तथा समाज में फैली रूढियों, कुरीतियों, अंधविश्वासों व जातिवादिता के विरुद्ध जनमत जागृत करें। युवाओं के जागने से समाज जागृत होगा। भूतपूर्व रक्षा राज्यमन्त्री प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा भी समारोह में उपस्थित थे, उन्होंने भी पत्र के लिए शुभकामनाएं दी। परिषद् के महामन्त्री श्री अनिलकुमार आर्य 'युवा उद्घोष' के सम्पादक हैं।

डा० भवानीलाल भारतीय (अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द विद्यापीठ पंजाब विश्वविद्यालय) स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (प्रधान परोपकारिणी सभा), श्री ओमप्रकाश त्यागी (भूतपूर्व संसद सदस्य), प्रो० वेदव्यास (प्रधान डी. ए. वी. मैनेजिंग कमेटी), श्री क्षितीश वेदालंकार (प्रमुख पत्रकार आर्य जगत्), आचार्य विश्वश्रवा, डा० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, श्री रामनाथ सहगल (महासचिव, आर्य प्रादेशिक सभा) भी समारोह में पधारने वाले विशिष्ट अतिथि थे।

चन्द्रमोहन आर्य

पंजाब का शासन सेना को सौंप दिया जाए

नई दिल्ली २६ मई—अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समीति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु ने प्रधान मन्त्री को पत्र भेजकर मांग की है कि पंजाब का शासन सेना को सौंप दिया जाए।

आपने लिखा है कि पंजाब में बिगड़ती हुई स्थिति को देखते हुए सभी धार्मिक स्थानों का प्रबन्ध पुजारियों पंथियों में हाथ में दिया जाए राजनैतिक व्यक्तियों को धर्म स्थानों की प्रबन्ध व्यवस्था में हस्तक्षेप करना प्रतिबन्धित हो।

आपने कहा कि यह अत्यन्त लज्जा की बात है कि पूजा का पवित्र स्थान स्वर्ण मन्दिर युद्ध और हिंसा का गढ बना है और सरकार तमाशा देख रही है। यह समानान्तर व्यवस्था शासन के मुख पर करारा थप्पड़ है, जिसे प्रधानमन्त्री को सहन नहीं करना चाहिये।

प्रधान मन्त्री को आश्वासन देते हुए आपने लिखा है कि वे जो भी पग उठाएंगी सारे देश की देशभक्त जनता उनका साथ देगी।

पंडिता राकेशरानी गिरफ्तार: जमानत पर रिहा

नई दिल्ली २६ मई : करोलबाग थाना के इन्सपेक्टर श्री रामसिंह चौहान ने यहां मार्च १९८३ के 'जन-ज्ञान' में लिखे सम्पादकीय पर अभियोग अंकित कर सम्पादक पंडिता राकेशरानी व भाटिया प्रेस के स्वामी श्री सत्यपाल भाटिया को धारा ५०५ के अन्तर्गत गिरफ्तार किया। बाद में आप दोनों को ३ लाख रुपये की जमानत और ३ लाख रुपये के निजी मुचलके पर रिहा कर दिया गया।

स्मरण रहे कि पंडिता राकेशरानी पर यह २२ वां अभियोग है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी और परोपकारिणी सभा

डा० भवानीलाल भारतीय

(गतांक से आगे

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि जो लोग बार बार जानकर या अनजाने में यह प्रचार करते हैं कि सभा स्वामी जी के अनेक अप्रकाशित ग्रंथों को प्रकाशित नहीं कर रही है, वे तथ्यों से पूर्णतया परिचित नहीं हैं। सभा ने स्वामी जी के ग्रंथों के अतिरिक्त स्व० पं० शिवशंकर शर्मा, दीवान बहादुर हरविलास शारदा तथा इन पंक्तियों के लेखक की महत्वपूर्ण कृतियों को प्रकाशित किया है और भविष्य में भी करेगी।

यह तो हुई ग्रन्थों के प्रकाशन की बात। एक अन्य भ्रान्ति जो आर्य जगत् में प्रचलित है, वह सभा की आर्थिक स्थिति को लेकर नाना प्रकार की आधारहीन कल्पनाएं तथा अतिशयोक्ति पूर्ण कथन। यह कहा जाता है कि सभा के पास करोड़ों की सम्पत्ति है तथा उसके पास लाखों रुपये नकद (Hard Cash) हैं आदि वस्तुस्थिति इसके विपरीत ही है। सभा की अचल सम्पत्ति में दयानन्द आश्रम और वैदिक यंत्रालय ऋषि उद्यान, दयानन्दमार्केट, कर्मचारियों के मकान तथा कुछ पुराने मकान आदि हैं। दयानन्द आश्रम और वैदिक यंत्रालय में तो सभा के कार्यालय, प्रेस आदि है जहां से इस सभा की प्रवृत्तियों का संचालन होता है। अब मार्केट के किराये आदि की आय से सभा के कर्मचारियों का वेतन, सभा कार्यालय की दैनन्दिन आवश्यकताएं तथा सम्पत्तियों के रखरखाव, मुरम्मत आदि के कार्य होते हैं। यह तो परोपकारिणी सभा ही है जो किसी प्रकार के सार्वजनिक दान या राजकीय सहायता एवं अनुदान को प्राप्त न करके भी लाखों रुपये मूल्य का आर्ष साहित्य प्रतिवर्ष मुद्रित और प्रकाशित करती है।

लेखक और साहित्यकार होने के नाते मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं कि इस सभा से भिन्न संस्थायें यदि कोई प्रकाशन करती हैं, तो उसके लिए सार्वजनिक अपीलें कर धन संग्रह भी करती हैं। फलतः उनके प्रकाशनों को किसी प्रकार की आर्थिक असुरक्षा अनुभव नहीं होती। आर्यसमाज के अनेक लेखक भी अपनी रचनाओं के प्रकाशन के लिए अनेक धनीमानी सज्जनों से दान लेते हैं और इस प्रकार उनके द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ आर्थिक कठिनाई के शिकार नहीं होते। परोपकारिणी सभा की स्थिति बिल्कुल भिन्न है। इस सभा ने अपने १०० वर्ष के कार्यकाल में किसी ग्रन्थ प्रकाशन अथवा मुद्रण के लिए एक पैसे का भी दान नहीं मांगा। न उसके पास कोई ऐसा लाखों रुपयों का फण्ड है जिसे वह मात्र प्रकाशन में ही व्यय करती रहे। सभा के प्रकाशनों का खर्च तो वैदिक यंत्रालय के रोजमर्रा के कारोबार अथवा सभा के बिक्री विभाग से प्राप्त राशियों पर ही निर्भर है। यद्यपि सभा अपने प्रकाशनों से नगण्य मुनाफा ही कमाती है, किन्तु अपने प्रकाशनों के उच्च स्तर को बनाये रखने के कारण उसे प्रभूत मात्रा में द्रव्य व्यय करना पड़ता है जिसके परिणाम स्वरूप ग्रन्थ तो कम बिकते हैं, उल्टे इनका स्टाफ प्रतिवर्ष वृद्धिगंत होता रहता है।

सभा के माननीय आलोचक यह नहीं सोचते कि सभा के अधिकारियों को आयकर श्रम कानूनों के मातहत उठाये गये मामलों तथा अचल सम्पत्ति विषयक विवादों को सुलझाने में श्रम और शक्ति का कितना व्यय करना पड़ता है। अन्य संस्थाओं के अधिकारी जहां नियमित पारिश्रमिक प्राप्त करने वाले वकीलों को ये मामले सौंपकर निश्चिंत हो जाते हैं, वहां इस सभा का मन्त्री स्वयं अदालतों में उपस्थित होकर उन्हें भुगतता है।

अब मैं इस लेख के मुद्दे पर आता हूं। जब से परोपकारिणी सभा ने ऋषि निर्वाण शताब्दी के प्रश्न को उठाया, तब से ही उसका यह प्रयास रहा कि इस महान् समारोह में समस्त आर्यजगत् का तथा विशेषतः हमारी शिरोमणि सभा का समर्थन, सहयोग, मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त रहे। यह सभा तो बार बार १९३३ के अर्द्ध निर्वाण शताब्दी समारोह का दृष्टान्त उपस्थित करती रही, जो परोपकारिणी सभा तथा सार्वदेशिक सभा के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा नारायण स्वामी (सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान) तथा राजाधिराज नाहरसिंह जी, शाहपुराधीश एवं दीवान बहादुर हरविलास शारदा (परोपकारिणी सभा के तत्कालीन प्रधान व मन्त्री) जैसे महापुरुषों द्वारा आयोजित किया गया था। अब बीती बातों को याद करने से क्या लाभ? नारायण स्वामी जी का जमाना गया। तेहिनो दिवसा गताः। तथापि यह अवश्य कहूंगा कि यह आर्य जगत् का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि समन्वय का मार्ग नहीं निकल सका और परोपकारिणी सभा को अपने निश्चय पर दृढ़ रहना पड़ा। भूल कहां, किससे, किस प्रकार हुई इस पर कुछ कहना अभी समीचीन नहीं होगा।

अजमेर में शताब्दी समारोह के अवसर पर यात्रियों को उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधा असुविधाओं पर हमारे मित्रों ने पत्रों में जम कर बहस की है। मैं वादितोष न्याय से मान लेता हूं कि अजमेर में पानी की कमी है, आवास भी पूर्णतया सुखद नहीं है आदि। किन्तु क्या ऐसे भावना प्रधान समारोह में केवल हम अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं को ही मद्देनजर रखेंगे? यदि ये सुख सुविधायें ही चाहिए, फिर तो कभी घर से बाहर ही मत निकलिए। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में अपने घर से बढ़कर सुख कहां मिलता है? तथापि हम बाहर जाते ही हैं। एक और बात है। प्रतिवर्ष विश्व के लाखों मुसलमान अरब जैसे शुष्क, जलहीन तथा मरुस्थल प्रायः देश में हज के लिए जाते हैं। यदि उन्हें सुख सुविधा ही चाहिए, तब तो उन्हें लन्दन, पेरिस और न्यूयार्क की सैर करनी चाहिए न कि मक्का मदीना की। निश्चय ही निर्वाण शताब्दी मनाने का औचित्य उसी नगर में है, जहां एक शताब्दी पूर्व हमारे आचार्य प्रवर ने अपनी भौतिक देह को त्यागा था।

इसी स्थान पर आने से ही आर्यों को उस भिनाय की कोठी के दर्शन होंगे जहां ऋषि ने अपना पाञ्चभौतिक चोला त्यागा, यहीं वह मलूसर श्मशान है, जहां स्वल्प समय में ही भगवान् हुताशन ने उस तपोपूत काया को भस्मीभूत कर दिया था और सर्वोपरि बात तो यह है कि परोपकारिणी के संग्रहालय में ही श्री महाराज के उत्तरीय, उनका मसिपात्र, धूप-घड़ी, कमण्डलु, खड़ाऊं, हस्ताक्षरों की पीतल की सील तथा महाराज के हाथों से लिखे गये, संशोधित किये ग्रन्थों के हस्तलेख, आधुनिक उपकरणों (Micro Filming तथा Lamtnasion) से सुरक्षित की गई पाण्डुलिपियां आदि देखने को मिलेंगे। दिल्ली में तो (आचार्य विश्वश्रवा जी से क्षमा याचना सहित, क्योंकि उन्हीं के शब्दों को प्रयुक्त कर रहा हूं) कुतुब की लाट और चांदनी चौक का बाजार ही देखने को मिलेगा।

अब कुछ अन्य बातें इसी प्रसंग में हमारे कुछ मित्रों ने न जाने कितनी कहने और न कहने योग्य कह डाली हैं। कुछ महानुभावों को तो परोपकारिणी सभा में शायद एक भी भला आदमी दृष्टिगोचर नहीं हुआ। उनकी जानकारी के लिए बताना होगा कि इस सभा में स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी सत्यप्रकाश जी जैसे आर्यजगत् के मूर्धन्य त्यागी, तपस्वी सन्यासी हैं, डा० सुधीरकुमार गुप्त तथा पण्डित उदयवीर शास्त्री जैसे शास्त्र मर्मज्ञ उद्भट विद्वान् हैं, महात्मा आर्य भिक्षु जैसे कर्मठ उपदेशक हैं, प० आनन्दप्रिय जी तथा प्रो० शेरसिंह जी जैसे जमाना देखे हुए जाने माने आर्य नेता हैं। चौ० प्रतापसिंह जी, श्री देवराज जी बहल, श्री घनश्यामदास गोयल जैसे उदारमना दानी हैं, श्री रामनाथ सहगल जैसे जोशीले उत्साही तथा कर्मठ आर्य नेता हैं।

[क्रमशः]

शराब उच्च स्तर की नकली प्रतीक

आज भारतीय समाज में एक ऐसा तबका बड़ी तेजी से आगे आ रहा है, जिसमे शराब पीना बड़ा कहलाने के लिये आवश्यक सा हो गया है। आप चाहे नौकरीपेशा वालो को देखें, चाहे व्यापरियो को अथवा विद्यार्थियों को-सब जगह एक चीज सुनाई देगी, "अरे उस का क्या, वह तो खूब खाता पीता है।"

बात कुछ दिनों पहले की है। एक रात कहीं भोज का निमंत्रण था ठीक समय पर सब पहुच गये ९, १० और फिर ११ बज गये, पर वहा खाने की किसी को सुध ही नही थी। मेरा समय बड़ी कठिनाई के साथ बीता। करीब आधी रात को शुरू हुआ तो कुछ लोगों ने ही खाया। शेष तो सूंघ कर ही अपने घर चले गये। अगली दोपहर जाकार लोगों में उस भोज की तारीफो के पुल बांधे जा रहे थे।

इसके कुछ सप्ताह बाद एक अन्य मित्र ने भोजन पर बुलाया। सही समय पर भोजन शुरू हो गया। ढंग से खाया और १० बजे तक अपने-अपने घर पहुच गये। बाहर निकलते ही किसी मित्र ने टिप्पणी की, "अरे भई, क्या पंडितो को बुला लिया, कुछ, ढग का इन्तजाम तो किया होता।"

इस ढंग का इन्तजाम का अर्थ था–आमत्रितों को शराब पिलाना। जो जितनी महंगी शराब पिला सकता है उसका इस 'अभिजात् वर्ग' में उतना ही ऊंचा सामाजिक दर्जा समझा जाता है। यह बात उच्च पदस्थ या धनी लोगों के साथ ही हो, ऐसा नहीं है, मां-बाप की कमाई पर ऐश करने वाले छात्रों के छात्रावासों मे झांकिये, यही सब कुछ देखने को मिलेगा। आश्चर्य की तो बात है कि जो चीजें कतई अच्छी नही है और जिससे स्वास्थ्य का नाश ही होता है, उसे इस कदर कदर अच्छा क्यों समझ लिया गया है ? क्यों लोग इस तरह उसके पीछे भाग रहे है ? कितने घरों में इसे लेकर कलह, क्लेश है ? कितनों की जिन्दगी खराब हो गई है। झूठी मानमर्यादा की प्रतीक इस शराब ने कितने जुल्म ढाये है और ढा रही है, यह लोग क्यो नही समझते ?

याद आता है श्रीमती सरस्वती की गृहस्थी। पड़ोस में पति-पत्नि कितने सुख चैन से रहते थे, कितने मस्तहाल थे जिदगी में। पति एक दफ्तर में काम करते थे और अपने बच्चों के साथ हंसीखुशी रहते थे। पति की तरक्की हुई, खुशिया मनाई गई। परन्तु यह खुशी स्थाई नहीं रही। कारण पूछने पर पता चला कि उनके पति महोदय तरक्की की रात को बहुत देर से आने लगे। पिछले दिनों तो वह अस्पताल में दाखिल थे। चिंता होना स्वाभाविक था।

हम भी पडोसी के नाते कुशलक्षेम पूछने गये। उनकी पत्नी बहुत परेशान थी। पति के शरीर के भीतरी भाग में खून बहने लगा था। कमलेश जी इस पर कंधे उचका कर बोले, "यह तो नाहक परेशान रहती है। आप ही बताइये, अफसरों के साथ उठना बैठना पड़ता है तो थोड़ी चखनी पड़ती है। फिर मैं कौन सा अपने पैसो से पीता हूं। औरते कितनी ही पढ़ लिख जाये, पिछड़ी ही रहती हैं।"

काश, कोई उन्हे समझा सकता कि आप पैसे खर्च नहीं कर..; परन्तु जनाब अपना स्वास्थ्य तो चौपट कर रहे है। कमलेश जी ने आगे बताया कि 'बड़े साहब' आते हैं, तो उनके लिये कुछ तो करना पड़ता है, अन्यथा वे क्या सोचेंगे ?

आज बडे लोगों की संगति या 'बड़े साहब' की खिदमत के नाम पर जो किया जा रहा है, उस पर पुन: विचार की जरुरत है। क्यों इस झूठी शान मे धन, सेहत व घर का चैन लुटाया जा रहा है ? यदि स्वयं को या साहब को खुश करना है तो अवश्य कीजिये, पर शराब से नहीं, अपने अच्छे काम से कीजिये।

(मद्यनिषेध से साभार)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 40 फोन ७६११



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १०, अङ्क २६ | १४ जून १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

हिन्दी भाषी अबोहर-फाजिल्का क्षेत्र की जनता का प्रधान मन्त्री के नाम खुला पत्र

आदरणीया प्रधान मन्त्री जी,

वर्तमान फाजिल्का तहसील सन् १८८४ तक हरयाणा के सिरसा जिले का ही अंग थी तथा तहसील के महकमा माल के सब रिकार्ड देवनागरी लिपि हिन्दी में रखे जाते थे। उस समय यह तहसील राजस्थान के रेगिस्तान से लगता हुआ रेतीला बंजर वा गैर आबाद इलाका था, जो सरहिन्द नहर आने के बाद हरयाणा व राजस्थान से हिन्दी भाषी लोगों ने आकर आबाद किया। तभी से यह क्षेत्र हिन्दी भाषी लोगों से आबाद है तथा इसके हरयाणा के साथ बहुत पुराने समय से सांस्कृतिक, भाषाई व सामाजिक घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं। अतः इस क्षेत्र की जनता ने भाषाई सच्चर फार्मूला के अनुसार हिन्दी व पंजाबी क्षेत्र बनाने के समय इस तहसील को हिन्दी भाषी हरयाणा में मिलाने की मांग तथा बाद मे पंजाब व हरयाणा अलग राज्य बनाने के समय भी इस हिन्दी भाषी क्षेत्र को हरयाणा में मिलाने की मांग की।

सच्चर फार्मूले के आधार पर हिन्दी व पंजाबी क्षेत्रों का निर्धारण करने के लिए जब केन्द्रीय गृह मन्त्री गोविन्द वल्लभ पन्त ने मुख्यमंत्री सरदार प्रतापसिह कैरो की अध्यक्षता में उपसमिति बनाई, जिसके अकाली प्रतिनिधि ज्ञानी करतारसिह भी सदस्य थे। इस उपसमिति ने २४-१०-१९५६ की बैठक सर्वसम्मति से अबोहर फाजिल्का शहर और उनके साथ लगते लगभग ११५ ग्रामों को हिन्दी भाषी मानकर हिन्दी क्षेत्र में रखने का निर्णय दिया जिसके आधार पर प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने २९ जनवरी १९७० के ऐवार्ड में इसी हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का शहर व ११५ ग्रामो को हरयाणा में मिलाने का निर्णय दिया।

इसी प्रकार पंजाब व हरयाणा अलग राज्य बनाते समय, उसकी सीमाओं का निर्धारण करने के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त शाह-कमीशन ने भी अपनी रिपोर्ट में फाजिल्का तहसील को बहुसंख्यक हिन्दी भाषी माना। वर्ष १९५५ से १९६५ तक इस तहसील के सभी हाई स्कूलों से पंजाब विश्वविद्यालय की मैट्रिक परीक्षा देने वाले ६३५६ परीक्षार्थियो में से ४८५२ परीक्षार्थियों की प्रथम भाषा तथा शिक्षा माध्यम हिन्दी था और केवल १५०४ परीक्षार्थियों का पंजाबी था। वर्ष १९६६ में एकत्रित सूचना के अनुसार इस तहसील की प्राइमरी स्तर की कक्षाओं में ७५ % से अधिक बच्चों ने हिन्दी को प्रथम भाषा व परीक्षा के माध्यम के रूप में चुना। आज भी पंजाब में मान्यता प्राप्त गैर सरकारी स्कूलों मे माध्यम की छूट होने के कारण अकेले अबोहर शहर मे लगभग दस हजार विद्यार्थी हिन्दी माध्यम से गैर सरकारी स्कूलों में शिक्षा पा रहे हैं तथा लगभग इतनी ही संख्या मे फाजिल्का के मान्यता प्राप्त गैर सरकारी स्कूलों में हिन्दी माध्यम से शिक्षा पा रहे हैं जबकि मान्यता प्राप्त गैर सरकारी स्कूलों में पंजाबी माध्यम से शिक्षा पाने वाले छात्रों की संख्या, अबोहर में, तथा फाजिल्का में एक हजार अबोहर शहर मे हिन्दी के दैनिक, साप्ताहिक पाक्षिक व मासिक पत्र लगभग दस हजार लगते हैं जबकि पंजाबी के सभी प्रकार के पत्रों की संख्या एक हजार से अधिक नहीं। यही अनुपात फाजिल्का में आने वाले हिन्दी व पंजाबी के पत्रों का है। इन अकाट्य तथ्यों के दृष्टिगत इस क्षेत्र को ८० % पंजाबी भाषी बताना सच्चाई से मुंह मोड़ना है।

अकाली दल के नेताओं की हरयाणा के प्रतिनिधियों के साथ अकाल तख्त पर हुई बैठक में अबोहर फाजिल्का क्षेत्र को हिन्दी भाषी मानते हुए हरयाणा में मिलाना स्वीकार किया। फिर जब सन्त फतेहसिंह ने चंडीगढ पंजाब में मिलाने के लिए आत्मदाह की धमकी दी तो अपने प्रतिनिधियों को हरयाणा के नेताओं के पास भेजकर चण्डीगढ पंजाब को तथा हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का शहर व ११५ गांव हरयाणा को हस्तांतरित करने का प्रस्ताव रखा। अतः प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अकालियों व हरयाणा के नेताओं की चण्डीगढ पंजाब को और अबोहर फाजिल्का शहर व लगभग ११५ हिन्दी भाषी गांव हरयाणा को देने की सहमति से अपने २९ जनवरी १९७० के ऐवार्ड के अनुसार उक्त क्षेत्र हरयाणा को देने की घोषणा की जिसे उस समय के पंजाब के मुख्यमन्त्री ने स्वीकार किया तथा अकालियों ने इस ऐवार्ड को सहर्ष स्वीकार कर दीवाली मनाई। आज अकाली दल व पंजाब सरकार किस तर्क व सिद्धान्तके आधार पर २९ जनवरी १९७० के ऐवार्ड को न मानकर अबोहर फाजिल्का क्षेत्र को हरयाणा को देने के लिए सहमत नहीं।

१९७० के बाद से अब तक हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र के प्रतिनिधियों के कई दर्जनों बार बड़े बड़े डेपूटेशन प्रधान मन्त्री से मिल कर मांग करते रहे हैं कि २९ जनवरी १९७० के ऐवार्ड को लागू कर हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरयाणा में मिलाया जावे। प्रधान मन्त्री ने हर बार हमारे डेपूटेशनों को पक्का विश्वास दिलाया कि २९ जनवरी १९७० का ऐवार्ड हर हालत में ज्यों का त्यों लागू होगा, उसमें किसी फेर बदल का प्रश्न ही नहीं। प्रधान मन्त्री इंदिरा गांधी के प्रति यह सर्वमान्य धारणा है कि वह अपने किये गये निर्णय पर अटल रहती हैं उसे किसी भी स्थिति में नही बदलती, तो क्या प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी अकालियों के आन्दोलनों, मोर्चों· धमकियों, राजनैतिक दबाव, बन्दूक की नोक व बम्बों के धमाकों के आगे झुककर अबोहर फाजिल्का क्षेत्र की जनता का दर्जनों बार पक्का विश्वास दिलाकर कि २९ जनवरी १९७० का ऐवार्ड हर हालत में लागू होगा, अब इस ऐवार्ड को बदलकर अपने नाम व साख को धक्का लगाएंगी। इससे बड़ा देश का क्या दुर्भाग्य होगा कि देश की सर्वोच्च सत्ता प्रधान मन्त्री अपने वचन को भंग करे।

प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने २९ जनवरी १९७० को ऐवार्ड देते समय पार्लियामेन्ट के सभी दलो के प्रतिनिधियों मे परामर्श कर तथा उनकी सहमति प्राप्त कर चण्डीगढ पंजाब का अबोहर फाजिल्का शहर व लगभग ११५ गांव हरयाणा को देने की घोषणा की थी। अतः यह ऐवार्ड देश के प्रतिनिधियों का सर्वसम्मत निर्णय था जिसे लागू करने में सहयोग देना देश के सभी राजनतिक दलों और जनता का कर्त्तव्य है। हरयाणा, पंजाब तथा सारे देश के लिए यही हितकर है। अतः देश के सभी राजनैतिक दलों का कर्त्तव्य है कि उनको

[शेष ८ पर]

वैदिक धर्म की दार्शनिक भूमिका

ले०—स्वर्गीय स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती
प्रेषक—ब्रह्मदत्त स्नातक

(गतांक से आगे)

इन अमृतत्व आदि शब्दों का अभिप्राय यही है कि मनुष्य (आत्मा) अपनी अज्ञान की बहुत अपूर्णता की अवस्था से अपने को विकसित करता हुआ, पूर्णता की ओर बढ़ता जाता है। वह पूर्णत: स्वयं अनन्त है, उसी तरह, जैसे आकाश या अनन्तानन्त सूर्यरूपी ताराओं से युक्त यह दृष्ट तथा अदृष्ट ब्रह्माण्ड अनन्त है। जीवन के इसी चरमलक्ष्य को वैदिक परिभाषा में 'अन्धकार से प्रकाश की ओर जाना' (तमसो मा ज्योतिर्गमय) या आनन्दमय, ज्योतिर्मय, अमृतलोक की प्राप्ति (यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिन् लोके स्वर्हितम्। तस्मिन् मां धेहि पवमानामृते लोके अक्षिते।) (ऋग० ९-११३-७) जैसे भावात्मक आदर्शों के रूप में भी प्राय: वर्णन किया गया है। वास्तव में इन सबका अभिप्राय एक ही है।

वैदिक दार्शनिक दृष्टि का महत्त्व

वैदिक धारा की दार्शनिक भूमिका को जिस रूप में हमने ऊपर दिखाया है, वह वास्तव में अत्यन्त प्राचीन होने पर भी एक प्रकार से बिल्कुल नवीन भी है। कम से कम यह तो स्पष्ट ही है कि हजार सहस्रों नहीं तो सैकड़ों वर्षों से हमारी उत्तरवर्ती दार्शनिक विचारधारा 'धारा' की मौलिक दार्शनिक दृष्टि से अत्यन्त भिन्न है।

वैदिकधारा की मौलिक दार्शनिक दृष्टि के विषय में ऊपर जो कुछ लिखा गया है, वह किंचित् मात्र भी वैदिक मन्त्रों की खींचा-तानी पर आश्रित नहीं है। हमारा विश्वास है कि वैदिक मन्त्रों में जो उदात्त, आशामय विचारधारा बह रही है, उसको पूर्वोक्त दार्शनिक दृष्टि को स्वीकार किये बिना समझ नहीं सकते। एक के बिना दूसरी यह नहीं सकती। बहुत से विद्वानों को भी यह जानकर आश्चर्य होगा कि वैदिक संहिताओं में मुक्ति या मोक्ष शब्दों के साथ-साथ दुःख शब्द का प्रयोग एक बार भी हमको नहीं मिला। हमारी समझ में उपर्युक्त वैदिक दार्शनिक दृष्टि में यह एक अद्वितीय प्रमाण है।

जो भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि उपर्युक्त दार्शनिक भूमिका की भाव-भित्ति के आधार पर ही हम अधिकतर वैदिक मन्त्रों के स्वरूप को समझ सकते हैं और वैदिक कालीन आर्यों के जीवन को मानो स्नेहमयी प्रकृति माता की गोद में खेलते हुए, बच्चों का उल्लासमय जीवन कह सकते हैं। वह जीवन प्रकृति के प्रत्येक रूप में ऊषा में, रात्रि में, अरण्यानी, सूर्य और चन्द्र में, वायु में, सर्वत्र ही, अकृत्रिम सौन्दर्य, माधुर्य और निर्दोष आनन्द की अबाधधारा को अनुभव कर सकता है।

इसी भावभूमिका में हम वेद के अनेकानेक जीवन संगीतों के मर्म को समझ सकते हैं। उदाहरणार्थ ऐसा ही एक जीवन संगीत हम नीचे देते हैं—

पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम्।
बुध्येम शरदः शतम्, रोहेम शरदः शतम्।
पुष्येम शरदः शतम्, भवेम शरदः शतम्।
भूयेम शरदः शतम्, भूयसीः शरदः शतम्॥

(अथर्व० १९-६७-१-८)

अर्थात् सौ और सौ से भी अधिक वर्षों तक हम जीवित रहें, देखने सुनने में सशक्त रहें, ज्ञान का उपार्जन करें, बराबर उन्नति करते रहें, पुष्ट करें, आनन्दमय स्वस्थ जीवन व्यतीत करते रहें और अपने को भूषित करते रहें।

जीवन के विषय में यह सुखद स्वस्थ, भव्य और स्वर्गीय भावना कितना उत्कृष्ट है। भारतीय संस्कृति की लम्बी परम्परा में यह निःसन्देह अद्वितीय है और गंगा की लम्बी धारा की परम्परा में गंगोत्तरी के जल के समान दिव्य और पवित्र है। इस मौलिक विचार धारा का शनैः शनैः रूपान्तर कैसे हो गया। यह एक स्वतन्त्र विषय है।

वेद के दो गूढ़ प्रश्न : उनके सरल उत्तर

बालादेकमणीयस्कमुतेकं नैव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया॥

(अथर्व० १०।८।२५)

एक तत्त्व है जो बाल से भी सूक्ष्म है और एक ऐसा है जो दिखाई देता ही नहीं, परन्तु जो बाल से भी सूक्ष्म मेरा प्यारा देवता है वह उस का आलिंगन किये हुए है।

यह बाल से भी सूक्ष्म तत्त्व क्या है? वह तत्त्व कौन सा है—जो है परन्तु दिखलाई नहीं देता? और वह बाल से भी सूक्ष्म प्यारा देवता उसका आलिंगन किस प्रकार किए हुए है? यह त्रिमुखी समस्या है जिसका समाधान हम करना चाहते हैं। मन्त्र में आये दो में से एक की जानकारी होने पर दूसरे का जानना सुलभ होगा। उपनिषद् में एक का वर्णन आया है।

बालाग्रशतभागस्य, शतधा कल्पितस्य च।
जीवो भागः स विज्ञेयः, स चानन्त्याय कल्पते॥

बाल के अग्रभाग के सौ टुकड़े करो और उनमें से एक टुकड़े के सैकड़ों भाग करो। उस अत्यन्त सूक्ष्म भाग को जीव की परिभाषा समझो और इस प्रकार के जीव हैं भी असंख्य और हैं भी अविनाशी।

उपनिषद् के इस मन्त्र ने अथर्व के मन्त्र में आये हुए बाल से भी सूक्ष्म तत्त्व का नाम स्पष्ट शब्दों में प्रकट कर दिया है और वह नाम है जीव। जीव का नाम सुनते ही हमें इसके उस साथी का नाम जानने में कोई कठिनाई न होगी, जिसे वेद ने न दीखने वाला कहा है, और जिसका यह आलिंगन किये हुए है।

यह उसका आलिंगन तो किए हुए है, परन्तु उसे देख नहीं पाता। यह एक विचित्र समस्या है। जीव का प्रकृति के साथ भी सम्बन्ध है परन्तु यह उसको देखता भी है और उसका उपभोग भी करता है।

'तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति।'

उन दोनों में से एक उस प्रकृति रूपी वृक्ष के कर्मफलस्वरूप फलों का उपभोग करता है। परन्तु इसमें प्रकृति का नहीं, एक ऐसे तत्त्व का वर्णन किया जा रहा है, जिसका कि यह आलिंगन अवश्य किए हुए है परन्तु न तो उसके रस का आस्वादन कर पाया है और न उसे देख पाया है। उपनिषदों में प्रकृति के स्वादु फल का वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त एक दूसरे रसवान् तत्त्व का भी वर्णन किया है—

रसो वै सः। रसं ह्येवायं, लब्ध्वा आनन्दी भवति।
(वह रसरूप है, इसको प्राप्त करके यह जीव आनन्दी होता है।)

उपनिषद्कार ने वहां आनन्दरसरूप तत्व का नाम लिया है, 'नित्यं विज्ञानमयं आनन्दं ब्रह्म (नित्य विज्ञानरूप, आनन्दरूप ब्रह्म है।) इस वाक्य में आनन्द का सम्बन्ध ब्रह्म से जोड़ा गया है। जिस प्रकार आत्मा के कर्मों का एक फल प्रकृतिरूपी वृक्ष के अनेक फलों का उपभोग है, इसी प्रकार ब्रह्मानन्द रूपी फल की प्राप्ति भी उसके कुछ विशिष्ट कर्मों का फल मानी गई है। यह वह ही ब्रह्मतत्व है जिसका आलिंगन तो जीव ने किया हुआ है, परन्तु उसके आनन्दरूप फल का उपभोग तो दूर की बात है, अभी तो वह उसका दर्शन करने में समर्थ नहीं हो पाया है। हमने यह जान लिया कि इस मन्त्र में बाल से भी सूक्ष्म जिसे कहा गया है वह जीव है और वहां जिसे न दीखने वाली शक्ति कहा गया है वह ब्रह्म है। ब्रह्म व्यापक है और जीव एक देशी, इसलिए इस एक देशी का व्यापक ब्रह्म के साथ संयोग अर्थात् आलिंगन भी अनिवार्य ही है। अब प्रश्न यह ही शेष है कि जब यह उससे संयुक्त ही है तो उसे देख क्यों नहीं रहा? समस्या के इस एक अंश का समाधान रूप ही हम एक दूसरी समस्या को उपस्थित करना चाहते हैं। (क्रमशः)

सम्पादकीय

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से अपील

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं से कुछ आवश्यक निवेदन करना चाहता हूं ताकि मेरे सुझावों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके आर्यसमाज के रचनात्मक कार्यों में सहयोग कर सकें।

ग्राम पंचायतों के चुनाव

जैसाकि सर्वहितकारी के गत सप्ताह के सम्पादकीय लेख में पंचायतों के चुनाव के सन्दर्भ में लिखकर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं का ध्यान आकर्षित किया था और आग्रह किया था कि चुनाव में श्रेष्ठ उम्मीदवारों को खड़ा करें तथा उनका समर्थन करें। इन पंक्तियों द्वारा मैं हरयाणा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों कार्यकर्त्ताओं तथा हितैषियों से निवेदन करता हूं कि पंचायत के चुनाव में ऐसे उम्मीदवारों को खड़ा करें जो चरित्रवान् ईमानदार निःस्वार्थ कार्य करने वाला पक्षपात रहित, मिलनसार, अनथक, लगनशील, दलगत राजनीति से दूर तथा समाज सेवक हो और ऐसे उम्मीदवारों का डटकर विरोध करें जो कि चरित्रहीन झगडालू शराब प्रेमी, पार्टीबाज, सांझे धन का दुरुपयोग करने वाला, स्वार्थी तथा बेईमान हों, चाहे वह उम्मीदवार आपके परिवार तथा पाने ठोले का ही क्यों न हो। ग्राम के हितों के लिए उम्मीदवार का खुलकर सहयोग तथा समर्थन करें, जिनका पिछला रिकार्ड निष्कलंक, साफ तथा आदर्श रहा हो और ग्राम की जनता को वचन देवें कि वे चुनाव के बाद ग्राम की भलाई के लिए काम करेंगे। ग्राम में शराब के प्रयोग पर पाबन्दी लगवाकर बहूबेटियों की इज्जत सुरक्षित रखेंगे। मुकद्मे कचहरी में न जाकर दोनों पक्षों को समझा बुझाकर समाप्त कराने का यत्न करेंगे।

ग्राम पंचायत की आमदनी का सदुपयोग करके उसे जनसाधारण की भलाई में खर्च करेंगे। ग्राम में सफाई तथा रात्रि को गलियों में प्रकाश का प्रबन्ध आदि करेंगे। चुनाव जीतने के बाद अपने विरोधियों तथा जिन्होंने उनके पक्ष में मतदान नहीं किया है, सबके साथ पक्षपात रहित होकर सारे ग्राम के हित में कार्य करेंगे।

आजकल बुरे आदमियों का संगठन है। शराब पीने तथा पिलाने वाले चुनाव में मिलकर धींगा मस्ती करते हैं, परन्तु श्रेष्ठ माने जाने वाले आदमी चुनाव के मैदान में कूदने से भी संकोच करते हैं। इस प्रकार विवश होकर साधारण जनता अच्छा उम्मीदवार खड़ा हुआ न देखकर भाग्यवश बुरे उम्मीदवार को ही मत देती है। इस प्रकार श्रेष्ठ व्यक्ति पीछे रह जाते हैं और बुरे व्यक्ति चुनाव जीतकर ग्राम के नेता बन जाते हैं। जो उम्मीदवार चुनाव जीतने के लिए हजारों रुपये की शराब अपने मतदाताओं को पिलाकर सरपंच तथा पंच बन जाते हैं, वे अपना खर्च पूरा करने के लिए ग्रामीण जनता को ही लूटते हैं। आपस में झगड़े करवाकर उनमें मुकद्मे बाजी करवाते हैं और शराब की बोतलें उनसे मांगकर भ्रष्टाचार का आचरण करते हैं। ग्राम की भलाई न करके अपनी ही भलाई के लिए अनुचित साधनों से धनवान बनते हैं। न्याय का पक्ष न लेकर अन्याय को प्रोत्साहित देते हैं। भ्रष्ट अधिकारियों से सांठ-गांठ करके ग्राम में भ्रष्टाचार फैलाते हैं।

अतः आप इस शुभावसर को अपने हाथ से न जाने देवें और किसी भी अवस्था में शराब का सेवन करने तथा कराने वालों को पंचायत के चुनाव में सफल न होने देवें श्रेष्ठ उम्मीदवार सफल होने पर ग्राम में भलाई के कार्य हो सकते हैं।

सभा के लिए योग्य प्रतिनिधि भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का गत वर्ष २१ मार्च १९८२ को चुनाव हुआ था। सभा के विधान के अनुसार इस वर्ष आगामी ३ वर्ष के लिए प्रतिनिधि चुनकर भेजने हैं। इस सम्बन्ध में सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजों को प्रतिनिधि फार्म भेज दिये गये हैं। कुछ आर्य समाजों ने फार्म भरकर सभा कार्यालय में भेज दिये है।

अतः आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्यसमाज के नियम उपनियम के अनुसार अपने सभासदों से उनका चन्दा (वार्षिक आय का शतांश) लेकर साधारण सभा में योग्य प्रतिनिधियों का चुनाव करें। वेद प्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक धन फार्म के साथ सभा को भेज देव। यदि किसी कारण से किसी आर्यसमाज को फार्म न मिल सका हो तो पत्र लिखकर मगवा लेवें। प्रतिनिधि फार्म भरते समय अपने प्रतिनिधियों तथा अधिकारियों से उनका चन्दा बताश के साथ प्राप्त करके फार्म में लिखें। अन्यथा उनके प्रतिनिधि स्वीकार करने में विवशता रहेगी। प्रतिनिधि महानुभाव सुयोग्य, अनुभवी तथा आर्यसमाज के कार्यों में रुचि रखने वाले हों। आर्यसमाज तथा सभा का इसी में हित है। सभा के चुनाव की तिथि नियत करने के लिए १९ जून प्रातः १० बजे दयानन्द मठ रोहतक में अन्तरंग की बैठक हो रहा है।

हरयाणा रक्षा वाहिनी को सहयोग करें

आपको समाचार पत्रों तथा आकाशवाणी के समाचार द्वारा पता ही है कि अकालियों की शेष मांगों पर विचारार्थ भारत सरकार ने पुनः वार्ता का निमन्त्रण दिया है। उधर उग्रवादी अकाली अपनी अनुचित मांगें जो राष्ट्र तथा विशेष कर हरयाणा के हितों के विरुद्ध हैं, को मनवाने के लिए आनन्दपुर साहब के किले में अकाली स्वयसेवकों के बलिदानी जत्थे को हथियार चलाने तथा गड़बड़ करने की ट्रेनिंग दे रहे हैं। प्रधान मन्त्री आजकल विदेशों के भ्रमण पर हैं। सम्भवतः उनके स्वदेश लौटने पर अकालियों के साथ कोई समझौता हो जावे। अकालियों का दबाव बहुत अधिक बढ रहा है। सरकार उनकी मांग कहां तक स्वीकार करती है, यह तो भविष्य की बात है, परन्तु हमें भी हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए जागरूक रहना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर सत्याग्रह के लिए हिन्दी रक्षा आन्दोलन की भांति हरयाणा तथा राष्ट्र के हितों की रक्षार्थ सत्याग्रह करना होगा, उसके लिए हजारों स्वय सेवक चाहिएं। लाखों रुपये धन भी संग्रह करना होगा। इस सम्बन्ध मे आर्यसमाजों तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी के अधिकारियों को परिपत्र भेजकर स्वयसेवकों की सूचियां तैयार करने का निर्देश दिया गया था। परन्तु अभी तक हमें जितना सहयोग मिलना चाहिए था, नहीं मिला है। अकाली तो भारत सरकार से टक्कर लेने की तैयारी कर चुके हैं, परन्तु हम अपने हितों की रक्षा के लिए उदासीन हैं।

हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक इस समस्या पर विचार करने के लिए १९ जून को रोहतक में आमन्त्रित की गई है। अतः आप सबा को इसके कार्यक्रम में तन मन धन से सहयोग करना चाहिए।

सर्वखाप पंचायत के फैसले लागू करें

सर्वखाप पंचायत की हरयाणा में कई स्थानों पर पचायतें हो चुकी हैं। इन पचायतों में विवाह आदि अवसरों पर कम से कम खर्च करने पर विचार किया गया। १२ जून को आर्य स्कूल गोहाना के प्रागण में भी एक बहुत बड़ी पचायत हुई जिसमें विभिन्न गोत्रों, खापों के प्रतिनिधि लगभग १० हजार की संख्या में उपस्थित हुए और महत्त्वपूर्ण निर्णय किये गये तदनुसार बारात में कम से कम बाराती (५ से १०) तथा ९ से १०१) तक की ही रस्मे करें। शराब आदि का सेवन कदापि न करें।

इसके अतिरिक्त मूले जाटों के साथ रिश्तेनाते भी करने का निश्चय किया गया। प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान की अपील पर चौ० प्रह्लाद सिंह कादियान ग्राम मिवाहा जिला करनाल तथा इसी प्रकार अन्य कई महानुभावों ने अपनी लड़कियों की शादी मूले जाट परिवारों में करने की घोषणा की। श्री बलबीरसिंह जी ग्राम दुरजनपुर जिला हिसार (मूले जाट) का विवाह ग्राम डाबड़ा जिला हिसार के एक जाट परिवार में सम्पन्न हो चुका है।

भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री

सामाजिक कुरीतियों, विवाह में अपव्यय को रोकने के लिए—

सर्वखाप पंचायत को सफल बनाओ

पंचायती राज की परम्परा

भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही दो प्रकार की शासन पद्धति चली आ रही है। एक गणतन्त्रीय दूसरी राजतन्त्रीय। इनमें गणतन्त्रीय पद्धति ही सर्वहितकारी है। इस का राजविधान वेदों के आधार पर सृष्टि के आदि विद्वान् मनु महाराज ने बनाया था। अपने जनपदों में गणों के विश्वविख्यात प्रसिद्ध संस्थापक हर हर महादेव शिव महाराज और उनके दोनों सुपुत्र थे इसीलिए वे गणपति, गणेश, गणाध्यक्ष, गणपाल, परिषद् प्रिय नामों से विख्यात हुए। उनके यही गण जटा, पाल पगड़ा, खाप और डूंग कहलाते हैं। इनकी राजधानियों के प्रमुख स्थान कैलाश पर्वत, शिवालक, हरद्वार, रोहितक, काशी, उज्जैन और मुलतान हिमाचल प्रदेश थे। यही उनकी राज्य सीमा थी जो कालान्तर में सिकुड़कर धर्मराज हर्षवर्धन के समय दिल्ली के चारों ओर दो सौ-दो सौ कोस तथा १८५७ के संग्राम तक १२५-१२५ कोश तक चारों ओर था। ऋग्वेद तथा हर हर महादेव के नाम के आधार पर ही यह स्वर्गधाम प्रदेश 'हरयाणा' नाम से प्रसिद्ध रहा है। शिव के बड़े सुपुत्र कार्तिकेय की राजधानी रोहितक में थे उनके वाहन और ध्वज में मयूर का चिन्ह रहता था इसलिए सारे विशाल हरयाणा में आज तक गणेश पूजा, शिवालय निर्माण, मयूर के पुतले चित्र, मयूर रक्षा और शिव पार्वती की कथा की पवित्र परम्परा का प्रचलन है और सारे हरयाणा में गणतन्त्रीय पंचायती राज्य चला आ रहा है। यही गण आज तक पाल, डूंग, खाप से कार्यरत रहे हैं। इस समय सारे विशाल हरयाणा में ऐसी ३०० खाप हैं जो २४-३२-३६-४०-५२-८४ ग्रामों की हैं। ३६० ग्रामों की महाखाप है सभी खापों का संगठन 'सर्वखाप पंचायत' कहलाता है।

सर्वखाप पंचायत का संगठन

महाभारत काल में भी पंचायतें थी उनके पंचों की प्रशासता समाहर्ता संविधाता लेखक और साक्षी कहते थे यह वर्णन सभापर्व में है। श्री कृष्ण महाराज भी पंचायती नेता थे। उन्होंने ही युधिष्ठिर को गणतन्त्रीय चक्रवर्ती राजा बनवाया था। गौतम बुद्ध के समय भी पंचायतें थी। चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य में भी ग्राम पंचायतें थी। सिकन्दर आक्रान्त को शिविगण, मालवगण, शूद्रकगण से घोर युद्ध करना पड़ा था परन्तु हरयाणा के प्रसिद्ध बलशाली यौद्धेयगण की अजेय शक्ति को देखकर भाग गया और मार्ग में बेबीलोनिया (बगदाद) के स्थान पर मर गया। यौद्धेयगण ने हजारों वर्ष पर्यन्त आक्रान्ताओं से दिल्ली, हरयाणा और भारतवर्ष की रक्षा की है परन्तु नवीन पौराणिकों के जाल में फसकर गुप्त काल के अन्तिम राजाओं ने यौधेय गण को क्षीण कर दिया था परन्तु ग्रामों में खाप और पंचायतें ज्यों की त्यों बनी रही थी। विक्रमादित्य प्रथम भी पंचायती शासक था। फिर ५६४ विक्रमी में मालवा के जनशर नरेन्द्र यशोधर्मा ने ३ लाख १३ हजार पंचायती मल्ल सेना से ३ लाख हूणों को हराया था। फिर ६६३ से ७०५ विक्रमी तक चक्रवर्ति हर्ष ने पंचायती मल्ल सेना से भारत के ९० राजाओं को पराजित करके थानेश्वर, कन्नौज राजधानी से सारे उत्तरी भारत का संरक्षण किया था उसमें हर पांचवें वर्ष प्रयाग में और हर वर्ष कन्नौज में राष्ट्रोन्नति के सम्मेलन किए थे और सम्वत सात सौ (७००) विक्रमी में राजा हर्ष ने ही हरयाणा की सभी खापों के संगठन का नाम 'सर्व खाप पंचायत' कन्नौज में घोषित किया था तब से १८५७ संग्राम तक इस पंचायती संगठन ने विदेशी आक्रान्त मोहम्मद बिनकासिम, महमूद गजनवी, मोहम्मद गौरी, चंगेजी मुगल, तेमूरलंग, नादिरशाह अब्दाली और अंग्रेजों से लड़कर दिल्ली और भारत की भरपूर रक्षा की है। पंचायती संगठन के मल्ल विभाग में सच्चरित्रवान् बलिष्ठ मल्लों की अवैतनिक सुसज्जित सेना लाखों की संख्या में तैयार रहती थी। अंग्रेजी राज में पंचायतों पर पाबन्दी रही।

सर्वखाप पंचायत की पुनर्जागृति

अंग्रेजी शासन में सन् १८३४ ई० में अकाले काल से १९४७ तक पंचायतों की जगह लुटेरी अदालतें चलाई गई। परमपिता परमेश्वर की कृपा से देश स्वतन्त्र होने पर पंचायती संगठन के प्रमुख कार्यालय सौरम में सन् १९५० ई० में सर्वप्रथम पंचायती सम्मेलन हुआ फिर १९५०-१९५१-१९५२ में शोमली, बेरी, दिशाला, पिलखुआ, बघरा १९६० में शोघाणा, होडल, पलवल, बावल और गोछिया बादली में ये पंचायतें हुई हैं। दुर्भाग्य से हमारे देश में शराब, मांस, फैशन, भोगवाद और विवाहों में दहेज आदि की फिजूल खर्ची आदि दोष बहुत बढ रहा है। राष्ट्रोन्नति और समाज सुधार के लिए इन दोषों को रोकना अत्यावश्यक है। गत मास ८ मई को इसीलिए ऐसी पंचायत हरयाणा के प्राचीन आर्य गढ रोहतक में हुई थी। उसी सभा में गठवाला और सांगवान खाप के नेता पंचों ने १२ जून को गोहाणा नगर में सर्वखाप पंचायत करने का प्रस्ताव निश्चय कर दिया था।

गोहाणा की पंचायती सभा के फैसलों को सफल करो

हरयाणा की वर्तमान अनुमान ३०० खापों में गठवाला खाप भी प्रसिद्ध है। बालायन दहिया के समान इस खाप के भी अनुमान ३६० ग्राम हैं। गोहाणा की पंचायत में भी समाज में फैली कुरीतियों और विवाहों की फिजूल खर्ची के बोझ पर पाबन्दी लगाई गई। इस विषय में राष्ट्रपितामह जगदाचार्य महर्षि दयानन्द ने अपने एक पत्र में यह उत्तम बात कही है—'गृहस्थियों को अपनी सन्तान के स्वास्थ्य और शिक्षा पर तो अधिक व्यय करना चाहिए परन्तु विवाह आदि में नहीं।' यह आर्ष वचन शब्द प्रमाण है इसको शिरोधार्य करके पालन करो। गोहाणा की पंचायत की सफलता के लिए कुछ उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं जो इस लक्ष्य में सहायक होंगे।

१—सर्वखाप पंचायत और आर्यसमाज का संगठन, अनुशासन और ध्येय एक ही है। अतः दोनों को परम्परानुसार महर्षि दयानन्दमठ रोहतक और गुरुकुल भैंसवाल के आर्य विद्वानों के सहयोग से प्रातः ८ बजे यज्ञ रचाया जाए।

२—सर्वखाप पंचायत के प्रतिष्ठित प्रधान श्री महावीरसिंह आर्य जस्टिस को सभाध्यक्ष बनाना मर्यादा है। वे न आ सकें तो किसी वयोवृद्ध धर्मात्मा अनुभवी विद्वान् को अध्यक्ष बनाना चाहिए।

३—सभा में अधिक वक्ताओं की भीड़ न लगाकर समय के उपयोग से केवल ७-८ सुयोग्य सज्जन निर्धारित नियम सुनाकर उनके पालन आरम्भ का समय नियत कर दें क्योंकि नियम तो पूर्व जैसे ही हैं।

४—इस सभा के संयोजकों को सर्वखाप पंचायत के प्रधान कार्यालय सौरम और सभी खापों को निमन्त्रण सूचना देनी चाहिए।

५—सभा में आये सभी सभासदों, श्रोताओं, दर्शकों को धैर्य प्रेम और श्रद्धा से अनुशासन और व्यवस्था में रहकर तन मन धन से पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

६—जिन गृहस्थों के पुत्र पुत्रियों के विवाह निकट भविष्य में होने हैं उनकी एक नामावली लिखकर उनके अपने अपने ग्रामों में एक ही दिन निश्चित तिथि पर पंचायती नियमों से सैकड़ों विवाह एक साथ रचाए जाएं। इन नियमों का पालन पहले धनपति परिवार और अगवा नेता करें। फिर सब अनुकरण करेंगे।

७—शराब, नाचना, गाना, सामान दिखावा, कढाई चढाना, गाजा-बाजा हर दशा में रोकना श्रेयस्कर है। वर की न्यूनतम अवस्था २५ और कन्या की १६ वर्ष निश्चित की जाए। नियम भंग करने वालों के सामाजिक बहिष्कार और दण्ड की व्यवस्था अनिवार्य लागू करें। परमेश्वर हमारी पंचायतों को सफल करे और महंगाई के बोझ से पिसते हुए भारतीय जन-समुदाय का मार्ग दर्शन करके संरक्षण करें।

आर्यसमाज और सर्वखाप पंचायत का
प्रचारक सेवक—निहालसिंह आर्य अध्यापक (दिल्ली)
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

देश के टुकड़े टुकड़े होने से बचाओ

धर्मवीर आर्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आज देश किन्हो परिस्थितियों व उन बातो से दूर नहीं है, जिस समय भारतवासी परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़े झटपटा रहे थे, और जगह जगह पर भारत स्वतन्त्र कराने के बारे में हिन्दू क्रान्तिकारी भाईयों द्वारा लोगों को अंग्रेजो के प्रति भड़काने हेतु हड़ताल करवाने ताला बन्दी, और अनेकों प्रकार के आन्दोलन व सत्याग्रह करवाये जाते थे, आखिर ऐसा क्यों था ? यह किसी भी मूल्य पर उन गोरे अंग्रेजों को परतन्त्रता में न रहना चाहते थे। इसी कारण भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, सुभाषचन्द्र बोस आदि देश के प्यारे व इस भारत मां के सच्चे सपूत जिन्होंने अपनी भारत भूमि को परतन्त्र देखना न चाहा, देश को स्वतन्त्र कराने के लिए ही वे शहीद हो गये।

लेकिन आज देश की अपनी सरकार है। भारत स्वतन्त्र है, इतना होने पर भी आज असम और पंजाब को समस्याएं न तो लोग ही दूर कर पा रहे हैं और न हो केन्द्रीय सरकार इन समस्याओं को दूर करने के लिए पलक उठाकर हो देख रही है। क्या केन्द्रीय सरकार ने असम सरकार तथा पंजाब सरकार से रिश्वत ले रखी है, जो इतना अत्याचार व भ्रष्टाचार होने पर भी उस ओर ध्यान नहीं दे रही है। आज इतना होने पर भी सरकार द्वारा कदम न उठाने पर इसके सिवाय हम और क्या विचारकर सकते हैं। क्या हम अपनी सरकार से और अच्छी आशाएं रख सकते हैं।

आज बहुत ही विकट समस्या हमारे प्यारे देश पर हावी हो गई है। आज पंजाब में स्थित हिन्दू भाईयों की दशा उस समय से कम नहीं है जिस समय भारत गोरे अंग्रेजों के अधीन था, उस समय के इतिहास को उठाकर देखते हैं तो शरीर कांपने लगता है, लेकिन यदि आज के भारत की दशा देखते हैं तो रोने को दिल भर आता है। आखों में आंसू ढुलकने लगते हैं, जिस समय अखबारों को देखते हैं तो उनके मुख पृष्ठों पर ही अकालियों द्वारा किये गये करिश्मों का ही साकार रूप से दर्शन कर पाते हैं, कहीं अमृतसर स्वर्ण मन्दिर काण्ड तो कहीं चण्डीगढ और अबोहर फाजिल्का के बटवारे में लोग सारा दिन बरबाद कर देते हैं। आज तो हमारा देश परतन्त्र नहीं है, फिर क्यों न हम इस देश में वास करने वाले हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख एक जुट होकर रहें। इसी तरह चलते रहने से केन्द्रिय सरकार को इस ओर ठोस कदम उठाना चाहिए। अगर सरकार इसकी ओर अपना थोड़ा भी ध्यान न देगी तो फिर लोगों को अपनी करनी में बाध्य होना पड़ेगा। इसलिए पहले तो पंजाब के उन अकाली भाइयों से निवेदन है कि वह पंजाब को उग्रवाद रूप धारण होने से बचायें और फिर अगर पंजाब में यही स्थिति रहे तो केन्द्रिय सरकार से प्रार्थना है कि वह इस मामले का जरा सी रुचि लेकर पंजाब में होते जा रहे हत्याकाण्ड सड़क आन्दोलन के उग्र रूप को शक्ति से कुचल दे, ताकि देश के टुकड़े होने से बचाया जा सके। अगर केन्द्रिय सरकार ने रुचि से इस ओर कार्य नहीं किया तो पंजाब और असम की समस्याएं भारत को मृत्यु के कगार पर लाकर खड़ा कर देंगी।

योग्य वर की आवश्यकता

हरयाणा आर्य जाट कुलोत्पन्न स्वस्थ सुन्दर बी० ए० द्वितीय वर्ष की छात्रा के लिए चरित्रवान् स्वस्थ सुन्दर बारोजगार वर की आवश्यकता है। गोत्र सहित विवरण लिखें।

द्वारा व्यवस्थापक सर्वहितकारी
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

प्रवेश सम्बन्धी सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। १ म कक्षा से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, संगीत, गृहविज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि संस्था की आधार भूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास। तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ।

निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एवं इन्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम वर्ष तथा तृतीय वर्ष में प्रविष्ट हो सकती हैं। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है।

१ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला शुरु है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५) भेजकर नियमावली मंगवा सकते हैं।

दमयन्ती कपूर
प्रिंसिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

मुख्याध्यापक की आवश्यकता

आर्यसमाज बल्लबगढ जिला फरीदाबाद द्वारा संचालित बुद्धि प्रकाश वैदिक विद्या मन्दिर के लिए एक मुख्याध्यापक की शीघ्र आवश्यकता है। योग्यता बी. एस सी. बी. एड. या बी. ए. बी. एड. तथा १० वर्ष तक शिक्षण का अनुभव हो। वेतन योग्यतानुसार होगा। अपना प्रार्थना पत्र, प्रमाण पत्रों सहित भेजें। आर्यसमाज के विचारों वाले को प्राथमिकता दी जावेगी।

राजेन्द्रप्रसाद गुप्ता प्रबन्धक

हमारी मूल आवश्यकता चरित्र निर्माण

(रामलाल गुप्त जालन्धर शहर)

चरित्र मानव की सबसे मूल्यवान् सम्पत्ति है। इसका मानव जीवन में बड़ा महत्त्व है। चरित्र को मानव जीवन का सर्वस्व कहा जाए, तो कोई अत्युक्ति न होगी। अच्छे चरित्र के समान पवित्र और बहुमूल्य सम्पत्ति इस सारे संसार में दूसरी कोई नहीं है। अंग्रेजी भाषा में एक कहावत है कि—

When wealth lost, nothing is lost, when health is lost, something is lost, but when character is lost, everything is lost.

अर्थात् धन के नाश से मनुष्य की कुछ भी हानि नहीं होती, स्वास्थ्य के नाश से मनुष्य को कुछ न कुछ हानि अवश्य होती है, परन्तु चरित्र के नाश से मनुष्य का सर्वस्व ही नष्ट हो जाता है।

चरित्र को मनुष्य के सभी गुणों का सरताज कहा गया है। चरित्रोत्कर्ष ही मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाता है। चरित्र के अभाव में मनुष्य जीवन मानव जीवन न रहकर पशु जीवन बन जाता है। चरित्र हीन व्यक्ति और जीवन हीन मुर्दे में कुछ भी अन्तर नहीं है समाज के लिए वह घृणास्पद है। जिस चरित्र को मानव जीवन में इतना महत्त्व प्राप्त है, वह है क्या वस्तु ? पहले इस पर विचार करना होगा।

साधारणतया अनेक अच्छी आदतों के समूह का नाम ही चरित्र है। अर्थात् मनुष्य को वास्तविक मनुष्य कहलाने के लिए जिन सद्गुणों की आकांक्षा की जाती है, उन सब की समष्टि का नाम ही चरित्र है। इन्द्रिय सुख की लालसा से प्रेरित होकर अपने कर्त्तव्य से विमुख न होने को ही सच्चरित्रता कह सकते हैं। काम-सुख भोग की लालसा को नियन्त्रित करके मर्यादा पूर्वक आचरण करना सच्चरित्रता के अन्तर्गत आता है।

चरित्रवान् व्यक्ति में सभी दैवीगुणों का समावेश होता है। जैसे सत्य भाषण, उदारता, दया, क्षमाशीलता, सहिष्णुता, अहिंसा, दानशीलता, त्याग, सद्व्यवहार विषयों के प्रति अनासक्ति कपट और चोरी न करना, अहंकार और क्रोध का त्याग मादक द्रव्यों का सेवन न करना इत्यादि। एक चरित्रवान् व्यक्ति जिस व्यवहार को अपने प्रतिकूल समझता है, वह दूसरों के प्रति वैसा कभी नहीं करता। किसी मनुष्य के चरित्र की पहचान उसकी प्रत्येक गतिविधि और उसके प्रतिदिन के जीवन क्रम और आचार व्यवहार से होती है। जान-बूझ कर असत्य भाषण करना, स्वार्थी और लोलुप होना, दूसरों के हृदय को आघात पहुँचाना इन सबसे मानव के दुश्चरित्र होने का बोध होता है।

भारत सदा से सदाचार एवं संस्कृति सम्पन्न देश रहा है। प्राचीन काल में यहां के लोगों का चरित्र बड़ा ऊँचा था। उनके सम्मुख सदा यह आदर्श रहता था—मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्। आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः अर्थात् वे दूसरे की स्त्री को अपनी माता के समान दूसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान और सभी लोगों को अपने समान समझते थे। उनके मन में ईश्वर और धर्म का भय था। वे समझते थे कि हमारे बुरे कामों को और कोई देखे या न देखे पर ईश्वर अवश्य देखता है। इसलिए वे सदा बुराइयों से बचने का प्रयत्न करते रहते थे। उस समय का समाज तथा शासनतन्त्र भी पर्याप्त जाग्रत था। वह भ्रष्ट चरित्र व्यक्ति को कठोर दण्ड देने में कभी भी हिचकिचाता न था। उस समय समाज में धनवान् की अपेक्षा चरित्रवान् तथा विद्वान् की अधिक प्रतिष्ठा थी। लाखों करोड़ों का व्यापार व्यवसाय मौलिक आश्वासन पर चलता था। झूठ बोलना, विश्वासघात कृतघ्नता, चोरी करना, धोखा देना आदि अनाचारों को महापाप माना जाता था। उस समय भारत का एक शासक खुले शब्दों में इस बात की घोषणा कर सकता था—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न च मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणीकुतः॥

अर्थात् मेरे राज्य में न कोई चोर है, न कायर है, न कोई शराबी है, न अग्निहोत्र आदि यज्ञों से हीन है, न कोई मूर्ख है और न ही कोई व्यभिचारी है। जब कोई व्यभिचारी पुरुष नहीं तो कोई स्त्री व्यभिचारिणी कैसे हो सकती है।

इसके पश्चात् मुगलों के शासन काल में भी भारतीयों का चरित्र बड़ा ही उज्ज्वल रहा है। छत्रपति महाराज के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उनका एक सैनिक जब उनके लिए एक मुसलमान शासक की अपूर्व सुन्दर पुत्रवधु को हरके ले आया और निवेदन करने लगा कि—यह सुन्दरी मैं आपको भेण्ट करने के लिए लाया हूं इसे स्वीकार कीजिए तो शिवाजी ने उस सैनिक को बड़ी भारी फटकार डाली और उस सुन्दरी को आदर के साथ उसके पति के पास पहुंचाने की आज्ञा दी शिवाजी ने तब यह भी कहा था—काश ऐसी सुन्दरी के गर्भ से मेरा जन्म होता, तो मैं भी ऐसा ही सुन्दर होता।

किन्तु आज भारत का चरित्र अत्यन्त पतन की ओर जा रहा है। लोग एक दूसरे की बहुबेटियों और सम्पत्ति की ओर बुरी दृष्टि से देख रहे हैं। भ्रष्टाचार इतना बढ चुका है कि सरकार के किसी भी विभाग में चाहे वह आयकर विभाग हो, बिजली का दफ्तर हो, तहसीलदार या न्यायालय हो रिश्वत लिए बिना कोई बात तक सुनने को तैयार नहीं। खाद्यान वस्तुओं और दवाइयों तक में मिलावट दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। शिक्षा विभाग में भी धांधली मची हुई है। विद्यार्थी झूठे सार्टीफिकेट प्राप्त कर लेते हैं। पाठ्य पुस्तकों का स्वीकृति में भी गोल-माल हो रहा है। अध्यापक बच्चों को बड़ी मंहगी पुस्तकें खरीदने पर मजबूर करते हैं। इतना ही नहीं ऐसी बातें भी प्रतिदिन सुनने में आती रहती हैं कि अमुक ठेकेदार ने इञ्जीनियर के साथ सांठ-गांठ करके अमुक पुल अथवा बांध के बनाने में घटिया मसाला प्रयोग करके लाखों रुपये बना लिए और पुल या बांध शीघ्र ही टूट गया, जिससे देश को लाखों नहीं करोड़ों रुपये की हानि हुई। एक ओर मजदूरों की हड़तालें होती हैं, जो राष्ट्रीय सम्पत्ति की तोड़-फोड़ करते हैं तो दूसरी ओर विद्यार्थी परीक्षा हाल में चाकू छुरे लेकर जाते हैं और निरीक्षक को धमका कर नकल करते हैं।

ये सब बातें हमारे चरित्र की हीनता को ही प्रकट करती हैं। राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक चाहे जिस भी क्षेत्र में देखिए, चरित्र नाम की चिड़िया को लोग ताली बजा कर उड़ा देते हैं। समाज के सभी क्षेत्रों में चारित्रिक दरिद्रता व पिशाची बनकर स्वच्छन्द विचरण कर रही है।

[क्रमशः]

महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी और परोपकारिणी सभा

डा० भवानीलाल भारतीय

(गतांक से आगे)

चौधरी प्रतापसिंह जी, श्री देशराज जी बहल तथा घनश्यामदास जी गोयल जैसे उदारमना दानी महानुभाव हैं, श्री रामनाथ सहगल जैसे जोशीले उत्साही तथा कर्मठ आर्य नेता हैं। अधिक क्या कहूँ स्वयं राजस्थान प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह जी भी इस सभा के माननीय सदस्य हैं। (अपने बारे में कुछ नहीं कहूंगा यदि कहूँ तो वह आत्मश्लाघा ही समझी जाएगी) अतः आर्य जनता इस बात को अपने मन से निकाल दे कि श्री महाराज की उत्तराधिकारिणी सभा में अवांछनीय तत्व हैं। यदि उपर्युक्त आर्य महानुभाव अवांछनीय हैं तो फिर वांछनीय की परिभाषा हमें बदलनी होगी।

अब आती है बात हमारी सभी के कर्मठ तथा उत्साही मन्त्री श्री करण शारदा जी की। सर्वप्रथम तो आलोचक महानुभावों को यह सोचना चाहिए कि यह समारोह सम्पूर्ण आर्य जगत् का है, यह शारदा जी के घर का समारोह नहीं है। अतः वैयक्तिक और अप्रासंगिक बातों को (जो वस्तुस्थिति से अपरिचय के कारण उत्पन्न होती हैं) इस अवसर पर उछालने से कोई लाभ नहीं। जो लोग यह भ्रम पाले हुए हैं कि शारदा जी के कारण सभा नष्ट भ्रष्ट हो रही है उसकी सम्पत्ति को वे हड़प रहे हैं तथा इसे सर्वनाश की ओर ले जा रहे हैं, वे मूर्खों के स्वर्ग में निवास कर रहे हैं। मैं शारदा जी को विगत दो दशकों से भी अधिक समय से जानता हूँ। पूरे एक युग तक अजमेर में उनके साथी, सहयोगी के रूप में सभा का कार्य करने का अवसर मुझे मिला है। शारदा जी देश के धनकुबेर बिड़ला जी के निकट सम्बन्धी हैं। उनका स्वयं का लाखों का कारोबार है। वे सभा की सम्पत्ति या धन को हड़पने की कार्यवाही करेंगे, यह वही व्यक्ति सोच सकता है जो उन्हें निकट से न जानता हो। मनुष्य जन्य दुर्बलताएं सबमें होती हैं, मुझ में भी हैं, शारदा जी में भी, शायद आलोचकों में भी होंगी। परन्तु इसी कारण हम निर्वाण शताब्दी समारोहों को पलीता (Sabotage) लगाने के लिए कृतसंकल्प हों, तो यह गुरुद्रोह से कम नहीं होगा। इससे अधिक क्या लिखा जाय। शताब्दी के पुण्य अवसर पर वैयक्तिक चरित्रहनन की आज्ञा किसी को नहीं दी जा सकती।

दो शब्द उन महानुभावों के लिए जिन्होंने यह आरोप लगाया है कि परोपकारिणी सभा ने ऋषि निर्वाण स्मारक भवन तथा श्मशान के विकास के लिए किसी योजना को स्वीकार नहीं किया है। अतः उसे सहयोग नहीं देना चाहिए। यह बात वही व्यक्ति कह सकता है जो अजमेर के तथ्यों से अपरिचित हो। परोपकारिणी सभा ने शताब्दी समारोह पर कुछ स्थायी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की योजनाएं बनाई हैं, जो इस प्रकार हैं—

१—ऋषि उद्यान में सुन्दर एवं भव्य यज्ञशाला बनाई जा रही है।

२—स्वामी जी के ग्रन्थों के मुद्रण, प्रकाशन तथा तत्सम्बन्धी शोध विषयक संस्थान तथा पुस्तकालय आदि का निर्माण।

३—इस अवसर पर तीन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किये जा रहे हैं जो इस समारोह की स्थायी उपलब्धि होंगे।

(अ) दयानन्द ग्रन्थमाला का दो खण्डों में प्रकाशन।

(आ) स्वामी जी की प्रामाणिक, अधिकृत, शोधपूर्ण जीवनी का प्रकाशन (यह ग्रन्थ इन पंक्तियों के लेखक ने तैयार किया है)

(इ) दयानन्द स्मारक ग्रन्थ। इसका सम्पादन स्वामी सत्यप्रकाश जी कर रहे हैं।

उपर्युक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त शताब्दी समारोह पर जो विभिन्न आयोजन होंगे, वे निश्चय ही सामयिक होंगे, परन्तु प्रचार की दृष्टि से उनकी उपयोगिता भी स्वीकार करनी ही होगी।

अब आक्षेपकर्त्ताओं की बातों पर ध्यान दें। जहां तक निर्वाण स्मारक भवन का सम्बन्ध है, वह एक स्वतन्त्र पंजीकृत ट्रस्ट के अधीन है। उसके विकास की योजनायें उक्त ट्रस्ट ने स्वतन्त्र रूप से बनाई हैं और उसके उत्साही अधिकारी तथा ट्रस्टीगण (इन पंक्तियों का लेखक भी इस ट्रस्ट का ट्रस्टी है तथा उपप्रधान रह चुका है) इसके लिए कार्यरत भी हैं। इस स्थान पर औषधालय, पुस्तकालय, अतिथिशाला, सत्संग आदि की उपयोगी प्रवृत्तियां संचालित की जा रही हैं और आर्य जगत् मुक्त हस्त होकर इसकी सहायता भी कर रहा है। परोपकारिणी सभा यथाशक्य इस न्यास को सर्वात्मना सहयोग करेगी। इसमें उसे कोई विप्रतिपत्ति नहीं है।

अब रही श्मशान के विकास की बात। पाठक क्षमा करें। यह बात कुछ समझ में नहीं आई। मैंने जब एक महानुभाव से इसकी चर्चा की तो वे (शायद मजाक के मूड में थे) कहने लगे—श्मशान का विकास तो तब होगा, जब अधिक से अधिक मुर्दे वहां फूंके जायें, परन्तु मैं इस बात को इतने हल्केपन से नहीं लेता। अजमेर के मलूसर श्मशान, जहां श्री महाराज की अन्त्येष्टि ३१ अक्तूबर १८८३ को की गई थी, के विकास की एक महत्त्वाकांक्षी योजना हमारे बुजुर्ग नेता व शिक्षा शास्त्री प्रिंसिपल दत्तात्रेय जी ने लगभग १०-१२ वर्ष पूर्व बनाई थी। उस समय मैं राजस्थान प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा का मन्त्री था। मैं स्वयं उस श्मशान सुधार समिति का सदस्य भी था। उस समय मान्यवर दत्तात्रेय के समक्ष भी एक कठिनाई आई थी कि यदि महाराज के श्मशान स्थल पर कोई आकर्षक स्मारक बना दिया जाता है तो इस बात की क्या गारंटी कि आने वाले सालों में वहां कोई मेला न लगने लगेगा और अज्ञानी लोग वहां मत्था टेकने न आने लगेंगे। पाठकों के मनोरंजन के लिए यह बता दूं कि शिवरात्रि के अवसर पर जब टंकारा के पार्श्ववर्ती शिवमन्दिर में आर्य नरनारियों का जुलूस पहुँचता है, तो कई श्रद्धालु (किन्तु अज्ञानी) माताएं वहां शिवपिण्डी के समक्ष प्रणिपात करने लगती हैं। इसी आशंका को ध्यान में रखकर श्री दत्तात्रेय जी ने तो आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान में मुख्य अन्त्येष्टि स्थल पर एक सुन्दर वेदी बनवा दी तथा उसे लौह तारों से आवेष्टित कर दिया, ताकि न तो उसे कुत्ते आदि अपवित्र करें और न किसी अन्य मृतक का दाह वहां किया जाए। मेरी विनम्र सम्मति में तो श्मशान का इतना ही विकास पर्याप्त था, और वह श्री दत्तात्रेय जी के पुरुषार्थ एवं उद्योग से किया जा चुका है।

अब बात रही उस श्मशान स्थली को और अधिक सुन्दर तथा भव्य बनाने की, तो यह ध्यान में रहे कि यह श्मशान केवल आर्यसमाज का नहीं, हिन्दुओं का सार्वजनिक श्मशान है। यदि उसे जामनगर या बरेली (जहां महात्मा नारायण स्वामी जी की अन्त्येष्टि हुई थी) के श्मशान की भांति रम्य या दर्शनीय बनाना है तो अजमेर के हिन्दू नागरिकों से बात करिये तथा इसके लिए सामूहिक उद्योग कीजिये। इस प्रसंग में परोपकारिणी सभा पर अपना आक्रोश उतारना कथमपि संगत है तो मित्रो इन पंगु तर्कों के आधार पर आप स्वामी महाभाग की उत्तराधिकारिणी सभा से सहयोग न करें तो इसे दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा। आज तो बस इतना ही।

हिन्दी भाषी अबोहर-फाजिल्का क्षेत्र की जनता का प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी के नाम खुला पत्र

(पृष्ठ 1 का शेष)

सहमति से प्रधान मन्त्री ने जो एवार्ड 29 जनवरी 1970 को दिया, उसके अनुसार पंजाब की समस्या सुलझावें। कोई नया फार्मूला सुझाने की बजाए हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरयाणा को हस्तान्तरित कर पंजाब हरियाणा के सीमा विवाद को हल करें। इससे उत्तम इस समस्या को सुधारने का अन्य उपाय नहीं।

यदि 29 जनवरी 1970 के सर्वसम्मत ऐवार्ड को बदला गया, तो इससे अबोहर फजिल्का क्षेत्र तथा हरियाणा की जनता का केन्द्रीय सरकार व प्रधान मन्त्री के प्रति विश्वास डिग जावेगा। हरियाणा मे इसकी तीव्र प्रतिक्रिया होगी। वहां अशांति फैलेगी। यदि प्रधानमन्त्री स्वयं अपने दिये वचन को भंग करें, अपने ही निर्णय को बदले तो देश में लोकतन्त्र का अस्तित्व ही संकट में पड़ जावेगा। अबोहर फाजिल्का क्षेत्र की हिन्दी भाषी जनता के प्रति इससे बड़ा अन्याय तथा विश्वासघात क्या होगा, जिसने 13 वर्ष तक प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रति गहरी श्रद्धा व विश्वास प्रकट करते हुए पक्की आशा रखी कि प्रधानमन्त्री अपने दिये वचन का पालन कर अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरियाणा में हस्तान्तरित करेंगी। क्या अबोहर फाजिल्का की जनता को इसलिये दण्ड दिया जा रहा है, उसकी बहुत पुरानी न्यायोचित मांगों को ठुकराया जा रहा है कि उन्होंने बिना कोई आन्दोलन किए, बिना हिंसा या तोड़-फोड़ का रास्ता अपनाए बिना कानून भंग किए शान्तिपूर्ण ढंग से सरकार के सामने अपनी मांगें रखीं।

यदि प्रधानमन्त्री शान्तिपूर्ण ढंग से रखी गई मांगों को ठुकरा कर धमकियों, मोर्चों वा तोड फोड़ एवं हिंसा से दबकर अनुचित मांगें स्वीकार करेंगी तो फिर देश भर में ऐसा ही वातावरण बनेगा। इससे लोकतन्त्र व देश की सुरक्षा, अखण्डता सब कुछ संकट में पड़ जावेगा। यह मार्ग देश के लिये घातक सिद्ध होगा, हिन्दी भाषा अबोहर-फाजिल्का क्षेत्र को हरियाणा में मिलाने के सर्व-सम्मत फैसले को फिर से खोलकर पुनः विचारार्थ कमिशन को सुपुर्द करना, एक सुलझे हुए प्रश्न को फिर से उलझाकर नई समस्यायें, नये झगड़े खड़े करना है, जिसे केन्द्रीय सरकार राष्ट्र के लिये हानिकर समझकर न मानेगी तथा 29 जनवरी 1970 के ऐवार्ड को ही लागू करेगी, ऐसी हम प्रधानमन्त्री से आशा करते हैं।

तेगराम भू० पू० विधायक-मन्त्री फाजल्का तहसील हरियाणा सम्मिलन समिति अबोहर

मनफूलसिंह एडवोकेट प्रधान-फिरोजपुर जिला बिशनोई सभा अबोहर।

प्रहलादकुमार प्रधान मन्त्री अखिल भारतीय जीव रक्षा समिति अबोहर।

नवलकिशोर सिंगला प्रधान मन्त्री श्री श्याम प्रचार सभा अबोहर

महावीर प्रसाद सेवक मन्त्री श्री श्याम कीर्तन मण्डल अबोहर।

सुभाषचन्द्र अग्रवाल उपमन्त्री अग्रवाल सभा अबोहर।

सन्तकुमार प्रधान अ० भा० जीव रक्षा विशनोई सभा, अबोहर।

जगदीशचन्द्र वकील, हरिपुरा, राजेराम भू०पू० सरपंच मौजगढ़।

जसराम भू०पू० सरपंच बाजीदपुर, भूपसिंह पंच गुमजाल।

भानीराम भू०पू० पंच भूमिया वाली बहादरराम भू०पू० पंच रामसरा

सोहनलाल भू०पू० सरपंच सरदारपुरा।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी० नं० 2[illegible]/73 पंजी० नं० F/RTK 49 — सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८४



ओ३म् — कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क २७ | २१ जून १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

प्राप्ति दिनांक 2-7-83

विवाह आदि अवसरों पर कम खर्च करने के लिए

सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत गोहाना जिला सोनीपत के महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव

प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार सभा उपमन्त्री

गोहाना १२-६-८३

आज यहां ब्र० कर्मपाल जी की अध्यक्षता में सर्वखाप की विशाल पंचायत हुई जिसमें हरयाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान से प्रमुख प्रतिनिधियों ने भाग लिया। लगभग दस हजार लोगों की उपस्थिति में जमादार रिसालसिंह जी ने ११ प्रस्ताव रखे जिन पर ६ घण्टे तक खुले रूप से विचार विमर्श हुआ। सभा की कार्यवाही का संचालन श्री कपिलदेव जी शास्त्री ने किया। कुल मिलाकर २० खापों के प्रतिनिधियों ने अपने सुझाव दिए तथा पंचायत के नियमों का पालन करने के लिए विश्वास दिलाया। मूले जाटों की तरफ से श्री कटारसिंह ने अपनी मर्मस्पर्शी अपील करते हुए कहा कि हमारे साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध शुरु किया जाये। इस पंचायत में चौ० कबूलसिंह मन्त्री सर्व खाप पंचायत, जस्टिस महावीरसिंह प्रधान सर्वखाप पंचायत, चौधरी माडूसिंह मलिक, प्रो० शेरसिंह, चौ० राजेन्द्रसिंह मलिक, चौ० शमशेर सिंह सुरजेवाला, चौ० किताबसिंह मलिक एम० एल० ए०, मा० भलेराम एम. एल. ए., महेन्द्रकुमार शास्त्री अलवर, चौ० सूरजमल सांगवान एडवोकेट, चौ० प्रियव्रत ठेकेदार, चौ० शेरसिंह मलिक आदि प्रमुख व्यक्ति सम्मिलित हुए। इस विशाल पंचायत में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये गये—

१—लड़के के जन्म, छठी या पोतड़े पर १ रुपये से अधिक का कोई नेग नहीं होगा। दशोटन में बाहर गांव के आदमियों को आमन्त्रित नहीं किया जावेगा। परोसे देने पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगा दिया है। अगर लड़के का दादा या दादी जीवित है तो उसके मान अपने ही घर के होंगे और मान-तान १०१ रुपये तक सीमित रहेंगे।

२—भात में ५ से अधिक व्यक्तियों के जाने पर रोक लगा दी गई है, थाली में १०१ रुपये से अधिक नहीं दिया जावेगा।

३—लड़का या लड़की को देखने के लिए ५ से अधिक व्यक्तियों के जाने पर पाबन्दी है। लड़का, लड़की को देख सकता है ताकि वह एक दूसरे के गुण, कर्म, स्वभाव से परिचित हो सके, परन्तु लड़के के साथ उसकी माता, बुआ, मामी, नानी या बहन जरुर होगी। लड़की को अपनाने की रस्म मे रुपये का लेन देन नहीं होगा।

४—सगाई पर टीके का सिर्फ १) लिया जावेगा। लड़के के बाप या दादा की मानता १०१) से अधिक नहीं होगी। लड़की के परिवार की ओर से लड़के के पड़दादा तक के भाई बच्चों तक को ही १-१ रुपये से मान्यता दी जावेगी। सगाई पर बाकी सब आदमी लड़के वाले के खर्चे पर बुलाये जा सकते हैं, उनको मान्यता का रुपया नहीं दिलाया जावेगा।

५—विवाह शादी में दहेज के लेन देन तथा दिखावे पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। T. V. कार, स्कूटर, फ्रिज, कूलर आदि विलासता की वस्तुयें देने पर रोक लगा दी गई है। विदा पर १०१ रु० से अधिक दान नहीं दिया जावेगा। थापे पर ११) ही दिये जा सकते हैं। भाईचारे और बारात को सिर्फ दो ही मिठाई देने की आज्ञा होगी तथा भाईचारे के १०० से अधिक आदमियों को खाना नहीं दिया जावेगा।

६—बारातियों की संख्या ५ से २५ तक ही सीमित रहेगी। उनका मान १ रुपये प्रति व्यक्ति से किया जा सकता है। २५ से अधिक व्यक्तियों को लड़की वाराती नहीं मानेंगे। इस अवसर पर बाजा-गाजा नाच गाना, मद्यपान (शराब पीना) पर पूर्णतया पाबन्दी लगा दी गई है। जहां तक हो सके विवाह दिन के समय ही सम्पन्न कराकर दिन में ही बारात को विदा कर दिया जावेगा। रात्रि कालीन विवाहों में अनावश्यक बिजली व प्रकाश व्यवस्था को समाप्त करने का फैसला किया गया है। बारात के परिवहन का खर्चा पूर्णतया लड़के वाला ही सहन करेगा। बारात को केवल ही एक भोजन देने का प्रावधान रखा गया है। उलंघनकर्त्ताओं पर १ हजार रुपये का जुर्माना करने का भी विधान किया गया है। विवाह के बाद बहू का स्वागत के नाम से एक नया रिवाज बना लिया है। ऐसे लालच की भर्त्सना की जाती है और उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

७—लड़की के विवाह में कन्यादान में सभी १ रुपया ही दे सकते हैं। कन्यादान में गऊदान भी दिया जा सकता है; परन्तु गाय की कीमत लगाकर रुपये की शक्ल में नहीं दिया जा सकता।

८—लड़की की दूसर या तीसर पर पूर्णतया प्रतिबन्ध है तथा लड़की केवल अपनी सास और दादस की ही तीयल ले जा सकती है। अगली पिछली की तीयल बन्द है।

९—बिना उचित कारण, सगाई तोड़ने तथा विवहोपरान्त लड़की या लड़के को छोड़ने के अनुचित व्यवहार करने वाले पक्ष और उसके परिवार पर ११०००) तक जुर्माना करने व उनको सामाजिक बहिष्कार की व्यवस्था की गई है। इस प्रकार किसी भी लड़के को पुनः अपनी लड़की देने वाले पर भी ११०००) तक का जुर्माना करने की तथा समाज से निष्कासित करने का फैसला किया गया है।

१०—मृत्यु काज प्रथा को बिल्कुल समाप्त कर देने का फैसला किया गया है, परन्तु मृतक की स्मृति में धार्मिक व सार्वजनिक संस्थाओं में दान दे सकते हैं।

११— सर्व जातीय सर्वखाप पंचायत का यह सम्मेलन अपने उन मुसलमान भाईयों मूले जाट मुस्लिम राजपूत और गुज्जर आदि जातियों से गहरी सहानुभूति प्रकट करता है, जो बादशाही युग में उन परिस्थितियों से विवश होकर मुसलमान हो गये थे और आज बदले हुए हालात में वह पुनः अपने पुराने कुनबों और भाई चारे मे सम्मिलित होना चाहते हैं। आर्यसमाज के शुद्धि विभाग ने ६०-७० गांव के ऐसे भाईयों को फिर अपने परिवार में शामिल कर लिया है। परन्तु उनके सामने सबसे बड़ी कठिनाई उनके लड़के लड़कियों के विवाह की है। अतः यह सम्मेलन अपील करता है कि उन शुद्ध हुए भाईयों से रिश्ते नाते का नाता जोड़ें और स्वामी श्रद्धानन्द के इस धार्मिक कार्यक्रम को प्रवान चढ़ाने में अपनी यथाशक्ति उचित योगदान दें।

वैदिक धर्म की दार्शनिक भूमिका

ले०—स्वर्गीय स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती
प्रेषक—ब्रह्मदत्त स्नातक

(गतांक से आगे

पंचवाही वहत्यग्रमेषां, पृष्ठयो युक्ता अनु सं वहन्ति ।
अयातमस्य दद्द्ये न यातं, परं नेदीयो अवरं दवीयः ॥
(अथर्व कां अ० ४ स० ८)

(एषाम्) इन गाड़ियों में से (अग्रम्) प्रधान इंजनरूप गाड़ी (पंचवाही वहति) पांच शक्तियों के समुदाय रूप गाड़ी को लिवा जा रहा है। (पृष्ठयो युक्ताः) पीछे चलने वाली गाड़ी जुड़ी हुई (अनु स वहन्ति) इसके पीछे पीछे भार लिए जा रही है। (अस्य) इसका न तो चलना दिखाई देता है और न चलना (परं नेदीयः अवरं दवीयः) इतना अवश्य है कि जो परे था वह समीप आ रहा है, और जो समीप था वह दूर हो रहा है।

यह है वह दूसरी समस्या जिसमें अपना भी और पहली समस्या का भी समाधान है। हमारा प्रधान अन्तःकरणरूप इंजन पांच ज्ञान इन्द्रियों से गाड़ी को लिये जा रहा है। कर्मेन्द्रियां और पांच प्राण रूप गाड़ियां इसके पीछे जुड़ी हुई पीछे पीछे चल रही हैं। इसका चलने और न चलने का कुछ भी पता नहीं चल रहा। इतना अवश्य है कि जो दूर था वह समीप आ रहा है और जो समीप था वह दूर जा रहा है। वेद में जिस आलिंगन की हुई गाड़ी का वर्णन किया गया है। पंचवाही शब्द के सामने आते ही उस गाड़ी का पता लगाने में कोई कठिनाई नहीं होती। इसका वर्णन ऊपर के भावार्थ में हम कर ही आये हैं। अब शेष रह जाती हैं दो बातें। एक तो यह कि उसके चलने और न चलने का कुछ पता ही नहीं चलता और दूसरी यह कि दूर वाले समीप आ रहे हैं। चलती हुई गाड़ी के चलने और न चलने का पता न लगाने में केवल यह ही कारण हो सकता है कि गाड़ी हमारी आंखों से ओझल हो। हमारी यह आलंकारिक गाड़ी आध्यात्मिक गाड़ी है और आध्यात्मिक गाड़ी की चाल का पता लगाने में आंखें तो समर्थ हैं नहीं। आंखों का काम भौतिक पदार्थों का देखना है आध्यात्मिक पदार्थों का देखना उसका काम नहीं है।

ज्ञान आदि आध्यात्मिक पदार्थ उनकी पहुँच से बाहर हैं। हमारी आन्तरिक आंखें अन्तःकरण की आंखें हैं। परन्तु मन्त्र के भाव से प्रगट है कि वह भी इस यात और अयात को देखने में असमर्थ हैं, क्योंकि यदि देख सकता होता तो मन्त्र में 'न दृश्यते' (नहीं दिखाई देता) ऐसा न कहा जाता। इस समस्या को सुलझाने वाला वाक्य मन्त्र में आगे पढ़ा गया है—

'परं नेदीयो अवरं दवीयः।'

'दूरवाले समीप आ रहे हैं और समीपवाले दूर जा रहे हैं।'

इस वाक्य का यदि हम सीधा-सा अर्थ यह ले लें कि दूर के पदार्थ समीप आ रहे हैं और समीप वाले दूर जा रहे हैं तो गाड़ी की चाल का पता लगाना हमारे लिए कठिन न रह जावेगा क्योंकि गाड़ी यदि चलती होती तो जो पदार्थ आगे दूर थे वे समीप ही आ जाते हैं और जो हमारे पास थे वे पीछे दूर रह ही जाते हैं। फिर तो, 'इसके आने जाने का पता नहीं लग रहा।' इस वाक्य का मूल्य ही न होगा। इस लिए 'परं नेदीयो अवरं दवीयः।' दूर के समीप आ रहे हैं और समीप के दूर जा रहे हैं। इस वाक्य का भाव कुछ और ही है। वह ही इस मन्त्र की और पहले मन्त्र की भी समस्या का समाधान है। प्रकृति का जीव से भोग्य और भोक्ता का सम्बन्ध है, परन्तु गौण सम्बन्ध है। जीव का चैतन्य गुण है और प्रकृति का जड़ है। इसलिए प्रकृति से जीव का गुण की समता वाला सम्बन्ध नहीं है। जिस प्रकार प्रकृति से उस का सम्बन्ध है उसी प्रकार जीव का ब्रह्म से भी सम्बन्ध है, परन्तु ब्रह्म से उसका गुण के द्वारा सम्बन्ध है। ब्रह्म भी चेतन है और जीव भी। ब्रह्म ज्ञान का भंडार है और जीव अल्प ज्ञान वाला है। ज्ञान की शक्ति उसे ब्रह्म से ही मिल सकती है, प्रकृति से नहीं। जीव की वास्तविक गति है उसका ब्रह्म की ओर जाना। उसके शरीर, इन्द्रिय, प्राण, मन आदि उसे ब्रह्म की ओर ले जा रहे हैं तब तो समझो कि उसकी गाड़ी चल रही है, परन्तु यहां तो स्थिति ही और है। हम अपने एकमात्र साधन अन्तःकरण के ऊपर प्रकृति के अनेक चित्र खींचते चले जा रहे हैं। इसलिए पाठ यह ही पढ़ रहे हैं। 'परं नेदीयः' जो प्रकृति गुण से हमसे सर्वथा दूर है वह ही संस्कारों के रूप में हमारे अन्तःकरण में इकट्ठी होती जा रही है और इस प्रकृति का पर्दा पड़ जाने से हमारी समीपी ब्रह्म सत्ता हमारे अन्तःकरण की आंखों से ओझल होती जा रही है। यही कारण है कि इस प्रकृति अथवा अज्ञान के पर्दे के कारण हमें अपने ज्ञान की गाड़ी की चाल का पता नहीं लग रहा। जिस प्रकार हम अंधेरे में कुछ नहीं देख सकते। इसलिए अपनी गति को देखने के लिए हमें प्रकृति के प्रभाव को दूर कर ब्रह्म के प्रभाव की छाप अन्तःकरण पर लगानी होगी।

पहले मन्त्र की समस्या का भी इस मन्त्र का यह वाक्य समाधान है। ब्रह्म का हमारे साथ सम्बन्ध है। उसके साथ जीव का ज्ञानी होने के कारण संयोग है, परन्तु अब जीव ने अपने चारों ओर अन्तःकरण में प्रकृति के संस्कारों का जाल बिछा दिया है, इसलिए इस अज्ञान के अन्धकार के कारण वह अपने पास होते हुए भी ब्रह्म के स्वरूप को नहीं देख पाता उसे देखने के लिए हमें अविद्या के संस्कारों से पिण्ड छुड़ाकर ब्रह्म की ओर जाना होगा।

सम्पादकीय

यह सिलसिला यों ही चला-चले

जैसे-जैसे गर्मी का मौसम चरम-यौवन को प्राप्त होता जा रहा है वैसे-वैसे हरयाणा के आर्य सामाजिक क्षेत्र की गतिविधियां भी अंगड़ाई लेने लगी हैं। ज्येष्ठ मास की चिलचिलाती धूप बढे रक्त-विकारों का शमन करने में जहां महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है वहां इसने इस बार आर्यसमाज के अधिकारियों, प्रचारकों और कार्यकर्त्ताओं में आ रही शिथिलता को भी दूर करने की सामर्थ्य जुटाई है। यह वर्ष ऋषि निर्वाण शताब्दी वर्ष है। अजमेर मे आर्यसमाज का समूचा सगठन परस्पर का मनो-मालिन्य दूर कर अपने आदर्श एवं प्रेरणा स्रोत-निर्भय, न्यायकर्त्ता सर्वप्राणिहितकर, दीर्घदर्शी, समदृष्टि, पक्षपातरहित, प्रभावशाली, प्रतिभावान्, महासमीक्षक, महासंशोधक, तेजस्वी, ब्रह्मवर्चसी, ब्रह्मवित्, ब्रह्मपरायण, बालब्रह्मचारी, ऊर्ध्वरेता, सुवक्ता, वाग्मी, जितेन्द्रिय, योगीराज, आचार्यों के आचार्य, गुरुओं के गुरु, पूज्यों के भी पूज्य, जगद्वन्द्य, प्रहसितवदन, प्रांशुबाहु, समुन्नतकाय, सदा आनन्द, निर्मल, निर्विकार, समुद्रवत् गम्भीर, पृथिवीवत् क्षमाशील, अग्निवत् देदीप्यमान, पर्वतवत् कर्त्तव्यस्थिर, सदागतिवायुवत्, निरालस, रामवत् लोकहितकर, परशुरामवत् अन्याय सहारी, बृहस्पतिवत्, वेदवक्ता, वसिष्ठवत् वेदप्रचारक, असत्य के परमद्वेषी, सत्य के परमपक्षपाती, आर्य समाज के संस्थापक, आर्यावर्त के मान्यपिता महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दि महाराज की उत्तराधिकारिणी श्रीमती परोपकारिणी सभा एवं आर्यों की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त एवं समन्वित नेतृत्व में मना रहा है। अतः रक्त का गर्माना सामयिक एवं स्वाभाविक है।

भोले-भाले हरयाणवी चाहे वे ग्रामीण हों या शहरी, लगता है, अपने आचार्य के ऋण से उऋण होने के लिए सर्वाधिक सक्रिय हैं। मई मास के उत्तरार्द्ध से ही जब से स्कूल ग्रीष्मावकाश के उपलक्ष्य में बन्द हुये हैं, यहां स्थान स्थान पर सम्पन्न हो रहे एक-एक सप्ताह आर्य कुमारों तथा आर्य युवकों के प्रशिक्षण शिविर इस तथ्य का मुंह-बोलता प्रमाण हैं। यों तो लगभग हर वर्ष इक्का-दुक्का नगरों में इनका आयोजन होता जा रहा है किन्तु इस बार सुदूर ग्रामीण आंचल तक इनके विस्तार का सुन्दर क्रम जो कहानी कह रहा है निःसन्देह वह रोमांचकारी तो है ही साथ-साथ प्रेरणास्पद भी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार गत २३ मई से २९ मई तक आर्य वीर दल रोहतक के वार्षिक उत्सव के अवसर पर दल के स्थानीय अधिकारियों ने विगत वर्षों की भांति दयानन्द मठ रोहतक में स्कूल कालेज के छात्रों को प्राचीन संस्कृति से परिचित कराने तथा राष्ट्र के समक्ष उत्पन्न सकटो से दो दो हाथ करने हेतु युवकों को शक्ति सम्पन्न करने का लक्ष्य लेकर सप्ताह भर के प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। ९५-९६ आर्य कुमारों तथा आर्य युवकों ने इसमें प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्हीं दिनों पानीपत में भी इसी प्रकार के प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जो सफल रहा। ३० मई से ५ जून तक पलवल में शिविर चला। सूत्रों के अनुसार सफीदों के निकट किसी गांव में भी शिविर का आयोजन हुआ जो अत्यन्त सफल रहा। १३ जून से १९ जून तक बहादुरगढ, रोहतक और बादशाहपुर गुड़गांव में इसी प्रकार के आयोजन हुये जिनमें स्वामी धर्ममुनि जी एवं स्वामी सिंहमुनि जी महाराज तथा ब्र० महेन्द्रसिंह जी वाचस्पति ने जाति के भविष्य को इसका भार वहन करने की क्षमता एवं दक्षता प्रदान करने का प्रशंसनीय कार्य किया।

जौलाई मास के प्रथम सप्ताह पर्यन्त क्योंकि स्कूल-कालेजों में छुट्टियां हैं, अतः उस समय तक शिविरों की इस माला में नरवाना, कैथल, फरीदाबाद और गुड़गांव के शिविर-पुष्प भी गूंथे जा चुके होंगे।

इसी क्रम में ५ जून से १२ जून तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र की ओर से की गई कुरुक्षेत्र की प्रचार यात्रा का अपना ही महत्त्व रहा। ५ जून को अपराह्न ३ बजे पुण्डरी की अनाज मण्डी से स्वामी रुद्रवेश जो के संरक्षण, आचार्य देवव्रत जी के नेतृत्व एवं धर्मदेव विद्यार्थी के संयोजन में इस प्रचार अभियान दल को गुरुकुल के प्रधान माग्य चौ० सत्यदेव सिंह रिटायर्ड आई० पी० एस० ने विदा दी जो फतेहपुर, टयोंठा, रसीना साकरा, आहु, कौल, वेरडू, फरल, चुहड़माजरा, डाण्ड, जडोला, जाजनपुर, बटेड़ो, पेहवा, चिनारहेड़ी, इस्माइलाबाद ठौल, तगोर, शाहबाद, बबैन, लाडवा तथा मथाना के ग्रामीणों को सामाजिक तथा धार्मिक कुरीतियों से विमुख करता हुआ १२ जून सायंकाल कुरुक्षेत्र पहुंचा। मुसलमान भाई प्रतिवर्ष तबलीग निकालते हैं जिसके अनुसार प्रचारकों की टोली एक गांव से दूसरे गांव पहुंचती है। जिस गांव में यह टोली पहुँचती है वहां प्रचार होता है चलते समय वहां के लोग अगले गांव तक उसका साथ देते हैं। उनके यहां इसका बड़ा महत्त्व है जिसे हरयाणा में मेवात क्षेत्र के लोग जानते हैं। मेवात क्षेत्र में तो आर्यसमाज के प्रचारक एवं कार्यकर्त्ता यद्यपि इस प्रकार की प्रचार यात्राएं न्यूनाधिक प्रतिवर्ष करते रहते हैं किन्तु मेवात से बाहर ग्रामीण क्षेत्र में प्रचार का यह तरीका सम्भवतया कुरुक्षेत्र जिले में ही प्रथम बार अपनाया गया जो नितान्त सफल रहा है। ग्रामीणों ने इसके प्रति खूब उत्साह दिखाया। जिस गाव में भी यह दल पहुँचता वहां के लोग बड़ी गर्म-जोशी से इसका स्वागत करते। वास्तव में किसी के स्वागत में घी-दूध की नदियां गांवों में बहती हुई इन नेत्रों को प्रथम बार इस अवसर पर साक्षात् देखने को मिलीं। ग्रामीण क्षेत्र में प्रचार की कितनी आवश्यकता है तथा वहां के लोग इसमें कितना सहयोग करने को तैयार हैं इसकी झलक के लिए अद्भुत किन्तु सत्य घटना उपस्थित है—जाजनपुर गांव में प्रचारकों की कमी के कारण प्रचार में आई ढील का जब मर्मस्पर्शी उल्लेख स्वामी रुद्रवेश ने किया तो वहां के सरपंच चौ० दीदारसिंह जो सर्व प्रकारेण सम्पन्न हैं ने सोल्लास अपना दसवीं पास बेटा प्रचारक बनाकर प्रचार को गति देने हेतु स्वामी जी महाराज की भेंट चढा दिया।

यों तो वेद प्रचार की नगर-ग्राम में सर्वत्र आवश्यकता है किन्तु नगरों में सुविधा सम्पन्न होने के कारण प्रचारक वहां पहुंचते रहते हैं पर सुदूर ग्रामीण क्षेत्र प्रचार से लगभग अछूते ही रह जाते हैं। इस तथ्य को आर्यसमाज का बड़ा छोटा कार्यकर्त्ता समझे तथा पिछले एक मास से चल रहे सुन्दर सिलसिले को हम कभी टूटने न दें, इस प्रकार का सद्प्रयास सदैव किया जाता रहे, तो निश्चित ही उत्पन्न होती जा रही रिक्तता को समय रहते भरा जा सकेगा। पुरानी पीढ़ी एक एक कर उठ रही है, नई पीढ़ी को दायित्व बोध कराना बहुत आवश्यक है। अतः प्रभु करें 'यह सिलसिला यों ही चला चले' क्योंकि ऋषि निर्वाण शताब्दि का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सन्देश भी यही है।

—रणवीर

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य वीर दल गुड़गांव शिक्षण शिविर

आर्य वीर दल गुड़गांव की ओर से युवकों को व्यायाम, प्राणायाम आसन, आत्मरक्षा हेतु लाठी आदि एवं उनके चरित्र निर्माण व उज्ज्वल भविष्य हेतु दिनांक २६-६-८३ से ३-७-८३ (दिन के १२ बजे तक) एक बौद्धिक शिक्षण शिविर का आयोजन डी० ए० वी० हाई स्कूल गुड़गांव में किया जा रहा है। आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं शिक्षकगण युवकों को ब्रह्मचर्य तथा क्षात्रधर्म का प्रशिक्षण देंगे।

यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चे आपकी भावनाओं के प्रतीक हों, सच्चरित्र और परोपकारी बनें, आस्तिक और देशभक्त बनें, स्वस्थ और पुरुषार्थी बनें, निर्भय और वीर बनें, बच्चों में दुर्व्यसन (मांस, शराब, धूम्रपान आदि) न आने पायें तो आप कृपया अपने क्षेत्र के युवकों/बच्चों को शिविर में अवश्य प्रवेश दिलवायें।

शिविरार्थियों हेतु निम्नलिखित शर्तें आवश्यक हैं—

१—प्रवेशार्थी की आयु १४ वर्ष से कम न हो अर्थात् आठवीं पास हो

२—प्रत्येक युवक खाकी निकर, सफेद कमीज, दो सैंडोकट बनियान काला कच्छा, ब्राउन फ्लीट, सफेद जुराब, कान तक के नाप की लाठी, कापी पेन आदि साथ लेकर आवें।

३—भोजन के लिए थाली, कटोरी, गिलास, लोटा, चमच आदि एवं ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लेकर आवें।

४—प्रत्येक प्रवेशार्थी को १० रुपये प्रवेश शुल्क देना होगा।

५—प्रातः रात्रि भोजन एवं दुग्ध आदि का प्रबन्ध शिविर की ओर से निःशुल्क होगा।

६—प्रवेशार्थी को पूरा समय शिविर में रहना अनिवार्य होगा। अनुशासन का पालन आवश्यक है।

७—प्रवेशार्थी शनिवार दिनांक २५-६-८३ रात्रि ८ बजे तक अवश्य डी० ए० वी० हाई स्कूल गुड़गांव में पहुंचने का कष्ट करें।

मन्त्री सोमदत्त

शुद्धिकरण एवं विवाह संस्कार

आर्यसमाज खंडवा जिला पूर्व निमाड़ (म० प्र०) में ५-६-८३ को श्री रामचन्द्र जी आर्य की अध्यक्षता में, श्री मनोहर व मोतीलाल मंडलोई ईसाई ७४ पुष्पनगर इन्दौर एवं राजकुमारी व जोसफ ईसाई ७४ पुष्पनगर इन्दौर दोनों का शुद्धिकरण संस्कार कर दोनों का पाणिग्रहण संस्कार वैदिक पद्धति से समाज के पुरोहित पं० सुखराम आर्य सि० शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् श्री लक्ष्मीनारायण जी भार्गव उपप्रधान एवं श्री रामचन्द्र जी आर्य ने वैदिक विवाह की विशेषता पर बोलते हुए वर-वधु को आशीर्वाद दिया एवं उन्हें अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया।

सिन्धी युगल का आदर्श विवाह सम्पन्न

स्थानीय आर्यसमाज अजमेर में रविवार दिनांक ५-६-८३ को श्री प्रो० बुद्धिप्रकाश जी आर्य के पौरोहित्य में एक सिन्धी युगल का समस्त प्रकार की सामाजिक रूढियों का परित्याग कर सादगीपूर्ण आदर्श विवाह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज अजमेर के मन्त्री श्री शिवचन्द्रसिंह ने दहेज उन्मूलन तथा सामाजिक रूढियों का त्याग हेतु युगल के सत्साहस के लिए बधाई दी।

प्रो० रामसिंह के निधन पर शोक

स्थानीय आर्यसमाज अजमेर के साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् दिल्ली के सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता तथा हिन्दू महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो० रामसिंह के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए एक मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उनके निधन से आर्यजगत् को अपूर्णीय क्षति हुई है।

हरयाणा में आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज नारनौल शहर

प्रधान—वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य, उपप्रधान—डा० मूलचन्द आर्य; मन्त्री—मास्टर बाबूराम, उपमन्त्री-मास्टर जीतराम, कोषाध्यक्ष—श्री अयोध्याप्रसाद, प्रचारमन्त्री—महाशय जगमाल जी सलारपुर

वैदिक पारिवारि सत्संग सभा हिसार

प्रधान—श्रीमती जनक बतरा, उपप्रधान-डा० आत्मस्वरूप असीजा श्री प्रलादराय ठेकेदार, महामन्त्री—अर्जुनदेव आर्य, मन्त्री-प्रीतमपाल राजपाल, उपमन्त्री—धर्मचन्द टुटेजा, प्रचारमन्त्री—श्रीमती लीलावती सिंगल, सहप्रचार मन्त्री—श्रीमती कृष्णा बन्सल; पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती सुदेश पक्की, संरक्षक—श्री हरदेव सरदाना, कोषाध्यक्ष—श्री पूर्णचन्द पक्की, सहकोषाध्यक्ष-श्री प्रेमकुमार गाबा

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई

प्रधान—श्री प्रकाशचन्द मूना, उपप्रधान—ओंकारनाथ आर्य, श्री सोहनलाल दुग्गल, महामन्त्री—डा० दीवान प्रेमचन्द, उपमन्त्री—श्री विश्वभूषण आर्य, लालचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष-कस्तूरीलाल मदान

आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ

प्रधान—श्री बाबूराम, उपप्रधान—पूर्णचन्द बजाज, मन्त्री—श्री सुरेशकुमार आर्य, उपमन्त्री—राजकिशोर गोयल, कोषाध्यक्ष—सुभाषचन्द गुप्ता, प्रबन्धक विद्यालय—डा० राजेन्द्रप्रसाद गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष-सुरेशचन्द मित्तल, लेखानिरीक्षक-हरीराम शर्मा

आर्यसमाज कोसली जिला रोहतक

प्रधान- श्री ज्योतीसिंह आर्य, उपप्रधान-कप्तान सुरजभान; मन्त्री-अशोककुमार आर्य, उपमन्त्री—मेजर लालाराम, कोषाध्यक्ष-धालाराम, निरिक्षक-धर्मपाल, प्रतिनिधि-सरपंच भूपसिंह आर्य

आर्यसमाज रेवाड़ी

प्रधान—श्री सुखराम आर्य, उपप्रधान—वैद्य नाथूराम जी, श्री कुं० जगदीशसिंह चौहान, मन्त्री—पारब्रह्म, उपमन्त्री—मास्टर श्रीराम सैनी प्रचारमन्त्री—लीलाधर, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश ग्रेवर,पुस्तकाध्यक्ष राव बसवन्तसिंह

पलवल शहर में आर्यवीर दल की शाखा आरम्भ

पलवल शहर में आर्य वीर दल की शाखा लगनी आरम्भ हो गई है। यह शाखा नित्य दयानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय में लग रही है। महाशय सत्यपाल आर्य मुख्य शिक्षक आर्य वीर दल हरयाणा की प्रेरणा से शाखा का कार्य सुचारू रूप से चला रहे हैं। शिक्षण कार्य श्री अरूण आर्य कर रहे हैं। संजीव मंजुला

मन्त्री आर्य वीर दल पलवल शहर

स्वामी अग्निवेश जी से निराशा

प्रो० उतमचन्द शरर संचालक आर्यवीर दल हरयाणा

स्वामी अग्निवेश जी तथा स्वामी इन्द्रवेश जी से मेरा परिचय कई वर्षों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उच्चपदों पर आसीन होने से पूर्व इस क्षेत्र में आगमन के लिए उनकी तैयारी के समय से मैं उन्हें जानता हूं। एक समय वे आर्यसमाज के क्षेत्र में पूरी सफलता प्राप्त करके इसके नेता भी बन गये, परन्तु परिस्थिति के बदलने के साथ बात यहां तक आ गई कि समाज के मंच से भी उन्हें बहिष्कृत कर दिया गया। मेरे एक अनन्य मित्र प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी तो उनके घोर विरोधी बन गये। इस विरोध में जिज्ञासु जी का आर्यसमाज तथा दयानन्द प्रेम प्रमुख कारण था। मेरे मन में संन्यासी द्वय के प्रति उदासीनता तो रही परन्तु विरोध का रूप नहीं था। मैं समझता था कि वे दोनों आर्यसमाज को घड़े बन्दी का शिकार हो गये हैं और यह भी कि यदि इन स्वामी द्वय को अपना लिया जाता तो आर्यसमाज में उनके प्रभाव से समाज का एक राजनैतिक विंग तैयार हो सकता था।

आर्यसमाज सिकन्दराबाद के उत्सव पर मुझे पता लगा कि स्वामी अग्निवेश भी पधार रहे हैं। मन में आश्चर्य तो हुआ कि एक समाज सार्वदेशिक सभा के आदेश का उल्लंघन कैसे कर पा रहा है परन्तु समाज के वर्तमान विगठन में इसे साधारण घटना समझ कर मौन रहा। स्वामी अग्निवेश के आने पर मैं उनसे पूरे स्नेह से मिला, अपने मन की इच्छा भी व्यक्त की कि आप समाज में राजनैतिक मार्ग बना सकते थे, भावावेश में यहां तक भी कह गया कि आप शायद समाज से दुःखी होंगे। यह सब केवल इसलिए था कि मैं इच्छा रखता हूं कि आज के राजनैतिक युग में कोई आर्यसमाज के लिए भी यह रास्ता बना डाले ताकि आर्यसमाजी इधर-उधर न भटके।

रात्रि को उनका भाषण हुआ, भाषण में उन्होंने बड़ी मजदूर किसान के दुःखों का बखान किया, यहां तक मेरे लिये कोई बात विशेष भी न थी और आपत्ति जनक भी! परन्तु इनके पश्चात् जो उन्होंने आर्यसमाज को कोसना प्रारम्भ किया, उसने मुझे विह्वल कर दिया। मैं सोचता रह गया कि क्या स्वामी जी को यह पता नहीं कि आर्यसमाज का उत्सव आर्यसमाज के प्रचार के लिए होता है समाज को बुरा भला कहने के लिए नहीं और यदि समाज की अकर्मण्यता से किसी को रोष भी है तो उसे जन साधारण में इस रूप में रखना किसी भी समाज के हितैषी को अभीष्ट नहीं हो सकता ?

उनका यह कहना कि आर्यसमाज किसी किसान आन्दोलन में पक्ष या विपक्ष में शामिल नहीं, बन्धु आ मजदूरों की मुक्ति में भी सहायक नहीं, अतः निर्वाण शताब्दी पर "दयानन्द की अन्त्येष्टि करके उसे गहरा दफना दिया जावे"। मैं नहीं जानता कि ऐसा कहते उनकी वाणी को लकवा क्यों न मार गया ? आर्यसमाजी तथा अन्य ऋषि भक्तों ने इसे कैसे सहन किया ? काश कि सरिता के अन्दाज में यह वक्ता किसी अन्य धर्म प्रवर्तक को इन शब्दों में कहने का दुस्साहस कर पाते ?

दूसरे दिन का भाषण भी विचित्र था, जिसमें स्वामी जी ने आर्यों को अपने उत्सव न रखने का आदेश दिया और कारण बताया कि भाषणों से कुछ नहीं होता, जबकि भाषणों के महत्व को स्वीकार कर के वे स्वयं उत्सव में भाषण देने विमान से उड़कर पधारे थे और अपने मुख द्वारा दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाने की घोषणा कर रहे थे। आर्यों को उन्होंने मार्ग दर्शाया कि उत्सव में व्याख्यान के स्थान पर झाड़ू और टोकरियां सबके हाथों में देकर किसी गन्दे नाले अथवा पाखाना की सफाई की जानी चाहिये। गौरव के साथ वे बोले कि अब मैं यह काम प्रसन्नता से कर सकता हूं। उन्होंने उत्सव के स्थान पर मरे हुए जानवरों की खाल उतारने को भी श्रेष्ठ बताया, आर्यसमाज को यह काम न करने पर बुरी तरह से कोसा भी, इस प्रकार आर्यों को पूरी तरह से निराश करने में कसर न रखी।

सोचता हूं कि मैं स्वामी जी से क्या आशाएं रखता था, स्वामी जी कहां से कहां चले गये और आज की गुटबन्दी में समाजें फिर भी उनके लिए मंच देने में संकोच नहीं करती।

मैंने समाज के अधिकारियों को भी उनके भाषणों से हताश पाया, वे भाषण देकर हवाई जहाज से दिल्ली गये, परन्तु आर्यों के लिए यह प्रश्न छोड़ गये कि क्या उन लोगों को सहस्रों रुपये लगाकर बुलाना समाज हित में है जो समाज के मंच पर खड़े होकर आर्यसमाज तथा दयानन्द का अपमान करें। हां, आर्यों को बहकाने के लिए एक-आध बार दयानन्द के नाम को अमोल कर दिया करें, आर्यो! नेत्र खोलो, और गुटबन्दी से ऊपर उठकर अपने और पराये को पहचान करो।

हरयाणा रक्षा वाहिनी का एक गीत

जागो हरयाणा वालो

हमारा लुट रहा हरयाणा जागो हरयाणा वालो
हिन्दी भाषी हल्का—अबोहर फाजिल्का
अकाली चाहें चण्डीगढ़ ले जाणा—१जागो हरयाणा वालो
साढ़े अस्सी करोड़ का पानी
मुफ्त पिवे पाकिस्तानी
रावी व्यास से था यहां आणा—२ जागो हरयाणा वालो
अकाली मांग रहे खालिस्तान
तुम जागो ऋषियों की सन्तान
धारकर केसरोया बाणा—३ जागो हरयाणा वालो
हरयाणा के वीर उठो
लेकर शमशीर उठो
लाठी जेलो ठाणा—४ जागो हरयाणा वालो
प्रोफेसर शेरसिंह ललकारे
जागो हरयाणा हित बारे
स्वामी ओमानन्द का फरमाणा—५ जागो हरयाणा वालो
अधिकारों की रक्षा करो
राष्ट्र रक्षा हित मरो
भरो अब जेल खाना —६ जागो हरयाणा वालो
हरा-भरा हरयाणा हो
दूध दही का खाणा हो
गावे सूरतसिंह जोशिला गाणा—७ जागो हरयाणा वालो

सभा का आगामी चुनाव ४ सितम्बर को करनाल में

दयानन्द मठ रोहतक में १९ जून को सम्पन्न हुई आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक में ४ सितम्बर १९८३ को करनाल में आगामी अधिवेशन कर सभा के लिए आगामी वर्ष हेतु नये अधिकारियों का चुनाव करने का निर्णय लिया गया है। आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल की ओर से सभा को वहां पर सभा का आगामी अधिवेशन आयोजित करने का निमन्त्रण मिला था जिसे अन्तरंग सभा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। सभा से सम्बद्ध समाजों के द्वारा चुनकर भेजे गये प्रतिनिधि महानुभाव नये अधिकारियों का निर्वाचन करते हैं। समाजें जो प्रतिनिधि सभा को साधारण सभा में भेजती हैं उनका कार्यकाल ३ वर्ष रहता है जो समाप्त हो चुका है। कार्यालय से कई परिपत्रों द्वारा सभी समाजों के अधिकारियों से नये प्रतिनिधि भेजने का अनुरोध किया जा चुका है। सर्वहितकारी द्वारा भी बार-बार अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया जाता रहा है। प्रतिनिधि फार्म भी सभी समाजों को भेजे जा चुके हैं।

अब क्योंकि आगामी निर्वाचन का स्थान एवं समय निश्चित हो चुका है, अतः इस प्रक्रिया को बहुत तेज किये जाने की आवश्यकता है। जिन समाजों ने अपने प्रतिनिधि अभी तक सभा को नहीं भेजे हैं उनके अधिकारी कृपया इसे प्राथमिकता दें तथा शीघ्रातिशीघ्र अपने प्रतिनिधि फार्म सभा को भेजें ताकि यथासमय नई साधारण सभा का गठन हो सके। (शेष ६ पर)

वर्तमान समय में खण्डन की परमावश्यकता

पं० जगदीशचन्द्र 'वसु' विद्यावाचस्पति सिद्धान्तालंकार

बहुत समय से आर्यसमाज के मंच से यह सुनाया जाता रहा है कि वर्तमान समय में खण्डन की आवश्यकता नहीं है। यह प्रायः उन समाजों में कहा सुना जाता है जिन समाजों में तथा आर्यसमाज की संस्थाओं में राजनैतिक स्वार्थी लोग घुसे हुए हैं। विशेषकर भारतीय जनता पार्टी व आर० एस० एस० के लोग हैं। जो योजनाबद्ध आर्य समाज और उनकी संस्थाओं में अपने अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए नकली न फसली आर्य बनकर अधिकारी और सदस्य बने हुए हैं। उन्हें आर्य समाज, आर्य संस्कृति व परम्पराओं की विश्व कल्याणकारी विचार-धारा गले नहीं उतरती। उनके दिमाग व मस्तिष्क में आर्यत्व की जगह हिंदुत्व वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द की जगह विवेकानन्द तथा लोकप्रिय विश्वप्रसिद्ध वैदिक अभिवादन नमस्ते की जगह नमस्कारम् घर किया हुआ है। मुझे आर्यसमाज के क्षेत्र में लगभग २०-२२ वर्ष वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त है। सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली के प्रधान शिक्षक के रूप में भी ८-९ वर्ष पंजाब, हरयाणा तथा दक्षिण भारत में नवयुवकों का व्यापक सघठन कार्य करने में व्यतीत किया। मेरे अनुभव में ९० % आर्यसमाजों व आर्यसमाज की अन्य संस्थाओं में आर० एस० एस० के आर्यत्व विरोधी लोग छाये हुए अधिकारी व सदस्य हैं। उन्हीं के मुख से यह सुनना कि अब वर्तमान समय में खण्डन करने की आवश्यकता नहीं है। मुझे बड़ा दुःख व आन्तरिक कष्ट होता है तथा यह कहना कि खण्डन की बजाय मण्डन ही करना, खण्डन नहीं। पूर्ति पूजा लक्कड़ पत्थर पूजा ध्वज पूजा (जो आर. एस. एस. के लोग अपनी दैनिक शाखा में प्रतिदिन करते हैं) खण्डन से लोग नाराज हो जाएगे आदि।

इस प्रकार से बहुत से भ्रान्त व्यक्ति जब यह कहते सुनाई देते हैं—तब हमें उनकी भ्रमित बुद्धि पर तरस आता है कि सनातन वैदिक आर्य परम्पराओं से अनभिज्ञ व्यक्तियों को यह ज्ञात नहीं कि खंडन क्या होता है, आओ किंचित इस पर विचार करें।

खण्डन का सीधा भाव है कि किसी को उसकी भूल बताना। अगर किसी को बम्बई जाना हो और वह अमृतसर की सड़क पर जा रहा हो, उससे कोई पूछे कि भाई कहां जा रहे हो? उत्तर मिले बम्बई तब वह व्यक्ति उसे कहे कि तुम्हारा रास्ता गलत है। यह सड़क तो बम्बई नहीं अमृतसर ले जायेगी तो क्या यह अनुचित होगा? वस्तुतः गलत रास्ते पर जाने वालों को सीधे रास्ते पर चलाने की बात बताना उन्हें उनकी गलतियों से परिचित करना ही खण्डन कहाता है।

खण्डन कौन नहीं करता? यदि इस विषय को और अधिक समझना हो तो अपने इस सनातन आर्यावर्त देश के पुरातन इतिहास को आद्योपान्त पढ़ जाइये तथा महापुरुषों के जीवन चरित्रों को पढ़िये। आपको पता चल जाएगा कि राम, कृष्ण, शंकर, कबीर, दादू, नानकदेव महावीर, बुद्ध, आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द आदि महापुरुषों ने कितने कठोर शब्दों में अज्ञान अन्धविश्वास, मूर्ति-पूजा, गुरुडम आदि असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन किया है। यदि मैं उपरोक्त महापुरुषों के खण्डनात्मक विषय को आपके सम्मुख प्रस्तुत करूँ तो एक बृहद् ग्रन्थ तैयार किया जा सकता है। मैंने अपने एक साथी (सहपाठी) को खडन कौन नहीं करता? नामक विषय पर शोध ग्रन्थ (पी० एच० डी०) लिखने का सुझाव दिया था, परन्तु दुःख है कि उन्होंने मेरी इस उचित बात को स्वीकार नहीं किया।

आर्यसमाज आन्दोलन के प्रवर्तक, १९ वीं शताब्दी के महान् क्रान्तिकारी, महामानवता के अमर पुजारी, जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज अपने क्रान्तिकारी अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ११ वें समुल्लास में लिखते हैं कि—जब सच्चा उपदेश न रहा तब आर्यावर्त देश में अविद्या फैलकर परस्पर लड़ने झगड़ने लगे क्योंकि 'उपदेश्योपदेष्ट्रत्वात् तत्सिद्धिः इतरथान्ध परम्परा' सांख्य सूत्र। अर्थात् जब उत्तम उत्तम उपदेशक होते हैं तब अच्छे प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं और जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते तब अन्ध परम्परा चलती है। फिर भी जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं, तभी अन्ध परम्परा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है। विश्व शान्ति के आधार आर्यसमाज के दस नियमों में महर्षि ने दो नियम यह भी लिखे हैं कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

यदि अविद्या, अन्धविश्वास, गुरुडम, ढोंग, पाखण्ड जड़-पूजा ध्वज-पूजा, कब्र पूजा तथा प्रतिदिन नये नये भगवान् पैदा होना आदि का खण्डन न हो तो सर्वत्र अज्ञान फैल जाये। धर्म, सत्य, मानवता का अस्तित्व ही मिट जाये। धरती पर जीवन व आनन्द तभी तक शेष रह सकते हैं जब तक खडन विद्यमान है।

इसी पृष्ठ भूमि में देखें तो ज्ञात होगा कि खण्डन न होने के अभाव मे (जैसाकि उपरोक्त कहा जा चुका है) ही आज ढोंग, पाखंड, गुरुडम, अन्धविश्वास, कब्र पूजा, ध्वज पूजा सर्वत्र सिर उठा रहे हैं? नाना रूपों में मनुष्य को पशु बनाने वाले साम्प्रदायिक मजहब आकर्षक आवरणों में अपना अपना जाल फैलाने में दिन रात एक कर रहे हैं। धर्म के नाम पर अधर्म, एकेश्वर के स्थान पर अनेकेश्वर, अज्ञान आदि उपदेशों द्वारा ईर्ष्या, द्वेष-घृणा आदि का प्रचार प्रसार अभियान जारी है। हमारी सनातन आर्य संस्कृति सभ्यता व परम्पराओं का जड़ से मिटाने को ईसाई व मुसलमान हमारी मूल संस्कृति और परम्पराओं को मिटाकर देश को खंड-खंड करने में लगे हुए हैं।

आर्यो !

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने आज से १०८ वर्ष पूर्व ईश्वरीय ज्ञान वेद के आधार पर खंडन के अस्त्र से सर्वनाश असुर का वध किया था। आज फिर यही अस्त्र और भी सशक्त हाथों में सभालने की आवश्यकता हम अनुभव करते हैं कि प्रत्येक दयानन्द का अनुयायी खण्डन-खड्ग सम्भाले, प्रत्येक आर्यसमाज की वेदी से शास्त्रार्थों का आयोजन किया जाये। क्या आर्यसमाज के इतिहास को नहीं पढ़ते? पढ़िये? आपको पता लगेगा कि यहां बड़े बड़े शास्त्रार्थ होते थे, शास्त्रार्थों के द्वारा ही सत्यासत्य का निर्णय किया जाता था। जब से शास्त्रार्थों की एवं खण्डन-मण्डन प्रक्रिया बन्द हो गई तब से आर्य समाज का प्रचार प्रसार का कार्य ठप्प पड़ गया, ऐसे स्वार्थी लोग आर्य समाज में घुस गये जिनको शास्त्रार्थों की वह उत्तम परम्परा अच्छी नहीं लगती। ऐसे राजनैतिक स्वार्थी पदलोलुप लोगों से आर्यसमाज को बचाना चाहिये। आज हमारे नामधारी नेताओं में समझौतावाद की लहर दौड़ रही है—अज्ञान, गुरुडम, ढोंग, पाखण्डों आदि से समझौता करना महाविनाश को निमन्त्रण देना है। मनुष्य को मनुष्य बनकर यदि इस धरती पर रहना है तो उसे अज्ञान के दुर्ग भस्मसात करने ही होंगे। पाप और अधर्म को खण्डन रूपी अस्त्र से समूल नष्ट करना होगा। खंडन ही देश, जाति, धर्म, संस्कृति व परम्पराओं की रक्षा कर सकता है। यह तथ्य ऋषिवर दयानन्द के अनुयायियों को भली-भाँति हृदयंगम कर लेना चाहिये, अन्यथा महाविनाश होगा। अलमितिविस्तरेण।

(पृष्ठ ५ का शेष)

एक विशेष बात जिसपर प्रतिनिधि चुनतेसमय ध्यान रखाजाना अनिवार्य है, वह यह है कि वही प्रतिनिधि चुनकर सभा को भेजे जाएं जिन्होंने अपनी समाज को अपनी आय का दशांश ईमानदारी से दिया हो। इस बात का ध्यान रखे बिना ही यदि प्रतिनिधि भेजे गये तो उन्हें किसी भी अवस्था में स्वीकार नहीं किया जावेगा। यही नियम आर्यसमाजों के अधिकारियों पर लागू होगा। इसे अत्यावयक समझें।

भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

हमारी मूल आवश्यकता चरित्र निर्माण

(रामलाल गुप्त जालन्धर शहर)

(गतांक से आगे)

चरित्र के विकास का भार समाज और देश के अग्रणी लोगों पर अवलम्बित है। आज हमारे समाज और देश के जो कर्णधार कहलाते हैं, वे ही चरित्र निर्माण का वातावरण बनने नहीं देते। देश के नेता परिवार के अभिभावक और विद्यालयों के अध्यापक तथा प्राध्यापक यदि देश के भावी नागरिकों के चरित्र पर ध्यान रखते तो देश में फैली अनैतिकता दिन प्रतिदिन बढ़ती नजर न आती। जननायक, अभिभावक और अध्यापक स्वयं अपने चरित्र के सुधार और परिष्कार का प्रयास करते, तो समाज का नैतिक स्तर पतित न होता। माता पिता के आचार-विचारों का अनुकरण सन्तान करती है। आचार्य के गुण दोषों का अनुकरण शिष्य करते हैं, एवं राज्य और शासन तन्त्र का अनुकरण प्रजा करती है। आज हमारे राष्ट्रीय चरित्र का जो शोषण ह्रास हो रहा है, उसका प्रमुख कारण है—भ्रष्ट शासन तंत्र। जब तक जन-नायक, अभिभावक, अध्यापक, प्राध्यापक, समाज सुधारक, देश सेवक और प्रशासक चरित्र विकास के लिए कटिबद्ध नहीं होंगे, तब तक जन-साधारण का नैतिक अधःपतन नहीं रुक सकता।

आज चुनाव के दंगल में सदाचारी का स्थान ही नहीं है। तिक-ड़मी लोगों के आगे शुद्धाचारी की दाल गलने नहीं पाती। सिनेमा, टैलीविजन, और रेडियो भी जनता के चरित्र को आज खोखला बनाए जा रहे हैं। अश्लील और गन्दे गीत व चित्र युवक युवतियों और बालक बालिकाओं के पवित्र हृदय तथा मस्तिष्क पर अनिष्टकारी प्रभाव की छाप छोड़ रहे हैं। नाना प्रकार की भावभंगिमाओं से भरे चित्र और मानव हृदय को मथने वाले इन्द्रियोत्तेजक गीत देश के आबाल-वृद्ध नर-नारियों की दुर्वासनाओं को झकझोर कर उद्दाम कर रहे हैं। जनता के रक्षक कहलाने वाले पत्र और पत्रिकाएं भी पतनोन्मुख जन-रुची को निरंतर अधःपतित करने से नहीं हिचकचाते। जनसाधारण समाचार आदि पढ़ने के लिए इन पत्रों को खरीदते हैं, तो साथ में उन्हें यह गन्दगी का ढेर भी लेना पड़ता है। आज मानव की दुर्घर्ष वासनाओं को भड़काने वाले मनोन्मादी साहित्य की रचना भी निरं-कुशता से हो रही है। संस्कृति प्रदर्शन भी कला के नाम पर लोगों के वासना-काण्ड को प्रज्वलित करने के लिए अहर्निश मिट्टी का तेल डालने में तत्पर है।

शिक्षा का उद्देश्य मानवता का निर्माण है। अर्थात् विद्यार्थी में अन्तर्हित शारीरिक, मानसिक और सामाजिक एवं आध्यात्मिक श्रेष्ठत्व को प्रकाश में लाना तथा उसके चरित्र का विकास करना। पर आज शिक्षा के केन्द्र ये विद्यालय विद्यार्थियों को एक नई शक्ति व प्रेरणा देने तथा उनके चरित्र का विकास करने में सर्वथा असफल हैं। विद्यालय आज सार्टीफिकेट बेचने की दुकानें मात्र रह गए हैं। परीक्षायें पास करने के लिए विद्यार्थी अनैतिक तथा भ्रष्ट साधनों का प्रयोग करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते। ऐसे वातावरण में चरित्र निर्माण का स्वप्न देखना दुराशा नहीं तो और क्या है।

कांचन एवं कामिनी चारित्र्य पतन के प्रधान कारण हैं। चरित्र के विकास के लिए जिस प्रकार काम पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है, उसी प्रकार लोभ का दमन भी अपेक्षित है, क्योंकि अनुचित उपायों द्वारा धन प्राप्त करने की चेष्टा वासना का ही परिचय देती है। इसी प्रकार दूषित साधनों का अवलम्बन करके कीर्ति, लोकप्रियता, प्रसिद्धि के अर्जन का प्रयास भी निन्दनीय है। क्रोध, मोह, ईर्ष्या द्वेष मद-मोह आदि भी मनुष्य के प्रबल शत्रु हैं। सांसारिक दुःखों से त्राण पाने की इच्छा रखने वाले सच्चरित्रता प्रेमियों को इनके पंजे में न जाना चाहिए चरित्र की रक्षा किसी भी मूल्य पर करनी परमावश्यक है।

यदि हम व्यक्ति के चरित्र का विकास करलें, तो समाज और राष्ट्र के चरित्र का निर्माण स्वयमेव हो जायेगा। उत्तम चरित्रवान् व्यक्ति ही राष्ट्र की सर्वोच्च सम्पदा है। यदि चरित्र का निर्माण न हुआ, तो राष्ट्र के सारे रचनात्मक कार्य व्यर्थ हैं। इसलिए आओ जहाँ हम देश के लिए अनेक भौतिक योजनायें बनाकर काम कर रहे हैं, वहाँ हमें राष्ट्र के चरित्र निर्माण की योजना बनाकर अपने-२ निजी चरित्र के विकास का भी प्रयास करना चाहिए।

भिण्डरा वाले की धमकी की निन्दा

वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा, हिसार आज के सत्संग में श्री गुरुगोविन्दसिंह जी के चित्र के साथ अपने स्वर्गीय पिता श्री जगत् नारायण का चित्र अपने समाचार पत्र 'पंजाब केसरी' में छापने पर जो श्री भिण्डरावाला ने श्री रमेश जी को जान से मार देने की धमकी दी है उसकी घोर निन्दा की है तथा साथ में यह मांग भी करती है कि श्री भिण्डरावाले भविष्य में इस प्रकार की असाम्प्रदायिक बातें न किया करें, जिससे हिन्दू सिक्ख एकता में किसी प्रकार की दरार न पड़े।

प्रवेश सूचना

अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय टंकारा (राजकोट सौराष्ट्र) गुजरात में प्रवेश के इच्छुक छात्र २५ जून तक अपने प्रार्थना पत्र भेज दें। विद्यालय की ओर से आवास, भोजन, वस्त्र और शिक्षा का निःशुल्क व्यवस्था है। चार वर्ष का पाठ्यक्रम हैं। ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के अतिरिक्त वेद, उपनिषद्, व्याकरण, संस्कृत और सामान्य अंग्रेजी का अध्ययन कराया जाता है। कोई सरकारी परीक्षा नहीं दिलवायी जाती प्रवेशार्थी का दसवीं उत्तीर्ण होना आवश्यक है। प्रवेश की स्वीकृति मिल जाने पर टंकारा पहुँचे। प्रार्थनापत्र इस पते पर भेजें—आचार्य, महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय टंकारा (राज-कोट) गुजरात। अथवा—श्री रामनाथ सहगल, मंत्री टंकारा ट्रस्ट, आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग दिल्ली-११०००१

रामनाथ सहगल

मुख्याध्यापक की आवश्यकता

आर्यसमाज बल्लबगढ जिला फरीदाबाद द्वारा संचालित बुद्धि प्रकाश वैदिक विद्या मन्दिर के लिए एक मुख्याध्यापक की शीघ्र आवश्य-कता है। योग्यता बी. एस सी. बी. एड. या बी. ए. बी. एड. तथा १० वर्ष तक शिक्षण का अनुभव हो। वेतन योग्यतानुसार होगा। अपना प्रार्थना पत्र, प्रमाण पत्रों सहित भेजें। आर्यसमाज के विचारों वाले को प्राथमिकता दी जावेगी।

राजेन्द्रप्रसाद गुप्ता प्रबन्धक

अन्तर्जातीय विवाह संस्कार

आर्यसमाज नारनौल के तत्वावधान में श्री किशनसिंह जी जाट आयु २४ वर्ष तथा श्रीमती सावित्री देवी फूल माली आयु १८ वर्ष का विवाह संस्कार २४-४-८३ रविवार को बड़ी धूमधाम से आर्यसमाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ, जिसमें कन्या पक्ष के माता पिता भाई बहन और उनके इस्ट मित्रों ने तथा वर पक्ष के परिवार जनों ने और आर्य समाज के विशिष्ट व्यक्ति बाबू उदमीराम जी एडवोकेट, महाशय ताराचन्द जी द्वारा मूलचन्द जी, श्री अजुध्याप्रसाद जी लोहिया वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य आदि सबने मिलकर वर वधु को आशीर्वाद दिया।

मन्त्री अजुध्याप्रसाद लोहिया

प्यारे ऋषि की प्यारी बातें

(श्री बलदेवकृष्ण आर्य करनाल)

सब कुछ स्वाहः—

हरिद्वार के मेला कुम्भ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सप्त सरोवर पर पाखण्ड खडनी झण्डी गाड़ी थी। मेलों के अन्दर बड़े बड़े विद्वानों को अन्धकार मे पडे देखकर एक गहरी चोट महाराज के दिल पर लगी और उन्होंने कहा कि इन तमाम साधुओ की तरह से रहन-सहन रखने से काम नही चलेगा। कुछ ऊँचा उठने की जरूरत है। एक दिन व्याख्यान देते गद्गद् हो गये और एकाएक पुकार उठे "स्वंय: मयी पूर्णं गु ग स्वाहा" और प्लेटफार्म से उठकर अपने पास जो कपड़े बर्तन, धन, पुस्तकें आदि थी सब कुछ बाट दिया। स्वामी कैलाश पर्वत ने कहा यह आप क्या कर रहे हैं। महाराज ने जवाब दिया हम सब कुछ साफ साफ कहना चाहते हैं और यह तब तक नही हो सकता जब तक कि हम अपनी आवश्यकताओं को कम न करें केवल एक लगोट रखकर सब कुछ बांट दिया और यह कहकर कि जब तक हमारी इष्ट सिद्धि नही होती, गगा तट पर रहेंगे और संस्कृत ही बोलेगे। यह कहकर वहां से चल दिये।

रेत का बिस्तर ईंट का तकिया:—

महाराज अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सब कुछ त्यागकर सिर्फ एक लंगोट मे गुजारा करने लगे। गगा के किनारे ही रहते रेत का बिस्तर और ईंट का तकिया ही रखते और कोई भी कपडा अपने पास न रखते। रात को भी कपड़ा न ओढते न ही अपने पास किसी को रहने देते। रात के तीन बजे उठकर बैठ जाते और शौच-स्नान से निवृत होकर ईश्वर ध्यान मे लग जाते और फिर लोगों से बातचीत करते। गढ़ मुक्तेश्वर मे लोगों ने महाराज को इस हालत में देखा।

गायत्री जाप से क्या होता है ?

फरूखाबाद में महाराज समाधि अवस्था में बैठे थे कि लाला मनीराम व जगन्नाथ दर्शनों के लिये आये और बैठ गये। महाराज की जब समाधि खुली तो पूछा गायत्री जाप का क्या फल है, तो महाराज ने जवाब दिया कि इससे बुद्धि शुद्ध होती है और सध्या मे सब लोगों को गायत्री का जाप करना चाहिए।

कुश्ता अबरक खाकर ब्रह्मचारी कैसे रहें:—

महाराज हरिद्वार मे सूर्यकुंड पर विराजमान थे। पंडित गंगाराम जी ने पूछा कि कुश्ता अबरक से तो कामदेव बढ़ता है। आप इससे किस तरह बचे। महाराज ने कहा एकान्त में रहो। नाच-तमाशे मत देखो। ओ३म् का जाप करो। जब बहुत जबरदस्त नींद आकर घेरे तब जाकर सो जाओ। इससे गहरी नीद आ जाती है और आदमी स्वप्न नहीं देखता। नींद खुलने पर भजन में मग्न रहो। न बुरा देखो, न बुरा सुनो और चित्त की वृत्तियों को चलायमान न होने दो।

शरीर है या फौलाद:—

गंगा स्नान करने के लिये जहगीराबाद जिला बुलन्दशहर का मशहूर पहलवान ओंकारदास बुपेरा वासी में आया। महाराज ने भी वहीं डेरे डाल रखे थे और धर्मोपदेश कर रहे थे। ओंकारदास को स्वामी जी के उपदेश बहुत प्यारे लगे। वह पहले किसी और स्थान पर उतरा था। फिर स्वामी जी के पास अपना डेरा लगा दिया। एक दिन दिल में आई कि स्वामी जी की शारीरिक शक्ति का अन्दाजा लगाया जावे। उसने कहा कि महाराज आप मुझे चरणों को दबाने की आज्ञा देवें। महाराज ने कहा कि हमारे चरण तो दबे दबाये हैं। तुम क्यों कष्ट करते हो। लेकिन वह न माना और चरण दबाने लग पड़ा। उसे ऐसा मालूम हुआ कि महाराज के पांव फौलाद के हैं। पूरा बल लगाने पर भी उनमें उंगली नहीं दबी।

———

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी० न 23207/73 पंजि० न० P/RTK 49   फोन ८८११   पृष्टि सेवत् १,६६,०८,२२,०८१



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक–म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १०, अङ्क २८   २८ जून १९८३   वार्षिक मूल्य १५)   विदेश मे ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

समस्त आर्यजगत् के सहयोग से अजमेर में महर्षि दयानन्द

निर्वाण शताब्दी स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में मनाने का सर्वसम्मत निश्चय

सार्वदेशिक सभा तथा परोपकारिणी सभा की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार १७ जून को प्रातःकाल परोकारिणी सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले और स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती अजमेर पहुँचे और वहां करनाल के राय साहब चौधरी प्रतापसिंह जी और आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिह एडवोकेट भी पहुंच गये थे। स्टेशन पर अजमेर नगरवासियों ने अतिथियों का स्वागत किया।

उसी दिन सायंकाल को आर्यसमाज केसरगंज के डी० ए० वी० कालेज के कार्यालय कक्ष में सभी कार्यकर्त्ताओं की बैठक हुई। सब लोगों ने बड़े उत्साह और साहचर्य की भावनायें प्रकट करते हुए निश्चय किया कि अजमेर नगरी में ३ से ६ नवम्बर तक निर्वाण शताब्दी समारोह मनाया जायेगा और समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा एव देश की समस्त आर्य संस्थाओं का सहयोग होगा।

सब लोगो ने मिलकर निर्णय किया कि महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह विश्राम स्थली (पुष्कर रोड़) पर मनाया जायेगा।

इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ एक मास तक सम्पन्न होगा जिसकी अध्यक्षता महात्मा दयानन्द तथा व्यवस्था यति मडल करेगा। मुख्य श्रद्धाजलि कार्यक्रम ४ नवम्बर को आयोजित किया जायेगा, जिस में विभिन्न मतावलम्बी एवं प्रतिनिधि भाग लेंगे। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन, वेद सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, युवक सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि भी आयोजित किये जायेंगे।

शताब्दी समारोह का समग्र कार्यक्रम स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा। मुख्य समारोह का उद्घाटन लाला रामगोपाल शालवाले करेंगे। राज्य के मुख्य मन्त्री से इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होने का अनुरोध किया जायेगा। शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो० वेदव्यास जी तथा उद्घाटन दत्तात्रेय आर्य करेंगे। समारोह के स्वागताध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिह तथा स्वागत मन्त्री श्रीकरण शारदा तथा स्वागत सहमंत्री रासासिह जी नियुक्त किये गये हैं।

शताब्दी समारोह समिति ने यह निश्चय किया कि इस अवसर पर भारत सरकार से प्रार्थना की जायेगी कि दिल्ली अजमेर को चलने वाली अहमदाबाद मेल तथा एक्सप्रेस का दयानन्द मेल और दयानन्द एक्सप्रेस नाम दिया जाये। इस अवसर पर स्वामी दयानन्द जी की स्मृति में डाक टिकट निकालने की भी मांग की गई है।

अकालियों की क्षेत्रीय व नदी जल सम्बन्धी विवादास्पद मांगें

केन्द्र पंचफैसले के लिए न्यायाधिकरण सौंपने को तैयार

रोहतक (रणवीर शास्त्री)–प्रधान मन्त्री के विदेशी दौरे से वापस लौटने पर २२ जून को केन्द्रीय मन्त्रिमन्डल ने अकाली दल की हठवादिता तथा अतिवादियों की हरकतों से उत्पन्न स्थित पर विचार किया जिसके बाद गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने मंत्रिमण्डल की राजनीतिक मामलों की समिति व अकाली प्रतिनिधियो के बीच अतीत में हुई बातचीत तथा पत्र व्यवहार पर प्रकाश डालने के लिए एक लम्बा बयान जारी किया।

गृहमन्त्री द्वारा जारी बयान के अनुसार केन्द्र ने अकालियों की अबोहर फाजिलका तथा चण्डीगढ व रावी-व्यास के जल सम्बन्धी हरयाणा से सम्बन्धित विवादास्पद मांगें पंच-फैसले के लिए एक न्यायाधिकरण को सौंपने की पेशकश की है। उक्त घोषणा करते हुए श्री सेठी ने कहा कि इन दोनों मामलों पर ट्रिब्यूनल नये सिरे से विचार कर सकता है। पाठकों को याद होगा कि हरयाणा रक्षा वाहिनी नदी जल संबंधी मामले को नये सिरे से खोलने की मांग गृहमन्त्री को ३० जनवरी के दिये गये अपने ज्ञापन में पहले ही कर चुकी है।

गृहमन्त्री ने अकालियों को शेष सभी मांगों पर वार्ता के लिये द्वार सदा खुले रहने की घोषणा करते हुए यह आशा व्यक्त की कि अकाली स्वर्ण मन्दिर तथा अन्य गुरुद्वारों में हथियार जमा करने तथा अपराधियों को शरण देने के लिए इस्तेमाल न करने का वचन देंगे। गृहमंत्री ने अकाली दल से कहा कि वह बातचीत शुरु न करने के अपने निर्णय पर फिर से विचार करे। श्री सेठी ने साथ ही यह चेतावनी भी दी कि किसी को भी कानून हाथ में लेने की छूट नहीं दी जा सकती। उन्होंने

(शेष पृष्ठ ५ पर)

परोपकारिणी सभा, सार्वदेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारियों की यहां सम्पन्न हुई उच्च स्तरीय बैठक में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित हुआ कि भारत सरकार से प्रार्थना की जाये कि समस्त भिनाय कोठी, जहाँ महर्षि दयानन्द का निधन हुआ था, राष्ट्रीय स्मारक के रूप में आर्य जगत् के हवाले की जाय।

बैठक में सर्वश्री स्वामी ओमानन्द, स्वामी सत्यप्रकाश जी, रामगोपाल शालवाले, छोटूसिह, दत्तात्रेय आर्य, डा० भवानीलाल भारतीय श्रीकरण शारदा, चौ० प्रतापसिह, भीमाराव आर्य आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

अन्त में अजमेर नगरी के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की सार्वजनिक मीटिंग हुई, जिसमें स्वामी ओमानन्द जी, श्री छोटूसिह जी, लाला रामगोपाल जी और स्वामी सत्यप्रकाश जी ने उत्साह वर्धक वक्तृतायें दीं। नगरी के कार्यकर्त्ताओं ने असीम आनन्द प्रकट किया और शताब्दी समारोह में तन-मन-धन से सहयोग देने का वचन दिया।

अध्यात्म व भौतिक समन्वय

भगवान 'चैतन्य' एम० ए०, साहित्यलंकार

आज संसार के पास पहले से कहीं भौतिक सुख-सुविधाएं हैं मगर लगता यह है कि इन समस्त सुख सुविधाओं के होते हुए भी आज मानव पहले से कहीं अधिक असुरक्षित, दु:खी, भयभीत तथा अस्थिर हो गया है। सब कुछ होते हुए भी इसे लगता है कि वह किसी चौराहे पर किसी लुटे हुए मुसाफिर की तरह खड़ा हुआ है। वह चल तो रहा है मगर उसे ठीक ठीक मालूम नहीं कि जाना कहां है। इस सब का कारण केवलमात्र मनुष्य की गलत विचारधारा ही है। मस्तिष्क की विकृति ने ही मनुष्य के लिए ऐसी स्थिति पैदा कर दी है। मस्तिष्क विकृत होता है भोगवाद के कीचड़ में निरन्तर डुबकी लगाने से और स्वस्थ होता है, त्याग, नि:स्वार्थ एवं परोपकार की भावनाओं को हृदय में स्थान देने से भौतिक और आध्यात्मिता का समनवय होना परम आवश्यक है। यह भी एक दुर्भाग्य रहा है कि समय समय पर यहां एक दूसरे के एकदम विपरीत विचारधाराओं का प्रचलन हुआ। कुछ लोगों का इस समूची मानव जाति को सन्देश था कि आत्मा-परमात्मा कुछ नहीं केवल यह शरीर ही सब कुछ है। इस का पालन-पोषण करें। इसी की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखो। इसे सुन्दर और परिपुष्ट करने के पश्चात् भौतिक सुखों का भोग करो। दूसरी ओर इसके एकदम विपरीत ऐसी भी विचारधार का प्रचलन हुआ जिसके अनुसार यह शरीर तथा भौतिक संसार मिथ्या है। शरीर को चलाने वाला आत्मतत्व है। उसी को प्राप्त करने के लिए घर-बार तथा संसार की उपेक्षा करके केवल उसी तत्व की खोज में लगे रहना व्यक्ति का कर्त्तव्य है।

ये दोनों विचारधाराएं अपने अपने स्थान पर ठीक हैं मगर जब इन पर आचरण किया गया तो दोनों ही विचारधाराओं के अनुयायियों ने अतिवादिता से काम लिया। शरीर की सत्ता को प्रमुख मानने वालों ने केवल जो दृश्यमान हो उसी को सत्य मानकर स्वयं को भोगवाद की भट्ठी में झोंक दिया। वे भौतिक पदार्थों में शान्ति खोजते खोजते और आगे से आगे बढते गए मगर शान्ति मिली नहीं। सुख शान्ति की इस दौड़ के कारण विज्ञान के आविष्कारों में वृद्धि हुई। एक से बढकर एक चमत्कारपूर्ण वस्तुओं का निर्माण किया गया। शरीर के पोषक इन लोगों ने यहां तक कह दिया कि इस शरीर की सुख सुविधाओं के लिए ऋण करके भी घी पीओ क्योंकि पुनर्जन्म तो होगा नहीं फिर आना जाना कहा? इनके अनुसार तो—'यावज्जीवेत् सुख जीवेत ऋण कृत्वा घृत पीवेत्, भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत:' जब ऐसी विचारधारा के अधीन व्यक्ति हो गया तो उसने भोगवाद को अपना लक्ष्य बनाया। धर्म उसके लिए मात्र ढोंग बन गया। अध्यात्मवाद कुछ चालाक लोगों की चालाकी लगा ईश्वर को इन लोगों ने गालियां दी। बैंक बेलेंस, काटे, कोठियां तथा अन्य भौतिक पदार्थ इन्होंने अपने लिए जुटाए। विषय वासनाओं की दलदल में डुबकी लगाते रहे और बस। मगर फिर भी सुख-शान्ति मिली नहीं। मन का और ला, और ला की मांग बढती ही गई। यहां पर ययाति जैसे व्यक्ति भी हुए जिन्होंने वरदानों में लम्बी लम्बी आयु प्राप्त की तथा भोग भोगते-भोगते ही आयु समाप्त कर दी मगर तृप्ति नहीं मिल सकी। बल्कि तृष्णा और से और अधिक बढती चली गई। स्थिति रेगिस्तान में पानी की तलाश में भटकते हुए मृग के समान हो गई। दम भी टूट गया मगर प्यास नहीं बुझ सकी। इसीलिए हमारे ऋषियों ने एक तथ्य की बात कही थी—"भोगा: न भुक्ता: वयमेव भुक्ता: तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा:। अर्थात् हम नहीं भोगते बल्कि भोग हमें भोगते हैं और तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती बल्कि हम ही समाप्त हो जाते हैं। यह है भोगवादियों की कहानी। उन्हें शान्ति मिलती नहीं।

दूसरी विचारधारा ने कहा कि जो दीखता है वह सब एक भ्रम मात्र है, एक सपना है। सत्य वह है जो दीखता नहीं है। जो अदृश्य है वही सब कुछ है जो दृश्य है वह कुछ भी नहीं। इस विचारधारा का प्रचलन स्वयं व्यक्ति के लिए भले ही लाभदायक रहा हो मगर समाज को इससे महती हानि ही पहुँची है। इस विचारधारा से जहां एक ओर प्रबुद्ध व्यक्ति घर-परिवार और समाज को त्याग कर जंगलों में चले गए वहीं दूसरी ओर साधारण व्यक्ति भ्रम में पड़ गया। उसकी समझ में यह नहीं आया कि जिस प्रकृति की अपनी एक अटल सत्ता है वह मिथ्या कैसे हो सकती है? जो दीखता नहीं उसे तो सत्य माने और जो दीखता हो उसे बिल्कुल भी न माने यह बात उसके लिए एकदम असम्भव थी। कुछ लोग तो सामाजिक दायित्वों को केवल इसलिए ठुकराते चले गए कि यह मिथ्या है और अन्य कुछ लोगों ने इस आधार हीन विचारधारा के कारण आध्यात्मिकता से ही मुंह मोड़ लिया। इस प्रकार समाज को अत्यधिक क्षति पहुँची। तर्क की कसौटी पर भी यह बात ठीक नहीं उतरती है। निष्कर्षत: यह बात कि—"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैं वनापर:।" अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है, जगत् मिथ्या है। जीव ब्रह्म ही है दूसरा कुछ भी नहीं है। यह बात समाज के लिए अत्यधिक हानिप्रद रही।

वैदिक विचारधारा अध्यात्मवाद और भौतिकवाद के समन्वय की बात करती है भौतिकता और आध्यात्मिकता को अलग अलग करके देखा ही नहीं जा सकता है। यदि कभी देखा गया तो उसका परिणाम बहुत भयानक रहा है। भौतिकता में सुख तो है मगर वह सुख अल्प है। अल्प सुख में शान्ति नहीं। आध्यात्मिकता में ही भूमा आनन्द है। हमारे शास्त्रकारों ने बड़ा सुन्दर कहा है कि अल्प में सुख नहीं बल्कि भूमा में ही अर्थात् आनन्द भौतिकता में नहीं बल्कि आध्यात्मिकता में है। इस सम्बन्ध में वैशेषिक दर्शन के रचियता ने बड़ा ही सुन्दर कहा है—"यतोऽभ्युदय निश्रेयससिद्धि: स: धर्म:।" इस सूत्र में महामुनि कणाद जी कहते हैं कि जिससे इस लोक की तथा परलोक की (दोनों लोकों की) सिद्धि हो, वह धर्म है। इस सूत्र में कितना सुन्दर भौतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय है। इस लोक की उन्नति के लिए भौतिक पदार्थ आवश्यक हैं मगर साथ ही परलोक या मोक्ष की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक माग का अवलम्बन परमावश्यक है। वास्तविकता यह है कि आध्यात्मिकता भौतिकता के बिना लगंड़ा और भौतिकता आध्यात्मिकता के बिना अन्धी है। मनुष्य जीवन रूपी सिक्के के ये दोनों पहलु हैं। एक के बिना दूसरे का बिल्कुल भी अस्तित्व नहीं।

आज स्थिति हमें बिल्कुल ही उल्ट दिखाई देती है। आज का मानव मानो कीचड़ को शरीर पर मल-मल कर शरीर को स्वच्छ बनाना चाहता है। अपनी आत्मा पर लोभ, मोह, ईर्ष्या द्वेष आदि कुवृत्तियों को स्थान देकर उसके पवित्र हो जाने की आशा कर रहा है। आज मानव कांटों पर सफेद फूलों की सेज का सुख चाहता है। आज का मनुष्य धार्मिक बनना नहीं सीखना चाहता है; तभी तो भीतर की पवित्रता समाप्त हो गई है। केवल बाहरी निशान रह गये हैं। आज धर्म ही पाप का मुख्य कारण बन गया लगता है। तभी तो किसी मन-चले ने कहा है—

खुदा के बन्दों को देखकर ही खुदा से मुनकिर हुई है दुनियां,
कि जिस खुदा के ऐसे बन्दे हैं वह कोई अच्छा खुदा नहीं।

आध्यात्मिक व्यक्तियों की भीतरी पवित्रता समाप्त हो गई है बाहरी निशान रह गए हैं। पांच ककार धारण करो तुम सिक्ख बन गए, ईसा पर ईमान लाओ, क्रास गले में लटका लो तुम ईसाई बन गए। मुहम्मद पर ईमान लाओ ऐसी दाढ़ी रखो तुम मुसलमान बन गए, ऐसी कण्ठी धारण करके ऐसा तिलक लगाओ तुम सनातन धर्मी बन गए। यह धर्म का स्वरूप बन गया है। जहां तक पवित्रता की बात है—चाहे तुम जितने ही पाप करो, गंगा में स्नान करो या राम मन्दिर बनाकर पण्डित जी से जाप करवा लो तुम्हारे सारे पाप धुल जाएंगे, ग्रन्थ साहिब को माथा नवाओ, सोढी की मिट्टी माथे से लाओ तुम धर्मात्मा बन जाओगे, ईसा पर या मुहम्मद पर ईमान लगाओ वह तुम्हारे समस्त पाप क्षमा करवा देंगे ऐसे धर्म से बड़ा और कोई पाखंड नहीं हो सकता है। ऐसे धर्म को यदि महात्मा कबीर, गुरु नानकदेव, महर्षि दयानन्द

(शेष ७ पर)

संस्था समाचार

आर्यसमाज जगाधरी में रामायण कथा

आर्यसमाज जगाधरी में दिनांक १३ जून से १९ जून १९८३ तक रामायण की कथा का आयोजन किया गया। पं० रामकिशोर जी वैद्य ने रामचन्द्र जी के जीवन के आदर्श महर्षि बाल्मीकि व तुलसीदास जी के उद्धरण देकर प्रस्तुत किये। अनेक प्रकार की भ्रान्तियां तथा प्रक्षेप बड़ी विद्वता से दूर किए गये। सभी श्रोताओं जिनमें पुरुषों व स्त्रियों की बड़ी संख्या उपस्थित रही, कथा को श्रद्धा व ध्यानपूर्वक सुना और पंडित जी की कथा शैली की प्रशंसा की।

साधारण लोगों का यह भ्रम भी दूर हो गया है कि आर्यसमाज मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी को सम्मान नहीं देता है। श्री ओमप्रकाश जी वर्मा व श्री ज्योति स्वरूप जी के मधुर भजन भी प्रभावशाली रहे। मन्त्री

शुद्धि कार्य प्रगति की ओर—

२८० ईसाई परिवार वैदिक धर्म में प्रत्यागमन

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में बलांगीर जिले के लोईसिंगां ब्लाक में विशाल शुद्धि समारोह १३ जून को सम्पन्न हुआ। इसमें २८० ईसाई परिवारों ने पुनः अपने प्राचीन वैदिक धर्म में अति श्रद्धा एवं हर्ष के साथ यज्ञ में आहुति देकर श्री पृथ्वीराज शास्त्री (कार्यालय मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली) के कर-कमलों से यज्ञोपवीत ग्रहण किये। इनके सदस्यों की संख्या ८०० थी। संस्कार श्री विशिकेसन शास्त्री, श्री अखिलेश आचार्य, श्री सुभाषचन्द्र शास्त्री ने कराया।

इस कार्य में श्री प्रफुल्ल कुमार एडवोकेट बलांगीर का विशेष प्रयत्न रहा। मन्त्री

२०३ ईसाई भाईयों ने वैदिक (हिन्दू) धर्म की दीक्षा ली

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के श्री इतवारीलाल आर्य के धर्मप्रचार से प्रभावित होकर कस्बा बलराम जिला एटा में दिनांक १२-६-८३ को २०३ पुरुष स्त्री बच्चों को पं० दीपचन्द जी शर्मा कार्यालयाध्यक्ष भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ने वैदिक शुद्धि पद्धति से शपथ दिलाकर हिन्दू धर्म पर अडिग रहने की प्रेरणा देकर बाल्मिकि जाति में प्रविष्ट किया। यह लोग १५० वर्ष पुराने ईसाई बने हुए थे। ग्राम बलराम में ईसाइयों द्वारा निर्मित एक गिरजाघर भी है जिसमें पादरी रहकर यहां के हरिजनों बाल्मिकियों को ईसाई धर्म के लिए प्रेरित करता है। इस शुद्धि सम्मेलन में श्री इतवारीलाल आर्य, श्री अमरसिंह चौहान, श्री बलबीर सिंह चौहान सम्मिलित हुए। शुद्धि के पश्चात् बहुत बड़ी संख्या में सभी ग्रामीण शुद्धि सुधारों ने यज्ञशेष प्रसाद और पंचामृतपान करके बाल्मिकी ऋषि को अपनाकर मसीह धर्म त्याग दिया। यज्ञ के बाद सहभोज भी हुआ। मन्त्री

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत

प्रधान—डा० आर० सी० दीवन (होम्योपैथ), उपप्रधान—बैजनाथ वधरिया; मन्त्री—कैप्टन किशोरीलाल, उपमन्त्री—श्री हरबसलाल मल्होत्रा, कोषाध्यक्ष—इन्द्रभान चौधरी, लेखाध्यक्ष—श्री आ० पी० खन्ना

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रधान—श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती आचार्य महाविद्यालय गुरुकुल आमसेना, उपप्रधान—मुकुन्द मिश्र, आर्यसमाज पुरी, चन्द्रसिहल राजगांगपुर (सुन्दरगढ), प्रफुल्ल कुमार एडवोकेट बलांगीर, मन्त्री—इन्जीनियर प्रियव्रतदास, भुवनेश्वर संयुक्तमन्त्री—विशिकेशन शास्त्री, नृसिंहनाथ, उपमन्त्री—धनुर्धर महापात्र, सम्बलपुर लम्बोदर पट्टनायक; फुलबीमुण्डा ज्ञानेन्द्र कुमार अग्निशिखा कटक, कोषाध्यक्ष—गोपालदास राहुल सम्बलपुर

आर्यसमाज गिदड़बाहा (पंजाब)

संरक्षक—वैद्य तालाराम, प्रधान—म० ईशरदास, उपप्रधान—डा० नरेश गोयल, परमानन्द बंसल, मन्त्री—मदनलाल आर्य, उपमन्त्री—सुरेन्द्र गोयल, प्रचार मन्त्री—रमेश सिक्का, कोषाध्यक्ष—भागचन्द, डा. धर्मपाल गोयल, पुस्तकाध्यक्ष व सम्पत्ति अधिकारी—अशोक आर्य

(पृष्ठ १ का शेष)

कहा कि अकाली दल पंजाब सरकार को विश्वास में लेकर स्वर्णमन्दिर सहित सभी धार्मिक स्थलों में रहने वालों की जांच करे तथा वहां पाये जाने वाले अपराधियों को कानून के हवाले करे।

श्री सेठी ने कहा कि पंजाब में शान्ति स्थापना हेतु अकालियों को निरंकारियों तथा दूसरे सम्प्रदायों से मतभेद दूर करने के लिए तुरन्त प्रभावशाली कदम उठाने चाहियें।

अकालियों द्वारा पेशकश रद्द—२४ जून को चण्डीगढ में एक संवाददाता सम्मेलन में अकाली नेता श्री गुरचरणसिंह टोहरा तथा श्री बलवन्तसिंह ने केन्द्र की उक्त पेशकश यह कहकर रद्द कर दी कि सरकार का बातचीत के लिए दरवाजे बन्द करने तथा अकाली मांगें मनाने से बचने का यह खूबसूरत तरीका है। इधर प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी ने अकालियों के अड़ियल रुख की तीखी आलोचना की है। वे उनसे मिलने आये एक महिला प्रतिनिधि मण्डल को सम्बोधित कर रही थीं।

२४ जून को प्रातःकाल चण्डीगढ स्थित पंजाब कांग्रेस आई० के कार्यालय में एक बम विस्फोट हुआ जिससे खिड़कियों के शीशे टूट गये किन्तु इसे सौभाग्य ही कहिये कि कोई हताहत नहीं हुआ। इधर इसी दिन जालन्धर के एक भाषायी समाचार पत्र में काम करने वाले एक कर्मचारी की डाक खोलते मृत्यु हो गई। वह एक पार्सल खोल रहा था जिसमें दो बम थे जिनमें से एक फट गया। इसे विडम्बना ही कहिये कि जब भी अकाली केन्द्र बातचीत शुरु होने तथा उससे कुछ फल निकलने के आसार बनने लगते हैं कि उग्रवादी कोई न कोई नया भयंकर उत्पन्न कर वातावरण को विषैला बना देते हैं। लगता है येह दोनों घटनाएं इसी सिलसिले की कड़ी हैं।

हरयाणावासियों से आवश्यक निवेदन

१९ जून १९८३ को दयानन्द मठ रोहतक में आयोजित हरयाणा रक्षा वाहिनी की एक बैठक जिसमें हरयाणा के प्रमुख नेताओं ने भाग लिया था, में अकालियों के हिंसक आन्दोलन तथा उनकी ओर से बस रोको, रेल रोको आदि दी जा रही धमकियों एव उनको अनुचित मांगों पर विस्तार पूर्वक विचार किया गया। यदि उनको धमकियों तथा आन्दोलन से प्रभावित होकर भारत सरकार ने उनकी सभी मागें स्वीकार कर ली तो उनका प्रतिकूल प्रभाव हरयाणा पर होगा।

भारत के गृह मन्त्री ने अब नदी जल तथा क्षेत्रीय विवाद निर्णय के लिए ट्रिब्यूनल (न्यायाधिकरण) को सौंपने की घोषणा की है और अकाली दल ने इसे अस्वीकार करके अपनी अनुचित मांगें मनवाने के लिए एक और दबाव डाला है। इस प्रकार वे हरयाणा के अधिकारों पर छापा मारने चाहते हैं।

अतः यह आवश्यक हो गया है कि हम हरयाणावासियों को अब संघठित होकर अपने हितों की रक्षा के लिए जागरूक होना पड़ेगा। बैठक में सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है कि हरयाणा की जनता रोष प्रकट करने के लिए जुलाई के प्रथम सप्ताह में १ दिन की सांकेतिक राज्य व्यापी हड़ताल करे।

अतः आर्यसमाजों, हरयाणा रक्षा वाहिनी, व्यापारी, छात्रों तथा अन्य सामाजिक सघठनों के कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध किया जाता है कि अपनी सघठन शक्ति का परिचय देने के लिए हड़ताल को सफल करने की तैयारी करें।

हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन करने के लिए स्वयं सेवकों की भर्ती करके कार्यालय में अपनी सूची भेज देवें। आशा है आपका अमूल्य सहयोग मिलता रहेगा।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी दयानन्दमठ, रोहतक

वीरेन्द्र जी की हत्या का प्रयास उग्रवादियों का घिनौना कारनामा

—सभा मन्त्री

रोहतक (शास्त्री) २४ जून को श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा संचालक दैनिक प्रताप व वीर प्रताप के नाम उग्रवादियों द्वारा भेजे गये पार्सल बम तथा उसे खोलते समय हुए विस्फोट व उससे पत्र के दो कर्मचारियों की मृत्यु पर महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने गहरा दुःख व्यक्त किया। सभा मन्त्री ने इस निकृष्ट कृत्य की तीखी आलोचना करते हुए इसे उग्रवादियों का घिनौना कारनामा बताया।

सभा मन्त्री ने अपने बयान में अकालियों से कहा कि वे समय रहते उग्रवादियों तथा उनकी गतिविधियों को लगाम दें। महाशय जी ने सयोगवश श्री वीरेन्द्र जी के वहां न होने के कारण इस काण्ड का शिकार होते होते बच जाने पर परमात्मा का धन्यवाद किया।

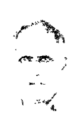
जुवां जिला सोनीपत में

सर्वखाप पंचायत के नियमों के अनुसार विवाहसंस्कार

स्वर्गीय मा० धर्मपाल आर्य की सुपुत्री कु० प्रनीता आर्या का विवाह सस्कार सिडाना जिला रोहतक के सूबेदार मेजर आनन्दसिंह आर्य के सुपुत्र श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य के साथ १९-६-८३ को सादगी के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह सस्कार पं० रणवीर शास्त्री एम० ए० ने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से करवाया। सर्वखाप पंचायत के नियमों के अनुसार बारात में केवल १० बाराती आये १०० रुपये से अधिक कोई भी रसम नहीं की गई।

-केदारसिंह आर्य

पं चन्द्रसैन जी रोग-ग्रस्त



रोहतक—सभा के महोपदेशक श्री पं० चन्द्रसेन जी आर्य गत एक मास से हृदय रोग से पीड़ित हैं। पण्डित जी आजकल सिविल हस्पताल सोनीपत में उपचाराधीन हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रत्येक घटक परमात्मा से प्रार्थी है कि श्री पण्डित जी जल्दी रोग मुक्त हों। आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि वे उनके कार्यक्रम उनके स्वास्थ्य लाभ कर पूर्णतया स्वस्थ होने तक न रखें तथा उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करें।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ, रोहतक

प्रवेश सम्बन्धी सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। १ म कक्षा से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, संगीत, गृहविज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि संस्था की आधार भूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास। तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ।

निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एव इन्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम वर्ष तथा तृतीय वर्ष में प्रविष्ट हो सकती हैं। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है।

१ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला शुरु है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५) भेजकर नियमावली मगवा सकते हैं।

दमयन्ती कपूर
प्रिंसिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

शोक समाचार

१—बड़े दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि श्री कविराज योगेन्द्रपाल जी शास्त्री कुलपति कन्या गुरुकुल कनखल (हरिद्वार) का दिनांक १६ जून १९८३ को प्रातः १० बजे हृदयगति रुक जाने से अचानक स्वर्गवास हो गया। उनकी आत्मा की शान्ति हेतु यज्ञ एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम दिनांक २६ जून १९८३ को दोपहर ३ बजे उनके निवास आरोग्य भवन आयुर्वेद शक्ति आश्रम हरद्वार में सम्पन्न हुआ। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा स्व० शास्त्री जी के परिजनों को धैर्य प्रदान करें।

२—आर्य हिन्दी महाविद्यालय के आचार्य श्री ऋषिपाल आर्य के छोटे भाई २४ वर्षीय श्री तेजपालसिंह का विषचिका के कारण ग्राम व डा० बूरा खेड़ी (भिवानी) १७-६-८३ को देहान्त हो गया। ईश्वर दिवंगत की सद्गति तथा परिजनों को धैर्य प्रदान करें।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

सर्वहितकारी-साप्ताहिक पढ़िये-पढ़ाइये, १५) शुल्क भेजकर इसके ग्राहक बनिये-बनाइये तथा सर्वहितकारी कार्यों में तत्परतापूर्वक जुट जाइये। व्यवस्थापक
सर्वहितकारी साप्ताहिक दयानन्दमठ रोहतक

सम्पादकीय

धिक्कार है ऐसे लोगों को!

पिछले कई दिनों से समाचार पत्रों द्वारा पंजाब के विभिन्न स्थानों पर वनस्पति घी के कारखानों पर पुलिस द्वारा मारे गये छापों के समाचार मिल रहे हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार भटिण्डा से शुरु हुआ यह सिलसिला लुधियाना, अमृतसर तथा चण्डीगढ़ तक पहुँच गया है। इन शहरों में वनस्पति घी के जिन कारखानों पर छापे पुलिस द्वारा मारे गये उन सभी कारखानों में गौ की चर्बी बन्द टीनों में भारी मात्रा में मिली है, जिसके कारण पुलिस ने कारखानों के उन गोदामों को सील कर दिया है। २२ जून को दैनिक वीर प्रताप में छपे पंजाब सरकार के एक प्रवक्ता के बयान के अनुसार ९०० टन गाय की चर्बी पकड़ी जा चुकी है।

पंजाब में पड़ने वाले छापे तथा उनसे मिल रहे सबूतों से इस सन्देह को बल मिलना स्वाभाविक है कि मात्र पंजाब में ही नहीं, प्रत्युत समस्त देश में गौ की चर्बी का प्रयोग साबुन बनाने में प्रत्यक्षतः तथा वनस्पति घी बनाने में परोक्ष रूप से न्यूनाधिक अवश्य होता होगा। आश्चर्य और दुःख का विषय है कि व्यापारी तथा उद्योगपति मात्र धनोपार्जन के लिए ऐसा करता है क्योंकि वनस्पति घी में गाय की चर्बी मिलाने से उसे प्रति टीन ५० रुपये अधिक मुनाफा होता है। लगता है, ऐसा करने वाले यह भूल गये कि जहां जन्म लेकर और जिस देश के तथाकथित नागरिक होकर वे यह कुत्सित कर्म कर रहे हैं वहां धन केवल रुपये पैसे और हीरे-जवाहरात को ही नहीं माना गया अपितु गोधन को भी धन और इतना ही नहीं, महाधन माना गया है। महाभारत काल में जब पतन सीमा लांघने जा रहा था, किसी की उच्चता का मापक जहां धन और धरती होती थी वहां धेनु का भी उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान था। यह सब वहां हुआ जहां के लोग आज भी कन्या का हाथ वर के हाथ पर रखने से पूर्व गोदान की क्रिया अवश्य सम्पन्न करते हैं।

पुराना भारतीय साहित्य बतला रहा है कि यहां यज्ञों की पूर्णाहुति के उपरान्त तथा शास्त्रार्थों में विजय प्राप्त कर लेने पर ब्राह्मणों को दक्षिणा स्वरूप सोने से सींग मंढवा कर हजारों गायें दी जाती थीं। सूर्यवंशी महाराजा दिलीप ने सपत्नीक वसिष्ठ की गौ नन्दिनी की सेवा पुत्र-प्राप्ति हेतु की थी। यज्ञ प्रधान भारत देश का आरम्भ से ही मूल आधार गौ रही है। ऐसा जघन्य अपराध करने वाले लोग लगता है, भूल गये हैं कि भारत में गौ को गौमाता कहकर पुकारा जाता है। इतना ही नहीं, समस्त भारतीय साहित्य की आत्मा वेद में तो 'गावो विश्वस्य मातरः' अर्थात् गाय को विश्व की माता कहा है। आज भले ही दुर्भाग्य से ऐसा न हो किन्तु देश का पुराना रिकार्ड तो पुकार पुकार कर कह रहा है कि यहां के प्रत्येक नागरिक के पास तीन एकड़ भूमि और एक गाय तो कम से कम होती थी।

'स्वार्थी दोष नहीं देखता' की कहावत के अनुसार घृणित कर्म में लीन ये महापापी लोग कह सकते हैं कि यह गौ मांस भारत का नहीं अपितु विदेशों से आयातित है तथा सरकार से आज्ञा प्राप्त कर लेने पर ही यह मंगवाना सुलभ हो सका है, और फिर आज जहां भारत में तो भारतीयों को गाय का गोबर और मूत्र भी दुर्लभ होता जा रहा है, ऐसे में भी हमने विदेशों से स्वदेशवासियों के स्वास्थ्य-रक्षण हेतु गोमांस तक सुलभ करा दिया है। यदि ऐसा इनका विचार है तो निस्सन्देह अज्ञान के अन्धेरे में ठोकरें खा रहे हैं ये लोग। गौ मांस के आयात हेतु परमिट लाइसेंस देने वाली सरकार इसे मंगवाने वाले व्यापारियों तथा साबुन वनस्पति निर्माण या ऐसे ही किसी अन्य कार्य में इसको काम में लाने वाले उद्यमियों को यह याद रखना चाहिये कि यह वही देश है जहां गाय की चर्बी लगे कारतूसों को मुंह से खोलने पड़ने की अफवाह फैला दिये जाने के कारण ही आधे से ज्यादा विश्व पर शासन करने वाली बर्तानवी सरकार को भारतीय सैनिकों के बड़े भारी विद्रोह का सामना सन् १८५७ में करना पड़ा था।

फिर गौ का महत्त्व मात्र धार्मिक आधार पर ही नहीं है, अपितु उसका महत्त्व विशुद्ध आर्थिक कारणों से भी है। गाय की आर्थिक उपयोगिता का विवेचन करते हुए उन्नीसवीं शताब्दी के महान् अर्थ शास्त्री महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने लघु ग्रन्थ गोकरुणानिधि में लिखा था—एक गाय के जन्म भर के दूध से २५९४० मनुष्य अपना पेट भर सकते हैं। उसी एक गाय से उत्पन्न बैलों की जोड़ी ४८०० मन अनाज उत्पन्न कर सकती है, जिससे २५६०० मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं; जबकि उसके मांस से केवल ८० मांसाहारी ही एक समय मुश्किल से निकाल सकते हैं। गौ की इसी आर्थिक उपयोगिता को स्वीकारते हुए ऋषिवर राजस्थान के पोलिटिकल एजेण्ड कर्नल ब्रुक्स से मिले तथा लगभग दो करोड़ भारतीयों के हस्ताक्षर करवाकर गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगवाने हेतु एक प्रतिवेदन ब्रिटेन की पार्लियामेण्ट तथा महारानी विक्टोरिया को भेजना चाहा था।

अर्थ की लालसा में अन्धे हुए ये लोग सम्भवतया भूल गये हैं कि किन्हीं कारणों से आज इस देश का वासी भले ही इस तथा ऐसे ही अनेक काण्डों से दृष्टि फेरे हो, किन्तु यहीं पर १७४८९३३२ भारतीयों के हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन यहां की जनता ने गौ-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगवाने हेतु राष्ट्रपति महोदय को दिया था तथा इसी हेतु १९६६ में इस पवित्र धरती पर देश की जनता ने बड़ा भारी आन्दोलन किया था। कितना दुःखद आश्चर्य है कि जिस हरयाणा और पंजाब के लोग इस आन्दोलन में सबसे आगे थे, आज वही साबुन बनाने के बहाने से गौ की चर्बी विदेशों से मंगवाकर वनस्पति घी में मिलाने का घृणित कर्म यहां का व्यापारी वर्ग कर रहा है। इससे भी बड़ा अपराध आज गौ माता का वह प्रत्येक तथाकथित भक्त कर रहा है, जो इतना कुछ होने पर भी मौन साधे बैठा है। हरयाणा के लोगों के लिए सबसे ज्यादा दुःख की बात है कि भटिंडा के जिस साबुन वनस्पति कारखाने पर मारे गये छापे से इस काण्ड पर से पर्दा उठा, उसका स्वामी हरि और हर-पावन धरती तथा दूध दही के खाने वाले प्रदेश का एक एम० एल० ए० है।

सर्वहितकारी उन लोगों का हृदय से आभार मानता है, जिन्होंने इस रहस्य पर से पर्दा उठाकर ऊंची-ऊंची आवाज देकर इस देश की सोई जनता को एक बार फिरसे जगाने का उपक्रम किया है। चाहे ऐसा करवाने वाली सरकार हो या उसके इशारे पर करने वाले टकापंथी स्वार्थान्ध व्यापारी, देश की धर्मपरायण तथा देश के आर्थिक विकास में प्राणपण से जुटी जनता ऐसे तत्त्वों के खिलाफ आन्दोलन करे। प्रशासन में बैठे भारत की आत्मा को पहचानने वाले राष्ट्र भक्त नेता एवं अधिकारी इस देश की संस्कृति से क्रूर मजाक करने वाले ऐसे लोगों को, भले ही वे कितने ही ताकतवर क्यों न हों, कठोर से कठोर दण्ड देने की व्यवस्था करें। देश में गोहत्या पर अविलम्ब पूर्ण प्रतिबन्ध लगे तथा अनिवार्य से अनिवार्य कार्य हेतु भी विदेशों से मंगवाई जाने वाली गाय की चर्बी की छूट भी तुरन्त समाप्त की जाये। देश में साबुन आदि वस्तुओं के निर्माण में चर्बी के स्थान पर विकसित स्वदेशी तकनीक को तेजी से प्रोत्साहित किया जावे ताकि भविष्य में किसी भी अर्थलोलुप को अपनी लोलुपता मिटाने का बहाना न मिल सके। इस कांड ने उन लोगों को भी असमञ्जस में डाल दिया है, जो किसी विधर्मी द्वारा गौ-वध किया गया, ऐसी अफवाह मात्र सुनकर ही बहुत बड़ा बखेड़ा खड़ा करने पर उतारू हो जाते हैं तथा कई बहुमूल्य जीवन जिस की भेंट अनायास ही चढ़ जाते हैं। मंगल-मूल-महेश ऐसे लोगों को प्रेरणा करें ताकि वे भी हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा एकमात्र प्रवक्ता सर्वहितकारी साप्ताहिक के स्वर में स्वर मिलाकर इन कुकर्मियों के समक्ष खड़े होकर कह सकें—'धिक्कार है ऐसे लोगों को'।

—रणवीर

अन्तरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा वार्षिक का अधिवेशन ४ सितम्बर को करनाल में होगा

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह में १०० बसें ले जाने की योजना

हरयाणा के हितों की रक्षार्थ जुलाई के प्रथम सप्ताह में सांकेतिक हड़ताल होगी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में १९ जून ८३ को दयानन्द मठ, रोहतक में सम्पन्न हुई। बैठक में आर्यजगत्‌के वयोवृद्ध नेता प्रो० रामसिंह दिल्ली के भूतपूर्व स्वास्थ्य मन्त्री डा० युद्धवीर सिंह, कन्या गुरुकुल के संचालक कविराज योगेन्द्रपाल शास्त्री तथा गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के भूतपूर्व व्यवसायाध्यक्ष श्री अर्जुनदेव विद्यालंकार के निधन पर शोक प्रस्ताव करते हुए उन द्वारा आर्यसमाज व जनता की की गई सेवाओं का स्मरण किया गया और परमात्मा से उनकी सद्गति हेतु प्रार्थना की गई।

इस अवसर पर निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निश्चय किये गये—

१—सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन

सभा के अन्तरंग सदस्य श्री बलदेव कृष्ण आर्य ने करनाल आर्य समाज की ओर से इस वर्ष सभा का वार्षिक अधिवेशन करनाल में रखने का निमन्त्रण दिया है। अन्तरंग सभा सर्वसम्मति से उनके निमंत्रण पर ४ सितम्बर ८३ को करनाल में साधारण अधिवेशन (वार्षिक चुनाव) करने का निर्णय किया है। हरयाणा के आर्यसमाजों से अपने प्रतिनिधियों को चुनकर शीघ्र भेजने का निर्देश किया गया है।

२—महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर—

परोपकारिणी सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से संयुक्त रूप से एक ही मंच से स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर में दीवाली के अवसर पर ३ से ६ नवम्बर को मनाने के निश्चय का स्वागत किया है तथा इस शताब्दी समारोह को तन, मन, धन से सफल बनाने के लिए हरयाणा की जनता से अपील की गई है।

हरयाणा की जनता पर ऋषि दयानन्द की विचार-धारा का प्रभाव सबसे अधिक है। अतः आर्यसमाज की विचार धारा अधिक प्रसारित करने के लिए योजना बनाई गई है कि हरयाणा के कोने-कोने से १०० बसों के लगभग अजमेर ले जाई जावें। दीवान भीमसेन जी को कार्य सौंपा गया है कि वे रियायती दर पर हरयाणा की रोडवेज बसें प्राप्त करें। हरयाणा की जनता के लिए ऋषि दयानन्द उद्यान में व्यवस्था की जावेगी। सभा ने आर्यसमाजों से अनुरोध किया है कि वे अभी से अजमेर यात्रा की तैयारी करें।

३—हरयाणा के हितों की रक्षार्थ एक दिन की हड़ताल का आह्वान

अन्तरंग सभा की बैठक के पश्चात् हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक भी हुई, जिसमें हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने वर्तमान परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अकालियों ने बस रोको आन्दोलन के पश्चात् रेल रोको आन्दोलन की घोषणा की थी। भारत सरकार ने उस दिन पंजाब में रेलों का आवागमन बन्द करके दृढता का परिचय नहीं दिया, इस प्रकार उन्हें धमकियां देने के लिए उत्साह मिलता है। गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी द्वारा रावी व्यास के जल तथा क्षेत्रीय विवाद का निर्णय ट्रिब्यूनल को सौंपने की सम्भावना का उल्लेख करते हुए कहा कि इसके फैसले से पूर्व १९७६ के निर्णय के अनुसार नहर की खुदाई का कार्य पूरा होना चाहिए था और खुदाई का कार्यभार हरयाणा सरकार को सौंपा जावे। सतलुज यमुनालिंक का पानी हरयाणा को न मिलने से प्रतिदिन लाखों रुपये की हानि हरयाणा को हो रही है।

हरयाणा की जनता चण्डीगढ के विभाजन तथा हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का पंजाब में ही रखने के षड्यन्त्र को कदापि सहन नहीं करेगी। प्रधान मन्त्री को अपने ऐवार्ड १९७० को तुरन्त लागू करना चाहिए।

विचार विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि हरयाणा की जनता अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जुलाई के प्रथम सप्ताह में सांकेतिक हड़ताल करेगी हड़ताल की तिथि का निर्णय करने का अधिकार प्रो० शेरसिंह को दिया गया, जिसकी घोषणा वे शीघ्र ही करेंगे। आर्यसमाजों, हरयाणा रक्षा वाहिनी के कार्यकर्त्ताओं तथा छात्रों से हड़ताल करने की तैयारी तथा आवश्यकता पड़ने पर आन्दोलन करने के लिए स्वयंसेवकों की सूची तयार करने का निर्देश दिया गया।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

सर्वहितकारी में पढ़ लिया होगा कि सभा का चुनाव ४ सितम्बर १९८३ को करनाल में होना निश्चित हुआ है। इस वर्ष प्रतिनिधियों का चुनाव ३ वर्ष की अवधि के लिए किया जावेगा। अतः आप पत्र प्राप्त करते ही ३० दिन का विज्ञापन निकालकर समाज की बैठक में १० सभासदों पर एक तथा उसके बाद प्रत्येक २० सभासदों की संख्या पर एक-एक प्रतिनिधि का चुनाव कर लेवें। ध्यान रखें आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार अपने आर्य सभासदों विशेषकर समाज के अधिकारियों तथा प्रतिनिधियों से उनकी मासिक या वार्षिक आमदनी का १०० वां भाग (शतांश) चन्दे के रूप में अपने आर्यसमाज में प्राप्त करें और उसका १० वां भाग (दशांश) जो भी बने सभा को भेजें। इस प्रकार समाज तथा सभा दोनों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। यदि आपके आर्यसमाज ने वेदप्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी शुल्क सभा को मनीआर्डर अथवा उपदेशकों द्वारा भेज रखा हो तो प्राप्तकर्त्ता; रसीद संख्या तथा तारीख का उल्लेख करते हुए एक पत्र सभा को लिख देवें ताकि जांच करके सभा का रिकार्ड ठीक किया जावे।

जिन आर्यसमाजों के प्रतिनिधि फार्म तथा प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का धन सभा कार्यालय को अथवा उपदेशकों द्वारा ३१ जुलाई तक प्राप्त हो जावेंगे उनकी जांच करके प्रतिनिधि स्वीकृति तथा समय पर उनके प्रतिनिधियों का चुनाव का ऐजण्डा तथा प्रवेश पत्र कार्यालय की ओर से भेजे जा सकेंगे। यदि किसी आर्यसमाज को अभी तक प्रतिनिधि फार्म प्राप्त न हो सका हो, वे सभा कार्यालय को पत्र लिखकर तुरन्त मंगवा लेवें। किसी आर्यसमाज को अपना वार्षिक चुनाव कराने अथवा प्रचार की आवश्यकता हो तो भी पत्र लिखने का कष्ट करें। सभा के प्रचारकों का कार्यक्रम बना दिया जावेगा।

आशा है आप हरयाणा में आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ करने के लिए अपना सहयोग सभा को प्रदान करेंगे।

भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

(पृष्ठ दो का शेष)

आदि ने आलोचना की तो बुरी बात नहीं है। कार्ल मार्क्स ने ऐसे धर्म को यदि अफीम की संज्ञा दी तो इसमें भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यदि इसे धर्म मान भी लिया जाए तो फिर अधर्म क्या है?

तो क्या धर्म त्याज्य है? धर्म का स्वरूप यदि इतना ही बिगड़ चुका है तो क्या उससे पीछा छुड़ा लिया जाए? लेकिन भर्तृहरि ने तो एक अलग ही कसौटी हमारे समक्ष रखी है कि—

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मोहितेषाम विशेषो धर्मेणहीनः पशुभिः समानः॥

अर्थात् खाना-पीना, सोना, डर और सन्तान पैदा करना ये सब (गुण अवगुण) तो पशुओं और मनुष्यों में एक समान हैं। मनुष्य में यदि कोई विशेषता है तो वह यह है कि वह 'धर्म' पर चलने वाला है यदि ऐसा नहीं तो वह भी पशु के ही समान है। अब जब इस कसौटी पर हम मनुष्य को कसते हैं तो हमें धर्म त्याज्य नहीं लगता बल्कि वह मनुष्यमात्र के लिए परमावश्यक है। वेद में धर्म को क्रियात्मकता के साथ जोड़ा है विध्वंसात्मकता के साथ नहीं। वेद का सीधा आदेश है—'धर्मं चर।' वैदिक साहित्य में कहीं भी धर्म शब्द दिखावे या बाहरी चिन्हों के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ है बल्कि वह तो इस आशय को प्रकट करता है—'न लिंगं धर्मकारणम्।' धर्म संस्कृत भाषा का शब्द है जो कि धारण अर्थ वाली धृ धातु से बनता है। अतः 'धार्यते इति धर्मः।' अर्थात् जो धारण किया जाए वह धर्म है। मनुष्य जीवन को उच्च व पवित्र बनाने वाली ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक शुद्ध सार्वजनिक मर्यादा पद्धति ही धर्म है। जैमिनि मुनि ने मीमांसा शास्त्र के दूसरे सूत्र में धर्म का लक्षण—'चोदना लक्षणोऽर्थो धर्मः' किया है। अर्थात् लोक परलोक के सुखों की सिद्धि के हेतु गुणों और कर्मों में प्रवृत्ति की प्रेरणा धर्म का लक्षण है। मनु जी महाराज सदाचार को परम धर्म मानते हुए लिखते हैं—'आचारः परमो धर्मः।' इस सदाचार की प्राप्ति के लिए वे एक अमूल्य जीवन पद्धति का निर्देश भी करते हैं। मनुष्य सदाचारी और धर्मात्मा कैसे बन सकता है इसके लिए उन्होंने कुछ नियमों का निर्देश किया है—

'धृति क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥'

अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन को प्रलोभनों में फंसने न देना, चोरी त्याग शौच, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि अर्थात् ज्ञान, विद्या, सत्य और क्रोध न करना ये दस धर्म के या धर्मात्मा पुरुष के लक्षण हैं। यहां पर भी तो अध्यात्म और भौतिकवाद का समन्वय ही है। इन गुणों को धारण कौन नहीं करना चाहेगा या किसको इस लोक और परलोक की उन्नति के लिए ये गुण आवश्यक नहीं हैं? महात्मा व्यास कहते हैं कि जैसा व्यवहार दूसरों से तुम अपने प्रति चाहते हो, तुम भी प्राणी मात्र से वैसा करो यह धर्म का उत्कृष्टतम स्वरूप है। तुलसीदास जी ने भी इस सम्बन्ध में बड़ा सुन्दर कहा है—

परहित सरस धर्म नहीं भाई, पीड़ा सम नहीं अघ भाई।

इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार भी उल्लेखनीय हैं—'जो पक्षपात रहित न्याय सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार है उसी का नाम धर्म और उससे विपरीत का नाम अधर्म है।' इन्होंने भी व्यक्ति के आचरण पर ही बल दिया है। धर्म असल में न तो कोई अजूबा है, न पोथियों में बन्द कोई विशेष गुप्त बात और न ही धर्म कोई रटने की वस्तु है, न यह बाहरी चिन्हों या परिधानों पर ही आधारित है बल्कि जिस व्यक्ति में समस्त मानवीय गुणों का समावेश है वही धर्मात्मा पुरुष है। धर्मात्मा वह नहीं जो बड़ी गद्दी पर बैठा है या जिसके सैंकड़ों चेले हैं या जादूई करिश्मे दीखाता हो बल्कि व्यक्तिगत जीवन को सुधारकर प्राणीमात्र को सुख शान्ति पहुंचाने में जो कटिबद्ध है वही धर्मात्मा है। जिसने इस लोक और परलोक के क्षेत्रों को साधने में अपना जीवन लगाया है वही आध्यात्मिक पुरुष है। धर्म एक नियम है, एक व्यवस्था है, सुखी जीवन बीताने का एक नुस्खा है। जिस प्रकार दुर्घटनाओं से बचाव के लिये एक नियम बनाया गया है कि प्रत्येक वाहन का चालक बाएं-२ अपने वाहन को चलाए। यदि एक भी चालक कहीं इस नियम का उल्लंघन करता है तो उसका परिणाम दुर्घटना-दुःख एवं क्लेश होता है। ठीक इसी प्रकार मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए, चतुर्दिक उन्नति के लिये कुछ नियम बनाए गये हैं। जो व्यक्ति इनके अनुसार चलता हो उसका जीवन सुखमय होता है। धर्म या आध्यात्मिकता न तो व्यक्ति को यह शिक्षा देती है कि वह इस समाज को झूठा या असत्य कहकर जंगल का रास्ता पकड़े और न ही ऐसा निर्देश देती है कि वह भौतिक पदार्थों के भोग में ही आकण्ठ डूब जाये बल्कि इसके विपरीत वह तो समन्वय की बात कहती है। धर्म के उपरोक्त विवेचित लक्षणों में कहीं भी भौतिकता और आध्यात्मिकता का आपस में विरोध या टकराव नहीं है। ये दोनों ही मनुष्यों को लक्ष्य प्राप्ति के लिए साधक हैं बाधक नहीं। किसी भी नदी को पार करने के लिए जिस प्रकार पानी नौका का आधार होता है ठीक इसी प्रकार भौतिकता केवल संसार सागर को तैरने के लिए साधन मात्र है मगर यदि यह आधार पानी नौका में प्रवेश कर जाए तो वह नौका को ही ले डूबेगा। व्यक्ति को भौतिकता में नहीं डूबना है उसे अपने ऊपर प्रभावी नहीं होने देना है बल्कि उसे केवल आधार अर्थात् एक साधन मात्र ही बनाना चाहिए। उपनिषद्कार ने इस बात को बड़े सुन्दर ढंग से समझाया है—

विद्याञ्चाविद्यां च यस्तद् वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

अर्थात् अविद्या (भौतिकता) से मृत्यु पर विजय प्राप्त करो और विद्या (अध्यात्म) से अमृत की प्राप्ति करो। वैदिक संस्कृति का यही अमर सन्देश है कि यदि मनुष्य सुख-शान्ति और शाश्वत शान्ति प्राप्त करना चाहता है तो उसे आध्यात्म मार्ग का अवलम्बन करना ही पड़ेगा लेकिन इसके लिए भौतिक प्रसाधन पूर्णतया त्याज्य नहीं।

तन्दुरुस्ती के लक्षण

—वैद्य इन्द्रसिंह आर्य नीलोठी

मोटे-ताजे या पहलवान आदमी ही तन्दुरुस्त रहते हैं ऐसी बात नही है। प्राय: देखा जाता है कि मोटे-ताजे लोग हमेशा बिमार रहा करते हैं और पहलवानों की उम्र बहुत कम होती है। पूरे नीरोग आदमी के ये लक्षण है—मनुष्य जीवन के उपयोगी कामो को बिना थकावट आलस्य के सम्पादन कर ले, पाखाना ऐसा हो कि आबदस्त लेने मे जल की जरूरत न हो, अच्छी गाढी नीद आवे, अधिक परिश्रम से तकलीफ न हो। महात्मा गान्धी के कथनानुसार सच्चा तन्दुरुस्त वही कहा जाता है जिसके नीरोग 'तन' मे नीरोग 'मन' का निवास हो। असल बात यह है कि मन के साथ शरीर का ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध है कि जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक. घृणा आदि प्रवल मानसिक विकारो को दूर न कर दिया जाये तब तक शरीर नीरोग रहने पर भी मनुष्य नीरोग नही कहा जा सकता। दूषित मन ही रोग को बुलाता है। इस लिए शरीर की तन्दुरुस्ती मन की पवित्रता पर निर्भर करती है। "रोगी होना एक पाप है"

वैदिक धर्म के सिद्धान्तानुसार मनुष्य को अपने कर्म का फल भोगना पड़ता है। इतनी बात तो प्राय: सभी लोग जानते है कि पाप का फल दु ख और पुण्य का फल सुख होता है। परन्तु इसमें शका की बात यह है कि रोग के समय मनुष्य को जो दुख भोगना पडता है वह पूर्व जन्म के कर्मों का फल है या इसी जीवन में किए गए कर्मो का फल ? इसका जवाब चरक मे इस प्रकार दिया गया है पूर्व जन्म तथा इस जन्म के कर्मो में जो बलवान् होता है वह एक दूसरे को दबा देता है। अर्थात् यदि पूर्व जन्म में किए गए बुरे कर्मों के फलस्वरूप रोग उत्पन्न होता है तो वर्तमान जीवन के शुभ कर्मों की प्रबल शक्ति उसे नष्ट कर सकती है। इसी तरह पूर्व जन्म के अच्छे कर्मो से अच्छी तन्दुरुस्ती मिली हो लेकिन वर्तमान जन्म के पाप कर्म अधिक हो तो वह तन्दुरुस्ती जाती रहती है। कलकत्ते जैसे बड़े-बड़े शहरों में रहने वालो की तन्दुरुस्ती सबसे ज्यादा खराब रहती है। इस का कारण क्या है—पवित्र अन्न, जल, शुद्ध हवा तथा आवश्यक्तानुसार परिश्रम करने की सुविधाएं, जो गाँव वालों को अपने आप प्राप्त होती है, यह शहर वालो को नहीं होती। उन्हें तो गन्धयुक्त अन्धेरे मकानो में रहना, नल का पानी पीना, पखे की हवा में रहना, मशीन का आटा खाना, बाजार की गन्दी हवा खाना, और ज्यादा दिमागी काम करना आदि बेशकीमती दिन बिताने पड़ते हैं। इसलिए वे प्राकृतिक जीवन से अप्राकृतिक जीवन मे आजाते हैं और उनके सभी काम कुदरत के खिलाफ होने लगते हैं। वे अपने सुभीते के अनुसार इन्द्रिय-सुख में खो जाते है। धर्मावर्म के विचार उनके मन से उठ जाते हैं। ऐसी अवस्था में कुदरत रोग के रूप मे उन्हे चेतावनी देती है कि वह अपना रहन सहन, आचार-विचार ठीक करें, वरना वे रोगी होंगे। इसी चेतावनी की अवस्था में यदि मनुष्य सम्भल जाए तो उसमें इतनी सामर्थ्य है कि वह आने वाले रोगों का सामना कर उन्हें निर्मूल कर दे और अपनी तन्दुरुस्ती को ठीक रख कर नीरोग जीवन का आनन्द लूटे। इसी कार्य में सहायता देने के लिए मनुष्य को तन्दुरुस्त रहना चाहिये।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० न 23907/73 डाक० न० P/RTK 49 फोन ८८११ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क २९ ७ जुलाई १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

पंजाब की विस्फोटक स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करने तथा हरयाणा के हितों को सुरक्षार्थ हरयाणा रक्षा वाहिनी की—

प्रान्त भर में ८ जौलाई को एक दिन की राज्यव्यापी सांकेतिक हड़ताल करने को हरयाणावासियों से पुरजोर अपील

१९८१ से अकालियों ने अपनी अनुचित मांगें मनवाने के लिए सरकार को एक के बाद एक धमकी दी और हिंसात्मक गतिविधियों की समाप्त न होने वाली शृंखला चालु कर रखी है, जिसके परिणामस्वरूप पंजाब के नागरिकों के बीच विद्यमान पारस्पारिक सद्भाव तथा एकता को गहरा धक्का लगा है। इतना ही नहीं, अकालियों से प्रश्रय पाकर उग्रवादी पंजाबियों के पारस्परिक सौहार्द को नित्य प्रती दंगे-फसादों द्वारा नष्ट करने पर तुले हुए हैं।

एक ओर लाला जगत् नारायण से लेकर वीर प्रताप कार्यालय में हुये पार्सल बम काण्ड तक उग्रवादियों ने सैंकड़ों निर्दोष नागरिकों की हत्या की वहीं दूसरी ओर हिन्दुओं के धर्मस्थानों को अपवित्र करने के लिए देश के भीतर साम्प्रदायिक तत्वों तथा राष्ट्र विरोधी विदेशी तत्वों ने गऊओं के अंग तक काट काटकर मन्दिरों में फेंके और अब मन्दिरो के पुजारियों तक को मारने का घिनौना सिलसिला इन उग्रवादियों द्वारा जोरों से चलाया जा रहा है। इधर सरकार ने भी उनके सामने झुककर बार बार वार्ता के लिए उनको निमन्त्रण पर निमन्त्रण देकर उनके दिमाग को और खराब कर दिया है। सालों बातें होती रही हैं पर उनकी हिंसात्मक कार्यवाइयां बढ़ती चली गई। पटियाला जालन्धर आदि नगरों में जिस प्रकार का आतंक इन लोगो ने फैलाया, इसकी प्रतिक्रिया धीरे धीरे सारे प्रदेश में होनी स्वाभाविक है।

ऐसे में देश का एक अभिन्न भाग, जहां निर्दोष लोगों को अकारण अत्याचार का शिकार होना पड़ रहा हो, उग्रवादी तत्वों तथा प्रशासन में बैठे साम्प्रदायिक अधिकारियों के जुल्मों का शिकार हो रहे अपने हिन्दू भाइयों के साथ न केवल सहानुभूति व्यक्त करने तथा हर प्रकार से उनको संरक्षण प्रदान करने, इसके साथ साथ हरयाणा के हितों की सुरक्षा हेतु गठित 'हरयाणा रक्षा वाहिनी' यह अनुभव करती है कि इन सब कार्यवाइयों को समय रहते मजबूत हाथों से यदि न रोका गया तो देश की एकता खतरे में पड़ सकती है जिससे पंजाब के दोनों सम्प्रदायों के मध्य सौहार्द तथा सद्भावना पारस्परिक वैमनस्य में बदल जाएगी।

अतः यह नितान्त आवश्यक हो गया है कि भारत सरकार अब अकालियों की तुष्टि का रास्ता छोड़कर शान्ति और व्यवस्था बनाये रखने तथा राष्ट्रीय एकता को रक्षा के लिए सुदृढ कदम उठाये। प्रांत के सभी व्यावसायिक वर्गों से भी हरयाणा रक्षा वाहिनी अपनी १९ जून की बैठक में ८ जुलाई को एक दिन की राज्यव्यापी सांकेतिक हड़ताल के निर्णय एवं आह्वान को सफल बनाने की भावुकतापूर्वक अपील करती है। हरयाणा के हितों की रक्षार्थ तथा पंजाब में उग्रवादी असामाजिक तत्वों के बर्बरतापूर्ण व्यवहार का शिकार बन रहे अपने हिन्दू भाइयों के समर्थन में हरयाणा रक्षा वाहिनी निम्न मांगें सर्वसम्मति से स्वीकार कर भारत सरकार से इन पर अविलम्ब कार्यवाई किये जाने का आग्रह करती है—

१—पंजाब में जो उग्रवादी अकाली प्रतिदिन हिंसक कार्यवाही तथा नेताओं की हत्या करके गुरुद्वारों में छिप जाते हैं, उन अपराधियों को वहां से बाहर निकालकर जेलों में डाला जाए।

२—अमेरिकी राजदूत ने खालिस्थान का समर्थन करके राष्ट्र विरोधी कार्य किया है. अतः उसे तुरन्त वापिस भेजा जाय।

३—पंजाब की सीमा में सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई शीघ्र पूरी की जाये ताकि हरयाणा को अपने अधिकार का पानी मिल सके।

४—शाह आयोग तथा प्रानमन्त्री द्वारा किये गये फैसलों को तुरन्त लागू किया जाये तथा नया ट्रिब्यूनल तब तक न बनाया जाए।

व्यापारी तथा कारोबारी हरयाणवी भाईयों से भी साग्रह अनुरोध है कि ८ जुलाई शुक्रवार को हरयाणा भर में पूर्ण हड़ताल कर संगठन का परिचय देवें।

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	म० भरतसिंह वानप्रस्थ
संरक्षक	अध्यक्ष	संयोजक

हरयाणा रक्षा वाहिनी दयानन्द मठ रोहतक

अबोहर फाजिल्का मिले बिना चण्डीगढ खाली नहीं करेंगे

—हरयाणवी नेताओं की चेतावनी

नई दिल्ली १ जुलाई (यू.) हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल ने कल यहां हुई विपक्षी दलों की बैठक में दिए इस सुझाव को कटु आलोचना की है कि पंजाब समस्या के समाधान के लिए चंडीगढ पंजाब को दिया जाए तथा हरयाणा को कुछ क्षेत्र देकर उसे नई राजधानी बनाने के लिए आर्थिक सहायता दी जाए।

विपक्षी दलों के इस कदम व सुझाव पर तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि बेहतर तो यह होता कि वे शाह आयोग द्वारा दिए गए अवार्ड को लागू करने पर जोर देते जिसके अन्तर्गत चंडीगढ हरयाणा को देने का सुझाव दिया गया था अथवा उन्हें प्रधानमन्त्री द्वारा दिये गये उस एवार्ड को लागू करने पर जोर देना चाहिए था जिसके अन्तर्गत चण्डीगढ पंजाब को दिए जाने व उसके बदले हरयाणा को अबोहर व फाजिल्का के क्षेत्र दिए जाने की बात कही गई है।

(शेष ३ पर)

सम्पादकीय

८ जौलाई को हरयाणा में हड़ताल क्यों ?

१९८१ से पंजाब जिन दुःखद परिस्थितियों से गुजर रहा है, वे सारे भारत के लिए ही चिन्तनीय हैं। पिछले लगभग दो वर्ष से वहां के अकालियों द्वारा छेड़े गये तथाकथित धर्म युद्ध ने सम्पूर्ण देश को चक्र-व्यूह में फंसा दिया है, जिससे निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं पड रहा है। लाला जगतनारायण जैसे प्रमुख पत्रकार, अटवाल और शारदा जैसे कर्त्तव्य-परायण पुलिस अधिकारियों तथा सैकड़ों राह चलते लोगों को अकालियों का उग्रवादी ग्रुप गोली का निशाना बना चुका है। डेढ़ वर्ष तक तो आतंक और रक्त-पान का यह खेल इक्का-दुक्का लोगों तक ही सीमित रहा किन्तु अब पंजाब में इसने साम्प्रदायिक दंगों का रूप धारण करना आरम्भ कर दिया है। पटियाला, मालेरकोटला और जालन्धर इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। स्थिति यदि इसी प्रकार भयावह बनी रही तो इन स्थानों की हवा दूसरे स्थानों पर भी पहुँचकर उन्हें लपेट में लेगी जिसकी तीखी प्रतिक्रिया देश के दूसरे प्रान्तों में भी भले ही देर से सही, पर होगी अवश्य।

सारा देश जान चुका है कि धर्मयुद्ध की आड़ में अकालियों का आन्दोलन विशुद्ध साम्प्रदायिक है। यद्यपि वे अपनी बेहूदी मांगों को सभी पंजाबियों की मांग तो कहते हैं, पर इनमें से एक के द्वारा यह कहकर कि 'सिखों के साथ वितकरा अर्थात् भेदभाव हो रहा है' अपनी पोल खुद ही खोल देते हैं। एक ओर वे न केवल सभी पंजाबियों से प्रत्युत् भारत की सभी प्रतिपक्षी पार्टियों तक से समर्थन की बात करते हैं तथा ऐसा न किये जाने की स्थिति में उन्हें गम्भीर परिणाम भुगतने की धमकी देते हैं तथा दूसरी ओर पंजाबमें रह रहे हिन्दुओं—निरंकारियों आर्यसमाजियों तथा अन्य सम्प्रदायों वालों को धड़ाधड़ मौत के घाट उतरवाते जा रहे हैं। उनकी मांगें उन्हीं के अनुसार समूचे पंजाब के लिये हैं, जबकि वे अपना आन्दोलन सिक्खों के धर्मस्थान गुरुद्वारों के अन्दर से चला रहे हैं। इसे यदि उनकी विघटनवादी प्रवृत्ति न कहा जाये तो और क्या कहा जाये कि उनकी ऊल-जलूल मांगों को भी केन्द्र सरकार अपनी ढुल-मुल नीति की शिकार होने के कारण एक के बाद एक स्वीकार करती जा रही है और ये श्री से घृणा करने वाले सरदार साहबान इस पर भी टस से मस नहीं हो रहे हैं।

इतना ही नहीं, गुरुद्वारों के चढावे पर पलने वाले ये गुरुओं के तथाकथित सिख अपने धर्मस्थानों की पवित्रता भंग किये जाने की आशंका में तो खून की नदियां तक बहा देने की धमकियां देते हैं तथा दूसरों के धर्मस्थानों में परम-पूज्या गऊ माता का मांस डालकर उन्हें अपवित्र करने तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि मन्दिरों के पुजारियों व पुरोहितों की भी हत्या पर उतर आये हैं। बैंक लूटना, शास्त्रों के भंडार लूटना, ट्रेन लूटना, दिन-दहाड़े निरीह लोगों की हत्या करना तो इनके लिए बच्चों का खेल हो गया लगता है।

निस्सन्देह परिस्थिति को इस विषम अवस्था तक लाने में पंजाब की सरकार तथा केन्द्र सरकार भी कम दोषी नहीं हैं। राष्ट्रवादी शक्तियों के बार बार आग्रह और चेतावनियों के बावजूद अकालियों के उद्दण्ड, उच्छृंखल, अनुशासनहीन और राष्ट्र की अखण्डता को नष्ट करने के लिए योजनाबद्ध रचे तथा चलाये जा रहे आन्दोलन से इस कायरतापूर्ण अयोग्यता से निपटा गया कि समस्या उलझती चली गई। बार बार की वार्ताएँ भंग होने पर फिर निमन्त्रण, ऐसा न होने की अवस्था में प्रतिपक्षी पार्टियों द्वारा दबाव तथा बातचीत अविलम्ब चालू करने का सुझाव तथा ऐसा न हो सकने की स्थिति में भयंकर परिणामों के भुगते जाने की चेतावनियों का ही यह प्रतिफल है कि सौ से ऊपर बहुमूल्य जीवन अकाल अकालियों की भेंट चढ़ जाने के बाद भी गेंद आज उन्हीं के मैदान में है। आज जबकि उनकी अधिकतर मांगें जो सर्वथा अनर्गल हैं, यद्यपि मान ली गई हैं, यहां तक कि आनन्दपुरसाहब के प्रस्ताव तक ले जाने वाली (भले ही कुछ देर से) प्रांतों को और अधिक अधिकार देने की मांग पर विचार करने के लिए सरकारिया आयोग तक का गठन किया जा चुका है तथा केन्द्र सरकार तो क्षेत्रीय विवाद तथा नदी जल विवाद भी अकालियों को खुश करने के लिए एक ट्रिब्यूनल को सौंपने की घोषणा कर हरयाणा के हितों पर कुठाराघात कर चुकी है, किन्तु उग्रवादियों से नाता तोड़ने, उन द्वारा किये जा रहे रक्त-पात की निन्दा करने, अपराधियों को गुरुद्वारों में शरण देने तथा सिक्खों को एक अलग कौम करार देने के नारों से असम्बद्धता व्यक्त करने की समूचे राष्ट्र की बार-बार की गई मार्मिक अपीलें पूर्णतया असफल रही है तथा इन अक्ल के अन्धे और गांठ के पूरे अकालियों के कानों पर जूं भी आज तक न रेंगी।

हरयाणा प्रान्त के सिर पर कच्चे धागे से बन्धी तलवार तो उसी दिन से लटकने लगी थी जिस दिन से इन कहाड़-प्रसाद के मुरीदों ने अपना पाप-युद्ध छेड़ा था किन्तु दिनानुदिन और अधिक विकट होती जा रही परिस्थितियों में भोले किन्तु शूरवीर और जागरूक हरयाणवी के लिए न केवल अंगड़ाई लेकर खड़े होना ही आवश्यक हो गया है अपितु तेजी से घूमता हुआ काल-चक्र हरि और हर के पुत्र को एक बार फिर से जोर से हुंकारने का आह्वान कर रहा है। समस्या के विकराल रूप पर विहंगम दृष्टिपात करने के बाद ही हरयाणा रक्षा वाहिनी, जो हरयाणा के हितों की रक्षार्थ विगत १० मास से कटिबद्ध है, ने ८ जुलाई को प्रथम पग के रूप में हरयाणा भर में पूर्ण हड़ताल का आह्वान किया है, जिसका यही प्रयोजन है कि हरयाणा के लोग उस एक दिन अपने समस्त कारोबार बन्दकर विशाल शान्त प्रदर्शनों द्वारा केन्द्र सरकार को यह दिखा दें कि पंजाब केवल पंजाबियों का ही नहीं है, अतः न तो उन्हें वहां मनमानी करने की छूट दी जा सकती तथा न ही स्वर्णिम-खालिस्तान निर्माण हेतु समस्त देश की चलाचल सम्पदा उनके नापाक कदमों में उंडेली जा सकती है।

हर हरयाणवी को आज दोहरा मोर्चा लगाने की आवश्यकता है। राष्ट्र की राष्ट्रीयता की रक्षा के मोर्चे पर जहां उसे इसे नष्ट करने वाली शक्तियों से लोहा लेना है वहीं इसकी अपनी सीमाओं तथा इसको पावन धरा को शस्य श्यामला बनाने हेतु जीवन देने का कार्य करने वाले जल को न केवल कम करने अपितु उसे बिल्कुल बन्द कर देने तक की कुचेष्टा करने वालों को भी मानसिक झटका देने का वीरतापूर्ण कार्य करना है। राष्ट्र में राष्ट्र विरोधी शक्तियों को कुप्रेरणा करने वाले अमरीका के राजदूत को उसके देश वापस भेजने के लिए शान्त उपायों द्वारा भारत सरकार को जहां बाध्य करना है वहीं निरीह अपने पड़ोसी पंजाबियों का अकारण सिर धड़ से अलग कर गुरुद्वारों में जा छिपने वाले उग्रवादियों को कानून के हवाले करने को भी अकालियों को ऐसे ही उपायों द्वारा विवश करना है।

यह सब हरयाणा के सभी घटकों में इसके हितों की रक्षार्थ अभूत पूर्व एकता द्वारा संगठन के परिचय से ही सम्भव है जिसका परिचय हरयाणा वालों को ८ जौलाई को देना है।

—रणवीर

वेद प्रचार सप्ताह मनाने की अपील

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर मास को वर्षा ऋतु में प्रतिवर्ष की भान्ति वेदप्रचार सप्ताहों का आयोजन करें। अपनी सुविधा के अनुसार अपनी तिथियां नियत करके सभा को सूचित करें ताकि उपदेशकों तथा भजनीकों का प्रबन्ध किया जावे।

म० भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

हरयाणा की जनता को संगठित व हड़ताल को सफल करने के लिए—

प्रो० शेरसिंह तथा महाशय भरतसिंह का हरयाणा का तूफानी दौरा

अकालियों की पंजाब में हिंसक गतिविधियों पर रोष प्रकट करने तथा अकालियों के दबाव में आकर भारत सरकार उनकी अनुचित तथा हरयाणा विरोधी मांगें न माने, इसके लिए भारत सरकार को सचेत करने हेतु ८ जुलाई शुक्रवार को हरयाणा में राज्यव्यापी हड़ताल करने का निश्चय किया गया है। इस हड़ताल की तैयारी तथा व्यवस्था करने के लिए हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह तथा संयोजक महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ने ३० जून १ जुलाई को रोहतक गुड़गांव, सोनीपत, पानीपत, करनाल, नीलोखेड़ी, शाहबाद मारकण्डा, कुरुक्षेत्र, २ जुलाई को लाडवा, साढौरा, यमुनानगर, अम्बाला छावनी, कैथल, ३ जुलाई को नरवाना, जीन्द, हांसी, महम तथा रोहतक ४ जुलाई को भिवानी, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, रोहतक, ५ जुलाई को चरखी दादरी, महेन्द्रगढ, नारनौल, रेवाड़ी, पलवल तथा फरीदाबाद का भ्रमण किया और वहां हरयाणा रक्षा वाहिनी व अन्य धार्मिक, सामाजिक तथा व्यापारिक संघठनों के कार्यकर्त्ताओं की बैठकों को सम्बोधित करते हुए हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए संघठित होकर उग्रवादी अकालियों के हिंसक आन्दोलन के विरोध हेतु ८ जुलाई की हड़ताल को सफल करने की अपील की।

विपक्षी नेताओं के प्रस्ताव पर आश्चर्य

प्रो० शेरसिंह ने एक प्रेस वक्तव्य द्वारा ३० जून को सम्पन्न विरोधी दलों के नेताओं के उस प्रस्ताव पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि पता नहीं विरोधी पक्ष के नेता शान्तिप्रिय हरयाणा की जनता के साथ अन्याय क्यों करना चाहते हैं और अकालियों के हिंसक आन्दोलन के बावजूद उनकी हरयाणा विरोधी मांगों का समर्थन किस कारण कर रहे हैं। उन्होंने चण्डीगढ को तो पंजाब को देने की वकालत की है, परन्तु हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को हरयाणा में मिलाने की बात कहने का साहस नहीं किया।

हरयाणा में शुद्धि कार्य

रोहतक– हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से कार्य कर रही हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति समालखा की ओर से २६ जून को गांव ज्यौरा में शुद्धि समिति के प्रधान बाबु ओमप्रकाश तथा महामन्त्री वैद्य रत्नसिंह जी के प्रयास से शुद्धि यज्ञ का आयोजन श्री बनवारीलाल जी की अध्यक्षता में हुआ जिसमें गांव के ८ मूलेजाट परिवारों के ५४ सदस्यों ने स्वेच्छया वैदिक (हिन्दू) धर्म अंगिकार किया।

इसी प्रकार के शुद्धि यज्ञ का आयोजन गांव खेड़ी बाकी जिला हिसार में २४ जून को गांव के सरपंच श्री काशीराम जी की अध्यक्षता में किया गया। वहां भी ५ मूलेजाट परिवारों के ३१ सदस्यों ने इसी तरह स्वेच्छापूर्वक अपने पूर्वजों के धर्म में प्रत्यावर्तन किया। हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति समालखा प्रत्यावर्तित परिवारों के युवा सदस्यों के रिश्ते नातों की व्यवस्था भी उनकी अपनी जातियों में करवा कर इन लोगों के मार्ग में आने वाली हर कठिनाई को दूर करने का प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

चार पृष्ठ का क्यों ?

पाठक सर्वहितकारी का यह अंक मात्र चार पृष्ठों का देखकर सोच रहे होंगे कि ऐसा क्यों? पंजाब की दिनानुदिन विस्फोटक होती जा रही स्थिति एवं उसके कारण हरयाणा पर होने वाली तीखी प्रतिक्रिया तथा इन सबके परिणाम स्वरूप हरयाणा में ८ जौलाई को होने वाली एक दिन की सांकेतिक हड़ताल व प्रदर्शनों की तैयारी आदि से सम्बन्धित सूचना हरयाणावासियों तक समय से पूर्व पहुंचाने में पत्र की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण ही हम ऐसा करने को विवश हुए हैं जिस के लिए पाठक हमें क्षमा करेंगे।

प्रधान सम्पादक

(पृष्ठ एक का शेष)

चण्डीगढ नहीं छोड़ेंगे

चण्डीगढ की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हम तब तक चण्डीगढ को नहीं छोड़ेंगे, जब तक साथ साथ हमें अबोहर फाजिल्का नहीं दिया जाता है। चंडीगढ पंजाब को दिए जाने के बाद भी हरयाणा के कार्यालय वहां ५ वर्ष तक कार्य करते रहेंगे। इस बीच हरयाणा कांग्रेस (स) के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश मलिक ने विपक्षी दलों के इस स्टेंड को हरयाणा के हितों के विपरीत बताया है। आज यहां एक वक्तव्य में विचार प्रकट किया कि लोकतान्त्रिक समाजवादी दल के अध्यक्ष श्री हेमवती नंदन बहुगुणा तथा जम्मू-कश्मीर के मुख्यमन्त्री डा. फारूक अब्दुल्ला अकालियों के समर्थक हैं इसलिए उन्होंने पंजाब के पक्ष में विपक्षी दलों की बैठक में यह फतवा दिलवाया है। श्री मलिक ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री से आग्रह किया है कि वे क्षेत्रीय व नदी जल विवाद के सम्बन्ध में संयुक्त स्टेंड अपनाने के लिए तुरन्त प्रदेश के सभी विपक्षी दलों की बैठक बुलाएं। श्री मलिक ने लोकदल के अध्यक्ष श्री चरणसिंह के संयमपूर्ण रवैये की सराहना की है।

शोक समाचार

आर्यसमाज महम के सभासद श्री ओमप्रकाश जी के सुपुत्र श्री सतीशकुमार का ११-६-८३ को हृदयगति बन्द होने से निधन हो गया है। आर्यसमाज के सत्संग में शोक प्रस्ताव करते हुए दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा दुःखी परिवार को इस दुःख के सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

रत्नप्रकाश आर्य मन्त्री

नैष्ठिक ब्रह्मचर्य मण्डल के सदस्य बनें

नैनिकता एवं संयमित जीवन के अभाव में आज ससार व्याकुल दृष्टिगोचर हो रहा है। ज्यो-ज्यों भौतिकवाद की प्रबल आंधी मानव समाज को अनेक विध क्लेशों से ग्रसित कर रही है त्यों-त्यों इससे छुटकारा पाने के लिये सारी मानव जाति ब्रह्मचर्यमय जीवन के तपोधन आध्यात्मिक नरपुगवो की प्रतीक्षा कर रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ससार को जो नवीन चेतना दी एवं वैदिक साहित्य सस्कृति सभ्यता की रक्षा की, उसके मूल मे अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रत ही था।

आज के शासक वर्ग में एवं शिक्षा-पद्धति मे यही तो न्यूनता खटक रही है कि ब्रह्मचर्यमय आचरण को सम्मान नहीं दिया जाता। जब कि वेद की स्पष्ट घोषणा है कि—

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते॥ अथर्व० ११।५।१७

राजा ब्रह्मचर्यरूपी तप से राष्ट्र की ठीक-ठीक रक्षा करता है एवं आचार्य स्वयं ब्रह्मचर्य के आचरण से अन्य ब्रह्मचारियों को चाहता है। इन सजीव तथ्यों को सम्मुख रखकर एवं आर्यजगत् की असुरक्षित अवस्था को विचार कर ब्रह्मचर्यव्रती संन्यासियों एव सुयोग्य सुधारकों ने मिलकर भावी समाज के निर्माण के लिये एक वैदिक ब्रह्मचर्य मण्डल का सगठन किया है।

संगठन की आवश्यकता

वैसे तो वैदिक सिद्धान्तों को जीवन का सम्बल बनाकर एव महर्षि दयानन्द का आदर्श सम्मुख रखकर अनेकों युवक अपसे जीवन को नैष्ठिक ब्रह्मचर्यव्रत के कठोर व्रत से पवित्र रखते हुए स्वान्तः सुखाय एवं राष्ट्र-हित में संलग्न दिखाई देते हैं, परन्तु उनका संगठित रूप न होने से शक्ति का सदुपयोग नहीं हो पाता एवं संगठित न होने से जीवन में मूल्यवान् कलाओं का संकलन नही हो पाता, जब कि पारस्परिक सहयोग सहानुभूति से एक विचार वालों को अत्यन्त उत्साह एवं जागृति प्राप्त होती है और अकेलेपन से विचारो में शिथिलता एवं निरुत्साह होता है।

इन प्रमुख कारणों से संगठन की महती आवश्यकता अनुभव करते हुए नैष्ठिक ब्रह्मचर्य मण्डल का आवश्यक प्रारूप तपोवन आश्रम देहरादून में यतिमण्डल की बैठक के समय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की शुभ प्रेरणा से निर्धारित किया गया।

सदस्यता हतु निवेदन

देश-विदेश में जो भी नैष्ठिक ब्रह्मचर्यव्रती हैं उनसे निवेदन है कि इस मण्डल के सदस्य बनें। उसकी सूचना शीघ्र प्रधान नैष्ठिक मण्डल को देने की कृपा करें। जिन आर्य सज्जनों के या आर्यसमाजों के सम्पर्क में कोई नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो तो उनको प्रेरित करके मण्डल को सूचित करें। आगामी कार्यक्रम शीघ्र ही निश्चित करके सूचित किया जायेगा।

निवेदक

प्रधान	मन्त्री
डा० योगेन्द्र पुरुषार्थी नैष्ठिक	ब्र० आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता
योगधाम, ज्वालापुर (सहारनपुर)	४९ ज्ञानसदन, माडलबस्ती
	दिल्ली-५

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजी० सं० P/RTK 49



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ३५   १४ जुलाई १९८३   वार्षिक मूल्य १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा के हितों की रक्षा तथा अकालियों की हिंसक गतिविधियों पर रोष प्रकट करने हेतु

८ जुलाई को हरयाणा भर में पूर्ण हड़ताल तथा शान्तिपूर्वक शक्ति प्रदर्शन सम्पन्न

[कार्यालय प्रतिनिधि द्वारा]

रोहतक ८ जुलाई, हरयाणा रक्षावाहिनी के कार्यालय में प्राप्त समाचारों के अनुसार आज सारे हरयाणा में हरयाणा के हितों की रक्षा तथा पंजाब में उग्रवादी अकालियों द्वारा गैर सिखों की हत्याएं करने पर अपना तीव्र रोष प्रकट करने के लिए सभी नगरों में पूर्ण हड़ताल एवं शान्तिपूर्वक शक्ति प्रदर्शन किया गया तथा हरयाणा रक्षावाहिनी के कार्यकर्ताओं द्वारा जिलाधीशों अथवा उपमण्डल अधिकारियों को अपनी मांगों के ज्ञापन प्रस्तुत किए गए। स्मरण रहे हरयाणा रक्षा वाहिनी ने अपनी प्रान्तीय बैठक में १९ जून को सर्वसम्मति से निर्णय किया था कि भारत सरकार को अपना रोष प्रकट करने के लिए ८ जुलाई को सारे हरयाणा में राज्यव्यापी हड़ताल की जावेगी। इस हड़ताल को सफल करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं रक्षावाहिनी अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह तथा संयोजक महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ने हरयाणा का तूफानी दौरा करके कार्यकर्ताओं की बैठकें की थीं। प्रसन्नता की बात है कि इस आह्वान का सर्वत्र स्वागत किया गया। रोहतक में स्थापित हिन्दू सुरक्षा समिति ने हड़ताल को सफल करने मे तन मन तथा धन से सहयोग किया।

रोहतक—३० जून को दुर्गाभवन में रोहतक के स्थानीय नेताओं की बैठक में प्रो० शेरसिंह की प्रेरणा पर ८ जुलाई की हड़ताल को सफल करने के लिए कार्यक्रम बनाया गया। हिन्दू सुरक्षा समिति का गठन करके शहर के प्रमुख भागों में बैठकें की गईं। व्यापारियों तथा दुकानदारों से हड़ताल करने की अपीलें की गईं। पोस्टर छपवाकर तथा मुनादी करवाकर जनमत तैयार किया गया। हड़ताल से एक दिन पूर्व ७ जुलाई को रात्रि को भिवानी स्टैण्ड पर एक विशाल जन-सभा की गई, जिसका पूर्ण विवरण पृष्ठ ८ पर छपा है। ८ जुलाई को प्रातः रोहतक के नागरिक दुर्गा भवन में एकत्रित हुए तथा वहां से जलूस के रूप में नगर के प्रमुख बाजारों में "शिव शक्ति का पाठ करेंगे, अपनी रक्षा आप करेंगे। कातिल भिण्डरवाले को गुरुद्वारे से निकालकर फांसी दो। पंजाब के निरापराधी नेताओं पर गोली चलाना बन्द करो। किरपानों का मुकाबला त्रिशूल तथा जेली से करेंगे। पक्षपाती पंजाब पुलिस मुर्दाबाद। शाह कमीशन तथा प्रधान मन्त्री का एवार्ड लागू करो। चण्डीगढ़ तथा अबोहर फाजिल्का हरयाणा को दो। सतलुज-यमुना लिंक नहर की खुदाई भारत सरकार करवाए।" आदि गगनभेदी नारे लगाते हुए तथा हाथों में त्रिशूल एवं जेलो लिए हुए जिलाधीश के आवास पर गये। इस इस दिन सारे शहर में दुकानें, कारखाने तथा शिक्षण संस्थाएं भी बन्द रहीं। वकील भी अदालतों में नहीं गये। इस शक्ति प्रदर्शन का नेतृत्व हरयाणा सुरक्षा समिति के प्रधान स्वामी अमरानन्द जी, श्री हुकमचन्द गोयल, श्री परमानन्द तुली, श्री श्यामसुन्दर, श्री ईश्वरदत्त शर्मा, रोहतक के विधायक डा० मंगलसेन' हरयाणा रक्षावाहिनी के संयोजक महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी, सहसंयोजक श्री राममेहर एडवोकेट, प्रचारक श्री सुखदेव शास्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान स्वामी जीवनानन्द जी, मन्त्री वैद्य भरतसिंह आर्य, धनवन्ती आर्य कन्या स्कूल के मैनेजर चौ० किशनचन्द, आर्यसमाज झज्जर रोड के प्रधान श्री वृजमुनि वानप्रस्थी, आर्यवीर दल के संचालक श्री जगदीश आर्य; महावीर दल के सैनिक, सर्वहितकारी के सहसम्पादक श्री रणवीर शास्त्री आदि कर रहे थे।

जिलाधीश के आवास पर पहुँचकर प्रदर्शनकारियों को डा० मंगलसेन विधायक ने ललकारते हुए भारत सरकार को सावधान किया कि उग्रवादी अकालियों द्वारा पंजाब में हिंसक गतिविधियां सख्ती से रोकी जावें, अन्यथा उसकी प्रतिक्रिया हरयाणा की जनता में भी हो सकती है। हरयाणा रक्षावाहिनी के सह संयोजक चौधरी राममेहर एडवोकेट ने पंजाब के अकालियों को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि किरपान दिखाकर हरयाणा का पानी तथा बिजली बन्द करने का दुस्साहस किया तो हरयाणा की वीर जनता भी अपनी रक्षा के लिए अपने धार्मिक हथियार, त्रिशूल, लाठी तथा जेलो का प्रयोग करने पर विवश हो सकती है। आपने भारत सरकार से अनुरोध किया कि पंजाब में कानून तथा शान्ति स्थापित करने में पंजाब पुलिस विफल रही है। अतः वहां हरयाणा की पुलिस को भेजा जावे। श्री लक्ष्मीचन्द गुप्त एडवोकेट तथा स्वामी अमरानन्द जी ने हरयाणा की जनता से अपील करते हुए कहा कि इसी प्रकार संगठित रहकर राष्ट्रविरोधी शक्तियों का डटकर मुकाबला करने के लिए तैयार रहें। जिलाधीश महोदय ने प्रदर्शनकारियों का ज्ञापन प्राप्त करके विश्वास दिलाया कि इसे उचित कार्यवाही के लिए प्रधानमन्त्री को भेज दिया जावेगा।

अम्बाला:—(हमारे प्रतिनिधि युधिष्ठिरसिंह द्वारा) अम्बाला छावनी तथा शहर के लोगों ने पंजाब में निरपराध नागरिकों की उग्रवादी अकालियों द्वारा हत्या करने के विरुद्ध जबरदस्त प्रदर्शन किया गया। बड़ी संख्या में दुकानें बन्द रहीं। परन्तु कुछ सिखों ने अपनी दुकानें खुली रखकर हड़ताल में सहयोग नहीं दिया।

टोहाना—आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक कार्य-कर्ताओं के प्रयत्न से नगर में शान्तिपूर्वक हड़ताल होने का समाचार मिला है।

नरवाना—(तार द्वारा) हरयाणा रक्षावाहिनी की प्रेरणा पर नगर में हड़ताल रही। शिक्षण संस्थायें भी बन्द रहीं। नागरिकों ने उपमण्डल अधिकारी को ज्ञापन प्रस्तुत किया। शहर में जलूस निकाला गया।

चरखी दादरी—यहां भी हरयाणा रक्षा वाहिनी के आह्वान पर नगर में पूरी हड़ताल रही। शिक्षण-संस्थाएं भी बन्द रही।

कलानौर—हिन्दू सुरक्षा समिति के आह्वान पर नगर में हड़ताल रखी गई। दुकानें सारे दिन बन्द रहीं। (शेष पृष्ठ ७ पर)

पाठ्य-क्रम कैसा हो ?

लेखिका :—ब्र० दर्शन आर्या, कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द)

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में लागू करो नैतिक शिक्षा।
कार्य करके निर्वाह करें मांगे न कोई भिक्षा॥

आधुनिक वातावरण पर दृष्टिपात करते हुये नैतिक शिक्षा की आवश्यकता का विचार दिमाग में उमड आता है। नैतिक शिक्षा मनुष्य की ऐसी दृढ नींव होती है जिस पर सारा जीवन आधारित रहकर सफल हो जाता है। आज मेरे देश की भावी सन्तान को नैतिक शिक्षा की अति आवश्यकता है। नैतिक शिक्षा में धार्मिक शिक्षा मुख्य होती है, धर्म के बल पर ही मनुष्य का जीवन पार हो जाता है जैसे कि मनु जी महाराज ने धर्म के निम्नलिखित दश लक्षण बताये हैं :—

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यम् अक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥

अर्थात् धैर्य रखना, क्षमा करना, विषयों का संसर्ग होने पर भी मन को निर्विकार रखना, चोरी न करना, मिट्टी जल आदि से शरीर की शुद्धि, यथेच्छ विषय भोगों से हट कर अलौकिक विषय की पूर्ति के लिए शास्त्र सम्मत मार्ग से इन्द्रियों को ले चलना, बुद्धि, आत्मज्ञान, यथार्थ कहना, क्रोध न करना। इस प्रकार उपरोक्त दस लक्षण प्रत्येक प्राणी में होने चाहिएं।

'सत्यमेव जयते नानृतम्' 'सत्येन पन्था विततो देवयान.'

सदा सत्य की जीत और असत्य को पराजय होती है। सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत हो जाता है। इस वाक्य का ज्ञान कब हो सकता है ? जब जब बच्चों को नैतिक, धार्मिक शिक्षा दी जायेगी। ठीक है कौने-२ पर शिक्षा का प्रसार है लेकिन कौन सी शिक्षा ? बिल्कुल असत्यता, बेइमान बनाना सिखाने वाली अर्थात् आचरण से गिराने वाली। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कोई रस नहीं, शक्ति नहीं, सत्यता नहीं। ले गए सब कुछ वही अंग्रेज, जिन्होंने इस प्रणाली को लागू किया था। हमारे पास तो केवल खोखलापन है जिसके कारण देश में शिक्षा होते हुए भी गिरावट आ चुकी है। पुनः आवश्यकता है इस खोखलेपन से युक्त शिक्षा प्रणाली का समूल सफाया कर, भारतीय सभ्यता संस्कृति को ध्यान में रखकर नैतिक शिक्षा लागू करने की।

पढकर नावल, देखकर सिनेमा चलें इतराते क्या ये सच्चे हैं।
इन व्यभिचारी कुकर्मी ग्रेजुएटों से तो अनपढ ही अच्छे हैं॥

मैं इस शिक्षा प्रणाली का तब तो फायदा अर्थात् लाभ समझूंगी जब शिक्षित भाई शराब न पीकर अपनी सज्जनता को समाज में प्रकट करता हो। दहेज न लेता हो, किसी भी ढंग से व्यभिचारी न हो। वर्तमान शिक्षा प्रणाली अंग्रेज लार्ड मैकाले की ही देन है जो हमारे राष्ट्र के लिए अभिशाप सिद्ध हो रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था कि—

यदि वस चले तो मैं इस शिक्षा को जड़ से नष्ट कर डालूं और शिक्षा को समाज की जरूरतों के साथ जोड़ दूं।

हमारे ऋषि-मुनियों की दृष्टि में विद्या वही है जो मनुष्य को अज्ञान के बन्धन से मुक्त कर दे। प्राचीन समय में विज्ञान, नीति, युद्ध-कला, वेद और शास्त्रों का, ज्योतिषविद्या आदि का अध्ययन विद्यार्थियों से करवाया जाता था। शिक्षा का माध्यम यह अंग्रेजी नहीं थी बल्कि देव वाणी संस्कृत होती थी। शिक्षा का उद्देश्य माना ही गया है—मनुष्य को पूर्ण जीवन संग्राम के लिए तैयार करना। "ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेत्' गृही भूत्वा वनी भवेत्, वनी भूत्वा प्रवजेत्।" अर्थात् जीवन के चार आश्रम माने गये हैं ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास।

विद्यार्थी को शिक्षा ब्रह्मचर्य आश्रम में रहते हुये ही प्राप्त करनी चाहिए। क्योंकि ब्रह्मचर्य की महिमा अलग ही है। जैसे कि-"ब्रह्मचर्येण तपसा: देवा मृत्युमुपाघ्नत"।

अर्थात् ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही देवताओं ने मृत्यु को जीत लिया था। विद्वान् लोग ब्रह्मचर्य से मौत को दूर भगा देते हैं।

ब्रह्मचर्य के बल से ही पितामह भीष्म ने 175 वर्ष की आयु में महाभारत के समय में कुरुक्षेत्र के मैदान में पाण्डवों के विरुद्ध घमासान युद्ध लड़ा और बड़े-बड़े योद्धाओं के पैर उखाड़ दिये थे। महर्षि दयानन्द जी को अनगिनत बार जहर दिया गया लेकिन उन्होंने अपने ब्रह्मचर्य से, योग विद्या से उसको निष्फल बना दिया था।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने हमें एक ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है, जहा केवल पेट को पूर्ति ही दिखाई देती है। "जीवन की सच्चाई का गला घोंटने वाली यह शिक्षा जिन्दगी जीने का नहीं अपितु जिन्दगी रोने का पाठ पढाती है।" आज का शिक्षित बाबु भूखा रहना पसन्द करता है परन्तु परिश्रम करके अपना पेट भरने में लज्जा मानता है। यही कारण है कि झूठे अभिमान और बाबुपन के कारण अनेक शिक्षित लोग बेकार घूम रहे हैं। इस बेकारी ने ही नौजवानों को चोर, डाकू तस्कर बना दिया है।

छोटे से लेकर बड़े तक दिल बहलाते हैं बीड़ी सिग्रेट पीकर।
इस शिक्षा ने बना दिया है नौजवानों को चोर, डाकू, तस्कर॥

पाश्चात्य सभ्यता और भौतिकवाद का यह कुप्रभाव है। वर्तमान शिक्षा से रंगा हुआ नवयुवक चरित्र और सादगी को नही पहचान सकता। वह भी समय था जब भारत में "सादा जीवन उच्च विचार" सर्वत्र था। चरित्र एवं धार्मिक शिक्षा के कारण यह देश विश्व का गुरु कहलाया करता था। लेकिन आज यत्र-तत्र-सर्वत्र भ्रष्टाचार इतना फैल गया कि दुनिया त्राहि-२ कर उठी है। यह है आज की शिक्षा का भयंकर अभिशापमय परिणाम। चौदह वर्ष तक स्कूलों और कालेजों में शिक्षा प्राप्त करने के बाद डिग्री मिलती है परन्तु कला नाम की कोई वस्तु तो उसे आती ही नहीं। हाँ, एक कला अवश्य आती है, लच्छेदार लम्बे-२ बाल बनाकर सड़कों पर खड़े हो जाना और आती जाती नव-युवतियों को घूर-घूर कर देखना। वर्तमान समय में दोनों पक्षों में ही गिरावट आ चुकी है। प्राचीन समय में कुमारियां ब्रह्मचर्य काल में शृंगार नहीं करती थी। विवाह के समय से ही उनको शृंगार का अधिकार होता था। परन्तु आज नवयुवतियां प्रतिदिन नए-२ शृंगार करती हैं फैशन की तितलियां बनकर बाहर निकलती हैं। आज नारियाँ देवी बनने की अपेक्षा लेडियाँ बन रही हैं।

आज बच्चे की शिक्षा डी ओ जी डोग (Dog) अर्थात् कुत्ते से प्रारम्भ होती है जबकि जी ओ डी गोड (God) अर्थात् ओ३म् से प्रारम्भ होनी चाहिए। जब पहले ही कुत्ता कहना, लिखना सिखा दिया फिर दानव से मानव की क्या आशा की जाती है। अतः आज आवश्यकता है नैतिक शिक्षा की। वाणी, कर्म और विचार की शुद्धि कर पाना ही शिक्षा का परम लक्ष्य है। मातृदेवो भव, पितृदेवोभव को विद्यार्थी आज क्या जानें ? आज के विद्यार्थी कल के नेता होंगे। विद्यार्थी ही किसी देश या समाज की रीढ की हड्डी होते हैं।

"सर्वेषामेव दानाना ब्रह्मदानं विशिष्यते"। सब दानों से बढकर विद्या का दान माना गया है। लेकिन कौन सी विद्या ? नैतिक विद्या। जिससे यह देश फिर देवताओं का देश कहलाये। आज देश में कृष्ण-सुदामा जैसे मित्र, सीता जैसी पतिव्रता नारी, राम-लक्ष्मण जैसे भाई, श्रवण कुमार जैसे भक्त पुत्र क्यों नहीं हैं ? क्यों आज महतारी (भाभी) को आधी नारी कह कर बोला जाता है ? यह सब शिक्षा की कमी है। जब तक धार्मिक शिक्षा बच्चों को नहीं दी जायेगी तब तक ऋषि-मुनियों की पावन भूमि, सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह भारत अपनी वास्तविकता से दूर ही रहेगा।

कहाँ तो वह समय था जब घर-२ में यज्ञ हुआ करते थे। चोटी और जनेऊ देश की शोभा थी। कहाँ आज का समय है-चोटी और जनेऊ का सफाया कर दिया। केवलमात्र अपने आप को मुसलमान घोषित करने की कमी रह रही है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सम्पादकीय

आवश्यकता है !

उक्त शीर्षक पढ़कर सर्वहितकारी के पाठक चौंक सकते हैं, क्योंकि पत्र-पत्रिकाओं में आवश्यकता है इस शीर्षकयुक्त विज्ञापन से जो अभिप्राय लिया जाता है वह सामान्यता यही है कि यह या तो नौकरी सम्बन्धी है अथवा विवाह, स्थान, सम्पत्ति वा ऐसी ही किसी वस्तु सम्बन्धी। वैसे आज देश में बेरोजगारी धड़ाधड़ बढ़ती जा रही है, अतः सर्वहितकारी का यह अंक यदि किसी बेरोजगार के हाथ पड़ गया तो एक बार तो मोटे अक्षरों में 'आवश्यकता है' पढ़कर उसकी आंखों में चमक आ जायेगी। चलिये! क्षणभर के लिये सही, खुशी तो होगी उस भाई को।

पाठक मित्र! जरा दिल थाम कर पढ़िये। कहीं ऐसा न हो कि खेल खेल में दिल की धड़कन बढ़ने से बात बिगड़ ही न जाये। आर्थिक स्थिति खस्ता होने के कारण फिलहाल न तो सर्वहितकारी को तथा न ही उस संस्थान को जिसका यह प्रवक्ता है, किसी कर्मचारी की आवश्यकता है और न ही भवन या भौतिक सम्पत्ति आदि की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा द्वारा विगत १९ जून की बैठक में अपना वार्षिक अधिवेशन ४ सितम्बर १९८३ को करनाल में आयोजित कर आने वाले एक वर्ष की अवधि के लिए नये पदाधिकारियों का चुनाव कर लेने का चिर प्रतीक्षित निर्णय ले लिया गया है जिसकी सूचना यह साप्ताहिक तभी से लगातार अपने प्रत्येक अंक द्वारा देता चला आ रहा है। हरयाणा सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के सुधी अधिकारी वर्ग के ध्यान में यह आवश्यक सूचना पहले ही आ चुकी होगी जिसमें सन्देह की कोई गुन्जाइश नहीं है।

प्रत्येक उस आर्य समाज जो किसी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा अथवा सार्वदेशिक से सम्बद्ध है, के अधिकारी एवं सभासद इस तथ्य से भी भली भांति परिचित होंगे ही कि समाज द्वारा अपना वार्षिक चुनाव करते समय अधिकारियों के साथ-साथ अपनी प्रान्तिय सभा के लिये प्रतिनिधियों का चुनाव किया जाता है। इन प्रतिनिधियों की अवधि ३ वर्ष होती है। ऐसे प्रतिनिधियों का जो संगठन बनता है वही उस आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा कहलाती है। इस साधारण सभा का कार्यकाल भी ३ वर्ष रहता है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा हेतु इससे सम्बद्ध आर्य समाजों ने गत तीन वर्ष पूर्व जो प्रतिनिधि भेजे थे उनका कार्यकाल समाप्त हो चुका है। इससे सिद्ध होता है कि वे प्रतिनिधि जिन्होंने गत वर्ष चुनाव में भाग लिया था, इस बार के अधिवेशन में भाग नहीं ले सकते। बिना साधारण सभा का गठन हुये अधिवेशन सम्पन्न नहीं हो सकता। अतः इसके लिये आवश्यक है कि आर्य समाज हरयाणा सभा की साधारण सभा के गठन हेतु अपने यहां से प्रतिनिधियों का निर्वाचन कर भरे हुये प्रतिनिधि फार्म वार्षिक वेद प्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी शुल्क सहित अविलम्ब कार्यालय को भेज दें तभी निश्चित समय पर अधिवेशन एवं चुनाव होने की पृष्ठभूमि बनती है।

यद्यपि कार्यालय, अधिकारी वर्ग तथा सर्वहितकारी गत नवम्बर मास से आर्य समाजों के अधिकारियों को उनका यह आवश्यक कर्त्तव्य स्मरण कराते चले आ रहे हैं। किन्तु इस सम्बन्ध में कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है। छोटी-छोटी बातों पर कमीज की आस्तीन चढ़ा लेने वाले वर्तमान युग के आर्य जिस अवसर की तलाश में रहते हैं, आश्चर्य है, वह हाथ से निकलता जा रहा है, और ये महाशय लगता है, लम्बी तानकर सो रहे हैं। सभा का समाजों के अधिकारियों को तत्काल इस ओर ध्यान देने की तथा हर आवश्यक से आवश्यक कार्य की अपेक्षा इसे प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

प्रतिनिधि फार्म भरकर सभा कार्यालय को भेजते समय जो प्रक्रियाएं पूरी करनी होती हैं उनमें से एक द्वारा समाज के सभासदों की सूची तथा उनकी मासिक तथा वार्षिक आय का विवरण देना होता है। प्रत्येक वह आर्य जो किसी आर्यसमाज का सदस्य है, उसे अपना सदस्यता फार्म भरते समय जहां आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति भविष्य के लिये अपनी प्रतिबद्धता लिखित रूप से घोषित करनी होती है वहीं अपनी मासिक आय तथा उसी आधार पर वार्षिक आय का भी ईमानदारी पूर्वक उल्लेख करना होता है। इसी आय का शतांश अर्थात् सौवां भाग शुल्क रूप में वह मासिक या वार्षिक अपने आर्यसमाज को देता है। स्मरण रहे, एक आर्य सभासद द्वारा अपने आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य शैक्षणिक, सामाजिक वा धार्मिक संगठनों या संस्थाओं को दिया जाने वाला दान इस शतांश से सर्वथा अलग होता है। इस प्रकार प्राप्त हुये शतांश का दशांश अर्थात् दसवां भाग प्रत्येक आर्यसमाज को अपनी आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजना होता है।

इस बार क्योंकि नये प्रतिनिधि स्वीकार किये जाने हैं, अतः सभा के अधिकारियों ने यह निश्चय किया है कि सभा से सम्बन्ध प्रत्येक आर्यसमाज के अधिकारियों तथा सभा के लिये निर्वाचित प्रतिनिधियों को तो अपनी आय का सौवां भाग हर अवस्था में अपने समाज को देना ही होगा, तभी सभा उन्हें मान्यता देगी। इस शर्त के पूरा न किये जाने की स्थिति में सभा को कठोर कदम उठाना होगा। ऐसा करने का मुख्य कारण यही है कि प्रायः समाजों में आज भी एक रुपया मासिक या 12 रुपये वार्षिक से ऊपर देने वाला सभासद शायद ढूंढने पर भी मुश्किल से ही उपलब्ध हो। यह एक कटु सत्य है कि आज का आर्य किसी दूसरे मतावलम्बी की अपेक्षा कहीं अधिक दोहरे आचरण को मान्यता देने लगा है। अपनी समाज को ईमानदारी पूर्वक शतांश न देना इस बात का द्योतक है। भला विचारिये। आर्यसमाज के सभासदों का एक बड़ा वर्ग जो सरकारी अथवा गैर-सरकारी कर्मचारी, व्यापारी अथवा दुकानदार है, क्या उसका वेतन या मासिक आय मात्र 100 रुपये ही है, जो वह एक रुपया मासिक अपनी आर्यसमाज को दे रहा है। कर्मचारियों के सम्बन्ध में तो आज यह धारणा प्रत्येक की बन चली है, तथा अकारण नहीं बनी है कि वेतन के अतिरिक्त ऊपर से कहीं उससे भी अधिक बन जाता है?

आर्यसमाजों के उत्सव आदि आयोजनों को सफल करने गये प्रचारक-उपदेशक जब लौटकर यह सुनाते हैं कि 'समाज बहुत गरीब थी' अतः सभा के लिये वेद प्रचार अधिक नहीं मिल सका, तो सुनकर शर्म आने लगती है और उनसे पूछने पर यह जानकर कि सभी आर्यों के भवन भव्य थे, सामाजिक स्तर भी औरों की अपेक्षा कहीं ऊंचा था, उनके व्यक्तिगत तथा पारिवारिक आय के साधन भी पर्याप्त थे, कोठी में टी. वी. भी लगा था, कार भी थी, बुद्धिजीवी को कुढ़न होने लगती है। कैसे आर्य हैं ये लोग, जिनके अपने प्रयोग के लिये तो साधनों तथा सम्पत्ति का अम्बार लगा होता है तथा उनकी मां आर्यसमाज कंगाली में जैसे-तैसे समय काट रही होती है। क्या आर्यों ने कभी सोचा है कि धर्म प्रचार क्षेत्र से प्रतिभा का पलायन क्यों तेजी से होता जा रहा है? इसका मुख्य कारण है आर्यों का मात्र अपने और अपने लिये ही चिन्तित रहना। उनकी आर्यसमाज गरीब है तो पड़ी रहे, उनके उपदेशक विपन्न हैं तो होते रहें, उन्हें किसी से क्या लेना? एक समय था जब मन-वचन और कर्म से एक रूप रहने वाले आर्यों की सर्वत्र धाक थी और आज............। तभी आर्यसमाज को लोगों ने विश्व के पाप-तापों को भस्मीभूत कर देने वाली आग के रूप में देखा था।

सभा के वर्तमान अधिकारियों ने अपनी समाजों के सभासदों विशेषकर अधिकारियों तथा प्रतिनिधियों से ईमानदारी पूर्वक शतांश वसूलने का जो साहसिक निर्णय लिया है, परमात्मा करे, वे अन्त तक इस पर सुदृढ़ रहें, इसके लिये वे बधाई तथा धन्यवाद के पात्र हैं। कभी किन्हीं परिस्थितियोंवश शतांश में ढील दे दी गई होगी। यद्यपि वह उस समय भी अनुचित थी। यहीं अधिकारी वर्ग की भी परीक्षा होनी है, क्योंकि जिन हालातों में कभी शतांश में ढील दी गई थी न्यूनाधिक वे सदैव विद्यमान रहने वाले हैं। आर्यों का आर्यत्व भी इसी में है कि उनके आचारण में कहीं भी दोहरापन न हो। उनका मन-वचन तथा कर्म एक-समान हो। अधिकारियों द्वारा समय रहते एक बुराई को दूर करने के लिये लिये गये निर्णय का सहर्ष पालन करें, इसी का नाम अनुशासन है, जो आर्यों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है।

—रणवीर

परम आनन्द को प्राप्त करो

—वेद पथिक धर्मवीर आर्य
झण्डाधारी सराय रूहिला, नई दिल्ली-५

सृष्टि के आदि काल से अनन्त योनियों के महाचक्र में मानव आनन्द की तलाश में भटक रहा है। परमानन्द की प्राप्ति हो मानव-जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। शान्ति के बिना, मन की एकाग्रता के बिना और आत्मज्ञान के बिना परम आनन्द को मानव प्राप्त नहीं कर पाता है।

योग की सिद्धियों से समृद्ध हो जाने पर मानव अपने को देव की संज्ञा का अधिकारी बना पाता है। मन, वचन और कर्म से जब मनुष्य, निर्दोष बन जाता है, तब मनुष्य समाधि अवस्था में परम आनन्द का अलौकिक अनुभव करने लगता है।

हे मनुष्यो ! उठो, जागो, अपने आपको पहचानो और आनन्द की अमृत धारा में, ज्ञान सागर में गोता लगाकर बहुमूल्य रत्नों को प्राप्त कर अक्षय सुख के अधिकारी बनो। यह ध्यान रहे ज्ञान के बिना मनुष्य मोक्ष अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता। मन-मंदिर में ज्ञान की ज्योति जगाये बिना आत्मज्ञान सम्भव नहीं।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः—मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण है। यह शास्त्रों का अमर उपदेश है। यह ध्यान रहे, 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'। मन के द्वारा अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने की साधना ही असली साधना है।

जिन महापुरुषों में आत्मबल प्रादुर्भूत हो जाता है वे महात्माजन जगत् कल्याण में प्रतिपल लगे रहकर अनुकरणीय बन जाते हैं। सुख-दुख, सम्पत्ति-विपत्ति में, दुर्दिनों की अंधियारी में, जीवन और मृत्यु को विभीषिकाओं में जिन महापुरुषों को परमात्मा की सत्ता प्रत्यक्ष अनुभव होने लग जाती है, वैसे महात्माओं के सम्पर्क में आकर सामान्य मानव भी कुन्दन के समान चमकने लग जाता है।

हे मनुष्यो ! सुनो और ध्यानपूर्वक सुनो ! मृत्यु के विकराल काल से यदि बचना चाहते हो तो अपने आपको पहचान कर ज्ञान की ज्योति को जला कर अमर बनो।

वेदोक्त जीवन बनाये बिना भवसिन्धु से पार होना सर्वथा असम्भव है। अतः कर्मवीर, प्रणवीर और धर्मवीर बनो। आस्तिक बनो, ईश अनुराग के पावन पराग में पगो। चिर निद्रा को त्याग कर जगो, जगत् को जगा दो।

वेदों, एवं समस्त धर्म ग्रन्थों का सार क्या है ? यदि इस रहस्य को जानने की इच्छा मानव के हृदय में जागृत हो जाये तो वह धीरे-धीरे सत्पथ की ओर प्रेरित होने लगता है। अपने जीवन का आदर्श महान् बनाओ। आदर्श-हीन जीवन व्यर्थ है। वीरों का आदर्शयुक्त जीवन हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है।

विश्व के समस्त रत्नकोष से भी अधिक मूल्यवान आत्मज्ञान का प्रकाश-पुञ्ज है। आत्म-ज्ञान को प्राप्त किये बिना मानव संशय के शूलों में जीवन भर भटकता है। ज्ञान रूपी सूर्य उदित हो रहा है। आओ इस रवि की छवि को एक बार देखकर आनन्द के रत्नकोष के स्वामी बनो। भौतिक माया की ठीकरियों के पीछे जीवन नष्ट मत करो।

वाचो अग्रे मधु मे—वेद भगवान् का यह उपदेश है कि मेरी वाणी में सदा माधुर्य का निवास हो। विश्व के मानव मात्र से ही नहीं, अपितु प्राणी मात्र से मित्रता का व्यवहार करो। सदा सत्य, हितकारी और मधुर वचन ही बोलो।

वसुधैव कुटुम्बकम्—समस्त वसुधा को अपना कुटुम्ब मानकर परमात्मा की सृष्टि से प्यार करो। परायी आग में कूदना सीखो। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण में कहा है—

"परहित सरस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहीं अधमाई॥"

परोपकार, परसेवा और यज्ञमय जीवन में एक विवेकी आर्य पुरुष जो आनन्द का अनुभव करता है उस आनन्द की अनुभूति चक्रवर्ती सम्राट् भी नहीं कर सकता।

यह भारत वर्ष कभी विश्व का गुरु था। यहाँ आत्म-ज्ञान की और सुख समृद्ध की धारा बहा करती थी। उस समय जीवन में सादगी थी, संयम था, सदाचार था। पराई स्त्रियों के प्रति माता, बहिन और पुत्री की भव्य भावना से परिपूरित जन-मन पाये जाते थे। परस्पर सौहार्द था। कोई असत्य धन को ललचाई नजरों से नहीं देखता था।

मानव जीवन में सन्तोष रूपी धन ही परम धन है। सन्तोष के बिना चक्रवर्ती सम्राट् भी कंगालों का कंगाल है। इसलिए आनन्द प्राप्त करना चाहते हो तो दूसरों के शोषण से नहीं, अपने उद्यम और पुरुषार्थ से प्राप्त धन में ही सन्तोष करो।

जब तक मनुष्य काम-वासनाओं का कीड़ा बना रहेगा तब तक वह अपने आपको पहचान न सकेगा। इसलिए अपने आप को पहचानो। जीवात्मा और परमात्मा के शुद्ध स्वरूप को पहचान कर परमात्मा की उपासना में जो आनन्द एक सन्त तपस्वी को होता है, उस आनन्द को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसलिए भौतिक पदार्थों के सुख से इन्द्रियों को हटाकर आत्मज्ञान की ज्योति जगाओ और परम आनन्द को प्राप्त करो।

(पृष्ठ २ का शेष)

हमेश करते हैं हड़ताल छोड़ जाते हैं कक्षा।
अध्यापक से दंगम-दंगा पढ़ते हैं यह शिक्षा॥

धार्मिक शिक्षा में ही राष्ट्र रक्षा निहित है। आजकल विद्यालयों कालेजों में नैतिक शिक्षा की कमी के कारण अनुशासन नजर नहीं आता। विद्यार्थी गुरु को गुरु नहीं समझता आज स्वामी विरजानन्द जी जैसे गुरु और स्वामी दयानन्द जी जैसे शिष्य कहाँ हैं ? अच्छी शिक्षा से बच्चों में अच्छे संस्कार पनपते हैं, वे बड़े होकर अच्छे नागरिक बनते हैं जिनके हाथ में ही देश का भविष्य सुरक्षित रह सकता है। यदि जनता यह चाहती है कि हमारा भविष्य उज्जवल बने तो बच्चों को धार्मिक शिक्षा में रंगना होगा।

बदला जमाना, तुम भी बदलो, बदलो सारा नक्शा।
हो भारत में फिर से वही सत्य पुरानी शिक्षा॥

हरयाणा के कोने कोने में सर्वत्र हड़ताल तथा शक्ति प्रदर्शन

जीन्द (मा० बद्रीप्रसाद आर्य द्वारा) हरयाणा रक्षा वाहिनी के आह्वान पर जीन्द शहर तथा जीन्द जंकशन में हड़ताल सफलता पूर्वक हुई। सभी दूकानें बन्द रही। लोगों से सुना गया कि इतनी शानदार हड़ताल आज से पूर्व कभी नही हो सकी। होटल, कारखाने, कचहरी शिक्षण संस्थाएँ सभी बन्द रही।

नागरिकों की ओर से जिलाधीश को एक ज्ञापन प्रस्तुत करके प्रधानमन्त्री से मांग की गई कि उग्रवादी अकालियों की हिंसक गतिविधियों को रोका जावे। अमरीकी राजदूत को अमरीका भेजा जावे। सतलुज यमुना लिंक नहर को शीघ्र पूरा किया जावे। शाहआयोग तथा प्रधानमन्त्री के फैसले लागू किये जावें।

बिलासपुर जि० अम्बाला (श्री मामचन्द आर्य द्वारा) प्रो० शेरसिंह जी के आदेशानुसार ८ जुलाई को आर्यसमाज रानीपुर के मन्त्री श्री रूबेलसिंह, आर्यसमाज कोटड़ा के प्रधान श्री मेहरसिंह और आर्यसमाज बिलासपुर के अधिकारियों के सहयोग से बिलासपुर में पूर्ण हड़ताल करवाई गई। बिलासपुर के अन्य संघठनों ने भी सहयोग दिया। बिलासपुर के प्रमुख नागरिकों ने एक बैठक करके निश्चय कि हम हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सत्याग्रह भी करने के लिए तैयार हैं।

नारनौल जि० महेन्द्रगढ (वैद्य हरिश्चन्द्र द्वारा) हरयाणा रक्षा वाहिनी के अहवान पर नारनौल में ८ जुलाई को छोटी तथा बड़ी दुकानें, रक्षा, तांगें वालों ने पूर्ण हड़ताल की। वकील भी अदालतों में नहीं गये। ८-७-८३ को प्रातःकाल हजारों की सख्या में आजाद चौक में जन सभा की गई और उसके बाद जलूस के रूप में बाजारों से होते हुए जिलाधीश के आवास पर गये और उन्हें अपनी मांगों का ज्ञापन दिया। हड़ताल को सफल करने में आर्यसमाज, सनातन धर्म, व्यापार मण्डल तथा विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकर्त्ताओं ने बढ चढ़कर भाग लिया।

कुरुक्षेत्र (श्री धर्मदेव विद्यार्थी) हरयाणा रक्षावाहिनी के आह्वान पर ८ जुलाई को कुरुक्षेत्र तथा थानेसर शहर में पूर्ण हड़ताल रही। श्री कृष्णलाल बधवा, चौ० सत्यदेवसिंह ने अपने साथियों सहित २, ३ दिन तक हड़ताल की तैयारी करने में दिन रात परिश्रम किया। ८ जुलाई को शहर में जलूस निकाला गया। स्वामी रुद्रवेश, डा० अमीरसिंह आर्य, आदि ने खालिस्तान के विरुद्ध खुलकर प्रचार किया। इस दिन शिक्षण संस्थाएं भी बन्द रही। नागरिकों की ओर से जिलाधीश को ज्ञापन देकर पंजाब के हिन्दुओं की सुरक्षा करने के लिए गुरुद्वारों में छिपे हुए कातिलों को सख्त सजा देने की मांग की गई।

समालका मण्डी जि० करनाल—(श्री ओमप्रकाश आर्य द्वारा) ८ जुलाई को नगर में पूर्ण हड़ताल रही। चाय, पान तथा सब्जी आदि की भी दूकानें बन्द रही। जलूस निकाल कर पंजाब में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध रोष प्रकट किया गया। एक बैठक में प्रस्ताव पास करके उसकी प्रतियाँ प्रधानमन्त्री तथा मुख्य मन्त्री को भेजी गई।

शाहबाद मारकण्डा—(श्री सुरेश कुमार शास्त्री द्वारा) रक्षावाहिनी के निर्देश पर ८ जुलाई को हिन्दू तथा सिखों ने मिलकर नगर में हड़ताल रखी। सद्भावना के रूप में जलूस नही निकाला गया।

कैथल—यहाँ भी ८ जुलाई को पूर्ण हड़ताल रही। दूकानदारों के साथ वकीलों ने भी इसमें भाग लिया। उपमण्डल अधिकारी को ज्ञापन दिया गया।

पिंजोर–आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को तथा अन्य धार्मिक संगठनों के सहयोग से शहर में हड़ताल सफल रही।

नारायणगढ—नारायणगढ में भी हड़ताल होने का समाचार प्राप्त हुआ है।

कालका—कालका में ८ जुलाई को नगर में पूर्ण हड़ताल रही। दुकानों के साथ शिक्षण संस्थाएँ भी बन्द रही।

गुड़गांव—(श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री) गुड़गांव में हरयाणा रक्षा वाहिनी के अहवान पर आंशिक रूप में हड़ताल रही।

सोहना—सोहना में हड़ताल शान्ति पूर्वक सफल रही। सारा बाजार बन्द रहा।

नूह—यहाँ भी ८ जुलाई को बाजार तथा अन्य कारोबार बन्द रहा।

पलवल—(पं० धर्मचन्द विद्यालंकार) हरयाणा रक्षावाहिनी के आहवान पर पलवल शहर तथा कालोनी में पूर्ण हड़ताल रही। उप-मण्डल अधिकारी को ज्ञापन देकर हरयाणा के हितों की रक्षा तथा पंजाब के हिन्दुओं पर हो रहे हमलों को रोकने के लिए उपमण्डल अधिकारी को ज्ञापन दिया गया।

बल्लबगढ तथा फरीदाबाद—बल्लबगढ़ तथा फरीदाबाद के सभी सैक्टरों में हड़ताल के कारण दुकानें बन्द रहीं।

भिवानी—(श्री गणपतसिंह आर्य द्वारा) हड़ताल की तैयारी के लिए ६-७-८३ को जवाहर चौक भिवानी में रात्रि को एक जनसभा का आयोजन किया गया। इसमें हरयाणा रक्षावाहिनी के प्रचारक पं० सुखदेव शास्त्री, मा० ओमपालसिंह तथा व्यापार मण्डल के नेताओं ने हड़ताल को सफल करने की अपील की। ८-७-८३ को सारे नगर में पूर्ण हड़ताल रही। सभी दूकाने बन्द रही। बार एसोसियेशन ने भी हड़ताल में भाग लिया। नगर में एक जलूस निकाला गया तथा रक्षावाहिनी भिवानी के जिला अध्यक्ष श्री अजीतसिंह एडवोकेट ने सहायक उपायुक्त श्री एन० के० टण्डन को ज्ञापन प्रस्तुत किया। इसकी प्रतियाँ प्रधान मन्त्री मुख्यमन्त्री हरयाणा को भी भेजी गई।

हरयाणा में निहंगों को लगाम देने की माँग

हरयाणा रक्षावाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिंह तथा संयोजक महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ने पानीपत में तीन सिखों द्वारा दो व्यक्तियों को गाली मारकर घायल करके भाग जाने की घटना की निन्दा करते हुए हरयाणा सरकार से मांग की है कि इस प्रकार के मोटर साईकलों पर घुमने वाले सिखों पर निगाह रखी जावे। ८ जुलाई के शान्ति पूर्ण प्रदर्शन पर करनाल तथा यमुनानगर में उग्रवादी निहंगों द्वारा पत्थरवाव करने तथा एक मासुम बच्चे पर किरपान से हमला करने वाले अपराधियों को गिरफ्तार करके उनके विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जावे। अतः हरयाणा में निहंग जो हिंसक गतिविधियाँ करने की कुचेष्ठा कर रहे हैं उन्हें लगाम दी जावे।

हरयाणा रक्षावाहिनी के नेताओं ने ८ जुलाई को शान्ति पूर्ण हड़ताल की सफलता पर हिन्दू सुरक्षा समिति व्यापार मण्डल तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक संगठनों को भी तन मन धन से सहयोग देने पर आभार प्रकट किया है।

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो चुकी है। अतः अगस्त, सितम्बर मास में आर्यसमाजें वेद प्रचार सप्ताहों का आयोजन करें। सभा की ओर से पं० चन्द्रसेन वैदिक मिश्नरी, पं० सुखदेव शास्त्री, पं० धर्मचन्द विद्यालंकार, पं० सुरेश कुमार शास्त्री विद्या वाचस्पति उपदेशकों, पं० हरलाल, पं० शेरसिंह, प० बनारसीलाल, पं० मुरलीलाल, पं० चिरञ्जीलाल, पं० ईश्वरसिंह, पं० मूरतसिंह तथा प० सुमेरसिंह भजनोपदेशकों का कार्यक्रम बना दिया जावेगा।

इनके अतिरिक्त स्वामी जीवनानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य सुदर्शनदेव जी, पं० रणवीर शास्त्री एम० ए० आदि विद्वानों ने भी वेद प्रचार सप्ताहों के लिए अपना अमूल्य समय देना स्वीकार किया है।

आर्यसमाजें अपनी सुविधानुसार तिथियाँ नियत करके सभा को पत्र लिखने का कष्ट करें ताकि समय पर प्रबन्ध किया जा सके।

—सभा मन्त्री

स्वर्गीय श्री लालमन जी आर्य का अनुकरणीय समाजसुधार कार्य

श्री लालमन आर्य का जन्म सन् 1911 में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में ग्राम शेरड़ा, जिला श्री गंगानगर, राजस्थान में हुआ था। युवावस्था में ही उन्हें आर्य समाज के सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और वैदिक धर्म के प्रति उनकी आस्था में निरन्तर वृद्धि होती गयी। उन्होंने अपने घर से सामाजिक सुधारों का कार्य प्रारम्भ किया और मृतक भोज, श्राद्ध, छुआछूत परदा प्रथा दहेज और बाल विवाह आदि कुप्रथाओं के वह कट्टर विरोधी हो गये। वे विधवा विवाह हितकारिणी सभा के कई वर्षों तक प्रधान रहे। जो कोई भी उनके सम्पर्क में आया, उनसे प्रभावित होकर आर्य समाज की धारा में सम्मिलित हो गया। उनका जीवन आर्य मन्तव्यों के पूर्णतया अनुरूप था। वह स्वयं प्रतिदिन संध्या हवन करते थे तथा परिवार वालों को निरन्तर प्रेरणा देते रहते थे। उनके परिवारों में उनकी प्रेरणा से दैनिक सप्ताहिक यज्ञ की परिपाटी शुरू हुई। वे सरल भाषा में कविताएं लिखकर व स्वयं गाकर दूसरों को कुप्रथाओं व अन्धविश्वासों के प्रति निरन्तर सचेत करते रहे।

हरयाणा में सन् 1950 के भयंकर सूखे व अकाल के समय मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी कलकत्ता के तत्वाधान में एवं रोहतक में आयी हुई प्रलयकारी ऐतिहासिक बाढ़ में हरयाणा नागरिक सघ कलकत्ता की ओर से हुए सेवा कार्य में उन्होंने अपने आपको स्वयं सेवक के रूप में पूरी तरह लगा दिया।

61 वर्ष की आयु में उन्होंने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर लिया वे धर्म तथा समाज सेवा में पूरी तरह लग गये तथा अपना निवास माडल टाउन हिसार में रखा। वे बराबर आर्य समाज तथा देश की विविध संस्थाओं को रचनात्मक व आर्थिक सहयोग देते रहे। वह दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार, गुरु विरजानन्द वैदिक साधना आश्रम मथुरा, बाल सेवा सदन भिवानी, वैश्य विधवा हितकारिणी सभा आर्य समाज बड़ा बाजार ट्रस्ट कलकत्ता, आर्य प्रादेशिक उप प्रतिनिधि सभा हरयाणा आदि संस्थाओं के माध्यम से धर्म तथा समाज की सेवा में संलग्न रहे। अपने जन्म स्थान शेरड़ा में उनके निर्देशन से बने स्कूल औषधालय, कूप, आर्य सरोवर और विश्रामालय आदि उनकी दानशीलता के परिचायक हैं।

गत 20 जून 1983 को अचानक हृदय गति रुक जाने से बैंगलूर में उनका देहावसान हो गया। वे अपने पीछे वृद्धा माता व पत्नी व तीन सपुत्र सर्व श्री गजानन्द आर्य, प्रकाशानन्द आर्य तथा सत्यानन्द आर्य एवं चार सुपुत्रियां, पौत्र, पौत्रियां एवं नातियों आदि से भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। जो उनके आदर्श के अनुसार धर्म तथा समाज की सेवा में तत्पर हैं।

आर्य स्कूल सिरसा के होनहार छात्र



संजय आर्य



रणजीत सिंह

इस वर्ष भी आर्य हा० से० स्कूल सिरसा का मैट्रिक परिणाम शानदार रहा है। हमारे दो विद्यार्थियों संजय आर्य व रणजीत सिंह ने क्रमशः 687 व 686 अंक लेकर हरियाणा की मैरिट सूचि में स्थान प्राप्त किया है। विद्यालय का कुल परिणाम 70% रहा है।

प्रिंसिपल द्वारका प्रसाद जिन्दल

विवाहों के प्रकार

आसुर विवाह

पूज्य महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संस्कार विधि में विवाह प्रकरण के अन्तर्गत ८ प्रकार के विवाह गिनाये हैं—

ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य,
आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच

जिनमें प्रथम चार श्रेष्ठ कोटि के तथा अन्तिम चार निकृष्ट कोटि के गिनाये गये हैं।

वर्तमान युग में विवाह-संस्कारों को यदि इस कसौटी पर परखने है तो अधिकतर विवाह आसुर कोटि के सम्पन्न हो रहे हैं। इसीलिये नित्यप्रति जघन्य अपराध जन्म ले रहे हैं। महर्षि ने आसुर कोटी में विवाह संस्कार की व्याख्या करते हुए लिखा है "वर की जाति वालों और कन्या को यथाशक्ति धन देके होम आदि विधि कर कन्या देना आसुर विवाह कहलाता है।"

(१) कन्या के योग्य, सुशील, विद्वान् पुरुष का सत्कार करके कन्या को वस्त्रादि से अलंकृत करके उत्तम पुरुष को बुला अर्थात् जिसको कन्या ने प्रसन्न भी किया हो, उसको कन्या देना वह ब्राह्म विवाह कहाता है।

(२) विस्तृत यज्ञ में बड़े-बड़े विद्वानों का वरण कर उसमें कर्म करने वाले विद्वान् का वस्त्र आभूषण आदि से कन्या को सुशोभित करके देना वह दैव विवाह है।

(३) एक गाय-बैल का जोड़ा अथवा दो जोड़े (यह बात मिथ्या है, क्योंकि आगे मनुस्मृति में निषेध किया है और युक्तिविरुद्ध भी है, इसलिए कुछ भी न लेके दोनों की प्रसन्नता से पाणिग्रहण होना आर्ष विवाह है।) वर से लेके धर्मपूर्वक कन्यादान करना वह आर्ष विवाह है।

(४) कन्या और वर को यज्ञशाला में विधि करके सबके सामने तुम दोनों मिल के गृहाश्रम के कर्मों को यथावत् करो, ऐसा कहकर दोनों की प्रसन्नतापूर्वक पाणिग्रहण होना वह प्राजापत्य विवाह कहाता है। ये चार विवाह उत्तम हैं।

(५) वर की जाति वालों और कन्या को यथाशक्ति धन देके होम आदि विधि कर कन्या देना आसुर विवाह कहाता है।

(६) वर और कन्या की इच्छा से दोनों का संयोग होना और अपने मन में मान लेना कि हम दोनों स्त्री-पुरुष से हैं, यह काम से हुआ गान्धर्व विवाह कहाता है।

(७) हनन, छेदन अर्थात् कन्या के रोकने वालों का विदारण कर क्रोशती, रोती, कांपती और भयभीत हुई कन्या को बलात्कार हरण करके यह राक्षस विवाह।

(८) और जो सोती, पागल हुई या नशा पीकर उन्मत्त कन्या को एकान्त पाकर दूषित कर देना, यह सब विवाहों में नीच से नीच, महानीच, दुष्ट, अतिदुष्ट, पैशाच विवाह है। (संस्कार विधि से उद्धृत)

योग्य वर की आवश्यकता

आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई द्वारा पालित एवं सुरक्षित कन्या गुरुकुल बड़ौदा से १० कक्षा तक पढ़ी, सुशील, गृह कार्य में दक्ष, कद पांच फुट, १६ वर्षीया कन्या के लिए स्वावलम्बी, निर्व्यसनी और आर्य विचारों के वर की आवश्यकता है।

मंत्री आर्य समाज काकड़वाड़ी,
विट्ठलभाई पटेल मार्ग
बम्बई-४

(पृष्ठ १ का शेष)

महम—हरयाणा रक्षा वाहिनी के निर्देश पर नगर में पूरी हड़ताल रही। नागरिकों की ओर से जलूस निकाला गया। सुनने में आया है कि कुछ निहंगों ने शरारत करने का प्रयत्न किया परन्तु कालेज के छात्रों ने बाहर निकाल दिया।

सांपला:—(श्री अर्जुनदेव आर्य द्वारा):— सांपला मण्डी में हरयाणा रक्षा वाहिनी के आह्वान पर पूर्ण हड़ताल रही। डाक्टरों तथा व्यापारियों ने अपनी दुकानें बन्द रखीं।

बहादुरगढ मण्डी तथा शहर में सभी दुकानें बन्द रहीं।

झज्जर—यहां भी सारा बाजार बन्द रहा। वकील अदालत में नहीं गये। उपमण्डल अधिकारी को ज्ञापन दिया गया।

गोहाना—मण्डी तथा शहर में हड़ताल का आयोजन किया गया।

सोनीपत (फोन द्वारा):— हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से जिलाधीश को ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। शहर में सभी दुकानें बन्द रहीं।

पानीपत—हरयाणा रक्षा वाहिनी के आह्वान पर मण्डी तथा शहर में सारा दिन हड़ताल रही। उपमण्डल अधिकारी को ज्ञापन दिया गया। इस के बाद एक सार्वजनिक सभा का भी आयोजन किया गया। जिसमें चौ० धर्मसिंह राठी एडवोकेट, श्री रामेश्वरदयाल तथा अन्य नेताओं ने सम्बोधित किया। शिक्षण संस्थायें तथा "दैनिक हरियाणा भूमि" का कार्यालय भी बन्द रहा।

करनाल (फोन द्वारा):— नगर में पूर्ण हड़ताल रही। रक्षा वाहिनी के कार्यकर्त्ताओं ने अपने सिख भाइयों से भी हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए दुकानें बन्द करने की प्रार्थना की। परन्तु इसपर गुरुद्वारा मंजी साहब के अन्दर के सशस्त्र निहंग बाहर निकल कर सड़क पर आ गये और रक्षा वाहिनी के कार्यकर्त्ताओं को धमकियां देनी शुरु कर दीं। एक निहंग ने एक ८, १० वर्ष के बच्चे का तलवार से बाजू काट दिया। उत्तेजित भीड़ को काबू करने के लिए पुलीस ने आंसू गैस छोड़ी। प्रदर्शनकारियों ने जिलाधीश को ज्ञापन देकर अपराधियों को गुरुद्वारों से बाहर निकाल कर जेलों में डालने की मांग की। यहां ९ जुलाई को भी हड़ताल रही।

यमुनानगर—यहां भी हरयाणा रक्षा वाहिनी की अपील पर नगर में हड़ताल रखी गई। नागरिकों ने शान्तिपूर्ण जलूस निकाला। खालसा कालेज के भू० पू० प्रिंसिपल श्री सत्यवीर सिंह की कोठी की छत से प्रदर्शनकारियों पर २५ मिनट तक पत्थर फेंके गये। इसपर तनाव बढ गया। वाहिनी की ओर से उपमण्डल अधिकारी जगाधरी को ज्ञापन देकर मांग की गई कि इस घटना की जांच करके इनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जावे।

हिसार—हिसार रक्षावाहिनी हरयाणा के संयोजक श्री अर्जुनदेव आर्य ने सूचित किया है कि हिसार, रतिया, फतेहाबाद, टोहाना, आदमपुर, नारनौन्द, हांसी तथा हिसार के विधान सभा के १० हल्कों में पूर्ण हड़ताल रही और हिसार शहर में डाक्टरों की दुकानों को छोड़कर शेष दुकानें बन्द रहीं। व्यापार मण्डल की सभी यूनियनों के अधिकारियों ने हड़ताल में पूरा सहयोग दिया। हड़ताल सारा दिन रही। एस.डी.एम. सिविल हिसार ने बाजार में आकर हड़ताल न करने की अपील की किन्तु नागरिकों ने उनकी अपील को ठुकरा दिया। ९-७-८३ को डा. मंगल सेन विधायक हिसार पधारे। उन्होंने कार्यकर्त्ताओं की बैठक में हड़ताल सफल करने का आह्वान किया। उनके साथ श्री भागमल विधायक भी थे। सायं को ४ वजे कटरा रामलीला में जनसभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सरदार जसवन्तसिंह नामधारी ने की। वक्ताओं ने हिन्दू सिख एकता पर बल दिया और अकालियों की घोर निन्दा की। सभा में सरदार निहाल सिंह नामधारी, श्री महेन्द्र मित्तल, भगत हरिचन्द आदि प्रमुख थे।

८ जुलाई को हड़ताल के दिन नागरिकों की ओर से जिलाधीश को ज्ञापन दिया गया। उन्होंने विश्वास दिलाया कि इस ज्ञापन की प्रतियां प्रधानमन्त्री को भेज दी जावेगी।

घरोण्डा—८ जुलाई को मण्डी में हड़ताल रही।

नीलोखेड़ी—हरयाणा रक्षा वाहिनी के आह्वान पर बाजार पूरा बन्द रहा।

लाड़वा—आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने व्यापार मण्डल के सहयोग से हड़ताल की अपील की थी। अत: ८ जुलाई को सारा बाजार बन्द रहा।

रादौर—यहां भी आर्यसमाज के नेता श्री सत्यकाम भारती तथा अन्य धार्मिक संघटनों के प्रयत्न से बाजार बन्द रहा।

सिरसा—रक्षावाहिनी के तत्वावधान में नगर में हड़ताल रही। अदालतें तथा शिक्षण संस्थाएं बन्द रहीं। ८ जुलाई को नागरिकों की ओर से शहर में जलूस निकाला गया। एक ज्ञापन देकर भारत सरकार से मांग की गई कि गुरुद्वारों से अपराधियों को तुरन्त निकाला जावे। यहां के गुरुद्वारे में हथियार जमाकर रखे हैं ताकि वे अवसर मिलते ही गडबड़ कर सकें। शाहआयोग तथा प्रधान मन्त्री के फैसलों के अनुसार चण्डीगढ तथा हिन्दी भाषा अबोहर फाजिल्का को शीघ्र हरयाणा में शामिल किया जावे।

हम सहयोग के लिए आभारी हैं।

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह तथा संयोजक महाशय भरतसिंह ने एक संयुक्त बयान में हरयाणा की जनता का आभार प्रकट करते हुए हरयाणा रक्षावाहिनी की शाखाओं तथा हिन्दू सुरक्षा समिति आदि संघटनों का धन्यवाद किया है कि थोड़े समय की तैयारी पर भी हरयाणा के सभी नगरों में हडताल शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुई है। इससे सिद्ध हुआ है कि हरयाणा के हितों की रक्षा तथा पंजाब के हिन्दू भाइयों की सुरक्षा के लिए आज हरयाणा जाग चुका है। यदि उग्रवादी अकालियों ने पंजाब के निरपराध हिन्दुओं पर गोली चलाई तो हरयाणा की जनता उसको सहन नहीं करेगी और ईंट का जवाब पत्थर से देगी।

दोनों नेताओं ने हरयाणा सरकार से मांग की है कि करनाल, यमुनानगर में शान्ति पूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गुरुद्वारे तथा एक अकाली नेता के मकान से पत्थरबाजी करके गड़बड़ करने का जो प्रयत्न किया गया है, उसकी जांच की जावे तथा गुरुद्वारों में छिपे निहंगों को बाहर निकाला जावे।

हरयाणा के हिन्दुओं से भी कहा गया है कि जब तक गुरुद्वारों में अपराधियों को शरण दी जाती है और गडबड़ करने के लिए यहां हथियार जमा किये जाते हैं, तब तक कोई हिन्दू गुरुद्वारों में जाकर चढ़ावा न चढ़ावे क्योंकि चढावे की राशि अमृतसर (पंजाब) में भेजकर इसका दुरुपयोग किया जाता है। नेताओं ने सिखों से भी अपील की है कि हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए हरयाणा वासियों से सहयोग करें। इसी में उनकी भलाई है। इस प्रकार हिन्दू सिख सद्भावना बनी रहेगी।

हरयाणा में भी उग्रवादी सक्रिय, दो को गोली मार दी

पानीपत, १० जुलाई (स) कल रात यहां रेलवे रोड़ पर तीन सिख युवकों ने जो मोटर साईकिल पर सवार थे, विशम्भर और जयकंवर नामक दो व्यक्तियों को गोली मार दी। उन्हें घायलावस्था में अस्पताल में दाखिल कराया गया है।

यह घटना यहां से आठ किलोमीटर दूर कुराड़ गांव के पास हुई। हमलावर फरार हो गए।

(दैनिक ट्रिब्यून, ११-७-८३)

"हरयाणा के हितों के लिए सभी नेता मिलकर अकालियों की अक्ल ठीक करें।"

रोहतक में आयोजित विशाल सार्वजनिक सभा में प्रो० शेरसिंह तथा अन्य नेताओं के भाषण।

रोहतक ७ सितम्बर, भिवानी स्टैण्ड पर हिन्दू सुरक्षा समिति द्वारा आयोजित विशाल सार्वजनिक सभा में हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने बोलते हुए हरयाणा के सभी राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक नेताओं से अपील की है कि हम सभी को हरयाणा के हितों की रक्षा तथा पंजाब के हिन्दू भाइयों की जान, माल व इज्जत की सुरक्षा हेतु एकजुट होकर अकालियों की अक्ल को ठीक करें।

आपने पंजाब में चल रहे अकाली आन्दोलन का उल्लेख करते हुए बताया कि वहां सरकार हिंसक गतिविधियों को रोकने में विफल हो चुकी है। पंजाब की जनता का पंजाब पुलिस पर भी विश्वास नहीं रहा क्योंकि उग्रवादी सिख नवयुवक थानों के सामने ही हिन्दुओं, निरकारियों तथा राष्ट्रवादी सिख नेताओं को दिन-दहाड़े कत्ल करके गुरुद्वारों में भाग जाते हैं और उन्हें अकाली नेता शरण दे रहे हैं। पंजाब सरकार मे साहस नहीं है कि वे गुरुद्वारों में घुसकर कातिलो को पकड़कर जेल में डाल दें। हां सरकार हिन्दुओं के मन्दिरों में बिना चेतावनी दिए कार्यकर्ताओं को पकड़कर जेलों में ठोंस देता है। यह सरासर भेदभाव हो रहा है। भारत सरकार से मांग करते हुए आपने कहा कि कानून सभी नागरिकों के लिए समान होता है। केवल गुरुद्वारों के लिए पृथक गुरुद्वारा एक्ट बनाकर धर्म के कार्यों में हस्तक्षेप किया जा रहा है। अकालियो की अनुचित मांग मानकर अमृतसर के दरबार साहिब से गुरुवाणी का प्रसारण आकाशवाणी द्वारा करने की तैयारी हो रही है परन्तु बार-बार मांग करने पर भी हिन्दुओं के धार्मिक स्थानों से वेद-वाणी के प्रसारण पर विचार तक नहीं किया जा रहा।

भारत सरकार अकालियों की हरयाणा विरोधी मांगों पर विचार करने के लिए नया ट्रिब्यूनल बैठाने की घोषणा करती है; परन्तु चण्डीगढ़ को हरयाणा को देने सम्बन्धी शाह कमीशन की रिपोर्ट को रद्दी की टोकरी में डाल दिया और प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के स्वयं किए फैसले १९७० के अवार्ड जिसमें हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को हरयाणा में मिलाना था, पर १२ वर्ष बीतने पर भी अमल नहीं किया गया। प्रो० शेरसिंह ने अकालियों पर राष्ट्रद्रोह का आरोप लगाते हुए कहा कि पाकिस्तान को तो मुफ्त में पानी दिया जा रहा है और हरयाणा को रावी ब्यास का फालतू पानी देने के लिए भी अकाली रुकावटें खड़ी कर रहे हैं। आपने चौ० चरणसिंह के साहस की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने अकालियों की खुलकर निन्दा की है तथा भारत सरकार से उनकी राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को सख्ती से कुचलने का परामर्श दिया है। परन्तु बहुगुणा जैसे नेता अपने स्वार्थ में आकर अकालियों की अनुचित मांगों का समर्थन कर रहे हैं।

आपने हिन्दू सुरक्षा समिति के नेताओं का धन्यवाद करते हुए बधाई दी कि उन्होंने हरयाणा रक्षा वाहिनी के आवाहन पर हड़ताल करने में पूरी शक्ति लगा दी।

इस सार्वजनिक सभा में श्री स्वामी अमरानन्द जी अध्यक्ष हिन्दू सुरक्षा समिति, पं० सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री परमानन्द तुली, श्री हुकमचन्द गोयल, श्री रामभेहर एडवोकेट सह-संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी, डा० मंगलसेन तथा प्रताप के सम्पादक श्री के० नरेन्द्र ने भी भाषण देते हुए पंजाब पुलिस की आलोचना की और चेतावनी दी कि यदि इसी प्रकार पंजाब पुलिस के साये में हिन्दुओं को गोलियों से मारा जाना जारी रहा तो उसकी प्रतिक्रिया हरयाणा प्रदेश में भी हो सकती है। भिण्डरवाला जैसे अपराधी को तुरन्त गुरुद्वारों से निकालकर कानून के अनुसार कड़ा दण्ड दिया जावे। नेताओं ने चेतावनी दी है कि यदि अकालियों ने हरयाणा का पानी तथा बिजली रोकी तो हरयाणा भी पंजाब के वाहनों को रोकने पर विवश होगा —केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी० न 23207/73 पंजी० स० P/RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वम्आर्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ३१ | २१ जुलाई १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

पंजाब में निर्दोष लोगों की हत्याओं से अन्य राज्यों में प्रतिक्रिया होगी —प्रो० शेरसिंह

यमुनानगर १५ जुलाई (द) हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने आरोप लगाया है कि करनाल व यमुनानगर के साम्प्रदायिक दगों को अकाली उग्रवादियो ने भड़काया था। उन्होंने कहा कि करनाल में जाकर मैंने खुद मौके की जांच की है।

कल उन्होने पत्रकारो को बताया कि वह करनाल के एक अस्पताल में दोनों सम्प्रदायों के घायल व्यक्तियों से मिले थे। उन्होंने कहा कि निहंगों ने पहले एक हिन्दू के हाथ काट दिये थे।

हरयाणा को दिये जाने वाली बिजली और पानी को बन्द करने के सम्बन्ध में अकालियो द्वारा दी गई धमकी की आलोचना करते हुए उन्होने कहा कि यदि ऐसा किया गया तो हरयाणा के लोगों को मजबूरन इसका बदला लेना पड़ेगा, जिसके परिणाम बहुत बुरे होंगे।

प्रो० शेरसिंह ने कहा कि श्री टोहरा ने यह तो कह दिया कि हरयाणा में अल्पसंख्यको की सुरक्षा की जायेगी किन्तु शायद वह यह भूल गये है कि पजाब में हिन्दू भी अल्पसख्यक हैं।

उन्होंने कहा कि पंजाबी हिन्दुओं पर हो रहे लगातार अत्याचार ने सभो को हिला दिया है। उन्होने आरोप लगाया कि अकाली दो भाईयो के बीच घृणा पैदा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अकालियों की हिंसात्मक व राष्ट्र विरोधी गतिविधियो की दूसरे राज्यो में विशेषकर हरयाणा में प्रतिक्रिया होनी आवश्यक है।

हिन्दू नेताओं की हिट लिस्ट :

चण्डीगढ़ (हि. स. सागर) प्रो० शेरसिंह ने अकाली नेता श्री गुरचरणसिंह टोहरा पर पजाब के अलावा हरयाणा में हिन्दू और सिखो मे तनाव पैदा करने का आरोप लगाया और उनको राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार करने की मांग की।

प्रो० शेरसिंह ने आज यहां एक सवाददाता सम्मेलन में श्री टोहरा की हरयाणा में करनाल और यमुनानगर की हाल की यात्राओं पर गम्भीर आपत्ति की और कहा कि उन्होंने स्थानीय सिखों को भड़काया। उन्होने कहा कि विश्वस्त सूत्रों से मिली उनकी जानकारी के अनुसार श्री टोहरा ने यमुनानगर के कुछ हिन्दू नेताओं की सूची सफाया करने के सम्बन्ध में तैयार की हैं।

जबाबी रास्ता रोको :

उन्होने अकाली नेताओं द्वारा हरयाणा को बिजली व पानी की आपूर्ति रेखा काटने की धमकियों का उल्लेख करते हुए कहा कि हरयाणा की जनता पर ऐसी धमकियों की प्रतिक्रिया हो रही है और वह जबाबी कार्यवाही के तौर पर रास्ता रोको आन्दोलन शुरू करने पर विचार कर रहें हैं। उन्होने फाजिल्का और अबोहर मे पजाब सरकार द्वारा निषेधाज्ञा जारी रखने की आलोचना की और कहा कि स्थानीय लोगों द्वारा इसके विरुध आन्दोलन किये जाने पर हरयाणा रक्षा वाहिनी भी उसमें सहयोग देगी। (पंजाब केसरी दिनांक १६-६-८३)

हरयाणा रक्षावाहिनी के नेता करनाल तथा यमुनानगर में

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह, सयोजक महाशय भरतसिंह तथा हिन्दू सुरक्षा समिति के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द एवं उपाध्यक्ष श्री परमानन्द तुली १४ जुलाई को १२ बजे करनाल गये। वहाँ स्थानीय सिविल हस्पताल में भी गये जहां ८ जुलाई को एक निहंग द्वारा एक हिन्दू नवयुवक का किरपाण से हाथ काट दिया था। उसके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की और उनके परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट की। इसके बाद दोपहर बाद ७ बजे यमुनानगर भी गये और वहां स्थानीय कार्य कर्त्ताओ से विचार विमर्श किया। उन्हें बताया गया कि शान्तिपूर्ण हड़ताल के दिन अकालियों ने अपने मकानों की छतों से ईंट पत्थर फेंक कर वातावरण को जान-बूझकर खराब किया।

दिल्ली प्रसभा में आर्य नेताओं के भाषण

खतरे की घडी में सारा देश पंजाब वासियों के साथ

नई दिल्ली १५ जुलाई (वि०प्र०) कल शाम आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में आयोजित एक भारी प्रसभा में दिल्ली के धार्मिक नेताओं ने पंजाब की वर्तमान घटनाओं पर गहन चिन्ता व्यक्त की। इन धार्मिक नेताओं ने पंजाब के लोगों को आश्वासन दिलाया कि इस खतरे की घडी में सारा देश उनके साथ हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाला ने कहा कि अब देश का और विभाजन नहीं होने दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि देश के कौने-कौने से पजाब को मदद करने के लिए तैयार है।

श्री शालवाला ने पण्डित अमरनाथ शर्मा को पंजाब हिन्दू संगठन के लिए बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि दैनिक वीर प्रताप और प्रताप के संचालक और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र इस गम्भीर समय में पजाब की राष्ट्रवादी शक्तियों को सफल नेतृत्व देगें।

प्रसभा में हरयाणा के स्वामी ओमानन्द जी ने पजाब के नागरिको को आश्वासन देते हुए कहा कि हरयाणा उनके साथ है और जहां आपका पसीना गिरेगा वहाँ हमारा खून बहेगा। पजाब हिन्दू संगठन के अध्यक्ष अमरनाथ शर्मा ने पजाब की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। श्री वीरेन्द्र ने लोगों के समक्ष जालन्धर के सोढल मन्दिर समस्या के बारे में विवरण दिये।

(दैनिक वीरप्रताप १९-७-८३)

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्।

गायत्री मन्त्र प्रश्नातीत है।

—डा० विश्वबन्धु "व्यथित"
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी०ए०वी० कालेज अबोहर।

यह सदेहातीत है कि वसुधैव कुटुम्बकम् के आदर्श का पालन करने वाली और आर्यसंस्कृति की अनुगामिनी हिन्दुजाति अत्यन्त सहनशील और उदारवृत्ति वाली होने से सर्व धर्म समानता और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता में विश्वास रखती है। लेकिन इसका यह अर्थ लगाना ठीक नहीं है कि जो कोई, जब चाहे, इसके धार्मिक विश्वासों के मूल पर आघात करके, झूठे अथवा अधूरे उद्धरणों का सहारा लेकर इसकी सर्वमान्य धारणाओं का उपहास करने की चेष्टा करे, तो उसका प्रतिवाद तक न किया जाए।

ऐसी ही एक कुचेष्टा करने का प्रयास पिछले दिनों दृष्टिगत हुआ। हिन्दू-संस्कृति पर कुठाराघात करने का सुनियोजित उद्योग करने में पारंगत पत्रिका 'सरिता' में एक लेख 'गायत्री मन्त्र की झूठी महिमा' छपा था, हमने उसकी समस्त दुर्भावनाओं और कुतर्कों का विस्तृत उत्तर लिखा, जो दैनिक प्रताप, पंजाब केसरी, आर्य जगत्, सार्वदेशिक, दयानन्दसंदेश, यज्ञ योग ज्योति व सर्वहितकारी आदि पत्रों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ, अनेक में तो अभी तक यह सिलसिला जारी है। सरिता के लेख के लेख लेखक डा० सुरेन्द्र कुमार की दृष्टि में पंजाब केसरी में फरवरी के तीन अंकों में छपा उस लेख का संक्षिप्त रूप आया, तो सिटपिटाकर उन्होंने 'गायत्री मन्त्र प्रश्नों के घेरे में' शीर्षक से एक लेख लिख मारा, जिसे सरिता ने तो न छापा, लेकिन उन्हें जोर डालकर पंजाब केसरी के ११-५-८३ के अंक में उसे इस टिप्पणी के साथ प्रकाशित करवा लिया कि आगे इस का उत्तर न दिया जाए। क्योंकि शर्मा जी को उत्तर प्रकाशित होने पर अपने झूठ का पर्दाफाश होने और अपने कुतर्कों के उजागर होने का पूरा-पूरा संदेह था। इसके विपरीत हमने अपने लेख की सवप्रथम प्रति उनके ध्यान में लाने और उसका तर्कपूर्ण उत्तर पाने की समीक्षा के साथ सरिता के सम्पादक विश्वनाथ जी को रजि० डाक से भेजी थी। जिसका उत्तर देना तो दूर, उसका जिकर तक करना उन्हें खतरे से खाली न लगा, यही कारण है कि अपने स्वभाव के विपरीत उन्होंने इस गायत्री चर्चा के विषय पर एक पंक्ति भी 'सरिता' में विगत छः मास से प्रकाशित करने का साहस नहीं किया।

इसके ठीक विपरीत हम सरिता के सम्पादक और उसके चर्चित लेखक डा० सुरेन्द्र शर्मा को इस विषय पर शास्त्रार्थ करने की खुली चेतावनी देते हैं। पहले भी कई आर्य विद्वान् ऐसी घोषणाएं कर चुके हैं। क्या सरिता के लेखक और सम्पादक वर्ग में ऐसी चुनौती स्वीकार करने का साहस है? यदि नहीं, तो उन्हें अपने साधनों का दुरुपयोग करते हुए जनसामान्य को बहकाने और आर्यसंस्कृति व हिन्दुजाति की पुनीत मान्यताओं पर कुत्सित आघात करने का क्या नैतिक अधिकार है? साथ ही उन पत्रों के सम्पादकों की भी स्थिति क्या जनता में हास्यास्पद नहीं होती, जो ऐसे घृणित आयोजन में हाथ बटांकर उसका प्रतिवाद तक करने में प्रतिबन्ध लगाकर अपनी नैतिकता का ढोल पीटने का ढोंग करने का उद्योग करें।

आदरणीय शर्मा जी का यह ताजा लेख भी न केवल झूठ का पिटारा है अपितु दुर्भावनाओं पर आधारित होने से पूर्णतया दुराग्रहपूर्ण है। जानबूझकर या तो सर्वथा कल्पित उद्धरण गढे गये हैं या उन्हें तोड़ मरोड़ कर और बदले हुए सदर्भ में प्रस्तुत करके उनका दुरुपयोग करने का दुस्साहस किया गया है। एक भी तर्क नया नहीं है। हमारे द्वारा प्रदत्त युक्तियों का कोई उत्तर देना तो दूर, हमने जो शर्मा जी की भूलें दिखाई थीं, उनका कोई समाधान तक न दिया गया। समाधान देते भी तो कैसे? शर्मा जी ने अपने लेख में उन वेद मन्त्रों के हवाले दिये थे, जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। हमारे ललकारने पर वे एक भी वेदमन्त्र ऐसा न दिखा सके, जो गायत्री मन्त्र को (बकौल उनके) 'लंगड़ा छंद' बताता हो। न ही वे किसी पुराण के श्लोक में वेद की निन्दा दिखा सके। हमने भर्गः को नपुं० लिंग सिद्ध करने वाले व्याकरण और कोश के उद्धरण देकर तत् नपुं० लिंग से उसकी संगति बैठाई थी, पूरा अन्वय और अन्वय के अनुसार अर्थ भी दिया था। उसमें कोई दोष तो वे क्या खोजते, नंगे झूठ का सहारा लेकर पाठकों को बहकाने के लिए लिख मारा—

"अच्छा होता वे सारे मन्त्र का अन्वय लिख कर देख लेते, ऐसे अशुद्ध वाक्यों को शायद संस्कृत की प्रथम श्रेणी का विद्यार्थी भी शुद्ध कर दे।"

शर्मा जी की बेईमानी का सबूत दिखाने और पाठकों को भ्रान्ति से बचाने के लिए पिष्टपेषण का पाप मोल लेकर भी पंजाब केसरी में प्रकाशित अपने लेख की ये पंक्तियां दुहराना हमें अनिवार्य प्रतीत हो रहा है।

"उन्हें नपुंलिंग और पुंलिंग पदों का अन्वय नहीं सूझ रहा, अतः पद ही बदलने पर उतारू हैं, जबकि सीधा सादा अन्वय इस प्रकार है—(वयं) सवितुः देवस्य तत् (नपुं०) वरेण्यं (नपुं०) भर्गः (नपुं०) धीमहि, यो नः धियः प्रचोदयात्। अज्ञानियों की भ्रान्ति का कारण यह है कि लौकिक शब्दकोश में भर्गः पुंलिंग संज्ञा है, शिव का नाम है। लेकिन वैदिक कोशों में यह संज्ञा भी है, विशेषण भी, पुंलिंग भी है और नपुंसकलिंग भी।......इस अन्वय के साथ इन वाक्यों का अत्यन्त स्पष्ट अर्थ इस प्रकार बनता है—"हम अपने जन्मदाता, तेजस्वी और दिव्य ऐश्वर्ययुक्त दानी (परमेश्वर) के उस (अलौकिक) वरने योग्य तेजोमय, गौरवशाली स्वरूप का ध्यान करें, अथवा उसके उन तेजस्वी और वरण करने के योग्य गुणों को धारण और सुपुष्ट करें। जो (उत्पादक और देवाधिदेव ईश्वर) हमारी बुद्धियों को सत्प्रेरणा प्रदान करके सन्मार्ग पर लगाए रखें।" अब इस अर्थ में अन्वय की क्या समस्या या किसी अन्य दोष की क्या सम्भावना है। ".........गायत्री मन्त्र की शुद्धता और उपादेयता, पंजाब केसरी, १५-२-१९८३।

अब पाठक स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि क्या श्री शर्मा जी और उनके पृष्ठपोषक सम्पादकों का रवैया "उल्टा चोर कोतवाल को डांटे" की मिसाल का प्रतिरूप नहीं है?

इसके अतिरिक्त योग ज्योति के अप्रैल, मई और जून के अंकों में इस मन्त्र के अत्यन्त सूक्ष्म अर्थों को प्रकाशित करने का क्रम जारी है। उसे तो शायद पढना और समझना भी श्री सुरेन्द्र शर्मा जी के बूते के बाहर होगा, क्योंकि उनकी कल्पना तो संस्कृत की प्रथम श्रेणी से चौथी तक की दौड़ लगाकर ही पूरी थक जाती है। लेकिन अफसोस यह है कि वे उस बालबुद्धि का प्रयोग भी गन्दगी के ढेर को तलाशने वाली मक्खी के सदृश केवल दोष खोजने में करते हैं।

अमृत में भी विष के कण खोजने के पूर्वाग्रह की दूषित प्रवृत्ति की पराकाष्ठा का अनुपम उदाहरण श्री सुरेन्द्र शर्मा की इस नई शरारत से पूरी तरह उजागर हो रहा है जबकि उन्होंने हमारे द्वारा उद्धृत महर्षि दयानन्द के सर्वशुद्ध और पूर्णतः प्रश्नातीत अर्थ को भी तोड़ मरोड़ कर अपने पक्ष का पोषक और गायत्री मन्त्र में व्याकरण की अशुद्धि प्रमाणित करने वाला बताया है। उनके शब्द हैं—

"संस्कृत वाक्य रचना का एक सामान्य नियम है कि यद् और तद् शब्दों का नित्य सम्बन्ध होता है।.........इस पर उत्तर लेखक महाशय लिखते हैं कि गायत्री मन्त्र में तत् शब्द दूरी का वाचक (विशेषण) है, न कि सर्वनाम। इसके समर्थन में उन्होंने स्वामी दयानन्द कृत गायत्री मन्त्र का अर्थ उद्धृत किया है, जो इस प्रकार है, "सवितुर्देवस्य तद् यत् ओंभूर्भुवः स्वः वरेण्यं भर्गः अस्ति तत् वयं धीमहि, दधीमहि धरेमहि, ध्यायेम वा".........इस वाक्य को उत्तर लेखक महोदय ने अपने पक्ष के समर्थन में उद्धृत किया है, परन्तु इससे हमारा पक्ष पुष्ट हो रहा है। क्रमशः

सम्पादकीय

संघर्ष का बिगुल बज गया है

पिछले एक वर्ष से जो उत्पात पंजाब में मचा हुआ है वह किसी को भी अविदित नहीं है। हिन्दुओं का एक प्रकार से 'कत्ले आम' सा वहाँ हो रहा है। उग्रवादी अकाली अपराधियों को शहीद समझकर गुरुद्वारों में शरण दे रहे है। इस तथ्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक तरफ तो अब गुरुद्वारे गुरुद्वारे या 'पूजा घर' न होकर हत्या-घर बन गये हैं दूसरी ओर अकालियों की राष्ट्रीयता और धर्मनिरपेक्षता का ओढा हुआ बनावटी चेहरा बेनकाब हो गया है।

पंजाब के इस तथाकथित 'धर्म-युद्ध' की पृष्ठ भूमि को हम सर्व-हितकारी के अग्रलेखों तथा अन्य वक्तव्यों से पीछे भी स्पष्ट कर चुके हैं। अकाली समस्या एक ऐसी समस्या है जो अधमरे साँप की तरह फिर-२ जिन्दा होकर विष-वमन करने लगती है। इसका एक मुख्य कारण अकालियों की अति महत्त्वाकांक्षा है तो उनको धर्म (हिन्दू) राष्ट्र (भारत) के सभी पवित्र बन्धनों से उन्मुक्त करके अराष्ट्रीयता और अराजकता की स्थिति में खड़ा कर रही है। भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री तथा अकाली नेता सरदार सुरजीत सिंह बरनाला आज यह ब्यान देते हैं कि सिखों के कारण ही आज पाकिस्तान की सीमा बाघा तक है यदि विभाजन के समय सिख जिन्हा का साथ देते तो पाकिस्तान की सीमा आज यमुना नदी तक होती। इससे यह भी साफ जाहिर है कि हमारे अकाली भाईयो को इस बात का बड़ा पछतावा और परेखा है कि वे उस समय पाकिस्तान में नहीं मिले। आज अकाली हैदराबाद के निजाम उस्मान अली की पंक्ति मे अपने आपको खड़ा करना चाह रहे हैं। इतने जिम्मेदार व्यक्ति के ऐसे गैर-जिम्मेदाराना बयान से हम अकालियों की नीयत और नीतियों का स्पष्ट अनुमान लगा सकते हैं।

अकाली आन्दोलन को बढावा देने में केन्द्रीय सरकार का हाथ भी कहा जायेगा कि संविधान में धर्म, क्षेत्र, भाषा तथा जाति के आधार पर किसी भी प्रकार के राजनैतिक संगठन पर प्रतिबन्ध का प्रावधान होते हुए भी उसने इस पर आज तक प्रतिबन्ध नहीं लगाया। इतना ही नही इनको एक बार भी अच्छी तरह से धमकाया भी नहीं गया। उल्टे उनसे डर कर समझौता करके तुष्टिकरण की नीति केन्द्रीय सरकार की रही है।

जब से ज्ञानी जैलसिंह जी भारत के महामहिम राष्ट्रपति बने हैं तब से यह ज्वाला और भी भड़की है। कही बात हो रही है, "मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की। लेकिन लातों के भूत बातों से कभी मानते हैं क्या? आज आवश्यकता है फिर से किसी सरदार पटेल जैसे लौह-पुरुष की जो समय की पुकार का सही जवाब दे सके।

माननीय चौ० चरणसिंह जी का दृष्टिकोण इस विषय में बड़ा ही स्पष्ट और राष्ट्रहितकारक रहा है। आज आवश्यकता तो सभी तरह के व्यक्तिगत या दलगत अहं को त्याग कर एकजुट होकर कुछ ठोस समाधान ढूंढने की है।

तीन संभावित खतरे अकाली आन्दोलन के आज सामने हैं। सबसे पहला तो पंजाब के अल्पसंख्यकों (हिन्दूओं) की असुरक्षा का है। आज पंजाब में एक प्रकार का 'आतंक का राज्य' कायम हो गया है। पंजाब में हर क्षण हर किसी को असुरक्षा की भावना घेरे रहती है न जाने कब क्या हादसा हो जाये। उच्च राज्याधिकारियों की मृत्यु तो सुरक्षा के प्रश्न पर और भी गहरा प्रश्न-चिन्ह लगा देती है। पुलिस और अकाली-उग्रवादियों के दोहरे मोर्चे पर पंजाबी हिन्दुओं को लड़ना पड़ रहा है। अबोहर-फाजिल्का का तो हाल ही बेहाल है। अकाली उसे पंजाब का अविभाज्य अंग समझकर कब्जाये हुए हैं और वहाँ के जागृत लोगों को 'शिक्षा' देने पर तुले हुए हैं। पंजाब के अकालियों की देखा-देखी हरयाणे के अकाली भाई भी साम्प्रदायिक उन्माद में पागल होते जा रहे हैं। शायद उन्हें हरयाणा के हितों की अपेक्षा पंजाब के सिखों की ज्यादा चिन्ता है। सिरसा, अम्बाला, करनाल और यमुनानगर के गुरुद्वारों में पंजाब के अकाली उग्रवादी नेताओं के उत्तेजक भाषण आग में घी का काम कर रहे हैं। अकाली नेताओं को राष्ट्रहित में अपने विवेक से काम लेते हुए अपनी जबान को लगाम लगानी चाहिए। अन्यथा पंजाब का उत्पात देशव्यापी होकर राष्ट्रघातक हो सकता है। 'पंजाब-बंद' के अनुकरण पर ८ जुलाई के 'हरयाणा-बन्द' ने हरयाणा की शान्त ज्वाला की चिन्गारियों को प्रकट कर दिया है। करनाल और यमुनानगर में हरयाणा-बन्द के अवसर पर जो भी हरयाणा अकालियों ने किया है वह उनके अपने ही हित में नहीं है यदि पंजाब को अकाली हरयाणा का बिजली पानी रोक सकते है तो हरयाणे वाले भी रास्ता रोक कर अकालियों को पंजाब में कैद करके रख दे सकते हैं। लेकिन भगवान् न करे ऐसी स्थिति पैदा हो। वैसे हरयाणा का माहौल अकाली आन्दोलन की उग्रता, क्रूरता और हरयाणा तथा राष्ट्रव्यापी उसके संभावित प्रभाव को देखते हुए जागृत होता जा रहा है। 'हरयाणा-रक्षा-वाहिनी' का हरयाणा तथा राष्ट्र-रक्षा-अभियान जन-जन व्यापी हो चला है। हरयाणा के सभी धार्मिक तथा सामाजिक वर्ग का सहयोग ८ जुलाई का 'हरयाणा-बन्द' इसका ज्वलन्त प्रमाण है। आज अवसर है कि हमें सभी प्रकार के आपसी मतभेदो को भुलाते हुए अकाली-संकट का सामना करना चाहिए। हरयाणा जनता पार्टी के विधायक-दल का त्याग-पत्र हरयाणा के हित मे एक मील का पत्थर साबित हो सकता है बशर्ते अन्य दल तथा सत्तारूढ दल भी इसका अनुकरण कर इस राष्ट्र-रक्षा-अभियान' में अपनी आहुति दें। हरयाणा रक्षा वाहिनी के अहवान पर हरियाणा में संघर्ष का बिगुल अब बज चुका है।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह तथा संयोजक महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ने ८ जुलाई की हड़ताल को सफल कराने के लिए एक सप्ताह तक सारे हरयाणा का तूफानी भ्रमण किया। लगभग ४० नगरो में कार्यकर्त्ताओ की बैठकें करके हड़ताल की तैयारी करवाई। इसी प्रकार सभा के उपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री, पं० सुरेश कुमार शास्त्री पं० अर्जुनदेव आर्य ने भी आर्यसमाजों का भ्रमण करके हड़ताल के लिए वातावरण तैयार किया।

प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा की जनता को अपने हितों की रक्षा के लिए सभी राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक कार्यकर्त्ताओ को आह्वान किया है कि वे अपने प्रदेश के हितों की रक्षा के लिए संघठित हो जावे। हर्ष का विषय है कि ८ जुलाई की हड़ताल को सफल करने के लिए सभी राजनीतिक दलों के कार्यकर्त्ताओ ने तन, मन तथा धन से सहयोग देकर अपने संघठन का शानदार उदाहरण दिया है। इस प्रकार हरयाणा की जनता में अपने हितों की रक्षा तथा अपने पंजाब के हिन्दू भाइयों की सुरक्षा के लिए संघर्ष का बिगुल बज गया है। आशा रखनी चाहिए कि अब हरयाणा की जनता जागरूक रहकर अपनी शानदार परम्परा को स्थापित रखेगी।

—धर्मचन्द विद्यालंकार

सर्वहितकारी के ग्राहकों को निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है, कार्यालय की ओर से उन्हें पत्र द्वारा सूचित करते हुए शुल्क भेजने का निवेदन किया गया है। परन्तु अभी तक बहुत से ग्राहक महानुभावों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है। अतः विवश होकर अगस्त मास से उन ग्राहकों के नाम सर्वहितकारी भेजना बन्द कर दिया जावेगा जिनका शुल्क ३१ जुलाई तक कार्यालय में प्राप्त न हो सकेगा। अतः निवेदन है कि ग्राहक महानुभाव अपना चन्दा मनीआर्डर अथवा सभा उपदेशकों द्वारा ३१ जुलाई तक भेज देवें ताकि उन्हें सर्वहितकारी भेजा जाता रहे।

—व्यवस्थापक

महाराज मनु का राजधर्म

(पं॰ धर्मदेव "मनीषी" व्याकरणाचार्य, गुरुकुल काखवा)

मनु जो महाराज ऋषियों से कहते हैं कि चारों वर्ण और चारों वर्ण और चारों आश्रमों के व्यवहार कथन के पश्चात् राजधर्मों को कहेंगे कि किस प्रकार राजा होना चाहिये। और इसके होनें का संभव, तथा जैसे इसको परम सिद्धि प्राप्त होवे, उसको सब प्रकार कहते हैं। जैसा परम विद्वान् ब्राह्मण होता है वैसा विद्वान् सुशिक्षित होकर क्षत्रिय के योग्य है कि इस सब राज्य की रक्षा न्याय से यथावत् करे।

सभापति के गुण:—

इन्द्राऽनिलयमार्काणामग्नेश्च वरुणस्य च।
चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रा निर्हृत्य शाश्वतीः ॥
तपत्यादित्यवच्चैव चक्षूंषि च मनांसि च।
न चैनं भुवि शक्नोति कश्चिदप्यभिवीक्षितुम् ॥
सोऽग्निर्भवति वायुश्च सोऽर्कः सोमः स धर्मराट्।
स कुबेरः स वरुणः स महेन्द्रः प्रभावतः ॥ मनुस्मृति ॥

वह सभेश राजा इन्द्र अर्थात् विद्युत् के समान शीघ्र ऐश्वर्यकर्त्ता, वायु के समान सबके प्राणवत् प्रिय और हृदय की बात जाननेहारा, धर्म—पक्षपातरहित न्यायाधीश के समान वर्तने वाला, सूर्य के समान न्याय धर्म विद्या का प्रकाश, अन्धकार अर्थात् अविद्या अन्याय का निरोधक, अग्नि के समान दुष्टों को भस्म करनेहारा, वरुण अर्थात् बांधने वाले के सदृश दुष्टों को अनेक प्रकार से बांधने वाला, चन्द्र के तुल्य श्रेष्ठ पुरुषों को आनन्ददाता, धनाध्यक्ष के समान कोशों को पूर्ण करने वाला सभापति होवे। जो सूर्यवत् प्रतापी, सबके बाहर और भीतर मनों को अपने तेज से तपाने हारा जिसको पृथिवी में करड़ी दृष्टि से देखने कोई भी समर्थ न हो। और जो अपने प्रभाव से अग्नि, वायु, सूर्य, सोम, धर्मप्रकाशक, धनवर्द्धक, दुष्टों को बन्धनकर्त्ता, बड़े ऐश्वर्य वाला होवे, वही सभाध्यक्ष सभेश होने के योग्य होवे।

मौलान् शास्त्रविदः शूरांल्लब्धलक्षान् कुलोद्गतान्।
सचिवान् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान् ॥
अपि यत्सुकरं कर्म तदप्येकेन दुष्करम्।
विशेषतोऽसहायेन किन्नु राज्यं महोदयम् ॥
तैः सार्द्धं चिन्तयेन्नित्यं सामान्यं सन्धिविग्रहम्।
स्थानं समुदयं गुप्तिं लब्धप्रशमनानि च।

स्वराज स्वदेश में उत्पन्न हुये, वेदादि शास्त्रों के जानने वाले, शूरवीर जिन्हों का लक्ष्य अर्थात् विचार निष्फल न हो, और कुलीन अच्छे प्रकार सुपरीक्षित सात व आठ उत्तम धार्मिक चतुर (सचिवान्) अर्थात् मन्त्री करे। क्योंकि विशेष सहाय के बिना जो सुगम कार्य है वह भी एक के करने में कठिन हो जाता है। जब ऐसा है तो महान् राज्य-कर्म एक से कैसे हो सकता है? इसलिए एक को राजा, और एक की बुद्धि पर राज्य के कार्य का निर्भर रखना बहुत ही बुरा काम है। इस से सभापति को उचित है कि नित्यप्रति उन राज्य कर्मों में कुशल विद्वान् मन्त्रियों के साथ सामान्य करके किसी से (सन्धि) मित्रता, किसी से (विग्रह) विरोध (स्थान) स्थिति समय को देखके चुपचाप रहना, अपने राज्य की रक्षा करके बैठे रहना, (समुदयम्) जब अपना उदय अर्थात् वृद्धि हो, तब दुष्ट शत्रु पर चढ़ाई करना, (गुप्तिम्) मूल राज सेना कोश आदि की रक्षा, (लब्धप्रशमनानि) जो-जो देश प्राप्त हो उस-उस में शान्ति-स्थापना उपद्रव रहित करना, इन छः गुणों का विचार नित्यप्रति किया करे। विचार इस प्रकार से करना कि उन सभासदों का पृथक्-पृथक् अपना-अपना विचार और अभिप्राय को सुनकर बहुपक्षानुकार्यों में जो कार्य अपना और अन्य का हितकारक हो, वह करने लगना। अन्य भी पवित्रात्मा, बुद्धिमान् निश्चितबुद्धि, पदार्थों का संग्रह करने में अति चतुर, सुपरीक्षित मन्त्री करे। जितने मनुष्यों से (राज) कार्य सिद्ध हो सके, उतने आलस्य रहित, बलवान् और बड़े बड़े चतुर प्रधान पुरुषों को अधिकारी अर्थात् नौकर करे। इनके आधीन शूरवीर बलवान्, कुलोत्पन्न पवित्र भृत्यों को बड़े बड़े कर्यों में, और भीरु=डरने वालों को भीतर के कामों में नियुक्त करे। जो प्रशंसित कुल में उत्पन्न, चतुर, पवित्र, हावभाव और चेष्टा से भीतर हृदय और भविष्यत् में होने वाली बात को जानने हारा, सब शास्त्रों में विशारद=चतुर है, उस दूत को भी रक्खे। वह ऐसा हो कि राजकाम में अत्यन्त उत्साह-प्रीतियुक्त, निष्कपटी, पवित्रात्मा, चतुर, बहुत समय की बात को भी न भूलने वाला, देश और कालानुकूल वर्तमान का कर्त्ता, सुन्दर रूप युक्त, निर्भय और बड़ा वक्ता हो। वही राजा का दूत होने में प्रशस्त है।

विदेश नीति:—

सर्वोपायैस्तथा कुर्यान्नीतिज्ञः पृथिवीपतिः।
यथास्याभ्यधिका न स्युर्मित्रोदासीनशत्रवः ॥
आयतिं सर्वकार्याणां तदात्वं च विचारयेत्।
अतीतानां च सर्वेषां गुणदोषौ च तत्त्वतः ॥
आयत्यां गुणदोषज्ञस्तदात्वे क्षिप्रनिश्चयः।
अतीते कार्यशेषज्ञः शत्रुभिर्नाभिभूयते ॥
यथैनं नाभिसंदध्युर्मित्रोदासीनशत्रवः।
तथा सर्वं संविदध्यादेष सामासिको नयः। (मनुस्मृति)

नीति का जानने वाला पृथिवीपति राजा जिस प्रकार इसके मित्र उदासीन=मध्यस्थ और शत्रु अधिक न हो, ऐसे सब उपायों से वर्ते। सब कार्यों का वर्तमान में कर्तव्य और भविष्यत् में जो जो करना चाहिये और जो-जो काम कर चुके, उन सबके यथार्थता से गुण-दोषों का ज्ञाता, वर्तमान में तुरन्त निश्चय का कर्त्ता और किये हुए कार्यों में शेष कर्तव्य को जानता है, वह शत्रुओं से कभी पराजित नहीं होता। सब प्रकार से राजपुरुष विशेष सभापति राजा ऐसा प्रयत्न करे, कि जिस प्रकार राजादि जनों के मित्र उदासीन और शत्रु को वश में करके अन्यथा न करावे। ऐसे मोह में कभी न फंसे। यही संक्षेप से नय नय अर्थात् राजनीति कहाती है। जो धार्मिक राजा हो उससे विरोध कभी न करे, किन्तु उससे सदा मेल रखे। और जो दुष्ट प्रबल हो उसी के जीतने के लिए (सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और संश्रय का) प्रयोग करना उचित है।

न्याय धर्म:—

प्रत्यहं देशदृष्टैश्च शास्त्रदृष्टैश्च हेतुभिः।
अष्टादशसु मार्गेषु निबद्धानि पृथक् पृथक् ॥
तेषामाद्यमृणादानं निक्षेपोऽस्वामिविक्रयः।
सम्भूय च समुत्थानं दत्तस्यानपकर्म च ॥
वेतनस्यैव चादानं संविदश्च व्यतिक्रमः।
क्रयविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः ॥
सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके।
स्तेयं च साहसं चैव स्त्रीसंग्रहणमेव च ॥
स्त्रीपुंधर्मो विभागश्च द्यूतमाह्वय एव च।
पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविह ॥
एषु स्थानेषु भूयिष्ठं विवादं चरतां नृणाम्।
धर्मं शाश्वतमाश्रित्य कुर्यात् कार्यविनिर्णयम् ॥मनुस्मृति ॥

सभा राजा और राजपुरुष सब लोग देशाचार और शास्त्र व्यवहार हेतुओं से निम्नलिखित अठारह विवादास्पद मार्गों में विवादयुक्त कर्मों का निर्णय प्रतिदिन किया करें। और जो-जो नियम शास्त्रोक्त न पावें और उनके होने की आवश्यकता जानें तो उत्तमोत्तम नियम बांधे कि जिससे राजा और प्रजा की उन्नति हो। —क्रमशः

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर

ऋषि निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध में जनता में अपार उत्साह

परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी ने ३ जुलाई को आर्य समाज (अनारकली) नई दिल्ली में ऋषि निर्वाण शताब्दी सम्बन्धी बैठक की अध्यक्षता करते हुए घोषणा की कि इस अवसर पर हरयाणा के आर्यसमाजी लगभग १०० बसों में अजमेर पहुचेंगे। इसी प्रकार देश के अन्य भागों से भी काफी बड़ी संख्या में आर्य यात्रियों के अजमेर पहुँचने की सूचनायें आ रही हैं। उन्होंने कहा जब से सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा और राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने मिलकर संगठित रूप से अजमेर में एक ही मंच पर यह विशाल अन्तर्राष्ट्रीय शताब्दी समारोह मनाने का निश्चय किया है तब से आर्य जनता में नये उत्साह का पारावार उमड़ पड़ा है। सब ओर से भारी संख्या में आर्य-जनों के अजमेर पहुँचने के अलावा ऋषि उद्यान में बनने वाली यज्ञशाला के लिए और शताब्दी के अवसर पर प्रकाशीत होने वाले साहित्य के लिए जनता की ओर से दान रूप में धनराशि आनी आरम्भ हो गई है। ...री आर्य जनता में इस बात से बड़ी प्रसन्नता है कि अन्ततः आपसी मतभेदों को भुलाकर शिरोमणि सभाओं के अधिकारियों ने जनता का सही मार्ग दर्शन किया। यह आर्य समाज की उस अर्न्तनिहित शक्ति का प्रतीक है जो उचित अवसर आने पर ही प्रकट होती है।

यह निर्वाण शताब्दी इसी वर्ष २ से ६ नम्बर तक अजमेर में धूम-धाम से मनाई जा रही है। इससे एक मास पहले चतुर्वेद परायण यज्ञ होगा। जिसके ब्रह्मा स्वामी दयानन्द जी तपोवन (देहरादून) वाले होंगे। महात्मा दयानन्द जी ने जब बैठक में जब यज्ञ की रूपरेखा उपस्थित की तो अनेक लोगों ने अपनी ओर से इस यज्ञ के लिए घी और हवन सामग्री देने के वचन दिये। आर्य समाज सफदरजंग इन्क्लेव दिल्ली के प्रधान श्री एच०एस० खेर से २०० किलोग्राम हवन सामग्री देने की घोषणा की। श्री आशानन्द जी भजनोपदेशक ने १००१/- रु० देने की घोषणा की।

दिल्ली के समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने मिलकर श्री स्वामी ओमानन्द जी को आश्वासन दिया कि दिल्ली की ओर से शताब्दी के निमित्त १० लाख रुपया एकत्र करने की जो घोषणा की गई है। उसे वे अवश्य पूरा करेंगे। आर्य समाज किदवई नगर के मन्त्री श्री रामसिंह जी ने दक्षिण दिल्ली की ओर से अच्छी राशी एकत्र करने के अपने वचन को पुनः दोहराया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद प्रधान ब्र० राजसिंह ने जब यह घोषणा की कि शताब्दी के अवसर पर जनता की सेवा करने के लिए हमारे १,००० आर्य युवक पूरी तरह तैयार हैं और वे १ नवम्बर को स्पेशल ट्रेन से गणवेश में अजमेर पहुँच जायेंगे, तब जनता ने हर्ष ध्वनि की। इस बैठक में विभिन्न आर्य समाज के प्रतिनिधियों के अलावा शताब्दी सम्बन्धी कार्यक्रमों के सम्बन्ध में जिन व्यक्तियों ने अपने सुझाव दिये वे निम्न हैं:—स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द जी, महात्मा दयानन्द जी, आचार्य विश्वश्रवा जी, श्रीकरण जी शारदा, चौधरी प्रताप सिंह जी, श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री शिवाकान्त उपाध्याय, श्री रामलाल जी ठेकेदार, श्री देशराज बहल, बहिन सरला कुमारी, श्री धर्मवीर भंडाधारी, श्री मामचन्द रिवारिया, श्री रामनाथ सहगल, श्री राजाराम जी, ब्र० राजसिंह और क्षितीश वेदालंकार आदि। इस बैठक से, शताब्दी सम्बन्धी सब प्रकार के विवाद समाप्त हो जाने से; आर्य जनता में उत्साह की लहर दौड़ गई।

प्रचार विभाग।

सर्वहितकारी में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

सर्वखाप पंचायत के नियमों के अनुसार—

आदर्श विवाह संस्कार

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सुपुत्र डा० तरूण कुमार का शुभ विवाह संस्कार मदानी जि० रोहतक निवासी श्री हरवीर सिंह की सुपुत्री डा० आशा के साथ ९ जुलाई को आर्य समाज जोड़बाग नई दिल्ली में बहुत ही सादगी से सम्पन्न हुआ। बरात में कुल ५ बराती थे और कोई भी रस्म एक रुपये से अधिक की नहीं हुई। इस अवसर पर नवदम्पति को आशीर्वाद देने वालों में राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, प्रधान मन्त्री, श्रीमति इन्दिरा गान्धी, लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड तथा केन्द्रीय मन्त्रीयों सासदों के अतिरिक्त श्री श्यामनन्दन मिश्र महामन्त्री भारतीय लोकदल स्वामी ओमानन्द सरस्वती, चौ० शमसेर सिंह सुरजेवाला मन्त्री हरयाणा श्री रामगोपाल वानप्रस्थी, श्री ओमप्रकाश त्यागी, श्री रामचन्द्र वन्देमातरम हैदराबाद, पं० शिवकुमार शास्त्री, प्रो० वेदव्यास अध्यक्ष डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाएं आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। चौ० चरणसिंह अस्वस्थ होने के कारण उपस्थित नहीं हो सकें।

दीपचन्द आर्य

कन्या चाहिए

वैदिक विचारों से ओत-प्रोत, प्रचारक भावना वाले ३८ वर्षीय विधुर (अरोड़ा) एम०ए०बी लिब साईंस कद 5′-6″ आय चार अंकों में एक प्रथम पत्नी से 7½ तथा 5½ वर्षीय दो पुत्र व 2½ वर्षीया पुत्री के सुशील कन्या की आवश्यकता है। शिक्षा व जाति पर विचार नहीं। विधवा व परित्यक्ता को प्राथमिकता।

अशोक आर्य पुस्तकाध्यक्ष, डी०ए०वी० महिला कालेज,
गिदड़बाहा (पंजाब)

शुद्धि एवं अन्तर्जातीय विवाह

दिनांक ३०-६-८३ को श्री रामरेखा धाम में, श्री देशपाल दीक्षित पौरहित्य में, श्री कुमारी पुष्पा खालखो (बी०ए० द्वितीय वर्ष) को शुद्धि करके, श्री जयपाल सिंह के साथ विवाह सम्पन्न किया गया।

महन्त श्री जयराम प्रपन्नचर्य ने वर वधु को शुभ आशीर्वाद प्रदान किया और श्री महाविद्यालय सिमडेगा के छात्र छात्राओं ने शुभ कामनायें प्रकट की।

देशपाल दीक्षित आर्य प्रचारक, छोटानागपुर

विविध-समाचार

रादौर जि० कुरुक्षेत्र में रक्षावाहनी की स्थापना

८ जुलाई। प्रोफेसर शेरसिंह जी अध्यक्ष एवं महाशय भरतसिंह जी सभा मन्त्री ८ जुलाई को रादौर पधारने पर स्वागत किया गया। आर्य समाज रादौर के कार्यकर्ताओं एवं नगर निवासियों की एक सफल बैठक मे श्री रामकुवार जी गुप्त के सयोजक त्व में वाहनी की स्थापना की गई।

८ जुलाई को पूर्ण हड़ताल रही। कोई भी वस्तु बाजार से न मिल सकी। स्थानीय देवी मन्दिर में विशाल रैली हुई जिसमे श्री ओमप्रकाश सर्राफ श्री जयदेव जी, श्री महेन्द्रपाल जी आर्य एवं श्री सत्यकाम जी आर्य ने अपने ओजस्वी विचार रखे एवं अकालियों की नीति की भर्त्संना की गई।

स्वामी उदासीन जी के नेतृत्व में जलूस नगर प्रसासक को ज्ञापन देने गया। शहर मे सिख भाईयो ने भी भरपूर सहयोग दिया। मन्त्री

आर्यसमाज विलासपुर जि० अम्बाला का उत्सव

आर्यसमाज विलासपुर का वार्षिक उत्सव ६ व ७ जुलाई को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव मे बहुत दूर तक के भजनोपदेशक व संन्यासी पधारे हुऐ थे। ६ तारीख को प्रात: ७ बजे से ११ बजे तक यज्ञ हुवन होता रहा और उसके बाद भजन होते रहे बाद मे ऋषि लगर में सभी पधारे हुए अतिथियों ने भोजन आदि किया और उसके बाद दोपहर बाद ३ बजे से जलूस विलासपुर में निकाला गया। जलूस शहर विलासपुर के दक्षिण से उत्तर दिशा तक चला और आर्य समाज की भूमि पर पहुँचा जिस पर विवाद चला हुआ है। सभी आर्य बन्धुओं के हाथों में ओ३म् के झण्डे लहरा रहे थे और ट्रकटरों के ऊपर लाउड़ स्पीकर लगे हुऐ थे ऋषि के भजन और गाते जा रहे थे और वातावरण ऋषि के भजनो आदि से गुंजा हुआ दिखाई दे रहा था। आर्य समाज की भूमि से चलकर जगाधरी रोड़ होते शहर जा रहे थे और विलासपुर से दक्षिण की ओर बस स्टैंड पर जा पहुचें। वहां पर १५ मिन्ट तक रूक कर भजन आदि गाये जलूस का संगठन दिखाई दे रहा था। ऐसा मालूम होता नजर आ रहा था कि हरयाणा के सभी आर्य वीर यहां पर पहुँचे हुए हैं। उसके बाद जलूस थाने से गुजर रहा था और वहां पर पहुँचा जहा पर से ये जलूस चालू हुआ था उसके बाद सभी वीरों ने ऋषि लंगर में भोजन किया और ८ बजे रात से १२ वजे तक वेद प्रचार होता रहा जिसमें सुनने वालो की बहुत सख्या थी। प्रात: ७ से १२ बजे यज्ञ हवन ओर इसी प्रकार सांयकाल को कार्यक्रम चलता रहा। अनेक आर्य वीरों ने तन मन और धन से पूरी सेवा की। यह उत्सव प० हरलाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें पधारे हुए वीरों के नाम इस प्रकार हैं:—श्री रोशन लाल आर्य एम०एल०ए०, स्वामी सदानन्द जी महाराज, गुरुदत्त मुनि, ओमप्रकाश वर्मा, श्री लक्षमण आर्य, रूवेलसिह जी भजनोपदेशक, श्री वीरसिह जी, श्री जयसिह जी, श्री सुमेर चन्द आर्य और श्री मामचन्द आर्य मन्त्री आर्य समाज चबूतरो आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। उत्सव बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ और ८ जुलाई को दान दिक्षणा देकर विदा किया और विलासपुर में पुरे जोर से हड़ताल की गई। हड़ताल का भी कार्यक्रम पुरे जोर से हुआ विलासपुर के वीरों ने भी हमारा पुरा सहयोग दिया। मन्त्री

पं० चन्द्रसैन जी के लिए शुभकामना

सर्वहितकारी में पूज्य श्रद्धेय चन्द्रसेन जी आर्य महोपदेशक के स्वास्थ ठीक न होने की खबर पढ़कर स्त्री आर्य समाज दयानन्द भवन, हिसार चिन्ता प्रकट करती है एवं उनके स्वास्थ लाभ के लिए ईश्वर से प्रार्थी हैं कि ऐसे कर्मठ कार्यकर्त्ता, वेद प्रचारक, ईश्वर भक्त एवं ओजस्वी वक्ता को शीघ्र ही स्वस्थ करें। ऐसी शुभकामनाएं सब बहनें भिजती हैं।

राजकुमारी मन्त्राणी आर्य समाज,
दयानन्द भवन मो० डोगरान हिसार-१२५००१

रोहतक में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज झज्जर रोड़ रोहतक में ८ से ११ जुलाई ८३ तक रात्रि ८ बजे से १०½ बजे तक वेद कथा का आयोजन किया गया जिनमें डा० विश्वबन्धु शास्त्री विद्यालंकार एम०ए० (हिन्दी संस्कृत) अध्यक्ष हिन्दी विभाग डी०ए०वी० कालेज अबोहर द्वारा आर्य समाज के सिद्धांतों की समस्याओं का वैदिक रीति द्वारा बड़े ही अच्छे ढंग से किया और पं० मुन्शीलाल जी भजनोपदेशक द्वारा मनोहर गीत का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

इन्द्रजीत मन्त्री

शोक समाचार

१. आर्य समाज नरेला के उप-प्रधान आर्य मुसाफिर श्री अत्तर सिह जी की असामायक मृत्यु पर आज दिनांक १०-८-८३ को आर्य समाज नरेला की सभा में शोक प्रस्ताव करते हुए दिवगत आत्मा को सद्गति तथा दु:खी परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्राथन की गई।

आनन्द कुमार
मन्त्री आर्य समाज, नरेला

२. आर्य समाज गांव भील अत्यन्त शोक करता है कि हमारे समाज के भूतपूर्व मन्त्री श्री हवासिह जी के लड़के का १०-७-८३ को देहान्त हो गया। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकाकुल पारिवारिक जनों को शोक सहन करने की शक्ति एव धैर्य प्रदान करें।

महेन्द्रपाल प्रधान आर्य समाज, गांव झील (जींद)

आर्य समाज की गतिविधियां

नांगलोई में आर्य समाज की स्थापना

५ जून १९८३ को नांगलोई दिल्ली-४१ में श्री चौ० साममेहर आर्य के घर प्रातः ७ बजे वैदिक यज्ञ किया गया। आर्य समाज के कार्यकर्ता मा० निहालसिंह आर्य ने यजमान और उसकी धर्मपत्नी को तथा दो अन्य छात्रों को यज्ञोपवीत देकर सारी यज्ञ क्रिया सम्पन्न कराई और यज्ञ-प्रार्थना में यजमान का आशीर्वाद देकर सामूहिक रूप से ईश्वर भजन गाये गए। श्री मास्टर जी ने आर्य संस्कृति, आर्य समाज, यज्ञोपवीत और महर्षि दयानन्द पर सुन्दर उपदेश दिया तथा प्राचीन विशाल हरयाणा का गौरव बताया जिससे श्रोतागण बहुत प्रसन्न हुए। कुछ समय उन्होंने शंका समाधान किया। इस सत्संग में नांगलोई हायर सैकेन्डरी स्कूल के प्रिंसिपल श्री कुलश्रेष्ठ, मा० जयप्रकाश आर्य (रोहणा), मा० हेमचन्द्र शर्मा, वेदभवन वाले किराड़ी निवासी शास्त्री ब्रह्मदत्त, अमरसिंह आर्य कपड़े वाले, वेदप्रकाश, हैदराबाद सत्याग्रह के आर्यवीर ठाकुर बलबीर सिंह, प्रमशेश आर्य, महाशय मुन्शीराम टैन्ट वाले, दाल मिल वाले सेठ ओमप्रकाश जी सम्मिलित थे।

एक सज्जन ने आर्य समाज के मौखिक नियम सुनाये। श्री मास्टर जी ने यहां पर विधिवत् आर्य समाज स्थापित करने पर बल दिया।

महाशय रामकिशन आर्य
आर्य-निवास नांगलोई, दिल्ली-४१

आर्यसमाजें सावधान रहें-

स्वामी आर्यवेश (पूर्व नाम मंगली राम) ग्राम गोयला कलां जि० रोहतक निवासी ग्राम दहकोरा, खुर्मपुर आदि में घूमकर आर्य समाज की जाली रसीद छपवाकर चन्दा करता देखा गया है। वह किसी आर्य समाज का अधिकारी नहीं है और उसे किसी आर्य समाज ने चन्दा करने का उसे अधिकार भी नहीं दे रखा। अतः आर्य समाजें इस व्यक्ति से सावधान रहें।

अर्जुनदेव आर्य उपदेशक

गुरुकुल महाविद्यालय शुकताल में प्रवेश आरम्भ

गुरुकुल में प्रथमा, पूर्व मध्यमा की परिक्षाएं कराई जाती हैं जो क्रमशः सरकार से ८वीं, १०वीं और १२वीं के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। यहां संस्कृत, हिन्दी अंग्रेजी, गणित, इतिहास भूगोल आदि सभी विषयों का अध्ययन कराया जाता है। उत्तर मध्यमा के छात्रों को ४० छात्रवृत्ति भी दी जाती है। अध्यापन के लिए सुयोग्य ट्रेन्ड अध्यापक, आवास के लिए उत्तम छात्रावास, स्वास्थ्य निर्माण के लिए खेल एवं व्यायाम के साधन, बिजली और पानी की आधुनिक सुविधाएं, एवं भोजन तथा दूध आदि की सुव्यवस्था उपलब्ध है।

प्रबन्धक
गुरुकुल शुकताल, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)

प्रचारार्थ प्रचारक चाहियें।

१. नगीना आर्य समाज मन्दिर में पुरोहित के लिए, बच्चों में आर्यकुमार सभा, बड़े बच्चों को आर्यवीर दल की शाखा तथा आर्य समाज के सदस्यों से सम्पर्क करके उनका सहयोग प्राप्त करना।

२. ग्रामीण क्षेत्रों में साईकल पर भ्रमण करके प्रचार करना, सन्ध्या आदि कराना, उपदेश करना, मोटी भाषा में जनसम्पर्क स्थापित करने के लिए दो प्रचारकों की आवश्यकता है।

३. स्वामी शान्तानंद आश्रम मरोड़ा मन्दिर में रहकर प्रातः सांय ग्राम निवासियों को मन्दिर में सन्ध्या कराना। उक्त चारों प्रचारकों को तीन सौ रुपये मासिक दक्षिणा, मार्ग व्यय एवं भोजन व्यवस्था हम करेंगे। कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें

पदमचन्द आर्य मन्त्री आर्य वेद प्रचारक मण्डल नगीना (गुड़गांव)

जगाधरी में वेद प्रचार सप्ताह-

"आर्य-समाज, जगाधरी में जून १३ से १९ तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया जिस में पण्डित रामकिशोर ने प्रातः के सत्संग में वेदों के मन्त्रों की व्याख्या की और रात्री के सत्संग में रामायण के माध्यम से वेद-प्रचार किया। पण्डित ओमप्रकाश वर्मा के भजन भी हुए। मन्त्री

आर्य समाज जाजनपुर जि० करनाल का उत्सव

१०-६-१९८३ से १२-६-१९८३ तक आर्य समाज का वार्षिक उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया जिसमें पं० सुखदेव शास्त्री ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने में स्वामी जी (स्वामी दयानन्द जी का) का आह्वान एवं जागृति पैदा करने में हाथ तथा वर्तमान सामाजिक दशा तथा उसके सुधार के बारे में लोगों का ज्ञान देकर भावविभोर किया। पं० ईश्वर सिंह तुफान तथा पं० मुन्शी राम एवं पं० नत्था सिंह जी ने भजनों द्वारा आध्यात्मिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास हेतु लोगों को आनन्दित किया। १२-६-८३ को चौ० नत्थासिंह की अध्यक्षता में यज्ञ पर २० नौ जवानों ने यज्ञोपवीत लिया। गांव के लोगों ने बुराई छोड़ने का वचन दिया। मन्त्री आर्य समाज

वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय बहादुरगढ़,

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)

प्रि० यूनि०, बी०ए० प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में प्रवेश पाने की की इच्छुक छात्राओं को सूचित किया जाता है कि छात्रायें जुलाई में महाविद्यालय से प्रास्पैक्टस प्राप्त कर सकती हैं। ४ जुलाई से प्रवेश आरम्भ हो गया है।

महाविद्यालय के मुख्य आकर्षण-

१. यह महाविद्यालय केवल महिलाओं के लिए है।

२. सर्वोत्तम परीक्षा परिणाम।

३. खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की ओर विशेष ध्यान।

४. १०+२ की छात्राओं को बी०ए० द्वितिय वर्ष में प्रवेश मिल सकता है।

५. यह महाविद्यालय दिल्ली बार्डर पर है। बस और रेल से बड़ी सरलता पूर्वक आया जा सकता है। (जनरल स्टोर दिल्ली से बस में केवल २० मिनट लगते हैं।)

प्राचार्या

हरयाणा प्रान्तीय आर्यवीर महा सम्मेलन भिवानी में।

हरयाणा प्रान्तीय आर्यवीर दल महा सम्मेलन इस वर्ष भिवानी में २४, २५ सितम्बर को धूम-धाम से मनाया जा रहा है। सम्मेलन के अवसर पर एक हजार आर्यवीर निश्चित गणवेश में रूट मार्च करेंगे: २५ सितम्बर को ये आर्यवीर सामूहिक रूप से योगासन, लाठी चलाना, तलवार चलाना आदि कार्यक्रम जनसमूह के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। योग के चमत्कारिक रूप जैसे लोहे की बेल तोड़ना, कार रोकना, सरिये मोड़ना, शीशा हथेली पर मसलना आदि भी दिखाये जाएंगे।

इस अवसर पर जाति व दहेज रहित विवाह संस्कार योजना भी है। सम्मेलन के अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी, लाला रामगोपाल शालवाले, ओमप्रकाश त्यागी, डा० रामप्रकाश, 'प्रवर उपकुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय', श्री चन्द्रप्रकाश जी सत्यार्थी, आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री आदि अनेक संन्यासी विद्वान भजनोपदेशक पधारेंगे।

नरेन्द्र प्रभाकर संयोजक,
आर्य वीरदल प्रान्तीय महासम्मेलन, भिवानी

पुस्तक-समीक्षा

१. गत मास सर्वहितकारी कार्यालय को "श्री हरिदत्त सज्वाल" मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार (मुनीश्वरानन्द भवन) पटना-५ द्वारा लिखित "निबौली" नामक वैयक्तिक ललित निबन्धों का संग्रह समीक्षार्थ प्राप्त हुआ। निरजन प्रकाशन, किरणकुंज रोड न० ३, राजेन्द्र नगर, पटना द्वारा प्रकाशित एक सौ चार पृष्ठो वाली इस पुस्तक के साधारण संस्करण का मूल्य ८/- रु० तथा विशिष्ट सस्करण का मूल्य १२/- प्रति प्रति है।

भारतीयकरण की समस्या, श्रम विभाजन का मूलरूप, समाजवाद की राह पर, सच्चरित्रता ही मनुष्य की पूंजी है, दोस्ती, हार और जीत, परीक्षा, दण्डवत्, गाली-गलौज, ढिबरी का जीवन, मारीशस-लघु भारत तथा नैतिकता का मूल्य ये बारह विचारात्मक तथा वैयक्तिक निवन्ध निबन्धित हुये है लेखक द्वारा इस 'निबौली' पुस्तक में। बन्ध' शब्द से पूर्व 'नि' उपसर्ग विषय-वस्तु के प्रबन्ध मे जिस यथोचित सामग्री सांगोपांग वर्णन का संकेत करता है, यह तथ्य है कि श्री ज्वाल ने निबौली के उपरोक्त १२ निबन्धो मे उतनी चिन्तनपरक सामग्री जुटाकर उसका सम्यक् निबन्धन किया है। इनमें जहाँ वीरता की गंभोरता है, वही सरस वाक्यावलि के द्वारा सरसता की १ भी मान्य लेखक ने सुन्दर पुट दी है। जहाँ विषय सम-सामयिक तथा युगानुरूप हैं। वहाँ ओजयुक्त भाषा ने सरल शैली में भावों के प्रवाह को स्पष्टरूपेण प्रवाहित किया है।

नीम के पेड़ पर लगने वाली निबौली कटु-मधु स्वाद वाली होती है। क्योंकि इसे चखते हुये जिहवा को तिक्तता का अनुभव होता है, पर इसकी यह तिक्तता स्वास्थ्य के लिये अमृत है। रक्त दोष से उत्पन्न सभी रोगों के लिये अचूक दवा है। हमारे विचार से तो श्री हरि ज्वालकृत् यह 'निबौली' भी ज्ञान की धूप और अध्ययन की हवा सेवा में प्रस्तुत है। हाँ, बिहार प्रान्त के मान्य आर्य नेता पद्मभूषण डा. दुखन राम जी को समर्पित यह 'लघुकाय निबौली' मनीषी ज्वाल जी के ही शब्दो मे—'कच्ची है या पक्की, कसैल, कटु, कषाय, तिक्त है या मधुर; वस्तुत: इसका निर्णय करना तो इसका आस्वादन करने वाले गुण-ग्राही पाठको का ही काम है।

२. विगत सप्ताह सर्वहितकारी कार्यालय को श्री वीरेन्द्र जी संचालक दैनिक प्रताप एव वीर प्रताप जालन्धर तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा लिखित 'क्या सिख हिन्दू नहीं है ?' ६ पृष्ट का ट्रैक्ट प्राप्त हुआ। पंजाब के चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित इस ट्रैक्ट का मूल्य एक रुपया है।

पिछले पौने दो वर्षों से पंजाब में जो वातावरण बनता चला जा रहा है, उसने एक सन्देह देश के नागरिको के मन मे उत्पन्न कर दिया है। अकालियों के न केवल उग्रवादी धड़े, बल्कि अकाली दल के सर्वमान्य नेता संत लौंगोवाल द्वारा 'सिख अलग राष्ट्र है' की बार बार घोषणा से उक्त सन्देह की पुष्टि ही हुई है। ऐसे में यह ज्वलन्त प्रश्न कि क्या सिख अलग राष्ट्र हैं अथवा हिन्दू राष्ट्र का ही एक अंग हैं, का विश्लेषणात्मक उत्तर प्रख्यात पत्रकार तथा राष्ट्र मे अलगाव पैदा करने वाले तत्वो से पीढ़ियो जूझने वाले स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी के वरिष्ठ पुत्र श्री वीरेन्द्र जी ने इस ट्रैक्ट द्वारा दिया है। धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा राजनैतिक प्रमाणो एव सन्दर्भों द्वारा लेखक ने यह सिद्ध किया है कि सिख हिन्दू ही हैं इससे अलग नहीं। सामयिक प्रश्न के इस सरल संक्षिप्त तथा तथ्यपूर्ण उत्तर को पंजाब सभा गुरुदत्त भवन जालन्धर से मगवाकर जनसाधारण तक पहुंचाने की नितान्त आवश्यकता है।

रणबीर शास्त्री, एम०ए०, विद्यावाचस्पति सह-सम्पादक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी० न 23207/73 पंजी० न० P/RTK 49 फोन ७८११ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८१



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ३२ | २८ जुलाई १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

पंजाब के अकालियों ने यदि हरयाणा की बिजली तथा पानी रोका तो हरयाणा की जनता भी उनका रास्ता रोकेगी —प्रो० शेरसिंह

रोहतक २१ जुलाई हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने एक प्रेस वक्तव्य में अकाली नेताओं को चेतावनी देते हुए कहा कि पंजाब के अकाली नेता नई-नई धमकियां देना बन्द कर देवें और हरयाणा में पंजाब जैसा संकट खड़ा करने का यत्न न करें।

अम्बाला के मन्जी साहब गुरुद्वारे में सिखों को सम्बोधित करते समय दिये गये स० सुरजीतसिंह बरनाला तथा गुरुचरणसिंह टोहरा के उत्तेजक भाषणों का उल्लेख करते हुए प्रो० शेरसिंह ने कहा कि यदि अकाली नेता हरयाणा में अपनी शक्ति आजमाना चाहते हों तो अपनी धमकियों के अनुसार हरयाणा का पानी तथा बिजली बन्द करके देख लेवें। उस समय उन्हें पता लग जायेगा कि हरयाणा की वीर जनता अकालियों का हरयाणा में से गुजरना उसी प्रकार बन्द कर देगी जिस प्रकार गत वर्ष ऐशियाई खेलों के समय दिल्ली में गड़बड़ करने वाले अकालियों का रास्ता रोक दिया था। प्रो० शेरसिंह ने उग्रवादी अकालियों को सावधान करते हुए कहा कि यदि वे हरयाणा के हितों को हानि पहुंचाने के लिए हरयाणा की सीमा से दिल्ली मार्च करेंगे तो उन्हें मुंह की खानी पड़ेगी। हरयाणा की जनता अपनी वीरता की परम्परा के अनुसार अपने हितों की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार है अतः श्री टोहरा हरयाणा के सिखों को भड़काना बन्द कर देवें। हरयाणा में हिन्दू-सिख भाई-भाई की तरह रहना चाहते हैं। सभी हरयाणा वासियों के हित सांझे हैं। यदि पंजाब से हरयाणा के लिए पानी बिजली बन्द की गई तो उसकी हानि हरयाणा के सिखों को भी होगी।

प्रो० शेरसिंह ने टोहरा तथा बरनाला को स्मरण करवाया कि सन् १९४७ में पंजाब (पाकिस्तान) में मुसलमानों द्वारा हिन्दू-सिखों के कत्ले आम का बदला हरयाणा की भूमि पर ब्याज सहित लिया गया था। यदि अकाली अपने आपको बड़ा शूरमा समझते हों तो उन्हें पाकिस्तान में रह गए ननकाना साहब को पंजाब में मिलाने के लिए अपनी ताकत अजमानी चाहिए।

प्रो० शेरसिंह ने अकाली नेताओं को परामर्श दिया है कि वे झगड़ा करने के स्थान पर तर्क से काम लेवें और हरयाणा में उत्तेजक भाषण देकर वातावरण को खराब करने का दुःसाहस न करें। शाह कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार चण्डीगढ़ हरयाणा का है और प्रधानमन्त्री के एवार्ड के आधार पर हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा को मिलना चाहिए।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी
संयोजक, हरयाणा रक्षा वाहिनी दयानन्द मठ, रोहतक

अबोहर–फाजिल्का लिए बिना चण्डीगढ़ नहीं छोड़ेंगे : पंजाब दिवस पर भाषण

यमुनानगर, २० जुलाई (फोन से)—हिन्दी सुरक्षा समिति और अन्य संस्थाओं के सहयोग से यहाँ गत दिन पंजाब दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने उसमें अपने भाषण में कहा कि हमारी लड़ाई किसी जाति या सम्प्रदाय से नहीं है बल्कि हम उन तत्वों के विरुद्ध लड़ रहे हैं जो हरयाणा को बली का बकरा बना कर पंजाब के कुछ अकालियों को प्रसन्न करना चाहते हैं। दूसरी तरफ अकाली धमकियां देकर अपनी मांगें मनवाना चाहते हैं जिन्हें किसी भी मूल्य पर स्वीकार नहीं किया जा सकता।

प्रो० शेरसिंह ने अकाली नेताओं को मशवरा दिया कि वह धमकियां देना बन्द कर दें और तर्क पर आधारित बात करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि हरियाणा को जब तक फाजिल्का, अबोहर क्षेत्र नहीं मिलते हम चण्डीगढ़ कदापि नहीं छोड़ेंगे चाहे हमें इसका कितना भी मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। उन्होंने कहा तथ्य तो यह है कि चण्डीगढ़ हरयाणा के क्षेत्र में बना है और यह हरयाणा को मिलना चाहिए। उन्होंने अकाली नेताओं से कहा कि वह मत भूलें कि वह जो कुछ पंजाब में कर रहे हैं उसकी प्रतिक्रिया दूसरे सूबों में होगी।

उन्होंने "सिख एक अलग कौम है" इस शोशे के पीछे लन्दन दिमाग चल रहा है उन्होंने स्पष्ट किया कि पंजाब में जो कुछ हो रहा है उसकी प्रतिक्रिया हरयाणा में हुए बिना नहीं रह सकती।

रैली में हरयाणा की भूतपूर्व मन्त्री डा० कमला वर्मा ने कहा कि हिन्दू और सिख भाई-भाई हैं। उन्हें अलग करने के प्रयास असहनीय है। उन्होंने कहा पंजाब में पुलिस के अन्दर कुछ ऐसे तत्व हैं जो दरपर्दा उग्रवादियों की सहायता करते हैं। किन्तु हम हालात का डटकर मुकाबला करेंगे।

(वीरप्रताप २१-७-८३)

हरयाणा में आर्य समाजों के आगामी कार्यक्रम

आर्य समाज बेगा जि० सोनीपत ६,७,८ अगस्त
आर्य समाज कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत १० अगस्त।
(महात्मा भक्त फूलसिंह का ४३वां बलिदान दिवस)
आर्य समाज नया बांस जि० रोहतक १२,१३,१४ अगस्त।
(शहीद सुमेरसिंह का २५वां बलिदान दिवस)

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्, भर्गो देवस्य धीमहि,
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

गायत्री मन्त्र प्रश्नातीत है

डा० विश्वबन्धु "व्यथित" अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
डी० ए० वी० कालेज, अबोहर।

अब साधारण व्याकरण जानने वाला भी जान लेगा कि यहां तत् पद सर्वनाम है या विशेषण इन दोनों में यही अन्तर होता है कि सर्वनाम "जो सो" आदि के साथ कोई संज्ञा न लगे तो सर्वनाम, और संज्ञादि साथ प्रयुक्त होने पर विशेषण कहलाता है जैसे "वह पीपल का वृक्ष है, वह बहुत ऊंचा है," वाक्य में पहला "वह" संज्ञा-पीपल के साथ प्रयुक्त होने विशेषण है, दूसरा अकेला होने से सर्वनाम। अब देखें कि कि स्वामी दयानन्द जी ने तत् का प्रयोग वरेण्यं और भर्गः के साथ किया है, या इनके बिना अकेले पद के रूप में। अत्यन्त स्पष्ट है कि यहां "तत्" पद भर्गः के साथ प्रयुक्त होने से विशेषण है। अतः श्री स्वामी जी और उनके परम सहायकों के कथनानुसार गायत्री मन्त्र में किसी प्रकार की व्याकरणिक अशुद्धि खोजना निरा भ्रमित प्रलाप है।

तत् को सर्वनाम की अपेक्षा विशेषण ही मानने के अभिप्राय को भी हमने स्पष्टतः इस प्रकार रेखांकित किया था "यहां तत् का प्रयोग सर्वनाम के रूप में न होकर तुलना की दृष्टि से देशगत या काल गत दूरी की अपेक्षा भावगत, मात्रागत, परिमाणगत या अज्ञानगत दूरी की अभिव्यंजना के लिए ठीक उसी प्रकार आया है, जैसे "तत्" पद "तत्त्वमसि (तत् त्वम्)" में अनेकविध दूरियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। कल को यह न कह बैठियेगा कि यहां भी "यद्" पद की कमी है। —

(पंजाब केसरी, पृष्ठ—१, १५ फरवरी ८३)

प्रतीत होता है कि समास शैली में लिखी उपर्युक्त बात आपके पल्ले नहीं पड़ी। अतः तनिक खुलासा करदें। सामान्यतः वार्तालाप में दो व्यक्ति एक दूसरे को प्रत्यक्ष रूप में सम्बोधित करते हुए उत्तमपुरुष और मध्यम पुरुष "मैं" और "तुम" पदों का प्रयोग करते हैं, और अनुपस्थित या परोक्ष में विद्यमान व्यक्ति की चर्चा "यह" या "वह" कह कर की जाती है। स्पष्ट है कि निकट का बोध "यह" द्वारा होता है, और दूर का 'वह" द्वारा। किन्तु यह दूरी स्थान गत हुई। ईश्वर के विषय में यह कहना कि वह यहां नहीं, वहां है, उसकी सर्वव्यापकता से इन्कार करना होगा। फिर इस मन्त्र में हम ईश्वर के पवित्र गुणों का का ध्यान और अनुसरण करने का विचार कर रहे हैं, ऐसी दशा में यह विचार करना आवश्यक है कि क्या हम ईश्वर के गुणों का यथावत् अनुसरण कर सकते हैं? क्या हम ईश्वर के सभी गुणों को अपने जीवन में धारण करने की सामर्थ्य रखते हैं? क्या हम ईश्वरीय गुणों का पूर्णतः अनुसरण करके ईश्वर के समकक्ष या पूर्ण ब्रह्म बनने की कल्पना कर सकते हैं? इन सभी दुःख दार्शनिक प्रश्नों का स्पष्ट समाधान इसी "तत्" विशेषण से प्राप्य है। वह इस प्रकार कि ईश्वरीय गुण हमने भावगत, मात्रागत और परिमाणगत दूरी रखते हैं। जैसे ईश्वर यदि सर्वव्यापक है, तो हम उसका अनुसरण करते हुए समान भाव या अर्थ में सर्वव्यापक कदापि नही हो सकते, लेकिन अपनी शक्ति और सीमा की मात्रा व परिमाण के अनुसार हम अपने व्यक्तित्व का विस्तार करके अपने स्वार्थ को निज से परिवार से ग्राम तथा ग्राम से प्रान्त प्रान्त से देश, व देश से सकल विश्व तक विस्तारित करते हुए कह सकते हैं कि 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे"

ठीक इसी तरह परमेश्वर के गुणों का अनुसरण करते हुए हमारा दयालु, परोपकारी, सत्यवादी, विद्वान् और न्यायकारी आदि बनना हमारी अपनी सामर्थ्य की सीमाओं द्वारा मर्यादित है। "वरेण्यम्" पद भी इसी मानवीय सामर्थ्य-सीमा की ओर संकेत करता है। संस्कृत में यत् प्रत्यय के दो अर्थ होते हैं, योग्य और शक्यः। अतः वरेण्यम् के दो अर्थ हुए ईश्वर के वे गुण; जो वरण करने या अनुकरण करने के योग्य है अथवा ईश्वर के गुणों की वह सीमा जिसे हम मनुष्य अपनी शक्ति और सामर्थ्य के बल पर अपने जीवन में धारण कर सकते हैं अथवा धारित गुणों को पुष्ट कर सकते। (दुधाञ् धारणपोषणयोः) धातु से धीमहि बनता है। यह सर्वमान्य है।

अत्यन्त स्पष्ट है कि यहां वरेण्यम् का दूसरा शक्य वाला अर्थ ही लिया जा सकता है, क्योंकि पहले अर्थ को मानने में दो दोष है, एक तो प्रभु के वरण करने योग्य गुणों की कल्पना करने से ऐसे दोषों या विशिष्ट गुणों की भी तालिका बनानी पड़ेगी, जिन्हें धारण करना मानव के लिए हानिकर हो सकता है। पाठक इसी बात से समझ गए होंगे कि ऐसे भ्रम के कारण ही शर्मा जी ने ईश्वर के मांसाहार और काफ़िर-वध आदि गुण गिनाएं हैं, जो उनकी बुद्धि के दिवालिएपन का सूचक हैं।) प्रत्येक आस्तिक व्यक्ति पूर्णतया आश्वस्त है कि ईश्वर में ऐसा कोई दोष नहीं हो सकता, जिसका अनुसरण अनुपयोगी या हानिकर हो। नास्तिक और अहकारी व्यक्ति ही परमेश्वर में भी उलटे सीधे दोषों की खोज करने बैठते हैं, और चान्द या सूरज की और मुंह करके थूकने वाले के समान ही उनकी गति होती है, वे चाहे इसे ही प्रगति मानकर संतोष करते फिरे।

"वरेण्यम्" का "धारण करने योग्य" अर्थ मानने में दूसरा दोष यह आता है कि मानव के लिए ईश्वर के समस्त गुणों को यथावत् धारण करना व्यवहार की दृष्टि से संभव नहीं है। कोई मनुष्य कितना भी महान् क्यों न हो जाए, परमेश्वर के कुछ गुणों को केवल आंशिक रूप से ही धारण करना उसके लिए संभव है। किसी असंभव कार्य का उपदेश गायत्री मन्त्र में क्यों खोजा जाए। फिर ऐसी अवस्था में 'पोषण" का क्या अर्थ रह जाएगा? क्या ईश्वर को भी अपने गुणों का पोषण करने का उद्योग करना पड़ता है? कदापि नहीं। वस्तुतः ईश्वर, जीव और प्रकृति के मूलभूत गुण ही पृथक् है। जीव कदापि ब्रह्म नहीं बन सकता। हां उसका प्रकृति के गुणों से क्रमशः दूर होते हुए ईश्वरीय गुणों की यथाशक्य निकटता प्राप्त करने हेतु सचेष्ट रहना न केवल व्यवहारिक, उपयोगी और कल्याणमय है, अपितु यही उसके जीवन का सर्वोत्तम ध्येय भी है। इसी की साधना का सर्वोत्तम उपाय गायत्री सिखाती है। यही "वरेण्यम्" के दूसरे शक्य अर्थ का अभिप्राय है।

हमने पंजाब केसरी के २२ फरवरी ८३ के अंक में इसी तथ्य की ओर संकेत करते हुए निवेदन किया था—"श्री (सुरेन्द्र कुमार) शर्मा जी ने इस मन्त्र के अत्यन्त साधारण अर्थ को भी जानने का प्रयत्न किया होता, तो उन्हें पता चल जाता कि इस मन्त्र में करने को इतना कुछ है कि कोई साधक अनन्त जन्मों में भी इस महान् कार्य से मुक्ति नहीं पा सकता और न ही इससे श्रेष्ठ किसी कर्म की कोई कल्पना मानवीय जीवन के इतिहास में संभव है। ...... ईश्वर के सत्य, अहिंसा, विमान, प्रेम, त्याग और यज्ञीय गुणों के अनुसार अपना जीवन ढालने या इन गुणों के (मानवीय सीमित सामर्थ्य के अनुसार) मनुष्य जीवन में ढालने योग्य स्वरूप को धारण करने में क्रमशः गान्धी, बुद्ध, न्यूटन, ईसा, महावीर और दयानन्द ने अपना जीवन खपा दिया।

सम्पादकीय

पाठकों की शंकाओं का समाधान

वैद्य महीपालसिंह मेधार्थी आर्य चिकित्सालय आर्यसमाज मन्दिर महेन्द्रगढ का दिनांक ११-६-८३ का लिखा पत्र मिला। माननीय वैद्य जी ने इस पत्र में कुछ वैदिक धर्म सम्बन्धी शकायें भेजी हैं। उनका समाधान निम्नलिखित है—

१—सम्यग्दर्शनसम्पन्न कर्मभिर्नंनिबध्यते।
दर्शनेन विहीनस्तु संसार' प्रतिपद्यते ॥मनु०६।७४॥

शंका—इस श्लोक में षड्दर्शनों का जो वर्णन आया है इस पर मुझे शका है, वह यह है कि यहां जो महर्षि ने सस्कार विधि में इस श्लोक की व्याख्या में षड्दर्शनों का वर्णन किया है, उस पर मुझे शंका है कि यह षड्दर्शन ६ शास्त्र यानी योग, सांख्य, न्याय आदि हैं तो मनुस्मृति इससे पहले बनी और बाद में ये दर्शन बने। बाद में बनने वाली वस्तु का पहले वाली में कसे वर्णन आ सकता है। यदि षड्दर्शन का मतलब ६ शास्त्रों से न होकर और कोई अर्थ है तो कृपया इसे समझाने का कष्ट करे।

समाधान—यहा महर्षि ने 'सम्यग्दर्शन सम्पन्न' पद का जो 'षड्-दर्शनो से युक्त' अर्थ किया है, उसका अभिप्राय साख्य आदि छः दर्शन ही है। दर्शन शास्त्र जन्म-मरण (ससार) आदि विषयो को भली भाँति समझाते है। उनके अध्ययन बिना ससार को समझना कठिन है। साख्य आदि विद्याओं के नाम है, जो प्राचीनकाल से चली आती है। उन विद्याओं के कपिल का साख्य तथा पतजलि का योग दर्शन आदि ग्रन्थ आज कैसे मिलते हैं। ये वेद के उपाङ्ग कहाते है। इनमें मनुस्मृति के निम्नलिखित श्लोक में वेदाङ्गों के अध्ययन का वर्णन है।

एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः।
योऽध्यापयति वृत्यर्थमुपाध्याय स उच्यते ॥२।१४३॥

मनुस्मृति के इस श्लोक में वेदाङ्गों के अध्यापन का वर्णन है। जो वेदाङ्गों को पढाता है वह उपाध्याय कहाता है। इससे स्पष्ट है कि मनुस्मृति के काल में वेदाङ्गो का विकास हो चुका था।

शका—आर्यसमाज का तीसरा नियम 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' इसमे जो 'का' आया है इस पर रोज काफी अध्यापक व शास्त्री आकर आपत्ति करते हैं, वह कहते है कि 'का' की जगह 'की' होना चाहिए। क्योकि वे 'पुस्तक' को स्त्रीलिग मानकर 'की' प्रयोग करते है।

समा०—'पुस्तक' शब्द संस्कृत-भाषा से हिन्दी भाषा मे आया है। सस्कृत भाषा में 'पुस्तक' शब्द नपुसक लिग है। महर्षि ने संस्कृत भाषा के आधार पर इस पद को नपुसक लिंग मानकर 'का' शब्द का प्रयोग किया है। जो 'पुस्तक' शब्द का स्त्रीलिंग मानते हैं, उनका स्त्रीलिंग मानने का क्या आधार यह उनसे पूछना चाहिए। हिन्दी भाषा में तो देश-भेद से एक ही शब्द को स्त्रीलिंग और पुलिंग में प्रयोग करते है। जैसे साबुन शब्द का प्रयोग कही पुलिंग में तथा कहीं स्त्रीलिंग में भी किया जाता है। महर्षि की हिन्दी-भाषा संस्कृत-निष्ठ है। 'विधि' शब्द हिन्दी भाषा में स्त्रीलिंग में प्रसिद्ध है किन्तु महर्षि की हिन्दी भाषा में इसका पुलिंग में प्रयोग किया गया है, "संस्कार का विधि लिखते हैं।" सस्कृत-भाषा के वैयाकरण 'विधि' शब्द को पुलिंग मानते हैं। भाषाओं मे समय समय पर अनेक परिवर्तन होते रहते है। महर्षि हिन्दी भाषा के प्रयोग उनके अपने समय की दृष्टि से ठीक हैं और अब उनमें हमें परिवर्तन नहीं करना चाहिये जिससे महर्षि की हिन्दी भाषा के प्रयोगों का सुरक्षित रहे।

शंका०—इन्द्रियां, तत्त्व, द्रव्य की परिभाषा (अर्थ) समझायें।

समा०—इन्द्र का अर्थ आत्मा है। आत्मा के आंख आदि शारीरिक उपकरण इन्द्रियां कहाती है। तस्य भावः—तत्त्वम्। किसी पदार्थ का अपना स्वरूप तत्त्व कहाता है। वैशेषिक दर्शन मे द्रव्य का लक्षण यह है—"क्रियागुणवत्समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम् ॥१।१।१५॥ जिसमें क्रिया, गुण और केवल गुण रहे उसको द्रव्य कहते हैं। पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और आत्मा ये छः द्रव्य क्रिया और गुण वाले हैं, आकाश, काल और दिशा ये तीन क्रिया रहित किन्तु गुण वाले द्रव्य हैं।

शका—यज्ञोपवीत के बिना कोई यज्ञ आदि शुभ कर्म कर लिए जायें तो क्या हानि है। यज्ञोपवोत का यज्ञ आदि शुभ कर्मों से क्या सम्बन्ध है।

समा०—वैदिक संस्कृति में १६ संस्कारो में से एक सस्कार उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार है। उसका अपना उतना ही महत्त्व है जितना कि विवाह आदि सस्कारो का। विवाह-संस्कार के बिना भी सन्तानोत्पत्ति हो सकती है, फिर विवाह-सस्कार की क्या आवश्यकता है? शरीर और आत्मा को सस्कृत (शुद्ध) करने के लिए १६ सस्कारों का विधान है। जैसे यज्ञ आदि शुभ कर्म मन एवं आत्मा को पवित्र करते है, वैसे उपनयन आदि सस्कार भी आत्मा के पावक है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के लिये यज्ञोपवीत का विधान है। जो यज्ञोपवीत धारण नही करते वे वैदिक सस्कृति में पतित-सावित्रीक कहाते है। उनको सावित्री (गायत्री) आदि मन्त्रों में पाठ अधिकार नही रहता। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के लिये यज्ञ आदि शुभ कर्मों के अनुष्ठान का विधान है। जो यज्ञोपवीत से रहित होगा वह किस वर्ण में माना जाएगा। हा ब्रह्मचर्य आदि आश्रमो मे सन्यास आश्रम मे यज्ञोपवीत नही रहता। वहा यज्ञ आदि कर्मों के अनुष्ठान का नियम भी हट जाता है। वह शुभ कर्मो के अनुष्ठान से इतना पवित्र बन जाता है कि उसे इन उपकरणों की आवश्यकता नहीं रहती।

शंका०—धर्म के दस लक्षणो मे दूसरा लक्षण क्षमा है। जिसका अर्थ निन्दा, स्तुति, मान, अपमान, हानि, लाभ आदि दुखों में भी सहनशील रहना लिखा है। जब हम अपमान, हानि आदि सहन करने लग जायेंगे तो धूर्त लोग ज्यादा तंग करेंगे। वह सन्यासियों के लिये तो टीक बैठना है, अन्यो के लिये नही।

समा०—निन्दा, स्तुति, मान-अपमान आदि दुख साधारण जन से लेकर चक्रवर्ती राजा को आते हैं। इनके सहन करने की शक्ति का नाम क्षमा है। इन दुखों में उसे विचलित नही होना चाहिये अपितु इनका समयानुसार यथोचित उपाय करना चाहिए। जैसे हानि से दुख होता है, उस हानि के निवारण का उपाय करे। ऐसे अपमानजन्य दुःख को दूर करने का भी उपाय करे। क्षमा अर्थ मुआफ करना समझा जाता है। वह ठीक नही। क्या हानि को कोई मुआफ कर लेता है? नही। उसके निवारण के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। इसी प्रकार दुखों में स्थित-प्रज्ञ होकर उनके निवारण के लिए प्रयत्नशील रहने का नाम क्षमा (सहनशक्ति) है।

शका—वेद पुस्तक रूप में कब से आए।

समा०—जब लोग वेदों को श्रुति की पूर्ण दशा में न रख सके तब ऋषियों ने उन्हें अक्षरो में लिखकर चार पुस्तको का रूप दिया। महर्षि ने इस विषय में एक व्याख्यान पूना मे दिया था। उस व्याख्यान के वचन ये हैं—"इक्ष्वाकु के समय में लोग अक्षर स्याही आदि लिखने की रीति को प्रचार में लाए, ऐसा प्रतीत होता है क्योंकि इक्ष्वाकु के समय में वेद को पूर्णतया कण्ठस्थ करने की रीति कुछ-कुछ बन्द होने लगी। जिस लिपि में वेद लिखे जाते थे उसी का नाम 'देवनागरी' ऐसा है। महर्षि के इन वचनों से स्पष्ट होता है कि वेद पुस्तक रूप में राजा इक्ष्वाकु के काल में आए।

—सुदर्शनदेव आचार्य

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है, कार्यालय की ओर से उन्हें पत्र द्वारा सूचित करते हुए शुल्क भेजने का निवेदन किया गया है। अत. निवेदन है कि ग्राहक महानुभाव अपना चन्दा मनीआर्डर अथवा सभा उपदेशको द्वारा ३१ जुलाई तक भेज देवें ताकि सर्वहितकारी भेजा जाता रहे। -व्यवस्थापक

हिन्दुओं को पंजाब छोड़ना पड़ा तो सारे देश में प्रतिक्रिया होगी

नई दिल्ली २४ जुलाई (हि. स.): आर्यसमाज के नेताओं ने आज यहां चेतावनी दी कि यदि उग्रवादी अकालियों की हिंसात्मक गतिविधियों को इसी प्रकार सहन किया जाता रहा, तो पंजाब के अल्पसंख्यक हिन्दुओं का वहां जीवन दूभर हो जाएगा और इसकी जिम्मेदारी सरकार, कांग्रेस (इ) तथा विपक्षी दिलों पर होगी।

आज यहां आर्यसमाज दीवान हाल में पंजाब सुरक्षा दिवस पर आयोजित एक सम्मेलन में भाषण करते हुए भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रो० शेरसिंह ने कहा कि पंजाब में उग्रवादी अकाली विदेशों से सहयोग लेकर हिंसक व अलगाववादी गतिविधियों में संलग्न हैं। यदि समय रहते इसे सख्ती से नहीं दबाया गया, तो वहां के अल्पसंख्यक हिन्दुओं को पंजाब छोड़ने पर मजबूर होना पड़ेगा तथा उसकी प्रतिक्रिया तमाम देश में होगी।

प्रो० शेरसिंह ने आरोप लगाया कि पाकिस्तान तथा अमरीका के संकेत पर अलगाववादी गतिविधियां चलाने वाले अकाली, सिख गुरुओं के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। महान् सिख गुरुओं ने देश व हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए बलिदान दिये तथा राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त किया था, ऐसे देशद्रोहियों को सहन नहीं किया जाना चाहिए।

श्रीरामगोपाल शालवाले ने कहा कि अनेक विपक्षी दल भी वोटों के लिए अकालियों से सांठगांठ करने से नहीं हिचक रहे। वोटों के लिए राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों का समर्थन शर्मनाक है।

उन्होंने कहा कि हिन्दू मंदिरों को उड़ा देने की धमकियां, पत्रकारों की हत्या, निर्दोष लोगों का खून बहाया जाना इस बात का प्रमाण है कि पंजाब को पूरी तरह आग की लपेटों में झोंकने का षड्यंत्र रचा जा चुका है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महासचिव श्री ओमप्रकाश त्यागी ने कहा कि सिख पंथ का जन्म ही मुगलों द्वारा हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन का जवाब देकर हिन्दु धर्म की रक्षा के उद्देश्य से किया गया था। आज अपने को गुरुओं का अनुयायी बताने वाले उग्रवादी अकाली अपने को हिन्दु समाज से अलग बताने लगे हैं। वे पाकिस्तान तक से हाथ मिलाने नहीं हिचकिचा रहे।

(दिल्ली दैनिक पंजाब केसरी २५-७-८३)

सम्पादक के नाम पत्र

सम्पादक महोदय सर्वहितकारी,

सप्रेम नमस्ते! मैं आपके साप्ताहिक सर्वहितकारी द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के माननीय प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह जी को हार्दिक बधाई भेंट करता हूं। अपने सुपुत्र के विवाह पर सब प्रकार के आडम्बरों वा कुरीतियों को रौंदते हुए उन्होंने एक आदर्श धार्मिक वा सामाजिक नेता के रूप में सबके सामने एक उदाहरण उपस्थित किया है।

आज से कुछ वर्ष पूर्व प्रो० शेरसिंह जी ने अबोहर में एक समाज सुधार सम्मेलन में बड़े धार्मिक शब्दों में विवाहों पर प्रचलित कुरीतियों का चित्र खींचते हुए लोगों से अनुरोध किया था कि इस पतन की बाढ को साहस करके रोकें। उसमें और भी कई वक्ता थे। कहना सरल है करना कठिन है। मुझे गर्व है कि महान श्रद्धानन्द के एक मानस पुत्र ने कथनी और करनी जोड़कर सारे आर्यसमाज का सिर ऊंचा कर दिया है। मेरी आखों के सामने अबोहर के उस सम्मेलन का चित्र है और सर्वहितकारी में प्रो० साहब के सुपुत्र के विवाह का छपा समाचार है।

आज मेरा हृदय गद्गद् है कि एक आर्यसमाजी नेता ने आर्यसमाज की साख को अपने ऊंचे आचरण से बढ़ाया है। गत दिनों किसी ने मुझ से पूछा था कि सादगी से विवाह करने का किसी प्रतिष्ठित आर्य परिवार का कोई उदाहरण है क्या?

प्रो० शेरसिंह जी ने अपने सुपुत्र के विवाह पर ऐसा उदाहरण उपस्थित करके जहां अपने नाम और काम को चार चांद लगाए हैं वहां आर्यसमाज की शोभा को बढ़ाया है। मुझे पता है कि वह इन दिनों राष्ट्र, जाति, हरयाणा के हितों के लिए संघर्ष रत होने के कारण अपने सुपुत्र के विवाह के लिए समय भी न दे पाए। पुनः हृदय से बधाई भेंट करता हूं।

विनीत—
राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को अबोहर फाजिल्का देने ही होंगे

भारत बहुभाषी हो सकता है, बहुराष्ट्र नहीं: सेठी

नई दिल्ली, २५ जुलाई (वार्ता) आज राज्य सभा में पंजाब के मामले पर दिए गए अपने वक्तव्य पर हुई साढे तीन घण्टे की चर्चा का जवाब देते हुए गृह मन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने कहा कि यदि १९७० का फैसला लागू करना है तो चण्डीगढ के बदले फाजिल्का एवं अबोहर हरयाणा को देना ही होगा।

उन्होंने कहा कि यह स्वीकार्य नहीं होने पर जल विवाद और सीमा विवाद के लिए पृथक आयोग बनाए जा सकते हैं। गृह मन्त्री ने स्पष्ट किया कि किसी भी फैसले में राजस्थान को मिलने वाले जल में कमी नहीं की जा सकती। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि विपक्ष भी इससे सहमत है।

उन्होंने द्रमुक के गोपाल सामी के इस दावे को गलत बताया कि भारत बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक हो सकता है लेकिन यह राष्ट्र एक ही है और एक ही रहेगा।

गृहमंत्री ने कहा कि सरकार अकालियों की धार्मिक मांग मानने की बात पहले भी कही जा चुकी है लेकिन राजनीतिक मांगों पर सभी प्रभावित पक्षों से बातचीत करने के बाद ही फैसला हो सकता है।

इससे पूर्व पंजाब के मामले पर सरकार की विफलता के कारण आज राज्य सभा में सरकार से इस्तीफे की मांग की गई।

पंजाब की समस्या पर गृहमंत्री प्रकाशचन्द सेठी द्वारा अपनी ओर से दिए गए वक्तव्य के बाद हुई बहस में भाग लेते हुए जनता पार्टी के श्री सुरेन्द्र मोहन ने कहा कि गृहमन्त्री द्वारा अपने वक्तव्य में सन्त भिंडरांवाला के बारे में एक शब्द भी नहीं कहने से स्पष्ट होता है कि सत्ता रूढ दल की उग्रवादियों के साथ कोई मिली भगत है।

इस अवसर पर विपक्षी सदस्यों ने शर्म-शर्म के नारे लगाये।

श्री सतपाल मित्तल (कां० इ०) ने कहा कि पंजाब समस्या चण्डीगढ़ जल बटवारे या क्षेत्रीय विवाद नहीं बल्कि केवल राजनीतिक व सत्ता को लड़ाई है। अकाली दल जब सत्ता में था उसने कभी ये समस्याएं नहीं उठायीं।

श्री हरकिशनसिंह सुरजीत (मा) ने कहा कि यह कहना गलत है कि विपक्ष सहयोग नहीं कर रहा है।

श्री लनवाल मलिक (लोकदल) ने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि दलीय स्वार्थ के लिए वह स्थिति उलझाये रखना चाहती है।

(दैनिक ट्रिब्यून २६-७-८३ से साभार)

ग्राम कण्डरोली जि० अम्बाला में आर्यसमाज की स्थापना

ग्राम कण्डरोली जि० अम्बाला में आर्यसमाज के उत्सव २, ३ जुलाई के अवसर पर आर्यसमाज की विधिवत स्थापना हो गई है। आर्यसमाज के प्रचार से प्रभावित होकर ग्राम निवासियों ने एक एकड़ भूमि आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए दी है। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने मन्दिर की आधारशिला रखते हुए ग्रामवासियों से आर्य-समाज के कार्यों में तन मन तथा धन से सहयोग करने का आह्वान किया। इस अवसर पर प० हरलाल जी, पं० शेरसिंह जी तथा पं० बनारसीलाल जी के भी प्रभावशाली भजन हुए।

चन्द्रशेखर प्रधान जनता पार्टी के नाम खुला पत्र

प्रिय चन्द्रशेखर जी,

आपकी पटयात्रा के पश्चात् जो वक्तव्य आपका आया, उससे यह आशा बन्धी कि ग्रामीण जनता को पीने के पानी जैसी बुनियादी जरूरतों की ओर में नई चेतना आयेगी और लाखों ग्रामों में बसने वाली उपेक्षित जनता एक अंगड़ाई ले सकेगी।

मुझे बड़ी निराशा हुई जब आप दिल्ली में एक दिन विश्राम करके शीघ्र श्री लोंगोवाल के पास अमृतसर पहुचे जो देश में अलग कौम का नारा लगा रहे हैं और उसके पश्चात् दिल्ली में हुई बैठक में आपने चण्डीगढ पंजाब को दिये जाने की एकतरफा घोषणा कर दी। हरयाणा तो जैसे भारत के नकशे पर है ही नहीं। हरयाणा को यह भी आपसे गिला है कि सारे देश के गावों में पीने का पानी पहुचाने के अपने संकल्प को आप हरयाणा के संदर्भ में बिल्कुल भूल गये। आपको पता है कि राजस्थान से लगते हुए बहुत से रेतिले इलाके महेन्द्रगढ, लोहारू, भिवानी, झज्जर, फारोजपुर झिरका, रेवाड़ी, आदि हैं। जहां लोगों को पानी उपलब्ध नहीं है जब तक हरयाणा को सतलुज-यमुना लिंक नहर नहीं बनती, उन्हें पीने का पानी नहीं मिलेगा, और इसको अकाली तथा अन्य पंजाब के लोग रोके हुए है। आप से आशा थी कि आप अपने संकल्प को याद करके पहिला काम यही करेगे और प्यासे लोगों को पानी दिलाने के लिए सभी दलों को साथ मिलाकर आवाज उठायेंगे। आपने यह तो नहीं किया, चण्डीगढ पंजाब को देने में ही आपने सारी समस्या का हल समझ लिया। क्या आपने शाह कमीशन की रिपोर्ट पढ़ी, या चण्डीगढ की जनता की राय जानने की कोशिश की। क्या आप बता सकेंगे यह एकतरफा फैसला आपने क्यों और कैसे दिया।

मैंने आपका ध्यान प्रजातन्त्र का माना हुआ रास्ता अपनाने तथा आपके अपने संकल्प की ओर आकृष्ट किया है। आशा है आप अपनी आत्मा की आवाज सुनकर गलत कदम वापिस लेंगे और सही कदम आगे बढायेंगे

भवदीय

प्रो० शेरसिह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी
एम १४ साकेत नई दिल्ली २२-७-८३

श्री के. एल. भगत सूचना एवं प्रसारण मंत्री के नाम खुला पत्र

प्रिय भगत जी,

परसो आपके कार्यालय में आप से बात हुई थी, उसी सिलसिले में यह पत्र आपको लिख रहा हूं।

हरयाणा रक्षावाहिनी के संयोजक ने आकाशवाणी के निदेशको पत्र संख्या ८३४ दिनाक १५-७-१९८३ एक पत्र लिखा था। उसमें यह शिकायत की थी कि आकाशवाणी तथा दुरदर्शन अकालियो तथा पंजाब के मामले को तो बढ़ चढ कर प्रचारित करता रहता है परन्तु हरयाणा से सम्बन्धित तथा उग्रवादी अकालियों के विरूद्ध गतिविधियों की चर्चा तक इन माध्यमों के द्वारा ऐसा लगता है कि प्रतिबन्धित कर दी गई। ८ जुलाई को हरयाणा में जो करीबन पूरी हड़ताल हुई और जिसकी चर्चा देश भर में समाचार पत्रों में हुई उसकी चर्चा तक इन माध्यमों द्वारा नहीं दी गई। आकाशवाणी की इस भेदपूर्ण नीति के विरूद्ध हरयाणा में व्यापम रोष है।

इसके अतिरिक्त आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर अकालियों की मांगों को लेकर पंजाब के दृष्टिकोण को प्रचारित करने के लिए वार्तायें हुई, परन्तु हरयाणा की सर्वथा उचित तथा तर्कपूर्ण मांगों और दृष्टिकोण को उजागर करने के लिए हरयाणा के प्रतिनिधियों को वार्ता आदि का कोई अवसर नहीं मिला। यह एक राज्य के साथ अन्याय है और भेदभावपूर्ण नीति है। मेरा आप से अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध में उचित कदम उठाकर वर्षों से चल रहे इस भेदभाव को दूर करेंगे और जनता के सम्बन्ध में पंजाब, हरयाणा की समस्या के सम्बन्ध में तथ्यों को रखने का अवसर देंगे।

भवदीय

प्रो० शेरसिह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी
एम. १४ साकेत नई दिल्ली २२-७-८३

वेदप्रचार सप्ताह धूम-धाम से मनाने की अपील

इस वर्ष वेद सप्ताह (श्रावणी उपाकर्म से श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक) २३ से ३१ अगस्त तक सारे आर्य जगत् में मनाया जावेगा। इन तिथियों में एक साथ सभी आर्य समाजों में उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध कर सकना सम्भव नहीं होगा। अतः आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी सुविधा के अनुसार अगस्त तथा सितम्बर मास में वेद प्रचार सप्ताह मनाने के लिए तिथियां निश्चित करने का कष्ट करें और उसकी सूचना पत्र लिखकर सभा को भेजें ताकि समय पर उपदेशक तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध किया जावे। जिन आर्यसमाजों की मांग पहले आवेगी, उनका प्रबन्ध पहले किया जावेगा।

सभा मन्त्री

चर्बी कांड के अभियुक्तों को पकड़ने की मांग

सिरसा, २५ जुलाई (एस)। २० जुलाई की रात को सिरसा रेलवे पुलिस ने रेलवे माल गोदाम से ऐसे ६० ड्रम (124 क्विंटल) [illegible] चर्बी का सन्देह था, अपने कब्जे मे ले लिये। यह चर्बी बिल्टी नम्बर १२०१३१ के अन्तगत २८ जून को बम्बई के एक स्टेशन सीमोन से सिरसा की एक फर्म के नाम बैंक बिल्टी द्वारा भेजी गई थी जिसे उक्त फर्म ने बिल्टी बैंक से छुड़वाकर जैसे ही रेलवे गोदाम से छुड़वाया, रेलवे पुलिस ने यह ड्रम अपने कब्जे में ले लिया। रेलवे पुलिस को सूचना मिली थी कि इसमे गाय की चर्बी है।

उल्लेखनीय है कि यह चर्बी तीसरी बार सिरसा आई है। पिछले वर्ष एक जुलाई ८२ को भी इतने ही ड्रम चर्बी आई थी। बिल्टी पर स्थानीय एक अन्य फर्म का भी नाम है।

अभी तक इस सम्बन्ध मे किसी की गिरफ्तारी नही हुई है।

स्थानीय गोरक्षा समिति, विश्व हिन्दू परिषद् तथा अन्य संगठनो ने सिरसा के उपायुक्त को ज्ञापन देकर इस कांड की जांच करने और अभियुक्तो को पकड़ने की मांग की है।

(दैनिक ट्रिब्यून २६-७-८३ से साभार)

यति मण्डल की बैठक

सब आर्य सन्यासियो, वानप्रस्थियो और ब्रह्मचारियों से नम्र निवेदन है कि सार्वदेशिक यति मण्डल की आवश्यक बैठक दिनांक १, २ अगस्त सोमवार, मगलवार १९८३ को आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) मे रखी गई है।

जिसमे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी महोत्सव को सफल बनाने के लिए यतिमण्डल का कार्यक्रम निर्धारित किया जायेगा, क्योंकि महर्षि दयानन्द जी महाराज सच्चे आदित्य ब्रह्मचारी, आदर्श यति और उच्चकोटि के सन्यासी थे।

अतः इस युग के महापुरुष की शताब्दी को सफल करना हम लोगों का प्रमुख कर्त्तव्य है। जो भी संन्यासी-वानप्रस्थी तथा ब्रह्मचारी आपके सम्पर्क या जानकारी में हों, सबको बैठक में उपस्थित होने की सूचना देने का अनुग्रह कीजिए। समय थोडा है। यति मण्डल के ही विशेष प्रयास से सभी व्यक्तियों का एक साथ मिलकर शताब्दी समारोह अजमेर में ३, ४, ५, ६ नवम्बर को हो रहा है।

हमने एकजुट होकर कार्य करना है।

—स्वामी सर्वानन्द अध्यक्ष यति मण्डल

पहलवानों की भर्ती का सुनहरी अवसर

जाट रेजिमेण्ट की एक बटालियन के लिए ४८ किलो से ८५ किलो वजन के ८-१० होनहार व उच्चकोटि के स्वस्थ पहलवानों को तुरन्त भर्ती करनी है। आवश्यक शर्तें इस प्रकार हैं—

आयु—१७ से २० वर्ष, शिक्षा—मिडिल या मैट्रिक (कम से कम ५ कक्षा का सार्टीफिकेट आवश्यक), कद—५ फुट ८ इंच छाती ३४-३६ इंच।

वेतन—४०० रु० महीना से प्रारम्भ, भोजन, आवास, चिकित्सा आदि की मुफ्त सुविधायें, वर्ष में दो तीन महीने की छुट्टियां, उज्ज्वल भविष्य तथा पदोन्नति के अवसर।

शीघ्र सम्पर्क करें—

१—आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द मठ, रोहतक।
२—सस्कृत हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी।
३—ओमप्रकाश मेम्बर पचायत (पचगाव) बस अड्डा बाढडा जिला (भिवानी)

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव ४ सितम्बर ८३ को होगा। हरयाणा सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने प्रतिनिधि चुनकर वेदप्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी के प्राप्तव्य शुल्क के साथ प्रतिनिधि फार्म सभा कार्यालय में शीघ्र भेज देवे, ताकि जांच पड़ताल करके प्रतिनिधियों को स्वीकार किया जा सके। २० अगस्त तक जो प्रतिनिधि स्वीकार हो जावेगे उनकी सेवा में अधिवेशन का एजण्डा समय पर भेजा जा सकता है।

अभी तक थोड़े आर्यसमाजों के फार्म प्राप्त हुए हैं। वे भी प्रायः अधूरे हैं। सभा के प्रतिनिधियो तथा समाज के अधिकारियो ने भी अपने समाज के कोष मे अपनी आय का शतांश (चन्दा) नहीं दे रखा है। जब तक शतांश रूप मे शुल्क आर्यसमाज के नियम, उपनियम सख्या ४ (क) के अनुसार प्रति फार्म मे अकित नहो होगा तब तक प्रतिनिधि स्वीकार नही हो सकेंगे।

अतः निवेदन है कि आर्यसमाजे अपने प्रतिनिधि फार्म ठीक प्रकार से भरकर प्राप्तव्य राशि के सहित कार्यालय मे भेज देवें, ताकि एजण्डा सभी प्रतिनिधियो को समय पर भेजा जा सके।

—सभा मन्त्री

आर्यसमाजों, आर्य स्कूलों तथा गुरुकुलों के अधिकारियों से निवेदन

परोपकारिणी सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की देखरेख में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह दीवाली पर्व के अवसर पर ३ से ५ नवम्बर ८३ तक स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे अजमेर नगरी मे मनाने की तैयारी जोर शोर से आरम्भ हो गई है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की गत अंतरंग सभा की बैठक में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास करके हरयाणा के आर्यसमाजों, आर्यस्कूलो तथा गुरुकुलो आदि आर्य शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियों से अनुरोध किया गया है कि वे अभी से अजमेर की यात्रा करने की तैयारी आरम्भ कर देवें। सभा की ओर से हरयाणा रोडवेज से रियायती दर पर अजमेर ले जाने के लिए बसें प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस प्रकार अजमेर जाने में सुविधा रहेगी। अतः सभी आर्यसमाजे, आर्यस्कूल तथा गुरुकुलो के अधिकारी अपने नगर तथा ग्रामो से अजमेर यात्रा करने वाले आर्य नर नारियो की सूची तैयार कर लेवें ताकि उसी हिसाब से बसों का आरक्षण किया जावे।

शताब्दी समारोह पर विशेष रचनात्मक कार्यक्रम तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार के लिये योजना तैयार की जावेगी। ऋषिकृत ग्रन्थों का प्रकाशन किया जा रहा है। यात्री अजमेर जाते तथा आते समय राजस्थान के ऐतिहासिक स्थानों को भी देख सकेंगे।

इस समारोह को सफल करना सभी आर्यों का कर्त्तव्य है। हमारे जीवन में यह शताब्दी पुनः न आ सकेगी। अतः आर्यसमाजें शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए धनराशि मन्त्री परोपकारी सभा अजमेर के नाम भेजकर ऋषिऋण चुकाने का यत्न करें। परोपकारी सभा के मान्य प्रधान स्वामी ओमानन्द जी धनसंग्रह के लिए सारे भारत का भ्रमण कर रहे हैं।

—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ सभामन्त्री

आर्यसमाज सोनीपत नगर का प्रस्ताव

सोनीपत नगर निवासियों की यह विराट सभा उग्रवादी अकालियों द्वारा पंजाब में बीभत्स हिंसक गतिविधियों, निरीह जनता में व्याप्त आतंक, हत्याकांड, अलगाववाद और देश की अखण्डता को चुनौती देकर खालिस्तान के देशघातक नारे का घोर विरोध करती है। पजाब सरकार और भारत सरकार से पुरजोर मांग करती है कि पजाब के इन अत्याचारी उग्रवादियों के अत्याचारों से वहां के शांतिप्रिय असुरक्षित तथा अपने आपको असहाय अनुभव करने वाले लोगों की सुरक्षा का शीघ्रातिशीघ्र प्रबन्ध करके बढ़ते हुए जन-असन्तोष को दूर किया जावे। —सत्यदेव शर्मा शास्त्री मन्त्री, आर्यसमाज सोनीपत

महाराज मनु का राजधर्म

(पं० धर्मदेव "मनीषी" व्याकरणाचार्य, गुरुकुल कालवा)

गतांक से आगे

अठारह मार्ग ये हैं–उनमें से १-(ऋणादानं) किसी से ऋण लेने देने का विवाद। (२-निक्षेप) धरोहर, अर्थात् किसी न किसी के पास पदार्थ धरा हो और मांगने पर न देना। ३-(अस्वामिविक्रय) दूसरे के पदार्थ को दूसरा बेच लेवे। ४-(संभूय च समुत्थानम्) मिल मिला के किसी पर अत्याचार करना। ५-(दत्तस्यानपकर्म च) दिये हुये पदार्थ का न देना। ६-(वेतनस्यैव चादानम्) वेतन अर्थात् किसी की नौकरी में से ले लेना वा कम देना अथवा न देना। ७-(संविदश्च व्यतिक्रम:) प्रतिज्ञा से विरुद्ध वर्तना। ८-(क्रयविक्रयानुशय:) अर्थात् लेन देन में झगड़ा होना। ९-(विवाद: स्वामि०) पशु के पालने वाले और स्वामी का झगड़ा। १०-सीमा का विवाद। ११-किसी को कठोर दण्ड देना। १२-कठोर वाणी का बोलना। १३-चोरी-डाका मारना। १४-किसी काम को बलात्कार से करना। १५-किसी की स्त्री वा पुरुष का व्यभिचार होना। १६-स्त्री और पुरुष में व्यतिक्रम होना। १७-विभाग अर्थात् दाय भाग में वाद उठना। १८-द्यूत अर्थात् जड़ पदार्थ और समाह्वय अर्थात् चेतन को दाव में धरके जुआ खेलना। ये अठारह प्रकार के परस्पर विरुद्ध व्यवहार के स्थान हैं। इन व्यवहारों में बहुत से विवाद करने वाले पुरुषों के न्याय को सनातन धर्म के आश्रय करके किया करे अर्थात् किसी का पक्षपात कभी न करे।

प्रजा से कर लेने का प्रकार :—

पञ्चाशद् भाग आदेयो राज्ञा पशुहिरण्ययो: ।
धान्यानामष्टमो भाग: षष्ठो द्वादश एव वा ॥मनु० ७।१३०॥

जो व्यापार करने वाले वा शिल्पी को सुवर्ण और चान्दी का जितना भाग लाभ हो, उसमें से पचासवां भाग, चावल आदि अन्नों में छठा आठवां वा बारहवां भाग लिया करें। और जो धन लेवे तो भी उस प्रकार से लेवे कि जिससे किसान आदि खाने-पीने और धन से रहित होकर दु:ख न पावें।

राजकोष :—

सांवत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद् बलिम् ।
स्याच्चाम्नायपरो लोके वर्तेत पितृवन्नृषु ॥

अध्यक्षान् विविधान् कुर्यात् तत्र तत्र विपश्चित: ।
तेऽस्य सर्वाण्यवेक्षेरन् नृणां कार्याणि कुर्वताम् ॥

आवृत्तानां गुरुकुलाद् विप्राणां पूजको भवेत् ।
नृपाणामक्षयो ह्येष निधिर्ब्राह्मो विधीयते ॥मनुस्मृति ७।८०-८२॥

वार्षिक कर आप्त पुरुषों के द्वारा ग्रहण करे। और जो सभापति रूप राजा आदि प्रधान पुरुष हैं; वे सब सभा वेदानुकूल होकर प्रजा के साथ पिता के समान वर्तें। उस राज्यकार्य में विविध प्रकार के अध्यक्षों को सभा नियत करे। इनका यही काम है कि देखें कि जितने-जितने जिस-जिस काम में राजपुरुष हों वे नियमानुसार वर्त कर यथावत् काम करते हैं वा नहीं। जो यथावत् करें तो उनका सत्कार और विरुद्ध करें तो उनको यथावत् दण्ड किया करें। सदा जो राजाओं का वेद प्रचार रूप अक्षय कोष है, इसके प्रचार के लिये जो कोई यथावत् ब्रह्मचर्य से वेदादि शास्त्रों को पढ़कर गुरुकुल से आवें उनका सत्कार राजा और सभा यथावत् करें। तथा उनका भी जिनके पढ़ाये हुये विद्वान् होवें।

सच्चा राजा कौन है :—

स राजा पुरुषो दण्ड: नेता शासिता च स: ।
चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभू: स्मृत: ॥

दण्ड: शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति ।
दण्ड: सुप्तेषु जागृति दण्डं धर्मं विदुर्बुधा: ॥

समीक्ष्य स धृत: सम्यक् सर्वा रञ्जयति प्रजा: ।
असमीक्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वत: ॥इत्यादि॥

जो दण्ड है वही पुरुष, राजा, वही न्याय का प्रचारकर्त्ता और सबका शासनकर्त्ता है, वही चार वर्ण और चार आश्रमों के धर्म का प्रतिभू अर्थात् जामिन जामिन है। वही प्रजा का शासनकर्त्ता, सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जगता है। इसलिये बुद्धिमान् लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं। जो दण्ड अच्छे प्रकार से धारण किया जाय, तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है। और जो बिना विचारे चलाया जाय, तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है। बिना दण्ड के सब वर्ण दूषित, और सब मर्यादा छिन्न-भिन्न हो जायें। दण्ड के यथावत् न होने से सब लोगों का प्रकोप हो जावे। जहाँ कृष्ण-वर्ण रक्तनेत्र भयङ्कर पुरुष के समान पापों का नाश करने हारा दण्ड विचरता है वहां प्रजा मोह को प्राप्त न होके आनन्दित होती है। परन्तु जो दण्ड का चलाने वाला पक्षपात रहित विद्वान् हो तो। जो उस दण्ड का चलाने हारा, बुद्धिमान्, धर्म अर्थ और काम की सिद्धि करने में पण्डित राजा है, उसी को दण्ड चलाने हारा विद्वान् लोग कहते हैं। जो दण्ड को अच्छे प्रकार राजा चलाता है, वह अर्थ और काम की सिद्धि को बढ़ाता है। और जो विषय में लम्पट, टेढ़ा, ईर्ष्या करने हारा क्षुद्र, नीच बुद्धि न्यायाधीश राजा होता है, वह दण्ड से ही मारा जाता है। जब दण्ड बड़ा तेजोमय है उसको अविद्वान् अधर्मात्मा धारण नहीं कर सकता, तब वह दण्ड धर्म से रहित [कुटुम्ब सहित] राजा का ही नाश कर देता है। क्योंकि जो आप्त पुरुषों के सहाय विद्या-सुशिक्षा से रहित विषयों में आसक्त मूढ़ है, वह न्याय से दण्ड को चलाने में समर्थ कभी नहीं हो सकता। और जो पवित्र आत्मा, सत्याचार और सत्पुरुषों का संगी, यथावत् नीतिशास्त्र के अनुकूल चलने हारा, श्रेष्ठ पुरुषों के सहाय से युक्त बुद्धिमान् है वही न्यायरूपी दण्ड के चलाने में समर्थ होता है।

महर्षि दयानन्द जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है—

"महाविद्वानों को विद्या सभा अधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्म सभा अधिकारी प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राज सभा के सभासद और जो उन सब में सर्वोत्तम गुणकर्म-स्वभाव युक्त महान् पुरुष हो, उसको राजसभा का पतिरूप मान के सब प्रकार से उन्नति करें। तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के आधीन सब लोग वर्तें। सबके हितकारक कामों में सम्मति करें। सर्वहित करने के लिये परतन्त्र और धर्मयुक्त कामों में अर्थात् जो-जो निज के काम हैं उन-उन में स्वतन्त्र रहें।"

इस प्रकार मनु महाराज का राजधर्म उपदेश महर्षि दयानन्द के अनुकूल है।

छात्र व छात्राएँ अपना आत्म बल बढ़ाएं –श्री आर एस मिश्रा

गत ५ जुलाई को वन संरक्षक श्री आर एस मिश्रा जी ने आकस्मिक निरीक्षण किया। जिन्होंने बालकों को वनों के महत्व व लाभ, लकड़ी का जीवन में महत्व, वृक्षारोपण व वनों का वातावरण पर प्रभाव आदि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के बालकों को अपना आत्मिक बल बढ़ाना चाहिए एवं अपनी जड़े मजबूत करनी चाहिए जिससे कि वे भविष्य में आत्म निर्भर बन सकें। संस्था की गतिविधियों की जानकारी मंत्री श्री कैलाश चन्द्र पालीवाल ने दी। उनका स्वागत प्रधान पं० श्री रामचन्द्र जी आर्य ने किया एवं आभार प्र०प्र०कु० हेमलता शर्मा ने व्यक्त किया।

गत ५ जुलाई को ही आर्य अरविन्द कुमार मयाचारी शास्त्री जी ने भी बालकों को नैतिक शिक्षा व अध्यात्मिक ज्ञान पर प्रकाश डाला।

मन्त्री
आर्य समाज, खण्डवा

करनाल तथा यमुनानगर में ८ जुलाई को झगड़ा किस ने किया—

हरयाणा रक्षा वाहिनी की जांच उप-समिति की रिपोर्ट

गत ८ जुलाई को हरयाणा रक्षा वाहिनी, दयानन्द मठ, रोहतक एवं हिन्दू सुरक्षा समिति, दुर्गा भवन रोहतक के आह्वान् पर न केवल रोहतक नगर म अपितु हरयाणा के सब नगरों मे और यहां तक कि छोटे से छोटे कस्बे में भी पूर्ण हड़ताल और शान्तिपूण बन्द रहा। केवल समाचार पत्रों से यह विज्ञप्त हुआ कि करनाल और यमुनानगर में कुछ तनाव रहा और अप्रिय घटना भी घटी। इसकी वास्तविकता को जानने के लिए हरयाणा रक्षा वाहिनी और हिन्दू सुरक्षा समिति की ओर से एक factfinding कमेटी जिसमें हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह जी, हिन्दू सुरक्षा समिति के प्रधान श्री स्वामी अमरानन्द जी महाराज और हिन्दू सुरक्षा समिति के उपप्रधान एवं रोहतक सनातन धर्मसभा के प्रधान श्री परमानन्द जी तुल्ली और हरयाणा रक्षा वाहिनी के संयोजक के रुप में मैं स्वयं भी कमेटी के साथ १४-७-८३ को करनाल, कुरुक्षेत्र और यमुनानगर गये। करनाल में भिन्न-भिन्न प्रतिष्टित एव व्यापारी वर्गों के साथ सारी जानकारी प्राप्त की और उस जानकारी के आधार पर हम इस परिणाम पर पहुँचें कि करनाल में यह सारी अप्रीय घटना इसलिए घटी कि शाम के लगभग साढे तीन बजे सराफा बाजार करनाल के गुरुद्वारे के सामने एक सिख ने चाय की दूकान खोलने का यत्न किया। कुछ लोगों ने उसे नम्रता पूर्वक सारे शहर की तरह हड़ताल मे सम्मिलित होने की प्रार्थना की। लोग उसे मना रहे थे कि अचानक गुरुद्वारे में से २-३ अकाली निकले जिनके हाथ में बल्लम् और एक के हाथ में तलवार थी और तलवार वाले अकाली ने एक लड़के विजय कुमार के हाथ पर तलवार से वार किया जिससे उसका हाथ बुरी तरह जख्मी हो गया। चन्द ही मिन्टों में यह खबर सारे शहर में फैल गई कि लड़के का हाथ कटकर दूर जा पड़ा। इसी अफवाह से सारे नगर में जबरदस्त तनाव पैदा हो गया जिससे अप्रिय घटनायें भी हुई। बाद में पुलीस ने पहुंच कर नगर मे शान्ति का वातावरण उत्पन्न कर दिया। यह बात अफसोसनाक है कि अभी तक जिस अकाली निहग ने विजयकुमार का हाथ काटा था उसकी गिरफतारी अभी तक नहीं हुई है। इस सारे मामले में पहल अकालियों की तरफ से हुई अन्यथा सारे हरयाणा में सब जगह बन्द बड़ा शान्ति और अमन पूर्वक रहा।

इसी प्रकार से यमुनानगर में भी नगर के गणमान्य व्यक्तियों से आर्य समाज और सनातन धर्मसभा के अधिकारियों की से और भिन्न-भिन्न व्यापारियों से मिलकर सारी जानकारी प्राप्त की। यमुनानगर में भी वायुमण्डल उस वक्त दूषित हुवा और शहर में तनाव उस वक्त पैदा हुवा जबकि अकालियों के एक होटल से कालेज में प्रवेश लेकर वापिस आते हुए ३०-४० छात्रों पर पथराव किया गया और छत पर खड़े होकर नंगी तलवारों से प्रदर्शन किया गया। यदि पंजाब के उग्रवादियो और अकालियों से प्रेरणा प्राप्त करके हरयाणा के अकाली इस प्रकार की घृणित और उत्तेजक कार्यवाही नहीं करते तो यमुनानगर मे हिन्दू और सिखों मे तनाव का प्रश्न ही पैदा नहीं होता था। यमुनानगर में ८ जुलाई से लगभग दो सप्ताह पूर्व ही अकालियो का एक जत्था जो कि पांवटा साहब से पंजाब लौट रहा था ट्रक में नंगी तलवारों से प्रदर्शन किया था और खालिस्थान के नारे भी लगाये थे। कमेटी को विश्वस्त सूत्रों से यमुनानगर में यह भी पता चला है कि यमुनानगर और करनाल मे अकाली नेता श्री टोहरा साहब पधारे और उन्होंने दोनों स्थानों के अकालियों को खूब भड़काया है और दोनों स्थानों पर कुछ हिन्दू नेताओं की हिट लिस्ट भी बनवाई है। (म० भरतसिंह वानप्रस्थ)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] 23207/73 [illegible] P/RTK 49 फोन [illegible] सृष्टि संवत् [illegible]



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ३३ ७ अगस्त १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

प्रमुख सिख विद्वानों से पांच प्रश्न

लेखक—स्वर्गीय स्वामी अमृतानन्द यमुनानगर

प्यारे पाठक। वेद की शिक्षा मनुष्य मात्र के लिए है। वेद की पहली शिक्षा यह है कि मनुष्य सत्य ज्ञान को प्राप्त करे और उसके अनुकूल अपना आचरण बनाता चला जाए। वेद की दूसरी शिक्षा यह है कि संसार भर के मनुष्य अधिक से अधिक प्रेम करें, कोई भी किसी दूसरे प्राणी को कष्ट न दे। सब मनुष्य सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें। ऋग्वेद में मनुष्य मात्र को उपदेश है कि तुम्हारा इरादा एक हो, तुम्हारे उद्देश्य एक हों, तुम्हारा मन एक हो जिस से तुम्हारा शुभ मेल सदा बना रहे। कहा भी है कि :—

विद्वानों का एक मत, मूर्ख अलग अलग।

गुरु गोविन्दसिंह जी ने भी कहा था :—

एक मजहब (मत) रहना भला, दो में रहे न कोय।
मेरा सिख कहाय के, भ्रमे पापी होये। (सूर्य प्रकाश)

परन्तु इस समय कई गुरु सिख लिखते और कहते हैं कि सिख पन्थ का वैदिक धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। सिख पन्थ अलग सम्प्रदाय है। परन्तु सचाई यह है कि सिख गुरुओं की विचार धारा वैदिक धर्म के अति समीप है।

१. जिन धर्म सिद्धांतों का आदि मूल परमात्मा है और जिस प्रभु ने वेद द्वारा उपदेश किया है उन सब को सिख गुरुओं ने स्वीकार किया है।

२. जिस प्रकार ऋषि दयानन्द जी ने धर्म प्रचार किया, जैसे वह मत मतान्तरों के विरुद्ध थे, उसी प्रकार गुरु नानक आदि ने भी मतों का निषेध करके वैदिक सत्य धर्म का प्रचार किया था, दोनों ओर के महापुरुष मानों एक ही पथ के पथिक थे। ऋषि दयानन्द लिखते हैं—कि मत मतान्तरों के जो परस्पर झगड़े हैं उनको मैं पसन्द नहीं करता, वेदों में जो सर्व सत्य है उसी का प्रचार करके सब को एक मत में ला, सबको सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। इसी प्रकार दशम गुरु विचित्र नाटक में लिखते हैं—

जो कोई होत भयो जग सियाना।
तिन तिन अपनो पन्थु चलाना ॥ १४
परम पुरुष किन्हू नहीं पायो।
बैर वाद अहंकार बढ़ायो ॥ १५

फिर कहा :—

हम एह काज जगत मों आये।
धर्म हेतु गुरु देव पठाये ॥
जहां तहां तुम धर्म बिथारो।
दुष्ट दोखीयन पकर पछारो ॥ ४२
या ही काज धरा हम जन्मम।
समझ लेहो साधु सब मन मम ॥
धर्म चलावन संत उबारन।
दुष्ट सबन को मूल उपारन ॥ ४३

अर्थात्- जो जरा चालाक हो गया, उसने अपना अलग पन्थ चला दिया, इनमें से किसी ने परम पुरुष परमात्मा को नहीं समझा केवल आपस में लड़ाई, झगड़ा और अभिमान बढ़ाते रहे, हमें गुरु देव परमात्मा ने इस लिए संसार में भेजा कि आप सब जगह वैदिक धर्म का विस्तार करो, दुष्ट और दोषी मनुष्यों को पछाड़ दो, हमारा यही जीवन उद्देश्य है, ऐ भले मनुष्यों! मन में निश्चय जान लो कि हम धर्म प्रचार करने और सतों की रक्षा के लिए और दुष्टों की जड़ें उखाड़ने को आये हैं।

इससे साफ सिद्ध है कि दसों सिख गुरु और ऋषि दयानन्द जी दोनों ही धर्म प्रचार में एक ही मार्ग के मार्गगामी थे। दोनों ही अपना उद्देश्य वेदोक्त धर्म प्रचार मानते थे।

१. एक पन्थ

वेद में लिखा है कि :—

"नान्यः पन्था विद्यते अयनाय"

अनन्त सुख की प्राप्ति, मोक्ष या मुक्ति का एक ही रास्ता है दो नहीं। गुरुअर्जुन देव ने भी कहा—

इका बाणी इक गुरु एका शब्द विचार।

अर्थात् एक ही वेद वाणी है और इसका प्रकाशक परमात्मा भी एक, और शब्द या सत्य ज्ञान और विचार भी एक या सत्य है।

गुरु नानक देव जी ने कहा—

आदि सच, जुगादि सच, है भी सच, नानक होसी भी सच।

अर्थात् सचाई हर समय एक रस रहती है बदलती नहीं।

सच पुराणा न थिए, नाम न मैला होय

सचाई पुराणी नहीं होती और नाम या परमात्मा के गुण कर्म और स्वभाव सदा उजले रहते हैं, किसी समय मैले या गलत नहीं होते।

शेख इबराहीम ने गुरु नानक देव जी से प्रश्न किया कि—

इक साहिब ते दो हद्दीं, केहड़ो सेवीं ते कहड़ी रद्दीं

तो गुरु जी ने उत्तर दिया कि—

इक साहिब ते इको हद, एक सेव ते दूजा रद।

अर्थात—ईश्वर एक है तो उसकी हद, ज्ञान या न्याय नियम भी एक है इसलिए एक [वेद धर्म] का सेवन करो और दूसरे या उलट को या वेद विरुद्ध को रद करो या त्याग दो।

दशम गुरु जी ने जाप साहिब में कहा—

ओंकार आदि, कथनी अनादि।

अर्थात—ओंकार सब विद्याओं का आदि मूल है, उसकी कथनी, वाणी या सत्य ज्ञान वेद, अनादि है।

परन्तु गुरु जी ने बड़े दुःख से कहा कि—

ठौर ठौर नव मत चले उठा धर्म का दौर,
सुकृत जहँ तहँ दूर रही, पाप भयो सिर मौर। शेष पृष्ठ ८ पर

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्

गायत्री मन्त्र प्रश्नातीत है।

—डा० विश्व बन्धु "व्यथित"
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी०ए०वी० कालेज अबोहर।

(गतांक से आगे)

अब शर्मा जी क्या स्वयं को इन सभी महानुभावों भी अधिक योग्य और श्रेष्ठ मानव समझते हैं। यदि समझते हैं तो उनकी समझ की दाद कौन न देगा। हम यह नहीं कहते कि इन सभी महानुभावों ने गायत्री मन्त्र में मानव के लिए जिस श्रेष्ठ आचरण और मानवीय जीवन यात्रा के सर्वोत्तम अनुष्ठान की ओर इंगित है, उसका सर्वोत्तम रीति से परिपालन करके ही ये सभी आदर्श पुरुष मानव से ऊपर उठकर महामानव कहलाए। इतना ही क्यों इन्हीं ईश्वरीय गुणों को यथाशक्य अपने जीवन में उतारने के कारण राम, कृष्ण हनुमान और बाल्मीकि आदि महामानव "अवतार" की संज्ञा के अधिकारी कहलाने लगे। लेकिन दार्शनिक चिन्तन की सूक्ष्मता को आधार मान कर कहना होगा कि ये सभी उदाहरण भी ईश्वरीय गुणों को मानवीय सीमा की पहुँच तक ही धारण और पोषण करने के है। इसी से समझा जा सकता है कि मानवीय सीमा भी एकदम अल्प या तुच्छ नहीं है, अपितु प्रत्येक मानव अनेक जन्मों तक गायत्री द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का यात्री बनकर ईश्वरीय गुणों को अपने जीवन में धारण और पुष्ट करने की प्रक्रिया का निरन्तर अभ्यास करता हुआ। उपर्युक्त महामानवों की श्रेणी में आने की समीहा कर सकता है। अथवा यदि दुर्दैव का प्रकोप हो तो पढ लिख कर भी आदरणीय शर्मा जी के समान इसी जीवन में स्वयं पथभ्रष्ट होकर दूसरों को भी कुमार्ग का उपदेश करके अधःपतन की चरमसीमा को छू सकने का अभियान कर सकता है।

लेकिन लगता है कि शायद शर्मा जी जैसे जिद्दी आदमी को समझाना हमारे जैसे साधारण आदमी के बूते से बाहर की बात हो, लेकिन इस लम्बी व्याख्या से पाठक अवश्य समझ गये होंगे कि गायत्री मन्त्र में "तत्" पद क्यों सर्वनाम न होकर "वरेण्य भर्ग," का विशेषण है, और कैसे वह दूरी भावगत, मात्रागत, परिमाणगत और सामर्थ्यगत है। इतना और जान लिया जाए कि परमपूज्य परमेश्वर के गुणों का हमारी सामर्थ्य-सीमा से ऊपर बने रहना ही श्रेयस्कर है। शिखर और लक्ष्य आंख से ऊँचे ही रहने ही चाहिएं, पदतलगत हो जाने पर तो वे पथ का अवतार बन जाते हैं। यही कारण है कि पिता-पुत्र और गुरु-शिष्य आदि सम्बन्धों में भी "तत्" के सदृश दूरी ही श्रेयस्कर होती है। होती है अन्यथा आदर की भावना को सुरक्षित रखना कठिन हो जाता है। जहां कोई अध्यापक अपने वास्तविक ज्ञान गरिमादिक गुणों की अल्पता अपने व्यक्तित्व में अपने शिष्यों की पहुंच से ऊपर "तत्" पद को सुरक्षित रखने में असमर्थ रह जाता है तो वह झूठा सम्मान पाने के लिए न जाने किन हथकण्डों और चमत्कारों का आश्रय ग्रहण करता है। प्रेमचन्द ने अपने एक मात्र 'बैठक" बड़े भाई की ऐसी ही मनोवैज्ञानिक स्थिति का चित्रण अपनी कहानी "भाई साहेब" में सूक्ष्मता से किया है। इस विषय पर पूरा पोथा लिखा जा सकता है, लेकिन यहाँ अधिक लिखना अप्रासंगिक होगा। हमने फरवरी १९८३ में रोहतक म प्रकाश्य मासिक पत्रिका में गायत्री मन्त्र के सूक्ष्मार्थ पर विवेचन करने धारावाहिक क्रम जारी रखा हुआ है, जो कम से कम एक वर्ष चल सकता है, जहां इस विषय में विस्तार से चर्चा चल रही है; जिज्ञासु पाठक वहीं देखने का कष्ट करें। सारी किस्तें छप जाने पर हम शर्मा जी को भी एकत्र करके भिजवा देंगे, यदि उनकी बुद्धि यह सब विवरण पढकर निर्मल हुई हो तो वे स्वय भी यह पत्रिका मगवाकर पढ सकते हैं। पत्रिका का पता इस प्रकार है—यज्ञ योग ज्योति, वैदिक भक्ति साधनाश्रम, आर्य नगर रोहतक।

जहां तक शर्मा जी की प्रखर प्रतिभा और मक्षिका-दृष्टि का सवाल है, उसकी दाद खुले हृदय से देनी ही चाहिए कि उन्होंने किस सफाई से आधुनिक युग के वेदों सूर्य, वेदार्थ के परमज्ञाता, वेदविद्वान के समुद्धारक और गायत्री के परम प्रशंसक महर्षि दयानन्द के अर्थ को तोड मरोड कर अपने पक्ष की पुष्टि करने वाला अर्थात् 'गायत्री मन्त्र की झूठी महिमा का समर्थन करने वाला लिख मारा। और वेतुका तर्क जुटाया कि उनके द्वारा लिखित अथ में "तत्" के साथ "यत्" पद आ गया है। "यद् भर्ग, तद्वय धीमहि"। इति। अब शर्मा जी तो हो गये घोड़े पर सवार कि "स्वामी दयानन्द ने यत् और तत् दोनों शब्द अपने वाक्य में रखे हैं। तत् मन्त्र में है, यत् अपनी ओर से जोड़ा है। हमारा भी तो यही कहना है कि तत् का समकक्ष यत् मन्त्र में होना चाहिए।"

अब देखिए उनकी चालाकी, शर्मा जी ने हमारे द्वारा उद्धृत स्वमी जी के अर्थ का जानबूझकर अर्धभाग प्रदर्शित करके सामान्य जनों को भुलावे में डालने का कुत्सित प्रयास किया। और जानबुझ कर ही उसका अनुवाद भी किया। यहा नहीं जा मन्त्रार्थ शर्मा जी ने लिखा, वह पंजाब केसरी ने हमारे लेख म से काट दिया था, उसे शर्मा जी ने या तो हमारे अविकल रूप से प्रकाशित लेख (आर्यजगत्, दयानन्द सन्देश वयज्ञ योग ज्योति में प्रकाशित) से लिया, या शोष सत्यार्थप्रकाश से। अतः उनका यह लिखना भी गलत है कि हमने ये शब्द पंजाब केसरी में उद्धृत किए थे।

स्वामी दयानन्द जी के अर्थ का जो भाग शर्मा जी ने छोडा या छुपाया, वह इस प्रकार है—"(कस्मै प्रयोजनाय इत्याह) हे भगवन् यः सविता देवो परमेश्वरः (भवान्) अस्माक सर्वेषां धियः प्रचोदयात् प्रेरयेत्। अब सुधी पाठक सुरेन्द्र शर्मा जी के द्वारा सरिता में किए गए व्याकरण सम्बन्धी आक्षेप को देखें, उन्हें "धियो यो" वाली पंक्ति में यो पर एतराज है, वे इसे बदल "यत्" करना चाहते हैं। इसी के लिए उन्होंने तीन लालबुझक्कडों की गवाहियां दी हैं। यदि वे इसे न बदलें तो मन्त्र के प्रारम्भ में आए "तत्" को बदल कर तम् या तस्य करना चाह रहे हैं। लेकिन स्वामी दयानन्द जी ने अपने मन्त्रार्थ में, जो ऊपर उद्धृत किया गया है, प्रारम्भ में "तत्" और तृतीय पाद की व्याख्या में "यो" को मूलस्थ में सुरक्षित रखा है। न तो उन्होंने "तत्" के स्थान पर "तम्" या 'तस्य" किया है, न "यो" के स्थान पर "यत्"। फिर शर्मा जी ने कैसे "भर्गः" की व्याख्या में प्रयुक्त विशेषण "यत्" को देखते ही महर्षि दयानन्द पर घृणित आक्षेप करने कुचेष्टा की यह तो वही मिसाल हुई कि पतली गर्दन फांसी के फंदे में न आए तो किसी मोटी गर्दन वाले को फांसी पर चढा दो। घर में सूई गुमी तो चौराहे की रोशनी में खोजने बैठ जाओ। महर्षि के अर्थ में गायत्री मन्त्र के पाठ "धियो यो नः प्रचोदयात्।" में यत् पाठ न मिला तो उनके लेखन में कहीं भी प्रयुक्त 'यत्" को पकड़ कर स्वामी दयानन्द जी को अपने मत की पुष्टि करने वाला लिखकर जनसामान्य को दुहरे भ्रम में डालने का प्रयास किया। जैसे कि कुछ अबोध आर्य समाजी उनका नामोल्लेख देखकर ही लेखक को उनका अनुगामी समझकर श्रद्धावनत हो जाय। इसी चालाकी के कारण लेखक ने इस लेख का परिसमापन यूं किया—स्वामी दयानन्द जी की स्पिरट की हिन्दुओं को आज भी उतनी ही जरुरत है, जितनी पहले थी।"

लेकिन शर्मा जी। न तो आर्य समाजी ही इतने भोले हैं, न ही आप इतने चालाक, जितना कि आप अपने को समझते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व ही "दयानन्द सन्देश" के मई ८३ के अंक में आपके तथाकथित "दयानन्दानुराग" का भण्डाफोड करते हुए श्री राजवीर शास्त्री जी ने आपकी काली करतूतों को आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया था कि किस प्रकार आपने वेदादि के पढाने अधिकारी सबको देने वाले वेदमन्त्र और वेद भाष्यकार महर्षि दयानन्द की ही पेट भर निन्दा लिखी है" और सायणादि की वकालत की है। जैसे सुरेन्द्र शर्मा जी ने सरिता जनवरी १६, १९८३ पृष्ट ३ में लिखा है—

किसी मन्त्र के मनमाने ढंग अर्थ करके उसे बलात्कार करके दरशाना एक बात है, और बिना खींचातानी के अर्थ करके उसे परम्परा और इतिहास द्वारा पुष्ट करके किसी बात को दरशाना और बात है। अब महर्षि के प्रति ऐसे अपमानजनक शब्द लिखने वाले धूर्त जब महर्षि की स्पिरट को पुकार करें तो कौन उनके धोखे में आ सकता है। क्रमशः

सम्पादकीय

हरा भरा त्योहार : हरियाली तीज

भारत पर्व प्रधान देश है। भारतीय संस्कृति का निर्माण पर्वों की पुरातन पुनीत शिला पर ही अवलम्बित है। पर्व किसी भी राष्ट्र, जाति या धर्म की ऐसी सांस्कृतिक कड़ी होते है जो उसको दीर्घकाल तक जीवित रखते हैं। पर्व शब्द संस्कृत की पर्व-पूरणे धातु से बनता है जिसके मुख्यतः दो अर्थ हैं। प्रसन्नता और पूर्ण करना। हम ऋतु-परिवर्तन या किसी गौरव गाथा के विजय अवसर पर जहा अवसाद मुक्त होकर हर्षयुक्त होते है। वहां पर पर्वों से गत गौरव का वहां पर स्मरण करके पूर्णता का भी अनुभव करते हैं। इकबाल की ये पक्तियां कि—

"यूनान मिश्र रोमां सब मिट गये जहां से,
पर कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।"

इनका रहस्य पर्वों के पुनश्चरण में निहित है। पर्व प्रत्येक वर्ष उसी क्रम से आकर गत गौरव की स्मृति को झंझोर कर उसे नित-नूतन बना देते है। इसी प्रकार कोई भी संस्कृति चिर पुरातन होकर भी चिर नवीन बनी रहती है।

भारत प्रकृति माता की सुरम्य ओज में बसा हुआ मनोरम देश है। यहां पर षड ऋतु-चक्र क्रम से आता रहता है और यहां के वातावरण तथा निवासियों को नित्य-नवीन बनाये रखता है। कितना सुन्दर लगता है छः ऋतुओं का क्रम से अपने सुनिश्चित समुचित समय पर आना और समय पर लौट जाना। नव ऋतु का नवागम नवल-धवल पुष्प पल्लवों का फलागम, कितना मनोहारी होता है। यह भारत भूमि की ही महती महिमा है। तभी तो संस्कृत केकिसी कवि ने भारत के गौरव को दर्शाने वाली यह बात कही है—

"गायन्ति देवाः किल गीतिकानि,
धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते;
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥"

अर्थात् धन्य है यह भारत वसुन्धरा जिसकी महिमा के गीत गाया करते है। यह स्थान तो स्वर्ग और (अपवर्ग) मोक्ष से भी बढ़कर है क्योंकि यहां के निवासी दोनों के अधिकारी है। इस प्रकार यहां का 'मानवत्व' 'देवत्व' से भी श्रेयस्कर है।"

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में वर्षा-ऋतु का आगमन पुत्र-प्राप्ति से भी बढ़कर है। जिस प्रकार से ग्रीष्म के उत्तप्त उत्पन्न से तप्त होकर पादपगण मृतप्राय हो जाते है और मानव भी गहन निदाघ से दग्ध होकर भयमाण हो जाते हैं तब वर्षा का आगमन दोनों के लिए नव-जीवनप्रद होता है। जिस प्रकार गर्मी से मुरझाए कुम्हलाए पौधे सरस हो उठते है और जल को तरस उठते हैं उसी प्रकार मानव भी उल्लसित हो उठते है। जिस प्रकार से शुष्क वनस्पतियो में नव अंकुरों का अंकुरण होता है। उसी प्रकार कृषक जनों की आशाओं के अंकुर भी उग आते हैं। सावन का सरस सलोना मास, गगन में गहन श्याम वर्ण घन मण्डलाकार होकर इन्द्रधनुषी रंगों में माला पहनाकर वर्षा रानी का सत्कार करते हैं और पावस की सन्ध्या-सुन्दरी का शृंगार करते है। ऐसे समय में 'हरियाली-तीज' का आषन कितना मन-भावन होता है। यह अकल्पनीय है। हरियाली तीज (हरि-तृतीया) का यह त्यौहार सावन-सुदी तृतीया को हर्षोल्लास के साथ भारत के ग्राम्यआन्चल में मनाया जाता है। यह किसानों ग्राम्यजनों का अपना त्यौहार है। यहां पर हरि से कई अर्थ ग्रहणीय हैं। सर्वप्रथम तो ग्राम में लिए जाने वाला अर्थ हरी तीज अर्थात् हरी भरी तृतीया इसलिए इसका नाम 'हरियाली-तीज' या 'हरयाबल-तीज' भी है। इस दिन ग्राम बालायें नव-नव वस्त्र पहन कर सामूहिक रूप से नृत्य व गायन करती हैं। एक प्रकार की नृत्य व गायन प्रतियोगिता उनमे इस दिन सम्पन्न होती हैं। अपने मोहल्ले-पाने वार होकर यह प्रतियोगिता खेली जाती है। पुरुषवर्ग की इस समय अपनी बिजाई के कार्य से उपरत होकर आमोद-प्रमोद में समय यापन करते हैं। इस दिन गांवों में प्राय. बड़े बड़े दंगल लगाये जाते है जहां पर मल्ल लोग अपना बाहु दाव पेंच लगाकर अपना कला-कौशल दिखाते हैं। मल्ल कल्ला भारत को प्राचीनतम कलाओं में से एक है। गावों में आज भी इसकी अक्षण्ण परम्परा है। हरि का अर्थ हरयाणे के सन्दर्भ में और भी अधिक महत्त्व रखता है क्योंकि इस प्रदेश का नाम ही हरियाणा है। जिसका सामान्यत. अर्थ हरियाली वाला प्रदेश ले लिया जाता है जबकि हरि के और भी अर्थ हरयाणे के प्रसंग में विचारणीय हो सकते है। हरवाली अर्थात् शंकर जी वाली हर वाली से हरयाली शब्द निरुपन्न हो सकता है। सम्भव है इस प्रदेश के बसाने वाले पशुपत् महादेव (हर) की किसी विजय के हर्षोल्लास में ही इस पर्व का प्रचलन हुआ हो। जो भी हो ! हमें इस पर्व को वैदिक विधि विधान से अपने घरों में हर्षपूर्वक मनाना चाहिए। अति उछल-कूद या तडक-भड़क मे बचना चाहिए। झूला बच्चों का स्वभाविक मनोरञ्जक व्यायाम है उससे हमें भी (बड़ों) को परहेज नहीं करना चाहिए। प्रातः घर मे चौका आदि लगाकर विशेष आहुतियों के साथ यज्ञ करना चाहिए। पर्व के पुरातन प्राकृतिक महत्त्व को समझते हुए अपने व्यक्तिगत जीवन और सामूहिक जीवन में मेल-मिलाप और उत्साह का संचार करना चाहिए।

धर्मचन्द्र विद्यालंकार, एम.ए.

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय

सादर नमस्ते।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते भ्रष्टाचार और अनाचार ने जनता की नजरों में सरकारी तन्त्र को पूर्णत अविश्वसनीयता के कगार पर पहुंचा दिया है। ऐसे ही एक तन्त्र अधिनस्थ कर्मचारी चयन आयोग हरयाणा पर भी चयन सम्बन्धि अनियमितताओं एवं भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोप लगाये जाते रहे हैं, जैसे बोर्ड के सदस्यों ने निश्चित आवश्यकता से अधिक उम्मीदवारों का चयन किया और उन्हें नियुक्ति पत्र इसलिए नही मिला क्योंकि वास्तविक आवश्यकता कम थी और आयोग के सदस्यों एवं बिचोलियों ने केवल धन कमाने के लिए अनुचित चयन कर दिया। इनमें बहुत से उम्मीदवार ऐसे हैं, जिन्होंने न जाने किस प्रकार इनको धन दिया और फिर भी निराशा ही हाथ लगी।

मेरा विचार है कि जनता में लोकतन्त्र के प्रति विश्वास बनाये रखने और भ्रष्ट लोगों को बेनकाब करने का केवल एकमात्र सहारा भारतीय न्यायपालिका ही है। जिसमें आज भी लोगों का विश्वास है; और न्यायपालिका ने प्रायः निष्पक्ष निर्णय देकर न्याय की गरिमा को बनाये रखा है।

मेरा विश्वास है कि कुछ ऐसे विवरण एवं साक्ष्य प्राप्त कर न्यायपालिका की सहायता से त्रस्त लोगों को दिला कर जनता के खोये विश्वास को पुनः प्राप्त किया जा सके।

अतः अब आवश्यकता ऐसे समस्त व्यक्तियों की है जो किसी न किसी रूप से बोर्ड के सदस्यों या बिचोलियो द्वारा ठगे गये हो या जिन्हें बोर्ड द्वारा चुने जाने पर भी नियुक्ति पत्र नही मिला और न ही उनका धन वापस मिला अथवा अन्य किसी प्रकार भी विवरण जिससे इस कार्य में किसी प्रकार की सहायता मिल सकें, क्योंकि मैं निःस्वार्थ भाव से चाहता हू कि इस तथाकथित भ्रष्टाचार का भाण्डा फोड हो और जनता को स्वस्थ न्याय मिल सके।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अपने पत्र द्वारा भी इस पवित्र कार्य में पूर्ण योगदान देकर अनुग्रहित करेंगे।

—सत्यदेव सिंह
सेवा निवृत्त आई. पी. एस. कलेर भवन,
पिपली रोड़ कुरुक्षेत्र।

१० अगस्त १९८३ के बलिदान दिवस पर:—

एक वीर बलिदानी की याद में

(सुखदेव शास्त्री, प्रवक्ता आ०प्र०स० हरयाणा)

वीरभूमि हरयाणा में अनेक वीर सपूतों ने जन्म लेकर इस पवित्र धरती को पवित्र किया है। यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है। यह शूरवीरों-साधु-सन्तों को जन्मदात्री देवभूमि है। यह श्री कृष्ण की कर्मभूमि है जहां पर कुरुक्षेत्र में गीता का अमरसंदेश दिया था। ऐसी पुण्यभूमि में भी वीर महात्मा भक्त फूलसिह जी ने जन्मले कर गौरवान्वित किया है। २४ फरवरी १८८५ में भक्त फूलसिह जी का जन्म गांव माहरा जिला (रोहतक) वर्तमान जिला सोनोपत में एक साधारण किसान के घर में हुआ था।

बाल्यकाल में जूआँ से साधारण सी माध्यमिक शिक्षा पाकर पटवारी की ट्रेनिंग लेकर १९०४ में सींक पाथरी ग्राम में पटवारी लगे। तीन वर्ष तक यहां अस्थाई पटवारी रहकर लोगों की सेवा सहायता करते रहे। पश्चात् १९०७ में स्थाई होकर पानीपत तहसील के ग्राम उरलाना में पटवारी लगे। यह ग्राम मुसलमानों का था। इतना होने पर भी भक्त जी ने इनको बड़ी सेवा की। इन दिनों में यहां प्लेग को महामारी फैली थी, भक्त जी ने घर-घर जाकर लोगों को दवा देकर ठीक किया। उस समय अकाल पड़ने पर भी इन लोगों का टैक्स भी अपनी ओर से जमा किया। फूलसिह पटवारी का स्वभाव सेवा, सहायता से भरपूर था।

उस समय का वातावरण भी आजादी लेने वाली भावनाओं से भरपूर था। इन में आर्य समाज सब से अग्रणी था। १९०५ में लाला लाजपतराय का पंजाब से देश निकाला हो चुका था। वे उस समय के आर्यसमाजों के नेता थे। उनकी चर्चा देश को प्राय: सभी समाचार पत्रों में होती थी। इस के साथ हरयाणे के देहात में स्वामी श्रद्धानन्द के प्रभाव से आर्यसमाज का प्रचार बढ़ रहा था। पटवारी भी इससे प्रभावित हुए बिना न रह सका।

आर्यसमाज का सत्संग

चौ० प्रोतसिंह जी एक आर्यसमाजी पटवारी थे, वे ईश्वाना उनके साथ ही पटवारी भी पानीपत आर्यसमाज के उत्सव में सम्मिलित हुए। विद्वानों के प्रवचन सुनकर बड़े प्रभावित हुए।

जनेऊ की करामात

वे भी यज्ञ पर जनेऊ लेकर आर्यसमाजी बन गये। वैदिक संस्कार जाग उठे। पटवार खाना आर्यसमाज के प्रचार का केन्द्र बन गया। लोग इन्हें पटवारी न कह करके 'भक्त' जी कहने लगे। घरबार परिवार की समस्याएं यहां सुलझाई जाने लगीं। व्यक्तिगत भी और सामाजिक भी। जनता की भारी भीड़ भक्त जी के चारों ओर रहने लगी। पटवारी में आर्यसमाज के सत्संग में आने से पहले कुछ कमियाँ थी। उन्हें दूर करने का प्रयत्न करने लगे।

सत्यार्थ-प्रकाश का चमत्कार—

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से तो कायाकल्प ही हो गया। मांस खाना छोड़ दिया। जितने भी बुरेकर्म अब तक जीवन में किये थे, उनका प्रायश्चित करने लगे। पटवार से समय निकाल कर ग्रामों में जाते लोगों को धर्मात्मा बनने का उपदेश देते। बड़ी लगन लग गई पटवारी को अपना घर बार परिवार छोड़कर आर्यसमाज ही प्रचार करने की सोच हो गई। किन्तु पटवार इस मार्ग में बाधक था। सरकारी नौकरी दबाव की नौकरी थी। वे स्वतन्त्र होकर जनता की सेवा करना चाहते थे, वे आत्मा को जला रहे थे। उनसे छुटकारा कैसे मिले यह भी पटवारी अकेले में कई बार प्रात: सांय सोचा करते थे। इनमें एक पाप रिश्वत लेने का भी था। १९११ में आप लाखू बुवाना जि० करनाल पटवारी थे। अपने वहाँ एक बणिया से छ: सौ रुपये रिश्वत ली। रिश्वत का कुछ भाग ग्राम के नम्बरदारों को भी देना था। उन नम्बरदारों में से एक नम्बरदार ख्यालीराम रिश्वत लेने से इन्कार कर गए और कहने लगे, रिश्वत लेना महापाप है। भक्त जी ने कहा—अगर पाप है तो मैं भी इसे छोड़ता हूं। उस दिन से उन्होंने रिश्वत लेना छोड़ दिया था।

पटवार छोड़ दिया—

अब तो पटवारी त्याग की ओर बढ़े। १९१६ में पटवार छोड़ दिया। समाज सेवा के भयकर संघर्ष में कूद पड़े। इसी समय में घोषणा कर दी समाज सुधारों की। पटवार से सेवा करते-करते जन-जन के विश्वासी बन गए। दर्द के दु:खिया दाएं बाएं मण्डराने लगे। सब से पहले आए संभालका का दु:खी किसान। रात को पटवारी को जगाकर कहने लगे भक्त जी! हमारे ग्राम सम्भालका में पंजाब सरकार हत्था खोलना चाहती है जिसमें प्रतिदिन हजारों गायें कटा करेंगी। किसानों को समझाकर वापिस भेज दिया और अगले दिन बुवाना लाखू के लोगों को इकट्ठा करके गो हत्थे के बारे में पंचायत को समझाया। लोगों ने पूरी सहायता का वचन दिया और हथियार जुटाने के लिए रुपये भी दिए। सारे ग्रामों में धूम-धूम कर लोगों को इकट्ठा करके २० हजार लोगों को साथ लेकर संभालका को चारों ओर से जा घेरा। मुसलमान भाग खड़े हुए। करनाल के डी०सी० ने आकर जनता को आश्वासन दिया कि हत्था नहीं खुलेगा। सभी लोग वापिस चले गए। यह घटना १९१६ की है, जब तक भक्त जी पटवारी हो थे। इस घटना से भक्त जी के क्षात्रत्व का परिचय मिलता है। अब तो जन समर्थन पाकर भक्त जी का साहस और भी बढ़ गया था। उत्साह पाकर संघर्ष में कूदने की ठानी और कूद ही गए। पहले तो जो जीवन में ५००० रुपये रिश्वत ली थी उसे अपनी जमीन बेचकर देने वालों को रिश्वत के रुपये वापिस लौटाए। रिश्वत लेकर वापिस करने का यह भी रिकार्ड बना दिया। रिश्वत लेना छोड़ा जा सकता है किन्तु पांच हजार रिश्वत लेकर वापिस आज तक किसी ने नहीं दी।

पंचायत के बड़े हिमायती—

सामाजिक सुधारों को क्रियान्वित करने के लिए वे पंचायतों की शक्ति का बड़ा समर्थन करते थे। वे कहते थे पंच जहां परमेश्वर। १९२५ में सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए सभी खापों की एक बड़ी पंचायत गांव गान्धरा (रोहतक) में बुलवाई गई। देहात की सभी बुराइयों को दूर करने का महान् प्रयत्न प्रारम्भ किया। आपस में झगड़ने वाले भाइयों के बड़े-बड़े समझौते भी करवाए। जन सेवा करने के लिए अब भी वे अपने अन्दर अनेक कमी अनुभव करते थे। अत: उन्होंने सर्वस्व त्याग करने की सोच ली।

वानप्रस्थी हो गए—

१९१८ में वानप्रस्थ की दीक्षा ली। समाज सुधार के कार्य को पूरा करने के लिए १९२० में गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना की। शिक्षा के क्षेत्र में यह भी एक महान् उपलब्धि थी। शिक्षा के प्रचार में जो कार्य सरकार नहीं कर सकती, वह उन्होंने जनता की सहायता से करके दिखा दिया। अपने आपको भी ३२ वर्ष की आयु में भरी जवानी में समाज सेवा के अर्पण कर दिया। महर्षि दयानन्द का जो भी देश सेवा का कार्यक्रम था उसे पूरा करने के लिए कटिबद्ध हो गए।

शुद्धि आन्दोलन–

जिला गुड़गांव के होडल के निकट ग्रामों के मुसलमान मेव जाट शुद्ध होना चाहते थे। उसमें एक मुसलमान जेलदार रुकावट डाल रहा था उसे दूर करने के लिये १८ दिन का अनशन व्रत होडल में किया। अगर आज मुसलमान जाट शुद्ध हो गए होते, तो गुड़गाव के ग्रामों की हालत छोटे पाकिस्तान जैसी न होती। वहां पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे न लगते। मेवात में गोहत्या न होती। उर्दू चालू न होती। हरयाणा असली पवित्र हरयाणा बन जाता।

हरिजन समस्या–

यह समस्या भी सदा के लिए देश से समाप्त हो गई होती, अगर आर्यसमाज की बात मान ली जाती तो अछूतोद्धार हो जाता। आर्यसमाज ने अलग जाति के रूप में हरिजन शब्द को कभी भी स्वीकार नहीं किया। इस हरिजन जाति के निर्माता गांधी जी थे। आर्यसमाज का भी समय समय पर गांधी जी विरोध करते रहे। इसी समस्या को सुलझाने के लिए महात्मा भक्त फूलसिंह जी ने मोठ ग्राम जिला हिसार में २३ दिन तक अनशन व्रत किया। इस गाव के मुसलमानों ने हरिजनों का कुआं बांट दिया था। जान की बाजी लगाकर भक्त जी ने इस काम को पूरा किया था। हरिजनों के कुएं का निर्माण पुन: करवाया।

गांधी की बात को भी ठुकरा दिया–

जब भक्त जी की इन हरिजनों के बचाने में विजय हो गई और अनशन सफल हो गया तो श्री वियोगी हरि जी के माध्यम से गांधी जी ने भक्त जी से मिलने की इच्छा प्रकट की। बिरला भवन दिल्ली में भेंट हुई। गांधी जी ने भक्त जी से कहा—आप आर्य समाज का काम छोड़कर मेरे साथ काम कीजिए "भक्त जी ने इसे सुनकर स्पष्ट इन्कार कर दिया और कहा—आर्यसमाज मेरा प्रेरणास्रोत है, मैं इसे बिलकुल नहीं छोड़ सकता। शिष्टापूर्वक बात समाप्त हो गई।

कन्याओं में शिक्षा के प्रचार के लिए १९३६ में गांव खानपुर में कन्या गुरुकुल की स्थापना की जो उत्तर भारत का कन्याओं की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र है, जिसमें आज तीन हजार कन्यायें उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। जिसका सचालन गुरुकुल कमेटी सफलतापूर्वक कर रही है।

उस्मान अली हैदराबाद–

निजाम हैदराबाद उस्मान अली बड़ा अत्याचारी शासक था। उसका शासन हिन्दुओं के सभी प्रकार के धार्मिक कार्यों पर प्रतिबन्ध लगाता था। यज्ञ करने, धर्म प्रचार करने, मन्दिरों में पूजा पाठ को भी बन्द कर दिया। आर्यसमाज ने सत्याग्रह किया। १९३९ में सत्याग्रह आरम्भ हुआ। सारे भारत में हलचल मच गई। रोहतक में भक्त जी ने भी आर्यजनों को इकट्ठा किया और यहां से हजारों सत्याग्रही हैदराबाद भेजने शुरु किए। सत्याग्रह के लिए आपने दिन रात एक कर दिया। आर्यसमाज की सत्याग्रह मे विजय हुई। विजय के उल्लास में रोहतक में एक जलूस निकलने वाला था, जिसमें भक्त जी को हाथी पर बैठाया जाना था, भक्त जी यह सुनकर बड़े दु:खी हुए और उन्होंने हाथी पर सवार होना बिलकुल इन्कार कर दिया और जलूस में सबके साथ पैदल ही चले। वे अपने अभिनन्दन के कभी भूखे न थे। वे तीनों एषणाओं को जीत चुके थे।

लुहारु के नवाब का मुकाबला–

रियासत लुहारु का नवाब अमीनुद्दीन अहमद खां बड़ा दुष्ट शासक था, जो कि पिछले दिनों तक हिमाचल तथा पंजाब राज्य का गवर्नर रहा था, और जिसकी अभी पिछले दिनों मौत हो चुकी है। वह अपनी रियासत में आर्यसमाज का प्रचार न होने देता था। वहां भी भक्त जी तथा स्वतन्त्रतानन्द के नेतृत्व में प्रचार हुआ और नवाब द्वारा धोखा देने से इन नेताओं को बड़ी चोटें आईं किन्तु लुहारु में आर्यसमाज प्रचार हुए बिना न रहा। आज लुहारु का आर्यसमाज प्रगतिशील तथा बलिदानियों का आर्यसमाज है। इसका कारण भक्त जी ही थे।

बलिवेदी पर–

भारत के सभी आर्य नेताओं को मारने के लिए समय समय पर भारी षड्यन्त्र किए जाते रहे हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान में जोधपुर रियासत के तत्कालीन दीवान फैजुल्ला खां तथा डा० अली-मर्दानखां का विशेष हाथ था। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान में भी दिल्ली के एक मौलाना हसन निजामी का हाथ था, दिल्ली के और भी कई मौलवी भी इस षड्यन्त्र में शामिल थे जबकि अब्दुल रशीद ने उन्हें गोली मार दी, स्वामी श्रद्धानन्द के डा० अन्सारी को भी इस हत्या के षड्यन्त्र का पूर्व से ही पता था। गांधी जी के उस समय के आर्यसमाज विरोधी बयान भी आग में घी का काम कर रहे थे। पण्डित लेखराम की हत्या में भी कादियों के गुलाम मिर्जा मुहम्मद कादियानी का हाथ था। आर्यसमाज ने उस समय १०० के लगभग बलिदान दिए। उन्हीं दिनों बलिदानियों की अग्रिम पंक्ति में महात्मा हुतात्मा भक्त फूलसिंह का भी नाम सदा के लिए अमर हो गया। जिन्हें १४ अगस्त १९४२ में तीजों के दिन कन्या गुरुकुल खानपुर में मुसलमानों ने गोलियों से मार दिया। वे इतिहास में अमर हो गए हैं। आर्यसमाज के दूसरे बलिदानों से भक्त जी के बलिदान में केवल इतना अन्तर है कि आर्यसमाज के दूसरे बलिदान होने वालों का बदला नहीं लिया जा सका, किन्तु भक्त जी के मारने वालों का बदला लिया गया और उन्हें पकड़कर गोली से उड़ाया गया था।

अगर आर्यसमाज अपने बलिदानों का बदला लेता तो इतने नेता नहीं मारे जाते। इतिहास इस में साक्षी है।

सभा की अन्तरंग बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग बैठक ७ अगस्त को प्रात: १० बजे सिद्धान्ती भवन रोहतक में हो रही है। सदस्य समय पर पधारें।

जिन आर्य समाजों ने अभी तक अपने प्रतिनिधि फार्म नहीं भेजे हैं वे शीघ्र भेज देवें ताकि उनके प्रतिनिधि चुनाव में भाग ले सकें।

—सभा मन्त्री

हरयाणा में आर्यसमाजों के प्रचार का कार्य-क्रम

भक्त फूलसिंह बलिदान समारोह

कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत	१० अगस्त
खेड़ी जट जि० रोहतक	१३, १४ अगस्त

सुमेरसिंह बलिदान उत्सव

नया बांस जि० रोहतक	१२ से १४ अगस्त
आर्यसमाज कुंजपुरा जि० करनाल	१५ से २१ अगस्त
आर्यसमाज म० दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी	२३ से ३१ अगस्त
आर्यसमाज सालवन जि० करनाल	२३ से ३१ अगस्त

—सभा मन्त्री

कविता—यह भक्त फूलसिंह के बलिदान पर्व पर :—

हरयाणे की रम्य वाटिका खिले मनोहर फूल !

अरे ! आज क्या मिल पायेगी उन चरणों की धूल ?
हरयाणे की रम्य-वाटिका खिला मनोहर "फूल" !!

शैशव की स्वप्निल वेला में,
अरे ! फूल वह खुलकर खेला।

यौवन की मादक माया में,
झंझा का हर झोंका झेला ॥

अरे ! फूल के साथ लगे थे हाँ ! हां ! बहुत शूल।
हरयाणे की रम्य वाटिका खिला मनोहर 'फूल' ॥

अरे ! फूल सा वह कमल का,
पाप-पङ्क में पला हुआ।

जीवन की मादक मदिरा का,
हर प्याला था ढला हुआ ॥

सरिता सी बहती थी उन्मद ज्यों अनदेखे फूल।
हरयाणे की रम्य वाटिका खिला मनोहर 'फूल' ॥

'आर्य-समाज-मलय' का झोंका,
एक अरे ! ऐसा आया।

सोया सा वह जाग पड़ा था,
निज निद्रा पर शर्माया ॥

मिला उसे था आज अरे हाँ ! प्रबल पवन अनुकूल।
हरयाणे की रम्य वाटिका खिला मनोहर 'फूल' ॥

बना स्यार से सिंह अरे हां,
निज गौरव उसने जाना।

देश-धर्म की रक्षा का हितं;
तब से या मन में ठाना ॥

कर्मक्षेत्र में उतर पड़ा फिर बिन परखे प्रतिकूल।
हरयाणे की रम्य वाटिका खिला मनोहर 'फूल' ॥

गोरक्षा का लिया भार सिर,
हत्या बन्द करायी।

"हरयाणा है आर्य देश यह"
जग में धूम मचाई ॥

"गोपालन है स्वर्ग-साधना सफल सुखों का मूल।
हरयाणे की रम्य वाटिका खिला मनोनर फूल ॥

घूम-घूम कर गाँव गाँव में,
लेकर तर्क—कटारी ॥

काट दिये सब रूढ़ी-बन्धन,
कुनीति कुरीति सारी ॥

समाज-सुधार की तभी जमी है आज यहां पर चूल।
हरयाणे की रम्य वाटिका खिला मनोहर 'फूल' ॥

नारी की कृत्रिम सीलाएँ,
तुमने बढ़कर तोड़ी।

मैत्रेयी, लोपाद्रुमा, गार्गी,
की रीति फिर जोड़ी ॥

विद्या—विहार गुरुकुल सरसे तमस हुआ निर्मूल।
हरयाणे की रम्य वाटिका खिला मनोहर 'फूल' ॥

हरयाणा के इस उपवन में,
हंसी आज हरियाली।

फूलसिंह से फूल खिले हैं;
गया रोप दयानन्द माली ॥

बुना गया जिनके बलिदानों, से 'स्वराज—दुकूल'।
अरे ! आज क्या मिल पायेगी उन चरणों की धूल !?।
हरयाणे की रम्य वाटिका खिला मनोहर 'फूल' ॥

धर्मचन्द्र विद्यालंकार 'समन्वित एम०ए०

श्रमिक

कवि बनवारीलाल शादां' प्रधान आर्यसमाज मौडल बस्ती नई दिल्ली ५

श्रमिक नाम है श्रेष्ठ हमारा, इसका मान बढ़ावें।
कर परिश्रम सच्चे मन से, जग में गौरव पावें ॥

सूरज चांद परिश्रम करके, चलते कभी न थकते।
अपने नियत समय से पलभर कभी नहीं है टलते ॥

इसका तेज चमक है अद्भुत, सबको प्यारे लगते।
जग को ज्योति देते नितकर, निशि दिन सेवा करते ॥

प्राण वायु जीवन का दाता, हरदम चलता रहता।
प्राणी मात्र को सुख पहुंचाकर, नाम अमर है करता।

मीठे जल की अगणित नदियाँ कितना लम्बा चलती।
अमृत तुल्य पानी को देकर, धरती सुखमय करती ॥

पाठ पढ़े श्रम का इन सब से, श्रम से जी ना चुरायें।
निज कर्त्तव्य करे हम पूरा, सच्चे श्रमिक कहावें ॥

श्रम से यह दुनियां कायम है, श्रम से जीवित सब संसार।
अन्न, वस्त्र, धन श्रम से उपजें, सुख सम्पत्ति का जो आधार ॥

श्रम से रचना जग की होती, श्रम से भरे अन्न भण्डार।
श्रम से नगों का तन ढककर, करें जगत में सुख सँचार ॥

श्रमिक परिश्रम से है पुजता, विद्या से ही विद्यावान।
"शादां" सबका भूषण सेवा, मेहनत से बढता इन्सान ॥

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज यमुना विहार दिल्ली

१- प्रधान—श्री ललितप्रसाद बन्सल, २- उपप्रधान—श्री शोभाराम आर्य, ३- उपप्रधान—श्रीमती शकुन्तलादेवी जी, ४- मंत्री—श्री दुर्गाप्रसाद जी, ५- उपमंत्री—श्री कमलकिशोर आर्य, ६- उपमंत्री—श्री पी० सी० भाटिया, ७- कोषाध्यक्ष—श्री विश्वामित्र रहेजा, ८- पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजकुमार आर्य, ९- लेखा निरीक्षक—श्री जगदीशराय, १०- संयोजक—श्री प्रणवीर।

आर्यसमाज करौल बाग नई दिल्ली

प्रधान—श्री अजयकुमार भल्ला, उपप्रधान—श्री जयचन्द टंडन, उपप्रधान—श्री तीर्थराम आहूजा, उपप्रधान—महाशय धर्मपाल, उपप्रधान—श्री खुशीराम सहगल, मन्त्री—श्री ओमप्रकाश सुनेजा, कार्यालय मन्त्री—श्री दयालचन्द गुप्त, उपमन्त्री—श्री सत्यपाल त्रैहन, उपमन्त्री—श्री देवराज वधई, उपमन्त्री—श्री चेतनस्वरूप कपूर, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश गुप्त, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री अमरनाथ संसारा, सहायक पुस्तकाध्यक्ष—श्री आज्ञाराम, लेखा निरीक्षक—श्री देवसेन शारदा।

आर्यसमाज रुड़्या जि. रोहतक

मा० रघुवीरसिंह—प्रधान, श्री रमेशचन्द—मन्त्री, श्री माल्हाराम—कोषाध्यक्ष, सभा प्रतिनिधि—मा० रघुवीरसिंह तथा श्री माल्हाराम।

आर्यसमाज जाजनपुर जि० कुरुक्षेत्र

प्रधान—श्री अजमेरसिंह आर्य, उपप्रधान—श्री जगदीशचन्द्र आर्य, श्री दीदारसिंह, मन्त्री—श्री खजानसिंह आर्य, उपमन्त्री—श्री मलेराम आर्य, श्री रामफल आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री रोशनलाल आर्य, सह कोषाध्यक्ष—श्री दलीपसिंह आर्य, प्रचार मन्त्री—श्री ओमप्रकाश आर्य, उपप्रचार मन्त्री—श्री सत्यपाल आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामकुमार आर्य, श्री फूलसिंह आर्य।

आर्यसमाज कनीना जि. महेन्द्रगढ़

१. प्रधान—म० सेडूराम जी, २. उपप्रधान—श्री नित्यानन्द जी, ३- मन्त्री—म० माधवसिंह आर्य, ४- उपमन्त्री—श्यामसुन्दर जी, ५- कोषाध्यक्ष—कृष्णप्रकाश जी, ६- पुस्तकाध्यक्ष—श्री रमेशकुमार जी, ७- अंतरग सदस्य—म० सत्यपाल, म० घीसाराम, श्री दमनसिंह जी।

आर्यसमाज प्रेमनगर अम्बाला शहर

प्रधान—मास्टर नत्थूराम, उपप्रधान—श्री हरिसिंह शर्मा, मन्त्री—श्री चक्रवर्ती गुसाईं, उपमन्त्री—श्री पवनकुमार, कोषाध्यक्ष—श्री विनोदकुमार धवन, लायबरेरियन—श्री विजकुकार शर्मा, प्रचार मन्त्री—श्री नरेश गुप्त, प्रधान स्त्री समाज—श्रीमती कान्तादेवी जी।

आर्यसमाज कैथ जिला करनाल

प्रधान—श्री धर्मपाल, मन्त्री—श्री विक्रमसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री बनीसिंह।

आर्यसमाज गुरुकुल घरौंडा जिला करनाल

प्रधान—श्री धर्मवीर शास्त्री, मन्त्री—ब्रह्मचारी देवानन्द जी, कोषाध्यक्ष—सत्यव्रत, पुस्तकालयाध्यक्ष—प्रो० यज्ञव्रत।

आर्यसमाज गन्नौर शहर जि. सोनीपत

मुख्य संरक्षक—श्री धर्मपाज कुकड़ेजा, संरक्षक—ठा० अनन्तराम, डा० प्रेमचन्द मेहता, प्रधान—पं० जयदेव जतोईवाला, उपप्रधान—आत्मदेव वधवा, मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र स्नेही।

सफीदों मण्डी जिला जीन्द में हड़ताल

१९-७-८३ मंगलवार को हरयाणा के हितों की रक्षा तथा पंजाब में हो रहे हिन्दुओं के साथ अत्याचार पर तीव्र रोष प्रकट करने के लिये सफीदों मण्डी तथा शहर में पूर्णयता हड़ताल रही। नगर निवासियों ने कार्य में बहुत सहयोग दिया। इससे पहले यहां इतनी सम्पूर्ण हड़ताल कभी नहीं हुई। १७-७-८३ को एक जन सभा भी की गई जिसमें सभी धर्मानुयाइयों की स्वीकृति लेकर इस हड़ताल का आयोजन किया गया तथा १९-७-८३ को सारे शहर तथा मण्डी में एक जलूस निकाला गया जिसमें हिन्दुओं तथा हिन्दुओं के मन्दिरों की रक्षा आदि की मांग की गई तथा जनता की आवाज सरकार तक पहुंचाने की मांग की गई। —जयभगवान गोयल

आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए अपील

१—चण्डीगढ़ में आर्यसमाज सैक्टर ३२ को अलाट की गई भूमि के मूल्य के भुगतान हेतु चण्डीगढ़ प्रशासन ने अपने पत्र दिनांक २१५-८३ द्वारा १६१५४ रुपये ६५ पैसे की तीन किश्तें निर्धारित की हैं। भुगतान की पहली किश्त २८-८-८३ को देय है।

भूमि के मूल्य चुकाने का यह कार्य दानी महानुभावों के सहयोग से ही सम्भव हो सकेगा। इस निर्माण यज्ञ में अपनी आहुति अवश्य डालें।

सभी दानी श्री सुभाष गावा कोषाध्यक्ष जी ३३२५/३२ चण्डीगढ़ के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त करें।

—ओमप्रकाश सेतिया, मन्त्री

२—बराड़ा अम्बाला में सहारनपुर रेलवे लाइन पर एक महत्वपूर्ण स्टेशन है। यह नई आबादी है और मुलाना-साढौरा तथा नाहन हिमाचल प्रदेश के लिये यहीं से यातायात होती है। यहां केवल १०-१२ आर्य परिवारों ने बाहर से आकर जमीन खरीदकर आर्य समाज मन्दिर बनाना आरम्भ कर दिया है। जमीन बहुत मंहगी मिली है फिर भी एक कमरा-बरामदा-चार दीवारी बनाकर एक हाल कमरा ३०×२२ फुट की दीवारें १५ फुट ऊंची तैयार कर दी हैं। केवल छत पड़नी बाकी है। रुपये का साधन नहीं है। अतः नम्र निवेदन है कि आप अपनी शुभ कमाई से आर्यसमाज मन्दिर निर्माण के लिये अधिक से अधिक धनराशि श्री मन्त्री आर्यसमाज बराड़ा जिला अम्बाला को भेजकर यश के भागी बनें।

युवकों के हृदय सम्राट श्री पं० देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक का जीवन दर्शन (सचित्र) पुस्तक

साईज—२०×३०/१६ पृष्ठ ५२ ग्लेज कागज उत्तम छपाई आकर्षक, मूल्य ५ रुपए आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं के लिये रियायती दरों पर।

प्रकाशक—कमल किशोरार्य महामन्त्री परोपकारिणी यज्ञ समिति १० ए, १५ शक्तिनगर, दिल्ली-७

इस पुस्तक में श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु जी के संक्षिप्त जीवन दर्शन के साथ उनकी लोकसेवा व हीरक जयन्ती के अवसर पर प्रस्तुत बड़े बड़े आर्य नेताओं, आर्य विद्वानों, साहित्यकारों व पत्रकारों प्रशस्तियों के अतिरिक्त विविध फोटोग्राफर और अभिनन्दनपत्रों से सिद्ध होता है कि यह सब सामग्री आर्य जगत् के लिए बहुत प्रेरणाप्रद है। पुस्तक जनमान्य के साथ-साथ विशेषकर युवकों के लिये बहुत ही उपयोगी है। उल्लेखनीय है कि धर्मेन्दु जी स्वनिर्मित महानुभाव है और इनकी आर्य जगत् द्वारा चलाये गोरक्षा आन्दोलन, नारी रक्षा आन्दोलन आदि कार्यक्रमों में स्मरणीय महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। जीवन निर्माण में उनके जीवन दर्शन से अमिट प्रेरणाएं मिल सकती हैं। पुस्तक पढ़ने व संग्रह करने के योग्य है।

—ललितप्रसाद बंसल
प्रधान आर्यसमाज यमुना विहार दिल्ली

(पृष्ठ १ का शेष)

अर्थात आज देश मे जगह जगह नवीन मत चल पडे है, जिन के कारण शुभ कर्म दूर हो गए हैं और पाप सिर मोर या नेता बन गया है।

पेड पात आपन ते जले, प्रभु के पन्थ न कोऊ चले।

अथात—धर्म का पेड़ अपने ही पत्तों या गलतियों से जलने लगा हैं, प्रभु के पन्थ पर या वेद माग पर लोगो ने चलना छोड़ दिया।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हो गया कि हम सारे मनुष्य जाति भाई भाई हैं हमारा एक ही पन्थ या एक ही धर्म है।

इसलिए सिख बिद्वानों का सिख पन्थ को वेद मार्ग से अलग मानना गुरुओ पर मिथ्या दोष लगाना है।

पहला प्रश्न

अब हमारा सिख जगत् से, पहला प्रश्न यह है कि दसों गुरु एक सचाई, एक धर्म या एक सत्य ज्ञान वेद वाणी को मानते हैं तो आपका यह कहना है कि गुरुओ ने अलग खालसा पन्थ निर्माण किया था और इसके सिद्धान्त सब से अलग और निराले हैं कैसे सच हो सकता है ?

२. एक ही उपासना

वेद की एक सूक्ति है—

"पतिरेक आसीत"

अर्थात संसार भर का एक ही पति, स्वामी या उपास्य देव है।

आर्य समाज का दूसरा नियम है कि ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर अभय, नित्य, पवित्र, और सृष्टि कर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

गुरु नानकदेव जी ने भी कहा था :—

१ ओंकार सत नाम; कर्ता पुरुष, निर्भो, निरवैर,
अकाल मूरत; अजूनी संभंग गुरु प्रसाद।

अर्थात—परमात्मा एक है जिसका मुख्य नाम ओंकार है, जिसका नाम या गुण कर्म स्वभाव सत्य हैं जो सृष्टि का कर्त्ता और सर्व व्यापक है, जिसको किसी का डर नहीं और न किसी से वैर है, वह काल से रहित और अमूरत है या उसका कोई रंग रूप शकल या तोल, माप नहीं, वह जन्म मरण से रहित और स्वयं प्रकाश स्वरूप है और असीम कृपा सागर है।

यह गुरु वाक्य ग्रन्थ साहिब में ५६७ बार आया इसको सिख धर्म का आदि मूल भी कहा जाता है, और यह सारे का सारा वेदानुकूल है। आगे कहा :—

एको रब रहिया सभ ठाई। अवर न दीसे किस पूज चढ़ाई।
(प्रभाती म० १)

अथात्—वह एक प्रभु सब जगह रम रहा है, उसके ऊपर या उससे बड़ा और कोई दिखाई नहीं देता फिर हम किसी दूसरे की क्यों और कैसे पूजा, उपासना या भक्ति करें ?

हरी की तुम सेवा करो, दूजी सेवा करो न कोई जो।
(गुजरी म० ३)

गुरु अमरदास जी ने कहा कि केवल एक ईश्वर की भक्ति करो और किसी की उपासना न करो :—

सदा सदा सो सेविये, जो सभ में रह समाई।
अवर दूजा क्यों सेविये, जो जम्मे ते मर जाई॥
(गुजरी की वार)

अथात्—सदा उसी एक परमात्मा की उपासना करो जो सब में और सब जगह व्यापक है, उसको छोड़ दूसरों की पूजा या भक्ति न करो जो जन्म लेते और अन्त में मर जाते हैं।

क्रमशः

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 83861/73 पंजी० सं० P/RTK 49

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ३४ | १४ अगस्त १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

उग्रवादी अकाली राष्ट्रीय नेता चौ० चरण सिंह को धमकियां देनी बन्द करें :

—प्रो० शेरसिंह की ललकार

६ अगस्त को रोहतक में पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए 'हरयाणा-रक्षा-वाहिनी' के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने सिंह-गर्जना करते हुए कहा कि चौ० चरणसिंह जी अब केवल एक दलीय नेता नही हैं बल्कि अकाली-समस्या पर उन्होंने एक "सच्चे-राष्ट्रीय-नेता" की भूमिका निभाई है। यदि अकाली उग्रवादियों ने चौ० साहब पर किसी प्रकार की वारदात की तो इसकी राष्ट्रव्यापी प्रतिक्रिया होगी और हरयाणा, राजस्थान तथा उत्तरप्रदेश व बिहार में तो अकाली उग्रवादियों को सिर छुपाने की भी जगह नहीं मिलेगी। चौ० चरणसिंह के साथ अकारण वैर अकालियों के हित में नहीं है। प्रतिदिन उनको दी जा रही धमकियों से हरयाणा में उबाल आ सकता है जिसके वातक परिणाम हो सकते है। इस सबके लिए अकाली स्वयं जिम्मेदार होंगे।

हरयाणा की खुली लूट

प्रो० साहब ने आगे कहा कि सतलुज-यमुना लिंक नहर के न बनने से हरयाणा को नित्यप्रति ३० लाख रु० का घाटा हो रहा है जबकि पंजाब से पाकिस्तान को जाने वाले १.५ लाख मो० ए० फुट पानी से प्रतिवर्ष ४० लाख रुपये का लाभ हो रहा है। हरयाणा सरकार से २० करोड़ का हर्जाना वसूल करके भी पंजाब की सरकार हमारी नहर को अभी तक एक किलोमीटर तक नहीं खुदवा सकी है। नहर के कार्य के उद्घाटन को सोलह महीने पूरे हो चुके हैं। प्रो० साहब ने भारत सरकार से पुरजोर अपील की है कि वह इस कार्य को अपने नियन्त्रण में लेकर आगे बढाए और इसके लिए उचित अनुदान भी हरयाणा को दें। उन्होंने आगे कहा कि यदि अकालियों ने हमारा बिजली पानी रोका तो हमको भी विवश होकर पजाब के सारे रास्तों की नकाबन्दी करनी पड़ सकती है बशर्ते कि अकाली और सरकार समय रहते चेत जायें।

सरकार की कमजोरी

"हरयाणा रक्षा वाहिनी" अध्यक्ष ने पत्रकारों से खचाखच भरी बैठक में कहा कि नित्य प्रति हिन्दुओं और निरंकारियों की निर्मम हत्या के लिए जितने जिम्मेदार अकाली उग्रवादी हैं, पंजाब-सरकार भी उतनी ही उत्तरदायी है। पंजाब सरकार उग्रवादियों को केवल अल्टीमेटम दे देकर शहीद बना रही है। जबकी उनको बिना किसी हिचक के अविलम्ब गिरफ्तार करना चाहिए। लोंगवाल, भिंड़रावाला और सुखजिन्दर जैसे लोगों को भी राष्ट्रीय-सुरक्षा-कानून के अन्तंगत नजर बन्द करना चाहिए। अकाली नेताओं को भड़कीले ब्यान देने से बाज आना चाहिए। इसमें उनका अपना ही हित निहित है। पत्रकार सम्मेलन में महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ तथा हिन्दू सुरक्षा समिति हरयाणा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी भी उपस्थित थे। (कार्यालय संवाददाता)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की तैयारी के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव स्थगित :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक ७ अगस्त ८३ को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन, रोहतक में सम्पन्न हुई। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के प्रस्ताव पर सर्व-सम्मति से निर्णय किया गया कि ३ से ५ नवम्बर ८३ को अजमेर में हो रही निर्वाण शताब्दी की तयारी करने के लिए सभा का चुनाव जो कि ४ सितम्बर को होना था, को स्थगित कर दिया गया। शताब्दी सम्पन्न होने पर आगामी अन्तरंग की बैठक में अगली तिथि नियत की जावेगी। प्रस्ताव में हरयाणा के आर्य समाजो तथा शिक्षण संस्थानों के अधिकारियों से आग्रह किया गया है कि वे अपने नगर तथा ग्राम से अजमेर पहुँचने की तैयारी अभी से कर देवे। हरयाणा से अजमेर में इस अवसर पर २०० बसो को ले जाने की योजना है। हरयाणा सरकार से रियायती किराये पर बसे प्राप्त करने के लिए दीवान भीमसेन जी को संयोजक बनाया गया है। अत: आर्यसमाजें अपने यहां से अजमेर जाने वाले आर्य नर-नारियों की सूची तैयार करके दीवान भीमसेन जी को शान्तीकुंज, नई कालोनी, गुड़गाँव के पते पर शीघ्र भेजें ताकी उनके नगर के लिए बस की व्यवस्था की जावे। बसें ३ नवम्बर को प्रातः अजमेर पहुँचेगीं और ६ नवम्बर को वापिस आवेंगी। आते-जाते समय राजस्थान के ऐतिहासिक स्थानों को भी दिखाया जावेगा।

(म० भरतसिंह वानप्रस्थी)
सभा मन्त्री

आर्यसमाज पानीपत की स्थापना शताब्दी समारोह



हरयाणा के प्रसिद्ध आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत को स्थापित हुए १०० वर्ष पूरे हो रहे हैं। अत: इसकी तैयारी आरम्भ कर दी गई है। सभा के कोषाध्यक्ष श्री रामानन्द जी को इस का संयोजक बनाया गया है। प० चिरंजीलाल जी की भजन मण्डली सारे क्षत्र में प्रचार करके नवीन आर्य समाजों की स्थापना तथा शिथिल आर्यसमाजों में जागृति लाने का यत्न कर रही है। मन्त्री

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

गायत्री मन्त्र प्रश्नातीत है ।

—डा० विश्व बन्धु 'व्यथित''
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी०ए०वी० कालेज अबोहर ।

(गतांक से आगे)

शर्मा जी की इस शरारत का दूसरा पक्ष उन भोले भाले पौराणिक भाइयों को आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के विरोध में खड़ा करना हो सकता है, जो बेतुकी बातों का विश्वास करके महर्षि दयानन्द को गायत्री में व्याकरण की त्रुटि मानने वाला समझ लें। इसी लिए लेखक सुरेन्द्र शर्मा जी ने गायत्री को लंगड़ा सिद्ध करने के लिए आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् युधिष्ठिर मीमांसक को मिसकोट किया है। लेकिन सनातन-धर्मी भाई क्या नहीं जानते कि आपके और आपके आजीविकादाता सरिता के मालिकों के सभी दुष्कृत्यों से आर्यसमाजी पत्र पत्रिकाएं ही लोहा लेती हैं। इसीलिए एक सनातनधर्मी विद्वान् ने मुझे लिखा—"श्री रमेश जी "पंजाब केसरी" ने भी हम सनातनधर्मियों के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है जो आगे लेखमाला दी, गायत्री को लंगड़ा छन्द बताकर बन्द करने को लिखा है। यह तो उन्होंने हमारे वेदों का व सनातन धर्म का बहुत बड़ा अपमान किया है। प्रिय विश्वबन्धु जी, आप इसका पूर्ण छन्द सिद्ध करके सनातन धर्म को अपमानित होने से बचाइए।'' इत्यादि।

अतः शर्मा जी यह आशा छोड़ दें कि वे अपनी इन बचकानी हरकतों से आर्यसमाज एवं सनातन धर्म के मध्य कोई विवाद खड़ा करवाने में सफल होंगे। अपितु इस कार्यक्रम का दुष्परिणाम यह हो सकता है कि महावीर दल और आर्यवीर दल के युवक कोई कठोर कदम उठाने का फैसला साझे तौर पर कर लें और फिर शर्मा जी और उनके सहयोगी सम्पादक अपनी जान बचाने के लिए जहां तहां क्षमा मांगते फिरें।

शर्मा जी का यह कथन कितना भी बचकाना है कि तत् मन्त्र में है, यत् अपनी ओर से जोड़ा है। हमारा भी तो यही कहना है कि "तत्'' का समकक्ष "यत्'' मन्त्र में होना चाहिए। यह तो स्पष्ट हो ही चुका है कि स्वामी जी ने "यत्'' विशेषण पहले वाक्य में व्याख्या हेतु लिखा है, जब कि 'यो'' पद अगले वाक्य में है, और सर्वनाम है। स्वामी जी ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि 'तत्'' नपु० का सम्बन्ध भर्गः नपु० से है, और यो पु० का सविता पु० से। अब शर्मा जी बेचारे अपने ही तीर का शिकार हो गए। सविता का विशेषण "यत्'' नपु० को कैसे बनाएगी। या कहें कि स्वामी जी ने "यो'' के साथ "सविता'' नहीं लिखा। इसीलिए तो उन्होंने स्वामी जी का अधूरा अर्थ जानबूझ कर उद्धृत किया है।

यह लिखकर तो उन्होंने अपने उन्मत्त होने का प्रबल प्रमाण ही प्रस्तुत कर दिया कि स्वामी जी ने जो 'यत्'' पद व्याख्या में संयोजित किया, वह मन्त्र में ही जुड़ना चाहिए। स्वामी जी ने तो मन्त्रार्थ में सर्वाधार, जगत्पते, सकल जगदुत्पादक विश्वम्भर, भगवन्, सविता देवो परमेश्वर और भवान् आदि शब्द भी जोड़े हैं जो अत्यन्त अनिवार्य और महत्वपूर्ण हैं, तो क्या आप इन शब्दों को भी मन्त्र में जोड़ने के लिए कोई आन्दोलन चलायेंगे। फिर तो सारी मिताक्षरा टीका याज्ञवाल्क्य स्मृति और कुल्लूकभट्ट की टीका मनुस्मृति में जोड़नी पड़ेगी। और गीता की तो न जाने कितनी टीकायें एक एक श्लोक में इस प्रकार जोड़नी पड़ें कि एक एक ३२ वर्ण का छन्द हजार-२ वर्णों का बन जाए। कहिए आपके इस पागलपन भरे चिन्तन की ओर कौन-२ गवाही देता है?

इसी से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि "तत्सवितुः'' के स्थान पर "तस्य सवितुः'' के संशोधन का सुझाव भी कितना व्यर्थ और अनुत्तरदायित्वपूर्ण है जैसाकि सुरेन्द्रकुमार शर्मा ने दिसम्बर 11, 82 की सरिता के पृष्ठ 146 में लिखा था :—

व्याकरण के नियमानुसार आदि के "तत्'' को सवितुः का विशेषण बनाकर इसे तस्य के रूप में परिवर्तित कर देना चाहिए।''

हमने लेखक के बाल हठ का निदान करने के लिए लिख दिया था "यदि लेखक को "तत्'' के स्थान पर 'तस्य'' करके उसका सम्बन्ध सविता से ही जोड़ने का विशेष आग्रह है, तो यह उद्देश्य भी बिना किसी ध्वनि-परिवर्तन के प्राप्त हो सकता है। "तस्य सवितुः का समास करने पर भी "तत्सवितुः'' ही बनता है।''

अब शर्मा जी इस युक्ति का तो कोई उत्तर न दे सके पूरा अन्वय करने की शर्तें लगाने लगे। हमने कई बार पूरा अन्वय और अर्थ लिख कर दिखा दिया है। पहले भी दिखाया था। खण्ड खण्ड करके अर्थ का अनर्थ करने में तो शर्मा जी ही पारंगत हैं।

सुरेन्द्र शर्मा जी ने हिन्दी दैनिक "पंजाब केसरी'' के 31-5-83 के अंक में प्रकाशित प्रस्तुत लेख में मेरे अज्ञान की मुनादी करने में लेख का बहुत सा अंश खराब किया है। हालांकि मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के ज्ञान या अज्ञान से गायत्री मन्त्र की पावनता और प्रभविष्णुता में क्या अन्तर पड़ता है। यदि अन्तर पड़ता है, तो उस व्यक्ति के अज्ञान का, जो हल्दी की गाँठ पाकर अपने को पंसारी और महान् रंगरेज मान बैठे, और उसी हल्दी को आंखों में डालकर घोषणा कर दे कि सारी दुनिया को पीलिया हो गया है। स्वयं शर्मा जी की स्थिति कुछ ऐसी ही है। उन्हें सरिता के निकृष्ट लेखन के अतिरिक्त कहीं भी सत्य, सुन्दर और शिव के दर्शन नहीं होते। अपने और विश्वनाथ जी के सिवाय कोई ज्ञानी प्रतीत नहीं होता। सम्भवतः अब रमेश जी भी अल्पज्ञानी बन गए हों। फिर भी उनके सत्यासत्य की तो परीक्षा करनी ही होगी।

इस लेख के प्रारम्भ में ही शर्मा जी फरमा रहे हैं:—

अबोहर के प्राध्यापक विश्व बन्धु यह मानकर चले हैं कि मैंने अपने लेख में "द गायत्री मन्त्र, इट्स ग्रामेटिकल प्राब्लम'' के लेखक जिस डा० विश्वबन्धु का मत उद्धृत किया है, वह उनसे भिन्न है, यद्यपि वे यह भी लिख रहे हैं कि उक्त पुस्तक उनकी लिखी हुई नहीं है।''

अब बेईमानी की हद यह है कि इस वाक्य में वर्णित तीनों तथ्य पूर्णतया बे बुनियाद झूठे और कल्पित हैं। यदि शर्मा जी अपने और मेरे पहले लेखों में से यह दिखा दें कि उन्होंने किस पंक्ति में डा. विश्वबन्धु को चर्चित पुस्तक का लेखक लिखा है, या मैंने कब स्वयं को उस पुस्तक का लेखक माना है, अथवा यह घोषणा की है कि मैंने यह पुस्तक नहीं लिखी, तो मैं सारी बहस छोड़ कर उनसे क्षमा मांग लूंगा अन्यथा यही शर्त उन पर भी शतप्रतिशत लागू होनी चाहिए। लेकिन झूठों के पांव कहां होते हैं?

वस्तुस्थिति यह है कि शर्मा जी ने "सरिता'' के लेख में जहां भी इस पुस्तक का नाम लिखा है, किसी लेखक का नाम साथ नहीं दिया और जहां डा० विश्वबन्धु का नाम लिया है, वहां किसी पुस्तक, नगर, जाति, या उपनाम आदि का संकेत नहीं है। इससे किसी को भी नाम भ्रान्ति हो सकती है। यह दोष सुरेन्द्र शर्मा का है जहां तक मेरी भ्रान्ति का प्रश्न है, मैं इस विषय में पहले ही "पंजाब केसरी'' में भी स्पष्ट कर चुका हूं।

"आश्चर्य इस बात पर है कि शेष लेखकों के साथ उनकी पुस्तकों का उल्लेख होने से नामभ्रान्ति का कोई प्रश्न नहीं, और लेकिन डा० विश्वबन्धु के साथ लेखक ने न तो कोई नगर या जाति व उपनाम आदि का निर्देश किया, और न ही किसी पुस्तक का उल्लेख। अतः लेखक (सुरेन्द्रकुमार) ही बता सकता है कि ऐसा लालबुझक्कड़ यह कौन है।''

अब शर्मा जी तनिक तो सोचते कि यदि हमने स्वयं को उस लेखक से अभिन्न माना होता, तो क्या खुद को ही लालबुझक्कड़ कहते। अब तो दो ही उपाय हैं, या तो शर्मा जी अपने प्रभाव से सरिता और "पंजाब केसरी'' के अंक फिर से छपवाकर उनमें वे सभी झूठे अंश छपवाएं, जिनका वे उल्लेख कर बैठे हैं, या चुपचाप क्षमा मांगकर आगे से ऐसा सफेद झूठ बोलने से तोबा कर लें और कृपया ऐसे ज्ञान या अज्ञान का सम्बन्ध गायत्री से न जोड़ें, इससे असंख्य कोमल हृदयों की भावनाओं पर चोट पहुंचती है, उसकी भयानक प्रतिक्रिया भी हो सकती है।

क्रमशः

सम्पादकीय

स्वतन्त्रता दिवस

स्वतन्त्रता का मूल कारण : धर्म

सन् १८५७ ई० मे भारतीय क्रान्तिकारी वीरों ने अंग्रेज शासको के विरुद्ध स्वतन्त्रता के लिए ऐतिहासिक संग्राम किया। इस स्वतन्त्रता संग्राम को कुछ लेखकों ने 'गदर' का नाम दिया है। वास्तव में यह गदर नहीं अपितु एक शुद्ध राष्ट्रीय एवं धार्मिक युद्ध था। १८५७ के संग्राम को गदर कहना उन सहस्रों अमर हुतात्माओं के प्रति घोर अन्याय है जिन्होने भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। इस युद्ध का वास्तविक नाम 'भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम' है क्योंकि यह भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ा गया पहला युद्ध था।

इस स्वतन्त्रता संग्राम का मूल कारण यह है कि 'इस्ट इण्डिया कम्पनी' के राज्य मे अंग्रेज आफिसर भारतीय जनता पर मन-चाहे अत्याचार करते थे। अंग्रेज-शासकों के भयकर अत्याचारों के कारण भारतीय जनता और वीर सैनिकों की क्रोधाग्नि ने इतना भयकर रूप धारण कर लिया कि वे उन अत्याचारो का बदला लेने के लिए कटिबद्ध हो गये। कम्पनी के राज्य से सभी लोग असन्तुष्ट एव खिन्न थे। कम्पनी ने नवाबों और देशी राजाओ की रियासतों पर कब्जा कर लिया था। वे बदला लेने की भावना से संग्राम की तैयारी में जुट गए। भारतीय जनता ने कम्पनी राज्य के समूल विनाश का निश्चय कर लिया।

१८५३ ई० में कम्पनी ने भारतीय सेना के लिए नए ढंग के कारतूस बनाए। पहले के कारतूस हाथ से तोडे जाते थे किन्तु उन नए कारतूसों को दातों से काटना पड़ता था। शनैः शनैः इन कारतूसो का प्रयोग बढ़ाया गया।

एक दिन एक घटना इस प्रकार से घटी कि दमदम का एक ब्राह्मण सिपाही पानी का लौटा भर कर अपनी बारिक की ओर जा रहा था। मार्ग में एक भंगी ने पानी पीने के लिए लोटा मांगा तो उस ब्राह्मण सिपाही ने लोटा देने से इनकार कर दिया कर दिया। इस पर भंगी ने कहा—"तुम अब जात-पात का घमण्ड न करो।" क्या तुम्हें मालूम नहीं कि शीघ्र ही तुम्हें अपने दांतों से गाय का मांस और सूअर की चर्बी काटनी पड़ेगी। जो नये कारतूस बन रहे हैं उनमें जान-बूझ कर यह दोनों चीजे लगाई जा रही है"।

ब्राह्मण सिपाही भंगी की इस बात को सुन कर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ अपनी छावनी में पहुंचा। उसने जब यह वृत्तान्त दूसरे सैनिकों को सुनाया तो वे भी क्रोध से लाल हो गए। सैनिकों ने विचार किया कि अंग्रेज सरकार जान-बूझकर भारतीय सैनिकों का धर्मभ्रष्ट करना चाहती है। सैनिको ने इस तथ्य का पता लगाया और वे इस निर्णय पर पहुंचे कि यह वास्तविकता है कि नये कारतूसो के निर्माण मे हिन्दू और मुसलमान सम्प्रदाय में वर्जित गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग किया जाता है। यह समाचार बिजली की भाति प्रत्येक भारतीय सैनिक के कानो तक पहुँच गया। प्रत्येक हिन्दू और मुसलमान सैनिक अंग्रेजी शासन से इस अन्याय का बदला लेने केलिए व्याकुल हो उठा। सैनिकों में इस प्रकार से असन्तोष फैल जाने के कुछ दिन बाद कम्पनी राज्य की ओर से एक विज्ञप्ति प्रकाशित की गई कि इस तरह का एक भी कारतूस फौज में नही भेजा गया है जबकि २२००० कारतूस अम्बाला डिपो से तथा ३६००० कारतूस सियालकोट डिपो से भारतीय सेना मे भेजे जा चुके थे। सैनिको ने जब नए कारतूसों के प्रयोग का विरोध किया तब अंग्रेज अफसरों ने उन्हे डराया, धमकाया तथा कठोर दण्ड भी दिया कि तुम्हें नये कारतूसों का प्रयोग करना होगा।

भारतीय जनता तथा सेना में कम्पनी राज्य को समाप्त करने और भारत को स्वतन्त्र कराने की अग्नि जल उठी थी। उसमें इन नए कारतूसों के प्रयोग की घटना ने पैट्रोल का काम किया और उस अग्नि ने एक भयंकर रूप धारण कर लिया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ भारतीय जन-जन के मन में यह भावना जुडी हुई थी कि स्वतन्त्रता के पश्चात् एक आदर्श भारत का निर्माण होगा। जिसमें भारतीय धर्म फले-फूलेगा। गोहत्या का कलंक सदा के लिए मिट जाएगा। घी दूध की नदिया बहेंगी। सुरापान का नाम नही होगा। किसी के साथ कोई अन्याय, अत्याचार नही किया जायेगा। एक रामराज्य की कल्पना उनके हृदय में संजोई हुई थी। इसलिये कारतूसों मे गाय की चर्बी के प्रयोग पर कितने वीरों ने अपने प्राणों तक की आहुति दे डाली। आज स्वतन्त्रता के ३६ वर्षों के उपरान्त हम देख रहे है कि गोहत्या का कलक भारत-माता के भाल पर बढता ही जा रहा है। दूध-घी के स्थान पर शराब की नदिया बह रही है। प्रत्येक गली-कूचे और घर-घर मे नग्नता का नगा नाच हो रहा है। व्यभिचार और नग्नता को प्रगति माना जा रहा है। सदाचार और सभ्यता को पिछड़ापन समझा जाता है। दुराचार की इतनी भयकर आधी चल रही है कि सदाचार के बडे-बडे स्तम्भ भी उखड रहे हैं। रिश्वत का बाजार गर्म है। रिश्वत लेना और देना अधिकार और कर्तव्य बन गया है। यदि समय रहते स्थिति को सम्भाला नही गया तो भारतीय वीरो के प्राणों के मूल्य पर प्राप्त हुई स्वतन्त्रता स्थिर नही रह सकेगी।

—सुदर्शनदेव

स्वतन्त्रता के पुनीत-पर्व की पूर्ववेला पर

आज स्वतन्त्रता-पर्व १५ अगस्त की पूर्ववेला में उन्मुक्त श्वास लेते हुए हमको कितना हर्ष हो रहा है, यह अकल्पनीय है। लेकिन स्वतन्त्रता देवी का यह आगमन भारत भूमि पर इतना सहज रूप से नही हो गया था जितना कि प्रायः हम लोग आज समझ लेते हैं। इसकी पृष्ठ-भूमि में अज्ञात वीर-वीरांगनाओं का अमित उत्सर्ग है। "घड़ते जो इतिहास देश का सह कर कठिन दुःखों की मार" वाली पंक्ति दिनकर जी की आज हमको अनायास स्मरण हो आती है। इस स्वतन्त्रता की दुल्हन को पाने के लिए कितने ही वीरो ने अपने प्राण- प्रसूनों से इसकी अर्चना की है। कितनी माताओं के लाल लुटे हैं कितनी ही देवियों के सुहाग लूटे हैं, और कितनी ही बहनों के भाई सदा सदा के लिए उनसे छिन गये। सावरकर जैसे वीर-वरो का कठोर कारावास और वहाँ पर दी जाने वाली निर्मम यातनाएँ सुनकर आज भी हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। माँ-भारती के लिए क्या-क्या कष्ट क्रान्तिकारी लोगों ने नहीं सहे। गणेश शंकर 'विद्यार्थी और चन्द्रशेखर "आजाद" जैसे लोगों ने हँसते हँसते सीने पर गोलियाँ खाई। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्लाखाँ, खुदी राम बोस, भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु जैसो ने अपने कल कण्ठों में फाँसी के फन्दे को स्वागत माल के रूप में पहना। वही तो था उनका परम गहना। भाभी दुर्गावती और बहन शास्त्री बाई जैसी वीरांगनाओं का घर बार त्याग कर सभी सासारिक सुखों को तिलाञ्जलि देकर स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करना आज भी हमारी धमनियों में रक्त का द्रुत संचार कर देता है। उन बलिदानी वीरों की कष्ट-कथाओ का सुनकर आखों मे अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है। इस सब में भी उनको कितना गौरवानुभव होता था इसकी जीवित जागृत मिसाल है। मदनलाल धींगरा का इग्लैंड की असैम्बली मे बम्ब फेंक कर स्वय गिरफ्तारी दे देना और गर्वोन्नत भाल होकर यह कहना कि "मैं यह दिखाना चाहता हू कि भारतीय किस तरह से अपनी मातृ-भूमि के लिए मरना जानते हैं।" रामप्रसाद बिस्मिल का यह मस्ती भरा तराना किसका मन नही मोह लेता है—

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देख लेंगे जोर कितना बाजुवें-कातिल में है।"

उस समय के सुविधाजी की तथाकथित बुद्धिजीवी-नीतिमान लोग इन लोगों को 'सिरफिरे' या पागल कहकर पुकारा करते थे लेकिन आजादी के दीवानो का नारा कितना प्यारा होता था—

"इन बिगडे दिमागों में बडी खुशियों के लच्छे हैं।
हमें पागल ही रहने दो, हम पागल ही अच्छे है॥"

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्वतन्त्रता के इतिहास-क्रम में जहाँ अन्याय ज्ञात-अज्ञात वीर-वीरांगनाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है वहाँ पर आर्यसमाज का 'स्वर्णिम-अध्याय' भी इसमें जुड़ा है। शहीदे आजम वीर भगतसिंह, बिस्मिल वीर सावरकर, नेताजी सुभाष और श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे लोगों का प्रेरणा-स्रोत आर्यसमाज ही रहा है। आर्यसमाज उस धधकती भट्टी की तरह रहा है जिसने कितने ही हीरे और लाल इस देश को तपातपा कर दिये हैं। लाला लाजपत राय जी के कुर्बान होने पर गाया गया यह गीत कितना सार्थक है—

"लाजपत लुटाकर आज पा लिया स्वराज है,
जग को जगाने वाला आर्यसमाज है ॥"

स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे आदर्श सन्यासियों ने भी स्वतन्त्रता यज्ञ में अपनी आजमयी आहुति डाली। रोलट ऐक्ट के विरुद्ध छाती तान कर की गई उनकी हुंकार अंग्रेज के दिल को दहलाने वाली थी। जलियांवाला बाग के काण्ड के आतंकमय वातावरण में कांग्रेस का सफल अधिवेशन करा देनी उन्हीं के बूते की बात थी। चौ० तेजसिंह, चौ० ईश्वरसिंह, स्वामी नित्यानन्द, पृथ्वीसिंह बेधड़क, प० बस्ती राम तथा कुंवर जुरालाल जैसे लाग लोक-गायक लोगों का जन-जागरण कार्य अविस्मरणीय है। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी व भक्त फूलसिंह जी के असहयोग तथा दूसरे आन्दोलनों में जेल जाने वाले लोगों में ८० प्रतिशत लोग आर्यसमाजी ही रहे। यह तत्कालीन महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों से सिद्ध होता है। तभी तो हिन्दी के सुप्रसिद्ध हास्य-कवि काका हाथरसी ने कहा था—

"यदि न देते साथ देश के आर्यसमाजी,
न जाते भारत छोड़ वे गोरे राजी-राजी ॥"

आज स्वतन्त्रता-दिवस की पूर्ववेला है। स्वतन्त्रता के इतिहास का संक्षिप्त सिंहावलोकन हमने ऊपर किया। कितने वीर बलिदान हुए। कोटि-कोटि लोग कुर्बान हुए लेकिन जब आज हम यह विचार करते हैं कि आखिर यह सब किस लिए हुआ तो हमारे सामने एक गहरा प्रश्न-चिन्ह लग जाता है। क्या मात्र 'राजनैतिक-स्वतन्त्रता' के लिए ही यह सब किया गया था। शायद नहीं। राज तो भारत में उस समय भी था आज उसके आगे मात्र 'स्व' लग गया है। आखिर उस 'स्व' में हमारा अपना क्या है या हम इस 'स्व' के अनुरूप कहाँ तक ढल पाये हैं। कहना न होगा हमने शायद स्वतन्त्रता का अर्थ निरुद्देश्य—स्वच्छन्दता तथा उच्छृंखलता ले लिया है क्या इसी में हमारा 'स्व' निहित है? हमने शायद कवि कुलगुरु तुलसीदास जी की इन पंक्तियों पर गंभीर विचार नहीं किया है—

पराधीन सपनेहूं सुख नाही,
कर देखहु विचार मन माँही।"

चारों ओर फैले भ्रष्टाचार, अनाचार, अनुशासनहीनता, मूल्यहीनता से ऐसा प्रतीत होता है हमने स्वतन्त्रता की कीमत को ही नहीं समझा है। क्या उन बलिदानी शहीदों का खून खून नहीं था? पानी था? शायद नहीं। आज हमको स्वतन्त्रता को व्यापक अर्थ देकर सार्थक बनाना है। स्वयं का और समाज का तथा राष्ट्र का समुचित सर्वांगसमुन्नत विकास कर इस को उन्नति के चरमोत्कर्ष पर पहुंचाना है। इसी में स्वतन्त्रता की सार्थकता है।

—धर्मचन्द विद्यालंकार
(समन्वित एम. ए.)

आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से वार्ता

सभा के उपदेशक पं. सुखदेव शास्त्री की आकाशवाणी रोहतक से १८ अगस्त को सांय ७ बजे "वृक्षों का महत्त्व" विषय पर वार्ता होगी। श्रोतागण सुनकर लाभ उठावें।

जो नहीं देते सुनाई उन सुरों को याद कर लो

मुक्ति का मन्दिर खड़ा है,
जो कि रत्नों से जड़ा है।
आज जिसके आँगनों में,
लग रहा मेला बड़ा है।
जो मिले इसको बनाते उन करों को याद करलो। जो नहीं देते……
खूब ऊँचा है सितारा,
शीश है ऊँचा हमारा।
हम गुंजाते जा रहे है,
जीत का उन्मत नारा।
कल गये जो आज के हित, उन सरों को याद कर लो। जो नहीं देते……
गर्व से फूले नगर है,
स्वर्णमय गलियाँ डगर हैं।
दीपमाला से समुज्ज्वल,
सज रहे अभिराम घर है।
आन के हित मिट गये जो उन घरों को याद कर लो। जो नहीं देते……
कुँज की उजड़ी जवानी,
छा गई फिर जिन्दगानी।
प्राप्त कर आशा नई फिर,
हँस उठी कलियाँ सुहानी।
बीज बन कर खो गये जो, उन नरों को याद कर लो। जो नहीं देते……
स्वर्ग सिंहासन सुहाता,
और शासन मन लुभाता।
राज करने के लिए दल,
बाँध कर नेतृत्व आता।
पीठ पर जिनको खड़े उन अनुचरों को याद कर लो।
जो नहीं देते सुनाई उन सुरों को याद कर लो ॥

—श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'

हरयाणा में योग विद्या उन्नति के शिखर पर



ब्र० ओमदर्शन दसवीं कक्षा के सुयोग्य छात्र हैं। इनका जन्म १५ अगस्त १९६६ को एक आर्य परिवार में हुआ। विद्वान् तथा विदूषियों के निरन्तर आगमन से ब्र० ओमदर्शन को योग सीखने की प्रेरणा मिली। विशेष रूप से डा० बलबीर आचार्य ने इन्हें योग सीखने के लिए उत्साहित किया।

डा० बलबीर आजकल गवर्नमेंन्ट कालेज महेन्द्रगढ के अन्दर संस्कृत के प्राध्यापक हैं। इनके घर में उनका आगमन प्रायः होता रहता है। इसके अतिरिक्त इनके वर्तमान महात्मा राजेश कुमार ने भी इन्हें योग सीखने की प्रेरणा दी।

आर्यसमाज मन्दिर जीन्द में इनका कार्यक्रम देखने के उपरान्त मैंने ब्र० ओमदर्शन से भेंट की। आर्यसमाज मन्दिर में इन्होंने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से रेचक कुम्भक, कुछ योग आसन, ४ सूत का सरिया गर्दन से मोड़ना, ३ सूत का सरिया आँख से मोड़ना, चलती हुई हाथ की नाड़ी का रोकना, पीतल की थाली को हाथ से फाड़ना, हथेली से कांच पीसना आदि अनेक योग की क्रियाओं का प्रदर्शन किया। मैंने ब्र० ओमदर्शन जी से इनके निवास स्थान पर सायंकाल काफी देर तक इनसे योग के बारे में बातचीत की। उन्होंने योग के बारे में बताया कि मैं प्रतिदिन सुबह ४ बजे उठकर योगिक आसनों का तथा योगिक क्रियाओं का अभ्यास करता हूं। इसके अतिरिक्त सायंकाल ५ से ७ बजे तक पद्मासन लगाकर ध्यान करता हूं। विचारों को शुद्ध तथा पवित्र रखने के लिए वैदिक साहित्य का अध्ययन खाली समय में करता हूं। एक योग साधक के लिए वैदिक साहित्य इतना ही आवश्यक है जितना कि एक मनुष्य के लिए भोजन। योग तथा शुद्ध विचारों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। बीमारियों के बारे में मैंने ब्र० ओमदर्शन जी से पूछा कि क्या योग विद्या के द्वारा बीमारियां ठीक हो जाती हैं तो उन्होंने मुझे बताया कि बीमारियों के लिए योग विद्या बहुत ही लाभदायक है यदि योगिक आसनों तथा योगिक क्रियाओं का निरन्तर अभ्यास किया जाए तो ब्र० जी का विश्वास है कि मनुष्य को बीमारी छू तक नहीं सकती। आजकल के वातावरण को अपने दृष्टिकोण में रखते हुए ब्र० ओमदर्शन ने कहा विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय स्तर पर योग विद्या की आवश्यकता है हमारी सरकार को चाहिये कि प्रत्येक विद्यालय (शिक्षाकेन्द्र) में एक योग केन्द्र अवश्य ही होना चाहिये तथा प्रत्येक छात्र तथा छात्रा के लिए योग की घण्टी अनिवार्य होनी चाहिये।

मैंने ब्र० जी से पूछा कि योग सीखने के लिए क्या-क्या जरूरी है तो ब्र० जी ने मुझे बताया कि योग विद्या सीखने के लिए सबसे पहले धूम्रपान, मदिरापान आदि जितने भी मादक पदार्थ हैं इनका त्याग आवश्यक है क्योंकि यह पदार्थ हमारे शरीर में हानि पहुंचाते हैं। इस समय इनके विशेष सहयोगी स्वामी धर्मदेव जी नैष्ठिक इन्हें योग के बारे में निर्देश दे रहे हैं। ब्र० ओमदर्शन की आयु १५ अगस्त १९८३ को १७ वर्ष की हो जायेगी। इनकी आयु को अपने दृष्टिकोण में रखते हुए इनकी साधना प्रशन्सा के योग्य है। इन्होंने सायंकाल अपने दैनिक योग क्रियाओं पर जाते हुए मुझे अन्त में बताया कि मेरी साधना के अन्दर मेरे भैया संजयकुमार तथा सुबोधकुमार ने विशेष योगदान दिया है। मुझे आशा है कि इनका सहयोग मेरे जीवन में पूर्ववत बना रहेगा। यह कहते हुए ब्र० जी ने अभिवादन किया तथा अपनी साधना का सामान लेकर अपने साधना के कमरे में चले गये।

—रोहतास किशोर सिहाग
पत्रकार

●

स्वतन्त्रता दिवस की पावन स्मृति में—

कैसे बीत रहे हैं हमारे आजादी के दिन

आचार्य राजेन्द्र कुमार शास्त्री, सुनारियां (रोहतक)

प्रिय पाठको ! बहुत दिनों के बाद कलम को फिर से हाथ में ले रहा हूं। जिस स्वराज्य के लिए वीर, देशभक्त, क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव एवं अद्भुत निडरता के धनी चन्द्रशेखर ने हंसते-हंसते फांसी का फन्दा चूमा, जिस आजादी के लिए भाई परमानन्द को काले पानी की कोठरियों में अमानुषिक यातनायें सहन करनी पड़ी और जिस स्वतन्त्रता के लिए नवयुवक हृदयसम्राट वीर सुभाषचन्द्र बोस ने जर्मन और जापान में जाकर लड़ाई की सज्जा करनी पड़ी। न जाने कितने ही शूरमा अपने सुखों को तिलाञ्जली देकर पतंगों की भांति आजादी की धधकती ज्वाला में कूद पड़े थे। इस पन्द्रह अगस्त को देखने के लिए न जाने कितनी जवानियां होम करनी पड़ी थी। आज उनको याद आते ही प्रत्येक देशभक्त नवयुवक की आंखों से अविरल आंसू बहने लगते हैं। मुझे भी क्रान्तिकारियों के जीवन चरित्र से विशेष प्रेरणा मिली है। मेरे पूज्य पिता श्री चौ० मानसिंह जी भी एक साहसी तथा राष्ट्रभक्त व्यक्ति थे। अपने देश के गौरव के लिए सारा जीवन संघर्ष करते रहे तथा सैनिक के रूप में अनेक भयंकर युद्धों में भी भाग लिया। द्वितीय विश्व युद्ध में तो उन्हें इतने कष्ट झेलने पड़े थे जिनका विवरण करना भी दुष्कर है। प्रभु की कृपा से पूज्य पिताजी के संस्कार मुझ में भी हैं। मेरी भी हमेशा उत्कट अभिलाषा रहती है कि मैं अपने देश की रक्षा के लिए सबसे आगे सीमा पर पहुंच जाऊं।

आज मुझे अपने पूर्वजों की याद आ रही है। महर्षि दयानन्द जी महाराज की कृपा से आज हम सुख की सांस ले रहे हैं लेकिन उन महान् आत्माओं के स्वप्न को धूल में मिला रहे हैं। जिस देश के साधु-सन्त ही पथ भ्रष्ट हो जायें तो उस देश का भविष्य क्या होगा? इस बात को कभी विस्मृत नहीं करना चाहिये कि अदम्य उत्साह एवं अडिग विश्वास युवाशक्ति की अपनी विशेषता है। लेकिन स्वार्थी लोगों ने आज देश की युवाशक्ति को भी पथभ्रष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है: युवा रक्त की यह भी अपनी विशेषता है कि वह निष्क्रिय होकर नहीं बैठ सकता और न ही ढीले और हलके कदम उठाना चाहता है। उसे तो चाहिये कुछ प्रगतिशील प्रोग्राम, अनवरत साधना और क्रान्तिकारी योजनायें जिनसे सम्पर्क होने में वह अपना सौभाग्य समझता है।

प्रिय पाठको ! यह कटु सत्य है कि आज अपना देश एक बहुत बड़े संकट में है। देश के टुकड़े-टुकड़े होते दिखाई दे रहे हैं। अपने देश का युवावर्ग विलासिता के साधन जुटाने में या तोड़ फोड़ में रुचि ले रहा है। क्या यही हैं वे आजादी के दिन, जिनके हमारे पूर्वज स्वप्न लिया करते थे? आज मैं पन्द्रह अगस्त के इस पावन दिवस पर अपने युवा साथियों से अपील करूंगा कि आओ हम फिर से सोचें और एक नया अध्याय शुरु कर दें। सम्पूर्ण राष्ट्र की नजरें हम पर ही हैं। "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"। इस वाक्य से अभिप्रेरित होकर तैयार हो जाओ। तथा एक संकल्प लो अपने आपको समर्थ एवं समृद्ध बनाने का। तभी पन्द्रह अगस्त मनाने की वास्तविक खुशी होगी।

स्वतन्त्रता के पावन पर्व पर—

आई ले खुशियों का मेला !

आज परम पावन यह वेला।
आयी ले खुशियों का मेला ॥

मातृभूमि की बलि वेदी पर,
कितने प्राण प्रसून चढाये।
कितने वीरवरों ने हँस-हँस,
अपने अगणित शीश कटायें।

दारुण दुःखद दहन को झेला।
आयी ले खुशियों का मेला ॥

अर्ध नग्न रह जर्जर—काया,
म्रियमाण मोहक मन—माया।
'आजादी—दुल्हन' को लाने,
रे ! अपना सर्वस्व गँवाया।

तूफानों से था हाँ ! खेला।
आयी ले खुशियों का मेला ॥

निर्वासन का दण्ड सहा था,
तिल-तिल तन मन जहाँ दहा था।
आततायी अत्याचारी पर;
यही अस्त्र प्रचण्ड रहा था।

भूखों मर-मर कोल्हू ढेला।
आयी ले खुशियों का मेला ॥

"स्वागत-माल" बना कितनों ने;
पहनी थी गले में फाँसी।
वीर अंगना जूझ मरी थी;
देखो तो रानी झाँसी ॥

देखो न पीछे संग—सहेला।
आयी ले खुशियों का मेला ॥

भारतीय 'श्वान—काले' थे;
अरे ! जबानों पर ताले थे।
घोर अविद्या के अगणित पट;
अरे दिमागों पर डाले थे।

आज हँसी प्रातः वन—वेला।
आयी ले खुशियों का मेला ॥

आज 'स्वराज—सूर्य' है चमका;
उज्ज्वल आभा से हैं दमका।
पर कैसे कह दूं मैं खुलकर;
नाम नहीं है रे ! यहाँ नमका।

कैसे हो सत् को अवहेला।
आयी ले खुशियों का मेला ॥

इसका जो इतिहास बड़ा है;
विस्मृति—पथ में आज पड़ा है।
ऊपर आँख उठाकर देखो;
भारत आकर कहाँ खड़ा है ?

अब वह होवे नित्य नवेला।
आयी ले खुशियों का मेला ॥

धर्मचन्द विद्यालंकार
'समन्वित' एम० ए०

जय जय हिन्दुस्तान

रोहताश किशोर सिहल

हम सूरज बनकर आये हैं,
नई रोशनी लाए हैं, नया सवेरा लाएंगे।
हम भारत की सन्तान, जय जय हिन्दुस्तान ॥
हम भारत माँ के उजियाले हैं, गंगा-यमुना ने पाले हैं।
तन-मन भारत पर कुर्बान, हम भारत की सन्तान ॥
जय जय हिन्दुस्तान।
शिवा-प्रताप, गांधी-जवाहर, सुभाष-पटेल के चमन को
फिर से चमकाएंगे, नयी रोशनी लाए हैं ॥
नया सवेरा लाएंगे, हम भारत की सन्तान।
जय जय हिन्दुस्तान ॥
दूजे का हमें कुछ न चाहिए, अपना कभी न गवाएंगे।
चन्द्र-भगत की भाँति, सूली गले लगाएंगे ॥
नई रोशनी लाए हैं, नया सवेरा लाएंगे।
हम भारत की सन्तान, जय जय हिन्दुस्तान ॥

—सत्यभारत सांवरियां

अध्यक्ष मानव अधिकार संघर्ष समिति
सन्त रविदास कालोनी, रोहतक

अध्यापिकाओं की आवश्यकता

प्रभाकर "हिन्दी आनर्स" व शास्त्री कक्षाओं को पढाने के लिए अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

योग्यता : प्रभाकर कक्षा को पढ़ाने के लिये, प्रभाकर+शास्त्री अथवा एम० ए० हिन्दी।

शास्त्री कक्षा को पढ़ाने के लिये : शास्त्री+एम० ए० संस्कृत अथवा आचार्य।

वेतनमान : राजकीय नियमानुसार।

साक्षात्कार : १८ अगस्त १९८३ को विद्यालय के कार्यालय में प्रातः १० बजे होगा। योग्यता के प्रमाण पत्र साथ लायें।

ऋषिपाल आचार्य आर्य हिन्दी महाविद्यालय
चरखी दादरी जिला भिवानी

श्रावणी पर वेदांक विशेषांक

गत वर्षों की भान्ति श्रावणी के अवसर पर सर्वहितकारी का २१ अगस्त को वेदांक प्रकाशित होगा। जिन ग्राहकों का शुल्क प्राप्त नहीं हो सकेगा उन्हें यह विशेषांक नहीं भेजा जावेगा।

व्यवस्थापक



श्री शरर जी के लेख का पूरक

आर्यसमाज में वेश सम्प्रदाय का स्वरूप और कामरेड अग्निवेश

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु', वेद सदन, अबोहर

कुछ दिन पूर्व माननीय श्री प्रो० उत्तमचन्द जी 'शरर' जी का 'अग्निवेश जी वा आर्यसमाज' पर एक लेख 'सर्वहितकारी' में प्रकाशित हुआ। श्री 'शरर' जी को अग्निवेश की मनोवृत्ति से बड़ा आघात पहुंचा है। यह स्वाभाविक ही है कि जिस व्यक्ति ने सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा में लगाया वह कब तक व कहां तक आर्य समाज का अहित होता देखकर चुप रहेगा।

मान्य 'शरर' जी ने लिखा है कि जिज्ञासु ने तो वेश पंथियों का विरोध किया, परन्तु उनका श्री अग्निवेश से स्नेह रहा। वह सिकन्दराबाद में भी स्नेह से उनसे मिले। यह भाषा राजनीति की भाषा है। धर्मोपदेशक आर्यसमाजियों को इससे बचना चाहिये। मैंने वेश पंथियों के स्वरूप को जब जाना तो डटकर बिना लागलपेट के ऋषि मिशन के हित में उनकी पोल खोली। कामरेड अग्निवेश जी ने सभा हथियाने के पश्चात् भटिण्डा की एक बैठक में श्री वीरेन्द्र जी की उपस्थिति में मेरे लिए भिण्डरावाले की बोली में धमकियां दीं। मैं फिर भी पीछे न हटा।

सभा पर वेशों का अधिकार कराने से पूर्व उनके सब पंजाबी समर्थक खुलकर उनका विरोध करते थे। लुधियाना में आर्यवीर दल का एक शिविर लगा था। शरर जी ने स्वयं इन्हें वहां 'चोर-डाकू' की संज्ञा दी थी। ऐसा मुझे कई लोगों ने तब बताया था। मान्य शरर जी को सभा के चुनाव में जब वेशों का पक्ष न लेने के लिए लिखा तो उन्होंने मुझे लिखा वा मण्डी (हिमाचल) में कहा 'धर्म वह है जो आप कहते हैं' परन्तु मैं एक धड़े से बन्धा हूं। यह वे दिन थे जब हमारे पंजाबी लीडरों को वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी भी 'जाट' दीखते थे। उनसे भी—उनका जन्म हरयाणा में हुआ। यह आर्यसमाज का दुर्भाग्य था।

श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले से मैं केरल जाते हुए उनकी दुकान पर मिला। यह मेरठ सम्मेलन के बाद की बात है। लाला जी ने मुझे अग्निवेश जी की मेरठ सम्मेलन की करतूतें सविस्तार सुनाईं। मैंने तब कहा आप आश्रम बदल लें और आर्यसमाज की इन अनिष्टकारियों से रक्षा करें। तब लाला जी ने कहा मैं बिना आश्रम बदले ही इनका नाश कर दूंगा। यह घटना मैंने सर्वहितकारी में एक लेख में भी दी थी।

लुधियाना दाल बाजार आर्यसमाज के उत्सव पर (मेरा वेशों पर प्रथम लेख छपने पर) वीरेन्द्र जी ने मुझ से बात की। मैंने जब वेशों का स्वरूप बताया तो वह बोले, "लो यह तजुर्बा भी फेल हुआ"। यह वाक्य भी मेरे पुराने लेखों में छपा था।

आर्य प्रादेशिक सभा वालों ने तो बुद्धिमत्ता से इन्हें नई दिल्ली मन्दिर मार्ग से निकाला ही था। मेरे सामने अपने घर पर वयोवृद्ध डा० दत्ता जी ने कामरेड अग्निवेश से कहा कि यदि आर्यसमाज का कुछ करना है तो आसाम में हमारी ओर से काम करें या ब्राह्म महाविद्यालय हिसार सम्भाल लें। परन्तु इस व्यक्ति को तो आर्यसमाज का अनिष्ट करना था। आसाम जले या पंजाब। उन्हें तो विदेश यात्रा करके सदैव काला धन बटोरने की तड़प है।

जो व्यक्ति बार-बार यह कहता था कि आर्यसमाज ने एक शताब्दि में कुछ नहीं किया। जनता की कचहरी में आर्यसमाज को १९७५ ई० में पेश होना होगा। गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर यह प्रस्ताव रखवाया कि जो आर्यसमाजी राजनैतिक दलों में हैं वे दयानन्द द्रोही हैं। 'आर्य सभा' ही आर्यों का राजनैतिक दल है। यह प्रस्ताव सम्भवतः डा० रामप्रकाश ने रखा। धुआंधार भाषण हुए। हरयाणा के एक दाढ़ीधारी युवक ने तब त्यागी जी के साथ अशिष्ट व्यवहार किया। धमकी भी दी। ऐसी बातें कहने वाले 'आर्य-राष्ट्र' के नाम पर जीपें, थैलियां, आभूषण, स्कूटर बटोरने वाले अब कहां हैं? किस किस दल में हैं? पहिले रोज फकीर बाना बना करते थे। इस युग में भी शाहपुरा के राजा उमेदसिंह ने वानप्रस्थ लिया। स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ, महात्मा आनन्द स्वामी जी, पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, श्री स्वामी ओमानन्द जी जैसे महात्माओं ने वैभवशाली परिवार छोड़ कर फकीरी बाना धारण करके आर्यसमाज का गौरव बढ़ाया और इसी महान त्याग के कारण जन-जन के पूज्य बने महात्मा मुन्शीराम जी के त्याग का तो कहना ही क्या है।

वेशों की स्थिति यह थी कि ट्रिब्यून अंग्रेजी के अन्तिम पृष्ठ पर तीन वेशों का एक चित्र व इन्टरव्यू छपा (इन्होंने छपवाया) कि हमने राजनैतिक लाभ के लिए साधु वेश धारण किया। कहिये! इनको कौन स्वामी कहेगा? श्री शरर जी पानीपत में अग्निवेश के साथ जेल में धर दिये गये। अग्निवेश वहां आर्य कालेज पर चढ़ाई करने गया था। पुलिस ने पूछा तुम कौन? यह साहब बोले, "मैं प्रस्तोता"। पुलिस अधिकारी ने कहते हैं जब यह पूछा अरे क्या तोता? ताता? तो प्रस्तोता श्री अग्निवेश के तोते उड़ गये। जेल में इन्होंने शरर जी से नक्सलवादियों की एक बात की। शरर जी पहले ही समझते थे अब और प्रकाश हो गया कि इसके मन में क्या है। मैंने यह घटना भी एक लेख में दी थी। लुधियाना आर्य सम्मेलन में जब 'शरर' जी ने इनकी पोल खोली तो शरर जी के भाषण में इन लोगों ने गड़बड़ कर दी।

गुजोटी, मेरठ, अलवर में यह विध्वंसक प्रवृत्तियों का प्रदर्शन कर ही चुके थे। अब पाठक स्वयं सोच लें देख लें कि श्री 'शरर' जी का अग्निवेश से कितना गहरा स्नेह है। श्री शरर जी ने अपनी एक सुन्दर कविता में आर्य जाति को कम्युनिज्म की स्वर लय सुनाने वालों से सावधान भी किया था।

साधु वेश लेने वाले इन लोगों ने कहीं वेद कथा की? कहीं कभी योग साधना की? वेद पर, आर्यसमाज पर प्रहार होने पर कभी वाणी वा लेखनी से विरोधियों का उत्तर दिया? आर्य जाति पर अरबों व अमरीकनों के भयंकर प्रहार के उत्तर में शुद्धि में कभी रुचि ली। वेद का स्वाध्याय किया? मुझे स्वयं वेशद्वय के दीक्षागुरु स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज ने कहा, अग्निवेश तो धार्मिक नहीं। वह एक राजनैतिक नास्तिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। इन्द्रवेश से कुछ आशा थी कि गुरुकुल में रहा है आर्यसमाज का अहित नहीं करेगा परन्तु इसने तो मुकद्दमाबाजी का कुचक्र चला दिया है। इनके कार्यालय में तो एक दूसरे पर व्यभिचार के भी आरोप लगे थे। मेरे पास ऐसा एक पत्र इन्हीं लोगों का है।

'आचार्य देवो भव' की आर्ष घोषणा में विश्वास करने वाले आर्यों ने पदलोलुपता के कारण, जात व प्रान्तवाद का कुचक्र चला कर जान-बूझ कर वेशों को आगे करके आर्यसमाज का अहित किया। स्वामी ओमानन्द (आचार्य भगवादेव जी), पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती जैसे आचार्यों को गालियां दिलाकर खुशियां मनाईं। खोज-खोज कर हरियाणा में उन लड़कों को आगे लाने का यत्न किया जो हरयाणा से तपोधन श्री स्वामी ओमानन्द जी का प्रभाव मिटा सकें। प्रो० शेरसिंह जी को गाली दें। देहली-पंजाब के प्रायः सभी पंजाबी आर्यसमाजी तब अकालियों से भी अधिक हरयाणाद्वेषी थे। अभी कल तक इनकी दृष्टि में दो ही आर्य जाट भले थे। स्वामी ओमानन्द वा प्रो० शेरसिंह कल तक इनकी आंख में खटक रहे थे। हरयाणा के हितों के लिए 'आर्य राष्ट्र' के नाम पर ठगी करने वाले कामरेड अग्निवेश कब बोले? 'समाधि ढाओ' का नारा लगाने वाला राजघाट के चक्कर काट रहा है। पंजाबियों के ये लाडले जीप और वोट पंथी पंजाब में कहीं दीखते नहीं। यह है इनका स्वरूप।

आर्यसमाजें सावधान रहें

श्री विक्रमसिंह जी आर्यसमाजों में घूम-घूम कर शुद्धि सभा के नाम पर धन संग्रह कर रहे हैं। इनको आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से धन संग्रह करने का कोई भी अधिकार नहीं है। इन्हें सभा ने हटा रखा है।

इन्होंने शुद्धि के नाम पर जो धन प्राप्त किया है, उसका हिसाब भी सभा को नहीं भेजा है। अतः आर्यसमाजें इन से सावधान रहें।

—रामानन्द सभा कोषाध्यक्ष

महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह (अजमेर) के लिए

आर्यजनता के नाम अपील

आदरणीय बन्धुओ,

अज्ञान, अभाव और अन्याय के अन्धकार में सिसक रही मानवता के उद्धारक ज्योति पुञ्ज महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी की तिथियां लगातार निकट आ रही है। विश्व भर में महर्षि के शिष्यों और श्रद्धालुओं के लिए यह एक चुनौति हैं कि वे अपने आदर्श पुरुष के इस समारोह को कितने प्रभावशाली ढंग से मनाते है।

मैं निजी तौर पर यह अभिलाषा रखता हू कि इस बार का उत्सव केवल उत्सव न रहें किन्तु इस में आर्यसमाज एक ऐसे सगठन का स्वरूप ग्रहण करे, जो भारत माता को उसकी वर्तमान दुर्दशा से मुक्ति दिला सके और एक ऐसी पारिवारिक संस्था बन जाये जिसके ओजस्वी सपूत अपनी आत्मबलिदानी परम्परा से सारे समाज में दीप शिखा बन सकें।

हम इसके लिए अनेक प्रकार से प्रयत्न कर रहे हैं। किन्तु इसके साथ ही सबसे बड़ा उत्तरदायित्व उन पांच से दस लाख भाई-बहिनों, वृद्धों और बच्चों के समुचित आवास तथा भोजन आदि का प्रबन्ध करना है जो शताब्दी मे भाग लेने अजमेर पहुंचेंगे। इससे पूर्व कई बडे समारोहों में यह देखा गया है कि केवल इस व्यवस्था के अभाव से लोग परेशान हुए तथा समारोह के असली उद्देश्य में व्यवधान पड़ा।

मै चाहता हूं कि यह समारोह एक पारिवारिक वातावरण में सम्पन्न हो, इसके लिए आवश्यक है कि भोजन एवं आवास की संयुक्त व्यवस्था हो सके। इसके लिए तथा यज्ञशाला, प्रदर्शनी तथा साहित्य प्रकाशन आदि के लिए हमें तुरन्त कम से कम दस लाख रुपयों की आवश्यकता है। दानवीरता का इतिहास रखने वाले आर्य बन्धुओं के लिए यह कोई बड़ी बात नही है। अतः आप कम से कम दस हजार भाई-बहिन १०१/- रु० प्रत्येक मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भिजवायें।

क्या हमारे १० हजार सहयोगी देश भर में ऐसे नहीं जो सिर्फ सौ रुपये अपनी जेब से निकाल कर इस महान् यज्ञ में अपनी पवित्र आहुति के रूप में दे सकें। मुझे विश्वास है, आप मेरी अपील को पढ़कर अलग नही रख देंगे, अपितु व्यक्तिगत पत्र मानकर आज ही मनीआर्डर करेंगे।

आशीर्वाद सहित।

आपका,
स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान परोपकारिणी सभा,
—कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली-११००४०

पुनश्च:—धन और ऋषि लंगर के लिए आटा या घी इस पते पर भेजें—ऋषि निर्वाण शताब्दी उप-कार्यालय, आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ३६ | २८ अगस्त १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

जिला रोहतक, सोनीपत में भयंकर बाढ़ से तबाही

हरयाणा बाढ़ पीड़ित सहायता समिति का गठन

२० अगस्त, रोहतकः आज रोहतक जिले की झज्जर, बहादुरगढ तथा रोहतक तहसीलों में बाढ के कारण जो बड़े पैमाने पर बरबादी हुई है, उसको घूमकर देखा। मकानों, पशुओं, फसलों इत्यादि की जो हानि हुई है और आगे चलकर और अधिक हानि होने की आकांक्षा है उसका यदि अनुमान लगाया जाए तो क्षति कई करोड़ों रुपयों की होगी। रोहतक शहर और सारा देहात इस समय भयकर बाढ का शिकार है और जहा भी जिन लोगों से बात होती है वे सब यही कहते हैं। हरयाणा के निर्माण के बाद जितने भी शासक आये है और उनमें भी जो भी लाल आए हैं। बन्सीलाल, देवीलाल, भजनलाल आदि उन सबने रोहतक, सोनीपत आदि क्षेत्रों की अवहेलना की बल्कि जानबूझकर सभी लाभकारी योजनाओं से दूर रखा। उनकी भावना वास्तव में इस क्षेत्र को सजा देने की रही। पिछले १६ वर्षों में उन्हीं कारणों से बार बार बरबादी होना इस बात का प्रमाण है कि यहां शासन की बागडोर जिसके हाथ मे आई उसने इस क्षेत्र को वायदे तो चाहे ढेर किए हों अमल उल्टा ही रहा है। रोहतक नगर में जो योजनायें आई वे केन्द्र सरकार की अधिक रही। राज्य सरकार की पूर्ण रूप से उपेक्षा ही बनी रही।

हरयाणा के निर्माण के बाद विकास के कार्य काफी हुए और वह स्वाभाविक भी था क्योंकि अपने साधनों पर हरयाणा का नियन्त्रण हो गया। परन्तु कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति इस प्रदेश में घूमे तो उसे यह कहना ही पड़ेगा कि क्या रोहतक और आस पास का क्षेत्र इस प्रदेश (हरयाणा) का अंग नही है ?

इतनी बरबादी के बाद भी हरयाणा सरकार अभी तक गति में नही आई और न कोई सहायता का कार्य आरम्भ हुआ है। केवल रोहतक शहर में एक शिविर की बात सुनी। बाकी हजारों वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में अभी तक सरकार की ओर से कुछ नही पहुंचा। हरयाणा सरकार का हरकत में न आना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। शहर और देहात के लोगों में हरयाणा सरकार के प्रति बडा गहरा रोष है। यदि सिचाई मन्त्रालय और दूसरी सहायता देने वाले मन्त्रालय तुरन्त अपने साधनों को लेकर पानी की निकासी तथा दूसरी सहायता पहुंचायें तो स्थिति में शीघ्र सुधार हो सकता है। इतने बडे पैमाने पर जो क्षति होती है उसमें केवल सरकार सब कुछ नहीं कर सकती और ऐसी सरकार जिसको इस क्षेत्र से लगाव नहीं, उससे तो बहुत कम आशा है, इसलिए स्वैच्छिक संस्थाओं को जन-साधारण की सेवा के लिए अपनी शक्ति लगानी होगी। मेरी यह सभी स्वय-सेवी धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं से प्रार्थना है कि वे संगठित होकर इस काम में लगें। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा पहले भी बाढ़-पीड़ितों की सेवा अपनी क्षमतानुसार करती रही है और इस समय भी वह पीछे नहीं रहेगी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने हरयाणा बाढ़-पीडित सहायता समिति का गठन कर दिया है और वह शीघ्र ही दूसरी संस्थाओं के साथ तालमेल करके सेवा के कार्य में हाथ बटायेंगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा

हरयाणा बाढ़-पीड़ित सहायता समिति का गठन

१- संरक्षक—स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल झज्जर, जिला रोहतक।

२- प्रधान—प्रो० शेरसिह, प्रधान, हरयाणा रक्षा वाहिनी व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द म०, गोहाना रोड, रोहतक।

३- उप-प्रधान—ला० बनारसीदास जी गुप्त, भूतपूर्व मुख्य मन्त्री, हरयाणा, भिवानी।

४- „ चौ० माडूसिह जी मलिक, कुलपति कन्या गुरुकुल खानपुर, जिला सोनीपत।

५- „ श्री कन्हैयालाल जी मेहत्ता, फरीदाबाद।

६- „ श्री अत्तरचन्द जी गुगनानी, रोहतक।

७- संयोजक:—महाशय भरतसिह वानप्रस्थी, दयानन्द मठ, रोहतक

सदस्य:—८- चौ० किशनचन्द जी आर्य, रोहतक; ९- वैद्य रामलाल जी, यमुनानगर, अम्बाला, १०- श्री के० एल० वधवा, कुरुक्षेत्र; ११- मा० बद्री प्रसाद जी, जींन्द; १२- श्री नित्यानन्द जी, पूर्व प्राचार्य, आ० उ० माध्यमिक विद्यालय, सिरसा; १३- ला० पंजूराम जी, प्रधान, आ० स० सोनीपत शहर; १४- मा० छाजूराम जी, प्रधान, आ० स० काठ मण्डी, सोनीपत; १५- ला० रोशनलाल जी आढती, बहादुरगढ, जिला रोहतक; १६- श्री धर्मपाल जी आर्य, नरवाना, १७- चौ० विशनसिह जी एडवोकेट, कैथल, जिला कुरुक्षेत्र; १८- श्री बलदेव कृष्ण जी, मुलतान ट्रेडर्स, जी० टी० रोड, करनाल; १९- २०- चौ० राजेन्द्रसिह जी एडवोकेट, एम. एल ए., बल्लबगढ, जिला फरीदाबाद २१- ला० साधुराम जी, लाडवा, जिला कुरुक्षेत्र; २२- श्री दीवान भीमसेन जी, गुड़गाव, २३- श्री मा० श्री राम जी, रेवाड़ी, जिला महेन्द्रगढ।

—प्रो० शेरसिह प्रधान

शेष सदस्यों की घोषणा बाद में की जावेगी।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

गायत्री मन्त्र प्रश्नातीत है।

—डा० विश्व बन्धु "व्यथित"
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी०ए०वी० कालेज अबोहर।

(गतांक से आगे)

इस प्रकार निवृद् छन्द के प्रश्न को लेखक ने जान बूझ कर अपने अज्ञान पर अधूरे ज्ञान को चादर तानने का प्रयास किया है। यहां भी उन्होंने मिथ्या आरोप लगाकर मेरा ज्ञान परखने का प्रयास किया है। जैसे—

"हमने गायत्री मन्त्र छन्द के विषय में लिखा था कि यह अधूरा (निवृद्) है, क्योंकि इसमें २४ के स्थान पर २३ अक्षर हैं। इस पर उन्हें आपत्ति है। लगता है कि उन्होंने न कोई छन्दशास्त्रीय प्राचीन ग्रन्थ देखा है न नवीन, अन्यथा आपत्ति न उठाते।"

पहला झूठ तो यह है कि शर्मा जी ने यह लिखा है कि हमें इस मन्त्र में इस २३ वर्ण होने पर आपत्ति है। दूसरा यह है कि हम इसे निवृद् गायत्री छन्द नहीं मानते और फिर अपनी विद्या का दंभ बघारने के लिये निवृद् के लक्षणों पर सब नए पुराने शास्त्रों के हवाले देने बैठ गए। जबकी बहस का असली मुद्दा यह है ही नहीं। असली मुद्दे तो वे मां का दूध समझ कर पी गए। जैसे उन्होंने इस छन्द को लंगड़ा बताने वाले ऐसे वेद मन्त्रों के हवाले दिये थे, जिनका कि अस्तित्व ही नहीं है। हमारी ललकार पर वे एक भी वाक्य इसे लंगड़ा बताने वाला दिखा सकें।? हमने पूछा था कि क्या चारों वेदों में केवल इसी मन्त्र में २३ वर्ण हैं? यह निवृद् गायत्री वेद में कितने मन्त्रों का है? वेदों में गायत्री के कुल कितने प्रकार है? क्या ऐसे प्रकार अन्य छन्दों के भी हैं? इत्यादि

वास्तव में इन प्रश्नों का उत्तर जानने पर ही शर्मा जी की चालाकी पकड़ी जा सकती है कि वेद के विशिष्ट गुण को भी किस प्रकार दोष के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। संक्षेप में वेदमन्त्रों में छन्दों और उनके प्रकारों की स्थिति को यूं जाना जा सकता है।

वेद में छन्दों की संख्या सीमित करने के लिए उन्हें वर्गों और उपवर्गों में बांटा गया है। अतः गायत्री बृहति, पंक्ति, जगती, अष्टि, शक्वरी, उष्णिक्, अनुष्टुप्, और त्रिष्टुप्, आदि सभी वर्गों के अनेक उपवर्ग हैं, जैसे—निवृद्, भुरिग्, विराट्, आर्षी, आसुरी व स्वरूपाद्या आदि। प्रायः ये उपवर्ग सभी छन्द-वर्गों के हैं, और किसी विशिष्ट पाद में वर्णों को कम या अधिक संख्या ही इनके प्रकारों के भेद-निर्माण का हेतु मानी जाती है। गायत्री के ही प्रमुख भेद इस प्रकार हैं—गायत्री निवृद्गायत्री, आर्षीगायत्री, आसुरीगायत्री, विराड्गायत्री, विराडार्षीगायत्री, निवृदार्षी गायत्री, स्वराडार्षीगायत्री, प्राजापत्यागायत्री, भुरिग्गायत्री, भुरिग्विपाद्गायत्री, वर्धमानागायत्री और पपिपीलिकामध्यागायत्री आदि।

हमें या किसी को भी इसमें क्या आपत्ति हो सकती है कि इस मन्त्र में २३ वर्ण होने से यह "निवृद्गायत्री छन्द" है। इसमें होने ही २३ वर्ण चाहिएं, क्योंकि गायत्री के इस प्रकार में २३ वर्ण होना ही उसकी शुद्धता और पूर्णता का सूचक है। स्वयं शर्मा जी ने पिंगलछन्द सूत्र, हलायुद्ध, और युधिष्ठिर मीमांसक से प्रमाण देकर यह सिद्ध किया है कि निवृद्गायत्री, का लक्षण ही २३ वर्ण (७+८+८+) होना है। अतः यह निर्विवाद है कि यह मन्त्र २३ वर्ण वाला निवृद् गायत्री छन्द है।

विवाद तो यहां से प्रारम्भ होता है जब सुरेन्द्र शर्मा जी साधारण पाठकों के सामने सारी स्थिति छुपाकर इसी एक मन्त्र को लंगड़ा कहते हैं। उन्होंने बड़ी चालाकी से सविता वाले लेख में लिखा था "गायत्री एक छन्द का नाम है, इस छन्द में अकेले ऋग्वेद में २४५० मन्त्र रचे गए हैं।" अन्यत्र इसी में लिखा—"अकेले ऋग्वेद में ही २४४९ मन्त्र गायत्रीछन्द में रचे गए हैं, वे श्रेष्ठ क्यों नहीं हैं ?

अब यह भ्रान्ति पूरी चालाकी से फैलाई जा रही है कि पूरे वेद में यही एक मन्त्र २३ वर्ण वाला है क्योंकि एक जगह २४५० संख्या लिखना और दूसरी जगह एक कम करके २४४९ करके पूछना, वे श्रेष्ठ क्यों नहीं, पाठकों को यही आभास तो देगा कि चर्चित मन्त्र ही सबसे अलग एक वर्ण कम वाला है। यदि शर्मा जी में कोई भी नैतिकता है, तब वे या तो इस घोर अपराध का प्रायश्चित करके जनसामान्य में भ्रान्ति फैलाने हेतु क्षमा प्रार्थना करें, या इसी विषय में हमसे खुला शास्त्रार्थ करें कि क्या ऋग्वेद में उनके कथनानुसार गायत्री के उपर्युक्त प्रकारों में से केवल गायत्री प्रकार के २४४९ मन्त्र हैं। वैदिक संहिताओं में केवल "निवृद् गायत्री के जो शताधिक मन्त्र हैं, उन्हें वे किस खाते में डालेंगे। शेष प्रकारों का हिसाब कहां जाएगा।

हमने पहले भी स्पष्ट किया था कि गुलाब के बगीचे में भिन्न-२ रंगों के गुलाब होना समृद्धि का सूचक है, दोषपूर्णता का नहीं। कोई मूर्ख जब पहली बार पीले गुलाब को देखेगा तो क्या उसे पीलिया से पीड़ित कहेगा और काले गुलाब को कालियतापूर्ण बताएगा।?

एक दूकान में केवल एक प्रकार की रेशमी साड़िया हों, और दूसरी में कांजीवरम् सिल्क, बंगलौरी सिल्क, बनारसी सिल्क एवं काशमीरी सिल्क आदि, की तो कौन मूर्ख दूसरी दूकान वाले पर लगड़ी साड़ियों का व्यापार करने का इलजाम लगाएगा ? एक इंच छोटी टांग वाली तिपाई को लंगड़ा कहोगे, या तीन टांगें होने से पूरी तिपाई भी लगड़ी मेज बनेगी ?

अतः मेरे भोले भाई. प्रकार भिन्नता को दोष गिना-गिनाकर वेद को बदनाम न करो, इससे तुम्हें कोई विशेष यश नहीं मिल सकता। वैसे भी छन्दों और व्याकरणिक रूपों की स्थिति वेद मन्त्रों के बाद की है, पहले की नहीं। अर्थात् वेद मन्त्रों की स्थिति के अनुसार छन्दः शास्त्रों का निर्माण हुआ है, न कि छन्दों की नियमों का अनुवर्तन करके वेद मन्त्र लिखे गए है। शरीर के अनुसार पाजामा सिया जाता है, न कि पाजामे के अनुसार टांगों को काटा या खींचा जाता है। अतः स्वयं सिद्ध है कि चर्चित मन्त्र में व्याकरण या छन्द सम्बन्धी कोई दोष नहीं, दोष केवल सावन के अंधों का है, जिन्हें सर्वत्र हरा ही हरा नजर आता है।

जहां तक गायत्री मन्त्र के अर्थ की महानता, विशिष्टता और उपादेयता का प्रश्न है, इस विषय पर पहले ही प्रचुर प्रकाश डाला जा चुका है। इस लेख में भी "तत्" और "वरेण्यम्" की व्याख्या के प्रसंग में अर्थ की महत्ता निर्विवाद हो चुकी है और तो और मान्य सुरेन्द्र शर्मा जी ने भी दबी जुबान से इसकी महत्ता के सामने सिर झुका दिया, लेकिन आदत से मजबूर वे अपनी जात दिखाने से बाज न आए। जैसे उन्होंने लिखा—

"उत्तर—लेखक महोदय ने लिखा है कि इस मन्त्र का अर्थ बहुत महान् है, इस पर हमारा कहना है कि अर्थ महान् होते हुए भी सार्थक नहीं।" इसे कहते हैं—"मैं ना मानूं।"

आगे शर्मा जी ने लिखा है—"धारण में किसे डालें ? कहा है—वरेण्य गुणों को। परमात्मा के वरेण्य गुण परमात्मा को मानने वालों के सांस्कृतिक स्तर के अनुरूप होते हैं। किन्हीं के मुताबिक परमात्मा का वरेण्य गुण मांसाहार है।... कुछ काफिरों को मारना परमात्मा का वरेण्य गुण समझते हैं।" आदि आदि

वैसे तो शर्मा जी और उनके अभिभावक परमात्मा की सत्ता को ही नहीं स्वीकार करते, इसी [illegible] सविता में छपे लेख में सुरेन्द्र जी ने ईश्वर को काल्पनिक सविता और वज्रमूर्ख आदि विशेषणों से विभूषित किया था। लेकिन अब वैसे ऐसे खुदा को, वरेण्य गुण शर्मा जी की दृष्टि में मांसाहार और काफिर वध शुरू है, लोगों को पता तो चला कि "सविता" के प्रतिष्ठित लेखक ईश्वर के किन विशिष्ट गुणों की परिकल्पना में लीन हैं। (शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादकीय

हरयाणा के आर्य समाजों से

वर्तमान परिस्थितयों में हरयाणा के आर्य समाजों पर एक विशेष दायित्व आ पड़ा है जिसे पूरा करना हमारा कर्त्तव्य है। हमने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह की तैयारी को प्राथमिकता देने के लिए ४ सितम्बर को होने वाले सभा के चुनाव को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया और प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान तथा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने धन संग्रह तथा नरनारी भारी संख्या में अजमेर पहुँचने के लिए जन सम्पर्क आरम्भ कर दिया था। हरयाणा में कोने-कोने में उत्साह की लहर फैल गई। परन्तु अचानक अगस्त के दूसरे सप्ताह में भारी वर्षा से जिला रोहतक, सोनीपत, जींद में भयकर बाढ़ आ जाने से बाढ पीड़ितों की सहायता करने की एक ओर समस्या खड़ी हो गई। सभा अधिकारियो ने बाढ से प्रभावित जि० रोहतक तथा सोनीपत के क्षेत्रों का भ्रमण किया। सरकार की ओर से बाढ पीडित जनता के लिए जिस तेजी से राहत कार्य होना चाहिए था, वह नहीं हो सका। अत: आर्य समाज की विगत परम्पराओं के अनुसार हरयाणा बाढपीडित सहायता समिति का गठन करके आर्य समाजो को सहायता कोष में धन भेजने की अपील की गई जो कि इसी पृष्ठ पर प्रकाशित की जा रही है।

इस प्रकार हरयाणा की आर्य जनता पर महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह की तैयारी के साथ-२ अपने बाढपीडित भाई-बहिनों की सहायता करने का भी भार आ गया है। दोनों कार्य महत्त्वपूर्ण हैं। अत: आर्य समाजो के सभी कार्यकर्त्ताओं से हमारा निवेदन है कि अपने नगर तथा ग्राम से दोनों कार्यों के लिए भरपूर यत्न पूरी शक्ति के साथ आरम्भ कर देवें।

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नतिकरना आर्य समाज के इस नियम के अनुसार हमें अपने कर्त्तव्य के पालन की ओर तुरन्त जुट जाना चाहिए और जिससे जो भी योगदान उपरोक्त कार्यों में दिया जा सके, करके ऋषि दयानन्द के आदेश का पालन करना चाहिए।

अजमेर शताब्दी समारोह भी निकट आ गया है। समय थोड़ा है और कार्य अधिक है। आशा है हरयाणा के आर्य समाजें अपने इस महत्त्वपूर्ण दायित्व की ओर ध्यान देकर तन मन और धन से सहयोग करते हुए अपनी शानदार परम्परा को बनाये रखेंगे। परोपकारिणी सभा ने हरयाणा की जनता से २ लाख रुपया संग्रह करके भेजने का आदेश दिया है। बाढपीडितों की सहायता भी आर्य समाजों के सहयोग से ही सफल हो सकती है।

भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

(भाद्रपद बदी अष्टमी)

धन है दिन आज का, शुभ कृष्ण भादव अष्टमी।
आज हो मां देवकी तो, कृष्ण बालक की जनी ॥ १ ॥
रोहिणी नक्षत्र रजनो मध्य; अति अभिराम में।
आज ही ब्रजचन्द्र प्रकटे, श्री यशोदा-धाम में ॥ २ ॥
नाश करने को उन्हें, जो दुःखद आठों याम थे।
आज ही भारत मही में, आ पधारे श्याम थे ॥ ३ ॥
उमड़ आये घन चहुँ दिशि, श्यामता भी छा गई।
मानो प्रकृति देवी स्वयं, स्वागत मनाने आ गई ॥ ४ ॥
(श्री अमरनाथ पाण्डे कृत)

बाढपीडितों की सहायता तन, मन, धन से कीजिए—

आर्य नेताओं की दानियों से अपील

आपको आकाशवाणी तथा समाचार पत्रों से ज्ञात हो गया होगा कि अगस्त के दूसरे सप्ताह में जिला रोहतक तथा सोनीपत के क्षेत्रों में पूरे सप्ताह भर मुसलाधार वर्षा होने से सैंकड़ो मकान गिर गये। हजारों मकानों में पानी घुस गया। फसलें भी कई करोड़ रुपये की नष्ट हो गई। नगरों से ग्रामों में आने जाने के मार्ग डूब हो गये। गली तथा मकानों में कई-कई फुट पानी खड़ा रहने से महामारी फैलने की सम्भावना है। पशुओं के लिए चारा मिलना भी कठिन हो गया है।

हरयाणा सरकार अपने रूप में सहायता करती है, परन्तु आज अफसरशाही तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला है। सहायता के पात्रों तथा कमजोर वर्गों तक समय पर उचित सहायता पहुँचने की सम्भावना कम है। इन सभी परिस्थितयों को दृष्टि में रखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने स्वामी ओमानन्द सरस्वती के साथ बाढ पीडित क्षेत्रों का भ्रमण किया है तथा आर्य समाज की ओर से सहायता करने के लिए हरयाणा बाढ पीडित सहायता समिति का गठन करके कार्य आरम्भ कर दिया है। मलेरिया के उन्मूलन हेतु आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण तथा निर्धन एवं बे सहारा लोगों के लिए वस्त्रादि का दान रूप में संग्रह करने की योजना बनाई है। आर्य समाज मन्दिरों आर्य स्कूलों के भवनों में बाढपीडितों के लिए अस्थाई आवास की व्यवस्था की गई है।

परन्तु इस कार्य में दानियों के सहयोग से ही सफलता मिल सकेगी। अत: प्रदेश के सभी आर्य समाजों तथा धन धान्य से सम्पन्न परिवारों से हमारी अपील है कि वे अपने बाढपीडित भाई बहिनों की संकट के समय में उदारता पूर्वक सहायता करें। प्रत्येक आर्य समाज इस निधि में अपने कोष से अथवा अपने क्षेत्र से धन संग्रह करके हरयाणा बाढ पीडित सहायता समिति दयानन्द मठ रोहतक के पते पर भेजकर अपनी सेवा भाव की परम्परा को जारी रखें। जो भाई-बहिन अपने नये अथवा पुराने वस्त्रादि भेज सकें वे भी भेज देवें, ताकि उनका वितरण किया जा सके।

आशा है आर्य समाजें तथा दानी महानुभाव हमारी इस अपील पर सहानुभूति पूर्वक अधिक से अधिक आर्थिक अथवा वस्त्रादि की सहायता तुरन्त भेजकर यश: और पुण्य के भागी बनेंगे। आशा और विश्वास के साथ आपके अमूल्य सहयोग के इच्छुक

ओमानन्द सरस्वती,	प्रो० शेरसिंह	भरतसिंह वानप्रस्थ
संरक्षक	अध्यक्ष	संयोजक

हरयाणा बाढपीडित सहायता समिति दयानन्द मठ, रोहतक

अध्यापिकाओं की आवश्यकता है

प्रभाकर "हिन्दी आनर्स" व शास्त्री कक्षाओं को पढ़ाने के लिये अध्यापिकाओं की तुरन्त आवश्यकता है।

योग्यता : प्रभाकर कक्षा को पढ़ाने के लिये, प्रभाकर+शास्त्री अथवा एम० ए० हिन्दी।
शास्त्री कक्षा को पढ़ाने के लिये शास्त्री+एम०ए० संस्कृत अथवा आचार्य।

वेतनमान : हरयाणा राजकीय नियमानुसार।

साक्षात्कार। ७ सितम्बर १९८३ को विद्यालय के कार्यालय में १२ बजे होगा। योग्यता के प्रमाण पत्र साथ लायें।

आचार्य
ऋषि पाल आर्य
आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी-दादरी
जिला भिवानी

अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी समारोह का निमन्त्रण

आगामी दीपमाला के शुभ पर्व पर महर्षि का स्वर्गवास हुये १०० वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। यह एक महान् अवसर है जब आर्य जनों, ऋषि के अनुयायी लोगों को सिंहावलोकन के साथ आगामी कार्य की योजना भी बनानी है।

इसके लिये महर्षि दयानन्द की निर्वाण स्थली अजमेर में एक अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन, आर्य जगत् की मान्य संस्थायें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, परोपकारिणी सभा एवं राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त रूप से कर रही हैं।

यह महान् आयोजन ३-४-५-६ नवम्बर को सम्पन्न हो रहा है। इस अवसर पर एक मास पूर्व से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का प्रारम्भ होगा। समारोह में विशाल शोभा यात्रा ५ नवम्बर को एवं वेद-सम्मेलन, आर्य-सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा-सम्मेलन, महिला-सम्मेलन, आर्ययुवक-सम्मेलन, दर्शन-सम्मेलन व हरिजन स्नेह-सम्मेलन, आदि महत्त्वपूर्ण सम्मेलन होंगे। आने वाले देश-विदेश के अतिथियों के स्वागत सत्कार की व्यवस्था प्रारम्भ की जा चुकी है। आप आज ही सपरिवार इष्ट जनों सहित आने का संकल्प लीजिए, अन्यों को अजमेर पहुँचने की प्रेरणा कीजिए, आप सादर आमन्त्रित हैं। स्वयं पधारिये तथा दूसरों को भी लाइये।

इस भव्य आयोजन की सफलता आपके तन मन धन से पूर्ण सहयोग पर निर्भर है।

अपना सहयोग दीजिए—सम्मेलन को सफल बनाइये अपने आने की सूचना शीघ्र भेजिए।

गतिविधियाँ

अतीत

परोपकारिणी सभा, ऋषि-उद्यान, दयानन्द आश्रम, श्रीमद्दयानन्द पुस्तकालय, वैदिक पुस्तकालय, परोपकारी मासिक, सप्ताहिक वैदिक यन्त्रालय, शिक्षण संस्थाओं का संचालन, दयानन्द बाजार, महर्षि दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी १९३३, ऋषि मेला, सामयिक आयोजन एवं प्रचार कार्य।

आयोजना

अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण शताब्दी महोत्सव, चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, विशाल शोभायात्रा, निर्वाणशती-स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन, बृहत् प्रदर्शनी—महर्षि की वस्तुएँ एवं हस्तलेखों का प्रदर्शन तथा आर्य पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी, प्रमुख ऋषि ग्रन्थों का शताब्दी संस्करण।

भावी आयाम

वैदिक शोध संस्थान, संदर्भ पुस्तकालय व लाईब्रेरी हाल का निर्माण, महर्षि के अप्राप्य ग्रंथों का मुद्रण, अंतर्राष्ट्रीय आर्य उपदेशक महाविद्यालय, वैदिक यंत्रालय का विस्तार एवं आधुनिकीकरण, भव्य यज्ञशाला, विभिन्न भाषाओं में महर्षि के ग्रंथों एवं वेद भाष्य का अनुवाद और प्रकाशन, आधुनिक साधनों के माध्यम से वैदिक धर्म का योजनापूर्वकव समयबद्ध प्रचार।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का एकमात्र लक्ष्य था—विश्व का कल्याण करना। उन्होंने इसका सामाजिक उत्तरदायित्व 'आर्य-समाज'—जिसका इस संसार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य है—के माध्यम से दिया। अपना व्यक्तिगत उत्तराधिकार और प्रबन्ध उन्होंने परोपकारिणी सभा को प्रदान किया। परोपकारिणी सभा का गठन १६ अगस्त १८८० को मेरठ में महर्षि के द्वारा एक स्वीकार पत्र के माध्यम से हुआ। इसका पुनर्गठन महर्षि ने स्वयं १४ फरवरी १८८३ को उदयपुर में किया। महर्षि ने अपने स्वीकारपत्र में परोपकार के कार्य आदि के अतिरिक्त सभा के कार्य, उद्देश्य, संघटना आदि में नियम और प्रावधान स्पष्ट कर दिये थे। कालान्तर में सभा का कार्यालय विभिन्न स्थानों पर रहा और अन्तत। सन् १८९३ से सभा का मुख्यालय पावन नगरी अजमेर में जहां महर्षि को निर्वाण प्राप्त हुआ, स्थापित हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कार्य की अधिकता और लक्ष्य की व्यापकता को दृष्टिगत रखकर वेदों और आर्ष ग्रंथों के प्रचार-प्रसार के लिये वैदिक यंत्रालय की स्थापना १२ फरवरी सन् १८८० को कासी (बनारस) में की। बाद में उसे प्रयाग (इलाहाबाद) स्थानान्तरित किया गया। १ अप्रैल १८९१ को इसे पुनः अजमेर में स्थानान्तरित किया गया। स्वतन्त्रतापूर्व वैदिक यन्त्रालय की गणना राष्ट्र के प्रमुख प्रेसों में होती थी।

महर्षि का निर्वाण भिनाय कोठी में दीपावली १८८३ को हुआ। उनकी अन्त्येष्टि पहाड़गंज स्थित श्मशानघाट में पूर्ण वेदोक्त रीति से हुई। महर्षि की अस्थियां एवं भस्मी-अवशेष उनकी इच्छानुसार आना-सागर के रमणीय तट पर स्थित शाहपुरा के महाराजा के सुरम्य उद्यान में विसर्जित की गयीं। बाद में यह उद्यान शाहपुराधीश ने परोपकारिणी सभा को दान में दे दिया और उसे तब से ही ऋषि-उद्यान के नाम से जाना जाने लगा। सन् १९३३ में महर्षि निर्वाण अर्ध शताब्दी यहीं पर मनाई गयी। इस अवसर पर उद्यान में यज्ञशाला का निर्माण किया गया। निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में उपरोक्त यज्ञशाला का विस्तार कर उसे और अधिक भव्य बनाया जा रहा है।

ऋषि उद्यान में सरस्वती भवन भी स्थित है जिसमें एक विशाल प्रवचन कक्ष है। इसी भवन में महर्षि के जीवन की प्रमुख घटनाओं का चित्रांकन भी किया गया है। इसी भवन के एक कक्ष में महर्षि दयानन्द सरस्वती के निजी उपयोग की वस्तुएं महर्षि के वास्तविक चित्र और महर्षि के हस्तलेख तथा महर्षि से संबन्धित ऐतिहासिक सामग्री का का संग्रहालय है जो श्रद्धालु दर्शनार्थियों के लिये प्रतिदिन खुलता है।

यहां पर अतिथियों के ठहरने के लिये कई अतिथि कक्ष बने हुए हैं।

सन् १९३३ में महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण की अर्ध शताब्दीमहात्मा नारायण स्वामी तथा सुप्रसिद्ध आर्य नेता हरविलास शारदा के नेतृत्व में परोपकारिणी सभा एवं सार्वदेशिक सभा के संयुक्त तत्त्वाधान में अजमेर में ऋषि उद्यान में मनाई गयी। अर्ध शताब्दी समारोह—१९३३ आर्य समाज के इतिहास में अपनी विशालता, भव्यता और दिशा-बोधता के लिये गौरवमय अध्याय है। इस समारोह में आयोजित विभिन्न सम्मेलनों में लिये गये निर्णयों, प्रस्तावों तथा योजनाओं ने समूचे आर्यसमाज आन्दोलन को नई चेतना, दिशा और गति प्रदान की जिसका तत्कालीन राष्ट्रीय और सामाजिक प्रभाव भी परिलक्षित हुआ।

महर्षि द्वारा स्वीकारपत्र में परोपकारिणी सभा के घोषित उद्देश्य के अनुसार वेद-वेदांग एवं उनके व्याख्या ग्रंथ तथा ऋषि दयानन्द के साहित्य का प्रकाशन व प्रसार वैदिक पुस्तकालय, वैदिक यन्त्रालय के सहयोग में निरन्तर करता रहा है।

सभा की गतिविधियां, विचार, चिन्तन एवं अनुसंधानपूरक लेखों आदि के प्रकाशन हेतु परोपकारिणी सभा नियमित रूप से परोपकारी नामक मासिक पत्र का प्रकाशन करती रही है जो वर्त्तमान में साप्ताहिक है। अपने रचनात्मक दृष्टिकोण, सिद्धान्तपरक शोध-लेखों तथा प्रामाणिक पठनीय सामग्री के लिये 'परोपकारी' आर्य जगत् का लब्ध-प्रतिष्ठ प्रतिनिधि साप्ताहिक है।

(शेष पृष्ट ५ पर)

(पृष्ट ४ का शेष)

परोपकारिणी सभा का मुख्यालय दयानन्द आश्रम अजमेर में स्थित है। यहीं से परोपकारिणी सभा अपने अन्तर्गत अन्य संस्थाओं को विभिन्न गतिविधियों का संचालन और नियन्त्रण करती है। दयानन्द आश्रम में ही श्रीमद्दयानन्द पुस्तक-संग्रहालय, वैदिक पुस्तकालय, वैदिक यन्त्रालय, साहित्य विक्रय केन्द्र स्थित हैं। इसके अतिरिक्त एक भव्य प्रवचनकक्ष है। श्रीमद्दयानन्द पुस्तक संग्रहालय के साथ एक अध्ययन-कक्ष है जहां पर विद्वान् और शोधकर्त्ता संदर्भग्रन्थों तथा महर्षि दयानन्द हस्तलेखों एवं पाण्डुलिपियों के आधार पर प्रकाशित वैदिक सहित्य और ऋषि दयानन्द के ग्रंथों का प्रकाशन पूर्व सम्पादन एवं प्रमाणीकरण करते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण सन् १८८३ में दीपावली के पर्व पर हुआ था। अत: प्रतिवर्ष दीपावली पर ऋषि उद्यान में ऋषि मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें देश-विदेश के हजारों व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान्, संन्यासी, भजनोपदेशक, प्रचारक और कार्यकर्त्ता एकत्रित होते हैं। ऋषि मेला, आर्यसमाज के प्रभावी प्रचार-प्रसार का तथा सामान्य जनों में धार्मिक प्रभाव के विस्तार का उपयोगी माध्यम रहा है। साथ ही आर्य जगत् के नियमित अवधि में आयोजित होने वाले स्थाई समारोह ऋषि मेले का विशिष्ट स्थान है।

ऋषि उद्यान स्थित यज्ञशाला की विस्तार योजना और भव्यता प्रदान करने का कार्य आरम्भ हो चुका है।

इसी नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला में ६ अक्टूबर १९८३ से चतुर्वेद पारायण ब्रह्म महायज्ञ विद्वान् वेदपाठियों द्वारा सम्पन्न होगा जिसकी पूर्णाहुति रविवार ६ नव० १९८३ को अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि निर्वाण-शताब्दी महोत्सव के समापन के साथ होगी।

महर्षि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर नवीन मौलिक साहित्य को और पुरातन दुर्लभ आर्षग्रंथों व महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थों के प्रामाणिक नवीन संस्करण प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त मूर्धन्य विद्वान् आर्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती की देख-रेख और सम्पादन में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन आरम्भ हो गया है जो अपने आप में संग्रहणीय और अद्वितीय होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि निर्वाण-शताब्दी महोत्सव में अनेक भव्य समारोह तथा महत्त्व पूर्ण सम्मेलन होंगे जिनमें आगामी शती में ऋषि दयानन्द के विचारों, वैदिकधर्म के अधिकाधिक प्रचार-प्रसा तथा आर्य-समाज आन्दोलन को नई दिशा व गति देने हेतु विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जायेगी। विगत शताब्दी के कार्यों का विश्लेषण कर पिछले अनुभवों के आधार पर संभावित कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास होगा।

निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में ९ नवम्बर १९८३ को एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन होगा जिसमें लाखों नरनारी महर्षि और वेद के सन्देश को अपने जीवन में तथा दुनिया के कोने-कोने में विस्तारित करने का संकल्प लेंगे।

इस महोत्सव में एक बृहत् प्रदर्शनी भी आयोजित की जायेगी जिसमें महर्षि से सम्बन्धित वस्तुएं, महर्षि द्वारा रचित ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां, महर्षि द्वारा उपयोग में लायी गयी वस्तुयें, वैदिक सिद्धान्तों को दर्शाने वाले चित्र, चार्ट, माडल आदि ऐतिहासिक दस्तावेज तथा चित्रों का प्रदर्शन किया जायेगा। इसी के अन्तर्गत एक अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी भी होगी जिसमें देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं तथा लेखकों द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के विषय पर लिखी गयी व अनूदित प्रकाशित पुस्तकें प्रदर्शित होंगी तथा बिक्री के लिये भी उपलब्ध होंगी।

परोपकारिणी सभा की भावी योजनाओं में ऋषि उद्यान में अत्याधुनिक अतिथि-गृह, सन्दर्भ पुस्तकालय, (जिसमें शोध, अनुसंधान व प्रयोग की सभी नवीनतम सुविधायें उपलब्ध होंगी) अन्तर्राष्ट्रीय आर्य उपदेशक महाविद्यालय आदि के निर्माण, प्रकाशन और प्रचार को तेज करने के लिए वैदिक यन्त्रालय का विस्तार व आधुनिकीकरण आदि प्रस्तावित हैं।

उपयोगी आर्ष ग्रंथों एवं ऋषि दयानन्द के साहित्य के प्रामाणिक प्रकाशन के अतिरिक्त उनके अनुवाद व प्रकाशन पर भी विशेष बल दिया जायेगा। महर्षि के द्वारा लिखित और अप्राप्य साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था के साथ-साथ महर्षि के ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों तथा महर्षि के द्वारा उपयोग में लायी गयी व सम्बन्धित वस्तुओं को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने के लिये आवश्यक कदम उठाये जायेंगे।

नकली रसीदों पर दान न देवें

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर हेतु धन संग्रह के लिये गये विश्वस्त महानुभावों द्वारा ज्ञात हुआ है कि उत्तर प्रदेश हरयाणा बिहार, भोपाल, उड़ीसा आदि सुदूर प्रान्तों में कुछ अनधिकृत व्यक्ति ऋषि निर्वाण के नाम पर अलग धन संग्रह कर रहे है। सभी आर्य समाजों सदस्यों को सूचित किया जाता है कि शताब्दी सम्मेलन हेतु परोपकारिणी सभा की रसीद बुक एवं अधिकार पत्रों एवं टिकटों को उपस्थित करने वाले व्यक्ति को ही दान देवे। अन्य किसी को नहीं दें।

मन्त्री परोपकारिणी सभा
अजमेर (राजस्थान)

प्रमुख सिख विद्वानों से पांच प्रश्न

७-८-८३ के अंक से आगे (लेखक स्वर्गीय स्वामी अमृतानन्द युमनानगर)

गुरु तेग बहादुर जी ने कहा:—

एक भगत भगवान जिह प्राणी कै नाहि मन,
जैसे सूकर स्वान नानक मानो ताहि तन ॥४४॥ [म० १]

अर्थात् जिस मनुष्य के मन में एक ईश्वर की भक्ति नहीं, जो उसको छोड दूसरों की उपासना करता है। मानों उसका शरीर तो सूअर और कुत्ते के समान है। गुरु गोविन्दसिंह जी ने कहा:—
"बिन करतार न कृतम मानो"

अर्थात्—संसार के रचने हारे करतार को छोड़ कर उसकी रचना या बने हुए पदार्थों की पूजा न करो।

भक्त कबीर जी ा शब्द ग्रन्थ साहिब में है कि:—

सो साहिब रहिया भरपूर, सदा संगि नाहीं हरि दूर।
(गउड़ी गुआरेरी असट पदी कबीर जी)

अर्थात्—परमात्मा सब जगह भरपूर या व्यापक है। वह प्राणी-मात्र के अंग संग से कभी अलग नहीं होता।

परन्तु आज ईश्वर को छोड़ गुरु सिख अनेकों की उपसाना पूजा और अरदास या प्रार्थना करते हैं। ज्ञानी शेरसिंह जी ने यह अवस्था देखकर नित नेम स्टीक मे लिखा कि अनेक साधू सन्तों के पास जाते है, उनसे आंख को मूंदने या किसी फोटो या मूर्ति पर ध्यान जमाने आदि फोके साधनों की सीख मुलम में वे आभूषणों पर रीझ जाते हैं और कई तो सन्तो का (भूठा) प्रसाद खाते देखे जाते हैं जहां वह मनुष्यो की तसवीरों का ध्यान धर आत्मिक तेज का नाश कर लेते हैं। वह उन सन्तो को यदि गुरु भी नहीं कहा जाता परन्तु साधू, सन्त, भाई साहिब आदि शब्द कह कर, अन्त मे रग उसी फोके गुरु का चढ़ जाता है, यदि यही अवस्था रही तो एक पन्थ की जगह सैकड़ों फिरके बन जायेगे और सैकड़ों सन्तो के सिख अलग-अलग अपनी अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग-अलग पकायेगे ज्ञानी जी आगे चल कर लिखते हैं कि जो भी हमें एक ईश्वर की भक्ति से हटा कर अनीश्वर पूजा में जोड़ता है वह आत्मिक डाकू है चाहे वह बडे से बड़ा ज्ञानी, योगीराज क्यों न हो।

दूसरा प्रश्न

अब हमारा सिख जगत से दूसरा प्रश्न यह है कि जब गुरु वाणी एक ईश्वर की भक्ति का उपदेश दे रही है तो तुम एक को छोड़ कर अनेको के नाम की अरदास क्यो करते हो और उन से यह प्रार्थना क्यों करते हो कि:—

"सब थाई होना जी सहाई"

सच्ची वेदोक्त उपासना क्यों नहीं करते? जब ईश्वर का नाम वाहिगुरु न किसी गुरु ने उच्चारण किया है और जब आप इस का अर्थ ही नहीं जानते तो इसको क्यों रटते हो?

तीसरा प्रश्न

१- एक मातृ भाषा, मातृ भूमि और मातृ सभ्यता

यह बात स्पष्ट है कि महा पुरुष उत्पन्न ही तब होते हैं जब देश और जाति की उन की उत्पत्ति की आवश्यकता होती है। सिख गुरुओं और ऋषि दयानन्द के समय में देश की क्या अवस्था थी।

(१) वेदों का नाम तो लोगों ने सुन रखा था परन्तु वेद क्या हैं और इन में किन-किन शिक्षाओं का वर्णन है लोग इन से सर्वदा अनभिज्ञ थे।

(२) देश प्राचीन वैदिक सभ्यता को भूल चुका था।

(३) हिन्दी (आर्य) भाषा का पढ़ना पढ़ाना फैशन के विरुद्ध था विदेशी या मलेच्छ भाषा के सामने हिन्दी गन्दी कहलाने लग गई थी।

(४) मत मतान्तरों की उलटी शिक्षा से देश और जाति अज्ञान के गढ़े में गिर चुकी थी अथर्व वेद में कहा है कि तुम साथ-साथ मिलकर चलो, तुम्हारा मार्ग या पन्थ एक ही, तुम्हारी भाषा एक ही तुम्हारा ज्ञान हो। जैसे विद्वानों ने एक मत हो कर एक धर्म और ऐश्वर्य का सेवन किया था वैसे ही तुम भी करो। अर्थात् मातृ भाषा, मातृ भूमि, मातृ सभ्यता से सब का एक सा प्यार हो।

जन्म साखी भाई बालाके पृष्ट ४ पर लिखा है कि वह पहले शास्त्री अक्षर सारे संसार में प्रचलित थे, परन्तु गुरु नानक काल में इन का समझना कठिन हो गया था। गुरु नानक जी की जन्म पत्री पढ़ने के लिए सुलतानपुर से भाई पैड़ा मोखा को मंगवाया गया था।

गुरु नानक जी बड़े दुःख से लिखते हैं:—

खत्रियां ता धर्म छोड़िया, मलेच्छ भाषा गही।
सृष्टि सभ इक वरण होई, धर्म की गति रही॥

अर्थात्—क्षत्री लोगो ने अपनी धर्म भाषा शास्त्री, पढ़ना लिखना छोड़ दिया, फारसी अरबी मलेच्छ भाषा अपनाली। देश शूद्र वरण हो गया, धर्म गति रुक गई।

गुरु गोविन्दसिंह जी ने बड़े दुःख से कहा कि—
नहीं वेद वाक्य प्रमाण है, मत भिन्न-भिन्न बखान हैं।

अर्थात्—लोग वेद को प्रमाण नहीं मानते, अज्ञान से अलग-अलग मतों को मानने लग गए हैं।

हमारा दावा है कि दशम गुरु जी ने अपनी मुखवाक्य वाणी में पंजाब और पजाबी शब्द का उच्चारण ही नहीं किया वह इस प्रान्त को मद्र देश कहते थे। वह लिखते हैं कि:—
मद्र देश हम को ले आये, भांति-भांति दाईयन दुलराये।

अर्थात्—मेरा जन्म पटना साहिब में हुआ हमें आनन्दपुर साहिब लाया गया, जहां दाईयो ने हमारा लालन पालन किया।

आप ने अपने सिखों को आज्ञा दी थी कि:—
वेद शास्त्र गुरु वाक्य को धारे, और व्याथ सभ सगली टारे।
अरबी फारसी अक्षर न पढ़े-मेरा सिख नौकरी न करे।
तुरक को माथा कभी न झुकावे, तुरक संग बैठे नहीं खावे।

अर्थात्—मेरा सिख सब से पहले वेदों को माने फिर शास्त्र और गुरु वाणी को माने। फारसी अरबी मलेच्छ भाषा न पढ़े, मुसलमानों की नौकरी न करे, इनको सलाम तक न करें और न इन के मिल कर खावे। इन बातों को रोग समझ कर त्याग दे।

परन्तु कितने दुःख की बात है कि तत खालसा ने वीर वैरागी बन्दा बहादुर का साथ छोड़ कर मुगलों की फौज में नौकरी कर ली थी और वीर बन्दा से युद्ध करने आ गये थे। आज भी अकाली लोग पंजाबी सूबे और पंजाबी भाषा का रोना रो रहे हैं जो फारसी भाषा का शब्द है। गुरुओं की भाषा को मानो त्याग ही दिया है।

हमारा तीसरा प्रश्न प्रमुख सिख विद्वानों से यह है कि गुरु गोविन्द सिंह जी ने पन्थ प्रकाश करके जब सब जातों में से, सब प्रान्तों में से पांच प्यारे लेकर पन्थ का प्रकाश किया और उन्होने और उनके पिता गुरु तेग बहादुर का जी ने अपनी पवित्र वाणी हिन्दी भाषा में उच्चारण की थी तो आप लोग क्यों गुरु मार्ग को छोड़, गलत रास्ते पर जा रहे हो। साथ गुरु ग्रन्थ साहिब में भारत भर के भक्तों की वाणी को स्थान देकर गुरु की पदवी दी है तो गुरु ग्रन्थ साहिब के विरुद्ध क्यों जा रहे हो? (क्रमशः)

वैदिक यति मण्डल निर्णय

दिनांक १ व २ अगस्त को आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में वैदिक यति मण्डल की बैठक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें ऋषि निर्वाण उत्सव को सफल बनाने के लिए कई उपयोगी सुझाव स्वीकृत किये गये। पदयात्रा टोलियों के लिए विशेष उत्साह पाया गया। पहले पाँच पदयात्रा टोलियों की घोषणा हुई थी। अब एक और टोली—गाजियाबाद से श्री स्वामी प्रेमानन्द जी के नेतृत्व में तथा एक और सातवीं टोली दिल्ली से आर्य युवक परिषद् की ओर से चलेगी जिसका नेतृत्व श्री ब्र० ब्रह्मप्रकाश जी शर्मा वागीश करेंगे। पंजाब व हिमाचल की ओर से श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज रोपड़ वाले पदयात्रा टोली का नेतृत्व करेंगे। श्री स्वामी सुमेधानन्द एवं श्री स्वामी वेदानन्द वेदवागीश गुरुकुल झज्जर वैदिक यति मण्डल की ओर से १५ सितम्बर से शताब्दी समारोह पर्यन्त शताब्दी समारोह के कार्यालय में कार्य करेंगे। वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के वानप्रस्थी श्री सन्त जी ने इस अवसर पर एक सहस्र रुपये दान में दिये एवं डेढ मास समारोह में सेवा कार्य के लिए दिया। इसके अतिरिक्त निम्न ब्रह्मचारियों ने एक-एक मास के लिए अपनी सेवायें दी—

(१) ब्र० रवीन्द्र सिंह आर्य आर्यसमाज भेल (BHEL) ज्वालापुर
(२) ब्र० ऋषिपाल आर्य „ „ „ „
(३) ब्र० भूपाल सिंह आर्य „ आर्य नगर „

उत्सव को सफल बनाने के लिये अनेक—महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। वैदिक यतिमण्डल के बहुत से सदस्यों ने धन संग्रह के लिये रसीद बुकें प्राप्त कीं तथा ७० हजार रुपये एकत्रित करने का वचन दिया। कइयों ने अपना भाग वहीं दे दिया था। श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने अभी तक जो धन संग्रह किया है उसके अतिरिक्त एक लाख रुपये और संग्रह कर देने का वचन दिया है।

अजमेर ऋषि उद्यान में जो वृहद् यज्ञशाला का निर्माण होरहा है उस पर ढाई लाख रुपये का व्यय हो चुका है। अभी डेढ़ लाख रुपये और लगेंगे जो महात्मा आर्य भिक्षु जी अध्यक्ष आर्य वानप्रस्थ सन्यास आश्रम ज्वालापुर पूरा करेंगे।

यज्ञ के लिये कइयों ने एक टन घी देने का वचन दिया किन्तु सेवाराम जी आर्यसमाज मण्डी बांस—मुरादाबाद ने दस टन घी देने का वचन दिया है। आर्य जनता से अनुरोध है कि अधिक से अधिक उत्साह से धनसंग्रह के कार्य को सफल बनायें।

पंजाब में धनसंग्रह का कार्य "वैदिकयति मण्डल" ने श्री प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी धुरी वालों को सौंपा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी निर्वाण शताब्दी समारोह समिति के प्रमुख सदस्यों में हैं। उनसे भी प्रार्थना की है कि सदा की भाँति अपनी लेखनी को गति देकर पंजाब के आर्यों को धन देनें और अजमेर के लिये तैयार करने की कृपा करें। पंजाब की आर्यसमाजें एवं आर्य श्री वानप्रस्थी प्रेमप्रकाश जी की उदारता से धन संग्रह के कार्य में सहयोग दें।

श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी ने सूचित किया कि विदेशों से सैकड़ों महानुभाव पधार रहे है। अतः उनके ठहरने एवं भोजनादि की विशेष व्यवस्था की जायेगी। एक प्रस्ताव के अनुसार विदेशों में आर्यसमाज के प्रचार में उल्लेखनीय सहयोग करने वाले सज्जनों को ताम्र पत्र भेंट किये जायेंगे इसी अवसर पर विशिष्ट वैदिक विद्वानों को भी सम्मानित किया जायेगा।

श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी ने यह भी सूचित किया कि मौरीशस के श्री मोहनलाल मोहित ने पाँच लाख रुपये देना स्वीकार किया है जिसमें INTERNATIONAL DAYANAND OF VEDIC STUDIES. स्थापित की जायेगी। इसके सूद से एक पत्रिका-प्रकाशित की जायेगी तथा वैदिक अनुसंधान एवं साहित्य प्रकाशन का कार्य किया जायेगा।

इसी अवसर पर सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ने समारोह के लिये—५००१ रुपये प्रदान किये तथा समारोह को सफल करने के लिये अपने पूर्ण समर्थन की घोषणा की। इसके लिये उनका धन्यवाद किया गया है।

सर्वानन्द अध्यक्ष वैदिक यति मण्डल
दयानन्द मठ, दीनानगर (पंजाब)

दहेज रहित सामूहिक-विवाह

महर्षि दयानन्द ने विवाह जन्म के आधार पर स्वीकार न करके गुण-कर्म स्वभाव के आधार पर करने का समर्थन किया है। वर्तमान समय में विवाह जातीय आधार पर होने लगे हैं। इसी कारण दहेज प्रथा का वर्तमान स्वरूप बना है। दहेज प्रथा के कारण प्रतिदिन युवतियों को जलाया जाना तथा अनेक से प्रताड़ना करना आदि कुकृत्य होने लगे हैं। २४-२५ सितम्बर को भिवानी में होने वाले आर्य वीर दल प्रान्तीय महासम्मेलन में दहेज रहित सामूहिक विवाह की योजना बनाई गई है। सम्मेलन के संयोजक श्री नरेन्द्र प्रभाकर ने बताया कि जाति-पाति तोडकर भी विवाह किये जा सकेंगे। इस कार्यक्रम पर होने वाला सम्पूर्ण व्यय आर्य वीर दल वहन करेगा। बारात का स्वागत, भोजन तथा कन्या के सुहाग की सामान्य वस्तुओं पर व्यय आर्य वीर दल करेगा। सम्पन्न वर्ग समाज का नेतृत्व करता है। अतः सम्पन्न वर्ग को आगे आकर तथा इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भाग लेकर समाज से इस कुरीति के विरुद्ध जिहाद छेड़ना चाहिए। इस कार्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक युवक, युवतियों, माता-पिता आर्य वीर दल भिवानी से सम्पर्क करें। आर्य वीर दल आर्य समाज की युवा शाखा है।

मन्त्री—प्रान्तीय आर्य वीर दल सम्मेलन

(पृष्ट २ का शेष)

क्या जनता को यही पवित्र संदेश देकर उन्होंने इस विषय में बहस बन्द करवाने का अथक प्रयास किया है। हमारे हिसाब से यह बहस एक और प्रकार से बन्द हो सकती है। भाई सुरेन्द्र शर्मा जी ने गायत्री के विषय में स्वामी दयानन्द और श्री युधिष्ठिर मीमांसक के प्रमाण उद्धृत करके परोक्ष रूप में उनके अर्थों और मान्यताओं को अपना अनुकरणीय आदर्श मान लिया है। हम भी यही कहते हैं कि महर्षि दयानन्द और उनके युधिष्ठिर मीमांसक सदृश शिष्यों के विचार ही अन्तिम रूपेण मान्य होने चाहिएं।

अतः इस बहस को यहीं समाप्त करके महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग के अनुसार वेद के पढने पढाने और सुनने सुनाने में अपना श्रम लगाकर हम सभी को अपना जीवन धन्य बनाना चाहिए।

अतः अन्त में अपने प्रिय पाठकों से विदा लेते हुए हमें यही कहना है कि हम सभी इस पावन गायत्री मन्त्र का सुदृढ आधार ग्रहण करके न्यायकारी, दयालु, परम विद्वान्, मनीषी, सत्यस्वरूप, त्यागी और परोपकारी ईश्वर के आदर्श गुणों का अपनी सामर्थ्य के अनुसार अनुसरण करते हुए अपना और अपने भारतीय समाज का जीवन धन्य बनाएं और वेदनिन्दा, गायत्रीदोषांकन, मांसाहार, व काफिर-वध आदि महादोष श्री सुरेन्द्र शर्मा और उनके महान् अभिभावकों अथवा उनके संरक्षक सम्पादकों के लिए रहने दें। इति शम्। इत्योम्।

(डा० विश्व बन्धु)
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी. ए. वी. कालेज अबोहर
(पंजाब)

एक बड़ी झूठ और उसका ऐतिहासिक समाधान

लेखक—सुखदेव शास्त्री, आसन, जि० रोहतक

चित्तौड़ पर जब गुजरात के बादशाह ने चढ़ाई की थी तब महारानी कर्मदेवी ने हुमायूं को चित्तौड़ की रक्षा के लिए राखी (पहुंची) भेजी थी। हुमायूं तब शेरशाह सूरी से युद्ध करने गया हुआ था। चित्तौड़ का पुरोहित आगरा पहुंचा, परन्तु हुमायूं के भाइयों ने उसका सत्कार करना तो दूर, अपितु निरादर किया—और राखी नहीं ली। तब महारानी का पुरोहित सर्वखाप पंचायत के केन्द्रिय स्थान पर गया और आगरा की घटना सुनाकर राखी भेंट करने को कहा। पंचायत के प्रधान ने पुरोहित का बहुत सम्मान किया और तुरन्तु पंचायत का महाधिवेशन मथुरा में बुला लिया। हरयाणा भूमि के १५ हजार प्रतिनिधि चारों तरफ से मथुरा पहुंचे और पण्डित बलदेव चौबे की अध्यक्षता में महा अधिवेशन आरम्भ हुआ, तब पंचायत के प्रधान ने महारानी चित्तौड़ के पुरोहित का आना और सब घटना सुनाई। समस्त पंचायत ने खड़े होकर राज पुरोहित का सम्मान किया और पंचायत की तरफ से पुरोहित को भेंट देकर बलदेव दत्त चौबे ने सिर झुका कर उस से राखी ली और पंचायत के प्रधान को राखी भेंट कर दी। प्रधान ने बड़े आदर से महारानी की राखी ली और तुरन्त निर्णय किया कि चित्तौड़ की रक्षा के लिए पंचायत के वीर योद्धा सैनिक जावें। साथ ही हुमायूं को भी एक अल्टीमेटम दिया गया कि वह अपने भाइयों को पुरोहित के साथ दुर्व्यवहार के प्रतिस्वरूप दण्ड देवे और चित्तौड़ की रक्षा के लिए शाही सेना भेजे। साथ ही लिखा कि यदि हुमायूं गुजरात पर चढ़ाई करता है तो पंचायत ५० हजार सैनिक घुड़ सवार और १२ तोपें देगी। यदि हुमायूं ने पंचायत की बात नहीं मानी तो शाही समझौता तोड़ दिया जाएगा। हुमायूं ने अपने भाइयों को दण्ड दिया और गुजरात पर चढ़ाई के लिए कहा, परन्तु गुजरात का बादशाह हुमायूं का मित्र था, इसलिए हुमायूं कुछ देर करने लगा। इसपर पचायत के सेनापति ने अपनी सेना अलग कर ली और सीधे चित्तौड की ओर बढ़ चला। हुमायूं की कुचाल के कारण कुछ देर हो गई थी। पचायती वीर सैनिक उस समय चित्तौड़ के गढ़ में पहुंचे जब कि चित्तौड़गढ में वीरांगनायें अपनी मान मर्यादा की रक्षा के लिए धधकते अग्निकुण्ड में कूद चुकी थीं। गुजरात के बादशाह का भाई—वीरानशाह शराब के नशे में चूर चित्तौड़गढ से बाहर निकल रहा था और आर्य देवियों के बारे में अनाप शनाप बक रहा था। पंचायत के सेनापति ने तुरन्त अपने योद्धाओं को कहा कि इसे यम के घाट भेज दो। दोनों सेनाओं का युद्ध हो गया। वीरानशाह घोड़े के नीचे गिर कर पंचायती सैनिक से हाथ जोड़ कर कहने लगा कि मैं तेरी काली गौ हूं मुझे छोड़ दो। सेनापति ने पुनः अपने सैनिक से कहा इस दुष्ट हत्यारे को तुरन्त तलवार के घाट उतार दो। हमारी माताओं और बहनों को अग्नि में झोककर आया है और अब काली गौ बनता है। वीर सैनिकों ने उसका सिर उड़ा दिया। यह थी पचायती शक्ति। इससे पता चलता है कि हुमायूं ने कर्मदेवी की रक्षा नहीं थी। यह ऐतिहासिक तथ्य आज भी सर्वखाप पंचायत के दस्तावेजों में देखा जा सकता है।

इस प्रकार विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमणों का मुकाबला करने के लिए पंचायत के सैनिक सदैव तैयार रहते थे। सर्वखाप पंचायत का संगठन केवल राजनीतिक ही नहीं था, अपितु राष्ट्र रक्षा के लिए सभी प्रकार के उपायों को काम में लाया जाता था। ये सब उपाय पंचायत बिना किसी मत-मजहब, सम्प्रदाय के आग्रह को छोड़कर करती थी। पंचायत में जाति-पाति, अमीर-गरीब का कोई भेद भाव नहीं था। सभी वर्गों के लोग सर्वखाप के निमन्त्रण पर इकट्ठे हो जाते थे और किसी भी संकट का मुकाबला बड़ी तैयारी के साथ संगठित होकर के करते थे। उसके लिए वे पीछे नहीं हटते थे। सिर कटवाना स्वीकार था, किन्तु सिर न झुकाते थे। पंचायत में जो निर्णय सर्वसम्मति से हो गया, उसे सब सिर झुकाकर स्वीकार करते थे। इसमें अपना सम्मान समझते थे।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी० न 23207/73 पंजी० स० P/RTK 40 फोन

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'



प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १०, अङ्क ३७ | ७ सितम्बर १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

वेदोपदेश—

ज्ञानी और शूरवीर बनो

(सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम०ए०एल०टी० १७५ जाफराबाद, गोरखपुर)

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरतः सह।
त लोकं पुण्यं प्रज्ञेयं यत्र देवा सहाग्निना॥

(यत्र) जहां (ब्रह्म च) ज्ञानी लोग और (क्षत्रं च) शूर लोग (सम्यं चौ) मिल जुल कर (सह) साथ-साथ (चरतः) व्यवहार करते हैं और (यत्र) जहां (देवाः) व्यवहार चतुर लोग (अग्निना) तेज के (सह) साथ रहते हैं (तं) उस (लोकं) देश को ही (पुण्य) पुण्यकारक और (प्रज्ञेयं) बुद्धि से प्राप्तव्य समझा जाता है।

इस मंत्र का भाव है कि राष्ट्र के ज्ञानी और शूर पुरुष एक विचार से राष्ट्र के हितकारी कार्य करते रहें और किसी भी रूप में आपस में विरोध न खड़ा करें। इसी से राष्ट्र हित होगा और जनता का कल्याण होगा। जिस देश में ज्ञानी और शूर एक विचार से रहते हैं, वह देश पुण्य देश है और वहीं सब प्रकार का सुख विराजता है।

प्रत्येक समाज या राष्ट्र में विनाशक होते है और रक्षक होते हैं। इन्हें हम ब्रह्म=ज्ञान शक्ति सपन्न और क्षत्र=क्षात्र शक्ति संपन्न व्यक्ति के रूप में जानते हैं। आज इस मंत्र का भाव पंजाब और हरयाणा में उग्रवादी अकालियों को लेकर हमें विचार करना है। पंजाब में ४८ प्रतिशत हिन्दू और ५२ प्रतिशत सिख हैं और इतना कम अन्तर होते हुए भी पंजाब को शक्ति कुछ मुठ्ठीभर अकालियों ने और उग्रपंथियों ने भंग कर रखी है और हम हिन्दू हैं जो सिख और हिंदू एकता का नारा लगा कर उन्हें अपनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। २४ जुलाई को नई दिल्ली में हुए पंजाब सुरक्षा दिवस पर आर्य समाज के नेताओं के यह वक्तव्य पढ़कर कि "यदि हिन्दुओं को पंजाब छोड़ना पड़ा" बड़ी निराशा हुई।

किन्तु हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष का यह चुनौती भरा वक्तव्य ही हमारी प्रेरणा का स्रोत होना चाहिए "पंजाब के अकालियों ने यदि हरयाणा की बिजली और पानी रोका तो हरयाणा की जनता भी जैसे को तैसे के अनुसार उनका पंजाब से निकलना बन्द कर देगी।"

अरे, हरयाणा के निवासियो मैं तुम्हें वेद का यह संदेश दूंगा—

क्षत्रस्य योनिरसि, क्षत्रस्य नाभिरसि।
मा त्वा हिंसीन्मा मा हिंसीः॥ यजुः २०-१

अर्थात् हे वीर! तू (अपनी शक्ति को भूला हुआ है) वैसे तू क्षात्रबल का भंडार है, तू क्षात्रबल का केन्द्र है देख, कोई तेरी हिंसा न करने न पाए और तू भी कभी निर्दोषों की हिंसा मत कर।

अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान्।
तपसा युजा विजहि शत्रून्।
अमित्रहा, वृत्रहा दस्युहा च,
विश्वा वसून्याभरा त्वं नः॥ ऋ० १०-८३-३

अपनी ओजस्वी वाणी में वेद कहता है "हे वीर दुष्टों, आततायियों; निर्दोषों पर आक्रमण करने वालो पर आक्रमण कर, हे गर्वीले वीर! तू अपने को भूला हुआ है याद रख, तू बलियों में बलि है। अपनी शक्ति और अपने जप तेज से शत्रुओं को विध्वंश कर। अभिन्नों का संहार कर। पापियों से जमा की हुई सब धन दौलत हमारे चरणों में लाकर रख दें।

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति।
तं धूर्व यं वयं, धूर्वामः।
देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं
जुष्टतमं देवहूतमम्॥ यजुः १-८

हे वीर, तू याद रख, तेरे अन्दर शक्ति का स्रोत छिपा है, तेरे अन्दर शक्ति है कि आततायियों को, उग्र पंथियों और विदेशों से धन प्राप्त करके देश की एकता और अखंडता को नष्ट करने वालों को मारने की तुझ में क्षमता है, तू उन्हें मार सकने वाला है, उनको मार। उसे मार जो निरपराध लोगों की हत्या करता है। तू उसे मार जो हमें मारने को तैयार हो रहा है। तू वीर है, तू बहादुर है, तू देवजनों का नायक है। तू शुद्धतम है, तू पूर्णतम है, प्रियतम है, देवों का पूज्यतम है।

कहने का भाव है "अत्याचार को सहने वाला, अन्याय को सहने वाला, अत्याचार और अन्याय करने वाले से अधिक पापी होता है।" महर्षि दयानन्द और लोकमान्य के इन विचारों का मान और आततायियो का मुकाबला कर।

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिषु अभिविश्वाअसि स्पृधः।
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि,
त्वं सूर्य तरुष्यतः॥ ८।९९।५

हे वीर, मारकाट मचने पर तू बड़े-बड़े हौसले वालो के छक्के छुड़ा सकता है। अपयश तेरे पास नहीं फटकता। तू महान् रचयिता है पर आवश्यकता पड़े तो विश्व का संहार कर सकता है। देख, विध्वंसियों, उग्रपंथियों की दाल मत गलने दे। जो तेरा वध करना चाहे उनका संहार कर।

घ्नन् मृध्राण्यप द्विषो, दहन् रक्षांसि विश्वहा।
अग्ने तिग्मेन दीदिहि॥ ऋ० ८-४३-२६

हिंसको को मारता हुआ, द्वेषियो को कुचलता हुआ, राक्षसो को दग्ध करता हुआ, हे तेजस्वी वीर! तू अपने प्रखर तेज के साथ सदा चमकता रह।

वेद के यह मंत्र पंजाब और हरयाणा के देश प्रेमियों के आदर्श बनें, प्रेरणा स्रोत बनें अकालियों और उग्रपंथियों को वह पाठ पढ़ायें कि वे वास्तविकता को समझ सकें। यह तभी होगा जब ज्ञान और वीरता ब्राह्मण और क्षत्रिय का समन्वय होगा। ज्ञान के बिना वीरता और वीरता के बिना ज्ञान का कार्य नहीं।

क्या उग्रवादी अकाली सिख हैं ?

अकालियों की कहानी : सिखों की जबानी

(देशभक्त सिखों और गुरुद्वारों के नाम खुला पत्र)

१ ओम् सत् नाम्

"शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी", गुरुभक्त-सिखों का एक मुख्य संगठन है। सिख गुरुद्वारा अधिनियम १९२५ के अन्तर्गत धारा ६ से १११ तक इस बात को लगभग आठ बार दोहराया गया है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और गुरुद्वारा का धन केवल धार्मिक, शैक्षणिक तथा दान देने के उद्देश्यों के लिए ही प्रयोग में लाया जा सकता है।

सिख गुरुद्वारा अधिनियम का वास्तविक अभिप्राय यही है कि गुरुद्वारे केवल धार्मिक स्थान होंगे। उनका प्रयोग राजनीतिक उद्देश्यों के लिए नहीं किया जायेगा। गुरुद्वारों के अधिकारी, पाठी, ग्रन्थी और सेवादार सभी अपनी गतिविधियाँ धार्मिक, शैक्षणिक और दान देने वाले कार्यों तक ही सीमित रखेंगे।

आज हमें यह बात कहते हुए हार्दिक दुःख होता है कि कुछ सिखों का लिबास ओढ़े हुये तथाकथित सिखों ने अर्थात् उग्रवादी अकालियों ने अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए गुरुद्वारों की "पवित्रता" तथा उसके उद्देश्यों को मिट्टी में मिलाने का ठेका ले लिया है। आज अमृतसर जैसा शान्ति और प्रेम वाला स्थान वास्तव में मृत्यु तथा भय का कुआं बनकर रह गया है। विदेशियों के इशारे पर नाच रहे कुछ देश के गद्दारों ने अमेरिका आदि की सहायता से इसे एक बूचड़-खाने का रूप दे दिया है।

इन राजनैतिक लोगों का इसकी पवित्रता की बात करना तो आज हम सभी बुद्धिजीवी राष्ट्रभक्त सिखों को एक कोरा मजाक ही लगता है। एक तरफ गौओं, धार्मिक लोगों तथा देश के रक्षकों और निहत्थे लोगों का खून करके इसमें कातिलों को पनाह दी जा रही है और दूसरी ओर इसकी पवित्रता का राग आलापा जा रहा है। क्या बम्ब, गोली तथा तलवार मारने वाले गुनाहगारों का घर भी कभी पवित्र कहा जा सकता है ?

इसी हरमन्दिर साहब में यदि एक ओर देश के गद्दारों द्वारा तथा-कथित खालिस्थान का दफ्तर चल रहा है तो दूसरी ओर अनेकों गुरु-भक्तों को जान लेने वाला भिण्डरावाला निवास कर रहा है। इन लोगों ने स्वर्ण मन्दिर में एक ऐसा भय तथा हिंसा का वातावरण रच दिया है कि अनेकों हिन्दू-सिख श्रद्धालुओं ने वहां जाना ही बन्द कर दिया है जिससे सिखों के प्रचार को एक जबरदस्त धक्का लगा है। इतना ही नहीं अपितु इन उग्रवादी अकालियों के द्वारा गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का लाखों रुपया गंदी राजनीति की रस्साकशी में पानी की तरह बरबाद किया जा रहा है। क्या इन लोगों से कभी सिख-मत के प्रचार की आशा की जा सकती है ? आज ये सब कार्य सिख गुरुद्वारा अधिनियम १९२५ के विरुद्ध हो रहे हैं।

हमें तो ऐसा लगता है कि ये लोग वास्तव में सिख नहीं अपितु इन्होंने स्वार्थ सिद्धि के लिए लोगों को आपस में लड़ाने के लिए सिखों का वेश धारण करके शिरोमणि गु० प्र० कमेटी पर कब्जा कर रखा है। गतदिनों समाचार-पत्रों में छपी खबरों से यह भी सिद्ध हो गया है कि पाकिस्तान मुसलमानों को नकली सिख बनाकर पंजाब में भेज रहा है। इसके १४० निर्वाचित सदस्यों में से १३८ अकाली हैं। जो दो सदस्य निर्दलीय हैं वे भी अधिकतर अकालियों की ओर झुके रहते हैं। २८-११-८१ को महता चौक स्थित भिण्डरावाला के गुरुद्वारे में एक भीषण बम्ब विस्फोट हुआ था। इसमें जहां गुरुद्वारे के भवन को महती क्षति हुई वहां तीन गुरु के प्यारे भी चल बसे। क्या यही उपदेश किया था हमारे गुरुओं ने ?

इतना ही नहीं अपितु २९-१२-८२ को जत्थेदार सन्तोख सिंह को पश्चिमी दिल्ली में एक गुरुद्वारे के बाहिर गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के ही सदस्य कहलाने वाले एक व्यक्ति ने गोलियों से भून दिया। यह है धारा १९२५ के विरुद्ध राजनैतिक आचरण का परिणाम।

अभी पिछले दिनों ४-४-८३ को इन राजनैतिक अकालियों ने अपनी सीट तथा नेतागिरी के लिए रास्ता रोको आन्दोलन के नाम पर हिंसा को भड़का कर पंजाब में अनेकों गुरुभक्तों को बिना मौत मरवा दिया।

ये हिंसावादी अकाली लोग पूरे भारत में बस रहे लाखों सिखों के लिए ही समस्या नहीं बन रहे अपितु देश के लिए पवित्र बलिदान करने वाले महान् देशभक्त सिख-गुरुओं के नामों का दुरुपयोग करके उनके प्रति लोगों में अश्रद्धा भी पैदा कर रहे हैं।

२५-४-८३ को प्रातःकाल 'दरबार-साहिब' स्वर्ण मन्दिर अमृतसर से अरदास करके वापिस लौट रहे डी०आई०जी० अवतार सिंह अटवाल तथा एक ग्यारह वर्ष के बच्चे की जिस क्रूर भावना से गुरुद्वारे के बाहर हत्या की गई है वह सारे सिख समुदाय के लिए शर्म का विषय है। अत्यन्त दुःख की बात है कि अटवाल साहब गुरुद्वारे में माथा टेकने गये थे पर माथा कटवाकर आये। उनका अन्तिम संस्कार करने के पश्चात् जब उनकी पत्नी को सरदार अटवाल के पिता ने गुरुद्वारे में जाकर माथा टेकने को कहा तो श्रीमति अटवाल ने दुःखी होकर उत्तर दिया— "क्या करूं वहां जाकर, यह वही तो गुरुद्वारे हैं जिन्होंने मेरे पति को सदा सदा के लिए छीन लिया है।" इस दुर्घटना से प्रभावित होकर लारेंस रोड अमृतसर के एक सिख अफिसर ने कहा कि—"यदि दरबार साहिब में भी यही कुछ होना है तो घर बैठकर ही जपजी साहिब पढ़ लेंगे। इसके साथ उसने दुःखी होकर यह भी कहा कि—मैं तो केश-धारी सिख हूं पर मेरा एक बेटा बिना केशों के हैं तो क्या मैं उसे कभी छोड़ सकता हूं ?"

सिखों का तथा-कथित बाना ओढ़े हुए इन्हीं तथाकथित राज-नैतिक सिखों ने १९४२ से १९४७ में पूरे सिख समुदाय को अपनी कुर्सी के लिए बदनाम कर दिया था जब की कुछ नामलेवा अकाली सिख नेताओं ने लार्ड माउन्ट बेटन तथा जिन्हा के सामने अलग सिख होम लैंड की मांग रखी थी। इन्हीं लोगों ने तब भारत की आजादी की पवित्र वेला में बाधा डालने का असफल प्रयास करते हुए कहा था कि इस आजादी का हमारे लिए कोई महत्त्व नहीं। पर इनकी बात तब भी किसी ने नहीं सुनी थी।

६ जून से ९ जून तक उग्रवादी अकालियों ने अपना एक शिविर आनन्दपुर साहिब में लगाया। इसमें भूतपूर्व मेजर जनरल जसवन्तसिंह तथा भूतपूर्व कर्नल अमर सिंह ने लोगों को बन्दूक, पिस्तोल तथा स्वचालित शस्त्रों को चलाना सिखाया। शिविर में भाग लेने वालों को भड़काते हुए मेजर ज० भुल्लर ने कहा कि—अब खालिस्तान की मांग करने का समय आ गया है। अन्य अकाली नेताओं तलवंडी, टोहरा, बलदेव, बादल, बरनाला, रजिन्द्र कौर ने भी इस प्रकार से राष्ट्रवाद का खण्डन करते हुये गोली तथा बम्ब के बल से अपनी बात मनवाने की बातें कहीं। इस शिविर से यह साफ-साफ सिद्ध हो गया है कि अकाली दल का अहिंसा की बात करना एक कोरी बकवास है। इस हथियार चलाने वाले शिविर से यह सिद्ध हो रहा है कि उग्रवादी अकाली पंजाब में शान्ति नहीं रहने देंगे।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सम्पादकीय

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

एक मूर्खपन अवतारवाद

प्र०—ईश्वर अवतार लेता है या नहीं।

उ०—नही। क्योंकि 'अज एक पात्', "स पर्यगाच्छुक्रम कायम्" ये यजुर्वेद के वचन है। इत्यादि वचनों से सिद्ध होता है कि परमेश्वर जन्म नही लेता।

प्र०—यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम् ॥

श्री कृष्ण जी कहते है कि जब जब धम का लोप होता है, तब तब मैं शरीर धारण करता हूं।

उ०—यह बात वेद विरुद्ध होने से प्रमाण नही और ऐसा हो सकता है कि श्री कृष्ण धर्मात्मा थे और धर्म की रक्षा करना चाहते थे, कि मैं युग-युग में जन्म लेकर श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूं, तो कुछ दोष नही। क्योंकि "परोपकाराय सतां विभूतयः" परोपकार के लिए सत्पुरुषों का तन, मन, धन होता है, तथापि इससे श्री कृष्ण ईश्वर नही हो सकते।

प्र०—जो ऐसा है तो संसार में चौबीस ईश्वर के अवतार होते हैं, और इनको अवतार क्यों मानते हैं।

उ०—वेदार्थ के न जानने से, सम्प्रदायी लोगों के बहकाने से और आप अविद्वान् होने से भ्रमजाल में फंस के ऐसी-ऐसी अप्रामाणिक बातें करते और मानते हैं।

प्र०—जो ईश्वर अवतार न लेवे तो कंस, रावण आदि दुष्टों का नाश कैसे हो सके।

उ०—१) प्रथम तो जो जन्मा हो वह अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है। जो ईश्वर अवतार अर्थात् शरीर धारण किए बिना जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करता है, उसके सामने कंस, और रावण आदि एक कीड़ी के समान भी नहीं। वह सर्वव्यापक होने से रावण आदि के शरीर में भी परिपूर्ण हो रहा है। वह उनका जब चाहे, उसी समय मर्म-छेदन कर नाश कर सकता है। भला इस अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव युक्त परमात्मा का एक क्षुद्र जीव को मारने के लिए जन्म मरण युक्त कहने वाले को मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल सकती है।

२) और जो कोई कहे कि ईश्वर भक्त जनों के उद्धार के लिए जन्म लेता है, तो भी ठीक नही। क्योंकि जो भक्त जन ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल चलते हैं, उनके उद्धार करने का पूरा सामर्थ्य ईश्वर में है। क्या ईश्वर के पृथ्वी, सूर्य चन्द्र आदि जगत् को बनाने, धारण करने और प्रलय करने रूप कर्मों से कंस, रावण आदि का वध और गोवर्धन आदि पर्वतों का उठाना, बड़े कर्म है ?

३) जो कोई इस सृष्टि में परमेश्वर के कर्मों का विचार करे तो— "न भूतो न भविष्यति" अर्थात् ईश्वर के सदृश कोई न है, और न होगा।

४) और युक्ति से भी ईश्वर का जन्म सिद्ध नहीं होता। जैसे कोई अनन्त आकाश को कहे कि गर्भ में आया, वा मूठी में धर लिया, ऐसा, कहना कभी सच नहीं हो सकता, क्योंकि आकाश अनन्त और सब में व्यापक है। इससे न आकाश बाहर आता और न भीतर जाता है, वैसे परमात्मा के अनन्त तथा सर्वव्यापक होने से उसका आना-जाना कभी सिद्ध नहीं हो सकता। जाना-आना वहां हो सकता है, जहां न हो। क्या परमेश्वर गर्भ में व्यापक नहीं था, जो कहीं से आया ? और बाहर नहीं था, जो भीतर से निकला ?

५) ईश्वर अवतार धारण करता है, ऐसा ईश्वर के विषय में कहना और मानना विद्याहीनों के सिवाय कौन कह और मान सकेगा ? इसलिए परमेश्वर का जाना-आना एवं जन्म-मरण कभी सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिए 'ईसा' आदि भी ईश्वर के अवतार नहीं, ऐसा समझ लेना, क्योंकि राग, द्वेष, क्षुधा (भूख) तृषा (प्यास), भय, शोक, दुःख, सुख, जन्म, मरण आदि गुण युक्त होने से वे मनुष्य थे। (सत्यार्थप्रकाश ७)

—सुदर्शनदेव आचार्य

तन, मन तथा धन से

बाढ़ पीड़ितों की सहायता कीजिए

आर्य नेताओं की दानियों से अपील !

आपको आकाशवाणी तथा समाचार पत्रों से ज्ञात हो गया होगा कि जिला रोहतक, सोनीपत, भिवानी, जीन्द, करनाल, अम्बाला आदि के क्षेत्रों में पूरे लगातार मूसलाधार वर्षा से सैकड़ों मकान गिर गये, हजारों मकानो में पानी घुस गया। फसलें भी कई करोड़ की नष्ट हो गई। नगरो से ग्रामों में आने जाने के मार्ग पानी में डुब गए। गली तथा मकानों मे कई कई फुट पानी खड़ा रहने से महामारी फ़ैलने की सम्भावना है। पशुओं के लिए चारा भी मिलना कठिन हो गया है।

हरयाणा सरकार अपने रूप में सहायता कर रही है, परन्तु आज अफसरशाही तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला हैं। सहायता के पात्रों तथा कमजोर वर्षों तक समय पर उचित सहायता पहुंचने की सम्भावना कम है। इन सभी परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने स्वामी ओमानन्द सरस्वती के साथ बाढ पीड़ित क्षेत्रो का दौरा किया है तथा आर्यसमाज की ओर से सहायता करने के लिए हरयाणा बाढ़ पीड़ित सहायता समिति का गठन करके कार्य आरम्भ कर दिया है। मलेरिया के सम्मूलन हेतु आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण तथा निर्धन एवं बेसहारा लोगों के लिए वस्त्रादि का दान रूप में संग्रह करने की योजना बनाई है। रोहतक में दयानन्द मठ, आर्यसमाज मन्दिरों एवं आर्य स्कूलो के भवनों में बाढ पीड़ितों के लिए अस्थाई आवास की व्यवस्था की गई है।

परन्तु इस कार्य में दानियों के सहयोग से ही सफलता मिल सकेगी। अतः प्रदेश के सभी आर्यसमाजों तथा धनधान्य से सम्पन्न परिवारों से हमारी अपील है कि वे अपने बाढ़पीड़ित भाई बहनों की संकट के समय में उदारतापूर्वक सहायता करें। प्रत्येक आर्यसमाज इस निधि में अपने कोष से अथवा अपने क्षेत्र से धन संग्रह करके हरयाणा बाढ़ पीड़ित सहायता समिति दयानन्द मठ रोहतक (आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) के पते पर भेजकर अपनी सेवाभाव की परम्परा को जारी रखे। जो भाई बहिन अपने नये अथवा पुराने वस्त्रादि भेज सकें वे भी भेज देवे, ताकि उनका वितरण किया जा सके।

आशा है आर्यसमाजें तथा दानी महानुभाव हमारी इस अपील पर सहानुभूतिपूर्वक अधिक से अधिक आर्थिक तथा वस्त्रादि की सहायता तुरन्त भेजकर यश और पुण्य के भागी बनेंगे।

आशा और विश्वास के साथ आपके अमूल्य सहयोग के इच्छुक,

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	भरतसिंह वानप्रस्थ
संरक्षक	अध्यक्ष	संयोजक

हरयाणा बाढ़ पीड़ित सहायता समिति, दयानन्द मठ रोहतक
फोन : ४८१२

कन्या गुरुकुल खानपुर में श्रावणी महापर्व की धूम—

कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत में २३ अगस्त प्रातः साढ़े सात बजे से साढ़े दस बजे तक आयुर्वेद महाविद्यालय के विशाल भवन में आयुर्वेद महाविद्यालय तथा आर्यसमाज की ओर से सम्मिलित सभा का आयोजन किया गया। जिसमें समाज में अधिकारी तथा सदस्य और आ० महाविद्यालय का लगभग सारा स्टाफ तथा छात्राएं बड़े उत्साह से भागीदार हुए वृहद् यज्ञ के उपरान्त भाषण तथा कविताएं पढ़ी गई अन्त में सभी श्रोता महानुभावों ने वेद पढ़ने तथा स्वाध्याय करने का संकल्प लिया। इस आयोजन का श्रेय महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय को पहुंचता है।

—समरसिंह वेदालंकार
मन्त्री आर्यसमाज क० गु० खानपुर

(पृष्ट २ का शेष)

मेरा सभी बुद्धिजीवी गुरुभक्त सिखों से सविनय अनुरोध है कि वे एक जुट होकर ऐसे लोगों से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी तथा गुरुद्वारों को बचाकर सिखों के व्यर्थ कतले-आम को रोकें तथा देश के गद्दारों से गुरुद्वारों को खाली करवा कर इन्हें पवित्र करने का शीघ्र प्रयास करें। और आगे से हम उन्हीं बुद्धिजीवी गुरुभक्त सिखों को अपना नेता मानें जो सिख गुरुद्वारा अधिनियम १६२५ के अन्तर्गत केवल धार्मिक तथा शैक्षणिक प्रचार को ही सिर माथे पर रखकर काम करें और नामधारी राधास्वामी, निरंकारी निर्मलेउदासी तथा समूचे हिन्दू वर्ग को प्रेम तथा सेवा से अपनी ओर आकर्षित करके गुरुमत को चहुँ दिशाओं मे फैलाने की प्रतीज्ञा लें। सिखों की सभी समस्याओं का यही एक मूल समाधान है।

विशेष—सभी गुरुभक्तों को यह बात ध्यान से विचारनी चाहिए कि आज राधा स्वामी मत जो कि हमारे में से निकला है, का चढ़ावा हाजरों लाखों तक पहुँच चुका है जब कि इन राजनैतिक उग्रवादी तथाकथित सिखों अकालियों तथा भिण्डरावाला और उसके चेलों के भय के कारण परस्पर की फूट से जन तथा धन दोनों ही गुरुद्वारों से कम हो रहे हैं। ईश्वर हम पर कृपा करे कि हम इन फूट डालकर स्वार्थ सिद्ध करने वाले राजनैतिक लोगों से मुक्ति पाकर प्रेम एवं सेवा के बल से अधिक से अधिक लोगों को सच्चा देशभक्त गुरु-सिख बनाने में सफल हो सकें। आज पंजाब में शान्ति पैदा करने का यही एक मुख्य उपाय है।

प्र०—ज्ञानी राजसिंह 'देहलवी' (S.A.S.,A P.) देहली—७

इतिहास के पृष्ठों से—

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी क्या चाहते थे ?

(उग्रवादी अकाली ध्यान दें)

आज से लगभग दो सौ बियासी वर्ष पूर्व का इतिहास जो कि गुरुद्वारा श्री रिवालसर साहब के बाहर आज भी गुरमुखी हिन्दी तथा इंगलिश में लिखा हुआ मिलता है—

"गुरुद्वारा श्री रिवालसर साहिब (ऐतिहासिक स्थान पातशाही १०वीं) इस पवित्र स्थान पर साहिब श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी महाराज ने मुसलमान बादशाह औरंगजेब के हिन्दू धर्म के विरुद्ध जुल्म को रोकने के लिये और 'भारत' देश को सदियों की गुलामी से मुक्त कराने के लिये बाई-धार के पहाड़ो राजाओं के साथ संवत् १७५८ में एक मीटिंग की थी। इस स्थान पर गुरु साहिब जी ने एक महीना निवास किया था।"

नोट—देशभक्त गुरु के देशभक्त सिखों ! उग्रवादी अकालियों तथा मुल्लर व भिण्डरावाला जैसे खालिस्तानियों का मुंह तोड़ उत्तर देकर गुरु साहिब के वचनों, आनन्दपुर साहिब तथा सच्चे सिखों को अपमानित होने से बचाओ।

खालसा पन्थ का उद्देश्य:—

"सकल जगत में खालसा पन्थ गाजे।
जगे धर्म हिन्दू सभी भण्ड भागे॥"—विचित्र नाटक

एक अत्यन्त हर्षदायक सूचना प्रिंसिपल मञ्जुनाथ जी वानप्रस्थी बन गये

समस्त आर्य जगत् को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के सुशिष्य, श्री दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के स्नातक, दयानन्द हाई स्कूल अजमेर के पूर्व आचार्य प्रि० मन्जुनाथ जी शास्त्री M. A.; B. T. ने हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान पर्व पर २३-८-८३ को श्री श्रद्धानन्द सेवा आश्रम मंगलूर कर्नाटक में श्री स्वामी सदानन्द जी महाराज (स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के शिष्य) से वानप्रस्थ की दोक्षा ले ली है। प्रि० मन्जुनाथ कन्नड़ हिन्दी संस्कृत अंग्रेजी के गम्भीर विद्वान हैं। कन्नड के सिद्धहस्त लेखक है। महर्षि की बलिदान शताब्दी के पावन वर्ष में एक प्रतिष्ठित आर्य पुरुष का आश्रम बदलना बड़े गर्व की बात है। समस्त आर्य जगत् को बधाई। आर्य समाज का यश फैलेगा। वैदिक धर्म का प्रचार बढेगा। ऋषि के मिशन के लिए सूझबूझ वाले सब आर्यों को ऐसा ही करना होगा। मैं वानप्रस्थी जी का अभिनन्दन एवं वन्दन करता हूँ। —राजेन्द्र जिज्ञासु

जि० कुरुक्षेत्र में वेद प्रचार की धूम

३१-७-८३ को बड़े उत्साह के वातावरण में गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महामन्त्री म० भरतसिंह वानप्रस्थ की अध्यक्षता में कुरुक्षेत्र जिला में सैंकड़ों गावों से आये २०० आर्यों की विशाल सभा प्रातः १० बजे से आरम्भ होकर सायं ५ बजे तक चली। जिसमें ऋषि निर्वाण शताब्दी अजमेर को सफल बनाने, जिला कुरुक्षेत्र में आर्यसमाज के वेद प्रचार की योजना तथा सामाजिक बुराईयों के विरोध में जनमत बनाने आदि के विषय पर जिला के प्रत्येक भाग से आये आर्य महानुभाव स्वामी रुद्रवेश जी, चौ० बिशनसिंह एडवोकेट, महा सचिव जनता पार्टी हरयाणा, श्री रोशनलाल आर्य एम० एल० ए० सचिव हरयाणा लोकदल, चौ० सत्यदेवसिंह, पूर्व एस०एस०पी०, लाला साधुराम जी लाडवा, श्री सत्यकाम भारती रादौर, श्री देशबन्धु आर्य फतेहपुर, श्री उमेद शर्मा कैथल, डा० अमोरसिंह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, ला० यशपाल जी आर्य, ठोल, चौ० प्रीतमपाल एडवोकेट, प्रधान युवक कांग्रेस जिला कुरुक्षेत्र, श्री अमरसिंह एडवोकेट प्रधान जिला कांग्रेस कमेटी कुरुक्षेत्र, स० गुरुदयाल सिंह, चौ० शाम सिंह प्रधान तथा महामंत्री जिला जनता पार्टी, श्री दिदार सिंह, सरपंच जाजनपुर, चौ० हीरा सिंह सरपंच रसीना आदि गणमान्य लोगों ने भाग लिया व आर्य समाज के आन्दोलन को अधिक सशक्त बनाने के लिए सुझाव दिए। बैठक ने सर्वसम्मति से घी में गाय की चर्बी मिलाने तथा देश की अखण्डता को हानि पहुंचाने वाले सभी तत्वों की घोर निन्दा की। बैठक में आये प्रत्येक आर्य ने आर्य समाज में आई शिथिलता को दूर कर नई क्रान्ति के लिए तन मन धन लगाने का संकल्प लिया। आर्य समाज जाजनपुर के मन्त्री श्री खजानसिंह ने अपने इकलौते बेटे को आर्य समाज का प्रचारक बनाने की घोषणा की तो बीसियों ऐसे युवकों ने जो आर्य समाज की तड़फ रखते हैं और सरकारी नौकरी करते हैं कहा कि अगर आर्य समाज उनकी रोटी का जिम्मा ले तो वे आज ही नौकरियों से त्याग पत्र देकर आर्य समाज की सेवा का व्रत लेने की घोषणा कर दें। दोपहर के भोजन के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की जिला शाखा के रूप में वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र का संगठन किया गया। सर्वसम्मति से श्री कृष्ण लाल जी बवा को प्रधान तथा चौ० बिशन सिंह एडवोकेट महामन्त्री और श्री धर्मदेव विद्यार्थी को संगठन मन्त्री चुना गया। शेष कार्यकारिणी के गठन का अधिकार उपरोक्त तीन आर्य महानुभावों को दिया गया। इसी अवसर पर जून मास में आर्य समाज के प्रचार के लिए निकाली पद-यात्रा के युवकों को पुरस्कृत किया गया। इस बैठक की मुख्य विशेषता यह रही कि इसमें जहां नौजवानों के जत्थे के जत्थे पहुंचे थे वहां बजुर्गों की संख्या कम न थी। बैठक को सफल बनाने के लिए श्री धर्म-देव विद्यार्थी ने रात दिन गांव का दौरा कर सभी नये पुराने आर्यों को बैठक में भाग लेने की प्रेरणा कर कुरुक्षेत्र जिला में वैदिक प्रचार की धूम मचा दी। ऐसा दिखाई देता है कि यह आर्य युवकों का आन्दोलन केवल कुरुक्षेत्र जिला तक सीमित नहीं रहेगा अपितु हरयाणा भर में शीघ्र ही फैल जायेगा। क्योंकि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के योग्य विद्वान आचार्य देवव्रत जी और मुख्य संरक्षक धर्मदेव विद्यार्थी हरयाणा के सभी आर्यों को संगठित करने का संकल्प लिये हैं यहां कुरुक्षेत्र जिला के सैंकड़ों युवक धड़ा-धड़ आर्य बनते जा रहे हैं वहां पुरानी पीढ़ी के आर्य भी उत्साह से भर कर युवाओं को आशीर्वाद दे रहे हैं। बैठक में यह भी निर्णय हुआ कि कुरुक्षेत्र जिला से १० बसें भर कर अजमेर शताब्दी में जायेंगी। जाने वाले महानुभाव १० सितम्बर तक अपने नाम कार्यालय में भेज देवें। अत्यधिक उत्साह के वातावरण में जब ऋषि निर्वाण शताब्दी से पहले २५ नये आर्य समाज खोलने का प्रस्ताव आया तो किसी ने दो आर्य समाज या पांच नई आर्य समाजें और चौ० बिशनसिंह जी ने अकेले १० आर्य समाजें खोलने का प्रस्ताव किया। लोगों ने कहा कि २५ आर्य समाजें तो इसी माह खोल दी जायेंगी। अन्त में बैठक की अध्यक्षता कर रहे महाशय भरतसिंह जी ने कहा कि इस पुनीत कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पूर्ण सहयोग आप के साथ रहेगा और उन्होंने इस नवनिर्मित संगठन को आशीर्वाद दिया।

सम्पादक के नाम पत्र

बंधुवर सम्पादक जी नमस्ते।

एक आवश्यक विषय की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

आपको ज्ञात ही होगा कि १९४७ से पूर्व देशी रियासतों एवं ब्रिटिश भारत में उत्तरदायी शासन के साथ राजनैतिक नागरिक एवं सामाजिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये (धार्मिक स्वतन्त्रता इसी का एक अंग है) आन्दोलन किए गये और कतिपय नियमों के अनुसार इनमें भाग लेने वालों को स्वतन्त्रता सेनानी स्वीकार कर राज्य एवं केन्द्र सरकारों ने यथोचित सम्मान-सुविधाएं तथा पेंशन स्वीकृत की हैं। मुस्लिम खिलाफत आन्दोलन, यहां तक कि हिन्दुओं के रक्त से रंजित मोपला विद्रोह, सिखों के गुरु का बाग नाभा रियासत में सत्यग्रह, कूका विद्रोह तथा रियासती प्रजा मण्डलों के आन्दोलनों में भाग लेने वाले स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान श्रेणी के अन्तर्गत स्वीकृत हैं।

इस सम्बन्ध में १९३९ में हैदराबाद (निजाम) में हुए आर्यसमाज सत्याग्रह में भाग लेने पर आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि राज्यों की सरकारों ने और उनकी संस्तुति पर केन्द्र सरकार ने नियमानुसार उनको सम्मान सुविधाएं दी हैं, जबकि पंजाब, हरयाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश आदि की सरकारों ने हमारी शिथिलता के कारण कोई निर्णय नहीं लिया और आज तक वहां तथा केन्द्र सरकार के यहां यह विषय गत ३५ वर्षों से 'विचाराधीन' चला आ रहा है। आर्यसमाज के संगठन एवं नेता इस सम्बन्ध में उदासीन वा शिथिल हैं।

इस वर्ष मनायी जा रही निर्वाण शताब्दी पर जहां डाक टिकट निर्वाण स्थली के ग्रहण आदि जैसी ऊपरी एवं दिखावटी चीजों को महत्त्व दिया जा रहा है वहां इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर परोकारणी तथा सार्वदेशिक सभा का ध्यान नहीं गया है। इन बलिदानियों के सम्मान की इस अवसर पर कोई योजना नहीं है।

आप कृपया उक्त सूचना अपने पत्र में देकर एवं अपनी संपादकीय टिप्पणी देकर जनमत को जागृत करें। यह एक महती सेवा आर्यसमाज की होगी। आप इसे पत्र के रूप में प्रकाशित भी कर सकते हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में सबसे अधिक सत्याग्रही वर्तमान हरयाणा प्रदेश से १९३९ में गए थे।

—भवदीय
ब्रह्मदत्त स्नातक

प्रधान मन्त्री तथा मुख्य मन्त्री हरियाणा के नाम पत्र

माननीय चौ० भजनलाल जी,
मुख्यमन्त्री, हरयाणा,
चण्डीगढ़।

विषय:—हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों की पैन्शन देने की मांग

निवेदन है कि सन् १९३९ में निजाम हैदराबाद ने हिन्दुओं के धार्मिक कार्यों पर पाबन्दी लगाई थी। इसके विरुद्ध एक सत्याग्रह आरम्भ किया गया था और हरयाणा से भी सैकड़ों की संख्या में सत्याग्रहियों ने जेल काटी थी। यह भी स्वतन्त्रता संग्राम ही था। इसी कारण आन्ध्र, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र आदि सरकारों ने अपने प्रान्त के सत्याग्रहियों को पेंशन देकर सम्मानित किया है। अतः आप से भी प्रार्थना है कि हरयाणा राज्य के सत्याग्रह में जेल काटने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों को हरयाणा सरकार की ओर से पैन्शन देकर सम्मानित करने की कृपा करें।

आशा है आप हमारी सभा के प्रस्ताव पर सहानुभूति पूर्वक उचित कार्यवाही करेंगे।

—भवदीय
महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी
सभा मन्त्री

मन्दिर सनातन धर्म के प्रचार आर्यसमाज का

समालखा—३१ अगस्त, (वैद्य रतनसिंह आर्य) पिछले कई वर्षों की शिथिलता को त्यागकर आर्यसमाज समालखा के अधिकारियों ने इस बार वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत वेद प्रचार का आयोजन किया जो २३ अगस्त श्रावणी पर्व की प्रातः प्रारम्भ होकर ३१ अगस्त श्री कृष्ण जन्माष्टमी को रात्रि ११ बजे सम्पन्न हुआ। सभा के मुख-पत्र सर्वहितकारी साप्ताहिक के सह-सम्पादक श्री पं० रणवीर जी शास्त्री, एम० ए०, विद्यावाचस्पति प्रचारार्थ पधारे थे जिन्होंने अपनी ओजस्विनी वाणी द्वारा लगातार नौ दिन तक वैदिक धर्म की विशेषताओं की समीचीन व्याख्या प्रस्तुत की जिसे कस्बे तथा आस-पास की जनता ने अतीव श्रद्धा पूर्वक सुना। इस कार्यक्रम की एक अभूतपूर्व विशेषता एवं उपलब्धि यह रही कि प्रातःकाल यज्ञ एवं उपदेशादि विभिन्न परिवारों में तथा रात्रि की कथा पहले छः दिन माडल टाउन समालखा के श्री रघुनाथ मन्दिर में तथा अन्तिम तीन दिन की कथा काठ मण्डी स्थित सनातन धर्म मन्दिर में हुई।

सुविख्यात वक्ता श्री पं० रणवीर जी शास्त्री की वक्तृत्व कला के माध्यम से सत्य-सनातन-वैदिक-धर्म, जिसका प्रचारक-प्रसारक आर्यसमाज है, का जो अद्वितीय प्रभाव नगर-भर के जन-मानस पर पड़ा, उसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि ३१ अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर योगीराज श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज के महिमामण्डित चरित्र को सुनने के लिये श्री शास्त्री जी को उन संस्थाओं ने भी आमन्त्रित कर उन्हें बड़ी श्रद्धा के साथ सुना जहाँ पर जन्माष्टमी पौराणिक ढंग से मनाई जा रही थी। नगर भर में आर्यसमाज के प्रचार की चर्चा है। इस अवसर पर श्री रामेश्वर दयाल जी शर्मा कोषाध्यक्ष आर्यसमाज समालखा की प्रेरणा ने सर्वहितकारी परिवार में सात नये सदस्यों की वृद्धि भी की।

आर्यसमाज सिरसा का प्रस्ताव

आर्यसमाज सिरसा को यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि सिरसा नगर में ६० ड्रम गाय की चर्बी रेलवे स्टेशन पर पकड़ी गई। जिसकी एफ. आई. आर. भी दर्ज कर ली गई हैं। किन्तु खेद की बात है कि कोई भी अपराधी अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया, और यह जान कर और भी दुःख हुआ कि सिरसा नगर के कुछ लोग उन अपराधियों की सहायता के लिए प्रयत्न शील हैं और इस मामले को दबाना चाहते हैं।

हम सरकार को आर्यसमाज सिरसा की ओर से चेतावनी देते कि कि अगर शीघ्र ही अपराधियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही नहीं की गई तो आर्यसमाज सारे जिला सिरसा में एक बड़ा भारी आन्दोलन, इसके विरोध में चालू कर देगा।

रामचन्द्र आर्य
मन्त्री, आर्यसमाज सिरसा

महर्षिदयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर सर्वहितकारी का हरयाणा में आर्य-समाज की विभूतियाँ विशेषांक

सर्वहितकारी के पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महर्षि-दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर "हरयाणा में आर्य समाज की विभूतियां" विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। महर्षि-दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रचार, प्रसार में आर्यसमाज के जिन महापुरुषों ने दिन-रात एक करके अपना जीवन लगा दिया है, उनका परिचय इस विशेषांक में दिया जावेगा। पाठक कृपया प्रामाणिक जानकारी तथा उक्त विभूति का पासपोर्ट साइज का चित्र भेज कर सहयोग प्रदान करें।

सह—सम्पादक

प्रमुख सिख विद्वानों से पांच प्रश्न

(लेखक स्वर्गीय स्वामी अमृतानन्द युमनानगर)

गतांक से आगे

चौथा प्रश्न

४-ईश्वरीय ज्ञान वेद

वेदोऽखिलो धर्म-मूलम्

सत्यविद्या का आदि मूल परमेश्वर है, वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। ईश्वर सर्व व्यापक, जगत् को उत्पन्न करने वाला शरीर रहित, छिद्र रहित, सूक्ष्म दर्शी, मन का साक्षी, सब का अध्यक्ष अपनी सत्ता से आप स्थिर है और उसने अनादि प्रजा (जीवों) के लिये वेदो का सत्य ज्ञान और कर्म फलो का विधान किया है। चारों वेदों की विद्या धर्म युक्त, ईश्वर की देन होने से निर्भ्रान्त है, इस में कोई भूल नहीं अतः वह स्वतः प्रमाण है वेद से भिन्न जितने ग्रन्थ हैं, इन में जो कुछ वेदानुसार लिखा है वह परतः प्रमाण है और मानने योग्य है, वेद विरुद्ध बात अप्रमाण और त्यागने योग्य है।

गुरु नानक जी ने भी कहा—

ओड़क-ओड़क भालि थके, वेद कहिन इक बात

अर्थात्—लोगो ने सत्य ज्ञान के जानने का बहुत प्रयत्न किया (परन्तु) वेद ही एक सत्य का बखान करते हैं।

साथ ही बड़े शोक से कहा कि—

शास्त्र वेद न माने कोई, आपो आपे पूजा होई।

फिर आसा दी वार में लिखा—

विस्माद नाद विस्माद वेद।

अर्थात्—ईश्वर का शब्द और वेद आश्चर्य जनक है।

सच्चा तेरा अमर सच्चा दीवान;
सच्चा तेरा हुकम सच्चा फरमान।

अर्थात्—तेरी अदालत और दीवान सच्चा, तेरी और न्याय नियम सत्य है।

इतिहास में गुरुओं ने कहा—

जगत् में हिन्दू वेद के धर्म से रह गए थे,
हम वेद की हयाति के लिए आए हैं।
(जन्म साखी भाई, मनीसिंह)

गुरु वाणी में कहा—

दीवा बलै अन्धेरा जाये, वेद पाठ मति पापां खाये।
उगवै सूर न जापै चन्द, जह ज्ञान प्रकाश अज्ञान मिटन्त।

अर्थात्— जैसे दीपक के प्रकाश से अन्धेरा दूर भाग जाता है ऐसे ही वेद के पढ़ने पढ़ाने से बुद्धि के पाप दूर हो जाते हैं जैसे सूर्य के निकलने पर चांद आदि दिखाई नहीं देते इसी प्रकार वेद ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान अन्धेरा मिट जाता है।

गुरु अमर दास जी ने कहा—

वेदां में नाम उतम सो सुणे नाहीं।
फिरें ज्यों बेतालिया।
कहै नानक जिन सच तजिया कूड़ लागे।
तिन जन्म जुऐ हारिया॥१९॥

अर्थात्—वेदों में ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव उत्तम तरीके से लिखे हैं उस को तो लोग सुनते नहीं, पागलों की तरह भटक रहे हैं, गुरु जी ने कहा कि जिन्होंने सत्य ज्ञान वेद को त्याग कर झूठ अपना लिया, उन्होंने अपना जन्म मानों जुए में हार दिया।

गुरु अर्जुन देव जी ने कहा—

वेद विखयान करत साधु जन।
भाग हीन समझत नहीं खल।

अर्थात्—साधु लोग वेदों का उपदेश सुनाते हैं, परन्तु भाग हीन मूर्ख लोग समझते ही नहीं।

गुरु तेग बहादुर जी को जब मुसलमान हाकमों ने बन्दीखाने में पूछा कि वह कौन सा धर्म है जिस का आप त्याग नहीं करते तो आपने उत्तर दिया—

आज्ञा जो करतार की वेद चार उचार।
धर्म ताको खास लख, हम तहैं करत प्रचार।
वेद विरुद्ध अधर्म जो हम नही करत पसन्द।
वेदोक्त गुरु धर्म तीन लोक में चन्द।

अर्थात्—प्रभु की आज्ञा जो चार वेदों में दी गई है उसी को सत्य धर्म जान और मान कर हम उसी का प्रचार करते हैं, जो बात वेद विरुद्ध है हम उसको पसन्द नहीं करते। वेद धर्म तो गुरुओं के गुरु परमात्मा का धर्म है जो तीनों लोको में प्रकाशमान है।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा—

धर्म वेद मर्याद जग में चलाऊं।
गऊ घात का दोष जग से मिटाऊं॥

अर्थात्—मेरी परम इच्छा है कि मैं वेद मर्यादा को जगत् में चलाऊं और गौ हत्या के पाप को संसार से मिटाऊं।

पाठक गण! इन प्रमाणों से साफ सिद्ध है कि दसों गुरु वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे। इस लिए प्रमुख सिख विद्वानों से हमारा चौथा प्रश्न यह है कि आप वेद धर्म को न मान कर वेद विरुद्ध सिद्धान्तों का प्रचार क्यों कर रहे हैं? (क्रमशः)

आर्यसमाज की गति-विधियाँ

आर्यसमाज से निष्कासित व्यक्तियों से सावधान

केशरी नन्दन शुक्ल तथा अन्य कुछ व्यक्ति निवासी नागदा जंक्शन पिछले काफी दिनों से सभी आर्यसमाजों तथा अन्य स्थानों में घूमकर अपने को आर्यसमाज नागदा का अध्यापक तथा व्यवस्थापक आदि बताकर चन्दा इकट्ठा करते रहते हैं। इन व्यक्तियों का आर्यसमाज नागदा से कोई संबंध नहीं है, तथा इनको किसी भी प्रकार से आर्य-समाज नागदा के नाम पर चन्दा न दें। इन व्यक्तियों का अन्य संस्थाओं से संबंध हो सकता है इस कारण सभी व्यक्ति एवं आर्यसमाज के पदाधिकारी सावधान रहें। यह आर्यसमाज नागदा से निकाले हुए व्यक्ति हैं।

मंत्री
आर्यसमाज नागदा (म० प्र०)

योगासन शिविर

—जोधसिंह राठौर मंत्री आर्यसमाज, नागदा

नागदा स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती द्वारा योगाश्रम मंडल बिरलाग्राम नागदा में दिनांक ८ अगस्त से १२ अगस्त ८३ तक योगासन प्राणायाम, खान-पान, रहन-सहन एवम् विदेशी चीजों के बहिष्कार तथा भारतीय पद्धति का आचार-विचार अपनाने की शिक्षा दी गई। योगाश्रम मंडल के संयोजक श्री फड़के साहब के द्वारा इस शिविर का आयोजन किया गया था। जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं एवम् पुरुषों ने भाग लिया।

स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती ने मारीसस में ६ माह तक स्कूल, कालेज आर्यसमाज तथा टेलीविजन पर योगासन का प्रशिक्षण दिया। स्वामी जी पिछले ४५ वर्ष से नमक, मीठा, अनाज आदि प्रयोग नहीं करते है।

स्वामी जी के प्रवचन आर्यसमाज नागदा में भी ३ दिन तक हुये। स्वामी जी ने शताब्दी समारोह अजमेर में भाग लेने के लिये काफी लोगों को प्रेरित किया। शताब्दी समारोह ३ नवम्बर से ६ नवम्बर १९८३ को अजमेर में मनाया जा रहा है। नागदा तथा आस-पास के क्षेत्र से जिन सज्जनों को शताब्दी समारोह में भाग लेना है वे मंत्री आर्यसमाज नागदा से सम्पर्क करें। नागदा से स्पेशल बस की व्यवस्था की जावेगी।

सम्पादक के नाम एक पत्रकार का पत्र

सविनय निवेदन है कि मैं आपका समाचार पत्र हर सप्ताह पढ़ता हूं। उसमें जो लेख लिखे जाते हैं वो मेरे मतलब के अनुसार होते हैं और जो सम्पादकीय लिखा जाता है वह भी बड़ा प्रभावपूर्ण होता है। विशेषकर आपके सम्पादकीय व अन्य लेख पढ़ने के काबिल होते है। प्रयत्न यह होना चाहिएं कि आपके समाचार पत्र में फिजूल के या गलत लेख नहीं छपने चाहिए। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हू कि आपका समाचार पत्र दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करता रहे।

भवदीय
(जयदेव गोयल) पत्रकार, जीन्द

प्रवेश सूचना

श्रीमद्-दयानन्द उपदेशक विद्यालय (निकट शाहीपुर) यमुना नगर, जि. अम्बाला की कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बद्ध प्राज्ञ, विशारद शास्त्री श्रेणियों में प्रवेश प्रारम्भ है। भोजन, शिक्षा तथा निवास सर्वथा निःशुल्क है।

प्रवेश के इच्छुक कक्षा आठ उत्तीर्ण छात्र प्रधानाचार्य से पत्र व्यवहार करें।

यज्ञप्रिय
कृते-प्रधानाचार्य

बाढ पीड़ित सहायता

श्री हवासिंह सैनी, स्वामी धर्मदेव तथा श्री रामस्वरूप आर्य द्वारा सराहनीय कार्य

अगस्त के दूसरे सप्ताह में अत्यधिक वर्षा होने से भयंकर बाढ आने से रोहतक शहर का लगभग ३ भाग जल मग्न हो गया। घरों में पानी घुस जाने से तबाही मच गई। जिन मकानों में पानी भर गया, उनके निवासियों ने अपने सामान सहित ऊंचे मकानों में शरण लेनी पड़ी महँगे से महँगा किराया देकर अपने सामान की रक्षा की। इस अवस्था में रोहतक के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री हवासिंह सैनी, स्वामी धर्मदेव तथा श्री रामस्वरूप आर्य निडर ने अपने अन्य सहयोगियों सहित बाढ पीड़ित क्षेत्रों में जाकर उन में भोजन, दूध भूने चने तथा गुड़ आदि का वितरण किया। गढी मोहल्ला, टाटा कम्पनी हिसार रोड, इन्दिरा कालोनी, तथा दयानन्द मठ के पास यह सेवा कार्य राष्ट्रीय समाज कल्याण समिति के माध्यम से निरन्तर जारी है।

पंजाब तथा दिल्ली में भी निर्वाण शताब्दी के लिए अद्भुत उत्साह

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर की तैयारी के लिए जहां हरयाणा की जनता में उमंग है, वहां दिल्ली तथा पंजाब में भी अजमेर पहुंचने की तैयारी तथा धन संग्रह आरम्भ हो गया है। शताब्दी समारोह के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द सरस्वती के नाम इस संबंध में प्रतिदिन भारत के कोने कोने से उत्साहवर्धक पत्र प्राप्त हो रहे हैं। हम पाठकों की जानकारी के लिए स्वामी सोमानन्द महाराज दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) तथा श्री सरदारीलाल वर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पत्र प्रकाशित कर रहे हैं। सम्पादक

पूज्य श्री स्वामी जी महाराज, सादर-नमस्ते।
ईश कृपा से आप स्वस्थ होगें।

सेवा में निवेदन है कि निर्वाण शती की रसीद बही इस प्रकार भेजने की कृपा कीजिए:—

५१ रुपये वाली रसीद बही—४० (चालीस) १० रुपये वाली रसीद बही—२०० (दो सौ) ५ रुपये वाली रसीद बही—२०० (दो सौ)।

१४ अगस्त की अजमेर की बैठक में पद यात्री टोलियों का मार्ग और स्थान जहां से अजमेर तक २१ दिन में पहुँचा जा सके। जो निर्णय हो वह स्वामी रूद्रवेश जी नैष्ठिक आर्य नरेश जी, ब्र० योगेन्द्र जी पुरूषार्थी, स्वा० वेदानन्द जी रोपड़ (पंजाब) को सूचना भिजवाने की कृपा कीजिएगा। स्वा० दीक्षानन्द जी ने ज्वालापुर में सूचना दे दी थी कि पीपाड़ (राजस्थान) से अजमेर तक मेरी टोली पद यात्रा करेगी। रसीद बही शीघ्र भिजवाने की कृपा कीजिए। सोमानन्द
दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब)।

पूज्य स्वामी जी महाराज, सादर नमस्ते।

आपका ६-८-८३ का लिखा पत्र प्राप्त हुआ। आपने प्रधान निर्वाचित होने की बधाई भेजी है। आपका आशीर्वाद तो सदैव हमारे साथ है ही। मैं तो गुरुवर स्वामी दयानन्द का एक साधारण सिपाही हूँ और जो समाज सेवा मेरे जीवन से हो सकती है करता ही रहना हूं और जीवन भर करता रहूँगा। प्रधान अथवा अन्य किसी अधिकार की चेष्टा कभी नहीं हुई। यह तो उत्तरदायित्व होता है। यदि इनके बिना सेवा की जाए तो उसमें अधिक सन्तोष मिलता है। ऐसी मेरी धारणा है। परन्तु साथियों का कहना मानना ही पड़ता है। आपकी आज्ञा के अनुरूप वेद-प्रचार के कार्य को गति देने के लिए भरसक प्रयत्न किया जाएगा।

निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में आर्य समाजों को निर्देश दिया दिया गया है कि अधिक से अधिक धन संग्रह करके भेजे ताकि सभा की ओर से आपको एक अच्छी थैली भेंट की जाए। धन जुटाने का भरसक प्रयत्न किया जाएगा। आर्य जनता को ले जाने के लिए भी बसों का प्रबन्ध सभा द्वारा किया गया है। हर प्रकार से सभा का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। विश्वास रखें। यह कार्य हम सब का है।

सरदारी लाल वर्मा सभा प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान मार्ग नई दिल्ली।

इतिहास पलट गया

केरल का जन-आन्दोलन और आचार्य नरेन्द्र भूषण

लेखक:-- प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु वेद सदन अबोहर। सर्वहितकारी के प्रबुद्ध पाठको को पता ही होगा कि पिछले दिनों केरल में हिन्दुओं का एक प्रचण्ड आन्दोलन चलता रहा। इस आन्दोलन ने सारे देश का ध्यान खींच लिया। केरल की राजनीति को इस आन्दोलन ने झकझोर दिया। दैनिक पत्रों में भी इसके सम्बध में समाचार आते रहे। कुछ आर्य समाजी भाईयों के भी एक दो लेख इसके सारे पत्रो मे छपे। मैंने भी विहगम दृष्टि से यह लेख देखे।

मुझे यह देख कर पढकर आश्चर्य हुआ कि इन आर्य समाजी कहलाने वाले पत्रकारो अथवा लेखको ने अपने लेखों में कही भी आचार्य नरेन्द्र भूषण जी का नाम तक नहीं दिया। इसे मैं प्रमाद कहूँ ? अज्ञान कहूँ ? या कर्त्तव्य पालन की अवेहलना अथवा आज के आर्य समाजियों का पिछड़ापन ? पुराने आर्य समाजी दूसरे लोगों से सब दृष्टि से अधिक ज्ञान रखते थे। आज हमें इतना भी पता नहीं कि केरल के इस जन आन्दोलन को चलाने में ऋषि दयानन्द का वीर सेनानी, यशस्वी आर्य लेखक और अद्वितीय वक्ता सबसे अगली पंक्ति में है। केरल की जनता उसे सुनने के लिए तड़पती तरसती है। सहस्रों नहीं लाखों जनों में उसकी वाणी ने आत्मोत्सर्ग के भाव फूंके। पांच सहस्र व्यक्ति कारागार में गये। सैकड़ों साधु घायल हो गये।

आचार्य नरेन्द्र भूषण का वध नहीं किया गया शेष कोई कसर नहीं रही। उन्हें फंसाने, डराने, धमकाने के सब कुछ——।

आर्यो ! केरल के दैनिक पत्र जन्मभूमि में सहस्रों हिन्दुओं का ठाठें मारता समुद्र आचार्य नरेन्द्र भूषण के पीछे दिखाया गया है। केरल के एक और दैनिक मातृभूमि में जवानों की एक भीड़ के आगे आगे आचार्य नरेन्द्र भूषण को दिखाया गया है। स्थान स्थान पर आचार्य नरेन्द्र भूषण जी ने भारी जन सभाओं को सम्बोधित किया। महान श्रद्धानन्द के पश्चात् भारत के सदूर दक्षिण में पहली बार लाखों जनों ने एक आर्य सेनानी को सुना।

आश्चर्य है कि सारे आर्य जगत को इसका कोई भी अता पता नही। १८८५-८६ ई० में ब्र० नित्यानन्द जी महाराज हैदराबाद में पकड़े गये। शूर शिरोमणि लेखराम जैसे महापुरुषों ने सारे आर्य जगत् को झकझोड़ दिया। सारे आर्य जगत् में हलचल मच गई। आचार्य जी की पेशगी ज़मानत हो गई है। इस समय वर्षा ऋतु है। देखे आगे क्या होता है।

केरल के मुख्यमन्त्री वा अन्य कई नेताओं ने तो ईसाइयों के तुष्टिकरण के लिए हिन्दुओं के हितों से खिलवाड़ करने का दु:साहस किया ही है। स्टीफन जैसे ईसाई कांग्रसी अपने लोगो की सब अनुचित अन्यायपूर्ण कुचालों वा कुकृत्यों के पोषक बनकर जो कुछ कर सकते थे कर रहे हैं।

साहसी वीरों का, साधुओं का लहु रंग लाया। ईसाई चर्च के प्रमुख पादरियों को भी अपयश से बचने के लिए इस धींगामुशती के विरुद्ध मुख खोलने पर विवश होना पड़ा। मुस्लमान स्थान स्थान पर चार ईंटें रखकर कबर बना देते हैं। केरल में वा अन्यत्र ईसाई स्थान स्थान पर Cross सुली खड़ी करके चर्च बना देते हैं। इस आंदोलन की पृष्ट भूमि भी तो यही है। हिन्दुओं की भावनाओं से खिलवाड़ करके पहले सूली खड़ी की गई फिर चर्च प्रकट हो गया। आर्य समाज धन्य है कि इसे समय समय पर यशस्वी मनस्वी तपस्वी पुत्र प्राप्त होते रहे हैं। आचार्य नरेन्द्र भूषण अपने साधना से आर्य समाज का और यश बढ़ाएंगे।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] 23267/73 [illegible] P/RTK 40

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक—भ० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ३८ १४ सितम्बर १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

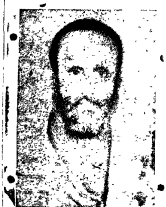
बाढ़ पीड़ित सहायता कार्य हेतु—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह का तूफानी भ्रमण

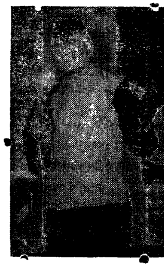
हरयाणा प्रदेश में इस वर्ष अत्यधिक वर्षा से इतनी भयंकर बाढ़ आई है कि निरन्तर ३ सप्ताह से पानी कम नहीं हो सका। रोहतक, झज्जर, बहादुरगढ़, सांपला, खरखौदा, सोनीपत, गोहाना, जीन्द, आदि नगरों तथा इनके साथ लगते ग्रामों में चारों ओर पानी ही पानी दिखाई दे रहा है। रोहतक से झज्जर, रोहतक से भिवानी, रोहतक से हिसार, रोहतक से जीन्द आदि के बसों के मार्ग बन्द हो गए हैं। निचले क्षेत्रों की आबादी के मकानों में पानी अभी तक खड़ा है। मच्छर आदि के काटने से बीमारियां फैलनी आरम्भ हो गई हैं। ग्रामों में फसलें नष्ट हो रही हैं। पशुओं के लिए चारा मिलना कठिन हो गया है। ऐसी आपातकालीन स्थिति में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने हरयाणा बाढ़ पीड़ित सहायता समिति का गठन करके सेवा कार्य आरम्भ कर दिया है। मलेरिया आदि रोगों को रोकने के लिए आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया गया है। इसका वितरण सभी बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में किया जायगा। बाढ़ पीड़ित सहायता तथा ३ से ६ नवम्बर १९८३ को दीवाली के अवसर पर अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए धन-संग्रह करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान एवं अजमेर में हो रही शताब्दी समारोह के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने १२ से १५ सितम्बर तक हरयाणा का तूफानी भ्रमण कार्यक्रम निम्न प्रकार बनाया है :——

आर्य समाज का नाम	दिनांक	समय
आर्य समाज सोनीपत शहर	१२ सितम्बर ८३	प्रात: ९ बजे
आर्य हायर सैकन्डरी स्कूल पानीपत	"	दोपहर बाद ३ बजे
आर्य समाज होली मोहल्ला करनाल	"	दोपहर बाद ६ बजे
आर्य समाज थानेसर	१३ सितम्बर ८३	प्रात: ८ बजे
" लाडवा	"	प्रात: ११ बजे
" रादौर	"	दोपहर बाद १ बजे
" यमुनानगर	"	दोपहर बाद ३ बजे
" जगाधरी	"	दोपहर बाद ६ बजे
आर्य समाज श्रद्धानन्द मार्ग अम्बाला छावनी	१४ सितम्बर ८३	प्रात: ८ बजे
आर्य समाज कैथल	"	दोपहर १२-३० बजे
" नरवाना	"	दोपहर बाद ४ बजे
" जीन्द बाहर	"	रात्रि ८ बजे
" भिवानी	१५ सितम्बर ८३	प्रात: ९ बजे
" चरखी दादरी	"	दोपहर १२ बजे
" नारनौल	"	दोपहर बाद ३ बजे
" रेवाड़ी	"	दोपहर बाद ६ बजे

(भरतसिंह वानप्रस्थी) संयोजक—हरयाणा बाढ़ पीड़ित सहायता समिति दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक



(१)



(२)

(१) महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द सरस्वती धन संग्रहादि कार्य में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण अस्वस्थ हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें यथाशीघ्र स्वास्थ्य प्रदान करें।

(२) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री को महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। आप शताब्दी प्रचार एवं बाढ़ पीड़ित सहायता के लिए धन संग्रह हेतु आर्य समाजों का भ्रमण कर रहे हैं।

बाढ़ पीड़ित सहायता के लिए दान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की बाढ़ पीड़ित सहायता समिति की ओर से आर्य समाजों के अधिकारियों तथा दानी महानुभावों की सेवा में दान की अपील भेजी गई थी ताकि बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में औषधि आदि वितरण का सेवा कार्य आरम्भ किया जावे। इस अपील पर निम्न प्रकार दान की राशि प्राप्त हुई है :——

आर्य समाज सेवा सदन बल्लभगढ़ जि० फरीदाबाद द्वारा

श्री लक्ष्मण दास सभा उप प्रधान	१२५० रु०
दीवान भीमसेन शान्ताकुञ्ज नई कालोनी गुड़गांव	२५० रु०
श्री सत्यपाल आर्य जैकमपुरा गुड़गांव	१०० रु०
श्रीमति [illegible] चौधरी नई कालोनी गुड़गांव	११ रु०
श्रीमति प्रतिभादेवी नई कालोनी गुड़गांव	१०० रु०
डा० अभयदेव शर्मा नई कालोनी गुड़गांव	१०० रु०

ऋग्वेद और राजधर्म

(पं० धर्मदेव "मनोषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

ऋग्वेद विज्ञान वेद है। इसमें तृण से लेकर ईश्वर पर्यन्त सब पदार्थों का विज्ञान भरा हुआ है। प्रकृति क्या है? अग्नि, वायु आदि भूतों के गुण=विशेषतायें क्या है? जीव क्या है? जीव का उद्देश्य क्या है और उस लक्ष्य प्राप्ति के साधन क्या है? ईश्वर का स्वरूप क्या है? उसकी प्राप्ति क्यों आवश्यक है और वह किस प्रकार हो सकती है? इत्यादि सभी बातों का वर्णन ऋग्वेद में है। इस वेद में राजधर्म का उपदेश पर्याप्त मात्रा में है। यहाँ कुछ मन्त्र प्रस्तुत किये जाते हैं।

सभापति के गुण —

स सीदस्व महाँ असि शोचस्व देववीतमः।
वि धूममग्ने अरुष मियेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम् ॥१।३६।९॥

अर्थ—हे (तेजस्विन्) विद्याविनययुक्त। (मियेध्य) प्राज्ञ। (अग्ने) विद्वन् सभापते। जो आप (महान्) बड़े-बड़े गुणों से युक्त (असि) हैं सो (देववीतमः) विद्वानों को व्याप्त होने हारे आप न्यायधर्म में स्थिर होकर (संसीदस्व) सब दोषों का नाश कीजिये और (शोचस्व) प्रकाशित हूजिये। हे (प्रशस्त) प्रशंसा करने योग्य राजन्। आप (विधूमम्) धूम सदृश मल से रहित (दर्शतम्) देखने योग्य (अरुषम्) रूप को (सृज) उत्पन्न कीजिये॥

भावार्थ:—प्रशंसित बुद्धिमान् राजपुरुषों को चाहिये कि अग्नि के समान तेजस्वी और बड़े बड़े गुणों से युक्त हो और श्रेष्ठ गुण वाले पृथिवी आदि भूतों के तत्त्व को जान के प्रकाशमान होते हुये निर्मल देखने योग्य स्वरूप युक्त पदार्थों को उत्पन्न कर॥

सभा व सेनाध्यक्ष के कर्त्तव्य:—

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः।
तामस्मे रासाथामिषम् ॥१।४६।६॥

अर्थ:—हे (अश्विना) सभा सेना अध्यक्षो। जैसे सूर्य और चन्द्रमा की (ज्योतिष्मती) उत्तम प्रकाश युक्त कान्ति (तमः) रात्रि का निवारण करके प्रभात और शुक्ल पक्ष से सबका पोषण करते हैं वैसे (अस्मे) हमारी अविद्या को छुड़ा विद्या का प्रकाश कर (नः) हम सबको (इषम्) अन्न आदि को (रासायाम्) दिया करो॥

भावार्थ:—यहाँ वाचक लुप्तोपमा अलङ्कार है। जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा अन्धकार को दूर कर प्राणियों सुखी करते हैं वैसे ही सभा और सेना के अध्यक्षों को चाहिये कि अन्याय को दूर कर प्रजा को सुखी करें॥

सेनापति की प्रशंसा:—

तमु ष्टुहीन्द्रं यो ह सत्वा यः शूरो मघवा यो रथेष्ठाः।
प्रतीचश्चिद्योधीयान्वृषण्वान् ववव्रुषश्चित्तमसो विहन्ता ॥१।१७३।५॥

अर्थ—हे विद्वन्! आप (यः) जो (सत्वा) बलवान् (यः) जो (चित्) और (शूरः) शूर (मघवा) परमपूजित धनयुक्त (यः, चित्) और जो (रथेष्ठाः) रथ में स्थित होने वाला (योधीयान्) अत्यन्त युद्धशील (वृषण्वान्) बलवान् (प्रतीचः) प्रति पदार्थ प्राप्त होने वाले (ववव्रुषः) रूप युक्त (तमसः) अन्धकार का (विहन्ता) विनाश करने वाले सूर्य के समान हैं (तम्, उ, हि) उसी (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवान् सेनापति की (स्तुहि) प्रशंसा करो॥

भावार्थ:—इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमा अलङ्कार है। मनुष्य को चाहिये कि उसी की स्तुति करें जो प्रशंसित कर्म करे और उसी की निन्दा करें जो निन्दित कर्मों का आचरण करे वही स्तुति है जो सत्य कहना और वही निन्दा है जो किसी के विषय में झूठ बकना है॥

राजा कौन:—

त्वं राजेन्द्र ये च देवा रक्षा नृन्पाह्यसुर त्वमस्मान्।
त्वं सत्पतिर्मघवा नस्तरुत्रस्त्वं सत्योवसानः सहोदाः ॥१।१७४।१॥

अर्थ:—हे (इन्द्र) परमैश्वर्य युक्त (त्वम्) आप (सत्पतिः) वेद व (सत्पतिः) वेद वा सज्ज को पालने वाले (मघवा) प्रशंसित धनवान् (नः) हम लोगों को (तरुत्रः) दुःख रूपी समुद्र से पार उतारने वाले हैं। (त्वम्) आप (सत्यः) सज्जनों में उत्तम (वसानः) धन प्राप्ति कराने और (सहोदाः) बल के देने वाले हैं तथा (त्वम्) आप (राजा) न्याय और विनय से प्रकाशमान राजा है इससे हे (असुर) मेघ के समान। (त्वम्) आप (अस्मान्) हम (नृन्) मनुष्यों को (पाहि) पालो (ये च) और जो (देवाः) श्रेष्ठ गुणों वाले धर्मात्मा विद्वान् हैं उनकी (रक्ष) रक्षा करो॥

भावार्थ:—जो राजा होना चाहे वह धार्मिक सत्पुरुष विद्वान् मन्त्री जनों को अच्छे प्रकार रख के उनसे प्रजा जनों की पालना करावे। जो ही सत्याचारी बलवान् सज्जनों का संग करने वाला होता है वह राज्य को प्राप्त होता है॥

ईश्वरोपासना से राज्य और यश:—

स इत्क्षेति सुधित ओकसि स्वे तस्मा इळा पिन्वते विश्वदानीम्।
तस्मै विशः स्वयमेवा नमन्ते यस्मिन् ब्रह्मा राजनि पूर्व इति॥
(४।५०।८)

अर्थ:—हे मनुष्यों! जो जन परमेश्वर का भजन करता है (सः, इत्) वही (सुधितः) उत्तम प्रकार तृप्त हुआ (स्वे) अपने (ओकसि) निवास स्थान में (क्षेति) निवास करता है तथा (विश्वदानीम्) सब काल में (तस्मै) उसके लिये (इला) प्रशंसित वाणी वा भूमि सब (पिन्वते) सेवन करती है (यस्मिन् राजनि) जिस प्रकाशमान परमात्मा में (ब्रह्मा) चार वेद को जानने वाला (पूर्वः) अनादि से हुआ प्रथम (एति) प्राप्त होता है (तस्मै) उस राजा के लिये (विशः) प्रजा (स्वयं एषा) आप ही (नमन्ते) नम्र होती हैं।

भावार्थ:—हे मनुष्यों! जो अन्य सब का त्याग करके एक परमेश्वर ही की आप लोग सेवा करें तो आप लोगों में लक्ष्मी, राज्य, प्रतिष्ठा और यश सदा ही निवास करे॥ ●

नरवाणा में वेद प्रचार की धूम

आर्यसमाज नरवाणा जिला जींद में २३ से ३१ अगस्त तक 'वेद प्रचार सप्ताह' मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से महोपदेशक पं० धर्मचन्द्र विद्यालंकार एम. ए. तथा भजनोपदेशक पं० सुमेरसिंह पधारे। श्रावणी-उपाकर्म के अवसर पर वेद प्रचार-सप्ताह का यह कार्यक्रम अतीव भव्य एवं मनोरम रहा। पं० धर्मचन्द्र विद्यालंकार जी के प्रातः व सायं सुमधुर गंभीर पाण्डित्यपूर्ण व्याख्यान विविध विषयों पर हुए। आध्यात्मिक व सामाजिक, पारिवारिक जीवन पर बड़ी ही वैज्ञानिक दृष्टि से सुलझे हुए विचार जनता को सुनने को मिले। पं० सुमेरसिंह की भजनमण्डली का कार्यक्रम भी रोचक रहा। ३१ अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। पं० धर्मचन्द्र जी विद्यालंकार ने योगीराज कृष्ण जी के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक जीवन के सभी पक्षों पर विवेचनापूर्ण व्याख्यान दिये। इस प्रकार यह उत्सव सोल्लास समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। नगर की धर्मप्रेमी जनता ने अवसर का भरपूर लाभ उठाया। युवकों ने इस अवसर पर विशेष उत्साह दिखाया।

—मन्त्री आर्यसमाज

आर्यजगत् के लिये एक शुभसूचना

स्वाध्याय प्रेमी जनों को यह जानकर अत्यधिक हर्ष होगा कि श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत 'वेदप्रवचन' जो बहुत दिनों से अप्राप्त था, छपकर बिक्री के लिये आचुका है, इसमें ५३ वेद मन्त्रों पर लगभग आठ २ दस २ पृष्ठों में प्रवचनों का संग्रह हैं, जो कि सरल भाषा में होने से सामान्यजनों के लिये बहुत उपयोगी है, जिससे सामान्यमति मनुष्य भी वेद के आशय को आसानी से समझ सकता है, पुस्तक का मूल्य २० रु० है, किन्तु स्वाध्याय प्रेमी जनों को २० प्रतिशत कमीशन दिया जाता है, पुस्तक सीमित संख्या में ही छपी है, जनसाधारण की व्यापक मांग को दृष्टिगत करते हुए हमें यह छपवाने को विवश होना पड़ा। —निवेदक
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार। सत्य प्रिय आचार्य

सम्पादकीय

क्या आप उनमें से नहीं होंगे ?

आज से लगभग एक शताब्दी वर्ष पूर्व जिस अन्धकारमय युग में महर्षि दयानन्द का इस भूतल पर आविर्भाव हुआ था तब भारतवर्ष सब प्रकार से दासता, विषमता और अज्ञानता के पाप-पंक में पड़ा कराह रहा था। महर्षि ने तत्कालीन विकृति एवं वैषम्य को युग प्रवर्तक की आँखों से देखा तो समस्त मानव-समाज उस समय मे विकृत बनावटी सभ्यता, संस्कृति और व्यवस्था में जकड़ा हुआ घृणित रूप से विमर्दित हो रहा दिखाई पड़ा। विश्व के कोने-कोने मे घृणा, अहंकार, विद्वेष, विलासिता और लूट नीति एवं स्वार्थपरता का स्वच्छन्द-ताण्डव मचा था। सवत्र अन्याय, अनीति और अनाचार का साम्राज्य था। धर्म प्राण भारत अपना सम्पूर्ण ऐश्वर्य लुटाकर दासता का जीवन व्यतीत कर रहा था और हो रहा था इसकी विशाल जर्जरित छाती पर सर्वत्र दुर्भिक्ष, व्याधि एव नृशंस विदेशियों का खुला शोषण-नृत्य। उफ! एक तरफ मुट्ठी भर लोग सारी दुनियां की दौलत बटोरकर चैन की बंसी बजा रहे थे और उसी जगह असंख्य नरकंकाल दाने-दाने के बिना तड़प-तड़प कर प्राण गंवा रहे थे। अभागी माताओं को अपने लाल के शव से कफन तक उतारकर अपनी लाज ढकने के लिये मरघट से वापस ले जाना पड़ रहा था।

यह सब देखकर महर्षि की आत्मा हाहाकार कर उठी। उन्हें मूल कारण समझने में देर न लगी। बहुत दिनों के सोच-विचार के बाद व्याधि की औषधि और उपचार का निश्चय किया कि एक सर्वतोमुखी क्रान्ति द्वारा वर्तमान समाज एवं जीवन की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं को पलट कर उसके स्थान पर विशुद्ध वैदिक समाज की स्थापना को जाये, तभी समस्त कष्टों से भारत और यह विश्व बन्धन विमुक्त हो सकेगा। किन्तु कैसे ? व्यवस्था बदलने का मुख्य साधन तो राजसत्ता है, वह थी विदेशियों के हाथ में। उनकी स्वार्थ-सिद्धि उसके बदलने में नहीं बल्कि जैसे का तैसा बनाये रखने में ही थी। फिर भला वे कब सीधे तौर से उस व्यवस्था को बदलने लगे या बदलने देने लगे। ऐसा तो वे विवशता वश ही करने को तैयार हो सके। इसलिये राजसत्ता प्राप्तकर अवैदिक व्यवस्थाओं को पलटने के लिये लोकमत को जागृत करने करने का एकमात्र उपाय ही महर्षि को उचित प्रतीत हुआ। एक सर्वव्यापी उत्पीड़ित जनसमुदाय को सब तरह से संघर्ष के लिये तैयार कर मरणासन्न मानव जगत् में सर्वोन्मुखी क्रान्ति [illegible] करने का बीड़ा उन्होंने उठाया। वे इस वैश्वानर-यज्ञ को पूर्ण करने [illegible] से जुट गये और कार्य संचालन के लिये एक तरुण-समाज का [illegible] किया, जिसका नाम रखा 'आर्यसमाज'। इसका उद्देश्य केवल भारत ही नहीं अपितु समस्त संसार को दासता से मुक्त करना था।

महर्षि ने अपने खून से इसे सींचकर बढ़ाया तथा उनके बाद उनके अनुयायी इसे बढ़ाते आ रहे हैं। जनसमुदाय ने प्रारम्भ में ईंट-पत्थरों से तथा बाद में फूल-मालाओं से इनका उत्साहवर्धक स्वागत किया। इस प्रकार आर्यसमाज तीव्र गति से अपने कर्तव्य-पथ पर लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता गया। विदेशी शासक इसके बढ़ते प्रभाव को देखकर शंकित हुये, चेतावनियां दीं और फिर न केवल उपेक्षाभाव से मौन ही हुये अपितु इसकी प्रेरणा के साये तले लड़े जा रहे स्वतन्त्रता-संग्राम में पराजय को स्वीकार कर अपना बिस्तरा-बोरिया बांधकर स्वदेश वापस लौट गये।

इसकी स्थापना के बाद यों तो सम्पूर्ण विश्व में किन्तु स्वदेश में विशेषकर जो भी आन्दोलन हुये सभी में इसकी प्रेरणा प्रत्यक्ष वा परोक्ष दृष्टिगोचर हुई। देश के लिये स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु धर्मयुद्ध, हैदराबाद सत्याग्रह तथा देश स्वतन्त्र हो चुकने के अनन्तर हिन्दी आन्दोलन, गोहत्या-बन्दी-आन्दोलन आदि सभी जो आर्यसमाज द्वारा चलाये गये, वे महर्षि की इसी सर्वोन्मुखी क्रान्ति के चरण थे। यह सब इसके शक्तिशाली तथा सुदृढ़ संगठन के बलबूते पर ही हो सका। इसे समय-समय पर कोष निर्माणार्थ तथा शक्ति प्रदर्शनार्थ आयोजित महासम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त होती रही। मथुरा की जन्म शताब्दी, अजमेर की निर्वाण अर्द्ध शताब्दी, देहली की स्थापना शताब्दी तथा उदयपुर की सत्यार्थप्रकाश शताब्दी रूपी आयोजनों ने इस आन्दोलन प्रधान संगठन के सम्मुख उपस्थित सामयिक प्रश्नों का न केवल उचित उत्तर ही प्रदान किया बल्कि उन उत्तरों के माध्यम से इसके लिये सुदृढ़ आधार भी बनाय।

आज फिर कुछ लोग कहने लगे हैं कि यह आर्यसमाज रूपी आन्दोलन शिथिल होने लगा है और उसकी यह शिथिलता निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। आक्षेपकर्त्ताओं के इस आरोप का उत्तर आर्य-समाज को देना है। इसे सौभाग्य ही कहिये कि जहाँ आज आर्यसमाज पर शिथिल हो जाने का आरोप है, वहीं इसका मुंह तोड़ उत्तर देने का सर्वाधिक उपयुक्त समय तथा स्थल महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह जो अजमेर में ३, ४, ५ तथा ६ नवम्बर को आयोजित होना है। इसमें सन्देह को कोई स्थान नहीं होना चाहिये कि महर्षि का प्रत्येक अनुयायी उसके सम्मुख उपस्थित चुनौती का इस समारोह को अपने तन-मन, धन के सहयोग द्वारा इसे सर्व प्रकारण सफल बनाने हेतु करारा जवाब अवश्य देगा और फिर यह समारोह अन्य समारोहों से भिन्न होगा। यह महर्षि की निर्वाण शताब्दी है जो शायद ही वर्तमान पीढ़ी में से किसी महा सौभाग्यशाली के जीवन में दुबारा आये। अतः अपने आचार्य को उनके निर्वाण स्थल पर जाकर उनका कौन अनुयायी अपने श्रद्धा-सुमन समर्पित करने को उत्सुक न होगा। लोग कहते है, वहाँ जल का अभाव होगा, जगह का अभाव होगा अतः परेशान होना पड़ेगा। जरा भावुक होकर विचार तो किया जाये कि कौन ऐसा अभागा होगा जो हमें परेशानियों से उतारने के लिये आजीवन परेशानियाँ उठाने वाले उस देवता को अपने श्रद्धा-सुमन भेंट करने को भी परेशानी मानकर उससे बचने का यत्न करेगा और आज तो सर्वत्र इन तथाकथित परेशानियों से निपटने के लिये अपूर्व उत्साह एवं सहयोग का समुद्र उमड़ने लगा है। देश-विदेश से दस लाख ऋषि भक्त वहाँ पहुंचेंगे, तो क्या आप उनमें से नहीं होंगे ?

—रणबीर

स्वामी दयानन्द जी के विचार पढ़ें

(१) भला पूर्व जन्म की बात तो दूर रहने दीजिए। इसी देह में जब गर्भ में जीव था, शरीर बना, पश्चात् जन्मा ५वें वर्ष से पूर्व तक जो-२ बातें हुई, उनका स्मरण क्यों नहीं कर सकता और जागृत वा स्वप्न में बहुत सा व्यवहार प्रत्यक्ष में करके जब सुषुप्ति गाढ़ निद्रा होती है तब जागृत आदि व्यवहार का स्मरण क्यों नहीं करता।

(२) जो तुम से कोई पूछे कि बाहर वर्ष के पूर्व तेरहवें वर्ष के ५वें महीने के नव में दिन दश बजे पर पहली मिनट में तूने क्या किया था। तुम्हारा मुख, हाथ, कान, नेत्र, शरीर किस ओर किस प्रकार था, और मन में क्या विचार था जब इसी शरीर में ऐसा है। तो पूर्व जन्म की बातों के स्मरण में शंका करना केवल लड़कपन की बात है।

(३) और जो स्मरण नहीं रहता, इसी से जीव सुखी है, नहीं तो सब जन्मों के दुःखों को देख-२ कर दुखित होकर मर जाता है।

(४) जो कोई पूर्वजन्म के वर्त्तमान को जानना चाहे तो भी नहीं जान सकता क्योंकि जीव का ज्ञान और स्वरूप अल्प है यह बात ईश्वर के जानने योग्य है जीव के नहीं।

॥ पूर्व जन्म के सस्कार चित्त में नहीं रहते ॥

१२ अगस्त १६८३ अजमेर के परोपकारी पत्र में अग्ने नय सुपथा ......। मंत्र का अर्थ छपा है, कि अब मेरा सामर्थ्य भी नहीं है कि अब मैं अपने को पाप से अलग भी कर सकूं। मेरे संस्कार इस प्रकार के हो गये हैं। जन्म जन्मान्तर की छाप मेरे चित्त पर संचित है। मैं बहुत प्रयत्न करता हूं परन्तु संस्कार उसी ओर ले जाते हैं मैं जहाँ से दूर रहना चाहता हूँ। इत्यादि अर्थ मनगढन्त है मंत्रार्थ निम्न है।

हे दिव्यस्वरूप, प्रकाशस्वरूप, करुणामय, जगदीश्वर। जिससे हम आपके लिये। अविकतर सत्कार पूर्वक प्रशंसा का सेवन करें। इससे सबको जानने वाले आप हमसे कुटिलस्वरूप पापाचरण को पृथक कीजिए। हम जीवों को विज्ञान धन वा धन से हुए सुख के लिए धर्मानुकूल मार्ग से समस्त प्रशस्त ज्ञानों को प्राप्त कीजिए। यजु० अ० ४ मं० १६। इस अर्थ में कहीं नहीं है कि संस्कार जन्म जन्मान्तर के चित्त में रहते हैं और चित्त क्या है, जड़ है वा चेतन यदि जड़ है तो उसमें संस्कार कैसे रहेंगे। यह वेद शास्त्रों से विरुद्ध है। —स्व० रामेश्वरानन्द सरस्वती

अजमेर चलो ! अजमेर चलो !!

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह जो कि ३, ४, ५, ६ नवम्बर १९८३ को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अजमेर में तपस्वी सन्त श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में मनाया जा रहा है। इस शताब्दी समारोह में शामिल होने के लिये आप भी तैयारी शुरू कर दें। क्योंकि १० लाख ऋषि भक्त वहां अपने आचार्य को श्रद्धांजलि समर्पित करने पहुँच रहे हैं। अत: आप भी अवश्य पहुँचें।

इस अवसर पर आपकी सुविधा के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से १०० बसें हरयाणा सरकार से रियायती दर पर प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील है। सभा का कार्यालय भी १५ दिन पूर्व अजमेर स्थानान्तरित होकर अपने प्रदेश वासियों की सुख-सुविधा की व्यवस्था में जुट जायेगा।

स्मरण रहे, हमारे जीवन में शताब्दी का पुनीत अवसर पुन: आने वाला नहीं है। अजमेर पहुँचने वालों के लिये समारोह स्थल पर ही ऋषि लंगर की उत्तम व्यवस्था—ऋषि उद्यान में बन रही भव्य यज्ञशाला में महात्मा दयानन्द जी की अध्यक्षता में चतुर्वेद पारायण-यज्ञ एवं अनेक विशेष सम्मेलन लंगर एवं यज्ञ के लिये घी, सामग्री, अन्न, तथा धन का सात्विक सहयोग कर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्द मठ,
रोहतक

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी को सफल बनाने हेतु—

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अपील

दिल्ली ३० अगस्त ८३। आगामी ३, ४, ५ और ६ नवम्बर ८३ को अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाने की तैयारियां जोर से हो रही हैं। सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री रामगोपाल जी शालवाले ने देश विदेश की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं और आर्य जनों से अपील करते हुए कहा है कि परोपकारिणी सभा द्वारा अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के आयोजन को सभी आर्य जन सफल बनाने के लिए तन-मन और धन से सहयोग करें।

श्री शालवाले ने कहा—आज से १०० वर्ष पूर्व हमारे गुरुदेव महर्षि दयानन्द ने अपने भौतिक शरीर का त्याग अजमेर में ही किया था। विगत १०० वर्ष में महर्षि के निर्वाण के पश्चात् उनकी विचारधारा को लेकर आर्य समाज ने देश विदेश में महान कार्य किए जिनका सिंहावलोकन इस निर्वाण शताब्दी पर किया जाना चाहिए।

आर्य जगत् ने महर्षि जन्म शताब्दी मथुरा में मनाई। अर्द्ध निर्वाण शताब्दी अजमेर में की गई और उसके पश्चात् मथुरा में दीक्षा शताब्दी का आयोजन सफलता पूर्वक किया। सन् १९७५ में दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह का ऐतिहासिक आयोजन न भूतो न भविष्य किया गया जिसमें लगभग १० लाख आर्य नर नारियों ने भाग लिया।

श्री शालवाले ने आर्य जनता से निवेदन करते हुए कहा कि अजमेर में यदि अपने गुरु के निर्वाण शताब्दी समारोह पर कोई कष्ट, असुविधा भी हो जाय तो सहर्ष सहन करते हुए महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। आर्य समाज के इस ऐतिहासिक निर्वाण शताब्दी समारोह को हर प्रकार से सफल बनाने के लिए आर्य जनता, आर्य समाजें व प्रतिनिधि सभाएं परोपकारिणी सभा को हर प्रकार का सहयोग प्रदान करें और अपने कर्त्तव्य का पालन करें। प्रचार विभाग

अखिल भारतीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर भिवानी

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संरक्षण और हरयाणा प्रान्तीय आर्य वीर दल के तत्वावधान में १३ सितम्बर से २३ सितम्बर तक अखिल भारतवर्षीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का भिवानी (हरयाणा) में आयोजन किया गया है। भिवानी हरयाणा का सुन्दर स्थान है। हरयाणा प्रान्त के समस्त मण्डलपतियों नगर नायकों, शिक्षकों, को इस प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भाग लेना चाहिये तथा भारत भर के प्रान्तीय संचालकों से अनुरोध है कि वह भी अपने प्रान्त से पांच-पांच आर्य वीर प्रशिक्षणार्थ अवश्य भेजें जिससे सारे भारत देश में दल कार्यों में एक सपना उत्पन्न हो सके।

इस शिविर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उप प्रधान संचालक डा० देवव्रत व्यायामाचार्य शारीरिक शिक्षण स्वयं पूरा समय रहकर देंगे और श्रद्धेय प्रधान संचालक जी भी हरयाणा प्रान्तीय संचालक भी अपना अधिकाधिक समय देकर शिविर का मार्ग दर्शन करेंगे। इसके बाद २४-२५ सितम्बर १९८३ को हरयाणा आर्य वीर दल का सातवां प्रान्तीय आर्य वीर दल महा सम्मेलन धूम-धाम से होगा। जिसमें भाग लेकर आप भी उसकी शोभा बढ़ावें। कृपया इस संदर्भ में समस्त पत्र व्यवहार निम्न पते पर कर।

अजीत कुमार एम० ए०
मन्त्री—आर्य वीर दल हरयाणा द्वारा आर्य समाज
श्रद्धानन्द नगर न्यू कालोनी, पलवल जि० फरीदाबाद

हिन्दी दिवस (१४ सितम्बर) के उपलक्ष्य में—

तुम्हें पुकारे माँ का प्यार

माँ की गोद तजे कहाँ जाते देखो जरा अरे अनुहार।
भारती-माँ के लाल लाडलो। तुम्हें पुकारे माँ का प्यार॥

जिसने देकर मधुर लोरियाँ,
तुमको बचपन में दुलराया।
तुमने 'अम्माँ-अम्माँ' कहकर,
स्नेह-पूत-पयस् था पाया।

पुलक-किलक अम्बल-छाया, में करते थे कलख किलकार।
भारती-माँ के लाल लाडलो। तुम्हें पुकारे माँ का प्यार॥

जिसके आँगन में पल तुमने,
अपना वाग्विलास बढाया।
जिसके ही बल पर तो तुमने,
अपना सारा साज सजाया।

गर्वित, दर्पित, हो जिस बल पर उसका है यह विभव अपार।
भारती-माँ के लाल लाडलो। तुम्हें पुकारे माँ का प्यार॥

जिसके स्वर में बोल-बोल कर,
जयकारे होय खोल-खोल कर।
आजादी-दुल्हन को जाये,
भार प्राण का तोल-तोल कर।

आजादी के आज गर्व में भूल गये उसकी जयकार?
भारती-माँ के लाल लाडलो। तुम्हें पुकारे माँ का प्यार॥

माँ-भारती के लाल लाडलो।
अब तो सुनो उसका कटु-रूदन।
तुम तो आज स्वतन्त्र बने हो,
उसको बाँधे हैं शत-बन्धन।

दासी बनी आज स्वग्रह में, भोग रही वह कारागार।
भारती-माँ के लाल लाडलों तुम्हें पुकारे माँ का प्यार॥

पर माँ को निज मात बनाया,
स्वमातृवत है अपनामा।
गंगा सी वह परम पुनीता,
हिन्दी बनी बनवासिनी सीता।

गत गौरव सी हुई अरे वह कौन सुने उसका चित्कार?
भारती-माँ के लाल लाडलो। तुम्हें पुकारे माँ का प्यार॥

सब उन्नति का मूल यही है,
रत्नाकर का कुल यही है।
जो बन जाती है रे चन्दन,
मस्तक पर वह धूल यही है।

होता है गर्वोन्नित मस्तक, राष्ट्र-प्रेम का यह उपहार।
भारती-माँ के लाल लाडलो तुम्हें पुकारे माँ का प्यार॥

ऋण 'माँ-भारती' का हम पर है।
जीवित यह हमरे दम पर है।
जीवन-ज्योति यही हमारी,
राष्ट्रीयता की यह चिन्गारी।

आओ मिल कर भार उतारें, है यह सकल सुखों का सार।
भारती-माँ के लाल लाडलो। तुम्हें पुकारे माँ का प्यार॥

—धर्मचन्द्र विद्यालंकार
'समन्वित' एम० ए०

कब्र पूजा विरोधी आन्दोलन करनाल में भी

दो मास तक पानीपत में 'कब्र पूजा' विरुद्ध जनमत जाग्रत कर स्वामी आनन्दमुनी आजकल करनाल में हिन्दुओं को संगठित करने के कार्य में में जुटे हुए है। उल्लेखनीय है करनाल में भी पानीपत की तरह स्थान २ पर 'कब्र पूजा' होती है। मुख्य तौर पर करनाल डेयरी में कब्र पूजा होती है। वहां अब प्रत्येक वीरवार को स्वामी आनन्दमुनी मोर्चा लगा रहे हैं तथा करनाल के लोग स्वामी आनन्दमुनी से बहुत अधिक प्रभावित हुए हैं।

कुरूक्षेत्र जिला में अजमेर शताब्दी की तैयारी

कुरूक्षेत्र जिले में ऋषि निर्वाण शताब्दी के प्रति भारी उत्साह लोगों में पाया जा रहा है। इसकी तैयारी के लिए वेदप्रचार मंडल ने श्री धर्मदेव जी विद्यार्थी की अध्यक्षता में एक विशेष समिति का गठन किया है जिसके सदस्य श्री सत्यकाम आर्य रादौर तथा श्री श्री उमेद शर्मा कैथल आदि हैं। जो लोगों से निरन्तर संपर्क बनाये हुए हैं। लोगों की सुविधा के लिए १० डिलक्स कोच बसों की व्यवस्था की गई है। ये बसें २ नवम्बर प्रातः गुरुकुल से चलेंगी और जयपुर, अजमेर, पुष्कर तथा दिल्ली आदि के सभी ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण करती हुई ७ नवम्बर को वापिस कुरूक्षेत्र पहुंचेंगी। प्रत्येक सवारी से १३५ रु० खर्चा लिया जाएगा जो अग्रिम देना होगा। अतः कुरूक्षेत्र जिले के सभी अजमेर जाने के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि वे २० सितम्बर तक अपना नाम और मार्ग व्यय १३५ रु० वेद प्रचार मंडल जिला कुरूक्षेत्र कार्यालय गुरुकुल कुरुक्षेत्र में जमा करवा दें। प्रत्येक बस में एक-एक भजनमंडली भी साथ होंगी। —मन्त्री

शिविर आर्य वीर दल

क्षेत्रीय आर्य समिति बहादुराबाद (हरिद्वार), आर्यवानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर एवं डा० हरिप्रकाश जो व्यवसायाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार के सहयोग से आर्यसमाज फेरूपुर इस वर्ष १४ से २३ अक्टूबर तक योग, व्यायाम ब्रह्मचर्य शिविर लगा रहा है। आचार्य देवव्रत तथा ब्रह्मचारी सत्यवीर शास्त्री अलवर (राज०) छात्रों को व्यायाम प्रशिक्षण तथा धार्मिक बनायेंगे। न्यूनतम शैक्षिक योग्यता आठवीं पास, न्यूनतम आयु १४ वर्ष तथा अविवाहित। इच्छुक छात्र प्रवेश शुल्क २१ रुपये मंत्री आर्यसमाज फेरूपुर पो०—गुरुकुल महाविद्यालय जि० सहारनपुर (उ.प्र.) को स्वयं अथवा मनोआर्डर द्वारा २९-९-८३ तक अवश्य ही भेज दें। यह स्थान हरिद्वार लक्सर बस मार्ग पर स्थित है। इच्छुक छात्र पं० फूलसिंह आर्य ग्राम-धनरा टिकरी (मेरठ) से भी सम्पर्क अथवा पत्रोव्यवहार कर सकते है।

मन्त्री आर्यसमाज फेरूपुर
हरिद्वार २४९४०५

कैथल में रक्षा-बन्धन पर्व

आर्यसमाज करनाल रोड़ कैथल में "रक्षा बन्धन" का पर्व बड़ी धूम-धाम तथा उत्साह पूर्वक मनाया गया। ५ बजे सुबह से ६ बजे सुबह तक, व्यायाम आसन आदि किए। उसके बाद सभी आर्य वीरो ने बैठकर "हवन यज्ञ" किया, हवन के बाद आर्य वीरों द्वारा भजनों के माध्यम से तथा भाषणों द्वारा आर्य संस्कृति को ऊपर उठाने तथा वैदिक धर्म का झण्डा ऊपर उठाए रखने की प्रेरणा दी। उसके बाद जो डा० संसारचन्द जी, डा० मनोहर लाल जी, श्री बिशनसिंह जी एडवोकेट, श्री गिरधारी लाल जी आर्य प्रधान, श्री रामजीदास कालड़ा जी तथा श्री उमेद शर्मा जी के भाषणों द्वारा आर्य वीरों के अन्दर एक जोश की लहर पैदा करने की कोशिश की गई। इस कार्यक्रम में ५० आर्य वीर तथा लगभग ३० आर्य समानियों ने भाग लिया।

—धर्मपाल आर्य
शिक्षक "आर्य वीरदल"
कैथल (कुरूक्षेत्र)

प्रमुख सिख विद्वानों से पांच प्रश्न

(लेखक स्वर्गीय स्वामी अमृतानन्द युमनानगर)

पांचवां प्रश्न

गतांक से आगे

वेष या पांच ककार

पांच ककार अर्थात् केश, कच्छा, कड़ा, कंघा, कृपाण का धारण करना मनुष्य के लिए आवश्यक है या नहीं।

उत्तर— इन केस आदि का मानव धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, हर मनुष्य अपनी रुची अनुसार या देश काल अनुसार इन को धारण करे या न करे इसमें कोई बाधा या पाप पुण्य नहीं। हम देखते हैं कि मनुष्य के अतिरिक्त भेड़ बकरी आदि के शरीर पर भी केश हैं। यदि इनका धारण करना धर्म माना जाए तो सिख भाई इनके केसों को क्यों काटते और कटवाते हैं? इनके बालों की चीजें और वस्त्र आदि क्यों प्रयोग मे लाते हैं? यदि मनुष्य के साथ ही इन का अटूट सम्बन्ध है तो स्नान करने और कंघा करने मे पाप क्यों नहीं मानते, जबकि ऐसी करने से बाल टूटते हैं।

गुरु बाणी से इस विषय पर कुछ प्रमाण लिखते हैं जो इस पर अच्छा प्रकाश डालते हैं।

गुरु नानक देव जी ने कहा—

नानक सच्चे ज्ञान बिन, क्या टिका क्या तग। १

अर्थात्— जब तक मनुष्य में ईश्वर, भक्ति नहीं, मैको और धर्म कर्म नहीं उनके लिए माथे पर टिका और जनेऊ बेकार है।

बहु भेख किया देही दुख दिया,
सहुवे जियां अपना किया।

अर्थात्—मनुष्य ने वेष बदल लिया या भिन्न-२ मजहबी निशान बना लिए ऐसा करके उसने शरीर पर बोझ डाल कर दुःख ही उठाया। यदि उसका आचार या चलन नेक नहीं तो जीव को अपने बुरे कर्मों का फल दुःख सहना ही पड़ेगा।

करतुत पशु को, मानुष जाति,
लोक पचारा करे दिन राति।
बाहिर भेख अन्तरि मल माया,
छुपसि नाहीं कछु करे छुपाया।

अर्थात्— जो मनुष्य होकर काम पशुओं से भी नीच करता है लोगों को दिखावे से धोखा देता है, वेष बदल कर बाहर से तो साधु सा दिखाई देता है परन्तु मन में तो मैल भरी है, परमात्मा से वह कुछ भी छुपा नहीं सकता इसको अपने कर्म का फल भुगतना ही पड़ता है।

भेख अनेक अग्नि नहीं बुझे;
कोटि उपाव दरगह नहीं सिझे।

अर्थात्— वेष चाहे अनेक बदल ले, इससे पाप की आग नहीं बुझती। लाखों उपाय करे ईश्वर के न्याय नियम से बच नहीं सकता।

तीर्थ कोटि किये सनान,
दिवे बहु दान; महा व्रत धारे।
देस फिरयो कर वेष तपोधन,
केस धरे न मिले हरि प्यारे।

गुरु गोविन्दसिंह जी कहते हैं कि चाहे कोई अनेक तीर्थों का स्नान करले, दिखावे के दान करता फिरे, बड़े-२ व्रत रखे, देश देशान्तरों में फिरे तपस्वियों का रूप बना ले, सिर पर केश रख ले या बाल बढ़ा ले इन बाहर की बातों से परमात्मा के दर्शन नहीं होते।

बाल वधाईये पाईये, बड़ जटा पलासी।
[वारां भाई गुरदास]

अर्थात्—बाल बढ़ाने से यदि परमात्मा के दर्शन होते हैं तो बड़ और पलाश के वृक्षों को सबसे पहले दर्शन होंगे क्योंकि उनकी जटा बहुत लम्बी है।

अन्त में

हमारी प्रमुख सिख विद्वानों से प्रार्थना है कि जब गुरु और गुरु-वाणी वेदों को ईश्वरीय ज्ञान, एक ईश्वर भक्ति, भगवान राम और कृष्ण की संतान और गऊ, ब्राह्मण का आदर करना मान रहे हैं और अपने सिखों को उपदेश दे रहे हैं तो आप इनको प्रमाण क्यों नहीं मानते? इसके उलट ग्रन्थ को गुरु, मीठे जल को अमृत पांच ककार का धारण करना धर्म, कड़ाह प्रसाद को कृपाण भेंट करना अनेकों के नाम की अरदास, ग्रन्थ को चंवर झुलाना, द्वारा साहिब के आगे बच्चे छिकाना गुरु वाणी मे कहां लिखा है? यदि नहीं लिखा तो गुरु आज्ञा और सिद्धांत विरुद्ध क्यों करते हो?

हमें आशा है कि इन-इन प्रश्नों का उत्तर हठ धर्मी को छोड़ कर सुधार के हित बड़े प्यार से दिया जावेगा।

(शुभं भवतु ओ३म्)

ईश्वर—प्रेम

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिः इन्द्र जनुषा सनादसि।
युधेदापित्वमिच्छसे॥

(ऋ० ८-२१-१३, अथर्व० २०-११४-१)

(१)

हे पिता परमेश्वर तुम स्वयं ही सक्षम हो सबल हो।
तुम हो पिता अनुपम तुम निर्भय और अचल हो॥
तुम स्वभाव से ही शत्रु रहित हो हे मेरे ईश्वर,
तुम सदा से ही बन्धु रहित भी हो हे जगदीश्वर।

(२)

तुम्हारा कोई शत्रु नहीं और कोई मित्र भी नहीं;
तुम तो हो महान् शक्तिशाली केवल पवित्र ही नहीं।
किसी सहारे की भला आवश्यकता क्योंकर होगी?
तुम्हें तो पल भर भी भला पक्षपात क्योंकर होगी?

(३)

कोई पिता तुम्हारा यहां पर नियन्ता नहीं है,
देव तुम्हारा कोई यहां पर अभिन्ता नहीं है।
तुम नियन्तृरहित अनादि काल से सदा सर्वदा,
तुम पर भला क्योंकर फिर आऐगी सपदा-विपदा।

(४)

तुम कभी जन्म नहीं लेते सदा से ही बस सनातन हो,
तुम हो चिर नूतन, तुम मगर पूर्व पुरातन हो।
इन सांसारिक बाधाओं से लड़कर तुम मिलते हो;
संघर्ष के बाद तुम हृदय में फूल सम खिलते हो।

(५)

युद्ध विजयी होकर तुम्हारे प्यारे बनते हैं,
बाधाओं के विजेता के आप सहारे बनते हैं।
शक्ति दो संघर्षों से लड़कर तुम्हारा प्यारा बनूं,
विवेक दो तूफानों से निकलकर किनारा बनूं।

—भगवान् "चैतन्य" एम० ए० साहित्यालंकार
२८१/एस-२ सुन्दर नगर-४ मंडी (हि०प्र०)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समाचार

आर्य समाज का प्रतिनिधि मण्डल गृह सचिव से मिला

अजमेर में मनाई जाने वाली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध में केन्द्र और राज्य सरकार किस प्रकार की सहायता दे सकती है; इस बारे में आर्य समाज का एक शिष्ट मंडल भारत सरकार के गृह सचिव श्री टी० एन० चतुर्वेदी से १९ अगस्त को मिला। शिष्ट मण्डल ने अपनी ओर से शताब्दी के सम्बन्ध में गृह सचिव को ज्ञापन दिया। इसके साथ ही ऋषि दयानन्द की जीवनी, विचारधारा तथा दार्शनिक सिद्धान्तों पर शोध कार्य के लिए स्थापित किये जाने वाले दयानन्द रिसर्च फाउन्डेशन के सम्बन्ध में भी एक ज्ञापन दिया। गृह सचिव ने दोनों ज्ञापनों को पढ़कर यह आश्वासन दिया कि इस विषय में केन्द्रीय सरकार और राजस्थान की सरकार की ओर से जो भी कुछ किया जा सकता है, मैं उसमें अपनी ओर से पूर्ण सहयोग दूंगा। उन्होंने निर्वाण शताब्दी के अवसर पर अजमेर आने का निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार किया।

इस शिष्ट मण्डल का नेतृत्व डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने किया। शिष्ट मण्डल में प्रो० वेदव्यास, प्रो० शेरसिंह, श्री दरबारी लाल, श्री शामलाल मलिक, श्री देशराज बहल, श्री पालीवाल, और श्री रामनाथ सहगल आदि शामिल थे।

निर्वाण शताब्दी पर डाक टिकट

ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के कार्यकर्ता प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह जी ने संचार मन्त्री से भेंट करके निर्वाण शताब्दी के अवसर पर ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में एक डाक टिकट जारी करने का अनुरोध किया। डाक तार संचार मन्त्री श्री वी० वी० गाडगिल ने कहा कि यह बहुत उपयोगी सुझाव है, परन्तु इसे कार्यान्वित करने के लिए अब समय बहुत थोड़ा रह गया, फिर भी मैं अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करूंगा कि ऋषि दयानन्द जैसे महान् व्यक्ति के निर्वाण की शताब्दी के अवसर पर डाक टिकट जारी हो सके। उन्होंने प्रो० साहब से कहा कि उस डाक टिकट का डिजाइन सुझाने में आप हमारा सहयोग करें तो सरकार को तत्सम्बन्धी निर्णय करने में सुविधा होगी।

दान और आटा तथा घी कहां भेजें ?

अजमेर से प्रकाशित होने वाले दैनिक "न्याय" ने शिकायत की है कि ऋषि निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में अनेक लोगों ने और अनेक संस्थाओं ने अपनी ओर से अलग-२ अपीलें जारी कर रखी हैं। इसलिए जनता दुविधा में है कि वह दान की राशि तथा आटा आदि कहां भेजें।

इसके उत्तर में निवेदन है कि ऋषि निर्वाण शताब्दी अजमेर में मनाई जा रही है और इस शताब्दी समारोह के सम्बन्ध में समस्त गतिविधियों का संचालन दो ही कार्यालयों से हो रहा है। मुख्य कार्यालय अजमेर में है, इसका पता है—ऋषि निर्वाण शताब्दी समिति कार्यालय दयानन्द आश्रम केसरगंज अजमेर, (राजस्थान) उपकार्यालय दिल्ली में है, जिसका पता है—महर्षि दयानन्द निर्वाण समिति, आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१, इसलिए आर्य जनता को बिना किसी भ्रम में पड़े अपने पवित्र दान की राशि ऋषि लंगर के लिए आटा, चावल, घी और यज्ञ के लिए हवन सामग्री आदि इन्हीं दोनों कार्यालयों के पते पर भेजनी चाहिए।

डाक्युमेंटरी फिल्म बनेगी

शताब्दी समारोह के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह ने केन्द्रीय सूचना मन्त्री श्री हरिकिशन लाल भगत से भेंट करके समारोह के कार्यक्रम के सम्बन्ध में आकाशवाणी और दूरदर्शन के सहयोग के लिए और डाक्युमेंटरी फिल्म बनाने का अनुरोध किया। साथ ही सूचना मन्त्री को शताब्दी समारोह के अवसर पर अजमेर पधारने का निमन्त्रण भी दिया। सूचना मन्त्री श्री भगत ने सहर्ष निमन्त्रण स्वीकार करके समारोह में उपस्थित होने की स्वीकृति दी और आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के पूर्ण सहयोग का और डाक्युमेंटरी फिल्म का वचन दिया। साथ ही यह भी कहा कि निर्वाण शताब्दी से पूर्व इन दोनों संचार माध्यमों पर ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के कृतित्व के सम्बन्ध में विशिष्ट वार्तायें प्रसारित करने की व्यवस्था भी करेंगे।

शताब्दी समारोह पर अजमेर पहुंचने वाले आर्य यात्रियों से

ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी में अब केवल दो मास शेष बचे हैं। आपने अपने यहां से काफी बड़ी संख्या में अजमेर पहुंचने का कार्यक्रम बना लिया होगा, या बना रहे होंगे। स्पेशल बसों और ट्रेनों से आने वाले आर्य बन्धुओं की सेवा में निवेदन है कि वे निम्न बातों का ध्यान रखें :—

१- जिस स्पेशल बस में आप अजमेर पहुंचें उसमें अपने साथ कम से कम एक बोरी आटा, एक मन दाल तथा एक टीन घी अवश्य लेकर आवें।

२- यदि आपकी स्पेशल ट्रेन अजमेर आ रही हो तो उसमें कम से कम १० बोरी आटा तथा १० टिन घी अपने साथ लाना न भूलें।

३- नवम्बर के शुरू में अजमेर में हल्की सर्दी होगी इसलिए हल्का सा बिस्तर भी साथ लावें।

४- हर एक यात्री अपने भोजन करने के लिए एक प्लेट, दो कटोरी, एक गिलास, एक चम्मच अवश्य लावें, जिससे परोसने में सुविधा हो। ऋषि लंगर में भोजन सर्वथा निःशुल्क होगा।

५- अपने साथ यदि आटा और घी न ला सकें तो अपनी श्रद्धा के अनुसार उचित राशि भेज दें जिस बाजार से खरीदा जा सके। ऋषि लंगर में प्रत्येक आर्य का योग होना आवश्यक है।

गाजियाबाद से १० हजार रुपये

गाजियाबाद के समस्त आर्य समाजों की एक सम्मिलित सभा में निर्वाण शताब्दी अजमेर को सफल बनाने के प्रश्न पर गम्भीरता से विचार किया गया। धन संग्रह हेतु एक उपसमिति का निर्माण किया गया और श्री प्रो० रत्नसिंह को उसका संयोजक नियुक्त किया गया। शीघ्र ही १० हजार रुपये की राशि एकत्रित करने का प्रयास आरम्भ हो गया है। भारी संख्या में आर्यों के अजमेर पहुंचने की आशा है।

स्थानीय दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम के आचार्य पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने घोषणा की है कि २२ सितम्बर को पूर्णिमा के दिन सन्यास आश्रम के १५ सन्यासियों की एक टोली गाजियाबाद से पदयात्रा आरम्भ करेगी। यह टोली मार्ग में वैदिक धर्म का प्रचार करती हुई निर्वाण शताब्दी में भाग लेने के लिए ३० अक्टूबर को अजमेर पहुंचेगी।

निर्वाण शताब्दी साइकिल यात्रा

जैसा कि आपको विदित ही है कि हमारी भारत साइकल यात्रा वैदिक धर्म प्रचारार्थ चल रही है जिसकी समाप्ति महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर अजमेर में दीपावली ३ से ६ नवम्बर १९८३ पर होगी।

हमारी यात्रा महेश्वर से इस संकल्प के साथ कि १०० दिन में १०० गांव और १०० हजार आर्य समाज के दस नियम वितरण के साथ प्रचार हो हमारे साधन, साइकल, ध्वनि विस्तारक यन्त्र, शब्द संग्रह यन्त्र, आकाशवाणी श्रवण यन्त्र, छाया चित्र यन्त्र है. दैनिक यज्ञ प्रातः सांय, प्रभात वंदना प्रभात फेरी, प्रचार सभा, सिनेमा स्लाइड जनसम्पर्क, माध्यम रहेंगे। व्यवस्था होने पर अन्य स्थानों पर भी भाषण के आयोजन रखे जा सकेंगे।

राजपाल आर्य
वैदिक आर्य आश्रम (म० प्र०)

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

गढी बोहर जिला रोहतक :—

प्रधान— मा० चन्दाराम आर्य—उपप्रधान चौ० सूबेसिह, मन्त्री—श्री लालचन्द आर्य—कोषाध्यक्ष— श्री रणवीर शास्त्री

हरिसिह कालोनी रोहतक

प्रधान— सुदर्शनदेव आचार्य, उपप्रधान—रामचन्द्र आर्य, मन्त्री—उमेदसिह, उपमन्त्री—ओमदर्शन कोषाध्यक्ष—श्री सुलतानसिह

खेल बाजार पानीपत जिला करनाल

प्रधान- श्री कृष्णलाल जी आर्य, उपप्रधान—श्री डा० बिहारीलाल, मा० दयालचन्द आर्य, मन्त्री— श्री सुलेश आर्य, उपमन्त्री—श्री देसराज आर्य, कोषाध्यक्ष—ला० जमनादास जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री देवराज आर्य, भण्डारी— श्री गुरदयाल जी आर्य, संरक्षक—श्री उत्तमचन्द जी खरर तथा श्री जगन्नाथ जी आर्य।

श्रद्धानन्द पुरम (अर्बन एस्टेट) गुड़गांव

प्रधान—श्री एल, डी, गुलियानी, उपप्रधान—श्री सत्यपाल बहल, मन्त्री—लाजपत आर्य, प्रचारक मन्त्री सेवक रामदास जी, उपमन्त्री—श्री महेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री हरिचन्द ग्रोवर, पुस्तकाध्यक्ष—श्री पुरुषोत्तम दास।

बिसोहा जिला रोहतक

प्रधान—श्री चन्द्रसिह, उपप्रधान—श्री उमरावसिह जी, मन्त्री—श्री बुधराम जी, उपमन्त्री—श्री रामकुमार जी, कोषाध्यक्ष—श्री रूगनाथ सिह जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामनारायण।

प्रेम मौहल्ला तावडू जिला गुडगाव

प्रधान—श्री मोतीराम जी अग्रवाल, उपप्रधान—श्री तीर्थराम जी, मन्त्री—श्री आदर्श गर्ग, उपमन्त्री—श्री रामेश्वर जी, कोषाध्यक्ष—हुकमचन्द जी अग्रवाल।

आर्यनगर जिला भिवानी

प्रधान—श्री दयानन्द जी आर्य, उपप्रधान—श्री दरयावसिह आर्य, मौहब्बतसिह आर्य मन्त्री—श्री हरिदत्त आर्य, उपमन्त्री—श्री हीरासिह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री सत्यदेव आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमति ओमदेवी जी आर्य।

कलसाना जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान—श्री जयदयाल जी आर्य, उपप्रधान—श्री गुरदित्तामल आर्य, मन्त्री—श्री साधुराम जी आर्य, उपमन्त्री—श्री जगदीशचन्द आर्य; कोषाध्यक्ष—श्री रविदत्त जी आर्य, प्रचारमंत्री—श्री जसबीरसिंह जी आर्य।

कानूगोयान मौहल्ला पलवल जिला फरीदाबाद

शाखा नायक—श्री सुरेशचन्द्र गुप्त, मन्त्री—श्री संजीव मंगला "मानुष" कोषाध्यक्ष—श्री अशोक मंगला "आर्य" शिक्षक—श्री प्रकाश मंगला, वर्ग नायक—यशपाल मंगला, अजय मंगला एवं रमेश गुप्ता।

आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र

प्रधान—श्री रातीर्थ जी, उपप्रधान—श्री सहदेवसिंह, मन्त्री—श्री कृष्णपाल, कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रसिंह जी पुस्ताकाध्यक्ष।

कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत

प्रधान—सुभाषणी देवी, उपप्रधान—मुख्याध्यापिका प्रियवंदा जी, मन्त्री—श्री समरसिह वेदालंकार, उपमन्त्री—श्री भद्रसेन जी शा..., श्री सूबेसिह जी कोषाध्यक्ष।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश का चुनाव

अध्यक्ष—ब्र० राजसिह आर्य, उपाध्यक्ष—श्री हरिदेव आचार्य, धर्मवीर व्यायामचार्य, महामन्त्री—अनिलकुमार आर्य, उपमन्त्री—विश्वनाथ आर्य, गुलाबसिह राघव, पुस्तकाध्यक्ष—जयप्रकाश आर्य, प्रचार मन्त्री—चन्द्रमोहन आर्य, कार्यालय मन्त्री—चन्द्रमोहन आर्य; सगठन मन्त्री—देव शर्मा शास्त्री, प्रधान—व्यायाम शिक्षक—मुन्नमलमल आर्य, व्यायाम शिक्षक रन्तिदेव आर्य, बौद्धिकाध्यक्ष—पं० ब्रह्म प्रकाश वागीश।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] P/RTK 40 फोन ७६१२ [illegible]



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—ब० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणधीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ३६ २१ सितम्बर १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी
अजमेर और हरयाणा

महर्षि दयानन्द जी तथा आर्यसमाज की कृपा से सारे संसार में जागृति आयी और प्राणी मात्र का कल्याण हुवा है। किन्तु हरयाणा प्रान्त जो सदा से शाकाहारी और पाखण्ड का विरोधी रहा है। अतः इस प्रदेश में आर्यसमाज का प्रचार सब स्थानों से अधिक हुवा है। अतः आज भी इस प्रदेश में सब से अधिक गुरुकुल तथा आर्य संस्थायें हैं और यह प्रदेश परीक्षा का समय आने पर यथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, हिन्दी सत्याग्रह और गोरक्षा सत्याग्रह में सबसे आगे रहा है। देश टुकड़े करने वाले अकाली देशद्रोही आन्दोलन का मुँह तोड़ जवाब केवल हरयाणे ने ही दिया है। इस समय महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी महोत्सव अजमेर हमारे शिर पर अर्थात् दीपमाला के अवसर पर ३, ४, ५ और ६ नवम्बर को होने वाला है। इसे सफल बनाने के लिए हरयाणा वासियों को तन मन और धन से सब से अधिक सहायता करनी चाहिये। सहायता के लिये एक अपील सर्वहितकारी में निकाली थी कि १० हजार व्यक्ति कम से कम प्रत्येक व्यक्ति एक सौ एक रुपया शीघ्र मेरे पास अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक में भेज देवें किन्तु जैसी मुझे आशा थी इसका यथोचित उत्तर मिला नहीं। हमारी आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी निश्चय किया है कि हम इस महोत्सव को सफल बनाने के लिये २ लाख रुपया एकत्रित करके अजमेर भेजें। हरयाणा प्रान्त के १२ जिले हैं। प्रत्येक जिला बीस-बीस हजार रुपया इकट्ठा करके देवें तो यह कार्य सरलता से हो सकता है। रोहतक सोनीपत दोनों जिले बाढ़ के पानी में डूबे हुये हैं उनकी ऐसी दुर्दशा है कि उन से हमारी मांगने की हिम्मत भी नहीं होती किन्तु इतने पर भी मेरा विचार ही नहीं पूर्ण आशा है कि ये दोनों जिले पीछे नहीं रहेंगे। क्योंकि इन जिलों के कार्यकर्त्ता किसी से कम उत्साही नहीं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान, मन्त्री कोषाध्यक्षादि सभी इस कार्य में जुटे हुये हैं। सब से पहले सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा उनकी धर्मपत्नी प्रभात शोभा विद्यालंकार ने शताब्दी के लिये ५२०० रुपया नकद दान दिया। इन का परिवार भी बड़ा उत्साही है। इनके परिवारिक जनों ने आर्यसमाज का कार्य करने के लिये नई कार खरीद कर भेंट की जिसके द्वारा ये रात दिन भाग दौड़ कर रहे हैं। इनके परिवार ने आर्यसमाज बेरी का मन्दिर बनाने के लिये १०००० रुपया नकद दिया। सत्यार्थप्रकाश ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण करने के लिये ३००० रुपया नकद दिया। हमारे स्नातकों और आर्य भाईयों ने मुझे नई मोटर गाड़ी भेंट करने की योजना बनाई उसमें भी प्रो० शेरसिंह का मुख्य हाथ था। स्वयं भी इन्होंने ११०० रुपया नकद दिये तथा लगभग २०००० रु० अन्य आर्य भाईयों से इकट्ठा करके नई मैटाडोर गाड़ी मुझे भेंट करने के लिये खरीद ली है। इन्हीं दिनों मेरे अस्वस्थ होने से सब ने मिलकर प्रो० शेरसिंह जी को शताब्दी महोत्व को सफल बनाने के लिये कार्यकर्त्ता प्रधान बना दिया है। ये सोने पर सुहागे का काम देगा। ये रात दिन निर्वाण शताब्दी को सफल बनाने के लिये जी जान से लगे हुये हैं कभी बम्बई कभी गंगानगर तथा कभी हरयाणा और दिल्ली में इन की यात्रायें चल रही हैं। ये हरयाणे के आदर्श प्रचलन हैं। क्रमशः

—[illegible]नन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर को सफल करने के लिए

हरयाणा की आर्य जनता जन, धन से पूरा सहयोग करेगी

—केदारसिंह आर्य कार्यालय अध्यक्ष द्वारा

रोहतक १६ सितम्बर—आज से १०० वर्ष पूर्व आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राजस्थान की ऐतिहासिक नगरी अजमेर में दीवाली के दिन सन् १८८३ में विषपान करके विष देने वाले जगन्नाथ को प्राणदान करके निर्वाण प्राप्त किया था। उसी उपलक्ष में महर्षिदयानन्द के जीवन काल में परोपकारिणी सभा की ओर से तथा सार्वदेशिक सभा एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से ३ से ६ नवम्बर ८३ को अन्तर्राष्ट्रीय रूप में निर्वाण शताब्दी समारोह धूमधाम से मनाई जा रही है। इसकी अध्यक्षता आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती करेंगे। इस समारोह को सफल करने तथा प्रबन्ध हेतु धन संग्रह के लिए आपने भारत वर्ष के कोने-कोने का दिनरात भ्रमण किया। फल स्वरूप आर्य जगत् में जागृति आ गई और सर्वत्र सहयोग करने का वातावरण तैयार होने लग गया। परन्तु श्री स्वामी जी महाराज अत्याधिक भागदौड़ में व्यस्त रहने से अस्वस्थ हो गये। शताब्दी की तैयारी को निरन्तर जारी रखने के लिए शताब्दी समारोह की बैठक में सर्वसम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री को कार्यकर्त्ता अध्यक्ष मनोनीत किया है। स्वामी ओमानन्द जी के आदेशानुसार प्रो० शेरसिंह जी ने गत सप्ताह १० से १८ सितम्बर तक निम्न आर्य समाजों का तूफानी भ्रमण करके धन संग्रह कार्य किया है :—

आर्यसमाज अलवर, जयपुर तथा श्री गंगानगर

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट के साथ राजस्थान के प्रमुख आर्यसमाज अलवर, जयपुर, अजमेर तथा श्री गंगानगर प्रो० शेरसिंह ने १०, ११ सितम्बर का भ्रमण किया। प्रो० साहब ने यहाँ के अधिकारियों से शताब्दी समारोह को सफल करने तथा बाहर से आने वाले यात्रियों का स्वागत करने का अनुरोध किया। इनकी अपील पर अपने अपने नगरों से एक लाख रुपया संग्रह करके भेजने का वचन दिया।

प्रो० शेरसिंह १२ सितम्बर को दोपहर आर्यसमाज सोनीपत शहर पधारें। यहां सोनीपत के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों ने प्रधान तथा मन्त्री पर आधारित एक उप समिति का गठन किया तथा प्रधान जी को विश्वास दिलाया कि अधिक से अधिक धन संग्रह करके शताब्दी के लिए भेज देगें तथा अजमेर में भारी संख्या में पहुँचेंगे।

सोनीपत के पश्चात् सभा प्रधान जी दोपहर बाद ३.३० वजे आर्य हायर सेकण्डरी स्कूल पानीपत पधारें। जहां सभा के कोषाध्यक्ष श्री रामानन्द जी, स्कूल के प्रिंसिपल श्री लाभसिह जी तथा आर्यसमाज खेल बाजार, माडल टाउन, पटेल नगर के अधिकारियों ने हार्दिक स्वागत किया तथा पानीपत से ११ हजार रुपये संग्रह करके भेजने का आश्वासन दिया और विशेष बसों द्वारा अजमेर पहुंचने की घोषणा की। पानीपत के बाद प्रधान जी आर्यसमाज घरोण्डा के अधिकारियों

(शेष पृष्ठ ५ पर)

जीवन-रथ का मार्ग

अन्तर्यात्रा

भगवान "चैतन्य" एम०ए० साहित्यालंकार (हि०प्र०)

वेद में जीवात्मा को हंस की उपमा दी गई है। जिस प्रकार लक्ष्य प्राप्त न होने तक हंस अपने दोनों पंखों से गतिमान रहता है किन्तु गन्तव्य प्राप्त हो जाने पर वह शान्त और स्थिर हो जाता है। उसका भटकाव समाप्त हो जाता है। ठीक इसी प्रकार हमारा जीवात्मा भी शरीर के श्वास-प्रश्वास रूपी पंखों पर आरूढ़ होकर निरन्तर तभी तक अनेक योनियों में आता जाता रहता है जब तक इसका साक्षात्कार उस परमपिता परमात्मा से नहीं हो जाता। परमात्मा ने हमें इस संसार में दुःख उठाने के लिए कदापि नहीं भेजा है लेकिन हमारी दौड़ स्वयं ही जब विपरीत दिशा की ओर हो जाती है तो हमें दुःख मिलना भी स्वाभाविक हो जाता है। अग्नि में हाथ डालें और वह जले न, यह कैसे हो सकता है? सांसारिक विषय वासनायें अग्नि से क्या कम हैं? जैसा हमारा लक्ष्य होता है—वैसे ही हमारे प्रयास भी होते हैं। जैसे हमारे प्रयास होंगे वैसी हो हमें प्राप्ति भी होगी। क्योंकि जीवात्मा का स्वभाव आनन्द में रहना है, उस परमेश्वर के भूमा सुख के सान्निध्य में रहना है, अतः वह तब तक गतिमय रहेगी जब तक उसे वह स्थिति प्राप्त नहीं हो जाती है।

इहैव सन्तोऽथ विद्मस्तद्वयम्, न चेदवेदीर्महती विनष्टिः।
ये तद्विदुरमृतास्ते भवन्ति, अथेतरे दुःखमेवापि यन्ति॥

प्रभो इसी जन्म के अन्दर यदि हम आपको साक्षात कर लेवें तो अच्छी बात है, अन्यथा महान् अनर्थ होगा। जो जन आपको जान जाते हैं वे अमर हो जाते हैं, दूसरे दुःख के भागी बनते हैं। अर्थात् इस जीवात्मा का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है और इस हंस रूपी जीवात्मा को यह मनुष्य शरीर रूपी पंख केवल मात्र इसलिए दिये हैं कि वह उस स्थिति विशेष को प्राप्त कर ले अन्यथा महान् अनर्थ होगा क्योंकि पुनः न जाने कितनी और योनियों में भटकना पड़ेगा।

मानव जीवन के इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विलम्ब करना स्वयं अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारने के समान है। मल-विक्षेप एवं आवरण को हटाने के लिए हृदय को प्रकाशित करना होगा। उस परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित आत्मा की स्थिति अतुलनीय हो जाती है क्योंकि वह प्रकाश साधारण प्रकाश नहीं किन्तु—

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं, नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं, तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

उस परमात्मा के प्रकाश के तुल्य न तो इस सूर्य का प्रकाश है, न चन्द्रमा और तारों का और न ही बिजली का। अग्नि का तो कहना ही क्या? उसके प्रकाश से ही सब प्रकाशित हैं। उस प्रकाश को प्राप्त करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहना चाहिये। हमारा एक-एक क्षण उसके ही चिन्तन में व्यतीत होना चाहिये अन्यथा विनाश सामने है। मृत्यु निश्चित है। सांसारिक दुःख, कष्ट, क्लेश आदि भी मृत्यु के समान ही हैं। वेद माता कहती है कि मृत्यु से छुटकारा पाने का केवल मात्र एक ही रास्ता है और वह है उस प्रभु को प्राप्त करना। और कोई रास्ता नहीं है।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय॥

हमें यह मानव शरीर मिला है। यदि हम इसका सदुपयोग करें तो हम उस परमात्मा को पा सकते हैं। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। इसी बात को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन शब्दों में कहा है—'मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र मगर भोगने में परतन्त्र है'। हम अच्छे मार्ग पर चल रहे हैं या बुरे मार्ग पर इसकी पहचान भी हमें स्वयं कदम-कदम पर मिलती रहती है। एक व्यक्ति को बुखार हो जाता है। बुखार इस बात का द्योतक है कि शरीर के भीतर खराबी पैदा हो गई है और खराबी का कारण वह व्यक्ति स्वयं है। उसके वश में था कि वह अपने शरीर को इस स्थिति तक नहीं पहुंचने देता। उस व्यक्ति द्वारा शरीर के प्रति की गई किसी न किसी अनियमितता का परिणाम ही बुखार के रूप में उसे भोगना पड़ा। ठीक इसी प्रकार हमें अपने जीवन के सम्बन्ध में एक मोटी सी कसौटी रखनी चाहिये कि यदि हम सुखी हैं, शान्त हैं तो समझिए कि हम ठीक मार्ग पर चल रहे हैं लेकिन इसके विपरीत यदि हम अशान्त हैं तो यह इस बात का द्योतक है कि हमारा जीवन ठीक पथ पर नहीं चल रहा। हम किसी गलत रास्ते पर चल निकले हैं क्योंकि गलत का परिणाम ही दुःख होता है। हम किसी गन्दे स्थान की ओर जा रहे हों तो दूर से ही दुर्गन्ध हमें इस बात की सूचना दे देगी और इसके विपरीत यदि हम किसी फूलों से भरे बाग की ओर जा रहे हों तो सुगन्ध हमें इस बात की सूचना भी दे देगी। मनुष्य को कदम-कदम पर स्वयं अपने आप का पता लगता रहता है। मनुष्य स्वयं को जितना स्वयं समझ सकता है उतना और कोई नहीं समझ सकता। इसीलिए सत्य मार्ग का यह जो सफर है—प्रभु प्राप्ति का यह जो अभियान है इसका संचालक स्वयं मनुष्य ही है। इस मार्ग पर मनुष्य को अकेले ही चलना है क्योंकि यह दौड़ बाहर की ओर नहीं बल्कि भीतर की ओर है। मनुष्य के अपने भीतर ही सब-कुछ है। भीतरी खजानों को प्राप्त करने के लिए मनुष्य कमर कस ले तो उसे जो कुछ मिलेगा, जितना कुछ मिलेगा, उसे पाकर वह आश्चर्य चकित हो जाएगा। लेकिन हमारी दौड़ केवल बाहर की दौड़ है। हम भीतर की ओर चल ही नहीं पाते हैं। बाहरी वस्तुएं संचित करने में दिन-रात एक कर रहे हैं मगर भीतर जो अक्षय भण्डार है उससे अपरिचित हैं।

हमारे सभी क्रिया कलाप शरीर तक ही सीमित हैं। यदि इससे आगे कुछ चलाते भी हैं तो मन तक ही सीमित रह जाते हैं। उससे आगे जो हमारा वास्तविक स्वरूप है उससे हम अनभिज्ञ हैं। कोई विरला ही है जो उससे परिचित होना चाहता है। इससे बड़ा भला और क्या आश्चर्य होगा कि हम स्वयं से ही अपरिचित हैं? हम मात्र यह शरीर तो नहीं हैं। हम यदि शरीर होते तो यह तो मृत्यु के बाद भी विद्यमान रहता है लेकिन उसे तो संबन्धी लोग जला देते हैं। हम शरीर नहीं शरीर तो हमारा है। तो फिर हम क्या हैं? अन्तर यात्रा से हमें इसी का पता लगेगा। यह शरीर रूपी रथ तो सजाना-संवारना है ही। इसे स्वस्थ और सबल भी बनाना है। मगर इस रथ पर बैठकर जिस मालिक ने अपने लक्ष्य तक पहुँचना है उसे भी तो उसके लक्ष्य पर पहुंचाना है। आज सभी उस लक्ष्य को भुला कर चल रहे हैं। यह कैसी दौड़ है? हमें यह कहां ले जाएगी? निश्चित मानिये यह दौड़ हमें मृत्यु तक तो ले जाएगी मगर अमरत्व तक नहीं। अमरत्व पाने के लिए भीतर की ओर चलना होगा। श्रद्धा और विश्वास के साथ निरन्तर चलना होगा। सुख और अमरत्व प्राप्त करने का और कोई रास्ता है ही नहीं। यह भी ठीक है कि ऐसे व्यक्ति बहुतायत में नहीं हैं।

पराञ्चि खानि तृणवत् स्वयंभू. तस्मात् पराङ्पश्यति नान्तरात्मन्।
कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैच्छद् आवृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्॥

कठोपनिषद् में कहा है कि स्वयम्भू ने इन्द्रियों को बहिर्मुखी बनाया है। इसलिए प्राणी बाहर की ओर देखता है, अपने भीतर नहीं देखता। संसार में कोई विरला धीर पुरुष ही आत्मा और अमरत्व की इच्छा करता हुआ आंखें बन्द करके अन्तरात्मा को देखता है।

हमारे समाज में ऐसे मनुष्यों का बाहुल्य है जो मनुष्य और समाज की शान्ति तथा व्यवस्था के लिए रोटी, कपड़ा और मकान का नारा लगाते हैं। उनका यह नारा अपने स्थान पर ठीक है किन्तु ये वस्तुयें हमें दुःख से तो दूर रख सकती हैं परन्तु चिर सुख का सम्पादन नहीं कर सकती। यह सब शरीर की आवश्यकतायें हैं, पूरी होनी ही चाहियें। रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध हो जाने पर भी हम देखते हैं कि इन वस्तुओं से मनुष्य सदा के लिए सुखी नहीं हो जाता है। उसकी दौड़ समाप्त नहीं हो जाती है। शरीर की आवश्यकतायें पूरी हो जाने पर मन अपनी आवश्यकतायें प्रस्तुत करता है। इसके लिए मनुष्य साहित्य संगीत एवं कला आदि से अपना सम्पर्क स्थापित करता है। भावनाओं का आदान-प्रदान करता है। अपने लिए नए-नए ही भौतिक प्रसाधन जुटाता है। लेकिन जहां शरीर पुराने में अर्थात् एक 'रुटीन' में बन्धना पसन्द करता है उसके एकदम विपरीत मन प्रतिक्षण नवीनता चाहता है। वह पुराने में बन्धना नहीं चाहता बल्कि बदलाव चाहता है।

(बाकी पृष्ठ पांच पर)

सम्पादकीय

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह निकट आ रहा है। अतः मैं हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से आग्रह पूर्वक निवेदन करता हूँ कि वे इसमें भाग लेने की तैयारी पूरी शक्ति के साथ आरम्भ कर देवें।

माननीय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा के आर्यसमाजों का भ्रमण करके शताब्दी समारोह का सन्देश तथा कार्यक्रम विस्तारपूर्वक बताते हुए धनसंग्रह हेतु २, ५, ११, २१, ५१, १०१ रुपयों की रसीद बुकें (शताब्दी नोट) भी वितरित किये हैं। जिन आर्यसमाजों के पास यह रसीद बुकें अभी तक न पहुंची हों, वे अपनी सुविधा के अनुसार तुरन्त सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक को पत्र लिखकर मंगवा लेवें और धन संग्रह आरम्भ कर देवें। संग्रह की गई राशि का धन स्वामी ओमानन्द जी महाराज को अथवा सभा कार्यालय रोहतक में १५ अक्तूबर से पूर्व जमा करवा देवें। धन राशि के साथ रसीद बुकों के अधपन्ने भी अवश्य जमा करवायें ताकि जिनसे रसीदें प्राप्त की हैं उन्हें हिसाब देने में सुविधा रहे। धन जमा करवाते समय प्राप्ति की रसीद अवश्य लेने का कष्ट करें ताकि हिसाब में किसी प्रकार की भूल-चूक न हो सके। आप जिनसे रसीद बुक प्राप्त करें, उनके पास ही धन जमा करवावें। हरयाणा की जनता की सुविधा के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक में भी अजमेर शताब्दी समारोह का उपकार्यालय चालू कर दिया है। यहां जो धन जमा होगा उसे शताब्दी समारोह के कार्यालय अजमेर में अधपन्नों के साथ जमा करवा दिया जावेगा।

शताब्दी समारोह में आवास आदि की सुविधा के लिए हरयाणा सभा का कार्यालय एक सप्ताह पूर्व अजमेर में खोल दिया जायेगा। इस प्रकार हरयाणा की जनता को आवास तथा भोजनादि की व्यवस्था में सहायता की जा सकेगी।

अतः हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे धन संग्रह कार्य में आज ही जुट जायें और जितना भी धन संग्रह हो सके तुरन्त सभा कार्यालय रोहतक में जमा करवाते रहें। समारोह की तैयारी के लिए धन की व्यवस्था पूर्व करनी पड़ेगी। सभी आर्य समाजों को इसमें अपनी अपनी आहुति अवश्य डालनी चाहिये।

आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन

हरयाणा प्रदेश के गुरुकुलों, आर्य स्कूलों एवं आर्य कालेजों के अधिकारियों एव प्रधानाचार्यों से भी निवेदन है कि वे भी इस ऐतिहासिक अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऋण उतारने के लिए शताब्दी समारोह मे अपना योगदान करे। आर्य संस्था के प्रत्येक छात्र अथवा छात्रा से इस मास फीस के साथ दो-दो रुपये संग्रह करें और इसी प्रकार अपने अध्यापकों से भी एक-एक दिन का वेतन अवश्य लेवें। इस प्रकार धनसंग्रह में सुविधा रहेगी। अपनी आर्य संस्था की ओर से अजमेर जाने के लिए भी तैयारी करें। अजमेर जाने के लिए लगभग प्रत्येक नगर से विशेष बसें जा रही हैं। अतः आप अपने समीप के किसी नगर के आर्यसमाज से सम्पर्क करके अपनी सीट बुक करवा लेवें।

—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

पूज्य स्वामी ओमानन्द जी का मूल्य....

धर्मानन्द सरस्वती,
प्रधान, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, उडीसा

आज आर्यसमाज का कार्य कैसे-कैसे लोगों के हाथों में आगया है। कैसे-कैसे अधिकारी संस्थाओं एवं मुख्य सभाओं के बन गये हैं। यह देख कर जहां महर्षि दयानन्द एवं अन्य महापुरुषों के बलिदान से सींची गई संस्था के भविष्य पर प्रश्नवाचक चिन्ह लगता है वहां इस प्रकार की अन्धकार मय स्थिति जानकर बड़ा दुःख लगता है। एक समय वह था कि इस देश में त्याग तप की पूजा होती थी। जहां राजा को सम्राट् कहा जाता था वहां त्याग के कारण संन्यासी को 'परिव्राट्' कह कर सम्बोधित किया जाता था। विद्वान् से विद्वान्, धनवान् से धनवान् एवं छोटे राजकर्मचारी से लेकर राजा तक संन्यासी के सामने मस्तिष्क झुकाते थे, उसे अपने ऊपर अधिकारी मान कर गर्व अनुभव करते थे। दशरथ जैसा मोही राजा भी महर्षि विश्वामित्र को प्राणसम प्यारे पुत्र राम को राक्षसों से लड़ने के लिए अर्पण कर देता है। वीर शिवाजी समर्थ गुरु रामदास को राज्य समर्पण करके अपना अहोभाग्य मानते हैं। उसी संस्कृति की रक्षा का दम्भ भरने वाले, सर्वस्व त्यागी संन्यासी महर्षि दयानन्द के उत्तराधिकारी होने का अभिमान करने वाले लोग संन्यासियों को देखकर नाक-भौं सिकोड़ते हैं। तपस्वी से तपस्वी संन्यासी को भी किसी संस्था या सभा का अधिकारी बनाना पसन्द नहीं करते। यहां तक कि आर्यसमाज के सर्वमान्य अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सर्वस्व त्यागी संन्यासी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी को भी परोपकारिणी सभा का प्रधान बने रहना नहीं देखना चाहते। इसके लिए यहाँ तक साहस करते है कि निर्वाण शताब्दी समारोह समिति के अधिकारियों को कहते हैं 'यदि स्वामी जी को प्रधान पद से हटा दें तो समिति को दो लाख रुपया देंगे'। अर्थात् भले ही २ लाख रुपया लग जाये परन्तु स्वामी जी अध्यक्ष नहीं रहना चाहिये। जब पूज्य स्वामी जी के कानों में यह बात गई तो उन्होंने कहा यदि मेरे त्यागपत्र से दो लाख रुपया समाज को मिलता है तो मैं पद छोड़ने के लिए तैयार हूँ परन्तु समिति के अधिकारियों ने इसे सर्वथा निषेध कर दिया।

इसी प्रकार एक दैनिक न्याय समाचार पत्र के सम्पादक इतने उच्च कोटि के संन्यासी को 'बेशऊर, फूहड़, जाट' आदि शब्दों से सम्बोधित करके अपने आप को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। इस प्रकार की हेय एवं तुच्छ भावना एवं वातावरण का ही फल है कि आज आर्य समाज में त्यागी तपस्वी संन्यासियों का अभाव होता जा रहा है। प्रचार करने वाले उत्साही व्यक्तियों के अभाव से उत्तरोत्तर एवं गुरुडम फैलता जा रहा है। भगवान् हमें सद्बुद्धि दे कि इस प्रकार की अपवित्र भावना समाप्त हो। हमें त्यागी तपस्वी एव कार्य कर्त्ताओं का मान सम्मान करना सीखें जिस से पुनः तीव्रगति से भगवान् की दिव्य वाणी वेद का सन्देश सब ओर फैल सके।

आर्यसकाज जगाधरो वर्कशाप का प्रस्ताव

आर्यसमाज (विष्णुनगर) जगाधरी वर्कशाप मन्दिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर दिनांक ३१-८-८३ को आये हुए नर नारी बाल वृद्ध, डालडा वनस्पति घी में गाय या और पशुओं की चरबी मिलाये जाने का घोर विरोध करते है और सभी देश वासियों से से अनुरोध करते है कि वे सब डालडा इत्यादि घृत का बहिष्कार करें। भारत सरकार से भी अनुरोध करते है कि इस प्रकार धर्म भ्रष्ट और मिलावट करने वाले नीच व्यापारियों और मिल मालिकों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने की मांग करते हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली और सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं का भी ध्यान इस दिशा में आकर्षित करते हुए अनुरोध करते है कि उच्च स्तर पर इस प्रकार की मिलावट के विरुद्ध शीघ्र अति शीघ्र पग उठायें ताकि बेजबान पशुओं की रक्षा की जा सके। —मन्त्री

बाढ़ पीड़ित सहायता के लिए दान सूची

१. आर्य समाज लाडवा (जिला कुरुक्षेत्र)	५००.००
२. आर्य समाज गुड़गांव छावनी	३००.००
३. आर्य समाज जगाधरी (जिला अम्बाला)	१००.००
४. आर्य समाज फिरोजपुर झिरका (जिला गुड़गांव)	५१.००
५. श्री पृथ्वीसिंह आर्य, ग्रा० पो० मदाना कलां (जि० रोहतक)	२१.००
६. मा० लाछमण आर्य टटेसर जौन्ती (दिल्ली)	२०.००
७. आर्य समाज क्योड़क गेट, कैथल (जिला कुरुक्षेत्र)	१००.००

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी
हरयाणा बाढ़ पीड़ित सहायता संयोजक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से बाढ़ पीड़ितों को निःशुल्क औषधि वितरण करने वाले कार्यकर्त्ता :—

१. ब्र० धर्मदेव चौ० छोटूराम धर्मशाला, रोहतक
२. मा० लालमण जी आर्य, ग्रा० टटेसर जौन्ती (दिल्ली)
३. वैद्य कलीराम जी मेन बाजार बेरी (जिला रोहतक)
४. श्री खुशीराम अध्यापक, राजकीय उच्च विद्यालय निगाना, (जिला रोहतक)
५. श्री सुखदेव शास्त्री ग्रा० पो० आसन (जिला रोहतक)
६. ब्र० कृष्णदेव जी नैष्ठिक, धर्मार्थ औषधालय, दयानन्द मठ रोहतक
७. ब्र० वेदप्रकाश, गुरुकुल झज्झर (जिला रोहतक)
८. पं० समेरसिंह आर्य भजनोपदेशक, आर्य समाज सफीदों जि० जीन्द
९. ला० लछमन दास जी, आर्य समाज सेवा सदन, बल्लबगढ़
१०. श्री दीवान भीम सेन शान्ताकुञ्ज नई कालोनी गुड़गांव
११. ब्र० महेन्द्रसिंह आर्य पुरोहित आर्य समाज गुड़गांव छावनी
१२. श्री भजनलाल सरपंच ग्राम औरंगाबाद मितरौल जि० फरीदाबाद
१३. श्री कन्हैयालाल महत्ता नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी
सभा मन्त्री

फरीदाबाद में वेद-प्रचार सप्ताह की धूम

आर्य समाज २३ सैक्टर फरीदाबाद में १२ सितम्बर तक वेद-प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक पं० धर्मचन्द्र विद्यालंकार एम० ए० वेद-कथा हेतु पधारे। पं० मुन्शीराम आर्य की भजन-मण्डली का मधुर संगीत कार्यक्रम हुआ। पं० धर्मचन्द्र विद्यालंकार जी के बड़े ही सुलझे हुए पाण्डित्यपूर्ण विचार अनेकानेक विषयों पर सुनने को मिले। ईश्वर, धर्म और संस्कृति विषय का गम्भीर वैज्ञानिक विवेचन सुनकर श्रोता आनन्द विभोर हो उठे। ११ सितम्बर को मध्याह्न के समय वेद मन्त्र की व्याख्या के द्वारा वैदिक जीवन दर्शन को स्पष्ट किया गया। इस अवसर पर फरीदाबाद की और भी आर्य समाजों के सभासदों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। वर्षा की निरन्तरता के उपरान्त भी कार्यक्रम रोचक और सफल रहा। प्रातःकाल नित्यप्रति बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया।

पुराने फरीदाबाद शहर आर्य समाज में भी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी की कथा का कार्यक्रम हुआ। उसमें भी धर्म प्रेमी आर्य जनता ने सोत्साह भाग लिया। इस प्रकार फरीदाबाद शहर में वेद प्रचार व आर्य समाज का कार्य प्रगति पर है। कन्हैयालाल महत्ता जैसे गणमान्य शिक्षा शास्त्रियों ने इन कथाओं में सहर्ष भाग लिया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के आकर्षण

१. महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने १० से १८ सितम्बर तक राजस्थान तथा हरयाणा प्रदेश के प्रमुख आर्य समाजों का रेल तथा कार द्वारा तूफानी भ्रमण करके आर्य समाज में जागृति उत्पन्न की है। वे जहां भी पधारे आर्य समाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों ने उनकी अपील पर समारोह के तन, मन तथा धन का सहयोग करने के साथ भारी संख्या में अजमेर पहुंचने का कार्य क्रम बनाया है। सभी स्थानों पर उमंग की लहर फैल रही है।

२. समारोह के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी के आदेशानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक में भी एक उप कार्यालय खोल दिया है।

३. काफी प्रयत्न करने पर भी हरयाणा रोडवेज की बसें रियायती रेट पर उपलब्ध नहीं हो सकीं। हरयाणा के आर्य समाजों से निवेदन किया गया है कि वे प्राइवेट बसों का स्वयं प्रबन्ध करें। प्रान्तीय सरकारों से सीमा टैक्स की छूट करवाने का यत्न किया जा रहा है।

४. शताब्दी समारोह के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, प्रधान मन्त्री इन्दिरा गान्धी गृह मन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी, संचार मन्त्री श्री के० एल० भगत तथा लोकदल के प्रधान चौ० चरणसिंह आदि राष्ट्रीय नेताओं को अजमेर शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया है, जिन्होंने सहर्ष अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है।

५. भारत सरकार ने आर्य समाज स्थापना शताब्दी १९७५ की भान्ति निर्वाण शताब्दी समारोह पर भी महर्षि दयानन्द पर डाक टिकट (विष पान, प्राणदान) जारी करने की स्वीकृति दे दी है।

६. २ अक्टूबर से अजमेर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ हो जावेगा। अना सागर पर भव्य यज्ञशाला बन कर तैयार हो गई है।

महाशय भरतसिंह सभा मन्त्री

धन्यवाद है परन्तु

हरयाणा बाढ़ पीड़ित समिति आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से धन भेजने की अपील सभा के पत्र सर्वहितकारी में प्रकाशित की गई थी। श्री खेमकरण नामक एक दानी ने सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी के नई दिल्ली निवास के पते पर १०० मनीआर्डर द्वारा भेजे हैं। कूपन पर पूरा पता न होने के कारण उन्हें रसीद नहीं भेजी जा सकी। दानी का धन्यवाद है परन्तु निवेदन है कि वह अपना पूरा पता भी भेजने का कष्ट करें ताकि रसीद भेजी जा सके।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ,
रोहतक

तुरन्त आवश्यकता है

प्रभाकर "हिन्दी आनर्स" व शास्त्री कक्षाओं को पढ़ाने के लिये अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

योग्यता।—प्रभाकर कक्षा को पढ़ाने के लिये प्रभाकर+शास्त्री अथवा एम० ए० हिन्दी शास्त्री कक्षा को पढ़ाने के लिये शास्त्री+ एम० ए० संस्कृत अथवा आचार्य

वेतनमान।—राजकीय नियमानुसार

साक्षात्कार :—२२ सितम्बर १९८३ को विद्यालय में १२ बजे होगा योग्यता प्रमाण पत्र साथ लायें।

ऋषिपाल आर्य आचार्य
आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी,
जि० भिवानी (हरियाणा)

(१ पृष्ठ का शेष)

अजमेर शताब्दी में हरयाणा की आर्य जनता जन, धन से पूरा सहयोग करेगी

डा० सत्यपाल जी तथा पुरुषोत्तमदास जी के पास गये और शताब्दी समारोह के लिए अपील की। श्री पुरुषोत्तम दास जी ने ११००) यज्ञशाला तथा ३ हजार रुपये शताब्दी के लिए देने का वचन दिया। घरोण्डा के बाद प्रो० शेरसिंह आर्यसमाज हाली मोहल्ला करनाल में सायं ७ बजे पधारे। यहां भी आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने सभा प्रधान जी का हार्दिक स्वागत करते हुए करनाल के सभी आर्यसमाजों की ओर से २५ हजार रुपया शीघ्र ही भेजने का वचन दिया। बैठक में, इस कार्य को सफल करने के लिए करनाल के आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रधान तथा मन्त्री पर आधारित एक समिति का गठन किया। समिति के सदस्य निम्न प्रकार मनोनीत किये गये। राय साहब चौ० प्रताप सिंह प्रधान, श्री देवदत्त विज उपप्रधान, श्री बनारसी कृष्ण आर्य संयोजक, श्री कृष्ण कुमार गान्धी मन्त्री, सदस्य डा० गणेशदत्त, श्री मेलाराम वर्मा, श्री नरदेव शास्त्री, वैद्य रलाराम, श्री लक्ष्मीनारायण राजपाल, श्री रत्नसिंह लाठर, श्री हरिश्चन्द्र गुलाटी, श्री ठाकुरदास, श्री ओमप्रकाश, श्री मलीक जी, श्री प्रताप चन्द, मा० मामचन्द, श्री लाजपत राय, मा० अमरनाथ, श्री जगदीश, श्री भोपालसिंह, श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री मोहनलाल गान्धी, श्री भागीरथ कुमार, श्री ईश्वरचन्द्र सरदाना, श्री पृथ्वीराज नागपाल एडवोकेट, इनके अतिरिक्त स्थानीय आर्य कन्या विद्यालय तथा डी० ए० वी० स्कूल एवं कालेज के मैनेजर तथा प्रधानाचार्य भी सदस्य रहेंगे। बैठक में यह भी निश्चय किया गया कि २५ हजार रुपये के अतिरिक्त ५ बोरी आटा, एक बोरी दाल, १ टन घी भी शताब्दी में भेजने तथा विशेष बसें ले जाने का कार्यक्रम बनाया गया। रात्रि को करनाल में विश्राम किया।

१३ सितम्बर को प्रातः ६.३० बजे सभा प्रधान जी आर्यसमाज नीलोखेड़ी के प्रधान श्री डा० पी० एन० अम्ब से मिले तथा शताब्दी समारोह में सहयोग देने का अनुरोध किया। श्री डा० अम्ब जी ने सहर्ष आर्थिक सहयोग देने तथा नीलोखेड़ी से अधिक से अधिक नर-नारियों सहित अजमेर पहुंचने का विश्वास दिलाया। नीलोखेड़ी के पश्चात् प्रातः ८.३० बजे आर्यसमाज थानेसर पधारे। यहाँ भी आर्यसमाज थानेसर, गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा दयानन्द महिला महाविद्यालय के अधिकारियों ने प्रो० शेरसिंह का स्वागत करते हुए कुरुक्षेत्र से अधिक से अधिक धन राशि देने तथा विशेष बसों द्वारा अजमेर पहुंचने का वचन दिया। श्री रूलिया राम आर्य ने इस अवसर पर संकल्प किया कि "शताब्दी समारोह पर ६ नवम्बर को यज्ञ की पूर्ण आहुति के अवसर पर ११०० रुपये का देशी घी का हलवा प्रसाद रूप में वितरण करूंगा।" कुरुक्षेत्र के पश्चात् सभा प्रधान जी ११ बजे आर्य समाज लाडवा पहुंचे। वहाँ आर्यसमाज के प्रधान श्री साधुराम आर्य ने अपने आर्यसमाज के अन्य कार्यकर्त्ताओं सहित प्रधान जी का स्वागत किया तथा शताब्दी समारोह के लिए अपने नगर से अधिक से अधिक धन संग्रह करके भेजने तथा विशेष बस द्वारा अजमेर पहुंचने का आश्वासन दिया। लाडवा के बाद प्रधान जी दोपहर बाद १ बजे आर्यसमाज रादौर पहुंचे। वहां आर्यसमाज के प्रधान श्री सत्यपाल भारती ने अपने सहयोगियों सहित प्रो० शेरसिंह का स्वागत करते हुए अधिक से अधिक धन संग्रह करके भेंट करने तथा विशेष बस द्वारा २ नवम्बर को अजमेर के लिए प्रस्थान करने की घोषणा की। उसी दिन दोपहर बाद ३-३० बजे आर्यसमाज रेलवे रोड यमुनानगर के प्रधान श्री कृष्णचन्द आर्य के निवास पर पधारे। वहां आर्यसमाज के अधिकारियों के साथ शताब्दी सहयोग देने के लिए वार्ता की। प्रधान जी ने सभा प्रधान जी को वचन दिया कि हम यमुना नगर में सभी आर्यसमाजों की बैठक करके धन संग्रह तथा अजमेर जाने का कार्यक्रम बनाया जावेगा। सायं ६ बजे आर्यसमाज जगाधरी में आर्य समाज के प्रधान श्री सुभाष पाहुजा ने अपने अन्य साथियों सहित सभा प्रधान जी का स्वागत करते हुए शताब्दी कार्य में तन, मन, धन से सहयोग देने का वचन दिया। इस अवसर पर कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए प्रो० साहब ने हरयाणा के हिन्दुओं की रक्षा के लिए सरकार की अनुचित नीतियों का विरोध करने का आह्वान किया। आगामी अजमेर शताब्दी समारोह में भी भारी संख्या में सम्मिलित होने तथा आर्थिक सहयोग करने की अपील की। आर्यसमाज के अधिकारियों तथा हिन्दू मंच के कार्यकर्त्ताओं ने सभा प्रधान जी को अपील पर तन मन तथा धन से सहयोग करने का विश्वास दिया। आर्य युवा कार्यकर्ता श्री जगदीश मलान ने भी अपने साथियों सहित अजमेर पहुंचने का संकल्प किया। उसी दिन रात्रि को ६.३० आर्यसमाज माडल टाऊन यमुनानगर में वेद सप्ताह कार्यक्रम के अवसर पर आर्य जगत् के वयोवृद्ध तपस्वी महाशय पं० शान्तिप्रकाश जी के प्रवचन के बाद प्रो० शेरसिंह ने शताब्दी समारोह के कार्यक्रम पर प्रकाश डाला तथा अजमेर पहुंचने का निमन्त्रण दिया। रात्रि को माडल टाउन यमुनानगर में विश्राम किया।

१४ सितम्बर को प्रातः ८ बजे सभा प्रधान जी अम्बाला छावनी पधारे। मुन्शीराम आर्य कन्या उच्चविद्यालय में आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों ने उनका भव्य स्वागत करते हुए अजमेर शताब्दी में तन, मन और धन से सहयोग करने का विश्वास दिलाया। अम्बाला शहर तथा छावनी से विशेष बसों द्वारा आर्य स्कूलों के छात्र तथा छात्राओं सहित भारी संख्या में शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने की घोषणा की। अम्बाला छावनी के बाद सभा प्रधान जी दोपहर १२ बजे आर्यसमाज कैथल पधारे। यहां भी आर्य समाज के प्रधान सेठ रामभूर्ति जी तथा आर्य कन्या विद्यालय के मैनेजर डा० मनोहरलाल आर्य ने अपने अन्य सहयोगियों सहित सभा प्रधान जी का हार्दिक स्वागत किया तथा विशेष बस द्वारा अजमेर पहुंचने तथा अधिक से अधिक धन संग्रह करने का विश्वास दिलाया।

सभा प्रधान जी दोपहर बाद ३.३० बजे आर्यसमाज नरवाना पहुंचे। सभा अन्तरंग सदस्य श्री धर्मपाल आर्य, आर्यसमाज के अधिकारियों तथा आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल के प्रधानाचार्य श्री यशवन्त राय ने उनका हार्दिक स्वागत किया। प्रधान जी की अपील पर आर्यसमाज नरवाना तथा दोनों आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से धन संग्रह करके सभा को भेजने तथा भारी संख्या में अजमेर पहुंचने की घोषणा की। नरवाना के पश्चात् १४ सितम्बर को ही सायंकाल ६.३० सभा प्रधान जी आर्यसमाज जीन्द शहर पहुंचे जहां आर्य समाज जीन्द शहर तथा जंक्शन के अधिकारियों ने उनका स्वागत करते हुए अजमेर शताब्दी समारोह के लिए अधिक से अधिक धन संग्रह करके भेजने तथा अजमेर पहुंचने के कार्यक्रम की घोषणा की। रात्रि को आर्यसमाज मन्दिर में विश्राम करके सभा प्रधान जी १५ सितम्बर को प्रातः ९ बजे भिवानी दोपहर को १२ बजे चरखी दादरी दोपहर बाद १.३० बजे आर्यसमाज कनीना, दोपहर बाद ३.३० बजे आर्यसमाज नारनौल तथा सायंकाल ६ बजे आर्यसमाज रेवाड़ी पधारे। इन सभी स्थानों पर भी उन्हें विश्वास दिलाया गया कि अजमेर की शताब्दियों को सफल करने के लिए धन भेजा जावेगा तथा विशेष बसों द्वारा भारी संख्या में आर्य नर-नारी समारोह में सम्मिलित होंगे। इस प्रकार एक सप्ताह का सभा प्रधान जी का कार द्वारा तूफानी भ्रमण सफल रहा।

अजमेर शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने के लिए निकट के आर्यसमाज से सम्पर्क करें।

(पृष्ठ २ का शेष)

मनोरंजक सुख प्राप्त करने के लिए व्यक्ति परिवार में, शराब में, सिनेमा में, संगीत में, साहित्य में बार-बार डुबकी लगाता है मगर वह और की मांग करता चला जाता है—तृप्त नहीं होता। इसे सुख मिलता अवश्य है किन्तु इस सुख की अपनी एक सीमा होती है। अन्ततः वह सुख ही दुख में परिवर्तित हो जाता है तथा मनुष्य जीवन के अन्त तक दुखी का दुखी रह जाता है। इस दुःख से छूटने के लिए व्यक्ति को शरीर और मन की पकड़ से आगे बढ़ना होगा। सुकरात ने कहा है कि जो केवल शरीर को सन्तुष्ट रखता है वह पशु है लेकिन जो मन की ही सन्तुष्टि में लगा रहता है वह भी मनुष्य नहीं है। इन दोनों से आगे आत्मा की ओर चलना होगा जो वास्तविक आनंद का द्वार है। आत्मा का स्वभाव ही आनन्द की अवस्था है। हम जब तक उस वास्तविक स्वरूप को प्राप्त नहीं होंगे तब तक यात्री बन कर ही चलना होगा। भला उस जीव से अधिक मूर्ख और कौन होगा जो लक्ष्य प्राप्त न करके केवल यात्रा पर ही रहना पसन्द करेगा। लेकिन हम में से बहुत से ऐसा कर रहे है। हम में से बहुत से विपरीत दिशा को चल पड़े है। हम केवल रोटी, कपड़ा और मकान प्राप्त करके तृप्ति चाहते है। हम विषय वासना तथा अन्य भोगों में आनंद पाना चाहते हैं। मगर विषयों का आनंद क्षणिक होता है। पुनः मनुष्य किसी नए विषय से स्वयं को जोड़ता है मगर वहां से मिलने वाला आनन्द भी उसे तृप्त नहीं कर पाता। और इस प्रकार खोज-खोज में ही मनुष्य का अनन्त समय आ जाता है। हमारे ऋषि कह गए हैं "भोगा: न भुक्ता: वयमेव भुक्ता: तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा:" अर्थात् मनुष्य विषयों को नहीं भोगता, विषय ही मनुष्य को भोगने लगते हैं। तृष्णायें समाप्त नहीं होती, मनुष्य ही एक दिन समाप्त हो जाता है। विषयों की ओर हमारी दौड़ की दशा यह हो जाती है कि हम भोक्ता नहीं बल्कि भोग्य बन जाते हैं।

हमारे जीवन का परम लक्ष्य है उस परमात्मा की आनन्दमयी गोद का सान्निध्य प्राप्त करना। हमारी यह युगों-युगों की यात्रा तब तक चलती ही रहेगी जब तक हम उस स्थिति को प्राप्त नहीं हो जाते हैं। इसके लिए हमें शरीर और मन की पकड़ से आगे बढ़ना होगा। विषय-वासनाओं की कटीली पगडण्डी को छोड़कर राजपथ के पथिक बनना होगा। हम विषय न भोगें बल्कि भोक्ता बन कर रहे। कठोपनिषद् का ऋषि हमारे समक्ष जीवन को जीने का एक क्रम रखते हुए कहता है—

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥
इन्द्रियाणि हयानाहुः विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥

मनुष्य का शरीर एक रथ के समान है। इस रथ का स्वामी आत्मा, कोचवान बुद्धि, लगाम मन और इन्द्रिया घोड़े है। इस रथ को यदि लक्ष्य तक पहुँचाना है तो इस का क्रम यह होना चाहिये कि आत्मा के अधीन बुद्धि, बुद्धि के अधीन मन और मन के अधिकार में इन्द्रिया हो। आज के मनुष्य की स्थिति इस क्रम के एकदम विपरीत हो गई है। वह इन्द्रियों का मालिक नहीं बल्कि इन्द्रियां उनकी मालिक बन बैठी है। यही कारण है कि आज व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में सभी जगह अव्यवस्था है। दुःख है-कष्ट है। जबतक इस क्रम को बदला नहीं जायेगा तब तक सुख और आनंद भी प्राप्त नहीं हो सकता है। पता नहीं मनुष्य कितने ही जन्म ले-लेकर, कितनी ही योनियों में जा-जाकर मरुस्थल के मृग समान विषय वासनाओं के पीछे तृप्ति की चाह लेकर दौड़ता-दौड़ता समाप्त होता रहेगा। फिर क्यों न इसी जन्म में रथ को सही दिशा की ओर हांक दें।

हरयाणा प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन भिवानी में

पलवल। इस वर्ष आर्य वीर दल हरयाणा का सप्तम महासम्मेलन २४-२५ सितम्बर दिन शनि तथा रविवार को प्रसिद्ध औद्योगिक एवं सांस्कृतिक नगर भिवानी के नगर पालिका पार्क में समारोह पूर्वक हो रहा है, जिसमें प्रान्त भर से २००० आर्य वीर पूर्ण गणवेश में भाग लेंगे।

सम्मेलन की अध्यक्षता विश्व विख्यात विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती करेंगे। इस में आर्य वीरों को सम्बोधित करने हेतु स्वामी दयानन्द जी देहरादून, आचार्य सत्यप्रिय जी, प्रो० राम विचार जी, श्री चन्द्रप्रकाश जी सत्यार्थी तथा श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक वीर प्रताप आदि उच्च कोटी के विद्वान् वक्ता पधार रहे हैं।

सम्मेलन में आर्य वीरों की भव्य टोली, व्यायाम प्रदर्शन, आर्य वीरों की शाखा एवं गोष्ठी तथा विचारों का मन्थन विशेष आकर्षण के केन्द्र होंगे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये तन, मन, धन से दल का सहयोग करें तथा हजारों की संख्या में भिवानी पहुँचकर आर्य वीरों को आशीर्वाद देकर अपने पुनीत कर्त्तव्य का पालन करें।

मन्त्री—आर्य वीर दल हरयाणा

वैवाहिक विज्ञापन

२१ वर्षीया आर्य ब्राह्मण कन्या हेतु उपयुक्त संस्कृतज्ञ आर्य वर अपेक्षित। शिक्षा : हायर सैकण्डरी, प्रभाकर व सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि० वि०, वाराणसी से (अंग्रेजी सहित) शास्त्री परीक्षाएं उत्तीर्ण, कद ५ फूट आत्मना जाति बन्धन नहीं। विवाह सादा व शीघ्र।

इन्द्रजित देव, नवीकरण मण्डल,
नहर कालोनी, स्वामी आत्मानन्द मार्ग,
यमुनानगर (हरयाणा)

आर्य समाज की गतिविधियां :--

दहेज समस्या और उसका समाधान

ओमप्रकाश पत्रकार, फरमाणा, जि० सोनीपत

समाज में उत्पन्न समस्याओं के समाधान की जिम्मेवारी सरकार तथा सामाजिक नेताओं पर होती है। भले पुरुषों के लिये समाज सुधारकों के प्रवचन एवं पंचायती बन्धन और दुष्ट लोगों के लिये सरकार न्यायिक दण्ड ही सामाजिक कुरितियों तथा समय-समय पर पैदा होने वाली समस्याओं की रोकथाम का वास्तविक हल है। सरकार द्वारा बनाये गये कानून और सामाजिक बन्धनों की सार्थकता नियमों के पालन करवाने के बाद सिद्ध होती है। १९७६ में हरयाणा सरकार ने विवाह शादियों पर कम खर्च करने, बाल विवाह तथा दहेज कुप्रथा के विरूद्ध कानून बनाया परन्तु सरकार के ढीले प्रशासन के कारण दहेज के भूखे भेड़ियों ने उसे पैरों तले रौन्द दिया और सरकार का कानून मजाक बनकर रह गया। धार्मिक तथा सामाजिक सम्मेलनों मे दहेज के विरूद्ध पारित प्रस्तावों की खिल्ली उड़ाई जाती है। दहेज समस्या के विकराल रूप से आज समाज का प्रत्येक वर्ग भयभीत है। दहेज के कारण दिन प्रतिदिन होने वाली महिलाओं की हत्याओं ने समाज और सरकार को दहला दिया है। आकाशवाणी, दूर दर्शन तथा समाचार पत्रों में, दहेज के कारण घटने वाली दुखद घटनाएं, आम चर्चा का विषय बन गई है। यहां तक की विधान सभा तथा संसद में भी दहेज समस्या बहस का खास मुद्दा बना हुआ है। १७ अगस्त को प्रश्नोत्तर काल के दौरान, संसद में पूछे गये एक सवाल के जवाब में पता चला कि पिछले एक मास में अकेले दिल्ली शहर में दहेज के कारण ८० महिलाओं को मौत के घाट उतार दिये जाने की सूचना प्राप्त हुई है। केवल इस दहेज की लानत ने सारे देश को चौंका दिया है। सरकार तथा सामाजिक नेता उक्त समस्या का समाधान खोजने के लिए प्रयत्न शील है।

पिछले दिनों केन्द्रीय मन्त्री मण्डल ने दहेज विरोधी कानूनी मस्वदे को स्वीकृति दी जो संसद के वर्तमान वर्षाकालीन अधिवेशन में पारित किया जाना सम्भावित है। कानून के प्रारूपानुसार भारतीय दण्ड सहिता में संशोधन कर दहेज विरोधी कानून प्रक्रिया को और कड़ा करना विचाराधीन है।

इसी प्रकार पिछले दिनों हरयाणा के नगर गोहाना में दहेज विरोधी विषय को लेकर सर्वखाप पंचायत का आयोजन किया गया। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा हरयाणा की ५६ खापों तथा सैकड़ों तपों के मुखियाओं ने बैठक में भाग लिया। विभिन्न प्रदेशों के बीस-पच्चीस हजार, प्रमुख व्यक्तियों ने विवाह शादियों में कम खर्च करने तथा दहेज के विरूद्ध अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये। उस दिन पंचायत के निर्णयों पर सदेह की दृष्टि से टिप्पणी करते हुये एक सम्वाददाता ने कहा था कि पंचायत ने ढेर सारे निर्णय तो ले लिये परन्तु सवाल तो इन्हें लागू करने का है। यदि इस पर अमल न हुआ तो यह सम्मेलन भी फारसी की यह कहावत बनकर रह जायेगा कि "अजलास निशस्तन्द, गुफतन्द, बरखास्तन्द" (बैठक हुई और बातचीत के बाद समाप्त हो गई) परन्तु हमने देखा कि उक्त पंचायत की एक जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई सर्वखाप पंचायत के प्रधान स्वामी कर्मपाल ने उस दिन के पश्चात् एक मिनट विश्राम नहीं किया और जिला हिसार तथा जीन्द की खाप और तपों की बैठके बुला-बुला कर जब तक २९९ गांवों में "दहेज विरोधी समितियों" का गठन करके लोगों से सर्वपथ पंचायत के निर्णय लागू करने का वचन लिया है। सर्वखाप पंचायत के कार्यालय बलिदान स्मारक गुरुकुल, जिला जीन्द में पचासों पत्र प्रतिदिन प्राप्त हो रहे हैं कि अमुक गांव में दहेज विरोधी समिति का गठन कर निर्णय लागू कर दिये गये हैं। उनकी सभाओं में हजारों की उपस्थिति इस बात का सबूत है कि लोग कितने विशाल हृदय से पंचायत के निर्णय लागू कर घातक कुप्रथा से छुटकारा चाहते हैं। उत्तर प्रदेश, राजस्थान से आये आमन्त्रण पत्र यह जाहिर करते हैं कि लोग दहेज कुप्रथा को समाज से कितने तुरन्त हटाना चाहते हैं। आज वातावरण की गर्मी को देखते हुये हम यह कह सकते हैं कि लोग सुधरना चाहते हैं उन्हें सुधारने वाला चाहिये।

केन्द्रीय सरकार का कानून और सर्वखाप पंचायत की दहेज विरोधी समितियां ही इस विकराल समस्या का वास्तविक हल कहा जाये तो अनुचित न होगा क्योंकि हम ने समाज में घुसकर देखा कि लोग दहेज कुप्रथा से बेहद दुखी हैं और उसे छोड़ने का उपाय खोजना चाहते हैं। यदि आज धार्मिक तथा सामाजिक नेता महर्षि दयानन्द और राजा राम मोहन राय की भांति मैदान में कूद कर स्वामी कर्मपाल को सहयोग दें तो निश्चित ही इस सामाजिक कुप्रथा से छुटकारा पाया जा सकता है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के तत्वाधान में दिनांक २५ सितम्बर से १० अक्तूबर तक एक योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन प्रख्यात योगाचार्य श्री डा० देवव्रत आचार्य जी की देखरेख में आयोजित किया जा रहा है जिसमें दमा, जुकाम, ब्लैड प्रैशर, कमर दर्द, कब्ज, पेट रोग आदि बिमारियों का इलाज निःशुल्क किया जायेगा। इस शिविर में ही युवाओं को आत्मरक्षा हेतु प्रशिक्षण देने के लिए लाठी, तलवार, छुरी तथा बाक्सिंग एवं जुडो कराटे का भी विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा। शिविरार्थियों को बौद्धिक प्रशिक्षण देने के लिए अनेकों उच्च कोटि के आर्य विद्वानों तथा संन्यासियों के पधारने की सम्भावना है। शिविर में आवास एवं भोजन की उचित व्यवस्था की जायेगी। अधिक जानकारी के लिए गुरुकुल कार्यालय में सम्पर्क करें।

धर्मदेव विद्यार्थी
शिविर संयोजक

शानदार परीक्षा परिणाम

इस वर्ष आर्य माध्यमिक पाठशाला श्रद्धानन्द नगर (न्यू कालोनी) पलवल का आठवी कक्षा फरवरी १९८३ का शानदार परिणाम रहा है। इसी पाठशाला का विद्यार्थी श्री संजय तनेजा सारे जिले में ५२१ अंक प्राप्त कर प्रथम रहा। शिक्षा विभाग की ओर से पाठशाला को प्रशंसा पत्र भेंट किया गया।

लक्ष्मीचन्द आर्य
प्रबन्धक

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर सर्वहितकारी की भेंट—

हरयाणा आर्यसमाज-विभूति विशेषांक

हरयाणा के आर्यसमाज को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुखपत्र 'सर्वहितकारी' का महर्षि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर हरयाणा आर्यसमाज-विभूति विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। हरयाणा के आर्यसमाजों तथा सभी आर्यों से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र के दिवंगत आर्य समाज के ब्रह्मचारी संन्यासी वानप्रस्थी विद्वान् उपदेशक कार्यकर्ता आदि विभूतियां का संक्षिप्त सारगर्भित परिचय तथा चित्र सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

नारनौल में वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज नारनौल जि० महेन्द्रगढ़ द्वारा वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष में १७ अगस्त से २४ अगस्त तक पारिवारिक यज्ञों, सत्संगों द्वारा स्वामी विजयानन्द जी चित्तौड़गढ निवासी के व्याख्यानों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस सत्संग का बहुत अच्छा प्रभाव परिवारों पर पड़ा।

वैद्य [illegible] आर्य प्रधान

कोवेदानुद्धरिष्यति ?

यजु क्रमपाठ संहिता के प्रकाशनार्थ ५००० रुपये देने का
श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक का शुभ संकल्प

श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य, वेद सदन, महारानी रोड, इन्दौर-४५२००७

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि यजुर्वेद की क्रमपाठ संहिता जो अभी तक अलभ्य है उसके प्रकाशनार्थ वेदमूर्ति श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने पांच हजार रुपये देने की इच्छा प्रकट की है। एतदर्थ श्री मीमांसक जी का हार्दिक धन्यवाद। यह ग्रन्थ २१ वर्ष पूर्व मैंने गुरुकृपा से लेखबद्ध किया था तथा श्री मीमांसक जी ने कुछ वर्ष पूर्व इसे मुझे लाने के लिए भी कहा था। इसके प्रकाशन में अनुमानतः ५०,००० रुपये व्यय होगा।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने वेदभाष्य पद पाठ के आधार पर किया तथा संस्कार विधि में लिखा कि वेदों को पद, क्रमादि सहित पढ़े। प्राचीन काल से यही परिपाटी वेदाध्ययन की है जैसा कि—"वेदैः सांगपदक्रमोपनिषद्‌गायन्तियं सामगाः" द्वारा प्रकट है।

मन्त्रार्थ ज्ञान के लिये पद संहिताओं की अति आवश्यकता होती है। क्रम पाठ संहिता से वेद मन्त्रों के पद और पद पाठ के पदों के उदात्तानुदात्तादि स्वरों की संधि और वर्णों की संधियों का ज्ञान होता है जो वेदार्थ ज्ञान में अत्यन्त सहायक होता है तथा अष्ट विकृति पाठों के स्वरांकन की योग्यता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त यह उदात्तादि स्वरों के और वर्णों के उच्चारण में अत्यन्त कुशलता भी प्रदान करती है।

क्रमपाठ के लिए लिखा है—क्रमः स्मृतिः प्रयोजन :—उदात्तादि स्वरों की स्मृति तो विशेष रुप से क्रमपाठ से होती है मन्त्रानुवृत्ति का भी लाभ होने से अर्थ का भी विशेष लाभ होता है। अतः यजुः क्रमपाठ संहिता के प्रकाशन की आवश्यकता है यजुः पद पाठ की पुस्तक तो श्री मीमांसक जी ने अत्यन्त पुरुषार्थ से प्रकाशित कर दी है उनसे वैदिक समाज बहुत उपकृत हुआ। इसी प्रकार क्रमपाठ की इस पुस्तक से देश-विदेश के वेद के साहित्य में वेद पाठ की गंगा का महत्वपूर्ण अवतरण होगा।

याज्ञवल्क्य शिक्षा में लिखा है कि—एक संहिता त्रिरभ्यस्य यजुर्षी वा समाहितः—अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेदादि का तीन प्रकार से संहिता पाठ, पद पाठ और क्रम पाठ—इन तीन प्रकार से अभ्यास करने पर जीवन पवित्रात पवित्र होता है। याज्ञवल्क्य ने संहिता को यमुना, पद पाठ को सरस्वती और क्रमपाठ को गंगा की उपमा देकर इसमें स्नान करना अर्थात् नित्य अभ्यास से पुण्योदय बताया है।

आदरणीय श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक ने अपने पत्र दि. २१-७-८३ में लिखा कि—"इस कार्य पर इस समय कम से कम ४०-४५ हजार रुपया व्यय आवेगा। इतना मेरा और न ट्रस्ट का ही सामर्थ्य है। हां, आप या कोई व्यक्ति इस महनीय कार्य को करे तो मैं ५००० रुपये तक सहायता कर सकता हूँ—पर आज इसकी महत्ता को दो-तीन व्यक्तियों के सिवाय कौन समझता है।............"

आदरणीय वेदज्ञ, विद्वान् श्री मीमांसक जी द्वारा संकल्पित राशि की स्थापना से इसके प्रकाशन के लिए शेष राशि की पूर्ति के लिए सभी वेदप्रेमी धनी-मानी सज्जनों, आर्य समाजों एवं संस्थाओं से निवेदन है कि वे इस महत्वपूर्ण प्रकाशन कार्य में हमें मुक्त हस्त से धनराशि प्रदान कर यश के भागी बनें। जिससे 'यजुः क्रम संहिता' का प्रकाशन कार्य शीघ्र प्रारम्भ हो सके तथा अन्य अनेक प्रकाशित वेद कार्य के प्रकाशन का भी सुअवसर प्राप्त हो सके।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] 23207/73 [illegible] P/RTK 40 [illegible]

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

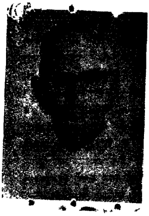
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ४० २८ सितम्बर १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

जिनकी २९ सितम्बर को प्रथम पुण्य तिथि है।

स्व० पं० रघुवीरसिंह शास्त्री का व्यक्तित्व



आर्य महाविद्यालय किरठल जि० मेरठ के सुयोग्य स्नातकों में श्री शास्त्री जी अतीव प्रतिभा सम्पन्न रहे हैं। छात्र जीवन में ही उनका संस्कृत भाषा पर अप्रत्याशित अधिकार हो गया था। अतःएव जब वे अपनी शास्त्री की परीक्षा देने लाहौर गये थे, तब उन्होंनें लाहौर केन्द्र पर परीक्षा देने आये समस्त छात्रों को संस्कृत भाषण प्रतियोगिता हेतु (चेलेंज) आह्वान किया था, किन्तु उनके सामने आने का किसी भी छात्र ने साहस नहीं किया था।

भारत के स्वाधीन होने के पश्चात जब देहली में तत्कालीन उप-राष्ट्रपति श्री पाठक जी की अध्यक्षता में प्रथम संस्कृत दिवस मनाया गया था उस समय पुज्य शास्त्री जी ने संस्कृत भाषण से सबको चकित कर दिया था। स्वय श्री उपराष्ट्रपति महोदय ने भी उनके संस्कृत भाषण से मुग्ध होकर उनकी भूरि-२ प्रशंसा की थी। निधन के अन्तिम दिनों तक भी श्री शास्त्री जी की जिव्हा पर कादम्बरी जैसे संस्कृत के क्लिष्ट ग्रन्थ के प्रकरण इस प्रकार उपस्थित थे मानो वीणा पाणि सरस्वती ही आकर साक्षात् उनकी वाणी में बिराजमान हो।

वे एक कुशल प्रशासक भी थे। प्रशासन आर्य महा विद्यालय किरठल का हो, अथवा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार का ही क्यों न हो? प्रशासन के विषय में उन्हें किसी के भी आगे झुकते या दबते नहीं देखा गया। कई अवसर ऐसे भी आये जब कि उनके ही इष्ट मित्रों के बालकों ने संस्था में कुछ गड़बड़ी की, तब उन्होने उनके साथ कोई भतीजावाद प्रश्रय को नहीं दिया अपितु संस्था के हित को ही प्रमुख समझा। यद्यपि ऐसा करने से अनेकों उनके हितचिन्तकों ने उनका साथ छोड़ दिया, एवं उनके निर्वाचनों में डटकर उनका विरोध किया, तो भी स्वाभिमानी एवं प्रशासन कुशल श्री शास्त्री जी ने अपनी राय के लिए उनके आगे कोई निहोरा नही किया एवं न तो उनके साथ कोई सौदेबाजी की और न ही उनके आगे कभी हाथ जोड़े।

श्री शास्त्री जी धैर्य तथा साहस के भी धनी थे। एक बार जब वे अपने एम० पी० के निर्वाचन में हार गये, तब कुछ असामाजिक तत्वों ने यह अफवाह फैलायी कि शास्त्री जी का तो हार्ट फेल हो गया है। उनका पता लेने जब मैं कोठी पर पहुँचा, जब कि उन दिनों नई दिल्ली महादेव रोड पर रहते थे, तो देखा कि वे प्रसन्न मुद्रा में कोठी के आगे कुर्सी पर बैठे समाचार पत्र पढ़ रहे हैं। उनके मुख पर हार की कोई उदासी नहीं थी, मानो वे "उदेति सविता ताम्र" ताम्र: एवास्तमेति च,, इस सूक्ति को चरितार्थ कर रहे हों तथा उनका व्यक्तित्व आकर्षक था। जब वे कार्यवश किसी अपरिचित व्यक्ति के पास अथवा किसी बड़े से बड़े अधिकारी के कार्यालय में पहुँचते थे, तो उन पर इनके आकर्षक व्यक्तित्व का प्रभाव सावन की घटा के समान छा जाता था। इसी व्यक्तित्व के बल पर उन्होंने विद्यालय से अप्रसन्न चकबन्दी अधिकारियों से भी ७१ बीघे भूमि संस्था के लिए ले ली थी। इस प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व की बदौलत ही इन्होने कई बार किन्ही घटनाओं में लपेटकर हवालात में बन्द विद्यालय के छात्रों को बात की बात में हवालात से बाहर करा लिया था।

इनके प्रभावी व्यक्तित्व की एक घटना मुझे सदा याद रहती है वह-यह है कि एक बार विद्यालय आदर्श योजना के अन्तर्गत आ जाने पर विद्यालय को प्रथम राजकीय अनुदान प्राप्त हुआ। वह अनुदान इम्पीरियल बैंक मेरठ से लेना था। अनुदान राशी के बिल पर किसी ऐसे व्यक्ति की सनाख्त होनी थी जिनका खाता इस बैंक में हो, मैं एव शास्त्री जी मेरठ पहुँचकर ऐसे व्यक्ति की तलाश करते हुए कि जिसका बैंक में खाता हो, बाबू जयदेव सिह एडवोकेट की कोठी पर जा पहुँचे। वहां श्री शास्त्री जी ने एडवोकेट साहब को मेरा परिचय देते हुए कहने लगे कि ये विद्यालय के मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य शिवपूजन शास्त्री हैं इनके नाम से यह बिल है जिस पर आपकी सनाख्त की आवश्यकता है। कार्य तो एडवोकेट साहब की समझ में आ गया; किन्तु मेरे विद्यालय का मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य होने की बात उनके गले नहीं उतरी थी, वे बार-२ मुझे ऊपर से नीचे तक देखते रहे, क्योंकि मेरे शरीर एवं वेशभूषा को देखकर कभी भी किसी ने यह माना नहीं कि यह व्यक्ति इतनी बड़ी संस्था का उक्त अधिकारी हो सकता है, अन्त में चूंकि शास्त्री जी मुझे विद्यालय का मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य कह रहे थे इस विश्वास पर उन्होंने बिल पर अपेक्षित कार्यवाही कर दी जिससे अनुदान राशी आसानी से मिल गयी। अन्यथा केवल मेरे प्रयत्नों से उस अनुदान का मिलना संभव नहीं था। ऐसा था उनके व्यक्तित्व का प्रभाव?

श्री सिद्धांती के समान ही श्री शास्त्री जी विद्यालय की अर्थ-व्यवस्था के प्रति सदा जागरूक रहते थे। जब कभी संस्था में घाटा हुआ तब वे चौ० मनीराम जी आदर्श नंगला आदि दानवीरों की सहायता से घाटे को पूरा कर दिया करते थे। किन्तु संस्था के पास सन् ४५ ई० की जयन्ती के सुरक्षित ऐतिहासिक धन में वे कभी हाथ नही लगाने देते थे। भवन निर्माण के समय इस धन के ब्याज का यदा कदा प्रयोग तो हुआ किन्तु मूलधन आज भी अपने दुने रूप में सुरक्षित है। जब मैं ता० ५-१-८० ई० को अपने सुयोग्य अधिकारियों को सौंप कर आया था इस धन के विषय में कुछ बहकते हुए लोग तुच्छ अटकले लगाया करते थे, जो सर्वथा निर्मूल थी।

श्री शास्त्री कभी पद एवं अधिकारों के लोभी नहीं देखे गये। इन्हें तो उनके व्यक्तित्व के कारण आग्रहवश कमेटी में लाकर पदासीन किया जाता था। अधिकार की इच्छा न रखने के कारण ही उन्होने श्री सिद्धांती जी के निधन के बाद संस्था के सर्वाधिकारी पद को लेने से ठुकरा दिया था जब कि इस महत्वपूर्ण अधिकार को देने के लिए अनेकों वरिष्ठ लोग उनसे आग्रह करते रहे। उनके भाषण में ताली उनके प्रकाण्ड पाण्डित्य पर बजती थी न कि चटपटी भाषा पर। उनका स्वाध्याय बड़ा ऊँचा था। वे अपने शिष्ट आचार एवं मधुर व्यवहार से जाने अनजाने सभी लोगों पर ब्राह्मणत्व की छाप छोड़ जाते थे। उनके निधन से उनके क्षेत्र को ही नहीं, अपितु आर्य जगत् की अपूर्णीय क्षति हुई है। उनकी बीमारी के दिनों में मैं आलस्यवश उनके दर्शन न कर सका, एतर्थ महान् खेद है? उनकी सद्गति एवं चिर शान्ति के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थी हूं।

शिवपूजन शास्त्री, दयानन्द गुरुकुल गाजियाबाद

भारत में मुसलमान कैसे बढ़े ?

—सरला मोयल मंत्राणी स्त्री आर्य समाज, जीन्द

इतिहास बतलाता है कि मुसलमानों ने हिन्दुओं को मुसलिम बनाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया उन्होंने लोगों को मारा घरों में आग लगा दी और जबरदस्ती गुलाम बनाकर अपने देश को ले गए। महिलाओं का अपमान किया और जोरो जुल्म में कोई कसर नहीं छोड़ी। कुछ गलती उस सारे मामले में हिन्दुओं की भी रही है और जो आज भी कर रहे हैं। उन दिनों के हिन्दुओं ने भी की। मुस्लिम जिस समय मुहम्मद गौरी ने दिल्ली का तख्त हथिया लिया तो पंजाब में महाराजा जयपालसिंह राज्य करते थे। जब उनसे गौरी की मुठभेड़ हुई तो उन्होंने महाराजा जयपालसिंह के पुत्र विजयपालसिंह को मुसलमान बना लिया। परन्तु जब भी विजयपालसिंह ने हिन्दू बनने की इच्छा प्रगट की तो महाराजा जयपालसिंह ने ठुकरा दिया इसके बाद वह कट्टर मुसलमान हो गया और बड़े भारी जुल्मो सितम ढाए। जिसकी मिशाल मिलना मुश्किल है। उसी प्रकार जब अलाऊद्दीन खिलजी ने दक्षिण पर हमला किया तो मलिक काफूर नामी गुलाम को देहली ले आया। जब अलाऊद्दीन ने उसको कमान्डर इन चीफ बना दिया तो उसने हिन्दुओं पर बड़े भारी जुल्म किए यहां तक की यह समझा जाने लगा था कि अलाऊद्दीन की हकूमत मलिक काफूर के सर पर चल रही है। इसी प्रकार जब अलाऊद्दीन खिलजी दक्षिण की राजकुमारी देवलदेवी को अपनी मलिका बनाकर ले आया। देवलदेवी ने इच्छा प्रगट की कि उसको बेटी कमला देवी जो महाराजा रामदेव के घर में है उसको अपने बेटे की बहू बनाकर ले आए। लोगों में आम चर्चा है कि महाराजा अकबर ने बीरबल से यह इच्छा प्रगट की कि मैं हिन्दू बन जाऊं। परन्तु बीरबल ने यह कहा कि गधा कभी गाय नहीं बन सकता।

जब महमूद गजनवी ने सोमनाथ पर हमला किया तो हिन्दुओं की अनगिनत सेना इकट्ठी हो गई। जो महमूद गजनवी की सेना से कई गुणा ज्यादा थी। परन्तु वहां के पुजारियों ने उस सेना को यह कहा कि तुम्हें लड़ने की जरुरत नहीं है। ज्यों ही महमूद मन्दिर में दाखिल होगा भगवान उसको अन्धा कर देंगे। उसके इलावा एक भावना और फैल गई कि ज्यों ही उनका ध्वज नीचे गिर जाएगा शत्रु की विजय हो जाएगी। परन्तु जब महमूद गजनवी सोमनाथ के मन्दिर में दाखिल हुआ और उसने मूर्तियों को तोड़ा तो उसके मारने के लिए या उसको अन्धा करने के लिए कोई भगवान मैदान में नहीं आया और वह मूर्तियां तोड़कर अरबों व खरबों रुपयों की दौलत ऊंटों पर लाद कर अपने मुकाम पर ले गया। जब एक मुसलमान को पता लगा कि लोगों में झण्डे के प्रति यह भावना है तो उसने तीर मारकर उस झण्डे को गिरा दिया और सेना ने समझा कि जब हमारा झण्डा नीचे गिर गया हो तो हमारी हार होने में कोई कसर बाकी नहीं रही है। महमूद गजनवी लूटमार करके अरबों-खरबों की दौलत अपने साथ ले गया और लाखों हिन्दुओं को कत्ल करके लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बनाकर लाखों युवक युवतियों को गुलाम बनाकर अपने साथ ले गया। जो मुसलमान हजारों की संख्या में प्रवेश कर गए थे। वे आज कई करोड़ की संख्या में भारत में बैठे हुए हैं। उनमें ज्यादातर मुसलमान हिन्दुओं की औलाद हैं और उनको जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया है। इसलिए हिन्दुओं से बने मुसलमानों को यह सोचना चाहिए कि हमें जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया है और अब हमारा राष्ट्र के प्रति क्या कर्त्तव्य है।

इस प्रकार से हिन्दुओं को जान से मरने के डर से मुसलमान बनना पड़ा। बहुतों को गुलाम बनाकर विदेशों में न ले जाएं इस डर से मुसलमान बनना पड़ा। मुझे याद है कि हमारे मकान में एक मास्टर जी कहा करते थे कि हमारी एक पीढ़ी के दो बुजुर्ग औरंगजेब की सेना में ऊंचे पद पर आसीन थे। जब औरंगजेब का एक सरकुलर आया कि या तो मुसलमान बन जाओ या तुम्हारी हत्या कर दी जाएगी तो उन दोनों भाइयों ने मुसलमान बनने की बजाय मरना ही ठीक समझा। इस प्रकार से सभी मुसलमानों ने बड़े भारी जुल्मों सितम किए और करोड़ों हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया।

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद का प्रस्ताव

२४-७-८१ रविवार को फरीदाबाद में श्री सत्यदेव जी आर्य की अध्यक्षता में पंजाब सुरक्षा दिवस मनाया गया जिसमें फरीदाबाद क्षेत्र समस्त आर्य समाजों व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् फरीदाबाद मण्डल ने भाग लेकर एक सभा बुलाई। सभा में श्री गोपीराम जी, श्री बलबीर सिंह आर्य, अध्यक्ष महोदय, श्री सोमदेव आर्य, श्री सत्य प्रकाश जी, श्री चन्द्रगुप्त जी, श्री गिरधारी लाल जी, श्री ओमप्रकाश जी, तथा श्री विनायक शर्मा आदि ने विचार प्रकट किये।

यह तथ्य उजागर किया गया कि सभी सिख गुरुओं ने अपना सारा जीवन हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये लगाया यहां तक की पांचों प्यारे भी हिन्दू ही थे। फिर सिख अपने आपको कैसे हिन्दुओं से अलग समझते हैं। समाचार यह है कि पाकिस्तान तथा अन्य मुस्लिम देश इस आन्दोलन में उग्रवादी अकालियों को हर प्रकार का सहयोग कर रहे हैं। जो कि कभी आपस में थे न रह सकें और अपने शासन काल में हिन्दुओं (सिखों) पर जुल्म ढाते रहे हैं। क्या वे मुसलमान कभी (सिखों) हिन्दुओं के हितैषी बन सकते हैं ?

इस समाचार पर विचार किया गया कि लीबिया की गदाफी सरकार ने खालिस्तान के दावेदार जगजीतसिंह चौहान को लीबिया आने का निमन्त्रण दिया गया है। प्रस्ताव में सरकार से अनुरोध किया गया कि लीबिया सरकार को कड़ा विरोध पत्र भेजा जाये। इस निमन्त्रण को भारत के आन्तरिक मामलों में दखल माना गया है। इसके पीछे यह भावना नजर आती है कि तुम खालिस्तान मांगो हम दूसरा पाकिस्तान मांगेंगे। शायद इसी षडयन्त्र के अन्तर्गत मुसलमानों को नकली सिख बनाकर पंजाब में भेजा जा रहा है। यह उनकी इस्लामिकरण योजना का षडयन्त्र दिखाई देता है।

युवकों को संगठित होकर देश धर्म के लिये काम करने की प्रेरणा दी गई। प्रस्ताव में सरकार से मांग की गई कि धार्मिक स्थानों में हथियार जमा किए गये हैं या अपराधियों को छिपाया गया है उन्हें सरकार अपने नियन्त्रण में ले तथा प्रबन्ध किया जाये कि भविष्य में पूजा स्थलों का दुरुपयोग न हो। हत्यारों व अपराधियों को स्वर्ण मन्दिर से निकालने के लिये पुलिस या सेना की आवश्यकता हो तो सेना को भी बुलाया जाये।

जैसे पागल हाथी उपयोगी वृक्षों को भी उखाड़ता चला जाता है ऐसे ही उग्रवादी अकाली नेता अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिये निर्दोष व्यक्तियों की निर्मम हत्या करवा कर आतंक फैला रहे हैं तथा हिन्दुओं व सिखों के मध्य खाई पैदा की जा रही है।

इस सारी स्थिति के लिये सरकार को दोषी ठहराया गया। अगर समय पर सरकार ठीक कदम उठाती तो आज स्थिति इतनी न बिगड़ती। प्रस्ताव में सरकार से मांग की गई कि पंजाब में तुरन्त राष्ट्रपति शासन लागू किया जावे क्योंकि पंजाब सरकार व पुलिस व्यवस्था बनाए रखने में असफल रही है।

२४ जुलाई के एक समाचार में भिंडरावाला ने कहा है कि घरेलू उड़ान में सिखों की करपान छोटी करदी गई है। हिन्दुओं का जनेऊ छोटा क्यों नहीं किया गया। साथ में कहा कि सिखों के कारण ही पाकिस्तान की सीमा आज बाघा तक है वरना आज यह सीमा यमुना तक होती। शायद श्री भिंडरावाले को इतिहास की जानकारी नहीं है जिस वीरता की वे बात करते हैं वह सिखों में यज्ञोपवीत (जनेऊ) के कारण से ही है। इसका एक उदाहरण शहीद सरदार भगत सिंह हैं। जिन्होंने ७ वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत धारण करके देश के काम आने की प्रतिज्ञा की थी। इसी प्रतिज्ञा ने उन्हें देश पर बलिदान होने की प्रेरणा दी थी जिसकी पुष्टि उनकी उस पत्र से होती है जो उन्होंने लाहौर डी० ए० वी० कालेज से जाने के बाद अपने दादा जी को लिखा था। असैम्बली में बम्ब फेंककर भगतसिंह के लिये भागना कोई मुश्किल कार्य न था। भागकर वह कायरता का कलंक नहीं लगवाना चाहता था। यज्ञोपवीत (जनेऊ) तथा डी० ए० वी० कालेज लाहौर ने ही उसे कायर बनने से बचाया तथा स्वतन्त्रता संग्राम की चोटी के शहीदों की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। के० एल० महत्ता (प्रधान)

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर

हरयाणा से यात्रियों की १०० बसें अजमेर पहुंचेंगी ऋषि निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध में जनता में अपार उत्साह

आपको यह तो ज्ञात ही है कि नवम्बर ३, ४, ५ और ६, १९८३ को अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समस्त आर्य जगत् के उत्साह से मनाई जा रही है, यू तो विज्ञापनों और विज्ञप्तियों द्वारा समारोह में भाग लेने के लिए सभा सब नर-नारियों को प्रेम से आमन्त्रण दे रही है, किन्तु आपसे हमारी नम्र प्रार्थना है कि आप अपनी आर्यसमाज एवं सम्बन्धित समस्त आर्य संस्थाओं को इस समारोह में भाग लेने की प्रार्थना करें। प्रत्येक नगर की बड़ी समाज अपने शहर से एक बस अवश्य अजमेर ले जाएं। प्रत्येक आर्य शिक्षण संस्था के मुख्याध्यापक/मुख्याध्यापिकों एव प्रिंसिपलों से मेरी विशेष रूप से प्रार्थना है कि वे अपने छात्र छात्राओं सहित एक-एक बस में अवश्य अजमेर पहुँचे।

हरयाणा में लगभग आर्य कन्याओं एवं लड़कों के लगभग २४-२५ गुरुकुल हैं। मैं सभी गुरुकुलों के अधिकारियों एवं आचार्यों से आग्रह पूर्वक प्रार्थना करता हू कि वे अपने ब्रह्मचारियों के साथ बस में अथवा रेल द्वारा अवश्य अजमेर पहुंचे। जितने गुरुकुल हरयाणा में है शायद ही भारत के किसी बड़े से बड़े प्रान्त में होंगे।

सभा के माननीय अन्तरंग सदस्य श्री दीवान भीमसेन जी को हरयाणा रोडवेज बसें किराये पर बसें प्राप्त करने का अधिकार दिया था वे अब भी यत्नशील है। सम्भवत: बसों का प्रबन्ध प्रत्येक सस्था को अपने आप करना पड़ेगा। जो समाजें बसों का प्रबन्ध अपने आप न कर पायें वे कृपया सभा को तुरन्त लिखने का कष्ट करें ताकि बसों का प्रबन्ध करने का यत्न किया जाए। जहां तक मेरा अनुमान है और मुझे ज्ञान है नारनौल, रिवाड़ी, गुड़गांव, फरीदाबाद, सोनीपत, बहादुरगढ़, रोहतक आदि बसों का प्रबन्ध करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं आएगी। अम्बाला में भी कोई विशेष कठिनाई न होगी। कुरुक्षेत्र जिला वेद प्रचार मण्डल ने अपनी बसों का प्रबन्ध कर लिया है। १३५ रुपये प्रति सवारी आना जाना होगा। कैथल, करनाल, लाडवा और यमुनानगर के भाई आर्य वेद प्रचार मण्डल, जिला कुरुक्षेत्र के अधिकारियों से गुरुकुल कुरुक्षेत्र बातें कर सकते हैं। जीन्द, भिवानी, हांसी, हिसार आदि की अवस्था से अभी मैं ठीक तौर से परिचित नहीं हूं।

कुछ आवश्यक निर्देश

१. शताब्दी में जाने वाली प्रत्येक आर्यसमाज एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि प्रत्येक आर्यसमाज अपना नामपट् जिसमें हरयाणा अवश्य अंकित हो, साथ लावें और न्यून-से-न्यून ओ३म् ध्वज लाठियों सहित अवश्य बनवावें।

२. भोजन की सुविधा के लिए १ प्लेट, २ कटोरी, एक गिलास और एक लौटा प्रत्येक व्यक्ति अपने थैले में रखकर ले जाए। वस्त्र भी आवश्कतानुसार अपने साथ ले जाए।

३. जो आर्य समाजें एवं शिक्षण संस्थाएं समर्थ हों वे लंगर में प्रदान करने के लिए जितना उचित समझें दाल एवं आटा अपनी बस में ले जाने की कृपा करें।

४. यदि आर्य समाजें और शिक्षण संस्थायें अपने जाने का मार्ग और स्थानों का सकेत सभा को कर दें तो सभा यह प्रयत्न करेंगी कि हरयाणा और राजस्थान में आने वाली समाजे ऐसी बसों के यात्रियों का उचित स्वागत कर सकें।

५. बस-यात्रा और आर्य समाजें रास्ते में और शोभा-यात्रा में अपने कुछ एक लगाये जाने वाले नारों का चयन भी कर लेवें तो उत्तम होगा।

६. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का कार्यालय १६ या १७ अक्तूबर से महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर में खुल जाएगा। अपने ठहरने की व्यवस्था व दूसरी बातों के लिए आप १६-१०-८३ के पश्चात् वहां से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हम प्रयत्न करेंगे कि आपको प्रत्येक जानकारी से अवगत रखें।

७. अजमेर शताब्दी में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक भाई-बहन से प्रार्थना है कि वह केसरिया पगड़ी, टोपी और केसरिया धोती अवश्य लेकर अजमेर पधारें।

८. आवश्यक जानकारी के लिए आपसे निवेदन है कि जो भाई रोहतक से जाना चाहें वे ११५ रुपये प्रत्येक सवारी तुरन्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय मे भेज कर अपनी सीट सुरक्षित करवा लें। रोहतक से बस १-११-८३ को प्रातः ८ बजे चलेगी। यात्री २ तारीख का सायं तक का खाना अपने साथ लावें। वैसे भी प्रार्थना है कि अजमेर में आवश्यकता पड़ने पर बाजार की चीजें न खानी पड़े इसलिए एक किलो घी में आटा भुनकर उसमें मुनासिब खाण्ड मिलाकर अपने थैले में रखें ताकि आवश्यकता पड़ने पर बाजार की चीजो से बचा जा सके और चाय व दूध के साथ प्रयोग किया जा सके।

९. दिल्ली से भी विशेष रेलगाड़ी व बस भी जाएगी जो भाई दिल्ली से जाना चाहे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर समिति उप कार्यालय अनारकली आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से पत्र द्वारा सम्पर्क करें। दिल्ली से बसों का आने जाने का किराया १०० रुपये एवं रेलगाडी में अपनी सीट सुरक्षित करवाने के लिए ७५ रुपये अनारकली आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के पते पर भेज देवें।

महाशय भरतसिंह
प्रधान सम्पादक

पंजाब सतलुज यमुना लिंक नहर में रुकावटें न डाले प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी की चेतावनी

प्रेस में यह सूचना प्रकाशित हुई है कि जिला रोपड़ (पंजाब) के गांव रंघोया जो कि मोरेण्डा के पास है के निवासियो ने सतलुज यमुना लिंक (S.Y.L.) नहर पर रेलवे विभाग ने जो पुल बनाना था, उसके सामान को उठा लिया और रेलवे स्टाफ को काम करने और धमकी दी और अधिकारियों को कहा कि हरयाणा को जाने वाले पानी के लिए वह पुल नहीं बनाने देंगे। इस सन्दर्भ में पंजाब सरकार की चुपी एक हैरत की बात है। पंजाब सरकार को चाहिए था इस प्रकार के शरारती तत्वों को तुरन्त गिरफ्तार करती और 'बिल्डिंग मैटिरियल' रेलवे विभाग को फौरन लौटाती और रेलवे के स्टाफ को पूरी सुरक्षा देती ताकि रेलवे विभाग अपने काम को सुविधा के साथ आरम्भ कर सकें। रेलवे सचिवालय को भी इस बारे में बड़े सख्त और दृढ़ कदम उठाने चाहिए और पंजाब सरकार को बाध्य करना चाहिए कि वह कार्य आरम्भ करने के लिए प्रत्येक प्रकार की सुविधा रेलवे को दें।

मैं अकालियों और पंजाब सरकार को चेतावनी देता हूं यदि इस प्रकार की उत्तेजनाजनक घटनाये तुरन्त न रोकी गई और शरारती तत्वों को उचित दण्ड न दिया गया तो हरयाणा के लोगों को बाध्य होकर "रास्ता रोको" का आन्दोलन पंजाब सरकार के विरुद्ध करना पड़ेगा ऐसी अवस्था में हरयाणा रक्षा वाहिनी के पास और कोई चारा नहीं रह जाता कि वह हरयाणा के लोगों को "रास्ता रोको" के लिए ललकारें और इस आन्दोलन को शुरू करें।

मुझे विश्वास है कि पंजाब के बुद्धिजीवी इस सम्बन्ध में ठीक-ठीक विचार करेंगे और पंजाब के अकाली और पंजाब सरकार उस शरारत को तुरन्त बन्द करेगी जो कि जिला रोपड़ के ग्राम रघोयां ने शुरू की है। पंजाब और हरयाणा के लोग आपस में भाई-२ हैं और उन्होंने एक दूसरे के साथ भाई-भाई का व्यवहार करना चाहिए। यह बड़ी दुर्भाग्य पूर्ण बात है कि पानी पाकिस्तान को जा रहा है पंजाब के और कुछ राष्ट्रद्रोही तत्व हरयाणा को अपने हिस्से के पानी से वंचित करना चाहते है पानी पाकिस्तान को बैगर किसी कीमत के जा रहा है।

पंजाब सरकार और केन्द्रीय सरकार ने इन राष्ट्रद्रोही तत्वों को मजबूत हाथों से दबाना चाहिए और हरयाणा के लोगों को बाध्य नहीं करना चाहिए कि वह अपने हितों की स्वयं रक्षा करें।

कुछ तड़प कुछ झड़प

प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर (पंजाब)

बिच्छू का डंक

बिच्छू का डंक—फारसी भाषा में एक पद में एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कही गई है कि बिच्छू डंक मारता है तो किसी से द्वेष के कारण नहीं अपितु, उसका स्वभाव ही ऐसा है। पं० बुद्धदेव विद्यालंकार इस प्रवृत्ति को 'निष्काम द्वेष' की संज्ञा दिया करते थे। पुलिस विभाग से सेवानिवृत एक व्यक्ति ने साधु वेश धारण करके विद्यानन्द विदेह के नाम से आर्यसमाज का अहित करना आरम्भ किया। वह अपनी पत्नी को साथ लेकर घूमा करते थे फिर पत्नी उन्हीं के पास देहली में उनके लाखों के भवन में उनके साथ ही रहती थी। यह भवन आर्यों के दान से निर्मित हुआ अब इसके सर्वेसर्वा उनके बेटे हैं। स्वामी ओमानन्द जी ने पत्नी को साथ न रखने की बात कही तो बड़ा विचित्र उत्तर दिया था।

स्वामी गमेश्वरानन्द जी, पं० शान्तिप्रकाश जी ने विदेह के वेद घात, आर्यसमाज द्वेष को बहुत समय पूर्व भांपकर आर्यों को सावधान किया था। मरने से इस पुलिसिए साधु ने एक आत्म स्तुति पर निन्दा पुराण रचा'। इसे विहंगम दृष्टि से पढ़ने से ऐसा लगता है कि विदेह जी को 'मिराक' का रोग था। यह एक प्रकार का उन्माद होता है। मुसलमानों में भी एक व्यक्ति को हुआ बताते हैं। वह अपने को नबी कहता था। इस पुराण में इसने महर्षि दयानन्द जी महाराज से लेकर स्वामी दीक्षानन्द जी तक सब प्रतिष्ठित आर्यों को गालियां दी हैं। अपनी, पत्नी की, बेटों की झूठी बड़ाई करने में तनिक नहीं लजाया। अपने पौत्र के लाटरी काण्ड में चण्डीगढ़ भागा-भागा विदेह आया इसकी कहीं चर्चा नहीं की। पं० आशुराम जी के सामने गिड़-गिड़ाया, यह लिखा ही नहीं।

अस्तु! अब इसके बेटों ने भी यहीं धन्धा चालू कर रखा है। इसका एक प्यारा आर्यों के नाम बिन मांगे पत्र-पत्रिकायें भेज रहा है। महर्षि की निर्वाण शताब्दी के विषय में अनाप-शनाप लिखता है। आर्य संन्यासियों, आर्य नेताओं के विरुद्ध विष वमन कर रहा है। भले मानस प्रायः गाली खाकर, अपमान सहकर भी चुप रहते हैं। दुष्ट प्रवृत्ति वालों को इसी में अपनी शूरता दीखती है। विदेह के बेटे आर्यसमाज का अहित करने पर तुले हैं, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं।

'कीकर को कांटे ही लगते हैं; आम तो नहीं लगेंगे'। यह लोकोक्ति इस कुटुम्ब पर पूरी तरह चरितार्थ होती है। परन्तु वह भ्रम में न रहें वह भी समझ लें कि—

'जो चांद पे थूके मुंह अपने पर थूकों की भरमार करे'।

श्री ब्र० आर्यनरेश

इसमें बुरा मानने की क्या बात है? श्री ब्र० आर्यनरेश जी जहां भी जाते हैं, वह कुछ बातों पर विशेष बल देते हैं। गृहस्थों को सन्ध्या हवन यज्ञ नित्य प्रति करने के लिए कहते हैं। आर्यों को वेद विहित कर्मों की प्रेरणा देना हो तो हमारे विद्वानों, तपस्वियों का कर्त्तव्य है। ब्रह्मचारी जी तो आर्यसमाज के उस सेवक के घर का भोजन भी ग्रहण नहीं करते जो नियमित हवन यज्ञ न करे। यह भी आपत्तिजनक बात नहीं। अपनों को सद्प्रेरणा का यह भी एक अच्छा ढंग है।

जब ब्रह्मचारी जी आश्रम मर्यादा का पालन करने की बात बड़े जोश वा आग्रह से कहते हैं तो कुछ विद्वानों को यह बात अच्छी नहीं लगती। कई एक तो इस पर बहुत बुरा मनाते हैं। समझ नहीं आता कि इसमें बुरा मनाने वाली कौनसी बात है। यदि अपनी किन्हीं दुर्बलताओं के कारण कोई सज्जन आश्रम नहीं बदल सकता तो इसका यह अर्थ तो नहीं कि आर्य मर्यादाओं का प्रचार न किया जावे। आश्रम व्यवस्था मुसलमान के लिए नहीं, ईसाई के लिए नहीं, यह आर्यों के लिए है। हमें इसका पालन करना होगा। इस लिए अपनी कमियों को छुपाने के लिए ब्रह्मचारी जी को दोषी ठहराना तो शोभनीय नहीं। उनके सत्प्रयत्नों से युवक समाज में खिच रहे हैं। स्वाध्याय की रुचि कइयों में जागी है। कई योगनिष्ठ बन रहे हैं। कई एक ईश्वर विश्वासी बने हैं। ऐसे व्यक्ति का सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य है।

सामवेद के हिन्दी पद्यानुवाद

सामवेद का पद्यानुवाद पं० बनवारीलाल जी बी०ए० ने मृत्यु से पूर्व पूरा कर दिया था। पता नहीं अब कहां है? कभी छपेगा भी या नहीं। उनकी सन्तान आर्यसमाजी तो है नहीं। श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के प्रति उनके सब पुत्रों में गहरी श्रद्धा है और वह यदा कदा मठ में भी आते हैं। वह अनुवाद कैसा है यह कहना कठिन है।

हरयाणा के आर्य विद्वान पं० विद्यानिधि जी ने भी प्रभु की वाणी के लिए यह शुभ कार्य किया है। सामवेद का यह अनुवाद छपा है। सुन्दर है। उपयोगी है। इसका प्रचार होना ही चाहिये।

अभी-अभी सूचना मिली है कि हिन्दी के प्रसिद्ध आर्य कवि, तपस्वी मनस्वी प्रो० रामनिवास जी विद्यार्थी ने भी सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद पूरा कर लिया है। वह एक बड़े सुलझे व्यक्ति, छन्द शास्त्र पर अद्भुत अधिकार रखने वाले साहित्य सेवी हैं। महर्षि की बलिदान शताब्दी पर यह ग्रन्थ छपना ही चाहिये। आपका एक ग्रन्थ ऋचाओं की छाया में छप चुका है। इसकी भूमिका कवि मनीषी स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने लिखी थी।

वेद भक्तों को इस यशस्वी साहित्यकार की कृति के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग करना चाहिये। आर्यसमाज सुन्दरनगर (फजलपुर) तहसील बडोत जिला मेरठ इस ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निश्चय कर चुकी है। प्रभु करे यह कार्य पूरा हो।

सहयोग कीजिए

कुछ ही दिनों में मेरे द्वारा लिखित पूज्य पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का विस्तृत जीवन चरित्र 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' छप कर आ जाएगा। आर्यसमाज के कर्मठ सेवक, श्री स्वामी ओमानन्द जी के भक्त श्री वीरेन्द्रनाथ जी गुप्त मुरादाबाद ने इसके प्रकाशन का यश कमाया है। मुझे यह कहने लिखने की कोई आवश्यकता नहीं कि लेखनी सम्राट उपाध्याय जी के इस जीवन चरित्र में आर्यसमाज के इतिहास की ऐसी ऐसी खोजपूर्ण सामग्री मिलेगी जो अनेकों पाठकों वा विद्वानों के लिए सर्वथा नई जानकारी होगी। उपाध्याय जी का किस पर ऋण नहीं है। सारा आर्यजगत् सदा उनका ऋणी रहेगा।

यह भूल न होने पावे

महर्षि बलिदान शताब्दी पर साहित्य बिक्री के लिए स्टाल लगेंगे। ऐसा होना ही चाहिये। परन्तु आर्यसमाज शताब्दी देहली वाली भूल को न दोहराया जाए। देहली में आर्यसमाज और ऋषि को जीवन भर गालियां देने वाले एक पोंगा पंथी के साहित्य का भी स्टाल लगवाया गया क्यों? शताब्दी वेदप्रचार के लिए है अथवा वेद घात के लिए? मैं कर जोड़ विनीत विनती करते हुए पुरुषार्थ और परमार्थ के पुतले स्वामी ओमानन्द जी से कहूंगा कि विदेह के घर की भी दुकानदारी वहां नहीं होनी चाहिये उसने हमारे समाज का बड़ा घात किया है।

शताब्दी शताब्दी रहे—सरकारी शोभा न बनने दें।

उड़ीसा प्रान्त में शुद्धि समारोह की धूम

उड़ीसा प्रान्त में शुद्धि समारोह की धूम मची हुई है। वैदिक धर्म में लोग उसी प्रकार प्रविष्ट होते जा रहे हैं, जैसे अत्यन्त क्षुधातुर व्यक्ति को मिष्टान्नकोष दृष्टिगोचर हो जाए।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द एवं मन्त्री श्री विशिकेशन शास्त्री तथा एडवोकेट पी० के० बहिदार के अथक प्रयास से गत १० जुलाई को आर्यसमाज मन्दिर बलांगीर में पवित्र वेद मन्त्रों की ध्वनि से गुञ्जायमान व उत्साहपूर्ण वातावरण में यज्ञाग्नि को आहुति प्रदान की।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समाचार

स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती के नेतृत्व में गाजियाबाद से अजमेर पद-यात्रा

गाजियाबाद। महर्षि दयानन्द शम्भुदयाल वैदिक संन्यास आश्रम के आचार्य स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती के नेतृत्व में बीस संन्यासियों, वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों की चार की टोली २२ सितम्बर १९८३ को यज्ञानुष्ठान और महर्षि दयानन्द के मानव उत्थान कार्यों पर एक भारी सभा में प्रकाश डाला। वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद से अजमेर के लिए प्रस्थान करेगी।

गाजियाबाद नगर की समस्त आर्य समाजों और नागरिकों के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक पं० बालदिवाकर हंस सकुशल पद-यात्रा की पूर्णता के निमित स्वस्ति पाठ करें। और ओम् ध्वज फहराते हुए पद-यात्री प्रस्थान देंगे। यह यात्री मार्ग में पड़ने वाले स्थानों पर ऋषि दयानन्द के विचारों का प्रचार करते हुए अक्टूबर के अन्त में अजमेर पहुँच जावेंगे।

जनार्दन भिक्षु

महर्षि निर्वाण पर शताब्दी यज्ञ कार्यक्रम

महर्षि स्वामी दयानन्द जी की निर्वाण शताब्दी जो ३ से ६-११-८३ को अजमेर में हो रही है उससे पूर्व ६-१० से ६-११-८३ तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ होना है उसकी पूर्ति के लिए आपका सहयोग प्रार्थनीय है। इसे कई बार सूचित करने की कृपा करें तथा सर्व साधारण में, महर्षि के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने में अपना अमूल्य सहयोग देवें।

यज्ञ के नियम–

क) १. यजमान व्रतियों का यज्ञ से पूर्व एक सप्ताह का ब्रह्मचर्य हो। २. किसी व्यसन—मद्य, मांस, अण्डे, तम्बाकू इत्यादि का सेवन न करते हों या हमेशा के लिए त्यागें। ३. प्रत्येक नर-नारी को यज्ञोपवीत धारण करना होगा। ४. यज्ञ समय वस्त्र शुद्ध हों, जिन वस्त्रों के साथ शौच गये और खाना खाया, उन्हें यज्ञ समय बदल लें—सुन्दर होगा धोती चोला हो, पतलून वर्जित रहेगी, हो सके तो पीत वस्त्र पहनें। ५ चमड़े की कोई वस्तु अपने पास न रखें। ६. छोटे शिशुओं को साथ न लावें। ७. रजोदर्शन की स्थिति में यज्ञ में सम्मिलित न होवें। ८. शरीर नग्न नहीं रहना चाहिए। ९. समय की पाबन्दी अनिवार्य होगी। १०. यज्ञ में देर से आने वाले स्थान का आग्रह न करें। ११. यज्ञ समय अन्य बातें करना यज्ञ का निरादर होगा। १२ याजक अपना घी, सामग्री नक़द दाम देकर यज्ञ में बैठने से पूर्व ले लेवें। १३. यज्ञ सम्बन्धी ब्रह्मा जी का आदेश पालन करना होगा, शका-समाधान बाद में कर लें। १४. यज्ञ में आने वाले अपने आवश्यक वस्त्र, बिस्तरा, लोटा इत्यादि साथ लायें।

ख) यज्ञों की समय-सारणी निम्न प्रकार होगी :—

ऋग्वेद	६-१०-८३ से १५-१०-८३	यज्ञ दोनों
यजुर्वेद	१६-१०-८३ से २२-१०-८३	समय प्रातः
सामवेद	१३-१०-८३ से २५-१०-८३	सायं हुआ
अथर्ववेद	२६-१०-८३ से ६-११-८३	करेगा

ग) पहले वेदों के यज्ञों में संभवतः याजक कम होंगे परन्तु अन्त के यज्ञ में याजकों की बहुत संख्या होने की संभावना है।

यज्ञ प्रेमी भाई-बहिनों से निवेदन है कि जो यजमान बनने के इच्छुक हों वे अपना नाम व कुछ छोटा परिचय निम्न पते पर लिखने की कृपा करें। यथा सम्भव सबको यज्ञ का सुअवर देने का प्रयत्न किया जावेगा। यदि देर से लिखेंगे तो सम्भव है बारी न भी मिल पावे, जिसके लिए क्षमा करेंगे।

घ) पत्र इस पते पर भेजें—

दयानन्द वानप्रस्थी

ब्रह्मा चतुर्वेद पारायण यज्ञ, अजमेर (राज०)

निर्वाण शताब्दी अजमेर हेतु साईकल पर यात्रा

मैंने विचार बनाया है, कि दो अक्टूबर को गान्धी समाधी से साईकल द्वारा यात्रा कर अजमेर दो नवम्बर को पहुँचकर दो महान् आत्माओं के शरीर समाधी को साईकल यात्रा से जोड़ दूं।

मैं वैसे बुत प्रस्त नहीं, ब्लाक बुत्ता से भला कुत्ता को समझता हूँ। पर इन दो महान् आत्माओं ने महान् बलिदान दे अपने-अपने विचारों की पुष्टि की है। दोनों का जन्म एक ही प्रदेश में हुआ, और दोनों ही आत्माओं ने हिन्दी तथा दलित उधार का मुख्य कार्य किया। हिन्दी भाषा न होते हुए भी देश को एकता में बांधने वाली भाषा हिन्दी का कार्य संभाल देश को जागृत किया।

मैं इस यात्रा में एक मुख्य उद्देश्य लेकर चलूगां। पञ्च यज्ञों का महत्व घर-घर में पहुँचाने हेतु जहां-जहां रूकूंगा इन यज्ञों का प्रचार तथा प्रसार कार्यरूप में करने का यत्न करूंगा।

प्रातः दो महान् यज्ञों को कार्यरूप देकर यात्रा शुरू करूंगा। जहां यात्रा समाप्त करूंगा भोजन से पूर्व एक यज्ञ वलि विश्वरैण यज्ञ करूंगा। सायंकाल, प्रातः का यज्ञ तक पितृ यज्ञ हेतु उपदेश करूंगा। युवकों कार्य व्रत दिलाकर इन दो यज्ञों को कर पांचों यज्ञों का प्रचार यथा शक्ति करूंगा, पञ्च यज्ञ प्रकाश पुस्तक घर-घर में रखने की प्रेरणा दूंगा।

यदि कोई सज्जन मेरे साथ इस यात्रा में चलने का प्रोग्राम बनावे तो मेरे से सम्पर्क करें। सह-यात्रा में बड़ा सहयोग मिलता है।

दीपचन्द आर्य
M-14 साकेत नई दिल्ली-17

आर्य वीर दल अधिकारी ध्यान दें

समस्त सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रान्तीय अधिकारियों को चाहिए कि वह महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर (राजस्थान) जाने वाले आर्य वीरों की सूची अब से पन्द्रह दिवस के अन्दर-अन्दर केन्द्र को भेज दें जिससे उनके लिए अलग से शिविर (छावनी लगाकर आवास, भोजन, शौचालय; स्नानागार आदि की समुचित व्यवस्था करना सम्भव हो सके।

आर्य वीरों को पूर्ण गणवेश में ही अजमेर जाना है। आवश्यक वेशादि से सुसज्जित और कान तक की लाठी, सीटी, डायरी उचित बिस्तर आदि के साथ क्योंकि कि वहां पूर्ण अनुशासन में रहकर, अधिष्ठाता एवं संचालक आर्य वीर दल राजस्थान के आदेशों का पालन करना होगा।

देश विदेश के विभिन्न भागों से जो आर्य गण वहां पधारेंगे उनकी सेवा-सुरक्षा कार्य का उत्तर दायित्व आपको सम्हालना है। यह ध्यान रखियेगा।

बालदिवाकर हंस
प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल
नई दिल्ली-2

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर सर्वहितकारी की भेंट :—

हरयाणा आर्य समाज–विभूति विशेषांक

हरयाणा के आर्य समाज को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख पत्र 'सर्वहितकारी' का महर्षि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर 'हरयाणा आर्य समाज–विभूति विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। हरयाणा की आर्य समाजों तथा सभी आर्यों से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र के दिवंगत आर्य समाज के ब्रह्मचारी, सन्यासी, वानप्रस्थी विद्वान्, उपदेशक, कार्यकर्त्ता आदि विभूतियों का संक्षिप्त समर्पित परिचय तथा चित्र सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें। —सुदर्शनदेव आचार्य, सम्पादक

भारत के गृह मन्त्री के नाम खुला पत्र

माननीय गृह मन्त्री श्री सेठी जी, सादर नमस्ते।

ईश्वर की अपार कृपा से आप स्वतन्त्र भारत में भारत सरकार के मन्त्रीमण्डल में एक ऊंचे पद पर आसीन हैं जिसके लिए सभी भारत वासी अपना गौरव समझते हैं और आप से भारत के प्राचीन काल गौरवशाली स्वर्ण अक्षरो मे लिखे गये इतिहास की कुछ झांकियां जो कि वैदिक सिद्धान्त के अनुकूल मैं आपकी सेवा में लिखकर भेजने का साहस कर रहा हूँ। ३१-८-८३ दिनाक बुधवार को आर्य समाज मन्दिर जगाधरी में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर आयोजित विशाल सभा में सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव की प्रतिलिपि आप की सेवा में आवश्यक और यथोचित कार्यवाही हेतु भेज रहा हूँ। आप से प्रार्थना है कि गाय और पशुओं की चर्बी की डालडा वनस्पति घी मे मिलावट करने वाले मिल मालको के विरुद्ध शीघ्र कठोर कार्यवाही करके अनुगृहीत करें। यह प्रस्ताव गौ माता और जवान जीवो के रक्षक योगी राज श्री कृष्ण जन्माष्टमी के भक्तो के अन्तर्तात्मा की पुकार है। मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस दिशा मे कठोर पग उठा कर देश वासिया और बे जवान जीवो की रक्षा करेंगे और यही धर्म कर्तव्य है!

एक वेद मन्त्र भी अर्थ सहित आपकी सेवा मे प्रमाण के लिये उद्धरित कर रहा हूँ.—

पाप, पापी को लौट आता है।

असद् भूम्या: समभवत् तद् यामेति महद् व्यच।।
तद् व ततो विधूपायत् प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु।। अथर्व ४।१९।६

मनुष्य पाप करता है और समझता है किसी को पता नहीं चला। परन्तु यह बात नही है पाप जहां से उत्पन्न होता है वहां तक सीमित नही रहता अपितु पापी को कष्ट देता हुआ ऊपर वज्र-प्रहार करता हुआ वह पापी को लौट आता है।

जो भी समस्याये हमारे और देश के सामने आ रही हैं। अति वृष्टि और अनावृष्टि; अनेक प्रकार की बीमारिया यह सब हमारे ही किये कर्मों का फल है। अत: आप से प्रार्थना है कि आप पाप और असद् व्यवहार के बीजो को दबाने और पुण्य के अंकुर उपजाने के लिये यत्न करें तभी सारी प्रजा सुखी बन सकती है और सारे संसार मे शान्ति स्थापित हो सकती है।

भवदीय
मन्त्री आर्य समाज जगाधरी

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को अपनी प्रचार वाहन (माटाडोर) जोकि प्रचार के लिए ग्रामो मे जायेगी के, लिए एक नवयुवक आर्य विचारी तथा सेवाभाव वाले कुशल माटाडोर ड्राईवर की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। साक्षात्कार के लिए शीघ्र संपर्क करें:—सभा मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड; नई दिल्ली-११०००१

आर्यसमाज हांसी का ३१वां वार्षिकोत्सव

९-१०-११ सितम्बर को बड़ी धूमधाम के मनाया गया जिसमे आर्य जगत् विद्वान् आचार्य नरेश जी प० जयप्रकाश आर्य, प० अशोक कुमार, प० अ'गनलाल शास्त्री, चौ० नत्थासिंह जी आदि विद्वान् पधारे। इससे पूर्व १२ दिन वाहन राजबाला जी एवं आचार्य सत्यप्रिय जी की मनोहर वेद कथा हुई। नगरी की एवं देहात की अपार जनता लाभान्वित हुई। मन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर पद यात्रा कार्यक्रम

महर्षि स्वामी दयानन्द निर्वाण शताब्दी ३, ४, ५, ६ नवम्बर १९८३ के लिए भारत वर्ष की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाए एवं आर्यसमाजों में बड़ी जोर शोर से तैयारी हो रही है। विदेशो से भी हजारो लोग इसमें सम्मिलित होकर गुरुवर महर्षि दयानन्द जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आ रहे हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार हरयाणा राज्य से लगभग ५० हजार आर्यसमाजी इस शताब्दी में भाग लेगे। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार स्वामी परमानन्द जी महाराज सन्यास आश्रम गाजियाबाद की अध्यक्षता में सन्यासियों एवं वानप्रस्थियों का एक जत्था गाजियाबाद से चलकर ३१ अक्तूबर को अजमेर पहुँचेगा। इसी प्रकार से आर्य युवक परिषद् दिल्ली से श्री धर्मसिंह आर्य की अध्यक्षता में १००० नवयुवकों का जत्था आर्य स्पेशल ट्रेन से रास्ते में प्रचार करते हुए १ नवम्बर को प्रात: ६ बजे दिल्ली से अजमेर प्रस्थान करेगा। पूज्यपाद स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता में एक जत्था जोधपुर से चलकर अजमेर पहुँचेगा। इसी प्रकार से एक जत्था श्री स्वामी आनन्दमुनि जी महाराज की अध्यक्षता में ५० त्रिशुलधारियों का जत्था गोगामेडी से चलकर अजमेर पहुंचेगा। इसी भान्ति स्वामी सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता में साधु और वानप्रस्थियों का जत्था स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीनानगर के आशीर्वाद के साथ चलकर ३१ अक्तूबर को ही अजमेर पहुंचेगा। वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र के संगठन मन्त्री श्री धर्मदेव जी एम० ए० की अध्यक्षता में १०० नवयुवको का एक जत्था साईकलों द्वारा कुरुक्षेत्र से रवाना होकर ३१ अक्तूबर को ही अजमेर पहुचेगा, इसी प्रकार उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार महाराष्ट्र और गुजरात से भी संन्यासियों और वानप्रस्थियों के बहुत सारे जत्थे पद यात्रा करते हुए और आर्यसमाज का प्रचार और गुरुवर महर्षि दयानन्द जी महाराज का सन्देश जनता को देते हुए ३१ अक्तूबर या १ नवम्बर को अजमेर पहुंचेंगे। एक मोटे अनुमान के अनुसार ५ लाख और १० लाख के बीच में आर्य जगत् अजमेर पहुंचेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने प्राईवेट बसों का प्रबन्ध कर दिया है जो आर्य सज्जन और बहनें रोहतक जिले से विशेष बसो द्वारा जाना चाहें वह १०-१०-८३ तक ११५ रु० सभा में जमा करा दे इसी प्रकार से एक बस खरखोदा से चलेगी खरखोदा के आस-पास के भाई ११५ रुपये महाशय दरयावसिंह आर्य रोहणा या श्री ताराचन्द जी आर्य खरखोदा के पास जमा करा दें और जिनको सभा द्वारा बसे चाहिए वह तुरन्त सभा से सम्पर्क करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का कार्यालय १७ या १८ अक्तूबर को अजमेर चला जायेगा और कार्यालय रोहतक में भी कार्य बराबर चलता रहेगा। विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

—भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री

आर्य समाज की गतिविधियां

वनस्पति घृत में गो-चर्बी मिलाने वालों के घृणित कार्य सरकार जांच के पश्चात् श्वेत पत्र प्रकाशित करे

जैन तथा अन्य धर्माचार्यों की चुप्पी आश्चर्य जनक।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने वनस्पति घी में गो चर्बी मिलाने का कार्य करने वालों की कड़ी निन्दा करते हुए इसे योजनाबद्ध ढंग से गौ हितैषियों एवं हिन्दू धर्मावलम्बियों की भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाले दुष्कर्म बताया।

श्री शालवाले ने अपराधियों को कड़ा से कड़ा दण्ड देने की मांग के साथ ही हिन्दू एवं जैन समाज द्वारा अपराधियों को सामाजिक बहिष्कार किए जाने का भी आह्वान किया, जिन्होंने जैन समाज सहित हिन्दू समाज को कलंकित करने का पाप किया है।

श्री शालवाले ने सरकार द्वारा चर्बी के आयात पर प्रतिबन्ध लगाए जाने का स्वागत करते हुए, इसे अपर्याप्त बताया है क्योंकि देश के उन राज्यों में जहां गोहत्या बंदी नहीं है, गो चर्बी का निर्यात होता रहेगा और खाद्य तैलों में इसके मिश्रण से जनता आश्वस्त नहीं हो सकती। इस स्थिति का एक मात्र निराकरण यही हो सकता है कि सारे देश में पूर्ण गोहत्याबंदी कानून बनाया जाय जिनके लिए आर्यसमाज तथा गौ सेवा संघ आदि संस्थाएं निरन्तर आन्दोलन कर रही हैं। आचार्य विनोबा भावे को भी इसी कारण आत्म प्रयाण करना पड़ा था।

श्री शालवाले ने देश की आर्थिक प्रगति और जनता की खुशहाली के लिए केन्द्र सरकार से मांग की कि वह तुरन्त गोहत्याबंदी कानून बनाकर इस प्रकार के जघन्य कार्य करने अथवा कराने वालों के विरुद्ध बड़े कदम उठाकर इस संबंध में श्वेत पत्र जारी करे।

स्वामी ओमानन्द जी को यान भेंट

दिनांक १८ सितम्बर रविवार, ११ बजे पूर्वाह्न "स्नातक मण्डल गुरुकुल झज्जर" तथा श्रद्धालु आर्यों की ओर से परम तपस्वी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज को नई डीजल गाड़ी भेंट की गई। समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध विद्वान् संन्यासी—डा० सत्यप्रकाश सरस्वती ने की। साथ ही अनेक गणमान्य विद्वान् नेता भी उपस्थित थे।

स्वामी ओमानन्द जी के अभिनन्दन हेतु शेष दान सूची

आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार	१५०-००
श्री आर्यसमाज दयानन्द भवन हिसार	१०१-००
श्री केदारसिंह कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	१०१-००
श्री नवाब सिंह गणक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	१०१-००
प्रो० ओ० पी० दूहन ग० का० हिसार	१०१-००
श्री रविदत्त शास्त्री जगन्नाथ आर्य कन्या हाई स्कूल हिसार	५१-००

हरयाणा में हिन्दी की दुर्दशा

जागृति सेवा सदन हरयाणा प्रदेश की एक विशेष बैठक १४ सितम्बर हिन्दी दिवस पर हरयाणा प्रदेश (जागृति सेवा सदन) के संयोजक श्री ऋतमोहन वकील की अध्यक्षता में पानीपत में आयोजित की गई, बैठक में हरयाणा प्रदेश से आये प्रतिनिधियों ने हरयाणा प्रदेश में हिन्दी की दुर्दशा पर दुःख प्रकट किया तथा २ अक्तूबर गांधी जयन्ती से हरयाणा प्रदेश में अंग्रेजी के विरुद्ध सशक्त आन्दोलन शुरू करने का निर्णय लिया गया। बैठक में एक प्रस्ताव पास कर हरयाणा सरकार से मांग की गई कि हरयाणा सरकार अपना समस्त कामकाज हिन्दी में करें तथा शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी को सम्मानजनक स्थान दिया जाए, "जागृति सेवा सदन" २ अक्तूबर १९८३ से जनसम्पर्क अभियान के दौरान व्यापारियों से निवेदन करेगी की वह अपने दुकानों के नाम पट्ट, वस्तुओं को बांधने का कागज, रसीदें इत्यादि शीघ्र ही हिन्दी में बनवायें। संस्था ने हरयाणा वासियों से आग्रह किया है कि वह अपने बच्चों को मातृभाषा में ही शिक्षा दें तथा परिवारों में होने वाले समस्त संस्कारों के निमन्त्रण पत्र हिन्दी में ही छपवायें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा

बाढ पीडित क्षेत्रों में निःशुल्क औषधियों के वितरक :

श्री पृथ्वीसिंह आर्य ग्राम मदाना कलां जिला रोहतक।
श्री स्वा० धर्मदेव : सुनारियां, बालन्द, गरनावठी, सुण्डाना; ककराना; सुन्दरपुर; सिंहपुरा कलां, सिंहपुरा खुर्द, बहु-जमालपुर, गद्दीखेड़ी; भाली, डोभ, भगवतीपुर, सामड़ खुर्द; समर गोपालपुर कलां, निडाना; बोहर, भालौट, पाकसमा, मकड़ौली, घामड़, लाढौत, जसिया, बसन्तपुर; ब्राह्मणवास जिला रोहतक।
श्री बलबीरसिंह : कबुलपुर रिटोली, जिला रोहतक।
चान्दसिंह : ग्रा० पो० मालकोष, जिला भिवानी।
चौ० अर्जुनसिंह : खरकजाटान, जिला रोहतक।
श्री आनन्दसिंह : ग्राम खरकड़ा; जिला रोहतक।
श्री राजेन्द्रकुमार शास्त्री : सुनारियां, जिला रोहतक।
आचार्य सुदर्शन देव : हरिसिंह कालोनी, रोहतक।
राजकीय महाविद्यालय मलवा, जिला हिसार।
श्री भूपसिंह : गांव बलियाणा, जिला रोहतक।
श्री रामचन्द्र आर्य : काठ मण्डी, सोनीपत।
श्री म० बनवारीलाल आर्य : डेहरी मौहल्ला, रोहतक।
दरियावसिंह लडवाल : डेहरी मौहल्ला, रोहतक।
श्री कामरेड रामपत : संजय नगर, रोहतक।
श्री रोहतास किशोर सभा टीपक, सन्त रविदास कालोनी, रोहतक।
श्री शेरसिंह सैणी : मौहल्ला सैणीपुरा, रोहतक।
पं० चिरंजीलाल : आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत, करनाल।
चौ० सुखबीरसिंह गांव फरमाणा माजरा, जिला सोनीपत।
चौ० जगदीश मलिक ग्राम पो० आंवली, जिला सोनीपत।
श्री रामपाल टाईपिस्ट आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा। बोहर, भालौट, पाकसमा, आसन, कन्साला, हमायुंपुर, रोहणा, भैंसरू कलां, भैंसरू खुर्द, नया बास और दहकोरा।
पं० अर्जुनदेव आर्य सभा उपदेशक : दहकोरा, जसौर खेड़ी; लुहारहेड़ी, मापड़ोदा, रोहद, सांपला, अटायल, गान्धरा जिला रोहतक।
वैद्य ताराचन्द आर्य : तहसील खरखोदा जिला सोनीपत।
महाशय दरयावसिंह आर्य : रोहणा जिला, रोहतक।
महाशय बलवन्तसिंह आर्य मकड़ौली कलां, जिला रोहतक सभा मन्त्री।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

एवं

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का सतरहवां स्थापना दिवस महोत्सव २ अक्तूबर १९८३ रविवार को सम्पन्न हो रहा है। इस शुभावसर पर दि० आश्विन षष्ठी (२८ सितम्बर) बुधवार से एकादशी (२ अक्तूबर) रविवार १९८३ तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन आप सभी के कल्याण की भावना से प्रेरित होकर किया गया है। यज्ञ ब्रह्मा, आचार्य श्री जैमिनि शास्त्री, वेदपाठी श्री ईश्वरचन्द्र शास्त्री एवं श्री गंगाचरण पुरोहित, वक्ता आमन्त्रित स्वा० विजयानन्द चित्तौड़, स्वा० सुमेधानन्द, श्री सरदारीलाल वर्मा प्रधान आर्य० प्र० नि० सभा दिल्ली, पूज्य माता कस्तूरी देवी सोहना, पं० रामाश्रय पुरोहित, श्री मामचन्द आर्य भजनोपदेशक, श्री रामसिंह श्री कंवर सिंह, प्रेमी और अनेकों उच्चकोटि के वक्ता साधु-सन्त संन्यासी-महात्माओं एवं भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है।

इस अवसर पर निःशुल्क नेत्रचिकित्सा शिविर का उद्घाटन; शिविर मध्य आंखों के सुप्रसिद्ध डाक्टरों द्वारा नेत्र रोगों का निरीक्षण और आप्रेशन होंगे। दवाई, भोजन आदि की सर्वव्यवस्था निःशुल्क है। नेत्र रोगी अपने साथ सेवक, साफ सुथरा बिस्तर और गिलास, चम्मच, बड़ा कटोरा अवश्य लायें, साफ धुले हुए वस्त्र पहिन कर आयें।

स्वा० धर्ममुनि मुख्याधिष्ठाता
आत्मशुद्धि आश्रम (पं० ट्रस्ट) बहादुरगढ़ (रोहतक)

आर्य समाजों के वार्षिक चुनाव

प्रेम मोहल्ला तावडू जि० गुड़गांव—

प्रधान : श्री मोतीराम जी अग्रवाल, उपप्रधान : श्री तीर्थराम जी, मन्त्री : श्री आदर्श गर्ग, उपमन्त्री : श्री रामेश्वरदास जी; कोषाध्यक्ष : श्री हुकमचन्द जी अग्रवाल

नरेला—

प्रधान : चौ० देशराज; उपप्रधान : चौ० प्रेमकृष्ण जी, श्री कन्हैयालाल जी, मन्त्री : श्री आनन्द कुमार, उपमन्त्री : मा० प्रकाशवीर, कोषाध्यक्ष : ला० सुखवान; सहायक कोषाध्यक्ष : श्री सुखबीरसिंह जी, लेखानिरीक्षक : चौ० लायकराम, पुरोहित पुस्तकालय : पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री; स्वामी अमृतानन्द जी; प्रधान आर्य कुमार सभा : श्री जयपाल।

सोलधा जि० रोहतक—

प्रधान : सरपंच पृथ्वीसिंह; मन्त्री : भीमसिंह अध्यापक, कोषाध्यक्ष : सुखबीरसिंह, प्रचार मन्त्री : श्री प्रतापसिंह, अन्तरंग सदस्य : श्री नरसिंह, श्री रिसालसिंह।

बाण्डवा जि० भिवानी—

प्रधान : श्री प्रेमसिंह आर्य, उपप्रधान : श्री बलबीरसिंह आर्य, मन्त्री : श्री धर्मपाल शास्त्री, उपमन्त्री : श्री अजीतसिंह आर्य शास्त्री; कोषाध्यक्ष : श्री आजादसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष : श्री विजेन्द्रार्य।

धर्मपाल आर्य धीर शास्त्री

श्री मद्दयानन्द शिक्षण केन्द्र शाहपुरा (जि० भीलवाड़ा) राजस्थान

आजीवन संरक्षक : श्री आ० वि० सुदर्शनदेव, प्रधान : श्री रामप्रकाश अग्रवाल, उपप्रधान : श्री गोपालसिंह चौरड़िया, उपाध्यक्ष : श्री मति भंवरीदेवी भारद्वाज, मन्त्री : श्री भंवरलाल आर्य, उपमन्त्री : श्री रमेशचन्द्र (पो० मा०); उपमन्त्री : सत्यनारायण तोलिया; कोषाध्यक्ष : श्री भंवरलाल भ्रमर, निरीक्षक : श्री रामस्वरूप सैनी।

हार्डसिंह बोर्ड कालोनी रोहतक—

प्रधान : डा० जयदेव विद्यालंकार; मन्त्री : प्रो० बलदेवसिंह, कोषाध्यक्ष : डा० यशवीर विद्यालंकार।

रामला जि० अम्बाला—

प्रधान : श्री किशोरीलाल जी आर्य; उपप्रधान : श्री डा० रामस्वरूप जी आर्य, मन्त्री : श्री गुरुदयालसिंह जी आर्य, उपमन्त्री : श्री शेरसिंह जी आर्य, कोषाध्यक्ष : श्री सुरेशकुमार आर्य, प्रचार मन्त्री : श्री सोमनाथ आर्य।

बालधन कलां जि० महेन्द्रगढ़—

प्रधान : मास्टर अमरसिंह आर्य, मन्त्री : श्री रामोतार आर्य; कोषाध्यक्ष : श्री शिवराम आर्य, संयोजक : श्री रामकरण आर्य।

गुढ़ाणा जि० गुड़गांव—

प्रधान : श्री गजराज, मन्त्री : श्री सांवलसिंह, कोषाध्यक्ष : श्री दौलत राम।

पलड़ा जि० रोहतक—

प्रधान : श्री राजपालसिंह; मन्त्री : श्री फूलसिंह आर्य; कोषाध्यक्ष : श्री बलबीर सिंह।

चीमनी जि० रोहतक—

प्रधान श्री कुड़ेराम आर्य, मन्त्री : श्री सुमेरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष : श्री भीमसिंह।

दादूपुर छावनी जि० अम्बाला—

प्रधान : श्री दलबीर सिंह आर्य; मन्त्री : श्री धर्मपाल आर्य; कोषाध्यक्ष : विक्रमसिंह आर्य।

क्रमशः

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible]



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ४१ ७ अक्टूबर १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति [illegible]

क्या कुछ होने जा रहा है अजमेर में ?

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह से रणवीर शास्त्री द्वारा भेंट वार्ता

रोहतक २८ सितम्बर, प्रातः के कोई ८ बजे सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन में बैठा मैं सभा के [illegible] सिंह जी से बातें कर रहा था। जैसा कि आजकल ऋषि दयानन्द के प्रत्येक श्रद्धालु की जुबान पर अजमेर में होने जा रहे निर्वाण शताब्दी समारोह की ही चर्चा है, सो चर्चा का विषय हमारा भी यही था। सर्वहितकारी के पाठकों को अजमेर में तदर्थ की जा रही तैयारियों की अधिकृत जानकारी किस प्रकार करवाई जाये, बात इसी प्रकार की चल रही थी। कि तभी सभा मन्त्री महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थ ने अपने कक्ष की ओर तेजी से बढते हुये शायद हमें बैठे देखकर सूचना देने के निमित्त कहा—'सभा प्रधान जी आ रहे हैं, यदि उनसे सम्बन्धित कोई डाक या अन्य सूचना अथवा कार्य हो तो तैयार कर रखें।' इतना सुनते ही मन की इच्छा पूरी होने की आशा में मैंने मन ही प्रभु का धन्यवाद किया।

प्रोफेसर साहब से भेंट कर समारोह सम्बन्धी कुछ अन्तिम रूप से जाने हेतु अभी वैचारिक भूमिका बना ही रहा था कि तभी श्री केदार सिंह सभा कार्यालय अध्यक्ष यह कहते हुये बड़ी तेजी से कार्यालय में आये कि—प्रोफेसर साहब आ गये हैं। मैंने भी पीठ घुमाकर देखा तो सभा प्रधान अपनी अत्याधिक व्यस्तता की प्रतीक तेज गति से अपने कमरे में प्रवेश कर रहे थे। मैं भी मन मे मन निश्चय कर कि थोड़ी ही देर में तो इन्हें आया जानकर बहुत लोग इनसे मिलने एवं आवश्यक विषयो पर वार्तालाप करने आने लगेंगे, अतः भेंट वार्ता के लिये यही सर्वाधिक उपयुक्त समय हो सकता है, झट से उठकर अधिकारी कक्ष की ओर हो लिया। वहाँ अभी महाशय जी से अभिवादनोंपरान्त परस्पर कुशलक्षेम पूछा ही जा रहा था. कि मैंने भी आज के दिन के दूसरे सर्वाधिक व्यस्त व्यक्तित्व को नमस्ते की तो अपनी स्वाभाविक सौम्यता छिटकते हुये मेरी नमस्ते का तत्काल हाथ जोड़कर उत्तर देते हुये उन्होंने मुझसे भी कुशलता बारे पूछा। मैंने झट से कुर्सी पर बैठते हुये उचित समय जानकर जैसे ही प्रश्न किया कि प्रोफेसर साहब अजमेर में क्या कुछ होने जा रहा है, तो उत्तर में उन्होंने कुछ कहने का उपक्रम करना ही चाहा था कि झट से महाशय जी ने मुझे जेब से कलम निकाल कर तैयार देखकर उन्हें तैयार करते हुये कहा कि प्रोफेसर साहब! 'यह आपका प्रेस इन्टर्व्यू है', अतः कृपया ध्यान रखें, क्योंकि आप जो भी कहेंगे वह सब पत्र में प्रकाशित होने जा रहा है। इस पर प्रो० शेरसिंह जी ने सावधानी एवं गम्भीरता पूर्वक अजमेर में ३, ४, ५, ६ नवम्बर हेतु की जा रही तैयारियों का मोटा-मोटा विवरण क्योंकि सम्मेलन के कार्यक्रम को अभी अन्तिम रूप दिया जा रहा है, कार्याधिक्य के कारण थकान भरी वाणी से देना प्रारम्भ किया।

प्रोफेसर साहब ने बताया कि हमने राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री माथुर से भेंटकर इस अवसर पर देश-विदेश से बसों आदि द्वारा आने वालों से वसूल किये जाने वाले यात्री कर की छूट देने का आग्रह किया था जिस पर मुख्यमन्त्री महोदय ने विद्यार्थियों को लेकर आने वाले वाहनों पर तो इस प्रकार की छूट को तत्काल स्वीकार कर लिया तथा अन्य यात्रियों के वाहनों को भी इस प्रकार की छूट देने के बारे में गम्भीरता पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया। इस सम्बन्ध में समारोह समिति बराबर राजस्थान सरकार से सम्पर्क बनाये हुये हैं। भोजन-आवास एवं अन्य सुविधाओं के सम्बन्ध में मेरी जिज्ञासा को जानकर समारोह के कार्यकारी प्रधान ने स्पष्ट किया कि यद्यपि घर से बाहर निकलने पर कुछ असुविधा तो होनी स्वाभाविक ही हैं, किन्तु समारोह में भाग लेने वालों को ऐसी किसी परेशानी का शिकार नहीं होना पड़ेगा। आवास हेतु नगर के सभी सरकारी तथा गैर-सरकारी स्कूल कालिज एवं धर्मशालाएं उन दिनों के लिये आरक्षित कर लिये गये हैं। वैसे भी अजमेर नगर तथा समूचे राजस्थान के लोग अपने महमानों को अधिकतम सुख-सुविधा जुटाने में जी-जान से जुटे हैं। समारोह के स्वागताध्क्ष श्री छोटू सिंह जी एडवोकेट इस सबको पूरी गम्भीरता से ले रहे हैं तथा उनके सहयोगी भी सर्वप्रकारेण इसमें उनके साथ हैं। समारोह में भाग लेनें वाले प्रत्येक व्यक्ति को भोजन भी ऋषि लंगर में सर्वथा निःशुल्क मिले, सिद्धांत रूप में इसे स्वीकार कर तदर्थ बहुत से साधन जुटा लिये गये हैं तथा शेष भी समय रहते जुटा लिये जाएंगे।

विश्राम स्थली के सामने के विशाल मैदान में दयानन्द नगर बसेगा यहां ४५० फुट चौड़ा तथा ६०० फुट लम्बा मुख्य पाण्डाल लगेगा जिसमें सभी सम्मेलन सम्पन्न होंगे। उन्होंने बताया कि यद्यपि अन्ना सागर तट पर पानी भरा है, तो भी तब तक उसके नितान्त उपयोगी भाग (शौचालय व स्नानागार तथा साथ के मैदान का बड़ा भाग) का पानी उतर चुकेगा जिससे उन सुविधाओं का प्रत्येक को बिना किसी कठिनाई के लाभ मिल सकेगा।

यह पूछे जाने पर कि क्या अतीत की भांति भीड़-भाड़ भरे वातावरण में सम्पन्न हुये समारोह को ही उपलब्धि मानकर कर्त्तव्य की इति श्री समझ ली जायेगी या इसका कोई स्थायी प्रभाव भी देखने को मिलेगा, हरयाणा सभा के प्रधान एवं समारोह के कार्यकारी अध्यक्ष ने कहा कि ऐसी बात नहीं है। अतीत से शिक्षा लेने का उपक्रम हमने किया है। शताब्दी की ऐसी स्मृति एवं प्रभाव को स्थायी बनाने के लिये ४२ लाख रुपये की एक बृहद्योजना तैयार की गई है जिसके अन्तर्गत अजमेर में ही जहाँ ऋषि दयानन्द का १०० वर्ष पूर्व निर्वाण हुआ था, कि स्मृति में संग्रहालय, पुस्तकालय, अनुसंधान केन्द्र, ग्रन्थों की वैज्ञानिक विधि से सुरक्षित रखी रही प्रतियों की सुरक्षार्थ एवं पठनार्थ वैज्ञानिक उपकरणादि तथा एक कीर्ति स्तम्भ का निर्माण किया जायेगा। इस योजना को पूरा करने में व्यय की जाने वाली कुल राशी का आधा भाग अर्थात् २१ लाख रुपया राजस्थान सरकार से अनुदान रुप में प्रदान करने का आग्रह किया गया है। सरकार से कहा गया है कि भले ही वह यह राशी किस्तों पर देती रहे राजस्थान सरकार ने इस पर भी गम्भीरता पूर्वक विचार करने का वचन दिया है।

(शेष पृष्ट ३ पर)

आर्य समाज का इतिहास तीसरा भाग

सदियों की मोहनिद्रा के पश्चात् उन्नसवीं सदी के मध्य भाग में नवजागरण और धर्मिक सुधारणा के जिन आन्दोलनों का भारत में आरम्भ हुआ था, महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज का उनमें प्रमुख कर्तृत्व था। आर्यसमाज का कार्यक्षेत्र केवल पढ़े लिखे लोगों तक ही सीमित नहीं था। वह एक व्यापक जन-आन्दोलन था, जिसने सर्व-साधारण जनता में जागृति उत्पन्न की, और चिरनिद्रा से जाग कर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने लगी। सामाजिक ऊँच-नीच और छुवाछूत को दूर करने, अन्धविश्वासों और पाखण्ड का खण्डन करने; बाल विवाह, पर्दा, दहेज आदि कुप्रथाओं के विरूद्ध आवाज उठाने ; विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने, स्त्री शिक्षा का प्रचार करने और दलितों और अनाथों का उद्धार करने के लिये जो कार्य आर्यसमाज ने किया है, उसके महत्त्व को सभी स्वीकार करते हैं। साथ ही, स्वदेशी, देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने, जनता में स्व-राज्य की आकांक्षा को उत्पन्न करने और अपने धर्म, भाषा तथा संस्कृति के प्रति प्रेम और गौरव का प्रादूर्भाव करने में भी आर्यसमाज का योगदान किसी भी दृष्टि से कम महत्त्व का नहीं है।

आर्यसमाज के इसी कार्यकलाप का विशुद्ध ऐतिहासिक व वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन करने के लिये सात-सात सौ से भी अधिक पृष्ठों के सात भागों में आर्यसमाज का विस्तृत इतिहास हम प्रकाशित कर रहे हैं, जिसका पहला भाग गत वर्ष १९८२ में प्रकाशित हो गया था। किन परिस्थितियों में और किन उद्देश्यों को सम्मुख रखकर आर्यसमाज की स्थापना की गई थी ; समाज सुधार; धर्म के वास्तविक स्वरूप, राज्य-संस्था और न्याय पर आधारित सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्या विचार थे, और उन्होंने आर्यसमाज द्वारा उन्हें किस प्रकार क्रियान्वित करने का प्रयत्न किया, इन विषयों पर 'आर्यसमाज का इतिहास' के प्रथम भाग में विशद रूप से प्रकाश डाला गया है।

सन् १८८३ में महर्षि के देहावसान के समय आर्यसमाजों की कुल संख्या ८६ थी, जो अब बढ़कर ५५०० से भी ऊपर पहुँच गई है। एक शताब्दी के लगभग समय में आर्यसमाज का जो असाधारण विस्तार हुआ, और न केवल भारत के सब प्रदेशों में ही, अपितु देशदेशान्तर तथा द्वीप-द्वीपान्तरों में भी आर्यसमाजों की स्थापना हुई, इस विषय पर 'इतिहास' के दूसरे भाग में विस्तार के साथ प्रकाश डाला जाएगा। यह भाग लिखा जाना आरम्भ हो चुका है, और सन् १९८४ के मई मास तक प्रकाशित हो जाएगा।

पर 'आर्यसमाज का इतिहास' का तीसरा भाग अब प्रकाशित हो गया है। इसमें शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज के कार्यकलाप का विस्तृत विवेचनात्मक विवरण है। आर्यसमाज के तत्त्वावधान में संचलित शिक्षण-संस्थाओं (डी० ए० वी० स्कूलों व कालिजों, गुरुकुलों, संस्कृत विद्यालयों आदि) की संख्या इस समय २००० से भी अधिक है। ये संस्थाएं देश की उन्नति के लिये जो महत्त्वपूर्ण काम कर रही है, इस भाग में उसी पर प्रकाश डाला गया है। 'आर्यसमाज का इतिहास' के सब भाग अपने आप में पूर्ण होंगे; अतः आप दूसरे भाग के प्रकाशित न होने की दशा में भी तीसरे भाग को मंगाने में भी संकोच न करें। यह इतिहास आर्यसमाज के एक विश्व कोष के समान है, जिसे न केवल सब आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण-संस्थाओं के पुस्तकालयों में ही अवश्य रहना चाहिये, अपितु सभी सार्वजनिक पुस्तकालयों; यूनि-वर्सिटियों, कालिजों तथा स्कूलों के पुस्तकालयों में भी इसे अवश्य स्थान प्राप्त होना चाहिए।

बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई कपड़े की बढ़िया जिल्द के इस विशाल ग्रन्थ के प्रत्येक भाग का मूल्य केवल एक सौ रुपये है। सातों भागों का अग्रिम मूल्य चार सौ रुपये रखा गया है। हमें विश्वास है, कि आप इस ग्रन्थ को उपयोगी पायेंगे, और इसे प्राप्त कर आप अवश्य संतोष अनुभव करेंगे।

सत्यकेतु विद्यालंकार
प्रधान सम्पादक : आर्यसमाज का इतिहास
ए-१/३२, सफदरजंग इन्कलेव नई दिल्ली-२९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव

प्रधान—श्री सरदारी लाल वर्मा, उपप्रधान—श्री विद्याप्रकाश सेठी, श्री तीर्थराम आहूजा, प्रो० भारत मित्र, मन्त्री—प्राण नाथ बर्द; उपमन्त्री—डा० धर्मपाल आर्य, श्री हरिदेव आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री बलवन्त राय खन्ना, पुस्तकाध्यक्ष—दुर्गादास, प्रतिष्ठित सदस्य—श्री सोमनाथ एडवोकेट, श्री प्रेमनाथ एडवोकेट, श्री राममूर्ति केला, श्री रतनचंद सूद, श्री महाशय धर्मपाल, चौ० देस राज, स्वामी विद्यानंद सरस्वती, श्री सूर्यदेव प्रताप, श्री लाजपत राय, समुदाय सदस्य—श्री सुरेन्द्र कुमार हिन्दी, श्री प्रीतम दास रसवन्त, श्री सत्यपाल भाटिया; श्री विद्या सागर, श्री प्रद्युम्मन लाल तलवाड़, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री बनवारी लाल शांदा, श्री रतन लाल सहदेव, डा०. महेन्द्रपाल सिंह श्री रामशरण दास आर्य, श्री भजन प्रकाश आर्य, श्री नेतराम शर्मा प्रधान जी द्वारा मनोनीते—चौ० हीरा सिंह, लाला किशोरी लाल; श्री नवनीत लाल एडवोकेट, श्री बी० बी० सिहल।

सभा-मन्त्री

हिन्दु शुद्धि संरक्षणीय समिति समालखा का चुनाव

२८-८-८३ को हिन्दु शुद्धि संरक्षणीय समिति समालखा की जनरल मिटिंग श्री ओमप्रकाश प्रधान की अध्यक्षता में हुई। दो वर्ष की आमदनी और खर्च का ब्योरा दिया गया। आमदनी १३७२८.४० हुई और खर्च १३०११.३५ हुआ। इस अवसर पर चुनाव सर्व सम्मति से इस प्रकार हुआ।

प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य समालखा मण्डी;
उपप्रधान—१) चौ.प्रिय व्रत, जे १/१६० राजोरी गार्डन नई दिल्ली;
२) मा० मामचन्द आर्य; नई मण्डी करनाल
३) चौ० सत्यदेवसिंह पीपली जि० कुरुक्षेत्र
महामन्त्री—वैद्य श्री रतनसिंह आर्य समालखा मन्डी जि० करनाल
मन्त्री—१) पं० चन्द्र सरूप आर्य गांव टिटोली जि० रोहतक
२) श्री ज्ञानी राम आर्य गांव मोरा रसूलपुर जि० सोनीपत
३) श्री देवव्रत जी आर्य गांव पावटी त० पानीपत जि० करनाल
कोषाध्यक्ष—चौ० दयाल सिंह गांव बडोली डा० बाबरपुर जि० करनाल
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रणबीर शास्त्री दयानन्द मठ रोहतक

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा द्वारा आयोजित धार्मिक परिक्षाओं में विशेष स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं

क्र०	अनुक्रमांक			
		धर्म—प्रवेशिका (पूर्णांक १००)		
१	२७९	मीनाक्षी, आर्य कन्या उच्च वि० शाहबाद मारकण्डा	७१	प्रथम
२	३०२	ममता, आर. डी. आर्य कन्या उच्च वि० करनाल	७१	द्वितीय
३	७६०	रोहितास कुमार, विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र	७०	तृतीय
४	४४३	संजय कथूरिया, डी. ए. वी. हाई स्कूल गुड़गांव	६९	चतुर्थ
५	४४९	विनोद कुमार „ „ „ „ „ „	६९	„
		धर्माधिकारी (पूर्णांक १५०)		
१	१३५	पूनम, आर्य कन्या उच्च वि० कालका (अम्बाला)	११७	प्रथम
२	१३७	सुषमा „ „ „ „ „ „ „	११७	„
३	३६३	सुनीता, टीकाराम कन्या उच्च वि० सोनीपत	११७	„
४	३७२	मोनीषा, „ „ „ „ „	११६	द्वितिय
५	३६४	सरोज, „ „ „ „ „	१४५	तृतीय
६	२६४	धर्मपाल शर्मा, विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र	१११	चतुर्थ
		धर्म-ज्ञानी (पूर्णांक १५०)		
१	१५६	लक्ष्मीनारायण, विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र	१२१	प्रथम
२	१५५	रमेशचन्द्र „ „ „ „	११७	द्वितीय
३	१	अनिल कुमार, डी. ए. वी. हाई स्कूल गुड़गांव	११५	तृतीय
४	२	विनय कुमार; „ „ „ „ „ „	१०१	चतुर्थ

वेद मित्र प्रस्तोता

(सुरेश कुमार शास्त्री)
निरीक्षक एवं परीक्षक

सामयिकी

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी कार्यक्रम

(पृष्ठ १ का शेष)

मैंने जब पूछा कि केन्द्रीय गृह मन्त्री के भिनाय कोठी परोपकारिणी सभा के हवाले किये जाने के बारे में मुख्य मन्त्री राजस्थान को लिखे गये पत्र पर क्या रहा? तो श्री सिंह ने कहा कि इस सम्बन्ध में भी हमने श्री माथुर से बात की है, उन्होंने स्थान शताब्दी के अवसर पर सभा को सौंपना स्वीकार कर लिया है।

आयोजन के विभिन्न सम्मेलनों तथा उनकी समय सारणी के सम्बन्ध मे मैंने जब अपनी जिज्ञासा प्रकट की तो प्रोफेसर साहब ने कहा कि इसका मोटा सा प्रारुप इस प्रकार है कि '३ नवम्बर को प्रातः उद्घाटन समारोह, तदन्तर महिला सम्मेलन एवं देश-विदेश सम्मेलन सम्पन्न होंगे।

४ नवम्बर को समारोह का मुख्य आयोजन श्रद्धांजलि सम्मेलन होगा जिसके मुख्य अतिथि श्री शिवसागर राम गुलाम भूतपूर्व प्रधान मन्त्री तथा वर्तमान मनोनीत गवर्नर जनरल मारीशस होंगे जिसके लिये समिति को उसकी स्वीकृति भी प्राप्त हो चुकी है। इसके पश्चात वेद सम्मेलन सम्पन्न होगा।

५ नवम्बर को प्रातःकालीन बैठक में केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री प्रकाश चन्द्र जी सेठी आर्य विद्वानों को सम्मानित करेंगे तथा उसके बाद ११ बजे से शोभा यात्रा प्रारम्भ होगी, जो भव्य तथा दर्शनीय होगी। ६ नवम्बर को सामाजिक क्रांति सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसके बाद की बैठक में आर्य समाज का भावी कार्यक्रम क्या हो, इस पर घोषणा-पत्र जारी किया जायेगा। चारों दिन बीच-बीच में विभिन्न शास्त्रीय विषयों पर संगोष्ठियों का आयोजन भी किया जा रहा है, जो स्वयं में रचनात्मक होंगे।

इस महान् आयोजन में अन्य मतालम्बी विद्वानों, आचार्यों एवं राजनेताओं जिनको आमन्त्रित किया गया है तथा जिनके आने की स्वीकृतियाँ मिल चुकी हैं इसके बारे में मैंने जानने की इच्छा प्रकट की तो प्रोफेसर साहब ने कहा कि राष्ट्रपति तथा प्रधान मन्त्री दोनों ने सिद्धांत रुप से समारोह मे सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया है। पहले से निश्चित व्यस्तताओं को ध्यान मे रखकर उनके अजमेर पहुँचने के दिन एव समय की सूचना ही मिलना शेष है, जो शीघ्र मिलने की आशा है इन दोनो महानुभावो के अतिरिक्त सर्व श्री प्रकाश चन्द्र सेठी गृह-मन्त्री भारत सरकार, एम० नरसिंह राव विदेश मन्त्री भारत, एच० के० एल० भक्त, सूचना मन्त्री भारत सरकार, कुमारी कुमुद जोशी केन्द्रीय स्वास्थ्य उपमन्त्री तथा परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान भूतपूर्व प्रधान मन्त्री एवं अध्यक्ष लोकदल चौ० चरणसिंह भी समारोह में पहुँचेंगे। राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री शिव चरण माथुर तथा शिक्षा मन्त्री श्रीमती कमला बेनीवाल भी आयोजन में उपस्थित रहेंगी। प्रख्यात कवयित्री श्रीमति महादेवी वर्मा को भी विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है। अन्य मतवादी आचार्यों के सम्बन्ध में प्रोफेसर शेरसिंह ने जानकारी देते हुये कहा कि मदर टेरेसा, आर्च बिशप एजलो फर्नाण्डीस-अध्यक्ष विश्व धर्म शान्ति सम्मेलन (ईसाई), रिवियर्ड निक्यो निवान तथा रिवियड मियाक्ये शिटोयिस्ट (बुद्धिस्ट-जापान), कोरिया के कनफ्यूशियस, जैन धर्म के हैगड़े, धर्म स्थली से तथा श्रवण बेलागोला के अध्यक्ष स्वामी चारुकीर्ति तथा सनातन धर्म की ओर से स्वामी गणेशानन्द जी महाराज, स्वा० कल्याण देव जी, गोस्वामी गिरधारी लाल जी, लक्ष्मण यति जी तथा शंकराचार्य स्वामी स्वरुपानन्द जी महाराज को आमन्त्रित किया जा चुका है। भारत के उपराष्ट्रपति एम० हिदायतुल्ला, इण्डियन इंस्टीच्यूट आफ इस्लामिक स्टडीज के मिस्टर अली, हमदर्द दवाखाना एवं अनुसंधान केन्द्र के प्रधान तथा हकीम अजमल खाँ के उत्तराधिकारी हकीम अब्दुल हमीद एवं अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति भी इस अवसर पर उपस्थित होकर महर्षि को श्रद्धांजलि भेंट करेंगे।

बात को लम्बी होने से बचाने का यत्न करते हुये जब मैंने प्रश्न किया कि समारोह का विशेष आकर्षण क्या होगा तो इसके उत्तर में प्रोफेसर साहब ने बड़ा सटीक उत्तर देते हुये कहा कि यों तो कार्यक्रम सारा ही अपने आप में विशेष आकर्षण रहे, इसका भरसक प्रयत्न किया गया है तथा किया जा रहा है फिर भी इसका विशेष आकर्षण होंगे अक्टूबर के अन्त में सम्पन्न होने जा रहे विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने आ रहे ५०० विदेशी हिंदी प्रेमी विद्वान्, जिन्हें इस आयोजन में विशेष रुप से आमन्त्रित किया जा रहा है। इसके लिये प्रस्तावना तैयार कर ली गई है। सूरिनाम में भारतीय राजदूत श्री बच्चूप्रसाद सिंह जो इन दिनों विश्व हिन्दी सम्मेलन को सफल बनाने हेतु तैयारियां करवाने के लिये देहली में हैं, इनसे मिलकर हिन्दी प्रेमी विदेशी विद्वानों को विशेष रुप से आमन्त्रित करने की सभी तैयारियाँ कर ली गई हैं। इतना कहकर उन्होंने मुझसे प्रश्न किया कि क्या यह कम आकर्षण की बात होगी कि जब विश्व भर के विद्वान् नतमस्तक हो अपने प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानंद को श्रद्धांजलि भेंट करेंगे। वस्तुतः प्रश्न की मार्मिकता और भावुक लहजे ने क्षणों को इतना भाव-विह्वल कर दिया था कि श्रद्धा छलक कर आँखों तक आ पहुँची।

इसी बीच धीरे-धीरे लोगों ने उनके आगमन का समाचार पाकर उनसे मिलने आना आरम्भ कर दिया था, अतः परिस्थिति का अनुमान लगाकर सर्वहितकारी के पाठकों की जिज्ञासा शान्त करने हेतु अपनी आवश्यक व्यस्तताओं से भी इतना समय मुझे देने के उपलक्ष्य में प्रोफेसर साहब को धन्यवाद, समारोह की सफलता हेतु अपने पाठकों की ओर से शुभकामनाएं, इसे सफल करने हेतु सर्वहितकारी परिवार की ओर से सब प्रकार के सहयोग का वचन देकर तथा काम के अत्यधिक बोझ के कारण समारोह के अध्यक्ष श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के शिथिल पड़ गये स्वास्थ्य के प्रति अपने प्रिय पाठकों की चिन्ता प्रकट करने के उपरान्त आर्य जगत् पर इस समारोह के रचनात्मक स्थायी प्रभाव की कामना करता हुआ जब मैं कक्ष से बाहर निकला तो कुछ सज्जन अन्दर प्रवेश कर रहे थे। उन सबको तो नहीं प्रत्युत् कुछ जिन्हें मैं पहचान पाया (मास्टर दीपचन्द जी, डा० हरण जी आदि) सहित सभी अजमेर समारोह सम्बन्धी चर्चा को ही वार्तालाप का विषय बनाये हुये थे।

—रणवीर

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न संगोष्ठियां

वेद परिषद्

परिषद् का उद्घाटन—श्री प्रतापसिंह सूर जी वल्लभदास, बम्बई

१) प्रथम वैचारिकी— विषय-ऋषि दयानन्द की भाष्यशैली, संयोजक—प्रो० सुदर्शनदेव रोहतक। अध्यक्ष—श्री ब्रह्मानंद त्रिपाठी; अजमेर। प्रथम प्रवक्ता—डा० सुधीरकुमार जयपुर, विचार विमर्श—उपस्थित पार्षद। उपसंहारकर्त्ता— शास्त्री ज्वलत कुमार अमेठी।

२) द्वितिय वैचारिकी— विषय-वेद और विनियोग, अध्यक्ष—वेदाचार्य विश्वश्रवा, प्रथमवक्ता—स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज; दिल्ली। विचार विमर्श—उपस्थित पार्षद। उपसंहार कर्त्ता—श्री प्रशस्त मिश्र, रायबरेली।

३) तृतीय वैचारिकी—विषय—वेद और आर्य समाज के सिद्धांत, संयोजक—वेदभिक्षु जी, अध्यक्ष—प० युधिष्ठिर मीमांसक, बहालगढ़, (हरयाणा)। प्रथम वक्ता—प उमाकान्त उपाध्याय विचार विमर्श—उपस्थित पार्षद, उपसंहार कर्त्ता— श्री मनोहर विद्यालकार।

४) चतुर्थ वैचारिकी—विषय—वेद और लालित्य, संयोजक—डा० कृष्णलाल, दिल्ली। अध्यक्ष—डा० कपिलदेव द्विवेदी, ज्ञानपुर, प्रथम वक्ता—डा० प्रशान्त वेदालंकार दिल्ली। विचार विमर्श—उपस्थित पार्षद, उपसंहार कर्त्ता—पं० शिवाकान्त उपाध्याय, दिल्ली।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष भाग)

संस्कृत परिषद्

संयोजक—श्री सत्यानन्द वेदवागीश, उद्घाटन भाषण—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, अध्यक्ष—पं० शिवकुमार शास्त्री, संस्कृत गीतम्—वृन्दगान, अन्ताक्षरी छात्र-छात्राओं द्वारा। वक्ता—१. श्री विद्यासागर शास्त्री (बारा), २. आचार्य डा० सुद्युम्न आर्य बलिया, ३. श्री हरिश्चन्द्र गुलबर्गा, ४. श्री वासुदेव शास्त्री, ५. श्री धर्मवीर जी अजमेर, ६. श्रीमती सावित्रीदेवी, बरेली। ७. आचार्य देव शर्मा, शाहजहांपुर। ८. आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री।

दर्शन परिषद्

१) प्रथम वैचारिकी—विषय—षड्दर्शन समन्वय, संयोजक—प्रो० रत्नसिंह जी गाजियाबाद, अध्यक्ष—आचार्य श्री उदयवीर शास्त्री, प्रथम वक्ता—पं० ईश्वरचन्द दर्शनाचार्य, बम्बई, विचार विमर्श—उपस्थित पार्षद, उपसंहारकर्ता—डा० जयदेव विद्यालंकार।

२) द्वितीय वैचारिकी—विषय-दर्शनों का आधार-वेद, संयोजक—प्रि० कन्हैयालाल एम० तलरेजा उल्हासनगर बम्बई, अध्यक्ष—स्वामी विद्यानन्द जी महाराज, दिल्ली, प्रथम वक्ता—वेदवागीश मलवर, विचार विमर्श—उपस्थित पार्षद, उपसंहार कर्ता—डा० हरिश्चन्द्र, पिलानी।

विशेष गोष्ठी—

पौरोहित्य और कर्मकाण्ड

इस गोष्ठी का संचालन और प्रवर्तन आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश करेगी।

आर्य समाज का भावी कार्यक्रम

उद्घाटन—श्री नरेन्द्र सम्पादक, प्रताप, अध्यक्ष—श्री रमेशचन्द्र, सम्पादक पंजाब केसरी उपसंहारकर्ता—श्री क्षितीश वेदालंकार, दिल्ली।

विचार के विषय

अहिन्दी प्रदेशों में आर्य समाज का प्रचार

१) श्री कृष्णदत्त हैदराबाद, २) श्री कल्याण कृष्ण, मद्रास, ३) श्री प्रियव्रत दास, भुवनेश्वर।

विदेशों में अभारतीयों में आर्य समाज का प्रचार :

१) श्री नरदेव वेदालंकार, डरबन (नीग्रो देश) २) श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, लंदन; (यूरोप)।

आर्य समाज की संगठन सम्बन्धी समस्याएं :

१) श्री सीताराम आर्य कलकत्ता, २) श्री हरिदास ज्वाल, पटना; ३) श्री भगवती प्रसाद, जयपुर।

आर्य समाज का सृजन और प्रकाशन :

१) श्री मोहनलाल मोहित, मारिशश, २) श्री आनन्द सत्यदेव, डरबन। ३) श्री देवेन्द्र कपूर बम्बई, ४) श्री वेदभिक्षु दिल्ली।

सूचना

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूज्यपाद "स्वामी ओमानन्द जी महाराज" अध्यक्ष परोपकारिणी सभा का एक भव्य आकर्षण चित्र कलेण्डर के रूप में उनके अभिनन्दन समारोह के अवसर पर प्रकाशित किया गया है। प्रत्येक आर्य संस्था एवं आर्य बन्धु के लिए यह चित्र संग्रहणीय है। चित्र का मूल्य १-५० पैसे है।

प्राप्ति स्थान :-

१) महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर। २) आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली। ३) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक। ४) आर्य संस्कृत महाविद्यालय, चरखी-दादरी। ५) कन्या गुरुकुल, पंचगांव, जि० भिवानी।

भिवानी में आर्यवीर दल का सम्मेलन सम्पन्न

भिवानी, २९ सितम्बर (निस)। पिछले दिनों भिवानी नगर में आर्यवीर दल का प्रांतीय महा-सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्यजगत् के संन्यासी डाक्टर सत्यप्रकाश जी महाराज ने की। २४ सितम्बर को हजारों आर्य वीरों ने नगर में एक गणवेश में पैदल मार्च किया। आर्य वीरों के हाथों में नंगी तलवारें व लाठियां थीं।

रात्रि को आयोजित आर्यवीर सम्मेलन की अध्यक्षता श्री गुलजारीलाल, संचालक आर्य वीर दल, महाराष्ट्र ने की। इस अवसर पर आर्यवीरों ने यौगिक चमत्कार दिखलाये। हजारों वीरों ने सामूहिक व्यायाम, लाठी आदि का प्रदर्शन भी किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी ओमानन्द जी ने की। स्वामी जी ने वर्तमान परिस्थितियों में आर्यवीर दल की आवश्यकता पर बल दिया।

इसके बाद राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री बालदिवाकर हंस सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल ने की। पंजाब व असम की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की गयी। हजारों के समूह ने यह प्रस्ताव पारित किया कि गुरुद्वारों में छिपे हत्यारों को बाहर निकाला जाये और उग्रवादियों के साथ सख्ती से निपटा जाये। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर उत्तमचन्द शरर, श्री सत्यप्रिय शास्त्री, डा० प्रशांत कुमार, स्वामी जीवानानन्द, स्वामी देवव्रत आदि विद्वानों ने भी विचार रखे। इस सारे कार्यक्रम का संयोजन व संचालन श्री नरेन्द्र प्रभाकर ने किया।

सम्मेलन में पारित प्रस्ताव

१- आर्य वीर दल हरयाणा का यह प्रान्तीय महासम्मेलन भारत सरकार से साग्रह मांग करता है कि वह हैदराबाद सत्याग्रहियों को "स्वतन्त्रता सेनानी" घोषित करके उन्हें वे सभी सुविधाएं प्रदान करे जो कि अन्य स्वतन्त्रता सेनानियों को प्राप्त हैं।

सामंतवादी व्यवस्था के अत्याचारों के विरूद्ध शान्तिप्रिय और स्वतन्त्रता प्रेमी प्रजा का यह अहिंसात्मक सत्याग्रह स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में न केवल अपना महत्त्व रखता है अपितु हैदराबाद पर भारत सरकार द्वारा किये गए पोलिसेक्शन की भूमिका भी है, आधार भूमि के रूप में देश के व्यापक हित के लिए सहायक सिद्ध हुआ है।

२- यह सम्मेलन भारत सरकार से राष्ट्र हित में यह अनुरोध करता है कि धर्मनिरपेक्ष भारत में बनने वाले कानून बिना किसी भेद-भाव के सभी भारतीयों पर समान रूप से लागू होने चाहिए। किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए बनाया गया कानून देश की अखण्डता, एकात्मता और स्वतन्त्रता के लिए घातक सिद्ध होगा।

३- यह सम्मेलन भारत वर्ष में निरन्तर बढ़ते हुए चारित्रिक पतन पर गहरी चिन्ता तथा रोष व्यक्त करता है और भारत सरकार से अनुरोध करता है कि विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य विषय घोषित करे तथा दूरदर्शन, चलचित्र पर डाका डालने वाली अश्लील फिल्मों, अश्लील गानों तथा अश्लील सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर तुरन्त प्रति बन्ध लगाएं।

४- हरयाणा आर्य वीर दल का यह प्रान्तीय महा सम्मेलन देश में दिन प्रति दिन बिगड़ रही कानून और व्यवस्था की स्थिति एवं उसकी धूमिल होती हुई प्रतिष्ठा को गंभीर दृष्टि से देखता है। विशेषकर पंजाब आदि प्रान्तों में कोई भी शान्तिप्रिय नागरिक अपने जीवन एवं समान को सुरक्षित नहीं समझता। यदि सरकार उग्रवादी तत्त्वों से निपटने में असमर्थ रही तो जनता अपनी सुरक्षा के लिए कानून को अपने हाथ में लेने के लिए विवश होगी जो देश की एकता एवं अखण्डता के लिए घातक सिद्ध होगा। यदि कोई प्रान्तीय सरकार निर्दोष जनता की सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं कर सकेगी तो यह सम्मेलन भारत सरकार से मांग करता है कि उस प्रान्तीय सरकार को समाप्त करके राष्ट्रपति शासन लागू करे।

आर्य समाज की गतिविधियां—
बाढ पीड़ित सहायता के लिए दान सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान १६-६-८३ सोमवार को दोपहर बाद ५ बजे आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद में पधारे। फरीदाबाद के सुप्रसिद्ध नेता श्री कन्हैयालाल जी महत्ता ने अन्य आर्य समाजों के अधिकारियों के साथ उनका भव्य स्वागत करते हुए उन्हें बाढ पीड़ित सहायता कोष में ३१०० रु० की थैली भेण्ट की। इसके अतिरिक्त निर्धन वर्ग के लिए शरद ऋतु में वस्त्रादि भी संग्रह करने का वचन दिया। शेष दान सूची निम्नलिखित है :—

आर्य समाज श्रद्धानन्द मार्ग अम्बाला छावनी ५०० रु०, आर्य समाज सालवन जि० करनाल २४० रु०, आर्य समाज रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ १११ रु०, पं० चन्द्रसेन जी सभा महापदेशक द्वारा— आर्य समाज मोतीनगर नई दिल्ली १०१ रु०, श्री दौलतराम सेतिया मोती नगर नई दिल्ली १०१ रु०, आर्य समाज फरीदाबाद शहर १०० रु. मन्त्री आर्य समाज नं० ४ एन० एच० फरीदाबाद ५१ रु०, श्री पृथ्वीनाथ सुभाष चन्द घरोण्डा मण्डी जि० करनाल ५१ रु०, श्री पृथ्वीनाथ ज्ञान चन्द आर्य घरोण्डा मण्डी जि० करनाल ५१ रु०, डा० सत्यपाल आर्य घरोण्डा जि० करनाल ३१ रु०, श्री पूर्णचन्द खुराना क्लाथ मर्चेन्ट मैन बाजार घरोण्डा जि० करनाल ११ रु०, श्री पुनम आयल मिल्स घरोण्डा मण्डी जि० करनाल २१ रु०, श्री ओम प्रकाश राजेन्द्र कुमार घरोण्डा मण्डी जि० करनाल ११ रु०, श्री निक्कूमल जयकिशन घरोण्डा मण्डी जि० करनाल ११ रु०।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से—

बाढ पीड़ित सहायता केन्द्र स्थापित, औषधियों का मुफ्त वितरण

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने बाढ पीड़ित सहायता समिति का गठन करके सेवा कार्य आरम्भ कर दिया है। मलेरिया, दस्त आदि रोगों के उपचार के लिए बाढ ग्रस्त ग्रामों में आयुर्वेदिक औषधियों का वितरण अपने कार्यकर्त्ताओं द्वारा निःशुल्क किया जा रहा है। सर्दी में वस्त्र भी निःशुल्क बांटे जावेंगे। अधिक से अधिक परिवारों में सहायता पहुँचाने के लिए निम्नलिखित स्थानों पर सहायता केन्द्रों की स्थापना की गई है।

१- दयानन्द मठ गोहाना रोड रोहतक। २- आर्य समाज बहादुरगढ़ मण्डी जि० रोहतक। ३- आर्य समाज झज्जर जि० रोहतक। ४- गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक। ५- आर्य समाज बादली जि० रोहतक। ६- आर्य समाज बेरी जि० रोहतक। ७- आर्य समाज सांपला जि० रोहतक। ८- आर्य समाज महम जि० रोहतक। ९- आर्य समाज सोनीपत शहर जि० सोनीपत। १०- आर्य समाज खरखोदा जि० सोनीपत। ११- आर्य समाज गोहाना जि० सोनीपत। १२- कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत। १३- गुरुकुल भैंसवाल जि० सोनीपत। १४- आर्य समाज काठ मण्डी जि० सोनीपत।

सभामन्त्री

बाढ पीड़ित सहायता की सराहना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से एक बाढ पीड़ित कोष स्थापित किया गया है। हरयाणा के रोहतक तथा सोनपत जिले बाढ से अत्यन्त प्रभावित हुये हैं। अतिवृष्टि के कारण मच्छर आदि के प्रभाव से घर-घर में मलेरिया फैल रहा है। मलेरिये के सरल उपचार के लिए सभा ने एक लघु सुदर्शन चूर्ण का नुसखा तैयार किया है। सभा के सेवक घर-घर जाकर इस चूर्ण को वितरित कर रहे हैं। मैंने जनता कालोनी तथा हरिसिंह कालोनी रोहतक आदि देहात में मलेरियां के लिए यह चूर्ण रामबाण है। आर्य युवक इस चूर्ण को घर-घर पहुँचा कर निर्धन रोगियों को लाभान्वित कर अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

ओम् दर्शन आर्य
उपमन्त्री आर्य समाज हरिसिंह कालोनी, रोहतक

हरयाणा के कोने-कोने से—

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के लिए सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह को थैलियाँ भेंट

सभा प्रधान एवं शताब्दी समारोह अजमेर के कार्यकर्ता अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह को हरयाणा के कोने-कोने से आर्य समाजों की ओर से थैलियां भेण्ट हुई हैं जिनका विवरण प्रकाशित कर रहे हैं।

श्री कन्हैया लाल महता प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद ५००० रु०, आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाँव ५००० रु०, आर्य समाज कालका जि० अम्बाला १००१ रु०।

चौ० विजय कुमार जी द्वारा

श्री रामगोपाल ठेकेदार चण्डीगढ ११०० रु०, श्री अमरराम उद्योगपति (दिल्ली कार्यालय में चैक द्वारा जमा) २५०० रु०, श्री छोटूराम ट्रांसपोर्टर चण्डीगढ ५०० रु०, श्री हजारीलाल ग्रेन मार्केट चण्डीगढ ५०१ रु. केन्द्रीय आर्य समाज चण्डीगढ ५०० रु०, श्री रामचेत ग्रेन मार्केट चण्डीगढ २०१ रु०, प्रो० दौलत राम सदस्य हरयाणा लोक सेवा आयोग चण्डीगढ १०० रु०, श्री कृष्णलाल सेवा निवृत पुलिस अधिकक्षक चण्डीगढ १०० रु०, श्रीमती शकुन्तला देवी धर्म पत्नी चौ० विजय कुमार चण्डीगढ १००, चौ० रूपचन्द एडवोकेट चण्डीगढ १०० रु०; मे० वीरेन्द्र जी ग्रेन मार्केट चण्डीगढ १०० रु० (कुल योग ५८०२)।

आर्य समाज होली मोहल्ला करनाल ११०४ रु०, आर्य समाज दयाल पुरा करनाल ११०४ रु०, आर्य समाज माडल टाउन करनाल ११०४ रु०, रामेश्वर दयाल आर्य कन्या उच्च विद्यालय होली मोहल्ला करनाल ६०१ रु०, श्री आर्य समाज अर्बन स्टेट दयालसिंह कालोनी करनाल ५६८ रु०, आर्य नर्सरी स्कूल होली मोहल्ला करनाल ५०१ रु०, लिबर्टी फुटवीयर करनाल १०१, सुपर टेयर जी० टी० रोड करनाल ५०१ रु०, स्त्री आर्य समाज होली मोहल्ला करनाल ४८१ रु०, मै० सालोदेक्स जी० टी० रोड करनाल २५५ रु०, आर्य समाज प्रेम नगर करनाल २५३ रु०; आर्य समाज रामनगर करनाल २५१ रु०, आर्य वीरदल करनाल २०२ रु०, गुप्त दान ५ रु० वाली ३० रसीदों द्वारा १५० रु०, गुप्त दान ११ रु० वाली ११ रसीदों द्वारा १२१ रु०, गुप्तदान ५ रु० वाली १६ रसीदों द्वार ८० रु०।

करनाल से १०१ रु० देने वाले दानी महानुभाव

श्री देवदत्त विज, श्री बलदेवकृष्ण आर्य, श्री नरदेव शास्त्री, श्री हरिशचन्द्र गुलाटी, श्री अमरनाथ जी कुमार, श्री विश्वम्भर नाथ महत्ता, श्री आनन्ददेव वानप्रस्थी, श्रीमती सुरक्षा चोपड़ा, स्वदेशी आयरन जी० टी० रोड, श्री हरप्रकाश आर्य, वैद्य प्रेमजी, मै० राजेश्वर दयाल एण्ड सन्ज, श्री वैद प्रकाश जी डी०सी०एम०, श्री केवल राम जी कटरेजा, चौ० रतनसिंह लाठर, मै० ग्रेन ट्रेक्टर, न्यू करनाल ट्रेडिंग कम्पनी, श्री मूलचन्द कपड़े वाले, श्री कृष्णलाल बत्रा, डा० यज्ञदत्त जी, श्रीमती सोना देवी द्वारा श्री अनन्तराम जी, श्री देशराज पासी, श्री रूलिया राम गुप्त, वैद्य रतिराम जी, अग्रवाल फलोर मिल्स, गुप्त दान।

करनाल से १०० रु० देने वाले दानी महानुभाव

श्री भागीरथ कुमार जी, श्री लाजपत राय जी, श्री ज्ञान स्वरूप जी।

करनाल से ५१ रु० देने वाले दानी महानुभाव—श्री कृष्ण लाल गान्धी, मे० जगदीश चन्द, श्री सुभाष चन्द गुप्त, मलिक सुन्दरलाल जी ५३ रु०।

करनाल से ३१ रु० देने वाले दानी महानुभाव—श्री ओम प्रकाश जी कुमार, श्री प्रताप चन्द आर्य।

करनाल से २१ रु० देने वाले महानुभाव—श्री यज्ञदत्त जी, श्री बनारसी लाल जी, श्री ठाकुर दास जी नागपाल, श्री कृष्णलाल आर्य, डा० जयदयाल जी राम नगर, मा० धर्मचन्द जी, पहलवान विशन स्वरूप जी, मा० बनारसी दास जी, चौ० लालसिंह काद्यान, श्री महाराज कृष्ण चोपड़ा, श्री जितेन्द्र पाल जी, श्री सुमन कुमार मल्होत्रा, श्री लखपत जी टण्डन, चावला सोप फेक्ट्री, डा० जयचन्द मिगलानी, गुप्तदान २ महानुभाव, श्री पुरुषोत्तम टिम्बर मार्केट, श्री मनोहर लाल मर्फी रेडियो, श्री नोतन दास आर्य, श्री केवल कृष्ण जी। (शेष ६ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष भाग)

करनाल से ११ रु० देने वाले महानुभाव—श्री ओमप्रकाश जी आर्य श्री हरवंशलाल जी, मलिक सतीश जी, श्री भगतराम जी, श्री चिरन्जीलाल जी, श्री बन्सीलाल जी, श्री रूपलाल जी बजाज, गुप्त-दान। (करनाल राशी का कुलयोग १२,२७५ रु०)

आर्य समाज जगाधरी जि० अम्बाला १२१० रु०; आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी ३०० रु०, उपर लिखित आर्य समाजों की ओर यह प्रथम किस्त है। अभी शताब्दी के नोटो द्वारा धन संग्रह जारी है। शेष सूची आगामी अंकों में प्रकाशित की जावेगी।

सभा मन्त्री

अजमेर शताब्दी समारोह से पूर्व आर्य समाजें स्थानीय समारोह न करें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने सभी आर्य समाजों को निर्देश दिया है कि वे अजमेर में हो रही ३ से ६ नवम्बर तक महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए कोई भी आर्य समाज स्थानीय रूप में शताब्दी समारोह न रखें। अजमेर समारोह के पश्चात् एक वर्ष तक शताब्दी समारोह स्थानीय रूप मे आयोजित हो सकेंगे। इससे पूर्व वार्षिक उत्सव रखे जा सकते हैं।

हरयाणा में आर्य समाजों के वार्षिक उत्सव

आर्य कन्या गुरुकुल पचगांव गांव जि० भिवानी १५ से १६ अक्तू.
आर्य समाज बेरी जि० रोहतक (मेला प्रचार) ६ से १३ „
„ „ जवाहर नगर पलवल जि०फरीदाबाद २१ से २३ „
„ „ किशनपुरा माजरा जि० अम्बाला २१ से २३ „
„ „ वर्कशाप जगाधरी जि० अम्बाला २३ से ३० „

१ से ७ नवम्बर तक कोई आर्य समाज अपने उत्सव आदि भी न रखे। सभी आर्य समाजें इन दिनों अजमेर शताब्दी समारोह में सम्मिलित होकर संघठन को सुदृढ करें।

सभा मन्त्री

"आर्य वीरो अजमेर चलो"

पूज्य स्वामी ओमानन्द जी की प्रेरणा तथा श्री बालदिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के आह्वान पर १०० आर्य वीरो को अजमेर शताब्दी मे ले जाने का निश्चय किया गया है। अतः सभी स्थानो से जो आर्य वीर दल के सैनिक इस अवसर पर सेवा कार्य में आगे आना चाहें अपना नाम, पता, आयु केन्द्र को भेजें।

नोट :—१८ वर्ष से उपर की आयु वाले आर्य वीर ही जा सकेंगे उन्हें शिक्षण २० से २२ अक्तूबर को रोहतक आचार्य देवव्रत जी तथा श्री सत्यपाल जी शिक्षक प्रान्तीय आर्य वीर दल देंगे।

वेदप्रकाश आर्य
मन्त्री : आर्य समाज शिवाजी कालोनी,
रोहतक

धर्मस्थलों में छिपे अभियुक्तों को पुलिस गिरफ्तार करे —प्रो० शेरसिंह

चण्डीगढ़, १ अक्तूबर (सागर) हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने कहा है कि पंजाब की वर्तमान स्थिति के लिए पंजाब व केन्द्र सरकार की कमजोर नीतियां जिम्मेदार हैं।

प्रो० शेरसिंह ने आज यहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए पंजाब की स्थिति पर चिन्ता प्रकट की।

उन्होंने कहा कि धार्मिक स्थानों में शरण लेने वाले अभियुक्तों को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस भेजी जानी चाहिए। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होने कहा कि मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि अभियुक्त गुरुद्वारों में ही शरण लिए हुए हैं।

आर्य समाजों को आवश्यक सूचना

हरयाणा के आर्य समाजों तथा सर्वहितकारी के सदस्यों से निवेदन है कि सभा के उपदेशक प० चन्द्रभान वैदिक मिशनरी आजकल जि० हिसार, सिरसा तथा भिवानी के भ्रमण पर हैं। उन द्वारा बाढ पीडित सहायता तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क भेजने की कृपा करें। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह तथा बाढ पीडित सहायता की दान राशि सभा कार्यालय में नकद भेजें ताकि शताब्दी नोटों के प्रपत्रों के साथ अजमेर कार्यालय में नकद जमा करवाया जा सके। सभा मन्त्री

मेजर सुरेन्द्र प्रसाद का बलिदान उत्सव

२३ सितम्बर, मंगलवार के दिन कर्नल सी० पी० सिंह जी की अध्यक्षता में स्वतन्त्रता सेनानी वयोवृद्ध समाज सेवा मास्टर तेगराम जी अबोहर के इकलौते बेटे वीर चक्र विजेता मेजर सुरेन्द्र प्रसाद का बलिदान पर्व समाधि स्थल पर सोत्साह मनाया गया। दर्जनों छात्र-छात्राओं ने १९६५ के भारत पाक युद्ध शहीद मेजर सुरेन्द्र प्रसाद पर गीत सुनाए वा भाषण दिये। नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों ने उन्हें श्रद्धाञ्जलियां भेंट की। (संवाददाता)

प्रि० मदन मोहन शर्मा के निधन पर शोक प्रस्ताव

आर्य कालिज पानीपत की प्रबन्धक समिति की यह सभा कालेज प्राचार्य श्री मदन मोहन शर्मा जी के २८-६-८३ को आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करती है तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें एवं परिवारिक जनों को धैर्य एवं इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। (प्रो० पी० सिंहल)
सैक्रेटरी आर्य कालेज पानीपत

दिल्ली में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह एक नाटक

सोमवार श्रावण वदी ७ एक अगस्त १९८३ सांध्यकाल ७-३० बजे आर्यसमाज शक्तिनगर दिल्ली में जाकर अपने चिरपरिचित मित्र पं० प्रेमपाल जी शास्त्री से मिलकर उन्हें अपना एक ताजा निबन्ध सरिता की शरारत को समाप्त करने का मैंने सुनाया इतने में श्री स्वामी इन्द्रवेश के कार्यालय के एक व्यक्ति ने आकर मुझसे कहा कि दिल्ली में होने वाली शताब्दी के लिए आप दान दें और दूसरों से दिलायें उनकी बात को सुनकर मैंने उत्तर दिया कि अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह पर परोपकारिणी सभा की ओर से मेरे प्रस्ताव पर महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय का उद्‌घाटन दिपावली के स्वर्ण सुअवसर पर होगा अतः मैं अपने ग्रन्थों की बिक्री से एक लाख रुपये अपनी ओर से परोपकारिणी सभा को सहर्ष दूंगा। ५१ सहस्र रुपये दानियों से एक करके भेंट करूंगा। मेरे इस संकल्प के उत्तर को सुनकर स्वामी इन्द्रवेश जी का पालतू व्यक्ति मुझे मारने के लिए टूट पड़ा मुझे गाली भी देते हुए यह कहा कि इसको पीटकर आर्यसमाज से बाहर करो। श्री पं० प्रेमपाल जी शास्त्री ने बीच में बचाव करके मुझे बचाया। श्री स्वामी अग्निवेश स्वामी इन्द्रवेश जी विदेशों में शताब्दी समारोह को सफल बनानें के लिए धन संग्रह करने गये हुए थे।

विश्व की वेद भक्त जनता और आर्य समाजें सावधान हो जायें

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के नाम पर विश्व की आर्य जनता से धन एकत्र करके महर्षि दयानन्द के सबल सिद्धान्तों को विश्व व्यापी वेद प्रचार में खर्च होगा अथवा लोक सभा की कुर्सी पर पहुँचने के लिए आने वाले चुनाव चक्र में खर्च होगा। यह तो श्री स्वामी अग्निवेश जी और इन्द्रवेश जी जानते हैं।

यह धन क्या वेद प्रचारकों और उपदेशकों, संन्यासियों के लिए एवं आर्य नेताओं को जान से मरवाने के लिए खर्च होगा? यह बात ईश्वर जाने या दिल्ली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का नाटक रचने वाले लोग जानें।

आर्यसमाज का एक प्रहरी और अखिल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी समिति दिल्ली का संयोजक और अध्यक्ष होने के नाते एक साहित्यकार और लेखक होने के नाते मैं आर्य जनता को सावधान करना चाहता हूं कि विश्व विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी जैसी संस्था का सर्वनाश करने वाले लोगों से जनता सावधान रहे। आर्यसमाज में घुसे हुए इन अवसरवादियों और स्वार्थियों से जनता सावधान रहे। महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों की अर्थी निकालने वालों से आर्य जनता सतर्क और सावधान रहे।

आर्य समाज शक्तिनगर असामाजिक तत्वों को एक गढ़ बना हुआ है। अतः आर्य समाज शक्ति नगर के अधिकारी और भारत सरकार का गुप्तचर विभाग तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी भी अवश्य ध्यान दें।

निवेदक—वेद पथिक, धर्मवीर आर्य भंडाधारी,
अध्यक्ष महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय
निर्माण समिति सरायरुहेला नई दिल्ली-५

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का अनुपम उपहार

सूक्ति सुधासार

इस विशाल विश्व में साहित्य संसार में वेद ज्ञान के रवि की छवि से अलंकृत यह नूतन ग्रन्थ एक सहस्र एक सौ ग्यारह सूक्तियों में लिख कर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मंगलवार ३०-८-८३ को पूर्ण हो गया है। यह ग्रन्थ हृदय आकाश में वेद ज्ञान के पावन प्रकाश को लेकर पूर्व जन्मों की पावन स्मृतियों के आधार पर समाधि अवस्था में समाहित होकर लिखा गया है।

यह ग्रन्थ विश्व के विद्यार्थी समाज के लिए, आचार्य वृन्द के लिए, उपदेशकों, कथावाचकों, साहित्यकारों, कविवृन्द एवं मानव मात्र के लिए पठनीय है।

यह अभूतपूर्व ग्रन्थ राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्ध बनाने में सहायक होगा। यह ग्रन्थ सुनहरी जिल्द में उत्तम कागज पर प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थ का मूल्य केवल मात्र २५ रु० प्रति है।

इस ग्रन्थ की बिक्री का शतप्रतिशत आय महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के संचालन के लिए परोकारिणी सभा अजमेर को एक लाख रुपया प्रदान किया जाएगा।

आप अपना आर्डर और मनीआर्डर आज ही भेजकर अपनी प्रतियां सुरक्षित करा लें अन्यथा इस अनुपम ग्रन्थ का प्राप्त होना असंभव होगा।

ग्रन्थ का विमोचन

इस महान ग्रन्थ का विमोचन महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी के करकमलों से होगा। यह ग्रन्थ भारत केसरी स्वर्गीय देशभक्त कुंवरचांदकरण जी शारदा की पावन स्मृति में उनके सुपुत्र श्रीमान् श्रीकरण जी शारदा मंत्री परोपकारिणी सभा के करकमलों में भेंट किया जा रहा है।

वेद पथिक धर्मवीर आर्य भण्डाधारी
अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन, १८५७ अहाता
ठाकुरदास सरायरुहेला नई दिल्ली-५

सम्पादक के नाम पत्र

सम्पादक जी सर्वहितकारी सादर नमस्ते।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। १६ सितम्बर १९८३ राजधर्म में निवेदक सूची में झूठा मेरा नाम दिया है। जो पत्र मैंने स्वामी इन्द्रवेश जी को लिखा कृपया उसे सर्वहितकारी में शीघ्र प्रकाशित किजिये तथा एक प्रति मेरे पास भी भेजिये।

भवदीय
स्वामी कर्मपाल प्रधान, सर्वजातिय सर्वखाप पंचायत

सेवा में

आदरणीय स्वामी इन्द्रवेश जी सादर नमस्ते।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होगें। मेरे आपका साप्ताहिक पत्र राजधर्म १६ सितम्बर १९८३ का अंक पहुंचा। इस साप्ताहिक पत्र में अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह २५, २६, २७ नवम्बर १९८३ को रामलीला मैदान दिल्ली में मनाने का पोस्टर पढ़ा। निवेदक सूची जो ३७२ संख्या आपने दी है। उसमें ४१ संख्या पर मेरा नाम निवेदक में आपने छापा है। मुझे यह पढ़कर बड़ा दुःख हुआ कि मेरा नाम आपने बिना मेरे से पूछे वा पत्र लिखे या विचार विमर्श किये बिना छापा है। जबकि आप विभिन्न राजनैतिक सगंठनों में कार्य कर रहे हैं। १२ वर्षों से मेरे व आपके मध्य किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार, कार्यक्रम सम्बन्धी सम्पर्क नहीं है। मेरा आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य वीर दल, परोपकारिणी सभा तथा प्रादेशिक सभा आदि जो आर्य समाज के विभिन्न संगठन है उनसे सम्बन्ध है। आपको अजमेर वाली शताब्दी में ही सहयोग देना चाहिये। मुझे आशा है कि मेरे नाम की गलत सूचना देने की अनाधिकार कार्यवाही को हटा वास्तविक सत्य कार्य कर मुझे पत्र द्वारा सूचित करेगें।

भवदीय
स्वामी कर्मपाल प्रधान, सर्वजातिय सर्वखाप पंचायत

शोक प्रस्ताव

श्री दफेदार रिसालसिंह जी आर्य बेरी निवासी का १७-९-८३ को देहान्त हो गया। वे लगभग ८५ वर्ष के थे। आपने आर्यसमाज, झज्जर गुरुकुल तथा आर्यसमाज मन्दिर बेरी के निर्माण में प्राणपण से सहयोग किया है। श्री फतेहसिंह जी भण्डारी द्वारा जब गुरुकुल को इस आकस्मिक घटना का पता चला तो उसने बड़ी संवेदना प्रकट की और प्रस्ताव पारित किया कि दफेदार रिसालसिंह की आत्मा को प्रभु उसके शुभ कर्मों के अनुसार सद्‌गति प्रदान करें और पारिवारिक जनों को इस कष्ट के सहने की शक्ति प्रदान करे। हमें विश्वास है कि वह जन्म लेकर पुनः अपने सत्कार्यों में लग जावेंगे।

आचार्य
झज्जर, गुरुकुल रोहतक

फोड़े फुँसिया और घरेलू उपचार

— धर्मदेव विद्यार्थी एम० ए० एम० एड० गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आजकल वर्षा के बाद प्राय: ऐसा देखा जाता है कि बालकों तथा अन्य को भी फोड़े फुंसिया निकलनी आरम्भ हो जाती है। और कई बार उनके चमड़ी के रोग खाज आदि भयानक रूप में फूट पड़ते हैं। इन सब रोगों के कीटाणु वर्षा काल में पनपते हैं क्योंकि गन्दगी रहने के कारण पानी का एक स्थान पर खड़े रहना और विभिन्न चीजों का उसमें सड़ते रहना तथा सफाई का उचित प्रबन्ध न होना आदि कारणों से इस काल में घातक बिमारियों के कीटाणु पैदा होने का भय रहता है यहां हम केवल बाल स्वास्थ्य हेतु फोड़े-फुंसियों का ही वर्णन करेंगे।

१. खटमलों से भी फुंसियां हो जाती हैं।
२. कई बार मच्छर के काटने से भी फुंसी हो जाती हैं।
३. गन्दे या अन्य किसी के बिस्तर में सोने से तथा किसी के साथ सोने से चमड़ी के रोग फैलते हैं।
४. किसी चमड़ी के रोगों के कपड़े पहनने से भी यह रोग फैलता है।
५. कई बार फोड़े या फुंसी के खुरंड को उतार कर फेंक देते हैं जिसमें कीटाणु रहते हैं जो हवा की सहायता से फैलते हैं।
६. कई बार चाट या छावड़ वाले के गन्दे हाथों से ऐसे कीटाणु फैलते रहते हैं।
७. वर्षा के समय शौचादि का उचित स्थान नहीं रह पाता इसके सड़ने से बिमारियों के कीटाणु फैलते रहते हैं।
८. गन्दे तथा खड़े पानी में स्नान करने से जहां अधिक व्यक्ति स्नान करते हों इससे कीटाणु एक दूसरे तक पहुँचते रहते हैं।
९. शरीर पर एक स्थान से बहने वाली पीप से शरीर के अन्य स्थानों पर भी फुंसी हो जाती हैं।

बचने के उपाय :—

१. नित्य प्रति अपने कपड़ों की उचित सफाई तथा विशेष रूप से कच्छे तथा बुनियान की सफाई करना। २. कभी भी किसी दूसरे के कपड़े न पहनें। ३ खड़े पानी में इकट्ठे स्नान न करें। ४. किसी अन्य के बिस्तर का प्रयोग न करें। ५. अपने शरीर को चमड़ी रोगी से न छूने देवें। ६. खाते समय हाथ साफ नाखून को काट कर रखें। ७. बर्तन आदि अच्छी तरह साफ करें। ८. बिस्तर को धूप में सुखायें परन्तु जैसे ही धूप कम हो बिस्तर उठा देना चाहिए। ९. फुंसी के उतरे खुरंड को मिट्टी में दबा देना चाहिए। १०. शौच स्थान की भली-भांति शुद्धि करनी चाहिए।

चिकित्सा :—

अगर फोड़े फुन्सी अधिक मात्रा में हो जाती हों तो इनका इलाज इस प्रकार करने से आराम हो सकता है—

१. प्रति सप्ताह सरसों के तेल की मालिश करें अधिक आवश्यकता हो तो उसमें चमेली पत्ते उबाल कर लेवें।
२. नीम के उबले पत्तों में थोड़ी सी फिटकरी मिलाकर स्नान करें।
३. चमेली के पत्ते पानी में उबाल कर नहावें।
४. पक पड़ने पर चमेली के पत्ते कूटकर तेल में मिलाकर घाव पर लगावें।
५. एक किलो चमेली पत्ते ८ किलो पानी में उबाल कर एक किलो तेल जला कर लगावें यह डिटोल जैसा प्रभावशाली होगा।
६. हरड़ को पीसकर उसमें तेल मिलाकर लगावें।
७. देसी घी के लगाने से जख्म जल्द भर जाता है।

इस प्रकार ये कुछ बचाव तथा रोग सम्बन्धी उपाय योग्य डाक्टरों से सलाह कर आपकी सेवा में प्रस्तुत किये हैं। इनसे आपको अवश्य लाभ होगा।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फाल ५८६१ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक–म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक–डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक–रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ४२ ४१ अक्टूबर १९८३ वार्षिक मूल्य १५), विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा अकालियों की हिंसात्मक गतिविधियों को सहन नहीं करेगा —प्रो० शेरसिंह

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरशिंह ने अपने प्रेस वक्तव्य में कहा है कि साम्प्रदायक तत्त्व तथा बाहरी शक्तियां भारत को पुन: विभाजित करने का यत्न कर रही हैं। सिख एक पृथक् कौम है का नारा लन्दन से लगाया गया है। उग्रवादी अकाली तथा समझौता करवाने वाले मध्यस्थ पश्चिमी देशों के संकेत पर यह खेल खेल रहे हैं। अकालियों में तथाकथित उदार दल हिंसा की धमकी देकर अपनी साम्प्रदायक, अन्यायपूर्ण तथा असवैंधानिक राष्ट्र विरोधी मांगें प्राप्त करना चाहता है जबकि दूसरी ओर उग्रवादी तत्त्व अपनी हिंसात्मक गतिविधियों द्वारा अपना उद्देश्य पूरा करना धर्म समझते हैं।

हरयाणा रक्षावाहिनी पंजाब में राष्ट्रपति राज लागू करने का स्वागत करती है और जिन राष्ट्र विरोधी नेताओं को नजरबन्द किया जारहा है, उसका समर्थन करती है क्योंकि वे हिंसा के सहारे भारत के विधान को बदलकर देश के पुन: टुकड़े करना चाहते हैं।

साम्प्रदायक तथा राष्ट्र विरोधी तत्वों का उद्देश्य देश की अखण्डता को समाप्त करने के लिए हिन्दुओं और सिखों में झगड़े करवाना है जबकि हिन्दू तथा सिख एक ही नसल से सम्बन्ध रखते हैं और दोनों की रगों में एक ही खून बहता है। हरयाणा रक्षावाहिनी भारत सरकार से आग्रहपूर्वक मांग करती है कि उन तत्त्वों के विरुद्ध कठोर पग उठाये जावें जो कि अपने भड़कीले भाषणों तथा हिंसात्मक गतिविधियों से राष्ट्र की एकता को समाप्त करना चाहते हैं और हिन्दू तथा सिखों में तनाव पैदा करके अपना स्वार्थ पूरा करना चाहते हैं। उग्रवादियों के नेता सन्त भिण्डरवाले तथा उनके अनुयायियों को भारत सुरक्षा नियमों के अनुसार तुरन्त जेल में डालना चाहिए।

प्रो० शेरशिंह नें भारत सरकार को सुझाव दिया है कि जब तक उग्रवादियों की हिंसात्मक गतिविधियों को पूरी तरह से कुचल नहीं दिया जाता और पंजाब में शन्ति और सद्भावना का वातावरण नहीं बनता तब तक अकालियों को समझौते का निमन्त्रण नहीं देना चाहिए। खुशामद करने की नीति को अब त्याग देना चाहिए ताकि अकालियों का हर पांचवें वर्ष चलने वाला पंचवर्षीय आन्दोलन सदा के लिए समाप्त हो सके। पंजाब को बटवारे के बाद पूर्व ही अपने हिस्से से अधिक मिल चुका है। घाटे में तो केवल हरयाणा हो रहा है। इस सच्चाई को कभी नहीं भूलना चाहिए। अकालियों तथा दूसरे पंजाबियों से समझौता वार्ता करते समय हरयाणा के हितों का भी ध्यान रखना चाहिए। अकालियों तथा पंजाबी भाइयों को चाहिए कि वे अपनी न्यायोचित मांगें लोकतन्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर शान्तिपूर्ण तरीकों से ही प्रस्तुत करें तकि समस्या का न्यायोचित समाधान निकल सके। हरयाणावासी अकालियों की हिंसात्मक धमकियों तथा ब्लैकमेल के आगे कभी नहीं झुकेगा। यह बात उन्हें सदा स्मरण रखनी चाहिए। इसलिए हरयाणा के साथ न्यायसंगत बर्ताव होना चाहिए।

महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह अजमेर की तैयारियां आरम्भ
निर्वाण स्थल पर विशाल पण्डाल तथा दयानन्द नगर का निर्माण

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर के अब केवल दो सप्ताह शेष रह गये हैं। प्रो० शेरसिंह जी जो शताब्दी समारोह के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष हैं, २५ अक्टूबर को समारोह के स्वागताध्यक्ष श्री छोटूसिह एडवोकेट तथा दिल्ली में समारोह के मन्त्री श्री रामलाल सहगल के साथ कार्य की प्रगति का निरीक्षण करने अजमेर गये। उन्होंने समारोह के अन्य अधिकारियों श्रीकरण जी शारदा, श्री जयसिंह महता आदि ने अब तक की गई तैयारी से उन्हें परिचित करवाया और बताया कि समारोह स्थल पर पानी, बिजली तथा लाउडस्पीकरों का प्रबन्ध हो गया है। पण्डाल बनाया जा रहा है। मिट्टी आदि डालकर मैदान को समतल किया जारहा है। स्थानीय कलक्टर महोदय पूर्ण सुविधाएं देने का प्रयत्न कर रहे हैं। बाहर से आने वाले यात्रियों के आवास के लिए समारोह स्थान के साथ भव्य दयानन्द नगर का निर्माण करके खोलदारियां बनाई जारही हैं। एक ४० फुट चौड़ी सड़क पण्डाल के सामने तैयार की गई है। इसके दोनो ओर भारत की सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा विदेशों में स्थित आर्यसमाजों के नाम पट तथा ओ३म् ध्वज लगाये जावेंगे।

शताब्दी समारोह का विस्तृत कार्यक्रम जो अभी तक तैयार किया गया है, सर्वहितकारी के पाठकों के पृष्ट २ तथा ७ पर लिए आर्य जगत् से साभार प्रकासित कर रहे हैं। —सभा मन्त्री

निर्वाण शताब्दी धूमधाम से मनाई जावे

यद्यपि निर्वाण शताब्दी का मुख्य आयोजन ३ नवम्बर से ६ नवम्बर १९८३ तक अजमेर में हो रहा है, सभा आर्यजन उसमें भाग लें। जो लोग वहां न पहुंच सकें उन्हें सार्वदेशिक सभा की ओर से आदेश दिया जाता है कि वे दीपावली के दिन निर्वाण शताब्दी महोत्सव अपने-अपने ग्राम, नगर और कस्बों में बड़े उत्साहपूर्वक मनावें। प्रात: प्रभात फेरियां निकाली जावें, आर्यजन अपने घरों में ओ३म् ध्वज फहराने का विशेष कार्यक्रम रखें, सार्वजनिक सभाएं की जाव आदि कार्यक्रम आर्यजन सामूहिक रूप से सम्पन्न करें।

रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह, अजमेर १९८३ का कार्यक्रम

यज्ञ

चतुर्वेद पारायण यज्ञ—६ अक्टूबर से ६ नवम्बर तक
यज्ञस्थली—ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग (अनासागर तट)

शताब्दी समारोह

३, ४, ५, ६ नवम्बर १९८३, अजमेर

गुरुवार ३ नवम्बर, १९८३

चतुर्वेद पारायण यज्ञ—प्रात: ६ बजे से ९ बजे तक
सांय: ३ बजे से ६ बजे तक,
स्थान—ऋषि उद्यान

समारोह प्रांगण में

पूर्व मध्याह्न—ध्वजारोहण—प्रात: १० बजे
स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती महाराज
(व्यवस्थापक—श्री बालदिवाकर हंस)
ध्वजगीत—श्री देवव्रत शास्त्री, (चेम्बर बम्बई)
प्रदर्शनी उद्‌घाटन—प्रात: ११ बजे दु:खनराम जी, पटना;

शताब्दी उद्‌घाटन समारोह
प्रात: ११-३० बजे से १ बजे तक
ईश्वर स्तुति—वेद मन्त्रों द्वारा (वृन्दगान)
वैदिक राष्ट्रगान—(वृन्दगान)
उद्‌घाटन भाषण—लाला रामगोपाल शालवाले
(प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
स्वागत भाषण—श्री छोटूसिंह एडवोकेट
अध्यक्षीय भाषण—स्वामी ओमानन्द सरस्वती

मध्याह्नोत्तर—महिला सम्मेलन—२-३० बजे से ५-३० बजे सांय
संगीत—कन्या गुरुकुल पोरबन्दर की कन्याएं
अध्यक्षा—आचार्या सविता बेन, पोरबन्दर
संयोजिका—सुश्री सरला शारदा, अजमेर
उद्‌घाटन—भाषण—सुश्री कुमुद बेन जोशी, केन्द्रीय स्वास्थ्य उपमन्त्री।
वक्ता—१. श्रीमती प्रभात शोभा, विद्यालंकृता (हरयाणा)
२. श्रीमती कौशल्या देवी, रायपुर (मध्य प्रदेश)
३. प्रि० सन्तोष तनेजा, दिल्ली
४. श्रीमती सावित्री रस्तोगी, मेरठ
५. श्रीमती स्नेहलता हाण्डा, इन्दौर
६. संन्यासिनी मीरा यति, ज्वालापुर
७. श्रीमती राकेश रानी, दिल्ली
८. श्रीमती शकुन्तला देवी, दिल्ली
९. डा० सरोजदीक्षा विद्यालंकार, दिल्ली
१०. श्रीमती सुशीला विद्यालंकार, हैदराबाद
११. शान्ति देव बाला, लखनऊ
आशीर्वचन—लेडी शिवसागर रामगुलाम, मारिशस
सांयकालीन व्यायाम प्रदर्शन—खुले मैदान में—५-३० से ६-३० बजे तक
संयोजक—डा० देवव्रत व्यायामाचार्य, हरयाणा
उपसंयोजक—श्री रामदेव उड़ीसा
श्री विश्वपाल जयन्त, कोटद्वार

देशदेशान्तर आर्य सम्मेलन

रात्रि—७ बजे से १० बजे तक
संगीत—कुमारी प्रतिभा पण्डिता (१० मिनट)
संयोजक—श्री ओमप्रकाश त्यागी, पूर्व सांसद
महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
उद्‌घाटन—श्री पी० वी० नरसिंह राव, विदेश मन्त्री भारत
अध्यक्ष—श्री सत्यदेव भारद्वाज, नैरोबी
परोपकारिणी सभा के नवप्रकाशित साहित्य का
विमोचन—श्री मोहनलाल मोहित मारिशस
वक्ता—१. विभिन्न भारतेतर देशों के प्रतिनिधि,
विश्व हिन्दी सम्मेलन में आने वाले अतिथि
हिन्दी और इतर भाषी भारतीय प्रतिनिधि
१० से १०-३० बजे रात्रि—काव्य संगीत—श्री कृष्ण कुमार चौबे, नागपुर

शुक्रवार ४ नवम्बर, १९८३

यज्ञस्थली में—चतुर्वेद पारायण यज्ञ—प्रात: ६ बजे से ९ बजे तक
सांय ३ बजे से ६ बजे तक
संगीत—श्री पन्नालाल पीयूष, अजमेर
श्री गुलाबसिंह राघव, दिल्ली
वेदप्रवचन—प्रात: ९-३० बजे से १०-१५ बजे तक
श्री अमर स्वामी जी महाराज
समारोह बड़े पंडाल में—संगीत—प्रात: १०-२० बजे से १०-३० बजे तक
श्रीमती शिवराजवती, बम्बई
सामगान—श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी
वेद सम्मेलन—प्रात: १०-३० से १ बजे तक
अध्यक्ष—स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती
सयोजक—डा० भवानी लाल भारतीय
उद्‌घाटन भाषण—आचार्य डा० रामनाथ वेदालंकार
वेद कण्ठस्थ करने वालों को पुरस्कार
विशेष भाषण—१. डा० कर्णसिंह—'वेद का महत्व'
२. आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति 'वेद और समाज व्यवस्था'
३. आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार—'वेद और गृहस्थ धर्म'
४. आचार्य रामानन्द शास्त्री—'वेद और नास्तिक धर्म'
५. डा० सत्यकाम वर्मा—'वैदिक वाङ्मय की व्यापकता'
६. श्री उमाकांत उपाध्याय—'वैदिक अर्थ व्यवस्था'
आशीर्वचन—श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार,

श्रद्धांजलि सम्मेलन

मध्याह्नोत्तर—२-३० से ५-३० बजे तक
मुख्य अतिथि—राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह
संयोजक—श्री शिवपाल रामभरोसे, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका
उद्‌घाटनकर्त्ता—सर शिवसागर रामगुलाम, गवर्नर जनरल, मारिशस
श्रद्धांजलियां—१. विभिन्न धर्मावलम्बियों द्वारा
२. भूतपूर्व राजस्थानी रियासतों के प्रतिनिधियों द्वारा
३. विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधियों द्वारा
आशीर्वचन—स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, दीनानगर (पंजाब)
सांयकालीन व्यायाम प्रदर्शन—खुले मैदान में ५-३० बजे से ६-३० बजे तक
दीपमाला ऋषि-निर्वाण के १०० वर्षों के प्रतीक स्वरूप १००
दीपों का प्रज्वलन—सांय ७ बजे से ७-३० बजे तक
संगीत—श्रीमती सुनीता शर्मा, कलकत्ता
ब्र० जगदीश चन्द्र आर्य (आर्कस्ट्रा)
रात्रि—आर्य युवक सम्मेलन—७-३० बजे से १० बजे तक
अध्यक्ष—ब्र० आर्य नरेश संयोजक—श्री राजसिंह आर्य
उद्‌घाटन भाषण—श्री योगेन्द्र पुरुषार्थी
युवकों तथा युवतियों द्वारा आर्यसमाज की सेवा की प्रतिज्ञा
वक्ता—१. प्रो० उत्तम चन्द शरर
२. प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु
३. डा० वेदप्रताप वैदिक
४. श्री सतीश (गायना)
५. श्री आनन्द प्रकाश (सुरिनाम)
६. श्री ज्वलन्त कुमार (अमेठी)
७. आचार्य हरिदेव जी, गौतम नगर, दिल्ली
८. श्री दुर्गादास आर्य
९. श्री प्रकाश वागीश,
१०. श्री अनिल कुमार आर्य
११. प्रो० सारस्वत मोहन मनीषी
आशीर्वचन—कैप्टन देवरत्न आर्य; बम्बई
गीत और वाद्य—कन्या गुरुकुल बड़ोदा की कन्याओं के संगीतमय ऋषि-कथा

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादकीय

आईये, हम इन्हें जीतें

विशाल मानव समाज के सभी वर्गोपवर्गों में कुछ ऐसे विशेष दिन नियत हैं जबकि वे अपने विशेष मनोभावों के प्रकाशनार्थ कर्म विशेष करते हुए देखे जाते हैं। यद्यपि इन विशेष नियत दिनों के अवसरों, ऋतुओं, नामों तथा संख्याओं में बड़ा अन्तर पाया जाता है और उन मनोभावों तथा उनके प्रदर्शन प्रकारों में भी भारी भेद दृष्टिगोचर होता है पर सर्वत्र उनकी किसी न किसी रूप में विद्यमानता मानव प्रकृति की एक मौलिक प्रवृत्ति, जिसे संस्कृति कहा जा सकता है, का परिचय देती है। पर्व, उत्सव,, त्योहार ईद-जशन तथा होलिडे आदि शब्दों से अभिप्रेत ये नियत दिन विशेष ही होते हैं। मानव सदा एकरस हो बना नहीं रह सकता। वह अपने प्रतिदिन के कार्य वा व्यवसाय में सदा सर्वदा समान रूप से जुट भी नहीं सकता। प्रत्युत कभी-कभी विश्राम सुख का अनुभव कर अपने हृदय में उल्लास का प्रकाश करते हुए अपनी कार्य क्षमता में वृद्धि कर पाये, इसी हेतु पूर्वजों ने इन त्योहारों की परम्परा को प्रचलित किया था।

विश्व के आदि गुरु और संसार में सर्वप्रथम वैज्ञानिक संस्कृति एवं सभ्यता का निर्माण कर उसका प्रसार करने वाले भारतीय भला परिस्थितियों वश विक्षुब्ध हुए मानवमन में उल्लास का संचार कर नवजीवन का दान देने वाली त्योहारों की श्रृंखला में किसी से कैसे पश्चात्पद रह सकते थे। यही नहीं, त्योहारों की प्रतापी प्रथा ने ही भारत को भारत भूमि से भी अधिक देव भूमि तथा भारतीयों को मनुष्य से ऊपर उठाकर देव पद प्रदान किया था। बैसाखी के भंगड़े का स्वर, पनिहारी की रूनक-झुनक, भीलों का भगोरिया और गुजरात का गरबा आदि भारतीय सभ्यता के प्रतीक हैं तो पूर्व की पूजा, पश्चिम का महारास, दक्षिण का ओणम तथा उत्तर की दीवाली भारतीय-संस्कृति की उच्चता के।

त्योहारों की इस लम्बी श्रृंखला में विजय के उत्सव दशहरे का अपना विशेष ही स्थान है। वर्ष के लगभग मध्य में आश्विन शुक्ला दशमी के दिन मनाया जाने के कारण विजय दशमी नाम वाला यह पर्व भारतीय जाति को जागृत कर कर्त्तव्य पूर्ति की प्रेरणा देता हुआ सभ्यता एवं संस्कृति में समुचित सामञ्जस्य स्थापित करता है। कृषि प्रधान भारत का किसान अपने खेत की सुनहरी फसल को अनाज रूपी सम्पत्ति में बदल-कर जब घर लाता है तो उसमें उमंगों को ठिकाना नहीं मिलता। ऐसे में कहीं उसमें किसी कुत्सित भावना का उदय न हो जाये, अतः वह सर्व-सम्पत्ति प्रदाता, ऐश्वर्यशाली परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता के बोधनार्थ यज्ञ आदि द्वारा उसका पूजन करता है। राम-रावण युद्ध इसमें रावण की पराजय तथा उसका राम द्वारा वध, देवराज इन्द्र द्वारा महादानव वृत्रासुर पर विजय, पाण्डवों द्वारा अज्ञातवास की समाप्ति कर द्रोपदी का वरण, महाभारत के युद्ध का इसी दिन आरम्भ एक दिव्य गुणों से सम्पन्न दुर्गादेवी द्वारा आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त कर कैलाश को प्रस्थान करने की सत्यासत्य घटनाओं तथा लीला आदि नाटकों एवं दुर्गा पूजा और इस दिन इसकी प्रतिमा को जलूस के रूप में ले जाकर गंगा में विसर्जन हमें यही शिक्षा देते हैं कि बड़े से बड़े संकट और चुनौती के समय भी मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए बल्कि उसे परीक्षा समझ उसमें प्रसन्नतापूर्वक मुकाबला करने बैठ जाना ही उसका धर्म है। कुल्लू का दशहरा जो विशेष प्रसिद्ध है, में स्त्रियों और पुरुषों द्वारा तुरहियों, बिगुल, ढ़ोल, नगाड़े, बांसुरी और घण्टियों के तुमुल नाद के साथ नृत्य करते कन्धों पर देवगणों की प्रतिमा उठाकर नगर की परिक्रमा करते हुए नगर देवता रघुनाथ जी की वन्दना से इस पर्व का प्रारम्भ तथा इस दिन अपराह्न में पुनः देव-गणों सहित रघुनाथ जी की प्रदिक्रमा के उपरान्त युद्ध की सामग्री से सुसज्जित होकर व्यास नदी के किनारे बनाई गई कांटों की लंका पर चढ़ाई तथा उसे जलाकर नष्ट कर मनाया जाने वाला विजय-दशमी का यह पर्व जो रहस्योद्घाटन हमारे समक्ष करता है वह यही है कि सदा ज्ञान की अज्ञान पर; सत्य की असत्य पर तथा न्याय की अन्याय पर विजय होती है।

असत्य, अज्ञान और अन्याय की पराजय तथा सत्य, ज्ञान तथा न्याय की विजय का रहस्य जानने की नितान्त आवश्यकता आज हम भारतीयों को है क्योंकि हम द्रुत गति से शाश्वत मूल्यों, चिरन्तन प्रश्नों, आदर्श परमपराओं अथवा दूसरे शब्दों में उपरोक्त सत्य, ज्ञान तथा न्याय से विमुख होते जा रहे हैं। तभी हम बाह्य जगत् में अपने मित्र तथा शत्रुओं को परखते रहते हैं। इतिहास चीख-चीखकर हमसे कह रहा है कि बाहर के शत्रुओं को जानकर उन पर विजय प्राप्त कर लेने का अपना महत्त्व तो हो सकता है किन्तु स्थायी रूप से नहीं। वृत्रासुर, रावण तथा अन्य असुर भी तो विजेता थे किन्तु वे उन्हें न जीत सके जिन्हें जीतने की प्रबल लालसा इनकी थी तथा उसे पूरा करने के लिए इन्होंने पर्याप्त साधन भी जुटा लिये थे। इसके विपरीत आज के दिन से जुड़ी कथाओं के नायक इन्द्र, राम और भगवती दुर्गा ने अपने सीमित साधनों के बल पर ही मानवता के उन शक्तिशाली शत्रुओं पर सरलता पूर्वक विजय प्राप्त कर इतिहास में शाश्वत महत्त्व वाला गौरवयुक्त स्थान पा लिया। इसका एक मात्र कारण भारतीय संस्कृति की पूरे बलपूर्वक इस उद्घोषणा "कि जीत और हार का पैमाना मनुष्य के बाहर नहीं, उसके भीतर है" को ध्यान पूर्वक-सुनकर तथ्यान्वेषणोपरान्त उसे जीवन का आधार बना तदनुसार ही जीवन बिताना था! बाहर के शत्रुओं को जीतने निकलने से पूर्व श्री राम आदि ने अपने आन्तरिक शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर) पर सफलतापूर्वक विजय पा लेने रूपी उपलब्धि प्राप्त कर ली थी जबकि उनके वंशज एवं अनुयायी कहलाने वाले हम भारतीयों ने एक युग से मानवता के इन उक्त ६ लुटेरे शत्रुओं की ओर से न केवल आंखें ही फेर ली हैं प्रत्युत इन्हें सशक्त करने की अथाह सामग्री भी इनके लिये जुटाते चले जा रहे हैं।

सचमुच, यही कारण है कि आज हम अपने ही अन्दर बसे शत्रुओं से अपने को आतंकित पा रहे हैं तथा इस पर भी दुःखद आश्चर्य यह है कि उनके आतंक को प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए भी उनके उन्मूलन करने हेतु निश्चेष्ट हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा मद और मत्सर ही वे शत्रु हैं जो हमारे अन्तस्तल में बसे हैं तथा हमें खाये जा रहे हैं। ये ही हमारी वे मौलिक कमजोरियां हैं जिनके वश में होकर हम स्वर्ग-वासी धरा पर भी नरक का अनुभव कर रहे हैं। इन्हीं के वशीभूत होकर हम देव से मनुष्य तथा मनुष्य से राक्षस तुल्य होते जा रहे हैं। इन्हीं के कारण हमारी सदसद् विवेकिनी बुद्धि उत्तेजित हो उठती है तथा क्षणिक आवेश के भयंकर कुचक्र में फंसकर रावण द्वारा किये गये सती साध्वी सीता के अपहरण से भी अधिक मूर्खतापूर्ण जघन्य दुष्कर्म कर बैठते हैं तथा हमेशा के लिये आत्मग्लानि, आत्महीनता तथा पापवृत्ति के शिकार होकर रह जाते हैं।

यह आवश्यक है कि विजय के प्रतीक दशहरे के इस पावन पर्व पर हम इन आन्तरिक शत्रुओं के स्वरूप पर विचार कर इनसे कदापि पराजित न होने का सत्संकल्प करें तथा तदर्थ दृढ़ इच्छा शक्ति; आस्तिक भाव और निरन्तर अभ्यास की साधना का आश्रय लें। परमात्मा करे, मन से कुत्सित भावों को निकाल फेंकने की प्रक्रिया को आचरण में लाने के लिए हम सतत प्रयत्नशील रहें तथा यही चिन्ता हमें सदैव लगी रहे कि जब तक महापुरुषों की भांति इन अन्दरूनी दुश्मनों को हम जीत नहीं लेते तब तक सुख शांति प्राप्त नहीं कर सकते। अतः आइये। ऋषियों की सन्तान हम भारतीय विजय दशमी पर्व को धूमधाम से मनाते हुए इसके इसी मुख्यतम सन्देश को हृदयंगम करें कि इस प्रकार बाह्य शत्रुओं को विजित करने से पूर्व इन आन्तरिक छः शत्रुओं पर भली भांति विजय प्राप्त कर लें, तभी जीवन का सर्वांगीण विकास और मानव संस्कृति की रक्षा सम्भव है तथा तभी दशहरा अन्य सभी त्योहारों की अपेक्षा अधिक सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक, जन जीवन में अधिक जागृति का प्रेरक, समष्टि जीवन को अधिक उत्साह प्रदाता तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का अधिक द्योतक बन सकता है।

—रणवीर

निर्वाण शताब्दी समाचार—

सादर निमन्त्रण

माननीय महोदय,

आगामी दीपावली के पावन पर्व पर विश्व पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण को १०० वर्ष पूरे हो रहे हैं। अतः उनकी पावन निर्वाण शताब्दी उनकी निर्वाण भूमि अजमेर में दिनांक ३, ४, ५, ६ नवम्बर १९८३ को ससमारोह मनाई जा रही है। इस अभूतपूर्व अवसर पर सभी ऋषि-भक्तों को अपने अतीत के सिंहावलोकन के साथ भावी कार्यक्रमों की भव्य रूपरेखा का सृजन करना है। एतदर्थ विविध सम्मेलनों यथा- अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन, राष्ट्र रक्षा व समाज सुधार सम्मेलन, वेद व दर्शन सम्मेलन, एवं श्रद्धांजलि सम्मेलन और समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं के प्रधान एवं मंत्रियों की विचार संगोष्ठियां भी आयोजित की जायेंगी।

आइये ऋषिवर और आर्यसमाज के अद्यावधिकृत त्याग, तप और कार्यकलापों से समस्त मानव समाज और राष्ट्र किस प्रकार उपकृत हुआ है, उसका सबको भान कराने और उस प्रेरक इतिहास को आगे प्रगति देने के लिए हम सब अपने प्रयत्नों से प्राप्त स्वतन्त्रता की सुरक्षा एवं दलितों अस्पृश्यों एवं महिला समाज के जागरण के नूतन उपाय खोजने तथा अन्धविश्वासों के समूलोच्छेदन के लिए वर्तमान समय के अनुसार धर्म प्रचार एवं प्रसार के नूतन आयामों का निर्माण करें। कोई भी वेदानुयायी आर्य नर-नारी इसमें सम्मिलित होने तथा अपनी तन, मन, धन से आहुति अर्पित करने से वंचित न रहे।

आप भी आइये तथा अन्यों को भी साथ लाइये, तभी कुछ ऋषि ऋण चुकाने का श्रेय प्राप्त हो सकेगा।

"नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय"

छोटूसिंह एडवोकेट
स्वागताध्यक्ष

श्रीकरण शारदा
स्वागत मंत्री

तीन लाख रुपये तुरन्त अजमेर भेजिये

अजमेर में ऋषि निर्वाण शताब्दी के विशाल समारोह के सम्बन्ध में आवास, ऋषि लंगर पंडाल आदि की जिस बड़े पैमाने पर व्यवस्था की जानी है, उसकी तैयारी प्रारम्भ हो गई है। पंडाल लगाने और छोलदारियां लगाने के लिए ठेकेदारों से बातचीत चल रही है। अजमेर में और पुष्कर में धर्मशालायें, स्कूल-कालिज और होटल बुक करवाए जा रहे हैं। कुछ स्कूल-कालेज और धर्मशालायें बुक भी हो चुकी हैं। ये कार्य स्वयं में बहुत बड़े हैं और इसकी सफलता में ही समारोह की सफलता निर्भर है।

परन्तु इन सब कार्यों के लिए पैसा चाहिए। निर्वाण शताब्दी के समारोह के अवसर पर दस लाख लोगों के आने की आशा है। इसलिए उक्त सब व्यवस्थायें उतने ही बड़े पैमाने पर करनी होंगी। इन सब व्यवस्थाओं के लिए शुरू में ही तीन लाख रुपये चाहियें।

प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह कम से कम (१००) रु० अवश्य भेजे। ऋषि को दिवंगत हुए सौ वर्ष हो चुके। एक-एक वर्ष के लिए एक रु० का दान कोई बड़ी बात नहीं है।

अक्टूबर मास की समाप्ति से पहले-पहले यह तीन लाख रुपये की राशि अजमेर पहुँचनी चाहिए। हरेक आर्य को कम से कम १००) रु० और अपनी श्रद्धा के अनुसार अधिक से अधिक धन भेजने का तांता लगा देना चाहिए।

समय बहुत थोड़ा रह गया है। अपना कर्तव्य पहचानिए और तुरन्त इस पते पर धन भेजिये—ऋषि निर्वाण शताब्दी समारोह, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राजस्थान)।

कुलपति को बधाई

आर्यजगत् को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि "महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी" के अवसर पर "महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक" ने "श्रीमद्दयानन्द आर्षविद्यापीठ गुरुकुल झज्जर" की मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण करने के बाद गुरुकुल कांगड़ी अथवा अन्य किसी विश्वविद्यालय से संस्कृत एम० ए० उत्तीर्ण करने वाले विद्वान् योगस्थोंको सभी महाविद्यालयों में "संस्कृत प्राध्यापक" पद पर नियुक्ति के योग्य मान लिया है।

अभी तक केवल "कालिज शिक्षा प्रणाली" से संस्कृत एम० ए० करने वाले व्यक्ति ही इस प्रकार की नियुक्ति के लिए मान्य थे। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ "प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली" को भी मान्यता प्रदान कर विश्वविद्यालय ने अपने नाम के अनुरूप एक ऐतिहासिक एवं सराहनीय कदम उठाया है तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से पढ़ने वाले हजारों छात्रों के भविष्य को उज्ज्वल किया है।

इस महत्त्वपूर्ण निर्णय के लिए विश्वविद्यालय के योग्य कुलपति माननीय श्री हरद्वारीलाल जी आर्यजगत् एवं समस्त भारत के गुरुकुलों की ओर से कोटिशः बधाई के पात्र हैं।

कुलपति महोदय ने बहुत दिनों से चली आरही आर्यजगत् की एक उचित मांग को स्वीकार कर अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है।

सत्यवीर शास्त्री, उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय महिला महाविद्यालय, रोहतक

आवश्यक सूचना

ज्ञात हुआ है कि हरयाणा की कई आर्य समाजों तथा नगरों से निर्वाण शताब्दी के लिए वैदिक यति मण्डल के सम्बन्ध से कई महात्माओं ने बिना रसीदों के धन संग्रह किया है, अर्थात् दानियों को दान की रसीदें नहीं दी गईं, सम्भव है किसी कारण से धन संग्रह कर्त्ता रसीद बुकें प्राप्त न कर सके और जल्दी से धन संग्रह कार्य प्रारम्भ कर दिया क्योंकि समय थोड़ा था।

अब इन धन संग्रह कर्त्ताओं से मेरी प्रार्थना है कि जो धन आप लोगों ने संग्रह किया है, उस धन की सूची निर्वाण शताब्दी के अधिकारियों को अजमेर तथा हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द मठ रोहतक को और मुझे भी भेजने की कृपा करें। जिससे किसी को शंका न रहे। जो धन संग्रह किया है यदि वह अभी तक निर्वाण शताब्दी अधिकारियों को नहीं भेजा गया हो तो अब तुरन्त ही भेजने की कृपा करें।

सर्वानन्द अध्यक्ष वैदिक यति मण्डल
दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब)

हर्ष सूचना

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूज्यपाद "स्वामी ओमानन्द जी महाराज" अध्यक्ष परोपकारिणी सभा का एक आकर्षक चित्र कलैण्डर के रूप में उनके अभिनन्दन समारोह के अवसर पर प्रकाशित किया गया है। प्रत्येक आर्य संस्था एवं आर्य बन्धु के लिए यह चित्र संग्रहणीय है। चित्र का मूल्य १-५० पैसे है।

प्राप्ति स्थान :—

१) महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर। २) आर्य कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली। ३) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक। ४) आर्य संस्कृत महाविद्यालय, चरखी-दादरी। ५) कन्या गुरुकुल, पंचगांव, जि० भिवानी।

आर्य जन ! अजमेर जाने की तैयारी करें।
यह १०० वर्ष के बाद अवसर मिला है।

दशहरे पर जगदेवसिंह सिद्धांती जयन्ती समारोह

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी आर्यजगत् के प्रकाण्ड विद्वान् तथा कर्मकाण्डी पं० जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री पूर्व लोकसभा सदस्य का ८३वां जन्म दिन दशहरा पर्व पर १६ अक्तूबर ८३ रविवार को प्रातः ८ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धांती भवन में हवन यज्ञ की कार्यवाही के साथ बड़ी धूम-धाम से मनाया जायेगा।

इसी अवसर पर उनके सुयोग्य शिष्य विद्वान् पं० रघुवीरसिंह शास्त्री पूर्व उप कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार तथा परम सहयोगी प्रो० रामसिंह जी की पुण्य स्मृति दिवस का भी आयोजन किया जायेगा। इसी उपलक्ष्य में १५ अक्तूबर को सायंकाल ८ बजे विद्या सभा के तत्वाधान में महाभारत पर गोष्ठी की जावेगी, जिसमें विद्वान् महानुभाव अपने विचार रखेंगे।

आपसे निवेदन है कि दोनों कार्यक्रम में अवश्य सम्मिलित होकर अपने आर्य नेताओं को श्रद्धाञ्जलि अर्पित कीजिए।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

विजया दशमीं पर्व पर महाभारत ऐतिहासिक विषयक संगोष्ठी का आयोजन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी १५ अक्तूबर ८३ को सायंकाल ८ बजे दयानन्द मठ, रोहतक में विद्या सभा की ओर से पूज्य सिद्धांती जी की स्मृति में विजया दशमीं पर्व पर एक महाभारत साहित्य के संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। लेखक विद्वान् महानुभाव निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अपना महत्त्वपूर्ण लेख दिनांक १५-१०-८३ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

१. महाभारत और ऋषि दयानन्द। २. महाभारत कालीन हरयाणा। ३. महाभारत में नारी का स्थान। ४. महाभारत शस्त्र अस्त्र। ५. महाभारत की युद्ध पद्धति। ६. महाभारत के आख्यान। ७. महाभारत की ऐतिहासिकता। ८. महाभारत और शिक्षा पद्धति। ९. वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था और महाभारत। १०. महाभारत कालीन सभ्यता और संस्कृति। ११. वर्तमान सन्दर्भ में महाभारत की उपयोगिता। १२. महाभारत के वीर योद्धा। १३. श्री कृष्ण और महाभारत। १४. महाभारत काल में शूद्रों की अवस्था। १५. अन्य कोई महाभारत का महत्त्वपूर्ण विषय।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
संयोजक महाभारत साहित्य संगोष्ठी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ,
सिद्धांती भवन रोहतक

एक सौ एक आर्य वीरांगनायें अजमेर में सेवा के लिए तैयार

आगामी महर्षि दयानन्द निर्वाण बलिदान शताब्दी अजमेर में केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश की एक सौ एक वीरांगनायें अपनी सेवायें इस अवसर पर भेंट करेंगी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के महिला विभाग के रूप में केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् का गठन किया गया जिसकी संयोजिका ब्रह्मचारिणी रामदेवी आर्या को नियुक्त किया गया है। श्रीमती प्रेम-लीला महेन्द्रू, श्रीमती शांति देवी मलिक तथा श्रीमती सरोज दीक्षा युवती परिषद् की संरक्षक होंगी।

युवतियों की महारानी लक्ष्मीबाई विग्रेड में १६ से ४८ वर्ष की युवतियां भाग ले सकेंगी। अजमेर शताब्दी शुल्क ३१ रु० मात्र है। वेशभूषा में सफेद कमीज, सलवार, कपड़े के जूते मोजे, केसरिया चुनरी व ६ इन्च की कृपाण (कटार) शामिल है। युवती परिषद् का सदस्यता अभियान शुरू हो चुका है। योग्य युवतियां व आर्य महिलायें सम्पर्क करें।

संयोजिका	अध्यक्ष
ब्रह्मचारिणी रामदेवी आर्या,	केन्द्रीय आर्य युवती परिषद्;
२८७-डी०; कच्चा तिहाड़,	दिल्ली प्रदेश, आर्य समाज
नई दिल्ली-१८	कबीर बस्ती; दिल्ली-७

अजमेर का आह्वान

हरिदत्त वि० प्र०, बी० यू० १६० विशाखा एन्कलेव दिल्ली

बुला रहा अजमेर आर्यो ! श्रद्धा-पुष्प चढ़ाने को।
ओमानन्द ललकार रहा है आगे कदम बढ़ाने को॥
सम्वत् उन्नीस सौ चालीस में ऋषिवर का बलिदान हुआ।
इसीलिए अजमेर नगर का आर्यों में सम्मान हुआ॥
चले आ रहे सभी तरफ से आर्य शती मनाने को॥ बुला—
कृण्वन्तो विश्वमार्यम नारा गूंजे सभी दिशाओं में।
ओम् का प्यारा झंडा फिर लहराये सभी दिशाओं में।
गले लगा लो हरिजनों को छुआछूत मिटाने को॥ बुला—
शेर की भांति शेरसिंह भी शेर बना हरयाणे का।
भरतसिंह में जोश भरा है भरी बसें ले जाने का।
केदारसिंह क्यों पीछे रहता लेखक कलम उठाने को॥ बुला—
अमृतसर से; कलकत्ता से, केन्या-तांगा नोका से।
लन्दन, पेरिस, रोम, टोकियो, अरुणाचल अमरीका से।
लाखों नर-नारी पहुँचेंगे उत्सव की शान बढ़ाने को॥ बुला—
जम्मु और कश्मीर उड़ीसा पूर्व से बंगाली भी।
उत्तर-पश्चिम से गुजराती दक्षिण मलयाली भी।
कर्नाटक से चलें कोंकणी पाप की धूल उड़ाने को॥ बुला
गाजियाबाद से प्रेमानन्द जी पद-यात्रा पर निकल पड़े।
गाव शहर में धूम मचाने संन्यासी भी मचल पड़े।
राजसिंह तैयार खड़ा है, मीठी तान सुनाने को॥ बुला—
रेलें आयें; बसें भी आयें; आयें मोटर भी।
हाथी, घोड़े; ऊंट साइकिल सस्ती हों या मंहगे भी।
दिल्ली के दिलदार कहेंगे वायुयान उड़ाने को॥ बुला—
'तेरी इच्छा पूर्ण होवे खूब रची लीला प्यारे'।
शरीर जल कर भस्म हो गया; हड्डियां बन गई अंगारे।
दीवाली की शाम अंधेरी अमर-ज्योति प्रगटाने को॥ बुला—
ऋग्यजु साम अथर्व पढ़ेंगे ब्रह्मचारी प्रभुवाणी में।
नेता भी गुणगान करेंगे ऋषि का अपनी वाणी में।
'हरि' न पीछे रहे किसी से उत्सव की शान बढ़ाने॥
बुला रहा अजमेर आर्यो ! श्रद्धा-पुष्प चढ़ाने को।

नारग (हि० प्र०) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रम्या प्रकृति की गोद में स्थित हिमाचल प्रदेश के जिला सिरमौर की आर्य समाज नारग का वार्षिक उत्सव इस बार ९ सितम्बर से ११ सितम्बर तक आर्य समाज मन्दिर में बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। समाज के अधिकारियों के निमन्त्रण पर रोहतक से सर्वहितकारी साप्ताहिक के सह-सम्पादक पं० रणबीर जी शास्त्री, एम० ए०, विद्यावाचस्पति उत्सव में सम्मिलित हुये। सभा के भजनोपदेशक पं० शेरसिंह जी भी सभा की ओर से पधारे। स्थानीय विधायक तथा भूतपूर्व मन्त्री श्री गंगूराम जी भी उत्सव में सम्मिलित हुये। तीन दिन प्रचार की जो धूम मची उससे प्रभावित हो नारग आर्य समाज के अधिकारियों ने सर्वसम्मति से पास किये गये प्रस्ताव द्वारा अपनी समाज को हरयाणा सभा से सम्बद्ध करने का आग्रह सभा के अधिकारियों से किया है।

निर्मला आर्या मन्त्री
आर्य समाज नारग (हि० प्र०)

आर्य समाज मकड़ौली-कलां में शिविर सम्पन्न

आर्य समाज मकड़ौली कलां जि० रोहतक में दिनांक १७-९-८३ से २३-९-८३ तक ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर लगाया गया जिसमें श्री जयवीर व्यायामाचार्य ने छात्रों को योग-आसन-दण्ड बेठक, मल्लखम्भ, स्तूप निर्माण कुश्ती आदि अनेक प्रकार के भारतीय व्यायाम का प्रशिक्षण दिया।

शिविर के अन्तिम दिन २३-९-८३ को श्री राजकुमार आचार्य एम. ए. के पौरोहित्य में सैकड़ों युवकों को यज्ञोपवीत देकर उनको भारतीय संस्कृति और सभ्यता की रक्षा हेतु आह्वान किया। मन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की हरयाणा में धूम-धाम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान माननीय श्री प्रो० शेरसिंह जी ने प्रचार तथा धन संग्रह के लिए सारे प्रान्त का तूफानी दौरा किया सभी जिलो में उनकी प्रचार यात्रा बड़ी सफल रही, सभा की दो लाख रुपया और १०० बोरी अन्न निर्वाण शताब्दी के लिए देने की अपील का उत्साह पूर्वक स्वागत किया गया और उसे पूर्ण करने का पूर्ण आश्वासन मिला, जिसका विवरण पाठक सभा की "सर्वहितकारी" पत्रिका में पढ़ चुके हैं। हरयाणा के दो जिले रोहतक और सोनीपत बुरी तरह भंयकर बाढ़ की लपेट मे आये हुये हैं। जिधर भी देखो ग्राम तथा खेतो मे समुद्र के समान जल भरा हुआ है। यही दोनो जिले आर्य समाज की दृष्टि से बहुत उत्साही और दानी थे किन्तु इनकी दुर्दशा देखकर हरयाणा के आर्य नेता इनमें धन मांगने का साहस नहीं रखते। फिर भी सोनीपत के आर्य भाईयो ने सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी को उनकी प्रभावशाली अपील पर ११००० रु० देने का आश्वासन दिया और धन एकत्रित करने के लिए निर्वाण शताब्दी के नोट वा रसीदे ले ली। रोहतक जिले की दशा और भी अधिक खराब है। उसमें जाकर धन मांगने की हिम्मत कोई भी आर्य नेता नहीं कर सका। सबसे बड़ा दानी जिला रोहतक इस पुण्य कार्य में दान न दे सके तो सदा के लिए इस उदार प्रदेश पर इससे जो आर्य समाज के कार्यो मे अग्रगामी रहा है एक कलंक लग जायेगा इससे मुक्त करने के लिए अपने रोहतक जिले को यशस्वी बनाने के लिये स्वय और उनकी धर्मपत्नी प० प्रभात शोभा ने ५२०० रु० सर्वप्रथम दान देकर रोहतक जिले का सिर ऊंचा किया और स्वामी ओमानन्द जी प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर जिनका कार्य क्षेत्र सारा हरयाणा है किन्तु इस जिले के प्रमुख गुरुकुल झज्जर की सेवा वे ४० वर्ष से भी अधिक समय से कर रहे हैं उन्होने परोपकारिणी सभा के प्रधान बनने से पहले ही भव्य यज्ञशाला के निर्माणार्थ ११११ रु० सर्व प्रथम प्रदान किये। आज वह यज्ञशाला लगभग चार लाख रुपये की लागत से पूर्णतया बन चुकी है, स्वामी जी महाराज की प्रेरणा से ही इसमें चतुर्वेद पारायण महायज्ञ ६ अक्टूबर से पूज्यपाद महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी की देख-रेख मे आरम्भ हो चुका है। अर्थात् वे इस महान् यज्ञ के ब्रह्मापद को सुशोभित कर रहे हैं जिसकी पूर्णाहुति ६ नवम्बर को होगी। इस पूर्णाहुति पर यज्ञ प्रसाद बांटने के लिये हरयाणा के दानी सेठ रूलियाराम जी कुरुक्षेत्र ने ११०० रु० दान किया है। आर्य यति मण्डल जिस के प्रधान पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज (हरयाणा के ही हैं) जो श्रद्धेय आचार्य प्रवर प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज के योग्यतम शिष्यों में से एक हैं।

उन्होने दयानन्द मठ दीनानगर की ओर से ५१०० रु० निर्वाण शताब्दी के लिए प्रदान करने की कृपा की, इन्ही से प्रेरणा पाकर स्वामी ओमानन्द जी आचार्य गुरुकुल झज्जर ने ५१११ रु० दान देकर अपना कर्त्तव्य निभाया। आर्य समाज के सभी साधु महात्माओं का यही स्वभाव है कि वे पहले स्वयं दान देते हैं फिर सबको दान देने की प्रेरणा देते हैं। प्रो० शेरसिंह जी कार्यकर्त्ता प्रधान परोपकारिणी सभा; इस समारोह को सफल बनाने के लिये जुटे हुये हैं। किन्तु अस्वस्थ होते हुए भी स्वामी ओमानन्द जी के लिए ऐसे अवसर पर बैठे रहना असम्भव नही तो अत्यन्त कठीन है। अतः अपने ब्रह्मचारियो के साथ १० धन संग्रहार्थ अपनी यात्रा आरम्भ कर दी, उन्होने सर्व प्रथम झज्जर जाना ही आवश्यक समझा। वैसे तो दिल्ली से झज्जर का मार्ग बाढ़ के कारण सर्वथा बन्द था। अत वे दिल्ली से नजबगढ़ होते हुये बादली के मार्ग से चक्कर काटकर झज्जर पहुंचे, मार्ग मे नजबगढ़ के आर्य भाईयो से मिले, वहां के उत्साही आर्य समाज के कार्यकर्त्ता श्री धमवीर आर्य व मा० अभयराम को शताब्दी के छपे हुए नोट दिये, इन उत्साही आर्य वीरो ने अपने क्षेत्र से ५१०० रु० एकत्रित करके देने का आश्वासन दिया, मार्ग मे जो आर्य भाई यात्रा मे मिलते रहे सबसे ही दान मांगने का प्रयास किया, ईशापुर, बादली, झज्जर और सिलानी जिला रोहतक से जो दान मिला वह इस प्रकार है—

ईशापुर—महाशय कृष्ण जी १०१ रु०, इनके द्वारा नांगलोई ८८ रु. रणधीर शास्त्री (पौली) १०१ रु०, मा० कप्तानसिंह जी आर्य माजरी (रोहतक) १०१ रु०, बादली से—म० रणसिंह व हरपाल जी द्वारा ४७७ रु०, झज्जर से—डा० कृष्ण जी (यज्ञ मण्डल) १०१ रु०, वैद्य मोहर सिंह आर्य १०१ रु०, वैद्य सुकर्मपाल आर्य १०१ रु०, श्री सत्यपाल जी ठेकेदार १०१ रु०, सिलानी से प्राप्त धन—श्री मनफूलसिंह वकील २०१ रु०, मा० महेन्द्र सु० शोशराम १०१ रु०, ओमप्रकाश १०१ रु०, टेकराम सु० मोजीराम १०१ रु०, रामफल सु० दुलीचन्द १०१ रु०, भीमसिंह १०१ रु०, सरदारसिंह १०१ रु०, बनीसिंह १०१ रु०, सिलानी (रोहतक से)—मा० मांगेराम व बहन सावित्री १०१ रु०, पहलवान कवंलसिंह १०१ रु०, चौ० कांशीराम १०१ रु०, चौ० हरीचन्द १०१ रु०, सरपंच जीतसिंह २०१ रु०, नफेसिंह ५१ रु०, जगदेवसिंह ५१ रु०, श्री सुरतसिंह व रामसिंह ५१ रु०, श्री तेजसिंह १०१ रु०, श्री हुक्म चन्द ५१ रु०, श्री दलात ५१ रु०, श्री धर्मवीर ५१ रु०, श्री सूबेसिंह सु० लखीराम ५१ रु०, श्री रामस्वरूप १०१ रु०,।

रमवीर शास्त्री

भूल सुधार

सर्वहितकारी के १८-८-८३ के अंक में आर्य समाज नागोरी गेट हिसार के अभिनन्द हेतु दान सूची में १५० रु० के स्थान पर २५१ रु० तथा प्रो० ओ० पी० दूहन गवर्नमैंट कालेज हिसार १०१ रु० के स्थान पर ५१ रु० पढ़ने चाहिए। सत्यवीर शास्त्री सभा उपमन्त्री

शोक समाचार

ग्राम कांसनी जि० रोहतक के श्री महाशय तेजराम जी का १६ अगस्त को देहान्त हो गया। महाशय जी गुरुकुल के हितैषी और आर्य समाज के कर्मठ व्यक्ति थे, परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

महाशय फतेहसिंह, गुरुकुल झज्जर

शनिवार ५ नवम्बर, १९८३

चतुर्वेदपारायण यज्ञ—प्रातः ६ बजे से ९ बजे तक
सांय ३ बजे से ६ बजे तक

प्रातःसंगीत—यज्ञ स्थली में—१. श्री ओमप्रकाश वर्मा, जगाधरी (हरयाणा)
२. श्री बेगराज, गाजियाबाद (उ० प्र०)

वेद प्रवचन—प्रातः ९-३० बजे से १०-१५ बजे तक
स्वामी ओमानन्द जी महाराज

शोभायात्रा—अजमेर नगरी में ११ बजे प्रातः
संचालक—श्री रामनाथ सहगल, दिल्ली, श्री सरदारी लाल वर्मा, दिल्ली, श्री सत्यानन्द मुंजाल, लुधियाना,

शोभायात्रा समापन—उद्बोधन—१. श्री बालदिवाकर हंस,
२ ब्र० राजसिंह आर्य,

सत्कार सम्मान समारोह

५ नवम्बर १९८३, डी० ए० वी० कालेज अजमेर के व्याख्यान भवन में

मुख्य अतिथि—श्री प्रकाश चन्द सेठी, गृह मन्त्री भारत
अध्यक्ष—श्री धर्मवीर (भूतपूर्व राज्यपाल)
समय ५ बजे से ६ बजे तक

१. भारतेतर देशों के कतिपय विशिष्ट व्यक्तियों को उनकी सेवाओं के उपलक्ष्य में "आर्यरत्न" उपाधि और ताम्रपत्र
२. विशिष्ट विद्वानों को राय बहादुर चौ० नारायणसिंह प्रतापसिंह शताब्दी पुरस्कार।
३. विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय मनीषा को गौरवान्वित करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों को शताब्दी स्वर्णपदक
४. कतिपय विद्वानों की साहित्य सेवा के निमित्त चौ० प्रतापसिंह न्यास द्वारा सम्मान और भेंट।
५. आर्य साहित्य के प्रकाशकों को सम्मान सहित प्रमाणपत्र
६. जलपान (विशेष आमन्त्रित व्यक्तियों को ही)

संयोजक रा० सा० चौ० प्रताप सिंह जी

स्वामी सर्वानन्द	स्वामी ओमानन्द	स्वामी सत्यप्रकाश
अध्यक्ष	अध्यक्ष	संयोजक—अधिष्ठाता
यति मण्डल	परोपकारिणी सभा	शताब्दी समारोह

रात्रि— संगीत—श्री विजय भूषण और श्रीमती सुषमा कुलाची हंसराज माडल स्कूल, दिल्ली

शिक्षा सम्मेलन—७-३० बजे से १० बजे तक
संयोजक—प्रिंसिपल श्री कृष्णसिंह आर्य चण्डीगढ
मुख्य अतिथि—श्री हरिकिशन लाल भगत
सूचना एवं प्रसारण मन्त्री भारत सरकार
अध्यक्ष—प्रो० वेद व्यास जी, प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा, दिल्ली
उद्घाटन—श्री दत्तात्रेय आर्य, अजमेर

१. श्री टी० एन० चतुर्वेदी, गृह सचिव भारत सरकार 'शिक्षा और सफल जीवन'
२. श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री,—'गुरुकुलों का महत्त्व'
३. श्री देवराज गुप्त, शोलापुर 'स्नातकोत्तर शिक्षा प्रणाली'
४. प्रिं० तिलकराज गुप्त, दिल्ली माध्यमिक शिक्षा प्रणाली
५. श्री दरबारी लाल, दिल्ली 'डी० ए० वी० कालेज आन्दोलन की प्रगति'
६. प्रो० कैलाश नाथ, लखनऊ, 'शिक्षा और नैतिकता'
७. प्रो० विजयेन्द्र स्नातक, 'शिक्षा और मौलिक चिन्तन'
८. डा० प्रज्ञादेवी; वाराणसी, 'शिक्षा में संस्कृत का स्थान'
९. श्री आनन्दप्रिय जी, बड़ौदा, 'शिक्षा में कला का स्थान'
१०. श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, 'शिक्षा का उद्देश्य'
११. श्री रमेश जीवन, कांगड़ा, 'पहाड़ी प्रदेशों में शिक्षा की समस्या'

रविवार ६ नवम्बर, १९८३

यज्ञस्थली में—चतुर्वेद पारायण यज्ञ—प्रातः ६ बजे से ९ बजे तक
पूर्णाहुति प्रातः ९ बजे से १० बजे तक
सामूहिक यज्ञोपवीत, वानप्रस्थ एवं संन्यास की दीक्षा
संगीत—१. श्री इन्द्रसेन जी विश्वप्रेमी, गाजियाबाद (उ० प्र०)
२. श्री शोभाराम जी प्रेमी, मेरठ

वेद प्रवचन—महात्मा आर्य भिक्षु जी, ज्वालापुर
प्रातः १० बजे से ११-१५ बजे तक

समारोह पडाल में संगीत—श्री वीरेन्द्र जी की मण्डली, शामली (उ०प्र०)

सामाजिक क्रांति सम्मेलन

दोपहर ११-३० से १-१५ बजे तक
अध्यक्ष—श्री पृथ्वीसिंह आजाद (पंजाब)

संयोजक—महात्मा आनन्द मुनि जी, (श्री शेषराव वाघमारे, मराठवाड़ा)
उद्घाटन भाषण—चौ० चरण सिंह जी,
(भूतपूर्व अध्यक्ष परोपकारिणी सभा)

वक्ता—१. श्री वीरेन्द्र जी (जालन्धर) 'आर्यसमाज द्वारा सामाजिक क्रांति'
२. श्री राजगुरु शर्मा (महू)—'गौरक्षा और आर्य समाज'
३. श्री इन्द्रराज जी (मेरठ) संस्कारों का महत्त्व'
४. श्री जगप्रकाश जी, (भू० पू० इमाम, बेतिया) 'वैदिक धर्म की श्रेष्ठता'
५. श्री अमरेश जी (भू० पू० इमाम मद्रास) 'वैदिक धर्म और इस्लाम)
३. डा० मित्रजीवन जी, बम्बई, 'वेदोद्धारक ऋषि दयानन्द'
७. श्री चिंतामणि आर्य, दिल्ली 'आर्य समाज और दलितोद्धार'
८. श्री मामचन्द रिवारिया, दिल्ली 'जाति-भेद जन्म-भेद पाप है'

मध्यान्होत्तर—उद्बोधन संगीत—२-३० से ३-३० बजे तक
(विभिन्न भाषाओं में) संस्कृत, गुजराती, मराठी, राजस्थानी, उड़िया, बंगाली, तमिल, हिन्दी।

खुला अधिवेशन—३-३० से ५-३० तक

विषय—आगामी १०० वर्षों में आर्यसमाज का कार्यक्रम

संयोजक—प्रि० मोहन लाल, दिल्ली
प्रमुख वक्ता—१. डा० सत्यकेतु विद्यालंकार २ श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम
३. प्रो० बलराज मधोक ४ पं० बनारसीदास चतुर्वेदी
प्रमुख पत्र पाठ—श्री बाबूराव वाघमारे, महाराष्ट्र
प्रमुख उद्बोधन—लाला रामगोपाल शालवाले
(प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
विश्व शांति संदेश—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आ० प्र० नि० सभा हरयाणा
आशीर्वचन—स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, दीनानगर पंजाब
समापन भाषण—स्वामी ओमानन्द सरस्वती
धन्यवाद ज्ञापन—श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट;
श्री ओंकरण शारदा 'शान्ति पाठ'

नोट—१- प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह और विदेश मन्त्री श्री वी० पी० नरसिंह राव की अन्तिम स्वीकृति अभी शेष है। भारत के उपराष्ट्रपति श्री हिदायतुल्ला राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माथुर, शिक्षा मन्त्री श्री० कमला शर्मा, हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल; और उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री श्रीपती मिश्र आदि राष्ट्रीय नेताओं की अन्तिम स्वीकृति अभी शेष है। पुनः प्रकाशित की जावेगी।

२. कार्यक्रम मे आवश्यकतानुसार परिवर्तन सम्भव है।

श्री करणशारदा
मन्त्री : महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह

आर्यसमाजों को आवश्यक सूचना

अजमेर जाने के लिए हरयाणा रोड़वेज की १०० बसें स्वीकार

हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल जी ने सभा की मांग पर अजमेर शताब्दी समारोह में जाने वाले यात्रियों के लिए हरयाणा रोड़वेज की सौ बसें रियायती किराये पर देना स्वीकार कर लिया है। जो आर्यसमाजें तथा अन्य यात्री अपने नगर से बसें ले जाना चाहती हों वे तुरन्त सभा कार्यालय रोहतक से सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के लिए दान

आर्य समाज सोनीपत नगर	३५६२)
आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल, सिरसा	५०१)
श्री पृथ्वीसिंह आर्य मदाना, जि० रोहतक	१०१)
मा० लालमणि आर्य प्रधान आर्यसमाज सुखपुरा, रोहतक	१०१
श्री सत्यदेव शास्त्री टटेसर, दिल्ली	१०१)
श्री धर्मदेव आर्य टटेसर, दिल्ली	१०१)
श्री महेन्द्रसिंह आर्य, प्रधान आर्य समाज झील, जि० जीन्द	१००)

जिन आर्यसमाजों को सभा की ओर से शताब्दी के नोट दिए गए हैं, उनसे निवेदन है कि धन संग्रह करके तुरन्त सभा कार्यालय में भेज देवें ताकि प्राप्त राशि तथा कूपन हिसाब सहित अजमेर भेजा जा सके।

—सभामन्त्री

शताब्दी समारोह में सहायकों के प्रति निवेदन

शताब्दी समारोह में सहायता करने के लिए स्थान-स्थान पर सज्जन अपना योगदान कर रहे हैं। इस सहयोग में दानदाता और संग्रहकर्ता दोनों ही हैं। शताब्दी समय में थोड़ा समय रह गया है। सभी कार्य अर्थ-साध्य हैं। १८ सितम्बर की बैठक में अनेक समितियां समारोह को सफल बनाने के लिए गठित की गई। प्रत्येक समिति अपने रूप में पूर्ण है और आवश्यक है। जब कुछ समितियों के कार्य का विवरण सुनाया गया, तो उसके लिए पर्याप्त राशि के संचय की आवश्यकता प्रतीत हुई।

अतः दानदाता जो भी दान देना अभीष्ट समझते हैं, शीघ्र देते जावें। अपना दान संग्रहकर्ता को देवें (जिनके पास दयानन्द आश्रम केसरगंज अजमेर की रसीद है) या सीधे ही यहां कार्यालय में भेजें।

संग्रह करने वालों से भी निवेदन है कि वे संगृहित राशि साथ-साथ भेजते रहें, जिससे यहां प्रणीत समितियां अपना काम सुचारु रूप से करने में सफल हों, और अपनी समस्त रसीद बुकें २१ अक्टूबर तक जिनसे ली हैं, उन्हें धन राशि के साथ वापिस लौटा दें जिससे उनका उत्तरदायित्व समाप्त हो जावे। हरयाणा सभा का कार्यालय २१ अक्टूबर को अजमेर पहुंच रहा है। इस प्रकार हरयाणा की आर्य जनता की राशि रसीद बुकों सहित अजमेर आ सकती है।

मैं यहां कार्यालय में यतिमण्डल के प्रतिनिधि रूप में आया हूं। एक सूचना परोपकारी में निकल गई कि समारोह पर शुभागमन करने वाले बस यात्री और रेल यात्री अपने साथ आटा-दाल-चावल इत्यादि लेते आवें जो व्यावहारिक सिद्ध नहीं हुई। यदि यह खाद्य सामग्री पहले पहुंच जाती है तो उसका उपयोग सम्भव है।

वेदानन्द वेदवागीश (यतिमण्डल)
महर्षि दयानन्द निर्वाण सताब्दी समारोह कार्यालय, अजमेर

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि०नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,६६,०८५३,०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ४३ २१ अक्टूबर १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा की जनता भारी संख्या में अजमेर पहुंचने की तैयारी में

सर्वत्र उत्साह की लहर, स्थान-स्थान पर स्वामी ओमानन्द जी तथा प्रो. शेरसिंह को शताब्दी समारोह के लिए थैलियां भेंट

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के लिए हरयाणा की जनता में सर्वत्र उत्साह की लहर फैल रही है। शताब्दी समारोह के अध्यक्ष श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी समारोह की तैयारी के लिए जहाँ-जहां भी पधारे वहां आर्य जनता ने उदारतापूर्वक उनका स्वागत किया तथा थैलियां भी भेण्ट की हैं। हरयाणा के लगभग प्रत्येक बड़े नगर से एक-एक या दो-दो स्पेशल बसें भी ले जाने की तैयरी हो रही है।

स्वामी ओमानन्द जी अस्वस्थ होते हुए भी अपनी नई जीप द्वारा नगरों तथा ग्रामों का भ्रमण कर रहे हैं। उन द्वारा सग्रह की गई धन राशि का विवरण सर्वहितकारी के अन्दर के पृष्ठो में प्रकाशित किया जा रहा है।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा सभा मन्त्री म० भरतसिंह जी वानप्रस्थ ने १२ से १४ अक्तूबर तक हरयाणा का पुन. भ्रमण किया है। सभा के दोनों अधिकारियों ने १२ अक्तूबर को प्रात- - बजे सभा कार्यालय दयानन्द मठ, रोहतक से मास्टर दीपचन्द आर्य तथा आचार्य राजकुमार शास्त्री के साथ कार द्वारा प्रस्थान किया। ८-३० बजे आर्य समाज महम में पधारे। जहां आर्य समाज के मन्त्री श्री रतनप्रकाश आर्य ने अपने अन्य अधिकारियों के साथ सभा अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया और शताब्दी समारोह के नोट प्राप्त करके धन शीघ्र ही भेजने का वचन दिया। यहां से एक मैटाडोर द्वारा अजमेर जा रहे हैं। महम के पश्चात् सभा अधिकारी आर्य समाज हाँसी पहुँचे। यहां भी स्थानीय आर्य समाज के अधिकारियों ने विश्वास दिलाया कि एक बस अजमेर ले जावेंगे। धन संग्रह करके नई दिल्ली के उप कार्यालय मन्दिर मार्ग में भेज दिया है। इसके अतिरिक्त भी धन संग्रह करके सभा को भेजा जावेगा। हांसी के पश्चात् हिसार गये और छाजूराम जाट कालेज हिसार से सभा के उप मन्त्री प्रो. सत्यवीरसिंह विद्यालंकार को अपने साथ लेकर १ बजे के लगभग आर्य समाज मन्दिर सिरसा पधारे। जहां आर्य समाज सिरसा तथा आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल के अधिकारियों श्री डा० आर० एस० सांगवान, प्रि० नित्यानन्द जी, श्री बलदेवसिंह आर्य, श्री द्वारका प्रसाद गोयल, चौ० मनफूलसिंह, श्री नौरंगसिंह एडवोकेट आदि ने सभा अधिकारियों का पुरजोश स्वागत किया। चौ० मनफूलसिंह जी के निवास पर भोजन करने के उपरान्त नगर के प्रसिद्ध ७, ८ उद्योगपतियों के पास धन सग्रह के लिए गये। सभी ने ५०१ रु० से लेकर ११०० रु० तक उदारता पूर्वक दान दिया। डा० आर० एस० सांगवान ने ११०० रु०, श्री द्वारका प्रसाद गोयल ने ११०० रु०, श्री नन्दलाल गनेरी वाले ने ११०० रु० आदि ने भी इस अवसर पर अपना योगदान दिया। रात्रि को डा० आर० एस० सांगवान के निवास पर भोजन तथा निवास किया। यहां से भी एक बस अजमेर जा रही है।

१३-१०-८३ को प्रात: सिरसा से सभा अधिकारी प्रो० शेरसिंह जी, सभा मन्त्री म० भरतसिंह जी तथा सभा उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर सिंह विद्यालकार सहित आर्य समाज फतेहाबाद पधारे। आर्य समाज के अधिकारियो ने स्नेहपूर्वक स्वागत किया तथा शताब्दी के लिए ३१०० रु० सग्रह करके भेजने की घोषणा की। यहां से भी २ मैटाडोर अजमेर जा रही हैं। फतेहाबाद के पश्चात् ११ बजे के लगभग छाजूराम जाट शिक्षण महाविद्यालय हिसार पहुंचे। महा विद्यालय के प्राचार्य श्री कर्णसिंह काद्यान ने स्टाफ के साथ सभा अधिकारियो का हार्दिक स्वागत करते हुए ५१०० रु० धन सग्रह करके भेजने का वचन दिया। इसी प्रकार दयानन्द महा विद्यालय, हिसार मे भी अधिकारियों का स्वागत किया गया। प्रिंसिपल महोदय ने बताया कि यहां से धन सग्रह करके पूर्व दिल्ली कार्यालय भेज दिया गया है इसके अतिरिक्त और भी शताब्दी नोटो से धन सग्रह करके भेजा जावेगा। इसके पश्चात् दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार के आचार्य प० सत्यप्रिय जी के साथ १-३० बजे आर्य नागोरी गेट, हिसार पधारे। श्री आर० टी० गुलाटी प्रधान, श्री रविदत्त शास्त्री मन्त्री तथा सेठ रामधारी ने वचन दिया कि ५१०० रु० सग्रह करके शीघ्र भेजे जावेगे। इसके पश्चात सभा अधिकारियो का आर्य स्त्री समाज दयानन्द भवन हिसार में भी स्वागत किया गया। बहन राजकुमारी ने बताया कि ५०१ रु० पूर्व भेज दिया गया है और ५०१ रु० सभा प्रधान जी को उसी समय भेण्ट किया। इस प्रकार हिसार नगर की आर्य सस्थाओं की ओर से २१ हजार रुपया समारोह के लिए भेजा जावेगा। यहां से दो बस भी अजमेर जा रही है।

हिसार के पश्चात् सभा अधिकारी आर्य समाज टोहाना पहूंचे। डा. राम नारायण जी ढींगरा प्रधान आर्य समाज ने अपने आर्य सभासदों सहित उत्साह पूर्वक स्वागत किया। शताब्दी समारोह के लिए सभा प्रधान जी को ११०० रु० की थली भेण्ट की। यहां से पूर्व भी धन सग्रह करके भेजा गया है। एक बस भी अजमेर जावेगी।

टोहाना के बाद सभा अधिकारी महोदय ६ बजे आर्य समाज मन्दिर थानेसर पधारे। यहां काफी समय से आर्य समाज के कार्यकर्त्ता प्रतीक्षा कर रहे थे। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के उपाचार्य श्री देवव्रत जी, वेद प्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र के सघठन मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी, श्री रुलिया राम आर्य, श्री कृष्ण लाल वधवा आदि ने कुरुक्षेत्र से १० हजार रुपया भेजने की घोषणा की। श्री रुलिया राम जी ने शताब्दी समारोह के अवसर पर यज्ञ की पूर्णाहूति पर ५१२१ रु० का प्रसाद वितरण के लिए भेण्ट किया। शेष राशि शीघ्र भेज दी जावेगी। १४-१०-८३ को प्रातः महाशय भरतसिह सभा मन्त्री स्थानीय दयानन्द महिला महा विद्यालय कुरुक्षेत्र पधारे। वहां महा विद्यालय के अधिकारियों तथा स्टाफ ने स्वागत करते हुए आश्वासन दिया कि धन भी संग्रह करके भेजा जावेगा और विद्यालय से भी एक बस अजमेर जावेगी।

अजमेर चलो   अजमेर चलो   अजमेर चलो

क्या देखें ?   सुनो

(आचार्य विश्वश्रवा : व्यास एम० ए० वेदाचार्य बरेली)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के अन्तरंग अधिवेशन दिनांक २५-९-८३ पर महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह जी के अवसर पर उद्बोधन भाषण

प्रिय आर्य बन्धुओ ! महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह अजमेर ३ से ६ नवम्बर १९८३ पर अजमेर चलो। वहां आपको महर्षि के कुछ स्मरणीय दृश्य देखने को मिलेंगे।

१- सर्वप्रथम जब आप बस या रेल द्वारा अजमेर नगरी में प्रवेश करेंगे तब आपको स्मरण आयेगा कि मेरे महर्षि जोधपुर में विष देने के बाद आबू रहकर इस नगरी में अपने जीवन की अन्तिम घड़ियां पूरी करने आये थे।

२- कुछ आगे बढ़ने पर आपको भिनाय कोठी नजर आवेगी जिस में महर्षि ने अपना अन्तिम श्वास लेकर मोक्ष को प्रयाण कर दिया। उपस्थित जन देखते हाथ मसलते रह गये। वह पलंग जिस पर महर्षि अन्तिम समय रहे, अभी वैसा ही सुरक्षित रखा है तथा अन्य सामान भी।

३- वहां तुम्हें कुछ महर्षि की प्रयोग की हुई वस्तुएं देखने को मिलेंगी। किसी समय सारा सामान पृथ्वी में सुरक्षित गाड़ दिया गया था। फिर दीवान बहादुर हर विलास शारदा ने उसे निकलवाया। इस सबको विशेष रूप से चार व्यक्ति जानते रहे। दो का स्वर्गवास हो गया। श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु और पं० भगवतदत्त रिसर्च स्कालर। हम दो व्यक्ति अभी जीवित हैं पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक और मैं आचार्य विश्वश्रवा व्यास।

४- फिर आगे बढ़ने पर तुम्हें वह स्थान मिलेगा जहां अनासागर पर स्थित उद्यान में महर्षि की अस्थियां सिराई गईं। वहां नव निर्मित यज्ञशाला में यज्ञ हो रहा होगा।

५- महर्षि की प्रयोग की हुई वस्तुओं में सर्वप्रथम महर्षि की खड़ाऊं देखें जो छोटे साइज की है। जिससे प्रतीत होता है कि मेरे महर्षि के पैर छोटे थे। बड़े आदमी के लक्षणों में एक यह भी लक्षण है कि पैर छोटे हों।

कहावत है कि :—

"सर बड़ा सरदार का, पैर बड़े गंवार के"

वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर डा० मंगलदेव जी शास्त्री को जब मैंने वे खड़ाऊं दिखाई तो उन्होंने उन खड़ाऊंओं को अपने सिर पर रखा और कहा कि इस पर महर्षि के पैर रखे जाते होंगे, फिर कुछ देर भाव विभोर होकर रोते ही रहे। महर्षि के वस्त्रों को देखने से प्रतीत होता है कि उनकी भुजाएं लम्बी थीं। भगवान् राम के बारे में बाल्मिकी रामायण में लिखा है कि राम—"आजानु बाहुः" थे अर्थात् राम की भुजायें उनके घुटनों तक लम्बी थीं। ठीक उसी प्रकार के महर्षि के भी भुजदण्ड रहे होंगे।

६- महर्षि के समय जिस प्रकार की धूप घड़ियां हुआ करती थीं, महर्षि जिसके द्वारा समय का ज्ञान करते थे, वह भी सुरक्षित है।

७- महर्षि के प्रयोग किये पात्र; कमण्डल आदि तथा वस्त्रादि दुशाले प्रभृति वहां प्रदर्शनी में देखने को मिलेंगे।

८- महर्षि ने जो वेद-भाष्य आदि ग्रन्थ लिखाये थे उनकी तीन तीन प्रतियां महर्षि के हाथों से शोधी हुई वहां आप जाकर देखेंगे। महर्षि ग्रन्थ या वेद-भाष्य लिखाते थे, फिर उसको अपने हाथ से शुद्ध करते थे। फिर लिखा जाता था। दुबारा तिबारा फिर महर्षि स्वयं देखकर शुद्ध करते थे। परोपकारिणी सभा ने इनकी रक्षा तीन प्रकार से की है :—

१- सबके फोटो करा के। २- सबकी फिल्म बनाकर। ३- फिर उन असली कागजों पर भी औषध लगाकर सुरक्षित किया गया है।

९- महर्षि के लगभग २६ छोटे बड़े ग्रन्थ ऐसे हैं जो अभी एक बार भी नहीं छपे, जो इस शताब्दी को मनाकर प्रकाशित किये जावेंगे। धनिक वर्ग एक-एक ग्रन्थ छपने मे सहयोग देवें।

१०- महर्षि की संस्कृत में लिखी डायरी देखें जिसमें सर्वप्रथम उन्होंने लिखा है कि एक-एक वेद पर भाष्य करने में सौ-सौ वर्ष लगेंगे, जो मैं करूंगा। फिर उनको पता चल गया कि मेरी आयु सौ वर्ष भी नहीं है। तब उन्होंने लिखा। महर्षि के भक्तो ! यह सब तुम्हें अजमेर निर्वाण शताब्दी पर देखने को मिलेगा। अतः सब काम छोड़कर

अजमेर चलो ! अजमेर चलो !! अजमेर चलो !!!

नोट—यह स्मरण रहे कि उन बाल ब्रह्मचारी की चार सौ वर्ष की आयु होती है जिसका अगला जन्म होता है। पर जिसका अन्तिम जन्म होता है वह कर्म समाप्त होने पर मोक्ष पाता है। उसकी आयु चार सौ वर्ष नहीं हो सकती। महर्षि ने अपने एक पत्र में ऐसा लिखा है कि मुझे मोक्ष प्राप्त हो चुका है, तुम्हारे कल्याण के लिए कुछ दिन यात्रा और है।

आर्य जगत् के समस्त विद्वानो ! निर्वाण शताब्दी पर

अजमेर पहुंचो

"सप्तर्षि मण्डल की स्थापना"

आर्य विद्वान् इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि उन्हें बुलाया गया है या नहीं। बन्धुओ ! यह एक मेला है। निमन्त्रण की प्रतीक्षा मत करो। देश-देशान्तर के आर्य विद्वान् ३ नवम्बर से ६ नवम्बर अजमेर पहुंच रहे हैं, आप सब भी पहुंचें। सब मिलकर वहां हम लोग कुछ स्थाई विचार करेंगे, वह यह है कि—

१. महर्षि को जब यह पता चल गया कि अब शरीर छूटने वाला है, तब हजारों आर्य समाजों के होते हुए भी उन्होंने अपनी स्थानापन्न और उत्तराधिकारी २३ स्थायी व्यक्तियों की परोपकारिणी सभा की स्थापना कर दी।

२. संसार की सब धार्मिक संस्थाओं का संचालन उनके द्वारा होता है जो उस धर्म के सर्वोच्चकोटि के विद्वान् होते हैं। जैन शास्त्रों का सर्वोच्च विद्वान् जैन गुरु जैन धर्म का संचालक। इसी प्रकार बौद्धों में; इस्लाम तथा ईसाइयों के द्वारा भी यही प्रकार है।

३. आर्य समाज के पिछले सौ वर्षों में आर्य समाज का संचालन जिस प्रकार हुआ उसको भी आर्य विद्वान् पूर्ण रीति से जानते हैं।

४. दिवाली पर महर्षि को मोक्ष पधारे सौ वर्ष पूरे होकर अगली शताब्दी के लिए विचार करें।

५. मौत झाड़ू देकर लगभग सब आर्य विद्वान् उठा लिये हैं। आज नहीं हैं महर्षि के शिष्य पं० भीमसेन शर्मा इटावा निवासी। दिवंगत हो गये पं० शिवशंकर काव्यतीर्थ, म० म० आर्य मुनि और पं० राजाराम शास्त्री, पं० चमूपति आदि। मौत ने नहीं छोड़ा आदित्य ब्रह्मचारी तपोमूर्ति पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु और पं. भगवत्त दत्त रिसर्च स्कालर, लाहौर को। आज नहीं दिखाई दे रहे हैं। अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, स्वामी वेदानन्द तीर्थ, पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय। नहीं आज ढूंढे मिल सकते हैं पं० ब्रह्म मुनि परिव्राजक, पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, वैदिक मुनि, पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार, ब्रह्मचारी अखिलानन्द, स्वामी व्रतानन्द, त्यागानन्द—कुलपति। उठ गये वेद भाष्यकार पं० जयदेव विद्यालंकार; पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी, स्वामी तुलसी राम आदि। आज नहीं हैं महर्षि के ग्रन्थों के भाष्यकार पं० भीमसेन आगरा वाले और उनके पुत्र हरिदत्त शास्त्री पं० देवदत्त शर्मा उपाध्याय। यह बड़ी लम्बी श्रृंखला है, यमराज की कृति की।

(शेष पृष्ट ८ पर)

हरयाणा का आर्य समाज

(प० शान्तिप्रकाश, ४१३, बरकत कालोनी, जयपुर)

हरयाणा प्रान्त आर्यों की वीर भूमि है। सर्वखाप पंचायत के द्वारा प्रकाशित लेखों से हरयाणा की बहुत बड़ी महत्ता प्रगट होती है। आर्यसमाज का क्रियात्मक जीवन हरयाणा में सबसे अधिक उज्ज्वल हुआ है।

हैदराबाद के बलिदानों के लिये हरयाणा ही सर्वोच्च है। हिन्दी सत्याग्रह में शहीद सुमेर सिंह का बहुत बड़ा बलिदान हुआ।

वैदिक धर्म प्रचार के लिये सबसे अधिक योगदान हरयाणा का है। दादा बस्तीराम, दादा शिवनारायण आदि सैंकड़ों उपदेशकों, प्रचारकों ने रक्त की अन्तिम बिन्दु तक वैदिक धर्म व प्रचार में अपनी पूर्ण शक्ति लगाकर आत्माहुतियां दी हैं। पूज्य पं० जगदेवसिंह सिद्धांती ने समस्त जीवन वैदिक धर्म के लिये होम दिया। पं० रघुवीर सिंह शास्त्री की सेवाओं को कौन भुला सकता है?

पूज्य श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज अपना सर्वस्व आर्य समाज के लिये न्योछावर कर रहे हैं। रात दिन, उठते बैठते, सोते जागते सारा समय उनका आर्य समाज के लिये ही समर्पित हैं।

चौधरी शेरसिंह, म० भरतसिंह जी वानप्रस्थ निष्काम भाव से कार्य किये जा रहे हैं। उन सब को विश्राम के लिये समय कहां मिलता होगा? हरयाणा में अब तो सहस्रों विद्वान् और कार्यकर्त्ता ऋषि मिशन प्रसारार्थ तन-मन-धन लुटाये जा रहे हैं।

पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी हरयाणा के लिये सब कुछ थे। अब पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी उसी मार्ग को प्रशस्त करने में जुटे हैं। सैंकड़ों पुराने और नूतन संन्यासी महात्मा, तथा गृहस्थ विद्वान् इस वीर भू को सशक्त करने में भागीदार हैं। हरयाणा के हर गांव और नगर में वैदिक नाद अहर्निश गुंजरित हो रहा है। सर्वहितकारी के माध्यम से इस वीर भूमि को सहस्रशः धन्यवाद!

महाभारत साहित्य गोष्ठी तथा श्री सिद्धांती की ८३वीं जयन्ती सम्पन्न

१५ अक्टूबर को रात्रि ८ बजे दयानन्दमठ रोहतक में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में महाभारत पर एक साहित्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें पं० सुखदेव शास्त्री, आचार्य दयानन्द जी, पं० रणबीर शास्त्री, प्रो० सत्यवीर शास्त्री, डा० रणजीत सिंह ने विद्वतापूर्ण लेख पढ़कर सुनाये तथा डा० सुदर्शनदेव आचार्य, आचार्य वेदव्रत शास्त्री तथा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने महाभारत पर ओजस्वी व्याख्यान दिये।

१६ अक्टूबर को प्रातः ९ बजे यज्ञ के पश्चात् आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं० जगदेवसिंह सिद्धांती की ८३वीं जयन्ती भी मनाई गई। इस अवसर पर श्री सिद्धांती जी, उनके सुयोग्य शिष्य पं० रघुवीरसिंह शास्त्री तथा परम सहयोगी प्रो० रामसिंह को श्रद्धांजलियां देते हुए उन द्वारा आर्य समाज तथा जनता की गई सेवाओं की सराहना की गई। इस समारोह की अध्यक्षता डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने की तथा महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, प्रिंसिपल लालसिंह पानीपत, श्री छबीलदास आर्य, श्री बद्रीप्रसाद आर्य (जीन्द) न्याय मूर्ति श्री हरकिशनसिंह मलिक दिल्ली, पं० रणबीर शास्त्री सह-सम्पादक सर्वहितकारी, श्री रणवीर शास्त्री मन्त्री आर्य समाज गढ़ी बोहर, प० वेदप्रकाश साधक आदि ने तीनों दिवंगत नेताओं को श्रद्धांजलियां अर्पित की।

डा० रणजीतसिंह सफीदों स्थानान्तरित

डा. रणजीतसिंह जी प्रिंसिपल राजकीय महाविद्यालय जाटौली हेलीमण्डी जि० गुड़गांव से बदलकर राजकीय महाविद्यालय सफीदों जि० जीन्द में आ गये हैं। आप आर्य समाज के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध वक्ता तथा लेखक भी हैं। अतः आर्य समाजों के अधिकारी उनसे सम्पर्क करके उत्सवों आदि पर आमन्त्रित करके लाभ उठावें।

अजमेर जाने के लिए हरयाणा रोडवेज की बसों का कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने चौ० भजनलाल मुख्यमन्त्री हरयाणा को आर्य जनता की सुविधा के लिए बसों की व्यवस्था करने की मांग की थी। मुख्यमन्त्री महोदय ने उदारता पूर्वक १ नवम्बर से ७ नवम्बर तक प्रतिदिन अजमेर जाने-आने के लिए रोडवेज की स्पेशल बसें चलाने की स्वीकृति दे दी है। हरयाणा राज्य परिवहन के आयुक्त श्री पूनियां ने बसों का निम्न कायक्रम बनाया है।

दिल्ली से अजमेर प्रतिदिन	६ बसें
रोहतक से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें
भिवानी से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें
गुड़गांव से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें
सोनीपत से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें
यमुनानगर से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें
रेवाड़ी से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें
हिसार से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें
जीन्द से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें
नारनौल से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें
करनाल से अजमेर प्रतिदिन	२ बसें

अजमेर जाने वाले यात्री तथा आर्य समाज के अधिकारियों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक बसें बुक न की हों, वे उपरोक्त रोडवेज डिपो से जाने का समय आदि पूछकर अधिक से अधिक संख्या में अजमेर जाने का लाभ उठायें। महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री

तहसील झज्जर की आर्य जनता को सूचना

गुरुकुल झज्जर की ओर से एक बस अजमेर शताब्दी के लिए जाएगी। जो भी सज्जन जाने के इच्छुक होवें वे अपनी सूचना आचार्य गुरुकुल झज्जर (रोहतक) को २८ अक्तूबर से पहले-पहले भेज कर कृतार्थ करें ताकि हम अपनी अगली कार्यवाही ठीक समय पर कर सकें। प्रत्येक यात्री के लिए ७५ रुपये किराया भी अपनी सूचना के साथ ही अगाऊ भेजना होगा। अतः शीघ्र पैसे और सूचना भेजकर अपना स्थान बुक करवा लें। बस २ नवम्बर की शाम ५ बजे गुरुकुल झज्जर से रवाना होगी। आचार्य महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

दीवाली की शान

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

ऋषि निर्वाण शताब्दी को, तन-मन-धन से सफल बनायें।
ऋषि के पद चिन्हों पर चल, ध्रुव सम दृढ़ संकल्प बनायें।
यह वही है अति पावन स्थल, वह भवन हमें जो प्राप्त हुए।
उस तपः पूत शुचि क्रांति दूत के, अन्तिम श्वास समाप्त हुए॥
हे प्रभु! तेरी इच्छा हो पूर्ण, यह अमर निशानी छोड़ गये।
आई जब शाम दिवाली की, इस दुनियां से मुख मोड़ गये॥
हे धन्य स्वजन वह ऋषि भक्त, अजमेर नगर में आयेंगे।
स्वामी जी की वस्तुओं के, आकर दर्शन पायेंगे॥
यह सौ वर्षों के बाद याद को आई है पावन वेला।
अजमेर नगर में धूम-धाम से, होय निर्वाण शताब्दी मेला॥
चलो आर्यो जय गुंजादो दयानन्द के नाम की।
याद दिलादो दुनियां भर को, दीवाली की शाम की॥

सर्वहितकारी के पाठकों को आवश्यक सूचना

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के उपलक्ष में सर्वहितकारी की ओर से २८ अक्तूबर को "हरयाणा आर्य समाज विभूति-विशेषांक" का प्रथम भाग प्रकाशित होगा। अतः ७ नवम्बर का अंक अजमेर शताब्दी में व्यस्त रहने के कारण प्रकाशित नहीं हो सकेगा। व्यवस्थापक

श्री स्वामी ओमानन्द जी द्वारा संग्रहीत महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर

के लिए

दान सूची

१- स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर रोहतक ५०१०), २. स्वामी शक्तिवेश जी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ५०१), ३. श्रीमती विद्यावती जी महता सेक्टर ७ बी फरीदाबाद ५०१), ४. श्री राधेश्याम मु० रघुनाथसिंह वार्ड-४ बल्लभगढ़ ५०१), ५. श्रीमती विमलादेवी धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्द जी ग्रोवर वार्ड ४ बल्लबगढ ११११), ६. श्रीचन्द जी सु० श्री मवासी जी अनंगपुर, ११११) ७. श्री लहना सिंह जी सैक्टर १६ ए ४६८ फरीदाबाद ५०१), ८. श्रीमती गिन्दोड़ी देवी धर्मपत्नी श्यामलाल जी अमर फरीदाबाद शहर ५०१), ९. चौ० राजेन्द्रसिंह जी होडल फरीदाबाद १११४), १०. चौ० राजेन्द्रसिंह पूर्व एम०एल०ए० दयालपुर (फरीदाबाद) १००२), ११. श्री मा० राजेराम जी खातीवास (दादरी) ५०१), १२. ला० लक्ष्मणदास जी ५ भाई साबुन बल्लबगढ़ ११११), १३. चौ० सुमेरसिंह जी स्वरूपगढ़ (भिवानी) ५०५), १४. श्री सुरेशचन्द जी शास्त्री आयुर्वेद कालेज गुरुकुल कांगड़ी ५०१), १५.श्री हरिराम जी गुप्त यमुनानगर ५०१),१६.मोहब्बत सिंह आर्यनगर (भिवानी) ५०१), १७ वैद्य दुलीचन्द जी आर्यनगर (भिवानी) ५०१), १८. श्री धर्मसिंह शास्त्री बोधवाण (भिवानी) ५०१), १९. अध्यापकवर्ग, मुख्याध्यापक भीमसिंह जी द्वारा बिसलवास (भिवानी) ५०१), २०. श्री भीमसेन जी द्वारा सिमैंट फैक्ट्री दादरी (भिवानी) ११११), २१. प्रि० श्रीकृष्णसिंह जी द्वारा मुण्डका स्कूल दिल्ली से ७०७), २२. आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली-११००४०) ११११), २३. प्रो० शेरसिंह प्रधान व पं० प्रभात शोभा रोहतक ५१००), २४. गुरुकुल झज्जर रोहतक ६०६), २५. सिलानी गाम ब्र० विजयपाल द्वारा २५००)। तह० झज्जर

१०१ रु० दान देने वाले महानुभाव

मा० कंवलसिंह जी समसपुर (दादरी) भिवानी, चौ० मनसाराम जी रुदड़ौल दादरी (भिवानी), श्री हरपतसिंह जी रुदड़ौल दादरी (भिवानी), चौ० सुल्तानसिंह जी दूधवा (भिवानी), आर्यसमाज दूधवा (भिवानी), श्री हीरालाल जी आर्य दूधवा (भिवानी), श्री देवकराम जी आर्य दूधवा (भिवानी), श्री सुखवीर शास्त्री सु० देवकराम जी दूधवा (भिवानी), श्री रणवीर सु० देवकराम जी दूधवा (भिवानी), श्री कर्तार सिंह जी सु० देवकराम दूधवा (भिवानी), श्री बलबीरसिंह जी दात्तौली (भिवानी), श्री रामजीलाल जी दात्तौली (भिवानी), श्री श्री कंवरसिंह जी सु० शुद्धसिंह चिड़िया (भिवानी), श्री गुगनसिंह जी दात्तौली (भिवानी), श्री देवीसिंह जी दात्तौली (भिवानी) श्री हुशियार सिंह जी पु० सूबेसिंह सरपंच चिड़िया (भिवानी), श्री कबूलसिंह जी आर्य चिड़िया (भिवानी), श्री बलवन्तसिंह चिड़िया (भिवानी), श्री दरयाव सिंह जी चिड़िया (भिवानी), श्री मनभर जी चिड़िया (भिवानी), श्री मा० हुकमसिंह जी एम.एल.ए. दादरी (भिवानी), आचार्य ऋषिपाल जी बूराखेड़ी दादरी (भिवानी), श्री आचार्य जी द्वारा हिन्दी संस्कृत विद्यालय दादरी (भिवानी), आर्यसमाज दादरी सांभर तालाब (भिवानी), आर्य समाज बूराखेड़ी दादरी (भिवानी), श्री अजीतसिंह जी दातौली (भिवानी), ट्रक यूनियन चरखा दादरी (भिवानी), श्री सूबेदार कंवल सिंह आर्य, समसपुर दादरी (भिवानी), डा० कु० सुशीला जी आर्या दादरी (भिवानी), बहिन चन्द्रकला जी आर्या दादरी विद्यालय (भिवानी), श्री रामप्रताप जी रोहतक रोड चरखी दादरी (भिवानी), श्री भीमचन्द जी सु० मनसाराम जी क्लाथ स्टोर चरखी दादरी (भिवानी), श्री विजय कुमार आर्य विजय मैडिकल हाल चरखी दादरी (भिवानी), श्री पं० जागेराम जी रावलजी चरखी दादरी (भिवानी), डा० प्रेमानन्द जी चरखी दादरी (भिवानी), डा० रामनारायण चावला चरखी दादरी (भिवानी); सेठ दुलीचन्द जी चरखी दादरी (भिवानी), श्री प्रभातीलाल जी चरखी दादरी (भिवानी), श्री भीमसेन जी प्रभाकर चरखी दादरी (भिवानी), श्री प्रतापसिंह सरपंच बूराखेड़ी दादरी (भिवानी), श्री मा० लज्जेराम जी चरखी दादरी (भिवानी), श्रीमती सत्यवती सु० लज्जेराम चरखी दादरी (भिवानी), श्री मा० रामपाल जी कमोद (भिवानी), श्रीमती शान्तिदेवी धर्मपत्नी मा० लज्जेराम दादरी भिवानी, श्री महावीर जी शास्त्री गुरुकुल झज्जर मुण्डाना (रोहतक), महाशय भवानीदास जी चरखी दादरी (भिवानी), श्री मनुदेव जी शास्त्री डालावास (भिवानी), चौ० शोभचन्द जी रोहतक रोड दादरी भिवानी, श्री कृष्णचन्द्र जी दादरी (भिवानी), श्री हुकमसिंह जी चरखी दादरी (भिवानी), श्री सुल्तानसिंह जी कांकड़ौली सरदारा (भिवानी), मा० जुगतीराम आर्य काकड़ौली हठी (भिवानी), मा० होशियारसिंह जी आर्य काकड़ौली हुक्मी भिवानी, श्री पूर्नमचन्द जी काकड़ौली हुकमी (भिवानी), श्री म० हरिसिंह जी आर्य गोपी दादरी (भिवानी), मा० रणधीरसिंह व्यायाम शिक्षक रा० उ० वि० डालावास (भिवानी), मा० स्वरूपसिंह रा० उ० वि० बाढ़ड़ा दात्तौली (भिवानी), श्री सूबेसिंह जी चान्दवास (भिवानी), श्री मा० हरिसिंह जी चान्दवास (भिवानी), राज० उच्च विद्यालय बारू वास (भिवानी) श्री धर्मपाल जी शास्त्री भाण्डवा (भिवानी), श्री धर्मदेव शास्त्री नई बस्ती भिवानी (हर०), मा० हरिराम जी आर्य गुजरानी (भिवानी), महा० जोखीराम जी आर्य नांगल (भिवानी), स्टाफ रा० उ० वि० काकड़ौली (भिवानी) मा० दीपचन्द जी प्रधानाचार्य डालावास (भिवानी), श्रीमती चन्द्रावती पत्नी सुमेरसिंह स्वरूपगढ़ (भिवानी), सत्यवीर आर्य सु० श्री सुमेरसिंह स्वरूपगढ़ (भिवानी), श्री सजनकुमार जी रानी खेड़ा भिवानी (हर०), श्री डा० सत्यवीर जी शास्त्री डालावास भिवानी (हर०), श्री मा० जगदीशचन्द्र जी नन्दगांव (भिवानी), मा० देवराम जी काकड़ौली हुक्मी (भिवानी), श्री मा० रामसिंह जी बीरुश्री वास (भिवानी), श्री ब्रह्मदेव जी शास्त्री आर्यनगर (भिवानी), मा० हरिदत्त जी आर्य नगर (भिवानी), श्री मा० हीरासिंह जी आर्यनगर (भिवानी), श्री जगदीशजी सु० हीरासिंह आर्य आर्य नगर (भिवानी), श्री सरदारसिंह जी आर्यनगर (भिवानी), श्री दयानन्द शिव नारायण आर्य नगर (भिवानी), श्री सत्यपाल आर्य नगर (भिवानी); श्री दरयावसिंह जी आर्यनगर (भिवानी), श्रीमती ओमदेवी जी आर्यनगर (भिवानी), सूबे० रणधीरसिंह आर्यनगर (भिवानी), वैदप्रकाश सुपुत्र भरतसिंह जी आर्यनगर (भिवानी), श्री मा० निहालसिंह आर्य बारूवास (भिवानी), श्री आत्मप्रकाश जी लुहारु (भिवानी), श्री मा० रामपालसिंह जी, रणवीरसिंह लुहारु (भिवानी), श्री सरपंच परतूराम जी सरावगी लुहारु (भिवानी), श्री चन्द्रसिंह जी डी०एस०पी० लुहारु (भिवानी)।

योग ३७०१०-००

सभा कार्यालय रोहतक में प्राप्त दान

आर्यसमाज रेवाड़ी ३०००), आर्यसमाज नरवाना ३०००), आर्य समाज नारनौल जि० महेन्द्रगढ़ २६५५), आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक १०६), आर्यसमाज ईक्कस जिला जीन्द १०२), आर्यसमाज जुलाना १००), चौ० वेद मित्र जी बरहाणा जिला रोहतक १०१)।

करनाल से महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के लिए शेष दान सूची

श्री बसन्त लाल जी १०१), श्री मास्टर मामचन्द जी १००), रमेश उद्योग ५१), श्री सोमनाथ गुप्त ५१), बावला सोप फैक्ट्री ५१), श्री प्राणनाथ सोनी ५१), श्री प्रेम स्वरूप जी ५१)।—बलदेवकृष्ण आर्य

नोट:—सभा की ओर से जिन्हें शताब्दी के नोट धन संग्रह हेतु दे रखे हैं। कृपया वे २४ अक्तूबर तक कूपनों के साथ संग्रहीत धन दयानन्द मठ रोहतक में अवश्य जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लेवें।

—सभामन्त्री

पानीपत में सामवेद पारायण का महायज्ञ

आर्यसमाज पानीपत के शताब्दी समारोह के प्रथम चरण में सामवेद पारायण आर्य समाज के पुरोहित श्री पं० जगदीश चन्द्र जी वसु के आचार्यत्व में दिनांक २९-९-१९८३ से २-१०-१९८३ तक बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री भू० पू० संसद सदस्य ने अपने आध्यात्मिक उपदेश में आगुन्तक यज्ञ प्रेमी नर नारियों को लाभ पहुँचाया। यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था शताब्दी समारोह के संयोजक आर्य नेता, हरयाणा सभा के कोषाध्यक्ष वयोवृद्ध श्री बाबू रामानन्द जी सिंगला तथा समाज के सुयोग्य मन्त्री श्री आदित्यप्रकाश जी आर्य ने की। यह कार्यक्रम प्रातः ६-३० से ८ ३० बजे तक तथा सायं ४-०० से ६-०० बजे तक दैनिक होता रहा। आर्य-समाज बड़ा बाजार पानीपत की स्थापना मिती आसोज बदी ११ सम्वत् १९४० को हुई थी। २ अक्तूबर १९८३ को इस समाज को स्थापित हुए सौ वर्ष हो गए हैं। इसका इतिहास गौरवपूर्ण रहा है अनेकों ने इस समाज से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को गौरवान्वित किया। आगामी मई ८४ में एक विशाल प्रान्तीय स्तर पर आर्य कालिज के विशाल प्रांगण में समारोह होने जा रहा है जिसकी अभी से जोरदार तैयारियां आरम्भ कर दी गई हैं।

२ अक्टूबर ८३ रविवार को सामवेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध वयोवृद्ध आर्य विद्वान् पूज्य श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती (भू० पू० प्रि० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित) की अध्यक्षता में एक विशाल समारोह में शताब्दी कार्यालय का समाज में ही उद्घाटन किया गया जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री भू० पू० लोकसभा सदस्य डा० अमरेश हैदराबाद; श्री पं० धर्मपाल जी शास्त्री, श्री पं० नरेश कुमार जी बत्रा आचार्य तथा श्री ओमप्रकाश जी वर्मा के तेजस्वी विचार हुए। अन्त में समारोह अध्यक्ष श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने शताब्दि कार्यालय का उद्घाटन किया। सभा का संचालन श्री ठाकुरदास बत्रा जी ने किया। अन्त में शताब्दी समारोह के संयोजक मान्य श्री बाबू रामानन्द जी सिंगला ने सभी आगन्तुक विद्वानों एवं सभा में उपस्थित श्रोताओं का धन्यवाद किया। समाज के वयोवृद्ध पुराने सेवक श्री प० रामरत्न जी शर्मा ने यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था की।

प्रचार मन्त्री आर्यसमाज, पानीपत

डा० सूर्यदेव शर्मा का देहावसान

आर्य समाज अजमेर के भूतपूर्व मन्त्री तथा वर्तमान उपप्रधान, भारतवर्षीय आर्य विनोद परीक्षा के मन्त्री तथा डी०ए०वी० उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक डा० सूर्यदेव शर्मा एम०, एल० टी०, डी० लिट का दिनांक ५ अक्टूबर १९८३ को ८४ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

डा० सूर्यदेव शर्मा उच्च कोटी के आर्य विद्वान्, प्रसिद्ध वक्ता, लेखक, प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री थे। डा० साहब ने अपने जीवन काल में विभिन्न आर्य शिक्षण संस्थाओं, आर्य समाजों तथा आर्य पत्र-पत्रिकाओं को लाखों रुपयों का दान स्थायी निधियों एवं सहयोग के रूप में सहर्ष दिया। उन्होंने आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला के लिए भी २२,००० रु. का सात्विक दान दिया। आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर ने माननीय साहब के नाम पर सूर्यदेव शर्मा आर्य माध्यमिक विद्यालय प्रारम्भ किया। जिसमें उन्होंने ५०,००० रु० का पुनीत दान दिया था। डा० साहब द्वारा आयोजित विद्याविनोद, विद्यारत्न, विद्यावाचस्पति आदि परिक्षाओं के केन्द्र सारे देश एवं विदेशों में भी हैं। अजमेर के प्रसिद्ध डी. ए. व. उ. मा. विद्यालय के वह १९३३ से १९६२ तक प्रधानाध्यापक रहे। ऐसे प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं आर्य विद्वान् का निधन आर्य जगत् को अपूरणीय क्षति है।

डा० साहब के निधन का समाचार सुनते ही आर्य समाज अजमेर की डी. ए. वी. कालेज, जियालाल टीचर्स ट्रेनिंग कालेज तथा दर्जनों स्कूलों में उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलियां दी गई तथा शोक सभाओं का आयोजन किया गया। मन्त्री आर्य समाज

निर्वाण दिवस आया

भजन

तर्ज हरयाणवी

लो आर्यो अजमेर में यह निर्वाण दिवस आ गया।
महर्षि ने किया था जिस दिन वो विषपान दिवस आ गया।
बीत गए १०० वर्ष ऋषि ने, हमें जगाकर चले गए।
छुआ-छूत और ऊत-भूत का भ्रम भगाकर चले गए।
आर्य जाति की नौका को पार लगाकर चले गए।
हमें पिलाया अमृत आप खुद विष को खाकर चले गए।
हत्यारे को दिया ऋषि ने जीवनदान, दिवस आ गया।
याद करो उन वक्तों को जब आर्य जाति सोती थी।
लाखों विधवा रण्डी बनकर धर्म-कर्म सब खोती थीं।
मुसलमान ईसाईयों के घर हिन्दू जाति को रोती थी।
और गैर की नहीं खास वो रामकृष्ण की पोती थी।
पुर्नविवाह नियोग हुए जारी देखो प्रमाण दिवस आगया।
आर्यों के लिए बना दिवाला कहते लोग दिवाली है।
जिस ने सूर्य अस्त करा था वहीं रात ये काली है।
बस जब १९४० था और आज बीस सौ चाली है।
इसका मत विश्वास करो यह वही काले मुख वाली है।
हमें तड़फते छोड़ ऋषि ने करा प्रस्थान दिवस आगया।
भेद-भाव सब तजकर आर्यो सारे खतम विवाद करो।
दयानन्द की फुलवाड़ी को मतना अब बरबाद करो।
श्रद्धानन्द और लेखराम की कुर्बानी को याद करो।
वेद धर्म की कसम तुम्हें जो आगे कोई फिसाद करो।
कहें भीष्म जी एक होण का 'चन्द्रभान' दिवस आगया।

—श्री चन्द्रभान आर्योपदेशक
आ० प्र० सभा हरयाणा

हरयाणा आर्य समाज विभूति-अंक

आर्य समाज के मूर्धन्य तपस्वी विद्वान् आचार्य प्रवर सत्यप्रिय जी हिसार से अभी-अभी पता चला है कि 'सर्वहितकारी' का एक हरयाणा आर्य समाज विभूति अंक खण्डों में प्रकाशित होने जा रहा है। इस अङ्क का सारे आर्य जगत् में स्वागत होगा। आर्य समाज के बाहर भी इतिहास प्रेमी इस आयोजन का अभिनन्दन करेंगे। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को इस शुभ सङ्कल्प पर हार्दिक बधाई भेंट करता हूँ। मेरा एतदविषयक एक सुझाव है कि इस अङ्क के सब लेखकों को कुछ भी अप्रमाणिक नहीं लिखना चाहिए। सब विभूतियों के जीवन की घटनाओं की पूरी-पूरी छान-बीन करके लिखना चाहिए। आने वाली पीढ़ियों के लिए बड़ा प्रेरणाप्रद इतिहास सुरक्षित हो जावेगा। लेखकों को उन प्राणवीरों, रणवीरों, आर्यवीर बांकुरों के जीवन भी इसमें देने चाहिए जिन्होंने सेवा में कार्यरत होते हुए आर्य समाज तथा देश की अविस्मरणीय सेवा। हरयाणा ने आर्य समाज एवं देश की जाति को कई नीव के पत्थर दिये। खोज-खोज कर उनपर लिखा जावे।

राजेन्द्र जिज्ञासु

आर्य समाजें अवसरवादियों से सावधान रहें

महर्षि दयानन्द का निर्वाण अजमेर में हुआ था। अतः समस्त आर्य जगत् की ओर से अजमेर में ही ३ से ६ नवम्बर तक शताब्दी मनाई जा रही है। कुछ अवसरवादी दिल्ली में मनाने के नाम पर धन संग्रह कर रहे हैं। अतः इनसे आर्य जनता सावधान रहे और अजमेर समारोह के लिए सहयोग देवें।

रामानन्द सभा कोषाध्यक्ष

पधारो निर्वाण शताब्दी अजमेर को शान से

(कन्हैया कल्याण तिजारा, अलवर)

हृदय निमन्त्रण भेज रहा हूँ, मैं भी राजस्थान से ।
पधारो निर्वाण शताब्दी अजमेर को शान से ॥
हरयाणा दिल्ली के भाई, बिहारी उड़िया बंगाली,
गुजराती और महाराष्ट्रीय, यू०पी०, एम०पी० केराली ।
इष्ट मित्र परिवार सहित सब चले आ रहे मान से ॥ १ ॥
मानवता की क्रीम आ रही, मिलने बैठने सोचने,
विश्व शांति स्कीम आ रही, अमली जामा पहनाने ।
कहो नहीं करने को उठो, ध्वनि आ रही ध्यान से ॥ २ ॥
धूम्रपान की धूम्रां उगल रही, कारखाने की चिमनियाँ,
सह शिक्षा में पतन हो रहा, बिगड़े लड़के लड़कियाँ ।
पाश्चात्य तज नेह जोड़ लो, स्वदेशी पहरान से ॥ ३ ॥
अनाचार ढा गये अंग्रेज, भ्रष्टाचार की जननी दहेज,
देश चरित का पतन हो गया, बहुत गिर गई ईमेज ।
पुन: देश को उन्नत करने, बचाने सैतान से ॥ ४ ॥
सुरा फैला रही पागलपन, शर्म खो रहे गन्दे चित्र,
भाई बहन सुनते हैं बैठे, बिगड़ गया है वातावरन ।
बलात्कार हकरा रही अबला, गउएं मर रही जान से ॥ ५ ॥
जात पात का भूत भगाने, अन्तर्जातिय विवाह पनपाने,
अबला को सबला बनवाने, नौ जवान को दिशा बताने ।
विश्व शांति को कायम करने, पावन वैदिक ज्ञान से ॥ ६ ॥
दुष्चरित्र ना काबिल नेता, अनुदिन अनीति हैं ढाते,
घुसे हुए हर वर्ग समाज में; जरा नहीं है शर्माते ।
गदी राजनीति धोनी है, वेदों के व्याख्यान से ॥ ७ ॥
आ रहे हैं पैदल श्रद्धालु, संन्यासी ज्ञानी शिक्षक,
शोधक अन्वेषक आ रहे हैं, सम्पादक अनगिन लेखक ।
कवि आ रहे कविता लिखते, क्रांतिकारी प्रयान से ॥ ८ ॥
मौरीशश फीजी से आ रहे, अफ्रीका और गयाना से,
सिंहापुर से चले आ रहे, विश्व एशिया कोने से ।
लंदन से आर्य आयेंगे, वाई वायुयान से ॥ ९ ॥

आर्यों का मेला

अजमेर में होने वाला है आर्यों का मेला बड़ा भारी ।
सारे देश में बड़े जोश से जिसकी की जा रही तैयारी ॥
उत्साह भरा उसमें जाने का आबाल वृद्ध नर-नारी में ।
लाखों नर-नारी पहुँचने रेल, कार और लारी में ॥
ब्रह्मचारी, संन्यासी, महात्मा पहुँचें अपनी टोली में ।
गीत, भजन और नारे बोलें सारे अपनी बोली में ॥
ओम् का झण्डा लिये हाथ में पहने केसरिया टोपी ।
महिलाएं भी खूब सजेंगी पहने केसरिया धोती ॥
मोटो रंग बिरंगे होंगे केवल हिन्दी भाषा में ।
आगे कदम बढ़ाते जायें उज्वल भविष्य की आशा में ॥
ऋषि लंगर भी लगे वहां पर भोजन का भंडारा भी ।
किसी चीज की कमी रहे ना हो कितनी भरमारा भी ॥
बिजली-पानी खूब मिलेंगे होगी खूब सफाई भी ।
झूठ का कोई नाम न होगा, होगी नित्य सफाई ही ॥
राष्ट्रपति जी दर्शन देंगे, आर्यों के इस मेले में ।
प्रधान मन्त्री जी आयेंगी, धूम-धाम से मेले में ॥
प्रकाशचन्द्र सेठी आयेंगे केन्द्र में होम मिनिष्टर भी ।
चीफ मिनिष्टर भी आयेंगे, आये अन्य बैरिस्टर भी ॥
दयानन्द में ऐसा जादू, खिंचे चले आये सारे ।
गीत 'हरि' भी गाता जाये, बोल ऋषि जय के नारे ॥

हरिदत्त वि० प्र०
बी० यू० १६० विशाखा इन्कलेव,
दिल्ली-३४

चलो शताब्दी मनाओ

कवि—बनवारीलाल 'शादां' वैद्य

अजमेर चलो अब ना, देरी लगाओ ।
ऋषि दयानन्द निर्वाण, शताब्दी मनाओ ॥ १ ॥

सभी जन चलो लेके परिवार सारा ।
शताब्दी का चलकर के नजारा देखो ॥
पुष्कर रोड तीन छः नवम्बर जाओ ।
चलो आर्यो अब ना देरी लगाओ ॥ २ ॥

रखी वस्तुएं ऋषि की चलकर के देखो ।
यह है पुण्य भूमि चल मस्तक को टेको ॥
चलो चल के अपना कर्तव्य निभाओ ।
ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाओ ॥ ३ ॥

वैदिक यन्त्रालय, याद ऋषि की दिलाता ।
सत्यार्थ प्रकाश ऋषि का लिखा नजर आता ॥
ऋषि की लेखनी के दर्शन को पाओ ।
अजमेर चलो अब ना देरी लगाओ ॥ ४ ॥

जंवा से कहो पीछे, करके दिखा दो ।
तन-मन-धन आर्यो अब, अपना लगा दो ॥
वही आन, मान, शान, अपनी बनाओ ।
ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाओ ॥ ५ ॥

अमूल्य समय 'शादां' चल तन मन लगादो ।
उठो ओ३म् झण्डा, तुम जग में फैरा दो ॥
चल श्रद्धा सुमन ऋषि के चरणों चढाओ ।
ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाओ ॥ ६ ॥

आर्य समाज की गतिविधियां–

कालका में वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज कालका का वेद प्रचार सप्ताह इस बार अपेक्षाकृत विशेष धूम-धाम के साथ २६ सितम्बर से २ अक्तूबर तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री हरलाल व श्री शेरसिंह के मधुर भजन तथा सभा के उत्साही नवोदित विद्वान् श्री सुरेश जी शास्त्री की प्रभावशाली वेद कथा हुई। २९ सितम्बर को दर्शनीय शोभायात्रा निकाली गई जिसमें नगर भर की सभी शिक्षा संस्थाओं के छात्रों-अध्यापकों तथा आर्य नर-नारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। ३० सितम्बर से २ अक्तूबर तक सभा के मुखपत्र सर्वहितकारी साप्ताहिक के सह-सम्पादक श्री पं० रणवीर जी शास्त्री, एम० ए०, विद्यावाचस्पति के भारतीय संस्कृति पर प्रभावशाली एवं विचारोत्तेजक भाषण हुये। २ अक्तूबर को समापन्न समारोह की अध्यक्षता सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने की। उपस्थित विशाल जन समुदाय को महर्षि दयानन्द सरस्वती को उनकी निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि भेंट करने के लिये स्नेहपूर्वक आमन्त्रित किया। इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से प्रधान श्री महेन्द्र लाल जी ने उन्हें शताब्दी समारोह हेतु १००१ रु० भेंट किया। कार्यक्रम जिसका जनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा की सम्पन्नता के उपलक्ष्य में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया था जिसमें लगभग २००० स्त्री-पुरुषों ने भोजन किया।

सुरेन्द्रपाल शर्मा, मन्त्री आर्य समाज, कालका

११ ग्रामों में शराब बन्दी

हिसार, २ अक्तूबर शराब बन्दी में आर्य समाज की जीत वेद प्रचार मण्डल, हिसार के उपमन्त्री श्री अत्तरसिंह आर्य (क्रांतिकारी) ने कंवारी के आस पास के ११ गांवों में शराब बन्द करवाने के लिये आज से १७५ दिन पहले आमरण अनशन शुरू कर दिया था। अब अभी ११ गावों में पूर्णतय पंचायत ने प्रस्ताव पास करके शराब बन्दीकरण कर दिया है।

आज आर्य समाज हिसार में उनका सभी ११ गावों व हिसार की सभी संस्थाओं द्वारा माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया तथा दादा गणेशी लाल जी ने उन्हें जूस पिलाकर अनशत व्रत तुड़वाया। इसके उपरान्त नगर में एक विशाल जलूस निकाला गया। सीताराम आर्य

ग्राम चमारिया जि० रोहतक में हिन्दी दिवस

१४ सितम्बर को राजकीय उच्च विद्यालय चमारियां जि० रोहतक के प्राङ्गण में हिन्दी दिवस व शिक्षक दिवस एक साथ सम्पन्न हुए। कार्यवाही यज्ञ के साथ आरम्भ हुई। छात्रों में यज्ञोपवित धारण किए व नशीले पदार्थों तथा तामसिक राजसिक भोजनों से दूर रहने की शपथ ली। यज्ञ के बाद गुरुजन को माल्यार्पण न चरण स्पर्श करके गुरु पूजा की गई।

इस अवसर पर हिन्दी प्रचार व प्रसार पर बल दिया गया। श्री जगदीश व महावीर सिंह शास्त्री ने अंग्रेजी मोह छोड़कर हिन्दी, संस्कृत शिक्षण व प्रयोग पर बल दिया। मुख्याध्यापक श्री कंवलसिंह ने समस्त अध्यापक गण व छात्रों का आह्वान किया कि वे विद्यालय के हर क्रिया-कलाप में हिन्दी को प्राथमिकता दें।

गूगामेड़ी पर वैदिक धर्म प्रचार

गत वर्षों की भांति १० से १५ सितम्बर तक यजुर्वेद पारायण वेद पं० मोतीराम जी की देख-रेख में हुआ। १०० युवकों का शिक्षण शिविर लगाकर उन्हें वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। १४ सितम्बर को शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें पं० ज्योति स्वरूप, पं० हंसराज जी, पं० अमरसिंह, भगत राम जी, और बस्ती राम जी आदि भजनोपदेसकों ने भी भाग लिया। ब्र० दयानन्द ने शिविर को सफल करने के लिए परिश्रम किया। श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य समाज फफाना ने अपने साथियों सहित पूर्ण योगदान दिया।

स्वामी आनन्द मुनि, वेद प्रचारक प्रबन्धक

मेवात में आर्य समाज के प्रचार की धूम

१८ से २९ सितम्बर तक मेवात-मण्डल जि० गुड़गांव के शाकरस; नीवां, फिरोजपुर झिरका, नूंह आदि स्थानों पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक पं० धर्मचन्द विद्यालङ्कार एम० ए० पधारे। पं० जी से 'संस्कृति-रक्षा' और 'राष्ट्र-रक्षा' जैसे ज्वलन्त प्रश्नों पर अपने सुलझे हुए विचार दिए। अपनी ओजस्वी वाणी से मेवात-मण्डल की हिन्दू जनता में नव साहस और स्फूर्ति का संचार किया। सभा के भजनोपदेशक श्री सुमेरसिंह की भजन-मण्डली का कार्यक्रम भी रोचक और प्रभावशाली रहा। इस वेद प्रचार कार्यक्रम में गणमान्य आर्य महानुभाव तथा आर्य जनता से सहर्ष भाग लेकर उत्साह प्रदर्शित किया।

जि० फरीदाबाद में ईसाइयों द्वारा पाखण्ड प्रचार

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि ईसाई मिशनरी आजकल फरीदाबाद, बल्लबगढ़ तथा पलवल आदि स्थानों पर अपने प्रचार द्वारा पाखण्ड फैला रहे हैं। उनकी ओर से दो वीर जी मोहल्लों में जाकर कुंवारी लड़कियों को बहकाते फिरते हैं कि "तुम ईसा ईसा बोल, क्या लगे तेरा मोल" इसके बाद तुम्हें मनचाहा वर, सम्पत्ति तथा सन्तान आदि प्राप्त होगी। वे हिन्दू लड़कियों को ईसाई युवकों से विवाह करवाने तथा नौकरी दिलाने का भी लालच देते हैं।

आशा है जिला फरीदाबाद की जनता इन ईसाई मिशनरियों जो कि बड़े वीर जी तथा छोटे वीर जी के नाम से पुकारे जाते हैं, के पाखण्ड से सावधान रहेगी।

स्वामी गोरक्षानन्द, आर्य समाज फरीदाबाद शहर

गन्नौर में महायज्ञ व प्रचार

मन्डी गन्नौर आर्य समाज मन्दिर में ३० अगस्त से ४ सितम्बर महात्मा दयानन्द जी महायज्ञ महात्मा चमनलाल जी गांधी जी द्वारा यज्ञ होता रहा। श्री जयदेव जी त्रतोई वाले श्री प्रेम जी भिवानी वाले पं० चन्द्रसेन आदि वैदिक मिहलटी के भी प्रवचन हुए। इस बार देहातों में दोपहर की कार्यवाही होती रही। हाजरी बहुत रहीं। अन्य विद्वान् भी सम्मिलित हुए। ४-९-८३ को पूर्णाहूति में दी गई देहातों व सोनीपत से सैकड़ों आर्य परिवार पधारे। इस यज्ञ को सफलता सेहरा व्योवृद्ध इस समाज के प्रधान चौ० झाबूराम जी मिलौत्रा बी०एस०टी० फैक्ट्री के आनन्द साहब के परिवार का बड़ा योगदान रहा। ऋषिलंगर का प्रबन्ध सुन्दर था। दो हजार के लगभग की हाजरी रहीं।

शानदार परीक्षा परिणाम

कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) का आठवीं श्रेणी का परीक्षा परिणाम एवं दसवीं श्रेणी का वार्षिक परिणाम बड़ा अच्छा रहा है। आठवीं का का परिणाम ३५ छात्रों में से ३४ पास हैं दसवीं का परिणाम १५ छात्राओं में से १३ पास हैं। अंक काफी अच्छे हैं।

यहां पर विशारद शास्त्री का भी तीन वर्ष से सुप्रबन्ध है। परिणाम भी अच्छा रहता है। जो भी छात्रा विशारद में यहां पर प्रवेश लेना चाहे उसके लिए यह शर्त होगी कि उसकी दसवीं श्रेणी में प्रथम डिविजन हो। आचार्या

हर्ष सूचना

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूज्यपाद "स्वामी ओमानन्द जी महाराज" अध्यक्ष परोपकारिणी सभा का एक भव्य आकर्षक चित्र कलेण्डर के रूप में उनके अभिनन्दन समारोह के अवसर पर प्रकाशित किया गया है। प्रत्येक आर्य संस्था एवं आर्य बन्धु के लिए यह चित्र संग्रहणीय है। चित्र का मूल्य १.५० पैसे है।

प्राप्ति स्थान :–

१) महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर। २) आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली। ३) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक। ४) आर्य संस्कृत महाविद्यालय, चरखी-दादरी। ५) कन्या गुरुकुल, पंचगांव, जि० भिवानी।

(पृष्ट २ का शेष)

६- फिर भी धर्य धर कर जो बचे हैं, बैठकर अगली शताब्दी पर कुछ करने की सोचो। मेरा प्रस्ताव यह है कि—

महर्षि के पच महायज्ञ विधि लिखित पितृ यज्ञ प्रकरण के ऋषि तपरण के आधार पर इस समय जो भी योग्यतम विद्वान् हैं, चाहे वे सन्यासी हों वानप्रस्थ, गृहस्थ या ब्रह्मचारी, उन सात व्यक्तियो के सप्तर्षि मण्डल की घोषणा निर्वाण शताब्दो पर कर देते। मैंने स्वामी सर्वानन्द जी से प्राथना की है कि वे और स्वामी सत्यप्रकाश जो पांच अन्य को और सोच लें। उस सप्तर्षि मण्डल के अधोन समस्त आर्य जगत् के हजारो विद्वानो का सगठन रहे। वे सात व्यक्ति किसी प्रान्तीय सभा, सावदेशिक सभा या परोपकारिणो सभा के सदस्यता ग्रहण न करें।

७ इस सगठन का न मासिक वार्षिक कोई चन्दा हो, और न इसकी कोई बिल्डिंग या सस्था हो। न धन सग्रह हो। किसी आवश्यक कार्य पर यदि आवश्यकता पडे तो किसी एक ऋषि भक्त के हाथों वह कार्य करा दिया जाय।

८- इस समय आर्य समाज का भाग्य आर्य समाजों, प्रान्तीय सभा, सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा के हाथो में है। वह क्यों का त्यो रहे।

९- इस सप्तर्षि मण्डल के अधीन केवल आर्य विद्वत् महासभा का कार्य होगा आर्य जगत् का पथ प्रदशन। कोई माने, या न माने। परामर्शदात्री समिति के रूप में यह महासभा अपना माग दशन उनके सम्मुख कर देते।

आशा है, आर्य विद्वान् निर्वाण शताब्दी पर अजमेर पहुँच कर निर्वाण शताब्दी की शोभा बढायेंगे। मै अभी से अजमेर पहुँच रहा हूं। मुझे आशा है कि निर्वाण शताब्दी की सचालक परोपकारिणो सभा आर्य विद्वानो के निवास तथा भोजन की व्यवस्था सब पृथक सुचारू रूप से करेगी। जिससे आर्य विद्वानो को कोई कष्ट न हो। अतः समस्त आर्य विद्वानों का कर्तव्य है कि निमन्त्रण की प्रतीक्षा न करें और अजमेर पहुँच कर आर्य समाज के भविष्य-निर्माण में सहयोग देने की कृपा करें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह

अजमेर

जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि आगामी दीपावली के अवसर पर अजमेर मे ३, ४, ५ और ६ नवम्बर १९८३ को महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दो समारोह मनाया जा रहा है। इस अवसर पर लगभग १० लाख व्यक्ति महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने अजमेर पहुचेंगे। इतने व्यक्तियो के आवास एव भोजन की व्यवस्था करने के लिए लाखों रुपयों की तत्काल आवश्यकता है। इतने विशाल समारोह की सफलता सभी आर्यों के सहयोग पर निर्भर है। अब समय बहुत कम रह गया है।

अतः आपसे निवेदन है कि धन सग्रह के कार्य में पूरी तरह से जुट जायें तथा सग्रहित धन महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर के उपकार्यालय। आर्य समाज, (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली या दयानन्द मठ रोहतक के पते पर भिजवाने की कृपा करें। अथवा जिससे रसीद ली है उनको फौरन भेज देवें।

दूसरा निवेदन यह है कि आपके यहां से अजमेर जाने वाले यात्रियो की सख्या लिखकर आप हमें शताब्दी उप-कार्यालय नई दिल्ली, रोहतक एव अजमेर शीघ्र ही अवश्य भेजें, ताकि उनके आवास एव भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सधन्यवाद। मं० सत्यसिंह वानप्रस्थ
सभा मन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ४७ १४ नवम्बर १९८३ वार्षिक मूल्य १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

महर्षिदयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर में

लगता था सारा संसार आर्यसमाजी बन गया

(हमारे विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

दयानन्द नगर-अजमेर। ३ नवम्बर से ६ नवम्बर तक सम्पन्न होने वाले महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर अजमेर नगर मे केसरिया पगडी अथवा टोपी वाले पुरुषो तथा उसी रंग की साड़ी पहने महिलाओं के काफिले के काफिले इधर से उधर आते जाते देखकर अजमेर-वासी एक-दूसरे से हंसते हुये यह कहते प्राय: सुने गये कि—'लगता है सारी दुनियां ही आर्यसमाजी हो गई है।'

पूछने पर इस प्रतिनिधि को पता चला कि पहली नवम्बर से ही देश के कोने-कोने से हजारों यात्रियों के अतिरिक्त विदेशी यात्रियों के जत्थे भी यहाँ पहुंचने शुरू हो गये थे। मारीशस, फिजी, बर्मा, हालैण्ड तथा इंगलैण्ड आदि २२ देशो के ऋषि भक्त इस अवसर पर अजमेर पधारे। तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में पधारे कुछ विदेशी विद्वान् भी शताब्दी समारोह में देखे गये तथा दो-एक ने ऋषि को अपनी श्रद्धांजलि भी भेंट की।

समारोह स्थल को कार्यक्रम की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया गया था। चतुर्वेद पारायण यज्ञ ऋषि उद्यान में नव-निर्मित यज्ञशाला मे सम्पन्न हुआ। महात्मा दयानन्द ने इसकी अध्यक्षता की तथा आचार्य विश्वश्रवा अमर स्वामी जी, स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती आदि विद्वानों ने अपने प्रवचनों द्वारा इसमें सम्मिलित पिपासुओ को अध्यात्मरस का पान कराया।

मुख्य समारोह जहाँ सम्पन्न हुआ वह स्थान ऋषि उद्यान से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर अजमेर नगर से बाहर पुसकर रोड पर स्थित था। वहाँ दयानन्द नगर के नाम से तम्बुओं, छोलदारियो तथा शामियानों का एक उपनगर बनाया गया था। इसी दयानन्द नगर में ६०० फुट लम्बा तथा 450 फुट चौड़ा पण्डाल बनाया गया था जिसके एक ओर प्रेस-गैलरी थी जिसमें बैठकर पत्रकार एवं संवाददाता सम्मेलनों की कार्यवाही की रिपोर्टिंग अपने-अपने समाचार पत्रो के लिये कर रहे थे। साथ ही उनकी सुविधा के लिये डाक-तार विभाग ने अस्थायी डाकखाना तथा तारघर खोल रखा था जो २४ घण्टे सेवारत था।

मुख्य पण्डाल में तीन मंच बने थे दो अगल-बगल में बडे मंच थे जिनमें से एक पर साधु-संन्यासी, महात्मा लोग बैठते थे तथा दूसरा विभिन्न सभाओं के अधिकारियों, विदेशी अतिथियों तथा आर्य विद्वानो के बैठने के लिये था। तीसरा छोटा किन्तु अपेक्षाकृत ऊंचा जो सम्भवत या प्रधान मंत्री के लिये ही विशेष रूप से बनाया गया था इन दोनों के मध्य में बना था। इसका उपयोग शायद समारोह के उद्घाटन के अवसर पर ही हुआ। मंचों के पीछे की ओर दिवगत आर्य महापुरुषों के चित्र बनाये गये थे। इनके मध्य में सबसे बड़े आकार का चित्र उस युग पुरुष का था जिनके निर्वाण की शताब्दी मनाई जा रही थी। यह बीच का चित्र ही वह दीपक था जिससे अगल-बगल के सभी दीपक जले थे।

दयानन्द नगर में बने मुख्य पण्डाल को दो मार्गों से जोड़ा गया था जिनमें से एक पर सभी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के कार्यालय तथा मुख्य पूछताछ कार्यालय स्थित था। इसी मार्ग पर पुस्तकालय कार्यालय के के सामने ध्वजमंच था जहाँ पर ३ नवम्बर को देशदेशान्तर से विशेष रूप से आये हजारों आर्यवीरों तथा आर्य युवकों की उपस्थिति मे ध्वजारोहण कर आर्यजगत् के भीष्म पितामह वीतराग श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने प्रात: साढे नौ बजे समारोह का परम्परागत उद्घाटन किया। यह परम्परागत उद्घाटन वास्तव में दर्शनीय था। इसी मार्ग पर इस अवसर पर प्रकाशित साहित्य की बिक्री के लिये स्टाल तथा जलपान के लिये दुकाने थी।

दूसरे मार्ग पर देश के बिभिन्न भागो से आये हुये आर्य प्रतिनिधियों के ठहरने हेतु तम्बुओं का विशेष नगर था जिसमें अलग-अलग प्रान्त के प्रतिनिधि अलग-अलग छोटी-छोटी बस्तियों के रूप में ठहरे हुये थे। इसे देखकर लगता था कि सारा विश्व सिमटकर रह गया है। तम्बुओं के इस उपनगर के ठीक सामने मुख्य ऋषि लंगर था। हरयाणा की जनता ऋषि के विचारो के अपेक्षाकृत सर्वाधिक निकट होने के कारण क्योंकि सबसे अधिक संख्या में इस अवसर पर अजमेर पहुँची थी, अत: आयोजको ने उसे मुख्य नगर से कुछ दूर एक अलग उपनगर में ठहराया था। हरयाणा वालों के भोजनार्थ ऋषि लंगर भी इस उपनगर में अलग ही था जो आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की देखरेख में २४ घण्टे चल रहा था। शुद्ध देसी घी की पूड़ी इस लंगर में न केवल हरयाणा वासियों ने ही बल्कि समारोह में उपस्थित अन्य भी प्रान्तवासियों ने खाई। यहाँ सभामंत्री महाशय भरतसिंह, उपमंत्री सत्यवीर विद्यालंकार तथा सत्यवीर शास्त्री तथा सभा के अकाउण्टेण्ट नवाबसिंह को व्यवस्था जुटाते किसी भी समय देखा जा सकता था। इनके अतिरिक्त आर्यवीर दल के सैनिक तथा सिरसा और कुरुक्षेत्र के आर्यों का योगदान भी उल्लेखनीय था। यह हरयाणा के आर्यों की ही विशेषता लगी जो अपने-अपने वाहनों पर चावल, आटा, गेहूँ, तथा दाल पर्याप्त मात्रा मे लाये थे। आयोजन से पूर्व विरोधियो द्वारा उडाई गई अफवाहो का मुकाबला करने के लिये लगता है इस प्रदेश के लोग हर प्रकार का साधन लेकर पहुंचे थे।

चार दिन तक दयानन्द नगर में जन-समुदाय ठाठे मारता रहा, सिंह गर्जनाए होती रहीं, तालियों की गड़गडाहट से राजस्थानी नगाड़े भी शर्माते रहे, लाखों लोगों के इधर-उधर आते जाते रहने से उड़ती हुई धूल मार्तण्ड के मान का मर्दन करती रही तथा राजस्थान सरकार द्वारा प्रदत्त बिजली के प्रकाश से दयानन्द नगर रात-दिन जगमगाता रहा, पानी का अभाव भी कहीं पर दृष्टिगोचर न हुआ।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

महर्षि दयानन्द अनुपम देव रत्न

(श्री निहालसिंह आर्य अध्यापक)

महादेव महर्षि दयानन्द अपने समय में एक प्रचण्ड, निर्भीक, सत्य वक्ता, पूर्ण सदाचारी, आदित्य ब्रह्मचारी, अतीव परोपकारी, वेद मर्मज्ञ, विज्ञान तत्त्वज्ञ, आप्त वेद उद्धारक हुए हैं। उन्होंने सारे संसार को अपना घर समझा। वे महान् पुरुषार्थी दयार्द्र, मुमुक्षु, एवं सर्व लोकैषणा रहित उदार चित्त महेन्द्र, महिमा सम्पन्न विलक्षण आर्ष ऋतम्भरा के अमर मनीषी थे। वे एक आदर्श युग पुरुष भारत राष्ट्र निर्माता, शास्त्रज्ञ धर्माचार्य थे। उन्होंने सबसे अधिक बल वेद विद्या और आर्ष पठन पाठन पद्धति पर दिया है।

इस वर्ष पूरे सौ वर्ष पश्चात् दिवाली पर अजमेर में उनका निर्वाण शताब्दी का महान् समारोह मनाया गया है। यदि सारा भारत एवं विश्वमण्डल मिलकर भी उनका ऋण चुकाना चाहें तो भी बदला नहीं चुकाया जा सकता क्योंकि उन्होंने अकेले जिस अतुल सामर्थ्य से जो संसार का सुधार और मनुष्य जाति का उद्धार किया है उसका मिलना अति दुर्लभ है। उन्होंने दुष्ट द्वेषी विरोधियों के दुर्वचनों एवं दुर्जनता को भी द्रवीभूत कर दिया। अतः इस सम्मेलन में आगामी काल के लिए कुछ विशेष वेदप्रचार का कार्यक्रम बनाया गया। इन राजनीति के प्रलोभी स्वार्थी नामेच्छुक नेताओं के स्थान पर तपस्वी त्यागी वीतराग साधु संन्यासियों के सर्वत्र आगे आगे रखना चाहिए और महर्षि जी की परोपकारिणी सभा में तो सर्वथा राष्ट्रीय स्तर के निरक्ष होने चाहिए। यदि भारत और विश्व का कल्याण करना वाञ्छित है तो महर्षि जी के उपदिष्ट इन अमर वचनों का चरितार्थ करना होगा—

१. एकेश्वर पूजा—

"ईश्वर सबको उपदेश करता है कि हे मनुष्यों! मैं ईश्वर से पूर्व विद्यमान सब जगत् का पति हूं। मैं सनातन जगत्कारण और सब धनों का विजय करने वाला और दाता हूं। मुझ ही को सब जीव जैसे पिता को सन्तान पुकारते हैं वैसे पुकारें। मैं सबको सुख देने जगत के लिए नाना प्रकार के भोजनों का विभाग पालन के लिए करता हूं ॥३॥

मैं परमेश्वर्यवान सूर्य के सदृश सब जगत का प्रकाशक हूं। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूं। मैं ही जगत रूप धन का निर्माता हूं। सब जगत की उत्पत्ति करने वाले मुझ ही को जानो। हे जीवो! ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञान आदि धन को मुझ से मांगो और मेरी मित्रता से तुम लोग अलग मत होवो। हे मनुष्यों! मैं सत्यभाषण रूप स्तुति करने वाले मनुष्य को सनातन ज्ञानादि धन को देता हूं। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करने हारा और मुझ को वह वेद यथावत् कहता, उससे सबके ज्ञान को मैं बढ़ाता, मैं सत्पुरुष का प्रेरक, यज्ञ करने हारे को फल प्रदाता और इस विश्व में जो कुछ है उस सब कार्य का बनाने और धारण करने वाला हूं। इसलिये तुम लोग मुझ को छोड़ किसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानो और मत जानो ॥४॥"

—(सत्यार्थप्रकाश सप्तम् समुल्लास:)

इसी प्रकार वेदादि शास्त्रों में 'ओ३म् एवं ब्रह्म'; 'ओ३म् तत् सत्', ईश्वरं भज, 'आर्य ईश्वर पुत्र', आदि वचनों से परमेश्वर और जीव का उपास्य-उपासक, व्यापक-व्याप्य, पिता-पुत्र, राजा-प्रजा आदि सम्बन्ध से एक परमेश्वर ही हम सब का उपास्य देव है।

अपौरूषेय सत्य नित्य शिरोधार्य वेद—

महर्षि दयानन्द ने स्वतः प्रमाण वेद को ही माना है शेष सभी आर्ष ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं। इसीलिए तीसरे नियम में बताया कि "वेद सबसत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम-धर्म है।" धर्म के साक्षात् चार लक्षणों में महर्षि जी ने सर्व प्रथम वेद को ही माना है—

वेदोऽखिलो धर्म मूलम्। भूते भव्यं भविष्यत् च सर्वं वेदात् प्रसिद्धयति। काशी शास्त्रार्थ में भी मूर्ति पूजा के विषय पर वेद को ही आधार माना गया था। अवैदिक वचनों को महर्षि जी तुरन्त खण्डित कर देते थे।

महर्षि जी ने वेद के इस मन्त्र को सार्वजनिक कल्याण का आधार माना है।

यथेमां वाचं कल्याणि आवदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।

फिर महर्षि जी ने यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के आठवें मन्त्रांश के अर्थ में यह कहा है—जो स्वयं, सर्व व्यापक, शुद्ध सनातन, निराकार परमेश्वर है वह सनातन जीव रूप प्रजा के कल्याणार्थ यथावत् रीति-पूर्वक सब विद्याओं का उपदेश करता है। "तस्माद् यज्ञाद् सर्वभूतः ऋचः सामानि जज्ञिरे, छन्दांसि जज्ञिरे यजु तस्मात् अजायतः। अर्थात् चारों वेद परमेश्वर से ही प्रकाशित हुए हैं इसलिए महर्षि जी ने केवल और केवल सर्व धर्म विद्याओं का आधार वेद को ही माना है।

३. गोवंश की रक्षा—

महर्षि जी ने कृषि का आधार गोवंश को ही माना है और हमारा भारत देश तो कृषि प्रधान देश ही है। अन्नादि की उत्पत्ति के लिए, किसानों के लिए सबसे सस्ता साधन बैलों को ही माना है और गोमाता के दुग्ध को अमृत के तुल्य महौषधि बताया है जो ज्ञान, बल, बुद्धि प्रेम और वीरता वर्धक है इसीलिये कहा है—

'गां माहिंसी' आदि वचन बताये हैं और गो को अघन्या बताया है और उपदेश किया है कि जहाँ गऊ आदि पशु मारे जाते हैं वहाँ राजा और प्रजा का नाश शीघ्र हो जाता है। महर्षि जी ने १८७९ ई० में यदुकुल दिवाकर राजा युधिष्ठिर की रिवाड़ी में गो-रक्षा के उपदेश से सर्वप्रथम गोशाला खुलवाई थी जो अब तक भी है और दूसरी गोशाला बेरी और फिर भिवानी आदि अनेक स्थानों में फैल गई फिर अंग्रेजी राज को ३ करोड़ जनता के हस्ताक्षर गोवंश की रक्षा के लिए प्रस्तुत करने का आन्दोलन चलाया था जिसमें डेढ़ करोड़ हस्ताक्षर कराये जा चुके थे और इसीलिए महर्षि जी ने गो कृषि की रक्षा के लिए "गो करूणा निधि" पुस्तक रची थी।

४. नियोग की परम्परा—

इस विषय में समाज में बड़ा अन्याय प्रचलित था। पुरुषों के लिये तो अनेक विवाहों की आज्ञा थी परन्तु स्त्रियों के लिए वर्जित प्रथा का प्रचलन था। महा धन्य है महर्षि दयानन्द को जिन्होंने ईश्वर की दृष्टि में पुरुष-स्त्री को समतुल्य बताया और नियोग की विद्या पुनः स्मरण कराई जो वेदों की ही देन है—

"अन्यमिच्छ स्व सुभगे पतिं मत्" यह ऋग्वेद के दशवें मण्डल के सूक्त का मन्त्र है। अर्थात् रोग ग्रस्त होने के कारण जीवित पति भी अपनी धर्म पत्नी से कहता है कि हे सौभाग्यवती स्त्री। तू मुझ रोगी पति के स्थान में किसी अन्य नियोग से सन्तान की उत्पत्ति करले। इसमें महर्षि जी ने उदाहरण स्वरूप बताया कि रामायण युद्ध में राम द्वारा रावण के मारे जाने पर रावण की पत्नि मन्दोदरी ने विभीषण का नियोग कराया था यह कई लाखों वर्ष पुरानी बात है। अब ५ हजार एक सौ बीस वर्ष पहले महाभारत काल में भी रोगी राजा पाण्डु के कारण कुन्ती से नियोग करके धर्मराज ने युधिष्ठिर को, पवन राजा ने भीम को इन्द्र ने अर्जुन को तथा माद्री से नियोग करके अश्विनी कुमार वैद्य ने नकुल सहदेव को जन्म दिया था। महर्षि वेदव्यास ने अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका से विदुर, चित्रांगद और विचित्रवीर्य की उत्पत्ति की थी इसीलिये हरयाणा तथा भारत के अन्य गणतन्त्रीय पंचायती वर्गों में और जाट क्षत्रियों में अब तक भी करेवा अर्थात् नियोग का प्रचलन आद्यावधि है। जब युद्ध में कई कई लाख युवा क्षत्रिय मारे जाते थे तब उनकी धर्म पत्नी नियोग का आधार ही लेती थी अतः नियोग की प्रथा शास्त्र सम्मत है जिसको राजपूत कहलाने वाले राजतन्त्रीय, अभिमानी क्षत्रिय नहीं मानते जो दोष का कारण है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

निर्वाण शताब्दी समारोह की झलक

—अजमेर में नया जहान देखा

(श्री भीमसेन दीवान शान्ताकुंज नई कालोनी गुड़गांव)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर समारोह का महोत्सव देखा। महर्षि कितने महान् व्यक्ति थे, पढ़ते थे, सुनते थे, गाने गाते थे, जय-जयकार बुलाते थे। कल्पना के घोड़ों पर स्वारी लेते थे। महर्षि के गुणगान करते जरूर थे पर अजमेर समारोह पर महर्षि की आत्मा की फूंक देखा। यद्यपि महर्षि के निर्वाण के शत वर्ष बीत गये, पर महर्षि को अमर देखा। भले ही आर्य क्या हों गये हो पर महर्षि की बोलती तस्वीर देखो। महर्षि के उपकारो का वर्णन सुनते थे पर महर्षि के उपकारो की चलती फिरती तस्वीर देखी। आर्यों का पैदा किया जहान देखा। उत्साह उल्लास सहिष्णुता का मेल जोल गद गद करते मुखडे विद्वानों की होड विदेशों से श्रद्धालु वर्ग भारतीय प्रान्तों के गुट के गुट अपनी-२ श्रद्धाञ्जली की मुठियां भर के लाए देखे। बुढे देखे, जवान देखे, नर देखे, नारियां देखी, अत्यन्त वृद्ध भी लाठी के सहारे चलने वाले एक बार तो निर्वाण उत्सव का प्रसाद लेने आये देखे। एक नया जलवा देखा, प्रबन्ध तो था ही इतने बड़े समारोह में कमियां तो रह ही जाती हैं न्यूनतायें रह ही जाया करती है। पर किसी की जबान पर गिला नहीं देखा। यह सब कुछ देखा, अपनी आंखों से देखा खिले फूल देखे, पंखुडियां भी देखी। रंग बिरंगे कपड़ों में नर नारियों को उमडता सागर देखा। यह सब कुछ देखा अपनी आंखों से देखा, भिन्न २ प्रकार से अपनी श्रद्धा को बगल में दबायें, केवल एक सन्तोष एक आवाज एक शुभ विचार देखा कि हम महर्षि की शताब्दी मनाने आये हैं।

निर्वाण प्राप्त आत्मा तो ओझल थी ही पर ओझल हुई शक्ति को महोत्सव के स्वरूप में देखा। यह सब दृश्य क्या था? एक स्वीकृति एक जगमगाती शान थी जो समुचा ससार एक ही पैगाम दे रहा था और एक ही ध्वनि सुना रहा था एक ही वोट डाल रहा था, एक ही विश्वास दिलाता था। एक ही प्रकार से यह कह रहा था कि सचमुच महर्षि का बड़ा व्यक्तित्व था एक ही ध्वनि दे रहा था कि महर्षि बड़ी चमत्कार पूण शक्ति थे। महान् आत्मा थी, आलीशान दिव्यता थी, तपस्या की अग्नि में दमकती सत्ता थी। सचमुच ही कल्पना के घोड़ों पर मैदाने अमल में देखा। खुब देखा दिल भर के देखा और अनायास अनुभव किया कि सही मायनो में एक ज्योति सौ साल पहले गुम हो गई था। गुम होने के बाद भी छिपी फिरती है जो आर्य जगत् के नर-नारियों ने एक होड का रूप ले लिया। लाखों की सख्या में वह सदात्मा भाग्यपूर्ण अमर स्वरूप प्रकाश थी। तेज धारियों में शांत खुशी की लपटों में एक तूफान देखा। केवल यह मानने के लिए एक यह अनुभव करने के लिए कि हमारी सुनी हुई गाथायें सही थी। सालों के पश्चात् महर्षि की आत्मा का शुभागमन अभागे सोये भारत भूमि में एक महात्मा का समागम हुआ इस साक्षात देखा। अपनी आंखों से देखा तथा यह अपनी आंखों अपने मन तथा आत्मा को शुभ अनुभव प्राप्त किया कि महर्षि बहुत महान् थे जिसके सौ वर्ष दिवगंत हो जाने पर भी इतना जोश होश उफनता जहान बना पाये तथा एक स्वर में यह कह पाये कि अवश्य मानें कि महर्षि एक महान् ज्योतिष्मान, दिव्यमान चहलती पहलती आन्धी और तूफान से मिली जुली मुगतान थी। अमर भी तभी हो गये। अमल फिर उमड़ पड़ी। आर्य जगत् में दौड़ लग गई, बूझी आग फिर जल गई तथा साक्षात प्रमाण दे गई कि आत्मायें मरा नहीं करती पर नये दर्शन से नया ससार बनाया करती है। भूल को नई जिन्दगी दिया करती है। बस यही देखा, खुलकर देखा, दिल भर कर देखा। गद गद होकर देखा। जीवन पवित्र किया तथा सम्मानित होने का मान लिया।

क्रमशः

आर्यजनों ने कुरीतियों के प्रतिवाद का संकल्प लिया

दयानन्द नगर अजमेर ७ नवम्बर (वार्ता)। देश एवं विदेशों के कौने-कौने से महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह में भाग लेने आये एक लाख से अधिक आर्य जनों ने संकल्प लिया है कि वे सम्प्रदायक मतमतांतरों में उसे अनैतिक तत्वों, अन्ध विश्वासी व कुरीतियां का निर्भयता के साथ प्रतिवाद करेंगे तथा उनके साथ किसी भी सूरत में समझौता नहीं करेंगे।

चार दिन के समारोह के आखिरी दिन खुले अधिवेशन में पारित एक प्रतिज्ञा के माध्यम से इन आर्यजनों ने भी संकल्प लिया कि वे बिना किसी जाति, वर्ण या वर्ण भेद के दीनहीन पीड़ितों की निःस्वार्थ सेवा करेंगे।

पांच सूत्रीय इस प्रतिज्ञा पत्र को खुले अधिवेशन के अन्तिम क्षणों में आर्य विद्वान् बापूराव बाघमोरे से पढ़ा तथा समारोह में उपस्थित तमाम लोगों ने उसे दोहराया।

प्रतिज्ञा पत्र के माध्यम से आर्य जनो ने परमात्मा, उसकी सृष्टि तथा ईश्वरीय ज्ञान में निरतर आस्था के साथ यह भी प्रतिज्ञा की कि वे सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य को त्यागने को सदैव प्रयासरत होगे।

उन्होने यह भी प्रतिज्ञा की कि जीवन के उदांत मानव मूल्यों की रक्षा करते हुये वे बराबर स्नेह और सौमन्स का प्रचार करेंगे तथा ऐसी किसी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन नही दगे जिससे आपस में ईर्ष्या की भावना बढ़े।

निर्वाण शताब्दी पर स्वर्णपदक

अजमेर, ७ नवम्बर। गत ३ नवम्बर से यहीं चल रहे महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी समारोह के कल तीसरे दिन आयोजित सत्कार सम्मेलन में १४ व्यक्तियों को स्वर्णपदक, १६ विद्वानों को आर्य रत्न की उपाधि तथा २० व्यक्तियो को चौधरी प्रतापसिंह पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दयानन्द महाविद्यालय में आयोजित इस समारोह में भूतपूर्व राज्यपाल धर्मवीर एवं आर्यसमाज के विद्वान् वेद-व्यास ने इन विभूतियों को सम्मानित किया।

शताब्दी स्वर्णपदक से सम्मानित किये गये १४ व्यक्तियों में से आठ भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं। हाल ही में अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में ख्याति अर्जित करने वाले डा. यशपाल, डा. एम. धवन व प्रो. एम वी.के. मेनन को भी इसी समारोह में स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया। अन्य वैज्ञानिकों में प्रो. बी. जी. पाल, डा. एस. पैन्टल, डा. एस. एन रामचन्द्रन, प्रोफेसर जी. आर. तोषनीवाल तथा डा. आर. रमन्ना हैं।

स्वर्णपदक से विभूषित अन्य व्यक्तियों में भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान कपिलदे,व प्रसिद्ध पर्वतारोही तेनसिंह गोरके, प्रसिद्ध सगीतज्ञ श्रीमती शुभलक्ष्मी रोजगार्डन्स, चडीगढ़ के निर्माता नेकचन्द अश्वनीकुमार तथा डा. ओमप्रकाश।

दैनिक रोजमेल अजमेर ८-११-८३

सात वर्षीय बालक का धारा प्रवाह भाषण

दयानद नगर अजमेर, ६ नवंबर (वार्ता) महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी समारोह के दूसरे दिन यहां आयोजित श्रद्धांजलि में सात वर्षीय एक बालक ने लगभग दस मिनट तक धारा प्रवाह भाषण कर लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया।

रेणकूट के दयानद बाल विद्या मंदिर में तीसरी कक्षा के छात्र की भाषण कला से प्रसन्न होकर लोगो ने उस पर पुरस्कारों की बौछार कर दी। उसे लगभग साढे आठ सौ रुपये नकद पुपस्कार के रूप में मिले।

पुरस्कार की यह राशि मुख्यमत्री शिवचरण माथुर ने उसे प्रदान की।

कुरान में गौ हत्या की इजाजत नहीं

दयानंद नगर अजमेर ६ नवंबर (वार्ता)। हाल ही में इस्लाम का परित्याग कर आर्यसमाजी बने अरबी एव फारसी के विख्यात तथा मद्रास के भूतपूर्व इमाम अमरेश आचार्य ने दावा किया है कि कुरान में कहीं भी मुसलमानों को गाय या अन्य जानवरों की हत्या की इजाजत नहीं दी गई है।

महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी समारोह के अन्तिम दिन आज यहां आयोजित सामाजिक क्रांति सम्मेलन में कुरान की आयतों का उदाहरण देते हुए श्री आचार्य ने कहा कि आज मुसलमान यदि ऐसा कर भी रहे है तो केवल हिन्दुओं के निकम्मपन के कारण।

(पृष्ठ १ का शेष)

समारोह में श्रद्धालु जनता विशेषकर अपने-अपने वाहनों से पहुँची। इन पंक्तियों का लेखक स्वयं सभा की ओर से गई एक बस का नेतृत्व कर रहा था। मार्ग में नारनौल और नांगल चौधरी के आर्यों द्वारा किये गये भाव भीने स्वागत तथा आर्यसमाज आदर्श नगर जयपुर द्वारा दिये गये भोजन ने आज के सुविधा के युग की पैदावार आर्यों द्वारा पैदा की गई कड़वाहट तथा लम्बी यात्रा की थकान को विस्मृत करा दिया। दिल्ली से विशेष गाड़ियाँ भी चलीं तथा हरयाणा रोडवेज ने भी दिल्ली तथा हरयाणा के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों से विशेष बसें यात्रियों की सुविधार्थ चलाईं।

इस विशाल स्तर पर आयोजित समारोह की सफलता के लिये जहाँ हर ओर से व्यापक सहयोग मिल रहा था वहीं कुछ तत्व इसे असफल कर इसके महत्व को कम करने में लगना है जो-जान से जुटे थे। इनमें से प्रथम थे जेबकतरे, जो आर्यवीरों की भरसक जागरूक व्यवस्था तथा राजस्थान की ढीली पुलिस के काबू में न आ सके। हरयाणा के भी कई लोग इनका लपेट में आने से न बच सके। ठोल (कुरुक्षेत्र) निवासी एक आर्य को तो अपने ५१० रुपयों तथा कीमती घड़ी से हाथ धोना पड़ा। ये चालु जेबकतरे एक ओर जहाँ जेबकाटकर परधनहरण द्वारा अपनी हथफेरी की अद्भुत कला का प्रदर्शन कर रहे थे वहीं दूसरी ओर कुछ वाक्-पटु इस अवसर का लाभ उठाकर अपने वाक्-जाल के फंदे में फंसाकर आर्यों के धन-हरण हेतु ऐसे अवसरों पर चली जाने वाली अपनी पुरानी चालों से भी बाज नहीं आ रहे थे।

दयानन्द युग प्रवर्त्तक थे—इन्दिरा जी

३ नवम्बर दयानन्द नगर-अजमेर। यहाँ चार दिवसीय महर्षिदयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह का उद्घाटन करते हुये प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि महर्षि दयानन्द एक महान् समाज सुधारक तथा क्रान्तिकारी विचारक थे तथा एक ऐसे सच्चे सन्त थे जिन्होंने राष्ट्रीय भावनाओं को आत्मसात कर अपने उपदेशों का प्रचार करते हुये सारे देश की यात्रा की।

श्रीमती गांधी ने ऋषि दयानन्द तथा उनके अनुयायियों की धार्मिक एवं शैक्षिक क्षेत्र में क्रान्तिकारी गतिविधियों द्वारा राष्ट्र की, की गई अभूतपूर्व सेवा की सराहना करते हुये सभी भारतीयों से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धान्तों का पालन करने और महर्षि द्वारा दिखाये मार्ग पर चलने की अपील की। प्रधानमंत्री ने कहा कि विज्ञान का भरपूर उपयोग जीवन के हर क्षेत्र में रचनात्मक कार्यों में होना चाहिये किन्तु तोड़-फोड़ और लड़ाई में हरगिज नहीं।

शान्त भाव से बैठे जन समुदाय को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहाकि भारत प्रगति करें, ऊँचा उठे, ऊँचे आदर्शों को माने, सत्य मार्ग पर चले, यही दयानन्द का सन्देश है तथा भारतीयों का कर्तव्य है। इन्दिरा जी ने कहा कि महापुरुष बहुमुखी होते हैं। वे अपने चरित्र-बल, परिश्रम और आकांक्षाओं से जन-जीवन को मोड़ देते हैं। स्वामी दयानन्द जी को ऋषि और सरस्वती उनके गुणों से ही कहा गया है। उन्होंने हिन्दु-धर्म की कमियों को देखा, उनके सुधार का बीड़ा उठाया तथा धर्म को सकीर्णता से बचाया। उन्होंने कहाकि ऐसे युग-पुरुषों का मूल्यांकन इतिहास ही करता है समकालिक लोग नहीं।

इन्दिरा जी ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच भावुक होकर कहा कि महर्षि दयानन्द युग प्रवर्त्तक थे। उन्होंने देश को जगाया, उसकी भीतरी शक्ति को चेतना प्रदान की तथा अंधविश्वास और जाति प्रथा पर प्रहार किया। प्रधानमंत्री ने देशवासियों को सचेत करते हुये कहा कि आज जाति और धर्म के नाम पर लोग देश में मतभेद पैदा कर उन्हें विस्तृत करने में जुटे हैं तथा निजी और राजनीतिक स्वार्थों के लिये उसका प्रयोग कर रहे हैं।

श्रीमती गाँधी आज प्रातः अपनी दो घण्टे की अल्पकालिक यात्रा पर इसी सप्ताह दूसरी बार राजस्थान पहुंची थीं। वे ठीक समय पर अजमेर के घूघरा हवाई अड्डे पर उतरी तथा हैलीपेड से सीधी दयानन्द नगर पधारीं। उनके साथ राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री शिवचरण माथुर तथा राज्यपाल श्री ओ. पी. मेहरा भी उद्घाटन समारोह में उपस्थित रहे। फर्लांग भर के लम्बे-चौड़े पण्डाल में उपस्थित सारी आर्य-समुदाय को प्रधान मंत्री से पूर्व मारीशस के उप-प्रधान मंत्री श्री हरीश बुधु ने मारीशस की सरकार एवं जनता की ओर से शताब्दी समारोह सफलता-पूर्वक हेतु सम्पन्नता प्रदान की तथा एक अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय स्थापित किये जाने की मांग की जिसका तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया गया।

आरम्भ में स्वागत समिति की ओर से स्वागताध्यक्ष श्री छोटूसिंह एडवोकेट तथा सार्वदेशिक के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले ने प्रधान मंत्री का स्वागत किया तथा शताब्दी समारोह के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने प्रधान मंत्री को आर्ष साहित्य भेंट किया। उद्घाटन समारोह का सफल संयोजन हरयाणा सभा के प्रधान तथा ऋषि निर्वाण शताब्दी समारोह के कार्यकर्त्ता प्रधान भूतपूर्व रक्षा राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने किया।

दृष्टिकोण अपना अपना

रोहतक (शास्त्री)! 'सबको खबर दे और सबकी खबर ले' की डींगें हांकने वाले अंग्रेजी के प्रसिद्ध दैनिक इण्डियन एक्सप्रैस का समाचार देने का दृष्टिकोण विचित्र तथा अखरने वाला सा, जिसकी झलक अजमेर में सम्पन्न महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के उद्घाटनार्थ पधारीं प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रकाशित चित्रों से मिल जाती है। श्रीमती गांधी ३ नवम्बर को पौने ग्यारह बजे अजमेर हवाई अड्डे से सीधी दयानन्द नगर पहुंचीं जहां उन्होंने एक लाख की उपस्थिति के समक्ष महर्षि को युगप्रवर्त्तक की संज्ञा देकर समारोह का उद्घाटन किया। इसका चित्र उक्त दैनिक ने अगले दिन अर्थात् ४ नवम्बर के अंक के पृष्ठ ८ पर दिया जबकि उद्घाटनोपरान्त श्रीमती गांधी तत्काल पुरानी कांग्रेसी संस्कृति के अनुरूप अजमेर स्थित ख्वाजा मोहिनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में हाजरी लगवाने पहुंचीं। इसका चित्र भी इण्डियन एक्सप्रैस ने प्रकाशित किया किन्तु ६ नवम्बर के अंक के मुख पृष्ठ पर।

यहां भी नहीं चूके

(अजमेर) वीतराग श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी महाराज का साहित्य के प्रति अनुराग जगत् विख्यात है। अपने अनुसन्धान भरे व्यस्ततम जीवन से समय निकालकर उन्होंने दर्जनों ग्रन्थ लिखे तथा दुर्लभ एवं अनुपलब्ध बहुमूल्य पुस्तकों को प्रकाशित करा उन्हें स्वाध्याय शील पाठकों को अत्यल्प मूल्य पर उपलब्ध कराना इनके जीवन का मुख्य लक्ष्य रहा है। उत्सव में अथवा पुरातत्व सम्बन्धी अनुसन्धान कार्य हेतु जहां कहीं भी वे पहुंचते हैं, वहां भाषणों द्वारा प्रचार के साथ-साथ अपने वाहन में सदा साथ रखे साहित्य को भी सस्ते में जनता तक अवश्य पहुंचाते रहते हैं। इस बार जबकि उन्हें उनके कर्मठ कर्तृत्व कारण महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह का अध्यक्ष बनाया गया तथा इस समारोह को सफल करने हेतु उन्होंने अपने स्वास्थ्य तक की परवाह न कर महीनों तक दिन-रात एक कर इस आयोजन को हर दृष्टि से सफल बनाया, वहां आयोजन के दिनों में ३ नवम्बर से ६ नवम्बर तक समय निकालकर अपनी स्वाभाविक रुचि साहित्य प्रसार का कार्य भी ज्यों का त्यों उन्होंने किया। श्रद्धालु भक्त परस्पर स्वामी जी सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने हेतु पूछते तो दूसरे को यही उत्तर देते सुना जाता कि महाराज जी किताबों वाली स्टाल पर मिलेंगे। अतः स्वामी जी इस कार्य से यहां भी न चूके।

साम्प्रदायिकता के विरुद्ध जनता को जागृत करने का आह्वान

दयानन्द नगर (अजमेर) ५ नवम्बर (शास्त्री): महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के तीसरे दिन आयोजित सौमनस्य सम्मेलन में विघटनकारी तथा साम्प्रदायिक शक्तियों के विरुद्ध जनमत जागृत करने पर जोर दिया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुये भूतपूर्व रक्षा राज्य मंत्री हरयाणा सभा के प्रधान एवं दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के कार्य कर्त्ता प्रधान प्रो०शेर सिंह ने खालिस्तान आन्दोलन की तीखी भर्त्सना करते हुये कहा कि यह आन्दोलन सिखों का नहीं बल्कि विदेशी और साम्प्रदायिक ताकतों के हाथ बिके हुये कुछ लोगों का है।

प्रो० शेर सिंह ने आरोप लगाया कि इस आन्दोलन में उन्हीं लोगों का हाथ है जिन्होंने पहले भारत के दो टुकड़े किये तथा अब इसे शक्तिशाली होते देखकर और बांटना चाहते हैं। यही कारण है कि खालिस्तान को मांग भारत की बजाय लंदन और कनाड़ा से उठती है। प्रो० सिंह ने शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी पर भी आन्दोलन को भड़काने का आरोप लगाया।

कई प्रबुद्ध विचारकों ने राष्ट्रीय परि प्रेक्ष्य में अपने विचार रखे। आर्य जगत् के वरिष्ठ विद्वान् एव भूतपूर्व सासद श्री पं० शिव कुमार जी शास्त्री जिन्होंने इस सम्मेलन को अध्यक्षता की, ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सरकार की तुष्टिकरण की नीति की कटु आलोचना की तथा कहा कि जब तक यह नीति जारी रहेगी तब तक राष्ट्रीय सौमनस्य स्थापित नहीं हो सकता।

आर्य जगत् के वरिष्ठ वक्ता प्रो० रत्न सिंह जी गाजियाबाद ने सौमनस्य सम्मेलन का सफल संचालन किया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित शिक्षा सम्मेलन में गुरुकुल शिक्षा पद्धति लागू करने पर बल

दयानन्द नगर (अजमेर) ५ नव० (का० सं०): समारोह के तीसरे दिन की तीसरी अर्थात् रात्रिकालीन बैठक में शिक्षा सम्मेलन आयोजित था जो शिक्षा के क्षेत्र में उपस्थित वर्तमान समस्याओं पर पर्याप्त ऊहापोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता डी० ए० वी० संस्थाओं के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी ने की।

शिक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुये अपने उद्घाटन भाषण में वरिष्ठ शिक्षा विद् तथा अजमेर के डी० ए० वी० कालेज के भूतपूर्व प्राचार्य श्री दत्तात्रेय वाब्ले ने पब्लिक स्कूलों की स्थापना का विरोध करते हुये गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आज की शैक्षिक समस्याओं का एक मात्र समाधान बतलाकर इसे ही लागू करने पर बल दिया जबकि बाद के कुछ वक्ताओं ने इसका विरोध करते हुये इसे जारी रखने की मांग की।

जिन वक्ताओं ने इस सम्मेलन में अपने विचार रखे उनमें श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री, पं० आनन्द प्रिय, श्री तिलक राज, प्रो० रत्न सिंह; श्री दरबारी लाल, प्रो० कैलाशनाथ सिंह अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, श्री सच्चिदा नन्द जी शास्त्री तथा डा० प्रज्ञादेवी आदि के नाम प्रमुख हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र बाजी मार ले गया

दयानन्द नगर अजमेर (शास्त्री): ३ यहां पर आयोजित महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर ६ नवम्बर को सांय ५ बजे से ही आर्य वीर दल की टुकड़ियों के व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम ब्र० देवव्रत जो व्यायामाचार्य के निर्देशन में शुरु हो गया था जो अन्तिम दिन तक इसी समय से ६½ बजे सांय तक नित्य प्रति निरन्तर चलता रहा।

यो तो प्रत्येक टुकड़ी द्वारा प्रदर्शित करतब दर्शक रूप में उपस्थित अपार आर्य समूह का मन मोह लेते थे जिसकी स्पष्ट झलक दर्शकों की तुमुल करतल ध्वनियों से मिलती रही किन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सरक्षण में चल रहा गुरुकुल कुरुक्षेत्र इस अवसर पर इस संवाददाता के अनुसार बाजी मार गया। प्रतिदिन इस संस्था के ब्रह्मचारी नित्य नये परिवेश में प्रदर्शन-स्थल पर बैण्ड को आह्लादक धुन के साथ उतरते तथा व्यायाम के साथ-साथ, लाठी, भाला आदि अस्त्र-शस्त्र संचालन की अद्भुत कला के द्वारा दर्शकों को बरबस आकृष्ट कर लेते थे। गुरुकुल के प्रबन्धक इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ समारोह का प्रथम चरण सम्पन्न

दयानन्द नगर अजमेर ६ नव० (का० सं०): ऋषि उद्यान में गत ६ अक्तूबर से आरम्भ चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह का प्रथम चरण श्रद्धा भरे वातावरण में सम्पन्न हुआ। इसी स्थान पर एक सौ वर्ष पूर्व महर्षि को भस्मी बिखेरी गई थी। यज्ञ कार्य यद्यपि नित्य की भांति ६ बजे ही आरम्भ होना था जबकि आज पूर्णाहुति करने हेतु स्थान पाने की दृष्टि से श्रद्धालु आर्य जनता प्रातः ५ बजे हो यज्ञशाला में पहुंचने लगी थी तथा यज्ञ शुरु होने तक भीड़ इतनी बढ गई थी कि कुछ भी स्पष्टरूप से सुना नहीं जा सकता था।

महात्मा दयानन्द जी देहादून वाले चतुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा थे। यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त दीक्षा समारोह हुआ जिसमें दक्षिण अफ्रीका में रहने वाली भारत मूल की महिला श्रीमती विद्यावती देवी ने संन्यास की दीक्षा ली, इसी प्रकार सुश्री प्रभावती ने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली।

आर्य समाज से सम्बद्ध युवतियों के संगठन केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् ने देश की युवतियों को जागृत करने के उद्देश्य से लक्ष्मीबाई ब्रिगेड की स्थापना का भी निश्चय किया।

दीक्षा समारोह के अवसर पर बोलते हुये विभिन्न वक्ताओं ने आनासागर झील, जिसके किनारे ऋषि उद्यान स्थित है के बीच महर्षि दयानन्द की प्रतिमा स्थापित किये जाने की मांग की जिसे परोपकारिणी के अधिकारियों ने तत्काल स्वीकार कर लिया। इसके साथ ही महर्षि की जन्म स्थली टंकारा, जो जर्जर हालत में पहुंच चुकी है, को दर्शनीय बनाने के लिये एक व्यापक योजना तैयार की गई। टंकारा सहायता समिति ने धन संग्रह करने के लिये एक अपील भी प्रसारित की जिसमें प्रत्येक आर्य को पांच पांच रुपये देने को कहा गया है।

महर्षि दयानंद से संबध्द स्थल स्मारक के रुप में विकसित होंगे

दयानन्द नगर अजमेर, ६ नवम्बर (वार्ता)। मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर ने घोषणा की है कि सरकार राजस्थान में महर्षि दयानन्द से संबद्ध स्थलों को स्मारक के रुप में विकसित करने का हर संभव प्रयास करेगी।

महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी समारोह के दूसरे दिन आयोजित श्रद्धांजलि सम्मेलन में उन्होने बताया कि अजमेर की भिनाय कोठी को, जहां महर्षि दयानद ने आज से ठीक १०० साल पूर्व निवास किया था। स्मारक के रुप में विकसित किया जायेगा।

उन्होंने बताया कि कोठी के दो तिहाइ हिस्से को लेकर अदालत में मुकदमा चल रहा है। इसलिए कठिनाई अवश्य है फिर भी सरकार की कोशिश होगी कि कुछ लेदेकर इस समस्या का समाधान किया जाए कोठी का एक तिहाई हिस्सा पहले से ही आर्य समाज के पास है।

उदयपुर के नवलखा महल की चर्चा करते हुए श्री माथुर ने बताया कि इसके बाद में भी आवश्यक जानकारी हासिल कर उसे स्मारक के रुप में विकसित करने का प्रयास किया जायेगा।

इससे पूर्व समिति के अध्यक्ष स्वामी ओमानद ने इन स्थलों को स्मारक के रुप में विकसित करने का अनुरोध किया था।

उन्होंने यह भी मांग की है कि ऋषि उद्यान में जहां कि महर्षि दयानद की भस्मी का छिड़काव हुआ था कुछ लोग अतिक्रमण कर रहे हैं जिसे हटाया जाना चाहिए किन्तु मुख्यमन्त्री ने इस सबंध में कुछ नहीं कहा।

भव्य शोभा यात्रा

दयानन्द नगर अजमेर, ५ नव० (का० सं०): महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के तीसरे दिन ५ नवम्बर को भव्य एवं विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जो दयानन्द आश्रम केसरगंज से आरम्भ होकर ऋषि उद्यान तक पहुंची। लगभग सात किलो मीटर की लम्बी इस शोभा यात्रा ने अजमेर की ऐतिहासिकता पर अपनी मोहर लगाकर इसकी पुष्टि कर दी।

इस यात्रा ने उस समय साम्प्रदामिक सद्भाव का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया जब ख्वाजा मोहिनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के बुलन्द दरवाजे पहुँचने पर दरगाह के खादियों ने उस पर गुलाब के फूलो तथा गुलाब जल की वर्षा की।

प्रात: ९ बजे चली इस शोभा यात्रा में देश के कोने-कोने से आये आर्यो के साथ विदेशी ऋषि भक्तो ने भी भाग लिया। पुरुष एवं महिलाए परम्परागत वेशभूषा पहने, नारे लगाते, मस्ती में झूमते, मचाते तथा गाते बजाते चल रहे थे। आर्य वीरदल की टुकड़ियो के लाठी-तलवार, चाकू तथा भाला आदि चलाने के करतब इसकी शान में और वृद्धि कर रहे थे।

शोभा यात्रा में 'जय ऋषि की', 'महर्षि दयानन्द की जय', विदेशी मतावलम्बियों भारत छोड़ो, 'ईसाई पादरियो-भारत छोड़ो', 'यदि भारत में रहना होगा तो बन्दे मातरम् कहना होगा', तथा 'गोहत्या बन्द करो के नारे लगाये जा रहे थे।

रेगिस्तान के जहाज ऊट पर टगे ओर ध्वज के पीछे चल रही इस शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सर्वानन्द जी, प्रो० शेर सिंह तथा श्री ओंकरण जी शारदा एवं मूर्धन्य संन्यसी तथा आर्य प्रतिनिधि सभाओं के नेतागण कर रहे थे। इनके पीछे यति मण्डल की मस्तानी टोली, उनके पीछे आर्य युवक युवतियां तथा उनके पीछे विभिन्न प्रान्तो से आये प्रतिनिधि भी थे।

यह भव्य शोभा यात्रा जहां-जहां से गुजरी वहां सड़कों के दोनों ओर खड़े हजारों की संख्या में अजमेर वासियों ने इस पर फूल बरसाये तथा उनका स्वागत किया। हरयाणा सभा के उपदेशक श्री सुखदेव जी शास्त्री को भी दरगाह के खादिमों पर जो शोभा यात्रा पर पुष्प वर्षा तथा गुलाब जल छिटक रहे थे, प्रतिकार में प्रेमपूर्वक फूल बरसाते देखा गया। इस प्रतिनिधि ने जहां कहीं इस यात्रा पर अजमेर वासियों की प्रति क्रिया जानने का यत्न किया वहीं उसे उत्तर मिला कि हमने अपने जीवन में इससे पूर्व अजमेर में कभी इतना बड़ा जलूस नहीं देखा।

आकाश वाणी पर ला० लाजपतराय पर वार्ता

लाला लाजपतराय का त्याग और बलिदान पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री द्वारा आकाशवाणी केन्द्र रोहतक से वार्ता १७-११-८३ को सांय काल को प्रसारित होगी।

मोरिशस के आर्य नेता सिद्धान्ती भवन में आगमन

मोरिशस आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मोहन लाल मोहित अजमेर में शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन रोहतक में पधारे। सभा के प्रधान प्रो. शेर सिंह तथा मन्त्री म. भरत सिंह वानप्रस्थ ने उनका स्वागत करते हुए सभा का प्रकाशित साहित्य भेंट किया। हरयाणा मे आर्य समाज के प्रचार प्रसार को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। —केदारसिंह आर्य कार्यालयध्यक्ष

विधि पूर्वकगृह प्रवेश

१ नवम्बर को आर्य नेता प्रो. प्रकाशवीर जी विद्यालकार ने अपने नव-निर्मित गृह जो उन्होंने चाणक्य पुरी में शीला टाकीज के पीछे बनाया है, में वैदिक विधिपूर्वक प्रवेश किया। गृह प्रवेश-यज्ञ सर्वहितकारी के सह-सम्पादक प. रणवीर जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया इस अवसर पर चौ. माड़ू सिंह जी भूतपूर्व शिक्षा मंत्री हरयाणा, सर्वहितकारी के सम्पादक डा. सुदर्शन देवाचार्य तथा अन्य अनेक शिक्षा विद्, विधिवेता प्रमुख नागरिक उपस्थित थे। प्रोफेसर साहब ने इस उपलक्ष्य में १०१, खानपुर तथा भैंसवाल की शिक्षा संस्थाओं को तथा २५- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को प्रदान किया।

आर्य नेता श्री देशराज चौधरी का निधन

दिल्ली तथा हरयाणा के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री देशराज जी चौधरी का ११-११-८३ को दिल्ली में निधन हो गया। आप ७१ वर्ष के थे। अब स्वतन्त्रता सेनानी थे। और आर्यसमाज के कार्यों में बहुत योगदान किया है। दिल्ली के उपमहापोर भी रहे थे। भारत में सब से बड़ा आर्य अनाथालय पटौदी हाउस दिल्ली के संचालक थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद् गति प्रदान करें। —सभामन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

५ उत्तम विवाह की रीति

महर्षि जी ने बतलाया है—"पंचविंशे ततोवर्षे पुमान् नारी तु षोडशे" अर्थात् पुरुष में २५ वर्ष से पहले स्त्री में १६ वर्ष से पहले सन्तान उत्पत्ति का सामर्थ्य नहीं होता और इसमें भी स्वयं वर की प्रथा सर्वश्रेष्ठ बताई है। विवाह में पति के वरण में शास्त्रार्थ तक प्रश्न उत्तर शास्त्रार्थ भी होते थे। इसीलिये कहा है कि :'चाहे लड़का लड़की मरण पर्यन्त कुंवारे रहें परन्तु जब तक एक दूसरे कुल गुण कर्म स्वभाव न मिले विवाह न करें और शरीर, विद्या, योग्यता के सामर्थ्य बिना विवाह न करें इसीलिए महर्षि जी ने मनुजी का वचन दिया है —सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्यथार्थैवचा यस्मिन्नेवकुले नित्य कल्याणतत्र वै ध्रुवम् अर्थात् जब स्त्री पुरुष विवाह करना चाहें तब विद्या विनयशील रूप आयु बल कुल और शरीर का परिणाम आदि यथायोग्य होना चाहिए इसीलिये महर्षि जी ने विवाह की उत्तमोत्तम अवस्था पुरुष की अठतालीस और स्त्री की चौबीस वर्ष नियत की है और क्रम से २५, ३६, ४८ वर्ष की आयु तक के ब्रह्मचारियों की संज्ञा दी है।

(वसु, रुद्र, आदित्य की)

६ ब्रह्मचर्य—

ब्रह्मचर्येण तपसादेवा मृत्यु मुपाघ्नत:। अर्थात् देवों ने ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु को भी जीत लिया था। पातञ्जलि मुनिमहाराज ने अपने महाभाष्य ग्रन्थ में यह कहा है कि—अष्टा शीति सहस्राणि ऋषिणा मूर्ध्वरेतसाम् बभुवु.। अर्थात् पतञ्जलि के समय तक भारत में ८८ सहस्र उर्ध्वरेता हो चुके थे जिनको स्वप्न में भी स्त्री का ध्यान नहीं आया। उर्ध्वरेता भवेद् यस्तु स देवो न तु मानव: स्वत: महर्षि दयानन्द और महाभारत के भीष्म पितामह भी उर्ध्वरेता थे जिनका ललाट प्रचण्ड देदीप्यमान ओजस्वी था और श्रीकृष्ण जी रामचन्द्र जी आदि गृहस्थ ब्रह्मचारी रहे थे जिनको एक या दो सन्तान ही थी आज का संसार तो विलासिता की भट्टी में भुन रहा है। परमात्मा ही रक्षक है।

७ महान् ऐश्वर्य प्रदाता यज्ञ

महर्षि जी ने यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के इकत्तिसवें अनुवाद में—त्रयास्त्रिशन्त्रिशता० आदि वचनों के प्रमाण से नवीन पौराणिकों के ३३ करोड़ देवताओं का खण्डन करके केवल ३३ कोटि देवों ने अर्थात् ३२ वां देव यज्ञ को ही माना है अर्थात् जो सुगन्धी द्वारा वायु और अन्न की शुद्धता से ऐश्वर्य का प्रदाता इसीलिए महर्षि जी ने प्रत्येक मनुष्य को दैनिक अग्निहोत्र, इज्या अर्थात् पक्षेष्टि यज्ञ और पन्च महायज्ञ तथा यज्ञों में नरमेध, राजसूय यज्ञ और अश्वमेध यज्ञ आदि का विधान बताया है किसी भी यज्ञ में पशुओं को नहीं मारा जाता था। नरमेध यज्ञ मृतक मनुष्य की अन्त्येष्टि को बताया और अश्वमेध यज्ञ में अग्नि तथा घोड़े की तीव्र शक्ति के समान उन्नतिशील राष्ट्र के लिए उपदेश दिया है। यह हमें महर्षि जी की महाकृपा से ज्ञान हुआ है कि—स्वर्गकामो यजते यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म। यज्ञश्वं सविषातना गिरा—यज्ञ श्रेष्ठ पदार्थों की सुगन्धि से जल और वायु की शुद्धि द्वारा अन्नों को श्रेष्ठ मिष्ठ पुष्टिकारक और स्वादिष्ट बनाता है। इसीलिये महर्षि जी कहते हैं कि जब तक भारत में यज्ञों का प्रचलन रहा तब तक सारे राष्ट्र में अन्न धन आरोग्य एवं ऐश्वर्य का स्थापन रहा और अब भी वैसा ही हो सकता है। प्राचीन इतिहासों में १०० यज्ञ करने वाले राजा को इन्द्र की उपाधि मिलती थी और महर्षि दयानन्द ने भी गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान से १०-१० लाख आहुतियों के विधान का उपदेश किया है। प्राचीन काल के सभी आर्य पुरुष स्त्री प्रात: सायं की दैनिकचर्या में 'ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ रचाते थे और ऋषि यज्ञ, देव यज्ञ, भूत यज्ञ, पितृ यज्ञ, नृ यज्ञ का पालन करते थे। यह भी हम पर महर्षि जी का ही ऋण है जो भारत और संसार में आज इस समय सहस्रों घरों में यज्ञ रचाए जाते हैं।

८ आर्षपाठ विधि—

सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में महर्षि जी ने आर्ष और अनार्ष ग्रंथो की गणना की अनार्ष ग्रन्थ जाली तन्त्र ग्रन्थ हैं जो अविद्या भ्रान्ति और अन्धकार फैलाते हैं और आर्ष ग्रन्थ विद्या, ज्ञान, प्रकाश और निभ्रान्ति फैलाते हैं इसीलिए ऋषि जी कहते हैं कि जितनी विद्या और सुशिक्षा आर्ष पाठविधि से २० या २१ वर्ष में हो सकती है उतनी अनार्ष पद्धति से १०० वर्ष में भी नहीं हो सकती आर्ष पाठविधि से आर्ष विधि का विधान ऐसा है जैसे समुद्र में गोता लगाना और बहुमूल्य रत्नों का प्राप्त करना और अनार्ष पद्धति का ऐसा विधान है जैसे पहाड़ खोदना और कौड़ी प्राप्त होना इसीलिए महर्षि जी ने व्याकरण में अष्टाध्यायी, महाभाष्य ब्राह्मण ग्रन्थ, दशोपनिषद्, छ: दर्शन छ: वैदिक अङ्ग, चार उपवेद, चारों मूल वेदों का पढ़ना ही सर्वश्रेष्ठ बतलाया है।

९ जाति-पाति खण्डन—

महर्षि दयानन्द ने मनुष्य जाति एक ही मानी है शेष सब पशु-पक्षी कोटि में अनेक जातियां मानी हैं। इसमें शास्त्रीय वचन है—गुणा: सर्वत्र पूज्यन्ते पितृ वंशो निरर्थक:। अर्थात् सर्वत्र गुणों की पूजा होती है पितृवंश चाहे कुछ भी हो—समान प्रसवात्मिका जाति: और जन्म से जाति की पहचान होती है—सति मूले तद् विपा को जाति: आयुर्भोगा:। यह जाति पाति का बखेड़ा नवीन पौराणिक स्वार्थी लोगों ने फैलाया है। महर्षि जी ने बताया कि महाभारत के राजसूय यज्ञ में ऋषि-मुनि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सबने एक पाकशाला में एक ही स्थान पर बैठकर भोजन किया था। एक वचन अन्यत्र है—द्विजा: अधिष्ठाता: शूद्रा: संस्कार्ता: स्यु: अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य रूप द्विज अधिष्ठाता गृह स्वामी हों और अनाड़ी अनपढ़ शूद्र लोग भोजन बनाने वाले हों—स्त्री शूद्रो नाधीयताम्। नवीन पुराणिकों के इस अनर्गल आलाप का महर्षि जी ने प्रबल खण्डन किया है अर्थात् जाति-पाति ऊंच-नीच और छुआछूत की मनुष्य मनुष्यों में कोई छोटे बड़े की खाई नहीं है। पूना के प्रवचन में एक पद्य भी दिया है ज्यों कवियों की बात बात में बात, ज्यों केलों के पात पात में पात ज्यों छलियों की घात घात में घात त्यों हिन्दुओं की जात जात में जात।

१० हिन्दी भाषा तथा राष्ट्रीय संगठन

महर्षि जी ने सर्वत्र सम्पर्कीय भाषा हिन्दी का प्रचार किया और अपने सारे ग्रन्थ हिन्दी भाषा में ही रचे यद्यपि उनकी पठन-पाठन की भाषा संस्कृत और मातृभाषा गुजराती थी। हिन्दी का अधिक प्रचार महर्षि जी ने ही किया था और संस्कृत का महत्त्व तो सर्वश्रेष्ठ बताया है इसके तुल्य कमनीय, रमणीक, मनोवैज्ञानिक, स्वाभाविक और सरल भाषा अन्य कोई नहीं है। महर्षि जी इस भाषा के माध्यम से समूचे राष्ट्र का संगठन चाहते थे इसीलिये उन्होंने हिन्दी संस्कृत के साम्मुख्य में अंग्रेजी के खण्डनात्मक ब्योरे दिये हैं तभी तो केशवचन्द्र सेन को कह दिया था कि संस्कृत के पठन पाठन से तुम्हारा ज्ञान बहुत अधिक बढ़ सकता है।

११ राष्ट्रीय स्वाधीनता के अग्रदूत

जो अंग्रेजी अजगर भारत को नाना प्रकार की कुटिलताओं से निगल रहा था जिसने देश की सारी सम्पत्ति इंग्लैण्ड में खींच ली थी और किसी न किसी बहाने से भारत के राजाओं और प्रजा को लड़ाकर फूट से खण्डित कर दिया था और नि:सन्तान राजाओं और नवाबों के राज्य हड़प लिए थे। हमें वैदिक धर्म से विमुख करके ईसाइयत के कुचक्र में फंसाया था और जिस दुष्ट कुटिल अंग्रेज ने व्यापार के बहाने से हमें खूब लूटा था और हमारे उद्योग धन्धों हस्त कलाओं को कुण्ठित करके हमें पूर्णतया दरिद्र बना दिया था। उन दुष्ट फिरंगियों की इस कूटनीति को महर्षि दयानन्द ने गम्भीरता से परखा था और उनके गुरु विरजानन्द, स्वामी पूर्णानन्द और उनके गुरु स्वामी ओमानन्द ने राष्ट्र की हीनता के प्रति साधु समाज को जागृत करके अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का अतिगुप्त आन्दोलन चलाकर भारतीय राजाओं को स्वाधीनता संग्राम के लिए तैयार किया था।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में ऋषि निर्वाण उत्सव के अवसर पर

स्वामी दयानन्द के चित्र का अनावरण समारोह सम्पन्न

(केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष द्वारा)

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक मे प्रथम बार ३ नवम्बर १९८३ को ऋषि निर्वाण शताब्दी समारोह बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। प्रातः ९ बजे हवन यज्ञ आरम्भ हुआ जिसमे विश्वविद्यालय के कुलपति श्री हरद्वारीलाल, उनका स्टाफ तथा कालेजो एवं स्कूलों के छात्र, छात्राएँ भारी संख्या में श्रद्धा पूर्वक सम्मिलित हुए। यज्ञ के पश्चात् प्रसाद भी वितरित किया गया।

१० बजे विश्वविद्यालय के सभाकक्ष में चौ० सुलतानसिह सदस्य राज्य सभा ने ऋषि दयानन्द के चित्र का अनावरण किया। इससे पूर्व विश्वविद्यालय में कही भी ऋषि दयानन्द का चित्र नहीं था। महर्षि दयानन्द के नाम पर चलने वाले एक मात्र विश्वविद्यालय में यह बात सभी को खटकती थी।

निर्वाण उत्सव का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध वेदिक विद्वान डा० तुलसीराम जिन्हें अंग्रेजी विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है, ने हरयाणा सरकार का धन्यवाद करते हुए कहा कि हरयाणा की जनता में जितनी श्रद्धा स्वामी दयानन्द पर है उतनी किसी अन्य महापुरुष पर नहीं है। इस विश्वविद्यालय के नामकरण के अनुसार यहा ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तो, मन्तव्यों तथा आदर्शों का प्रचार प्रसार आवश्यक है। केवल विश्वविद्यालय ही इसका सर्वोत्तम स्थान हो सकता है क्योंकि यहां से शिक्षा पाकर छात्र एव छात्राएं अपने जीवन में परिवर्तन कर सकते हैं। चौ० राममेहर एडवोकेट ने कुलपति महोदय से अनुरोध किया कि यहाँ ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों पर अनुसन्धान के लिए दयानन्द चेयर स्थापित की जावे। आर्यसमाज के वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी भीष्म जी महाराज ने छात्र छात्राओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि ऋषि की शिक्षाओं पर चलकर जीवन में सफलता मिलेगी। आकाशवाणी रोहतक के निदेशक श्री मुस्ताक अहमद राकेश ने ऋषि दयानन्द को श्रद्धाञ्जली देते हुए कहा कि मुझे ऋषि दयानन्द के आन्दोलन में श्रद्धा है। हमें उनके बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रतिउप-कुलपति डा० रामप्रकाश ने अपने प्रभावशाली व्याख्यान में उन लेखको की निन्दा की जो ऋषि दयानन्द के साहित्य को पढे बिना ही उसकी आलोचना करते हैं। निष्पक्ष होकर जो एक बार सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ लेता है वह फिर कभी भी ऋषि की आलोचना नही कर सकता। उनके सिद्धान्त तथा विचार विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं। ऋषि दयानन्द सारे संसार के महापुरुषों में सबसे ऊँचा स्थान रखते हैं। अत: वे सबके लिए प्रकाश सतम्भ हैं।

चौ० सुलतानसिह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ऋषि दयानन्द को श्रद्धाञ्जलि देते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द का हरयाणा की जनता पर बहुत उपकार है। यदि वे नही आते तो आज हम स्वतन्त्र नहीं हो सकते थे। विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, दलितोद्धार, शाकाहार भोजन, राष्ट्रभाषा, स्वदेशी वस्त्र आदि का प्रचार उनकी ही देन है। हरयाणा की जनता ने उनके इन सिद्धान्तों को अपना कर बहुत विकास किया है। ऋषि दयानन्द की कृपा से हरयाणा प्रदेश आज संसार में विशेष स्थान रखता है। चौ० हरद्वारीलाल कुलपति ने ऋषि दयानन्द को महान् पुरुष बताते हुए घोषणा की कि विश्वविद्यालय में संस्कृत भाषा के प्रसार करने तथा ऋषि दयानन्द के साहित्य पर अनुसंधान हेतु वेदिक विद्वानो की सेवायें ली जावेंगी।

अन्त में डा० जे० सी० शर्मा ने ऋषि दयानन्द निर्वाण पर सामूहिक श्रद्धाजलि अर्पित की। शान्ति पाठ के साथ समारोह की कार्यवाही समाप्त हुई।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२



सर्वहितकारी

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष १० अङ्क ४८ | २१ नवम्बर १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन ११ दिसम्बर १९८३ को दयानन्दमठ रोहतक में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अन्तरंग सभा द्वारा दिये गए अधिकार के अनुसार सभा का वार्षिक अधिवेशन ११ दिसम्बर १९८३ रविवार को ११ बजे प्रातः रोहतक में करना निश्चित किया है।

इस अधिवेशन में सभा द्वारा चलाई जा रही शिक्षण संस्थाओं तथा सभा के वेदप्रचार आदि विभागों के आगामी वर्ष के प्रस्तावित आनुमानिक आय व्यय (बजट) स्वीकार किये जावेंगे और हरयाणा में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार तथा शुद्धि आदि के महत्वपूर्ण कार्यों को प्रगति देने की योजना तैयार की जावेगी।

इसी अवसर पर सभा के अधिकारियों आदि का आगामी वर्ष के लिए निर्वाचन भी किया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्धित आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे सभा के अधिवेशन में भाग लेने के लिए अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों की सूची फार्म भर कर वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी के प्राप्तव्य शुल्क के साथ सभा कार्यालय में यथाशीघ्र भेज देवें, ताकि सभा के नियमों के अनुसार प्रतिनिधियों को १५ दिन पूर्व अधिवेशन का ऐजण्डा भेजा जा सके।

सभा कार्यालय की ओर से जिन आर्यसमाजों के प्रतिनिधि फार्म [illegible] त्रुटियों को पूरा करने के लिए वापिस भेजे हुए हैं, उन फार्मों को भी तुरन्त सभा कार्यालय में भेज देवे ताकि उनकी आवश्यक जांच पड़ताल के पश्चात् प्रतिनिधियों को स्वीकार करके अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए प्रवेशपत्र तथा ऐजण्डा भेज दिया जाये।

आशा है आर्यसमाजें हरयाणा में आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने तथा सभा के भविष्य को उज्ज्वल करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को इस अधिवेशन में भाग लेने के लिए गत वर्षों की भान्ति भेजकर अपना अमूल्य सहयोग देंगे।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी सभा मन्त्री

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों की सेवा में सभा कार्यालय से निरन्तर पत्र लिखकर निवेदन किया जा रहा है कि जिन महानुभावों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपना शुल्क १५ रु० मनीआर्डर द्वारा भेज देवे। परन्तु अभी तक कुछ ग्राहकों ने अभी तक इस ओर ध्यान नहीं दिया। अतः पुनः निवेदन है कि पत्र प्राप्त करते ही १५ रु० मनीआर्डर द्वारा भेज देवें ताकि सर्वहितकारी पूर्व की भान्ति भेजा जाता रहे। शुल्क प्राप्त न हो सकने पर विवश होकर पत्र बन्द करना पड़ेगा।

आशा है ग्राहक महानुभावों का सहयोग एवं समर्थन पूर्व की भान्ति मिलता रहेगा। व्यवस्थापक

हरयाणा की जनता को हार्दिक बधाई

परमात्मा की असीम कृपा तथा जनता के तन मन और धन के सहयोग से अजमेर में ३ से ६ नवम्बर तक महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह बहुत धूम-धाम से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

महर्षि दयानन्द द्वारा अपने जीवन काल में स्थापित परोपकारिणी सभा के अधिकारियों ने हरयाणा की जनता से शताब्दी की तैयारी के लिए २ लाख रुपया सग्रह करके भेजने की अपील की थी और यह भी अनुरोध किया था कि हरयाणा से भारी सख्या में नर-नारी अजमेर पहुँचें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा ने इस महान लक्ष्य की पूर्ति करने के लिए सितम्बर मास में किया गया नियत वार्षिक अधिवेशन भी स्थगित कर दिया था ताकि आर्यसमाजे तथा संस्थायें अपनी सारी शक्ति तथा साधन इस शताब्दी समारोह को सफल करने में जुट जाये। हमें यह कहते हुए बहुत प्रसन्नता एव सन्तोष हुआ है कि हरयाणा की आर्य जनता ने शताब्दी के लिए अधिक से अधिक धन, तथा जन का सहयोग देकर अपने उत्तरदायत्व को पूरी लगन तथा शक्ति के साथ निभाकर अपनी विगत शानदार परम्पराओं को बनाये रखा। इस प्रकार पुनः सिद्ध हो गया कि हरयाणा की आर्य जनता आर्यसमाज के कार्यों में सदा अग्रणी रहती है। मैं आर्य जनता का हृदय से आभारी हूं।

शताब्दी की रसीदबुकों के कूपन तथा उनका हिसाब तुरन्त भेजें

शताब्दी समारोह का आय-व्यय का व्योरा तैयार किया जा रहा है और हिसाब आडिट करवाना है। अतः इस समारोह के लिए दान एकत्रित करने हेतु जो रसीद बुक मेरे द्वारा अथवा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह द्वारा आर्य समाजों तथा आर्य कार्यकर्ताओं को दी गई थी उन सभी से मेरा निवेदन है कि रसीद बुकों के कूपन, बिना कटी हुई रसीद बुकें तथा धन संग्रह किया हुआ किसको दिया गया। उसका पूरा व्यौरा शीघ्र कार्यालय दयानन्द मठ, रोहतक में तुरन्त भेजने की कृपा करें।

—ओमानन्द सरस्वती

आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि फार्म तुरन्त प्राप्तव्य धन सहित भेजें।

प्रो० शेरसिंह द्वारा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर के अवसर पर दिया गया

विश्व को शान्ति का सन्देश

आज मानव समाज के सामने जो प्रश्न हैं उनमें शान्ति का प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि शान्ति के साथ ही मानव मात्र का सुख, समृद्धि, सुरक्षा और प्रगति जुड़े हैं। शीतयुद्ध के वातावरण में फिर से वैमनस्य और परस्पर घृणा की आग फैल रही है, सौमनस्य समाप्त हो रहा है। यदि युद्ध की विभीषिका से विश्व को बचाना है तो मानव के मस्तिष्क में शान्ति सेतु बनाने होंगे, हिंसा और घृणा को निकाल फेंकना होगा। अलग-अलग विचार और शासन पद्धतियों में विश्वास रखने वाले देशों के बीच मधुर सम्बन्ध बनाने होंगे। वेद ने इस स्थिति का निरूपण "सम्वदध्वम्" के प्रयोग से किया है। इधर मृदंग हैं उधर वीना है, इधर वंशी है तो उधर मजीरे—सब में स्पन्दन है, गति है, आलाप है, तान है आरोहावरोह है, सात स्वर भी हैं--लेकिन संगीत रस में डूबे ये सब वाद्य जैसे एक ही नये मधुर लोक की सृष्टि कर रहे हों। क्योंकि सब एक स्वर में मिले हैं, एक ही ताल में बन्ध कर गतिशील हैं इसमें एक भी वाद्य की ध्वनि बन्द होने से एक अभाव, एक शून्यता अखरने लगेगी। 'संगच्छध्वं सम्वदध्वं' का यह महासंगीत ऐसा ही विराट है, इसमें किसी को छोड़ने की बात ही नहीं, अधिक से अधिक आते जाओ, मिलते जाओ और विश्व कल्याण के महान वृन्दगान में शामिल हो जाओ। इसी के सहारे हम आनन्दमय विश्व समाज की रचना कर सकते हैं। शर्त एक ही है कि मानव मात्र के सुख के लक्ष्य-बिन्दु पर हमारे हृदय की तन्त्री मिली हो, और कोई बेसुरी तान इस आनन्द गान को भंग न करें। यदि सम्वादी स्वरों की जगह विवादी स्वर फूटने लगें तो यही महागान एक ऐसा प्रलयंकारी कोलाहल भी बन सकता है जिसकी भयंकरता से जड़ चेतन सब कांप उठे।

मानव जाति का दुर्भाग्य यही है कि ज्ञान और विज्ञान के समन्वय के अभाव में सम्वाद के स्वरों को बजाय विवाद के स्वर ही चारों ओर तीव्र से तीव्रतर होते जा रहे हैं। आज तो अपनी-अपनी ढफली अपना-अपना राग सुनाई दे रहा है। परस्पर अविश्वास के कारण एक दूसरे को मिटाने के मन्सूबे बनाये जा रहे हैं। मधुर गान की जगह प्रलयंकारी कोलाहल है, इससे मानव समाज का ही नहीं भूतचक्र का सन्तुलन (Ecological Balance) भी हिल गया है। हथियारों की होड़ और परमाणु विस्फोटों से धरती कांप उठी है। १९६३ में परमाणु विस्फोट पर प्रतिबन्ध लगने के बावजूद पिछले २० वर्षों में अमरीका के द्वारा ४०७ और रूस द्वारा ३३६ विस्फोट किए जा चुके हैं। परमाणु शस्त्रों के भण्डारों में परमाणु अस्त्रों की संख्या ५०,००० तक पहुंच चुकी है, और प्रत्येक बम की शक्ति हीरोशिमा में चलाये गये बम से सैंकड़ों हजारों गुणा अधिक है। ये हथियार कई बार पृथ्वी का विध्वंस कर सकते हैं, फिर भी एक दूसरे के हथियारों की काट के लिए नये से नये शस्त्र बनाये जा रहे हैं, संसार का अनन्त धन और लाखों वैज्ञानिकों का मस्तिष्क मानव समाज की बर्बादी में लग रहा है।

बीसवीं शताब्दी में दूसरे महायुद्ध के अन्त तक साढे सात करोड़ लोग युद्ध में मरे १९४५ के पश्चात् होने वाले क्षेत्रीय लड़ाइयों में भी १ करोड़ ६३ लाख लोग मर चुके हैं और उनमें से ९० लाख साधारण नागरिक हैं। सेना को नये से नये हथियारों से लैस करने के लिए प्रतिवर्ष ६६०० अरब रुपये व्यय हो रहे हैं, गरीब राष्ट्रों को भी सैंकड़ों अरब रुपये बड़े राष्ट्रों के हथियारों की जूठन पर व्यय करने पड़ रहे हैं। पिछले २० वर्षों में गरीब देशों को ४२०० अरब रुपये की सहायता (aid) दी गई, इसमें ४००० अरब रुपये तो हथियारों के लिये दिये गये और केवल २५० अरब रुपये आर्थिक मदद के लिए। इसका अर्थ हुआ कि गरीब देशों को आपस में लड़ने के लिये प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष १०० रुपये मिले और भूख मिटाने के लिये केवल ६ रुपये।

सहायता भी स्वार्थ के लिये ही दी जाती है उसमें भी परमार्थ की भावना नहीं है। सब के हित की भावना हो, केवल अपने हित की नहीं, तभी तो शान्ति की स्थापना होगी। शोषण और शान्ति एक साथ कैसे रह सकते हैं। शोषण पर आधारित कुव्यवस्था के रहते शान्ति की कल्पना कैसे की जा सकती है।

आज शक्तिशाली राष्ट्रों के शक्तिशाली नेता इस कुव्यवस्था को सदा-सदा के लिये चलाना चाहते हैं। विज्ञान और शिल्प ने उनके हाथ में बहुत बड़ी शक्ति दे दी है, और उसका उपयोग वे लोग मानव कल्याण की आवाज को दबाने में कर रहे हैं। आज उन्होंने एक नया सूत्र ढूंढ लिया हूं और यह नारा गुंजा दिया है कि कोई किसी के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करे। हस्तक्षेप किसे कहेंगे, इसकी परिभाषा भी अपनी सहूलियत के अनुसार शक्तिशाली लोग बना डालते हैं। मानवीय मूल्यों का ह्रास होता रहे, निर्बल राष्ट्रों पर अत्याचार होते रहें उनका शोषण होता रहे और सब मूक द्रष्टा बने रहें, यही वे लोग चाहते हैं।

इन बातों से निराश नहीं होना चाहिए, और न हाथ पर हाथ धर के बैठना चाहिये। खतरे के समय शुतुर्मुग की तरह रेत में चोंच दबाकर बैठने से जान थोड़े ही बचती है। जन सेवकों की यह सम्मिलत जिम्मेदारी है कि वे मानवता के आदर्शों से ओत प्रोत एक नई दुनिया बनायें प्रत्येक नागरिक सुरक्षित आर्थिक आधार, और राजनैतिक स्वतन्त्रता के बल पर सबका हित साधते हुए अपना भरपूर विकास कर सके।

मानव की समस्याएं इतनी विशाल और पेचीदा हैं कि उनका समाधान संसार के हर कोने में बसे हुए लोगों के सहयोग से ही सम्भव हो सकेगा। आज छोटे और बड़े स्तर पर अनेक संस्थायें इस काम में अपने-अपने ढंग से लगी हुई हैं। परन्तु एक दूसरे से अलग रह कर सेवा करने का युग अब समाप्त हो चुका है अब तो सृजनशील संस्थाओं द्वारा मिलकर न्याय तथा प्रेम से प्रेरित और अनुप्राणित नई व्यवस्था बनानी होगी।

क्या धर्म और धार्मिक लोग इसमें भूमिका अदा कर सकते हैं, यह प्रश्न स्वाभाविक है। यह समझ लेना चाहिये कि धार्मिकता और धर्मवादिता दो विपरीत वृत्तियां हैं। धर्म का उदय तर्क और विज्ञान के सहारे न्याय की प्रतिष्ठा के लिये होता है जब कि धर्मवाद अन्धे मोह से जन्म लेने वाली अज्ञानता के सहारे पलता है। विश्व का यह दुर्भाग्य है कि प्राय: अलग-अलग देशों में से विभिन्न मतावलम्बी मानव समुदाय धर्मवाद को ही धर्म मानकर अपना अनिष्ट करते आये हैं। धर्म के इस अनिष्ट और भ्रामक रूप की इतनी कड़वी अनुभूति मनुष्य के मन पर अंकित हो चुकी है कि आज की युवा पीढ़ी के मन में धर्म के विरुद्ध घृणा और विरक्ति पैदा हो गई है। यह आवश्यक हो गया है कि धर्मवादियों से भोली जनता को बचाया जाय, और धार्मिक लोग परिवर्तन के अग्रदूत बनकर प्रत्येक व्यक्ति में उसके सामाजिक कर्तव्य के लिये नई चेतना जगायें। सौ वर्ष से अधिक हो चले जब महर्षि दयानन्द ने धर्मवादियों के शोषण और पाखण्ड के विरुद्ध जहाद छेड़ा था। अपनी जान देकर ही उन्होंने इसकी कीमत चुकाई।

स्वामी दयानन्द ने विज्ञान और शिल्प का स्वागत किया, क्योंकि मानव के कष्टों को दूर करने में ये सशक्त साधन हैं। परन्तु शोषण और अन्याय को समाप्त करने के लिए सामाजिक चेतना और अन्तरात्मा की आवाज को जगाना वे अनिवार्य समझते थे। उन्होंने जनसाधारण को अपने अधिकारों की प्राप्ति और गरिमापूर्ण जीवन के लिए संघर्ष करने को कहा। इसी उद्देश्य से उन्होंने आर्यसमाज का आन्दोलन खड़ा किया था। (शेष पृष्ठ ४ पर)

महर्षि दयानन्द निर्वाण-शताब्दी समारोह अजमेर १९८३ को
स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा दिया गया

अध्यक्षीय भाषण

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आ सुव।

एवं श्रद्धा आदर के योग्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, पूज्य संन्यासी गण, माननीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री रामगोपालजी वानप्रस्थ, आर्य देवियो, उपस्थित भद्र पुरुषो !

आज परमात्मा की असीम कृपा से हम इस आयोजन को करने में सफल हुए हैं इस ऐतिहासिक एवं महत्त्वपूर्ण अवसर पर आपका स्वागत करते हुये हमें अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आपने यहां पधारने का कष्ट किया और इस विशाल आयोजन को सफल बनाने में जो सहयोग दिया है उसके लिये कृतज्ञता अभिव्यक्त करने के लिये आज शब्दों का अभाव अनुभव हो रहा है। इस समारोह की सफलता के लिए सभी उन महानुभावों का जिनसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष जो भी सहयोग प्राप्त हो सका है, हम उनका हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। विशेष रूप से हमारी महामान्या प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का जिन्होंने अपने अतिशय व्यस्त जीवन में से इस समारोह के लिए कुछ समय निकाल कर हमें उद्‌बोधन दिया, यह विशेष महत्व की बात है। साथ ही महर्षि द्वारा किए गए कार्यों के प्रति उनका कृतज्ञता ज्ञापन भी स्वागत समिति की ओर से एक बार पुनः मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं।

हमारे इस आयोजन में अनेक त्रुटियों का रह जाना सम्भव है। परन्तु साथ ही समारोह में भव्यता का भी अनुभव आप को हो यह भी स्वाभाविक है। इस भव्यता को मैं अपने सभी सहयोगियों के पुरुषार्थ का परिणाम मानता हूं और उनका साधुवाद करता हूं परन्तु त्रुटियों के लिए मात्र स्वयं को उत्तरदायी मानता हूं और उनके लिये मैं मन से विनम्र शब्दों में क्षमायाचना करता हूं।

यह सौभाग्य इस देश का है जिस में महर्षि दयानन्द जैसा युगपुरुष उत्पन्न हुआ, गुजरात की भूमि महिमयी हुई जहां टंकारा ग्राम की भूमि में बालक मूलशंकर ने जन्म लिया और अपनी बाल लीलाओं से परिजनों को आल्हादित किया परन्तु अजमेर नगरी को ही यह सौभाग्य और गौरव प्राप्त हुआ जहां बालक मूलशंकर महर्षि दयानन्द के रूप में "हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तू ने अच्छी लीला की" इस अन्तिम वाक्य के साथ स्वेच्छापूर्वक भीष्म पितामह की भांति प्राण त्याग किये। अजमेर की ऐतिहासिक परम्परा में यह एक अविस्मरणीय घटना है। सम्भवतः महर्षि के इतिहास प्रेम का ही यह परिणाम हो। राजा अजयदेव ने अरावलि की सुषमा पर्वतमाला के मध्य इस नगर की आधारशिला रखी जिनका स्मारक यहां से थोड़ी दूर पर अजयपाल के नाम से बना हुआ है। राजा अजयदेव द्वारा बनाये गये सिक्के प्राप्त होते हैं जो आज इस समारोह की प्रदर्शनी में जनता के अवलोकनार्थ रक्खे गए हैं। महर्षि ने जैसा सत्यार्थप्रकाश में आर्य राजाओं की वंशावली देते हुए लिखा है राजा पृथ्वीराज आर्यों के राजा हुए उनकी यह नगरी है। सामने उनका तारागढ़ का दुर्ग उस इतिहास की साक्षी दे रहा है। इस प्रदर्शनी में इनके पिता राजा सोमेश्वर देव व राजा पृथ्वीराज के सिक्के भी रक्खे गये हैं। राजा बीसलदेव का भी शिलालेख प्राप्त होता है जिसमें विदेशी आक्रान्ताओं को समाप्त करने का उल्लेख है। न केवल पृथ्वीराज अपितु इनके नाना अनंगपाल के सिक्के भी आज उपलब्ध हैं। इस प्रकार के प्रतापी राजाओं की सारी शक्ति ने भी राज्य की रक्षा में सफलता प्राप्त नहीं की तो उसका एकमात्र कारण भोगविलास की प्रवृत्ति, आपसी रागद्वेष एवं फूट है। सारी शक्ति गृहकलह में नष्ट भ्रष्ट हो गई। इतिहास का प्रसंग किसे स्मरण नहीं होगा जब इनके चाचा कान्हाराव ने अपने ही सरदार सोलंकी का सिर काट लिया। चन्देलों का —आल्हा ऊदल का युद्ध हुआ। राजा जयचन्द ने अपने लोगों को नीचा दिखाने के लिए विदेशियों को बुलाया और उनकी सहायता ली। विदेशी व्यापारियों ने राजा पृथ्वीराज की दुर्बलता का पता लगाया, और उनके कोष का भी आकलन किया। अपने घोड़ों का बहुत अधिक मूल्य बताकर राजा को बेच दिया फिर उन घोड़ों को विष देकर मरवा दिया। एक तरफ से कोष खाली हो गया और घोड़े भी मर गये। इस प्रकार से हमारी दासता की कहानी राजपूतों के उत्थान पतन के साथ चलती हुई पराधीनता के अन्धकूप तक पहुंच गई पराधीन राष्ट्र का क्या अस्तित्व हो सकता है और क्या गौरव यह तो इस देश की भुक्तभोगी जनता शताब्दियों से अनुभव करती आ रही है।

ऐसी पराधीनता के कटु क्षणों में महर्षि दयानन्द का इस देश की धरा पर अवतीर्ण होना यहां के निवासियों के पुण्य का ही परिणाम है, ऐसा मैं मानता हूं। भारत में अंग्रेजी शासन का सूत्रपात १८५७ के युद्ध के साथ हो गया था और परिणामस्वरूप बंगाल पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रभुत्व स्थापित हो गया और इसके साथ, मुगल, मराठे, जाट, राजपूत, सिक्ख राजा आपसी फूट के कारण उनसे, पराभूत हो गये, इस सदी का उत्तरार्ध में मुगलों का वर्चस्व समाप्त प्रायः था। इस के पश्चात् स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध कई संघर्ष हुए परन्तु सफल नहीं हो सके अन्त में क्रान्ति की वह चिनगारी १८५७ में प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम के रूप में फूट पड़ी। इस समय स्वामी दयानन्द की आयु ३३ वर्ष की थी, अनेक विद्वानो का मत है स्वामीजी महाराज ने इसमें सक्रिय रूप में भाग लिया परन्तु इसमें किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता। उन्होंने घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा था और उनके भविष्य के कार्य कलाप पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने निश्चित रूप से समझ लिया था। इन सारे प्रयासों की असफलता की एक ही कहानी है राष्ट्रीयता का इस देश में अभाव। जहां—गायन्ति देवा किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।

स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

जैसी पंक्तियां यहां के जल थल आकाश की पवित्रता को, इस देश में जन्म व्यक्ति के हृदय में अंकित करती हैं और यहां के तीर्थों में भ्रमण की, नदियों में स्नान की, पर्वतों की चोटियों पर देवदर्शन की प्रेरणा देती हैं। सारे देश को धर्माचार्यों ने चार मठों से बांधकर देश के भूगोल को धर्मप्राण जनता के मानस पटल अंकित कर दिया परन्तु इस देश के राजाओं ने, यहां रहने वाले समाज ने, भिन्न भिन्न जातियों ने, एक दूसरे में एकत्व अनुभव नहीं किया। यही राजनतिक दुर्दशा का मुख्य कारण था।

अंग्रेज ने यहां के साधनों को अपने वश करके, यांत्रिक शक्ति का उपयोग कर यहां के कला कौशल को समाप्त करने का पूरा प्रयत्न किया, जिससे इस देश का आर्थिक पिछड़ापन तीव्रगति से बढ़ता गया। धार्मिक दृष्टि से पन्थों, मतमतान्तरों ने वैदिक धर्म के एकत्व को भिन्न भिन्न करने में कोई न्यूनता न रखी, इनमें स्वार्थवशात् अन्धविश्वास और विकृतियों का समावेश होता गया। परिणाम यह हुआ जहां मुसलमानों ने बलपूर्वक धर्म परिवर्तन कराया वहां १८१३ के बाद बड़ी संख्या में ईसाई मिशनरीज भारत आने लगे और यहां की भोली जनता को ईसाई बनाने लगे, सरकार उनकी थी, उनके अनुकूल नियम व विधान बनाये गये, साधनों की न्यूनता न थी, राष्ट्र राजनैतिक दृष्टि से दासता के बन्धन में था वही पर आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में उसकी अपनी अस्मिता खोती जा रही थी। ऐसे अन्धकार के युग में भारत में नवयुग की ज्योति धार्मिक आन्दलनों के रूप में प्रकाशित हुई। इस समय महर्षि दयानन्द का कार्य बौद्धों के शून्यवाद को समाप्त करने वाले आचार्य शंकर के युग की पुनरावृति है। स्वामी दयानन्द जी ने आधुनिक साधनों का पूरा पूरा उपयोग कर विचारों के प्रचार एवं प्रसार के लिए भाषण लेखन के साथ प्रेस एवं संगठन की भी स्थापना की। सारे राष्ट्र को एक बनाने के लिए वे संस्कृति के मूलतक पहुंचे, इससे पूर्व के सारे सुधारक उपनिषदों से आगे नहीं बढ़ सके थे परन्तु स्वामी जी ने आगे बढ़कर हमारा वास्तविक मूल बीज वेद है, इसको समझा। वे प्राचीन ऋषि परम्परा के वर्तमान युग में प्रतिनिधि बने। उन्होंने सबसे पहले अपने अन्दर आयी बुराई को दूर करने का यत्न किया और उसके बाद बाहर से होने वाले आक्रमणों का मुह तोड़ उत्तर दिया। जीवन के लिए पहली आवश्यकता है अपने अस्तित्व की

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

अनुभूति और उसकी महत्ता को जानना। मुसलमानों ने तलवार के बल पर और ईसाइयों ने अपनी चतुरता पूर्ण युक्तियों से भारत के समाज में हीनता का भाव भरने का भरसक प्रयास किया परन्तु स्वामीजी ने वैदिक धर्मावलम्बियों की वह स्थिति बना दी कि अब उन्हें आक्रमण के भय से भागने की आवश्यकता नहीं रही। अब वे स्वयं ऐसा आक्रमण करने में समर्थ थे जिससे प्रतिपक्षी भाग खड़े होते।

यह इतिहास का कितना क्रूर सत्य है कि इस समाज ने और देश ने अपने संकुचित करने में ही अपने को सुरक्षित समझा, चाहे भौगोलिक दृष्टि से हो अथवा सामाजिक दृष्टि से हो। इस समाज का व्यक्ति दूसरे धर्म में तो जा सकता था, छूने से, समुद्र यात्रा जैसे, छोटे कारणों से परन्तु पवित्र आचरण से भी लौट नहीं सकता था। स्वामी दयानन्दजी की यह अपार दया है जिन्होंने हमें शुद्धि का मन्त्र दिया। जिसके अपनाने से ही इस देश का उद्धार सम्भव होगा।

स्वामी विरजानन्द ने अपनी दिव्यदृष्टि से इस तथ्य को समझ लिया था आर्य साहित्य के अध्ययन से ही वास्तविक ज्ञान सम्भव है। अनार्ष ज्ञान से भारत की यह दुर्दशा हुई। इस मन्त्र को उन्होंने ऋषि दयानन्द को दिया और कहा कि इसी प्रणाली से ही वेद को मानव मात्र के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। स्वामीजी ने अपने समय में पाठशालाओं की स्थापना की परन्तु उन्हें अपने मन्तव्य के अनुकूल चलता हुआ न देखकर उन्हें बन्द करा दिया। साथ ही अपने ग्रन्थों, शिक्षा प्रणाली के विषय में विस्तार से लिखा। आर्ष शिक्षा प्रणाली के बिना इस देश को इसके वास्तविकस्वरूप से अवगत नहीं कराया जा सकता। यह स्वामीजी ने बताया। यह ठीक है कि आर्यसमाज ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ा कार्य किया है परन्तु मेरी मान्यता है आर्यसमाज ने स्कूल कालेज खोल कर लोगों को साक्षर तो बनाया है, परन्तु आर्यसमाज के साधन व शक्ति का पूरा उपयोग वहां नहीं हुआ और कुछ अर्थों में तो उद्देश्य और संगठन को इससे हानि पहुँची है। आर्ष शिक्षा की ओर हमारा प्रयास होता तो आज संगठन के लिए कार्यकर्त्ताओं की और समाज में विद्वान् उपदेशक पण्डित पुरोहितों का ऐसा अभाव अभियोग देखने सुनने में न आता। आज भी हमने स्वल्प साधन व सीमित प्रयास से इस परम्परा को बनाए रखा है। हरयाणा जैसे छोटे से प्रान्त में छोटे बड़े नये पुराने ३०-३५ गुरुकुल इस प्रणाली द्वारा बालक बालिकाओं को शिक्षा दे रहे हैं। सदा से इस प्रान्त की यह विशेषता रही है कि सभी गुरुकुल यहा सामान्य किसान के सहयोग व उनके अन्नदान से चलते रहे हैं। फिर ऐसा क्या हमारा असामर्थ्य है जो हम आज आर्ष प्रणाली के संचालन से दूर भाग कर सुविधापूर्ण सरकारी धन की प्राप्ति के लिए अपने लक्ष्य, सामर्थ्य और सम्पत्ति को समाप्त करते जा रहे हैं।

दूसरी ओर आज आर्ष शिक्षा प्रणाली के अभाव में आर्ष साहित्य के पठनपाठन की परम्परा ही लुप्त होने का संकट हमारे सम्मुख है। जब कोई साहित्य को पढ़ने वाला ही नहीं रहेगा तो उसको कौन प्रकाशित करेगा, कौन खरीदेगा और कौन रक्खेगा। साहित्य नहीं होगा तो दयानन्द के विचारों का कैसे प्रचार होगा। यह गुरुकुलों का ही प्रयास है जो आज दुर्लभ आर्ष साहित्य का लाखों रुपया व्यय करके प्रकाशित किया है और जो भी आर्य संस्थायें इस कार्य को कर रही हैं उन सबका इस अवसर पर मैं साधुवाद करता हूं। महर्षि ने इस बात को भली प्रकार समझा था कि हमारे नाश के लिए इतिहास को नष्ट करने का विदेशियों ने भरसक प्रयत्न किया है, इसका निराकरण आवश्यक है। इसके लिए स्वामीजी ने इतिहास पर अनेकों व्याख्यान दिये, सत्यार्थप्रकाश में महाभारत के पश्चात् होने वाले आर्य राजाओं की वंश परम्परा देकर इतिहास को सुरक्षित करने का यत्न किया। इतिहास की गलत परम्पराओं को आज भी हमारे विद्यालों में बच्चों को पढ़ाया जाता है। आज भी भारत के नागरिकों को आदिवासी और गैर आदिवासी जैसी संज्ञाओं से अभिहित किया जाता है आर्य बाहर से आए इस तथ्य को अशुद्ध है यह हम अभी नहीं मनवा सके। इसके लिए बड़े प्रयत्न की आवश्यकता है। आज यह आर्यसमाज के लिए गर्व का विषय हो सकता है, हमारे सहयोगियों व दानी महानुभावों के प्रयत्न से इतिहास और पुरातत्व के क्षेत्र में आर्यसमाज की शिक्षा संस्थायें एवं प्रकाशन विभाग भारत के मानचित्र में आज प्रमुख स्थान रखते हैं। लाखों प्राचीन मुद्रायें, ताम्रपत्र, शिलालेख, ठप्पे, पाण्डुलिपियां और अन्य ऐतिहासिक सामग्री हमारे पास सुलभ है जिससे इतिहास के पुनर्लेखन के कार्य में सहायता मिल सकती है। आर्यसमाज को इस दिशा में भी गम्भीरतापूर्वक सोचना होगा। क्रमशः

(पृष्ठ २ का शेष)

आज मनुष्य ने विज्ञापन और शिल्प की प्रगति के द्वारा उत्पादन करने की क्षमता तो प्रमाणित कर दी है परन्तु मानव के कल्याण के लिये उसका ठीक उपयोग करने की क्षमता वह सिद्ध नहीं कर पाया। उसमें वह असफल रहा। इस असफलता को सफलता में बदलने के लिये ही नये विश्व समाज की संरचना करनी होगी, कुव्यवस्था को समाप्त करके ऐसी व्यवस्था बनानी होगी, जिससे दुनिया के हर कोने में बसने वाले हर व्यक्ति को सुख और गरिमा पूर्ण जीवन मिल सके।

युद्ध मानव के सुख समृद्धि और प्रगति का शत्रु है और परमाणु युद्ध तो मानव का सर्वनाश है। विश्वशान्ति और न्याय पर आधारित नई सामाजिक आर्थिक व्यवस्था के द्वारा ही मानव का कल्याण सम्भव है।

आज जो भी संगठन इस काम में लगे हैं, उन सब के साथ सौमनस्य बढ़ाकर मानव कल्याण के इस महान अभियान में आर्यसमाज अपना भरपूर सहयोग देगा।

आर्यसमाज की गतिविधियां—

१- पलवल में महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह सम्पन्न

अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के पश्चात आर्यसमाज श्रद्धानन्दनगर पलवल जि० फरीदाबाद में १३ नवम्बर ८३ को समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर इस क्षेत्र के जिन व्यक्तियों ने आर्यसमाज के द्वारा चलाए गए आन्दोलनों तथा स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया है को सम्मानित किया गया। आर्य समाज के प्रसिद्ध कवियों के गीतों को प्रकाशित करके विमोचन भी किया गया। इसका सारा व्यय तुलवाड़ी के सरपंच श्री रामेश्वर आर्य ने वहन किया। समारोह में आस पास के ग्रामों से भी आर्य नरनारी ट्रैक्टरों, साईकलों आदि पर ओ३म् ध्वज लगाकर सम्मिलित हुए। दीवान भीमसेन आदि नेताओं के व्याख्यान लक्ष्मीचन्द आर्य तथा पं० बेगराज आर्य भजनोपदेशक के प्रभावशाली भजन हुए।

२- राजपुर जि० सोनीपत में शुद्धि कार्य

ग्राम राजपुर जि० सोनीपत के श्री मुख्त्यारसिंह सुपुत्र श्री खिलाड़ी राठी ने किसी मोलवी के बहकावे में आकर और पीर के डर से इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया था। इसपर ग्रामवासियों ने भी इनका बहिष्कार कर दिया था। शुद्धि सभा के मन्त्री स्वामी सेवानन्द (पूर्व वैद्य रतनसिंह) ने वहां जाकर उन्हें समझाया तथा हवन यज्ञ करके यज्ञोपवीत देकर पुनः वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया। इस कार्य की सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है।

३- आर्यसमाजें सावधान रहें

शुद्धि सभा हरयाणा के मन्त्री स्वामी सेवानन्द अजमेर शताब्दी समारोह में अपने साथ श्री साहबराम नामक एक व्यक्ति को सहायक लेकर गये थे, परन्तु वह धोखा देकर वहां से अचानक भाग गया। और अपने साथ स्वामी जी का एक कम्बल, एक टेपरिकार्डर और एक रसीदबुक (१६२० से १७०० तक) भी साथ ले गया। आर्य समाजें इस व्यक्ति से सावधान रहें और इन्हें किसी प्रकार का चन्दा न दिया जावे। —ओमप्रकाश आर्य सम्भालका मण्डी

४- आर्यसमाज खारवन जिला अम्बाला में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

७ से ९ अक्तूबर तक आर्यसमाज खारवन जि० अम्बाला में वेद-प्रचार पर पं० रूपलाल आर्य, पं० बनारसीलाल आर्य तथा पं० शेरसिंह के संगीत तथा श्री कर्मवीर आर्य, श्री सत्यपाल आर्य के व्याख्यान हुए। यज्ञ पर ३०, ३५ युवकों को यज्ञोपवीत दिये गये। —मन्त्री आर्यसमाज

५- सभा के वेदप्रचार के नये अधिष्ठाता पं० रणवीर शास्त्री नियुक्त

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचार विभाग में नवयुवक विद्वान उपदेशक पं० रणवीर शास्त्री विद्या वाचस्पति को वैतनिक अधिष्ठाता नियुक्त किया गया है। अतः हरयाणा के आर्य समाजें उन्हें पूर्ण सहयोग देकर वेद प्रचार कार्य में पूर्ण लाभ उठावें।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री

रामनाथपुरम में धर्म परिवर्तन का मामला श्री शालवाले प्रधानमन्त्री को मिले

नई दिल्ली १५ नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले आज प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी को मिले। उन्होंने रामनाथपुरम में अरब देशों में नौकरी देने के प्रलोभन में ५००० हरिजनों को मुसलमान बनाने की विदेशी योजना से प्रधान-मन्त्री को अवगत कराया। धर्म परिवर्तन के इस देशव्यापी षडयन्त्र के सम्बन्ध में श्री शालवाले ने एक विस्तृत ज्ञापन भी प्रधान मन्त्री को दिया। उन्होंने भारत सरकार से मांग की है कि विदेशों में नौकरी देने के प्रलोभन से धर्मपरिवर्तन का मामला सर्वथा राजनीतिक है, इसलिए सरकार को इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए।

प्रधानमन्त्री ने श्री शालवाले को बताया कि वे इस सम्बन्ध में स्वयं चिन्तित हैं। प्रधान मन्त्री ने कहा कि आर्य समाज को ऊंचे वर्ग में प्रचार करके हरिजनों को गरीबी से कोई दूसरा देश उन्हें पददलित न कर सके, ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए।

प्रधानमन्त्री ने यह भी कहा कि ऊंचे वर्ग में हरिजनों को काम पर लगाने के लिए और भेदभाव को दूर करने का व्यापक प्रचार होना जरूरी है। श्री शालवाले ने प्रधानमन्त्री को आश्वासन दिया कि आर्य-समाज के कार्यकर्त्ता रामनाथपुरम पहुंच रहे हैं।

यदि सरकार ने अपने कर्त्तव्य का पालन किया तो आर्यसमाज अपने गरीब हरिजनों को बचाने में अवश्य सफल होगा जिस प्रकार मीनाक्षीपुरम में कार्य किया गया था। इसी मामले को लेकर श्री शाल-वाले गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द सेठी को भी मिल चुके हैं।

मुरादाबाद में रामप्रसाद बिस्मिल नगर का शिलान्यास

मुरादाबाद १३ नवम्बर। पं० रामप्रसाद बिस्मिल नगर का शिलान्यास करते हुए श्री रामगोपाल जी ने कहा कि शहीद पं० राम-प्रसाद बिस्मिल ने अपनी भरी जवानी में जब से महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा को अंगीकार किया तभी से उन्होंने देश धर्म और समाज के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। उनके नाम पर बसाई जा रही यह आर्य नगरी शहीद बिस्मिल जसे आर्य युवकों के निर्माण करने की क्षमता प्राप्त करेगी तभी महर्षि दयानन्द के स्वप्न साकार होंगे। उन्होंने आर्य जनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज आवश्यकता है कि आर्यसमाजी भाई आपस में मिल जुल कर काम करें। आपसी झगड़ों में पड़ने से आर्यसमाज कमजोर हो रहा है। यदि आर्यबन्धु संगठित होकर काम करें तो इस अजेय सेना का सामना कोई भी विरोधी ताकत नहीं कर सकती।

यहां के आर्य भाइयों ने दयानन्द कालोनी और रामप्रसाद बिस्मिल कालोनी को बसाने का निर्णय किया है। श्री राममोहन जी ने बताया कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले के प्रयत्नों से ही सरकार ने यहां फौजी छावनी की स्थापना हो गई है तथा २ अरबिक यूनिवर्सिटयों का निर्माण रोक दिया है। —प्रचार विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव ११ दिसम्बर को रोहतक में होगा। सभा से सम्बद्ध आर्यसमाजें अपने प्रति-निधि फार्म शीघ्र भेजें, ताकि प्रतिनिधियों को ऐजण्डा तथा प्रवेशपत्र समय पर भेजे जावें। —सभामन्त्री

पीपली वाला जि० अम्बाला में आर्यसमाज की स्थापना

२१-६-८३ को आर्यसमाज पीपली वाला डा० खास वाया साढोरा जिला अम्बाला का वार्षिक उत्सव तथा आर्यसमाज का चुनाव किया गया। उत्सव पर चुनाव सर्वसम्मति से किया। पंडित हरलाल भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक हरयाणा तथा पं० रूपेल सिंह जी भजन उपदेशक रानीपुर तथा बीर सिंह उपमन्त्री आर्यसमाज चबूतरो एवं महाशय लक्ष्मण जी की अध्यक्षता मे निम्न प्रकार चुनाव सम्पन्न हुआ।

१) प्रधान—महावीर आर्य
२) उपप्रधान महासिंह जी आर्य
३) मन्त्री—श्री धर्मवीर जी आर्य
४) उपमन्त्री—श्री यशपाल आर्य
५) कोषाध्यक्ष—श्री रणजीत सिंह आर्य
६) पुस्ताकाध्यक्ष—श्री रणवीर सिंह आर्य
७) प्रचार मन्त्री—श्री सुखवीर सिंह आर्य

आर्यसमाज नारनौल मे पुर्विवाह

गौड० ब्राह्मण कुलोत्पन्न गीतादेवी नारनौल और प रामोतार जी घडप निवासी महेन्द्रगढ (गीता देवी की आयु १६ वष और रामोतार जी की आयु २३ वर्ष है) का ४-८-८३ रविवार को प्रात काल आर्यसमाज मन्दिर नारनौल मे बडी धूमधाम से विवाह सस्कार सम्पन्न हुआ। घडप ग्राम से वर पक्ष के लगभग २५ बराती तथा वधू पक्ष के लगभग १२० स्त्री पुरुषो तथा आर्यसमाज के विशेष व्यक्तियों ने वर वधू को आशीर्वाद दिया। विवाह संस्कार वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य प्रधान आर्यसमाज नारनौल द्वारा विधिवत सम्पन्न हुआ।

—बाबूराम मं० श्री आर्यसमाज नारनौल

सच्चा सुख केवल वैदिक राज प्रणाली से होगा

—ले० स्वामी रामेश्वरानन्द जी

प्रिय आर्यो श्री स्वामी दयानन्द जी के स्वप्नो का ससार वैदिक राज प्रणाली से बनेगा। आर्यसमाज की स्थापना को अब सैकडो वर्षों से अधिक हो गये और महर्षि तथा आर्यसमाज के अनेक नेताओ ने प्रचार किया तथा गुरुकुल कालेज खोले अनेक सत्याग्रह चलाये और पण्डित लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदि अनेक बलिदान हुए। पुस्तकें लिखी गयी। शास्त्रार्थ किये कोई कसर उठाकर न रखी गयी किन्तु आर्यसमाज का पूर्ण प्रचार तो दूर रहा किन्तु भारतवर्ष मे भी स्वामी दयानन्द को जन-२ तक न जना सके। इसका कारण केवल राज व्यवस्था है। महात्मा गान्धी, प० नेहरू, इन्दिरा गान्धी आदि को न केवल भारतवर्ष अपितु ससार के सब लोग जानते हैं और स्वामी जी के समय से अब तक अन्य सैकडों मजहब बढ गये तथा चारित्रिक दृष्टि से भी देश का अधोपतन हो गया। जिन घरों मे कभी प्याज लहसुन का प्रयोग न होता था वहाँ आज मांस खाया जा रहा है। सुरापान होता है। अण्डे, बीडी, सिगरेट पीये जाते हैं। इतना ही नहीं शिक्षा प्रणाली ने तो आर्यसमाज के सिद्धा तों की धज्जी उडा दी है। सृष्टि उत्पत्ति को देखें कि जिसमे अमीबा से सारा ससार होता है फिर बन्दर भी उसी अमीबा से बना और बन्दर से मनुष्य बना। उन बन्दरों के लडकों ने नदियो के किनारे बैठकर वेद बना डाले। ये वेद बन्दरो की सन्तान ने बनाये जब कि ऋषि दयानन्द वेदो को ईश्वर ज्ञान बताते हैं। ये नहीं कहते कुरान-बाईबिल सिखो जैनियो के ग्रन्थ बनाये। इतिहास को देखो कि आर्यों को ईरान उत्तर ध्रुव से आये बताते हैं। स्वामी जी कहते हैं कि आर्यावर्त्त आर्यों ने बसाया ये यहीं रहते थे। स्कूलो में बताया जाता है यहाँ आर्यों से पहले आदिवासी कोल भील द्राविड रहते थे तथा यह भी पढाया जाता है कि सूरज से टूटी मिट्टी उसी से चन्द्रमा टूटा। ईश्वर जीव को मानते ही नही। इस सबका उत्तर केवल राज प्रणाली ही है। आज तक जो मजहब शक्तिशाली बना वह राज के सहारे बना। जब आर्यों का राज था तब सारे देशो मे आर्यों का चक्रवर्ती राज रहता था।

शोक समाचार

अम्बाला छावनी के आर्यसमाजों एव शिक्षण सस्थाओं के प्राण, दानवीर श्री सतीश मित्तल (अधिकारी सैनिक बुक संस्थ) के बडे भाई विनोद का जोप दुर्घटना मे स्वर्गवास का समाचार पाकर सभी आर्य शिक्षण सस्थायें बद हो गयी। दिनाक १७-८-८३ को स्व० विनोद जो की अन्तयेष्ठी सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार हुआ। इस अवसर पर सभी समाजों के सदस्य, शिक्षण सस्थाओं के स्टाफ तथा नगर के गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सायकाल आर्यसमाज दयानन्द मार्ग अम्बाला केंट में शोक सभा हुई जिसमें श्रद्धाञ्जली अर्पित की गई।

मन्त्री आर्यसमाज अम्बाला छावनी

जसोर खेडी जि० रोहतक में शोक सभा

आर्यसमाज के प्रधान श्री सजानसिंह जी आर्य १ जुलाई १९८३ को स्वर्ग लोक चले गए। हमे उनके वियोग से बहुत मानसिक दु ख हुआ है क्योकि वे आर्यसमाज के सभी कार्यों में सश्रद्धा पूरा सहयोग देते थे। यद्यपि हमारे ग्राम जसोरखेडी में प० बस्तीराम के प्रयत्न से पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द, परमानन्द, ब्रह्मानन्द ने सन् १९१५ ई० मे आकर आर्य-समाज स्थापित किया था तथापि इसका विधि वत गठन जुलाई सन् १९६१ में करके आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्ध जोडा गया था। यह आर्यपूर्वजों की ही कृपा है। श्री सजानसिह जी तभी से हमारे कोषाध्यक्ष रहे थे और अब दो तीन वर्ष से प्रधान थे। आप प्रारम्भिक २० वर्ष तक अपने नाना के घर मोखी ग्राम में रहने से सनातनी और उग्र स्वभाव के थे परन्तु सन् १९६० में हमने इनको हिन्दी सिखाकर अमर सत्यार्थप्रकाश पढाया। तभी से आप नम्र श्रद्धालु बनकर नित्य नियम से स्वाध्याय करते रहते थे। गुरुकुल झज्जर नरेला, रोहतक दिल्ली के आर्य उत्सवो में बडे चाव से जाते थे हमारे साथ निरन्तर छः सात वर्ष तक यज्ञ हवन सन्ध्या व्यायाम करने से परमात्मा ने आपको ४४ वर्ष की अवस्था मे एक मात्र सन्तान पुत्र धर्मपाल आर्य प्रदान किया था जो अब स्वस्थ है।

श्री सजान सिंह १९६७ ई० में गोरक्षा सत्याग्रह में तिहाड जेल दिल्ली मे बन्दी रहे थे। जून १९६८ में ग्राम से पर्याप्त नकद रुपये और बीस मन अन्न का चन्दा रेडी में भर कर आर्यसमाज नरेला और गो हत्या बन्दी आन्दोलन कुण्डली मे मण्डली सहित शामिल हुए थे। हमें उनके निधन से बहुत हानि हुई है। आप ६२ वर्ष के थे।

मन्त्री आर्यसमाज जसोर खेडी, जि० रोहतक

ताम्रपत्रों पर सत्यार्थ प्रकाश

दयानन्द नगर (अजमेर) ६ नवम्बर-केन्द्रीय उद्योग मन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने आर्यसमाज के ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को ताम्र पत्रों पर खोदने वाले व्यक्तियों को आज यहां सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन में पुरस्कृत कर सम्मानित किया।

सत्यार्थप्रकाश को ताम्र पत्रों पर खोदने वालों में प्रमुख दिल्ली के ब्रह्मचारी श्री वृजानन्द को पाच हजार एक सौ ग्यारह रुपये व सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति देकर सम्मानित किया गया। हरियाणा के श्री यशपाल शास्त्री, गुरुकुल के श्री रामबीर शास्त्री व अजमेर के श्री स्वामी सत्यप्रकाश को सत्यार्थप्रकाश की एक-एक प्रति देकर सम्मानित किया गया।

स्वामी ओमानन्द जी द्वारा ये ताम्र रेवाडी में बनवाए गये व दिल्ली में खुदवाये गये। कुल तीस मन वजनों के इन ४३० ताम्र-पत्रों पर सत्यार्थ प्रकाश को खुदवाने में ढाई लाख रुपये खर्च हुए।

कुछ तड़प झड़प

—राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर

हरयाणा के आर्य समाजों से :—

एक आर्य के नाते, एक ऋषि भक्त के नाते एक इतिहास प्रेमी के नाते मैं भाव भरित हृदय से हरयाणा के सब आर्य समाजों की सेवा में एक विनीत विनती करना चाहता हूं। इतिहास का अध्ययन करते हुए, पूज्य विद्वानों के चरणों में वर्षो बैठने वा सुनने पर हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि जब ऋषि दरबार लगता था तो उनके सत्संग में अन्य भजन भी गाए जाते थे यथा भक्तराज अमींचन्द वा हरयाणा में लोक कवि दादा बस्ती राम जी ने भजन गाए। परन्तु ऋषि के सत्संगों में कहां कौन सा भजन सुनाया गाया गया इसका कुछ भी पता नहीं चलता। केवल एक अपवाद है।

जब श्री महाराज रिवाड़ी पधारे तो पूज्य दादाबस्ती राम ने जो भजन सुनाए उनमें से एक भजन का पता है। इस ऐतिहासिक महत्व के भावपूर्ण साहित्यिक भजन को वितरित करने वा सुरक्षित रखने की दृष्टि से हम भी अपनी एक पुस्तिका में छपा रहे हैं। सर्वहितकारी में भी श्री केदार सिंह आर्य से आग्रह किया था कि वह इसे पुनः छापें। हरयाणा के सब आर्य समाजें उत्सव पर भजन मण्डलियों के साथ जब नगर कीर्तन पर यह भजन अवश्य गाते जाएं। अजमेर की नगरी में भजन को गाना जाना चाहिए था।

इस भजन में दादा जी ने ऋषि की प्रशंसा में भी कुछ कहा है ऋषि जी ने उस पर जो कुछ कहा वह आर्य साधुओं की परम्परा में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने सुरक्षित रखा है।

श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी यदि शताब्दी के कार्य क्रम में इस भजन को भी रख लेते तो बड़ा उत्तम रहता। चौ० सत्यसिंह जी, पं० ओम् प्रकाश वर्मा जैसे हरयाणा में किसी अच्छे आर्य गायक से इसे ठेठ हरयाणा की अन्दाज में गाने के लिए कहा जावे। जब पीछे मेरठ क्षेत्र वा हरयाणा के ग्रामिणों का स्वर साथ गूञ्जेगा तो एक अद्भुत दृश्य उपस्थित होगा। ऐसा लगेगा कि हम रिवाड़ी में ऋषि दरबार में बैठे हैं। आशा है आर्य समाजें मेरे सुझाव का हार्दिक अनुमोदन करेगें।

यह आत्मघाती प्रवृत्ति—

हरयाणा के एक आर्य समाज के उत्सव पर बोलते हुए हमने कहा कि देश हित के लिए, देश की एकता अखण्डता के लिए, विध्वंसक, हिंसक क्रूर तत्वों का सामना करने के लिए सारे हरयाणा से ऊंची आवाज उठनी चाहिए। खेद है कि केवल जाट वर्ग ही बोलता है और जाटों में भी आर्य समाजी जाट कुछ करता वा कहता है। हमारे मुख से जाट शब्द का निकलना था कि एक महानुभाव जल भुन कर हमें डांटने लगे। आर्य समाज की बात करो, जाटवाद जातवाद मत फैलाओ मन्त्र संचालन करने वाले विद्वान श्री विश्वामित्र जी ने डट कर कहा कि मैं शोलापुर से जिज्ञासु को जानता हूं हमें न इनकी जात का पता है न प्रान्त का न यह इस दृष्टि से सोचते हैं। इनका तो अपना विवाह जाति बन्धन तोड़ कर हुआ है।

परन्तु वह सज्जन तो जाटों के बारे विष उगलने लगे। पंजाबियों का रोना आरम्भ कर दिया। वहां बैठे हरयाणा के ग्रामीणों को तो दुःख होना ही था, पंजाबी भी उसके व्यवहार से क्षुब्ध हुए। हमें उस व्यक्ति ने ऐसा डांटा जैसे हम आर्य समाज के बारे कुछ जानते ही नहीं। उस व्यक्ति के नाम का भी हमें पता नहीं। उनकी पूंछ का ही लोगों का पता था जाति सूचक नाम से ही वह जाने जाते हैं।

आर्य पुरुषो ! घटना साधारण नहीं है। यह सोच लो कि देश घाती तत्व देश को रगड़ने पर तुले हुए हैं। यदि हमारे क्षत्रिय वर्ग को सम्भाला न गया तो देश जाति का क्या बनेगा ? मराठे, जाट, सैनी अहीर गुजर, राजपूत गोरखे, महार जो जो लोग अधिक सेना में हैं उन तक आर्य समाज की आवाज पहुंचाओ तभी देश बन पाएगा और जाट जो आर्य हैं—यदि उन्हें ही ऐसे समझें—तो क्या परिणाम निकलेगा। यह सोच लो। काश कि आज स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज वा स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की सूझ के नेता काम लें। स्वामी श्रद्धानन्द जी व महात्मा हंसराज दोनों को हरयाणा के जाटों का विशेष ध्यान था। महात्मा हंसराज वा पं० लखपतराय जाटों के आर्यपन पर मुग्ध थे।

अकाली मांगें भारत की अखण्डता के लिए घातक हैं प्रो० शेरसिंह

(निज संवाददाता द्वारा)

१२ नवम्बर रोहतक। आज एक पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रति निधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने कहा कि हाल ही में श्री इन्द्रकुमार गुजराल, श्री कुलदीप नय्यर, पूर्व वायु सेनाध्यक्ष श्री अर्जुनसिंह तथा पंजाब के अन्य नेताओं ने अपने वक्तव्य में अकालियों की मांगों का समर्थन किया है। इससे उनपर सन्देह होता है। उन्होंने कहा कि इन नेताओं को अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए क्योंकि अकालियों की मांगों में रक्षा, संचार, करेंन्सी, और रेलवे को छोडकर सब कुछ शामिल हैं। प्रो० शेर सिंह ने कहा कि ये पग खतरनाक और राष्ट्र के हितों के विरुद्ध है। उन्होंने कहा समस्या के समाधान के तीन विकल्प हो सकते हैं। एक ये कि सारा मामला कमीशन को सौंप दिया जावे। दूसरा बातचीत के माध्यम अथवा किसी मध्यस्थ के द्वारा समस्या को हल किया जावे और तीसरा जनता की राय जानी जाये। उन्होंने कहा कि हरयाणा रक्षा वाहिनी को तीनों विकल्प स्वीकार हैं। प्रो० साहब ने आगे कहा कि १९७१ में प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने जो एवार्ड दिया था वह भी हमें स्वीकार है और चण्डीगढ एवं अबोहर फाजिल्का की जनता से यदि उनकी राय मांगी जावे तो उस पर भी हमें कोई आपत्ति नहीं होगी। प्रो० शेरसिंह ने पत्रकारों से बातें करते हुए कहा कि पंजाब के हिन्दुओं और सिखों के बीच मतभेद तथा भ्रान्तियां पैदा करने के पीछे कुछ विदेशी शक्तियों का यकीनी तौर पर हाथ है। उन्होंने कहा कि ये विदेशी ताकतें निरन्तर षडयन्त्र कर रही हैं। तथापि उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि अभी तक दोनों पक्षों के बीच मित्रता के सम्बन्ध हैं। इस पत्रकार सम्मेलन में मोरिशस में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मोहन लाल जी मोहित ने मोरिशस में आर्य समाज के प्रचार की जानकारी दी।

दिल्ली में करने वाले महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह के आयोजकों से

—स्वामी शक्तिवेश

अभी-अभी हम अजमेर की शताब्दी करके लौटे हैं। समारोह क्या कुम्भ का मेला था मीलों लम्बा दयानन्द नगर-तम्बू लम्बोलियों की भरमार। विशाल पण्डाल भोजन-आवास की वांछित व्यवस्था देश-विदेश के कोने-कोने से लाखों लोग महर्षि के प्रति अपनी भक्ति जितलाने पहुँचे। कोई यह झूठा भ्रम न करे कि किसी के कहने बुलाने पर लोग आये। हमने हजारों लोग ऐसे देखे जिनके विचार आयोजकों से बिल्कुल भिन्न थे किन्तु फिर भी वे वहां सुनने-सुनाते रहे। विशाल शोभा यात्रा का दृश्य देखते ही बनता था अपार भीड़-लाखों पद यात्री भिन्न परिवेश में विभिन्न भाषा भाषी दयानन्द ही दयानन्द पुकार रहे थे। इस समारोह के देखने के पश्चात् यह तो सन्तुष्टि होती है कि दयानन्द की सेना बहुत बड़ी है किन्तु इसका सेनापति कौन है यह पता प्रयास करने पर चल न पाया। अनेकों विद्वान् भी वहां थे, मूर्धन्य संन्यासी भी वहां थे। सत्ताधारी नेताओं की भी वहां अपार भीड़ थी किन्तु चार दिन की धमाचौकड़ी के बाद हम आर्य जनता को क्या कार्य-क्रम दे पाये प्रश्न अब यह खड़ा हो जाता है।

तीसरे दिन यही प्रश्न दिल्ली के आयोजकों ने वहां एक गोष्ठी में प्रकट किये और वायदे किये कि इन कमियों को हम दिल्ली में दूर करेंगे। इसका मुझे अपने पूर्व अनुभव के आधार पर पूरा भरोसा है कि वहां प्रोग्राम दिया जायेगा विचारों का ताना-बाना अच्छा होगा किन्तु तुम्हारे यहां उल्टा होगा कि घोषणा करने वाले तो आगे आ जायेंगे पीछे चलने वाली फौज नहीं होगी। इसका भी एक कारण है वह यह कि लोग बड़ी भावुकता से हमारे पीछे लगे थे। १५-१६ वर्ष के कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जो आरोप हम पुराने आर्यसमाज के मठाधीशों पर लगाते थे दिल्ली आयोजक तो विशेष रूप से और साथ ही हम भी उसी पंक्ति में खड़े हैं। हमने विश्वास दिलाया था कि हम आर्य राष्ट्र की स्थापना के लिये जीवन लगायेंगे। चुनाव नहीं लड़ेंगे। उन सब वायदों का विध्वंस हुआ चुनाव लड़ा गया किन्तु पूरी बाजी हार कर आर्यसभा तोड़ी जनता पार्टी जोड़ी वह भी तोड़ी अब क्या बस वही जो पूर्व आर्य नेताओं ने किया दूसरों के पैर पकड़े और चढ़ गये कुर्सी पर। अब तो पौने चार वर्ष हो गये मजा लेते पता चल गया आटे-दाल के भाव का बस बाकी यही कसर है कि साकेत कालोनी में जिन्दगी काटने के लिये एक कोठी बना ली जायेगी। बस इनका तो बन गया "आर्य राष्ट्र" बाकी जनता जाओ भाड़ में।

अब भी समय है सभलने का, सुबह का भूला शाम को आ जाये तो भटका हुआ नहीं माना जाता। वह किश्ती मझधार में डूब गई किन्तु मल्लाह नहीं डूबे कोई इस किनारे पर, कोई उस किनारे पर, कोई आगे निकल गया, कोई पीछे निकल गया सरवर नीर, अम्ब-अम्बली की कहानी कौन नहीं जानता वह दोहराई जा सकती है। बिछुड़े मिल सकते हैं यदि तुम हृदय से चाहते हो काम बन सकता है यदि करना चाहो और यदि बस लाखों जमा करके बैंक बैलेंस का चक्कर हो तो उसका कोई इलाज नहीं। सोते को जगाया जा सकता है। दडमार को कौन जगा सकता है जनता पार्टी के मोह को छोड़ो हम उससे नहीं बने वह हमसे बनी थी। वह टूट गई उस लाश को क्यों चिपटे फिरते हो। क्या इन दयानन्द की ईंटों से चन्द्रशेखर और मोरार जी भाई का महल बनाना चाहते हो? लोकदल को भारतीय जनता पार्टी आज नहीं तो कल निगल जायेगी फिर तुम्हारा क्या बनेगा? घोषणा हो इस समारोह में खुलमखुल्ला कि हम इन सबको छोड़कर केवल और केवल दयानन्द का आर्यसमाज के नाम से काम करना चाहते हैं। त्याग से ही कुछ बनता है। त्यागी को त्याग करके श्रद्धांजलि दो।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।